

स्वातन्त्र्योत्तर कथा-लेखिकाएँ

स्वातंत्र्योत्तर कथा-लेखिकाएँ

आगरा विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत शोध प्रबन्ध का उत्तराद्ध

उर्मिला गुप्ता

एम० ए० पी एच० डी०



राधाकृष्ण प्रकाशन

© १९६७ डॉ० उमिना गुप्ता नई दिल्ली

मलय
सोनह रूपय

प्रकाशक
ओम प्रकाश
राधाकृष्ण प्रकाशन
२ जमारी रोड दरियागंज दिल्ली-६

मुद्रक
हिन्दा प्रिन्टिंग प्रेस क्वींस रोड दिल्ली-६

विषयानुक्रम

विषय प्रवेश

नारी साहिब की सायबता—६ समकालीन परिस्थितियाँ—१२ प्रस्तुत प्रबंध
के विषय में—१४

प्रथम प्रकरण स्वातंत्र्योत्तर युग की मुख्य कहानी लेखिकाएँ

सत्यवती मल्लिक—१७ रजनी पनिकर—२८ कचनलता सत्रवाल—३४
गिरानी विश्वाई—४१ मन्नु भंडारी—५३ गाति मेहरोत्रा—६२ सत्य
कुमारी बरसी—७० सामा बीरा—७६

द्वितीय प्रकरण स्वातंत्र्योत्तर युग की अन्य कहानी लेखिकाएँ

बाहूलीला मिश्रा—८८, सावित्री सिंह किरण—८९ इंदुमती—९० हीरादेवी
चनवैली—९३, कौशल्या अथवा—९६ गीता शर्मा—९८ मालना डिवा—९९,
राजकुमारी गिबपुरी—१०३ तारा पोनदार—१०५ सीतादेवी—१०६ नमिता
नुम्बा—१०८ प्रकाशवती नारामण—१११ सीता अवस्थी—११३ किरण
कुमारी गुप्ता—११७ उषा सक्सेना माधरी—११९ सत्यवती देवी 'भया—
१२२ पुष्पा भारता—१२५ राधिका जोहरी—१२७ पुष्पा महानन—१२८,
कुमारी रीता—१३१ गबुलना देवी—१३३ गबुलना गमा—१३५ इंदिरा
'नूपुर—१३८ मालता पल्लवर—१३९ गान्धिजानी—१४३ विमलारना—
१४४ पद्मावती पटवर्धन—१४७ भीता—१४९ विपुला देवा—१५० कान्ता
सिन्हा—१५३ उषा प्रियवन्ता—१५५ उषा—१५७ जागरानी अंगु—१५९
गुमन नारनकर—१६१ विजयलक्ष्मी गौर—१६२ रत्ना थापा—१६७ अणिमा
मिह—१६७ कृष्णा मोबना—१६९ मूल्यारन—१७१

तृतीय प्रकरण स्वातंत्र्योत्तर युग की मुख्य उपन्यास लेखिकाएँ

रजनी पनिकर

१७४ २०१

टोवर—१७४ पाना की दीवार—१७७, माम बमानी—१८० प्यासे दान—

१८५ जाड की घूप—१८६ काली लडकी—१८२ एक सटनी दो हप—१८७
निष्कप—२

वसन्त प्रभा २०२ २०७

साभ व साथी—२० अधूरी तस्वीर—२०४ निष्कप—२०७

कृष्णा सावती २०८ २१३

टार स बिछा—२०६ निष्कप—२१३

लीला अवस्थी २१४ २२१

रा राह—२१४ बिखर काट—२१७ बरवा बरसन आए—२१८ निष्कप—
२११

च द्रविरण सौनरेवसा २२२ २२७

चन चानी—२२० निष्कप—२२७

अ नपूर्णा सागडी २२८ २३८

निधनता का अभिगाप—२२८ चिता का धल—२१ मिलनाहुति—२३३
विजयिनी—२५ निष्कप—२३८

विमल वेद २३६ २४६

ज्याति निरण—२४६ अचना—२४१ जमनी हीरा नकनी हीरा—२४३
निष्कप—२४६

चतुर्थ प्रकरण स्वात-योत्तर युगकी अथ उपयास लेखिकाएँ २४७ ३६०

कबराना तारावा—२४८ तावणप्रभा राय—२५२ सत्यवती देवी भया उपा
—२५५ सरिता रानी—२५६ भारता विद्यार्थी—२६१ सुपमा भारती—२६६
माया ममथनाथ गुप्त—२७ दाना—२७२ सुता रमि—२७४ सताप
सचवा—२७६ गिवराना विनाई—२७६ गकुतना मित्र—२८४ उमि—
२८७ गीता गमा—२८८ गीता रघवणी—२९ उमा लवी—२९२ कमना
मकमा—२९४ लिला नूपर—२९६ गकुतना गवन—३०१ जाणाकुमारी
जाना—०६ मधूनिता—१ मधूनिता मित्र—१५ सुमित्रा गल्होक—
१६ भारा महाबन—१८ पुष्पा भारता—२२ उपा प्रियवता—३२८

पुष्पा महाजन—३२६ नारायणी कुमाराहा—३३२, गिवानी—३३४, मालती
 परलवर—३३८ विदु अग्रवाल—३३६, कमला टडन 'कमल ३४० वीरा—
 ३४२ सतोष वाला प्रमी—३४४ वान्ता सिहा—३४६, प्रकाशवती—
 ३४८ कृष्णा रमिकमल—३५० महेन्द्र बाबा—३५२ प्रिया राजन—३५३,
 मन्तू भडारी—३५५ निष्कप—३५८

३६१-३६४

३६५-३७२

उपसहार

परिशिष्ट सहायक प्रयोकी सूची

○

विषय-प्रवेश

प्रस्तुत ग्रन्थ मेरे गाव प्रबन्ध हिन्दी-कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग का उत्तराद्ध है। इसकी रचना जनवरी १९६० में मई १९६४ की अवधि में बन वत राजपूत कनिज आगरा के हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी के निरीक्षण में हुई थी। प्रबन्ध के प्रस्तुत खण्ड में स्वातन्त्र्योत्तर युग के कथा साहित्य के विकास में महिलाओं के योगदान का मूल्यांकन किया गया है। इस मन्त्र में मैंने कथा साहित्य का अर्थ कहानी और उपन्यास से लिया है और सरमरणा तथा रत्नाबिना की समीक्षा कहानियाँ के अंतर्गत ही की है।

नारी साहित्य की साक्ष्यता

कथा साहित्य के विकास में नारियाँ के योग का मूल्यांकन सामान्यतः एकाना प्रतीत हो सकता है किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि इसमें कथा-साहित्य के सर्वांगीण अनुशीलन में सुकरता रहेगी। वस्तुतः पुरुषों का रचनाएँ साहित्य जगत में जिस रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी हैं उसकी तुलना में नारी विरचित कथा-साहित्य की उपेक्षा ही हुई है। यह उल्लेखनीय है कि प्रकृति में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को विपणन भाव प्रवण एवं संवेदनशील बनाया है। जहाँ पुरुषों के लिए बुद्धिपरक विचारधारा सहज गुण है वहाँ नारियाँ के मन में श्रद्धा विश्वास सहानुभूति आदि कामल भाव जलित रहते हैं। यही कारण है कि महिलाओं के साहित्य में हृदय का स्पर्श करने की क्षमता अथवा मार्मिकता का विशेष समावेश रहता है। यह सत्य है कि पुष्पा-जैसे विविधतामयी रचनात्मक प्रतिभा अथवा बहुमुखी व्यक्तित्व का बसा संगठित विकास नारी-समुदाय में नहीं मिलता किन्तु केवल इसी आधार पर नारी साहित्य की उपेक्षा नहीं की जा सकती। यद्यपि हिन्दी कथा-साहित्य के विषय में अनेक ममीशात्मक ग्रन्थें तथा गाव प्रबन्ध सुनभ हैं किन्तु प्रायः उनमें ललितकाव्य के कथा-साहित्य का समावेश नहीं का गद। स्पष्ट है कि महिलाओं के कथा-साहित्य के विषय में अज तक की आलाचना-माधुर्य अपायज्ञ है और इस एक स्थान पर एकत्र कर लेने पर भी स्वतंत्र गाव की आवश्यकता बना रहता है।

आलोचना जगत में हिन्दी-लेखिकाओं के विषय में कनिष्ठ भ्रातिपूर्ण विचार भी प्रचलित हैं जहाँ कि कभी-कभी यह मत व्यक्त किया जाता है कि महिलाएँ कथा क्षेत्र की अपेक्षा काव्य-क्षेत्र में अधिक सफल हुई हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ के अनुशीलन से इस

कथन का निस्मारता स्वतः सिद्ध हो जायेगा। नारी की रचनात्मक प्रतिभा पर दूसरा प्रभावित यत्कन्तर लगाया जाता है कि वह प्रायः मौनिक मान्य का मृजन नही करती। उस प्रकार के कथन नारी के प्रति न्याय नही करते क्याकि बहुत भार-गाम्भ्र के आधार पर अनुसरण का आरोप उचित नही है। वस्तुतः युगविशेष के उत्तरा में भावा की समता दुर्लभ न होकर स्वाभाविक ही मानी जायेगा। मौनिक प्रतिभा में न्यून दो चार सविकारा की रचनाओं को ध्यान में रखकर सामान्य धारणाएँ बना लेना न्याय है और फिर जनन पुरुष नत्तक भी पूर्ववर्ती रचनाओं के भावा का अनुसरण करने पाये गये हैं। निश्चय ही आलोचना में इस प्रकार के पूर्वाग्रह का स्थान नही दिया जाना चाहिए। तथापि नारी कागरण के वतमान युग में यह स्वाभाविक ही होगा कि नारी की कार्य क्षमता के परिणामों की पुरुष की कार्य प्रणाली से तुलनात्मक समीक्षा की जाए। यद्यपि नारी और पुरुष की बौद्धिक क्षमताओं में अन्तर नही है तथापि सामाजिक विषमताओं एवं कतिपय स्वभावगत विपत्तियों के कारण उनमें अन्तर का होना स्वाभाविक है। घटना अथवा वस्तुविशेष के सम्बन्ध में उनकी प्रतिनिधित्व में भी अन्तर रहता है। नई सन्तानुभूति सौजस्य करणा आदि जो गुण स्त्री चरित्र में सहज सुलभ हैं उनकी अभिव्यक्ति में व पर्याप्त अवसर नहीं मिल रही है। तब दिया जा सकता है कि समाज राजनीति विज्ञान आदि में सम्बद्ध कम श्रेणी में पुरुष नारी की अपेक्षा अधिक जागृक रहता है अतः क्या-साहित्य में विविध का दृष्टि में उसे अधिक सफलता मिलती है किन्तु यह परिस्थितियों का एकमात्र विवरण है। नारी के क्षेत्र में सबका अपरिचित नही है। जिन उच्च शिक्षा प्राप्त नारियाँ का पुरुष की भाँति सामाजिक स्वतन्त्रता प्राप्त रही है वे विविधविषयक अध्ययनों की रचना में पर्याप्त योग्य नहीं रहती। तथापि यह स्पष्ट है कि अधिकांश नारियाँ को विविध क्षेत्रों में कार्यानुभूति का अवसर प्राप्त नहीं होता। उनका विकास क्षेत्र पारिवारिक जीवन है और तत्सम्बद्ध समस्याओं के चित्रण में उन्हें जो सफलता प्राप्त हो सकती है वह पर्याप्त द्वारा रचित क्या साहित्य में सुलभ होगी। मान लें कि कुछ बड़ी सौतियाँ बहू-आदि विषयों पर स्त्रियाँ जिनने अधिकार से निख सकती हैं परन्तु उनका सम्मनता का परिचय नही दे सकने। साहित्यिक विषयों के अतिरिक्त मास्कुलिक एवं पौराणिक आख्यानों के लेखन में भी नारी को अपेक्षाकृत अधिक गौरव प्राप्त हो सकता है। भावपूर्ण हो नही बना पद्य में भी नारी की अपनी पृथक् विपत्तियाँ सुनरित होती हैं। सामान्यतः वह पुरुष की अपेक्षा विशेष वाक्य प्रयुक्त होती है। यही कारण है कि महिलाओं के क्या-साहित्य में स्वाभाविक मासिक यात्रा और मुन्य वरा के मजाव प्रयाग का सहज ही दिया जा सकता है।

हिन्दी साहित्य का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन करने पर हम देखते हैं कि प्रतिभा का दृष्टि में समान स्तर पर भी स्त्रियाँ साहित्य सेवा में पुरुषों से पीछे रहती हैं। इसका अनेक कारण है—पुरुष की अपेक्षा स्त्रियों की सीमाओं का कार्य क्षेत्र में सफलता के अभाव पारिवारिक उत्तरदायित्वों समाज और परिवार के विरोध एवं बाधित

प्रोत्साहन के अभाव के कारण स्त्रियाँ साहित्य रचना में उतनी वृत्तवाय नहीं हो सकी। या तो भारत में पुरुष भी पूजन सामर्थ नहीं हैं, किन्तु नारी जाति शिक्षा से जोर भी अधिक ध्वनित रहा है। विद्या के अभाव में प्रतिभा होने पर भी साहित्य के भण्डार में श्रवीर्द्धि नहीं हो सकती। वस्तुतः शिक्षा का अभाव हेतु है और अध्ययन की कभी उमका परिणाम। यद्यपि केवल अध्ययन से साहित्य रचना सम्भव नहीं है किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि ज्ञान द्वारा को व्यापकता प्राप्त करने और विचारों का प्रौढ बनाने में ये यानुगीतन का विशेष योग रहता है। अध्ययन में अनुप्राणित रचना में भावना एवं कला का उच्च स्तर निरंतर रूप से उत्पन्न होता है। अशिक्षित नारियाँ निरक्षरता के कारण हम आर प्रवृत्त नहीं हो पाती और शिक्षित स्त्रियाँ भाग्यहीन मालिन् रहने के कारण प्रायः अध्ययन की सुविधाओं से वंचित रहती हैं। सकाच गृहस्थी के भार और पालन प्रथा के कारण नारी का पुरुष की भाँति वाक-द्वन्द्वन के लिए व्यापक अवसर प्राप्त नहीं हो पाता। पत्र-पत्रिकाओं की रचनाओं में जीवन की विविधता का उपयुक्त प्रतिबिम्ब नहीं हो पाता। नारी का समाज प्रायः उसके परिवार तक ही सीमित रहता है। प्रतिभा के उदय के लिए अपेक्षित समाज ज्ञान के अभाव में उसके ममका व्यक्तित्व और पारिवारिक समस्याओं का ऐसा जाल रहता है कि वह अपनी रचनाओं में प्रायः उन्हीं का अभिव्यक्ति कर पाती है। जीवन ज्ञान के अभाव में अध्ययन की कृतियाँ के अध्ययन में प्राप्त प्रेरणा के क्षेत्र पर साहित्य रचना का प्रयास अनुकरणमूलक होने के कारण प्रगल्भता नहीं पाता। अतः यह आवश्यक है कि रचनात्मक प्रतिभा से सम्पन्न नारियाँ अपने जीवन के सम्पर्क में ज्ञान के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहें।

नारी का भावत्व तथा आर्थिक विपन्नताएँ भी उसकी प्रणयन क्षमता में दो प्रबल बाधाएँ हैं। निम्न पालन में व्यस्त रहकर वह प्रायः अपनी भावनाओं को रचनावद्ध करने का अवसर नहीं पाती। आर्थिक विपन्नताएँ भी कुछ कम बाधक नहीं हैं। अविवशता पर धारा में पुरुष का आय गृह-संवर्धन के लिए अपेक्षा रहती है जहाँ स्त्री कम आय में निवृत्ति करने के उपायों की खोज करने में ही अपनी प्रतिभा का व्यय कर देती है। आर्थिक समस्याओं में मुक्ति पान के लिए वित्तीय परिवार में स्त्रियाँ जानातिना की खोज कर लेती हैं। हममें उनका वाक-ज्ञानता बढ़ती है किन्तु बाधभार और समस्याभाव के कारण साहित्य में उनका स्थिति पर्याप्त कठिन रहता है। उपयुक्त बाधाओं का यत्नकेन्द्रित निवारण ज्ञान पर भी कभी कभी प्रतिकूल सामाजिक धारणाओं अथवा व्यक्तिविशेष की हठमिता के कारण नारी का लगन की स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हो पाता। उदाहरणस्वरूप पितृशक्ति में साहित्य के प्रति अनुराग रखनेवाली नारियाँ अनेक अवसरों पर पतिगृह में साहित्य-नग्न की सुविधा और अपेक्षित प्रोत्साहन नहीं पाती। समुद्र की राशि नीतिशास्त्र के कारण उन्हें अपना शक्ति पर नियंत्रण रखना पड़ता है। हमने विपरीत ऐसी उदाहरणों को भी खोज का जा सकता है जहाँ विभाज्यता का पतिगृह में लगन के लिए अधिक उपयुक्त वातावरण मिला हो अथवा इस और उनकी प्रवृत्ति बढ़ी हुई हो। तथापि यह

कथन का निस्तारता स्वतः सिद्ध हो जाएगी। नारी की रचनात्मक प्रतिभा पर दूसरा प्रश्नचिह्न यह कहकर लगाया जाता है कि वह प्रायः मौनिक साहित्य का गृजन नहीं करती। हम प्रकारक कथन नारी के प्रति याय नही करते क्यानि कथन भाग-भाग के आधार पर अनुसरण का आरोप उचित नहीं है। वस्तुतः युगविशेष के चलन में भाग का समता दुर्लभ न होकर स्वाभाविक ही मानी जाएगी। मौनिक प्रतिभा में नूय दाधार रचिकाओं की रचनाओं को ध्यान में रखकर सामान्य धारणाएँ बना लेना अयोग्य है और फिर अनन्य पुरुष नरक भी पूर्ववर्ती रचनाओं के भाषा का अनुसरण करने पाय गए हैं। निश्चय ही आत्मचरिता में हम प्रकारक पूर्वाग्रह का स्थान नहीं दिया जाना चाहिए। तथापि नारी जागरण के वर्तमान युग में यह स्वाभाविक ही आगा कि नारी का काय क्षमता के परिणामों की पुरुष की काय प्रणाली से तुलनात्मक समीक्षा की जाए। यद्यपि नारी और पुरुष की बौद्धिक क्षमताओं में अंतर नहीं है तथापि सामाजिक विषमताएँ एवं कतिपय स्वभावगत विपत्तियों के कारण उनमें रचित भेद का हाना स्वाभाविक है। यद्यपि अथवा वस्तुविशेष के सम्बन्ध में उनकी प्रतिनिधिता में भी अंतर रहता है। श्रद्धा महानुभूति मौनिक कथनादि का गुणस्वी चरित्र में सहज सुलभ है उनकी अभिव्यक्ति में वे पुरुषों से अधिक सफल रहती हैं। तब दिया जा सकता है कि समाज राजनीति विज्ञान आदि में सम्बद्ध काम नारी में पुरुष नारी की अपेक्षा अधिक जागरूक रहता है अतः कथा-साहित्य में बहिष्कार की दृष्टि में उस अधिक सफलता मिलती है किन्तु यह परिस्थितियों का एकांगी विवरण है। नारी के क्षेत्रों से सबका अपरिचित नहीं है। जिन उच्च शिक्षा प्राप्त नारियों को पुरुषों की भाँति सामाजिक स्वतन्त्रता प्राप्त रही है वे विविधविषयों की अध्ययना की रचना में पुरुषों से पीछे नहीं रहती। तथापि यह स्पष्ट है कि अधिकांश नारियाँ को विविध क्षेत्रों में कायानुभूति का अवसर प्राप्त नहीं होता। उनका विकास क्षेत्र पारिवारिक जीवन है और तत्सम्बद्ध समस्याओं के निपटारे में उन्हें जा सफलता प्राप्त हो सकती है वह पुरुषों द्वारा रचित कथा साहित्य में दुर्लभ होगी। मान लें कि शिक्षा प्रीति सौतिया डाह आदि विषयों पर स्त्रियाँ जितने अधिकार में निरत सकती हैं पुरुष उनकी समझता का परिचय नहीं दे सकते। गृहस्थिता विषयों के अतिरिक्त मातृत्विक एवं पौराणिक अध्ययनों के चलन में भी नारी को अपेक्षाकृत अधिक गौरव प्राप्त हो सकता है। भाव पत्र ही नहीं कथा पत्र में भी नारी को अपना पृथक् विपत्तियाँ मुखरित हानी हैं। सामान्यतः वह पुरुषों की अपेक्षा विशेष बातें बतलाती है। यहाँ कारण है कि महिलाओं के कथा-साहित्य में सत्ता की सामिक योजना और मुक्त बरा के सजाव प्रयोग का सहज ही दया जा सकता है।

हिन्दी साहित्य का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन करने पर हम दायत है कि प्रतिभा का दृष्टि में समान स्तर पर भी स्त्रियाँ साहित्य-सेवा में पुरुषों से पीछे रही हैं। हमें अनन्य कारण हैं—शिक्षा की अपयान्त्रिता अध्ययन का सामाजिक काय क्षेत्र में पापकता के अभाव पारिवारिक उत्तरदायित्वों समाज और परिवार के विरोध एवं बाधित

प्राप्ताह्नक के अभाव के कारण स्त्रियाँ साहित्य रचना में अपनी कृतकाम्य नहीं हो सकी। या तो भारत में पुरुष भी पूणतः माया नहीं हैं किन्तु नारी जाति शिक्षा में जीर भी अधिक वंचित रहा है। विद्या के अभाव में प्रतिभा होने पर भी साहित्य के अन्तर्गत में आवृद्धि नहीं हो सकती। वस्तुतः शिक्षा का अभाव ही है और अध्ययन की कमी उसका परिणाम। यद्यपि बल अन्वयन से साहित्य रचना सम्भव नहीं है किन्तु इसमें यह नहीं कि ज्ञान धारा का व्यापकता प्राप्त करने और विचारों का प्रौढ़ बनाने में प्रयत्न जीवन का विषय भाग रहा है। अध्ययन से अनुप्राणित रचना में भावना एवं कला का उच्च स्तर निरंतर रूप में उत्पन्न होता है और वास्तविक रूप में होता है। अशिक्षित नारियाँ निरंतरता के कारण कम प्रवृत्त नहीं हो पाती और शिक्षित स्त्रियाँ भाग्यशून्य में लिप्त रहने के कारण प्रायः अध्ययन की सुविधाओं में वंचित रहती हैं। सकारण गृहस्थों के भाग और पण प्रथा के कारण नारी का पुरुष की भाँति साक्षात् ज्ञान के लिए व्यापक अवसर प्राप्त नहीं हो पाता। फलतः नारियाँ अपनी रचनाओं में जीवन की विविधता का उपयुक्त प्रतिफल नहीं हो पाती। नारी का भ्रमण प्रायः उसके परिवार तक ही सीमित रहता है। प्रतिभा के उदय के लिए अपेक्षित समाज ज्ञान के अभाव में उसके समस्त व्यक्तिक और पारिवारिक समस्याओं का ऐसा ज्ञान रहता है कि वह अपनी रचनाओं में प्रायः उन्हीं का अभिव्यक्ति कर पाती है। जीवन ज्ञान के अभाव में अध्ययन के कृतियाँ अध्ययन में प्राप्त प्रेरणा के क्षेत्र पर साहित्य रचना का प्रयास अनुकरणमूलक होने के कारण प्रासनीय नहीं आता। अतः यह आवश्यक है कि रचनात्मक प्रतिभा से सम्पन्न नारियाँ जल जीवन के सम्पर्क में आने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहें।

नारी का भौतिक तथा आर्थिक विषमताएँ भी उसकी प्रणयन क्षमता में ही प्रबल बाधाएँ हैं। शिक्षा प्राप्त में व्यस्त रहकर वह प्रायः अपनी भावनाओं का रचनात्मक करने का उत्तर नहीं पाती। आर्थिक विषमताएँ भी कुछ कम बाधाएँ हैं। अधिकांश परिवारों में पुरुष का जाय गृह-मचालन के लिए अपेक्षित रहती है अतः रत्न कम जाय में शिक्षा करने के उपायों की खोज करने में ही अपना प्रतिभा का व्यय करती है। आर्थिक समस्याओं में मुक्ति पाने के लिए बलिपय परिवारों में स्त्रियाँ आत्मविकास की खोज करना हैं। हमें उनका ज्ञान पाने का प्रयत्न है किन्तु कार्यभार और समस्याभाव के कारण साहित्य सेवा उनके लिए पर्याप्त बर्तन रहता है। उपयुक्त बाधाओं का यत्नेन निवारण होने पर नारी के भाव प्रतिबूत सामाजिक धारणाओं अथवा व्यक्तिविषय के अर्थमिता के कारण नारी का ज्ञान की श्रवणता प्राप्त नहीं हो पाती। उदाहरणस्वरूप पितामह में साहित्य के प्रति अनुराग रचनवादी नारियाँ जिनके अवसर पर बलिपय में साहित्य-संरक्षण का सुविधा और अपेक्षा प्राप्त हो पाती है। समुदाय का रीति नानिवा के कारण उन्हें अपनी रीति पर नियंत्रण रखना पड़ता है। इसके विपरीत एम उदाहरणों का भाग्य का भाग्य है जब किसी युवती का बलिपय में ज्ञान के लिए अधिक उपयुक्त वातावरण मिलता है अथवा इस भाग्य उमकी प्रवृत्ति बढ़ी हुई है। तथापि यह

निश्चित है कि सामाजिक विरोध नारी की रचना प्रतिभा का कठित करण म गन्धर्व रहा है।

उन बाधाओं का परिहार करके साहित्य रचना में भाग लेनेवाली महिला का भाव प्रायः बाधित प्राप्ताह्वन नहीं मिल पाता। कुछ पुष्पा का यन्त्रित्राग ही नहीं होता कि स्त्री कभी त्रिस्त मकता है। किन्तु उन पुष्पा की मनावृत्ति के विषय में क्या कहा जाय जो तीन प्रक्रिया में युक्त होने के कारण नारी के कापनिश नाम से साहित्य रचना करती है। हमारा मत है दयाशंकर मिश्र की ओर है जिन्होंने शीघ्र के माना गोप्य उपन्यास में यन्त्र स्वीकार किया कि अनाता चट्टापायाय के नाम से त्रिस्त मत्र उन 'याम' (मरोचिका ममिधा पायय बुभन दीप जाति) वस्तुतः उन्हा का रचना है। अतः यन्त्र उत्तनाय है कि य तथ्य चित्र का पूव पत्र प्रस्तुत करती है उत्तर पत्र यन्त्र कि तन्त्र में अधिकांश बाधाएँ निम्ना के प्रकार में गन गन कर रहा रहा है। तन्त्र के स्वतन्त्र हान पर महिजा का समाज के विविध क्षेत्रों में कार्य करने का अवसर मिलता है। प्रतिभा अन्त्याम तथा लगन से वह बहुत कुछ कर सकती है और कर भी रहा है।

समकालीन परिस्थितियाँ

प्रस्तुत ग्रन्थ में भारत के स्वाधीनताकालीन परिवर्ग में निहित महिजा कथानाहित्य की समीक्षा का गर्भ है। अतः यन्त्र उचित ज्ञान कि यहाँ स्वतन्त्र भारत के बहुमुखी विकास पर प्रतिपादित कर दिया जाय। स्वतन्त्रता उपनिषद् के उपरान्त भारत निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर रहा है। यहाँ हम अवधि में देश की राजनीतिक सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों की समयम चर्चा की जायगी। १५ अगस्त सन १९४७ का स्वतन्त्रता की घोषणा के पश्चात् आरम्भ में भारत की स्थिति आन्तरिक रूप में किंचित विचलित रहा। भारत जानिक जागर परन्तु भाग में विभक्त हो गया जिसके परिणामस्वरूप पाकिस्तान में हिन्दू यहाँ पर जान लग और यहाँ में मुसलमान पाकिस्तान जान लग। हम स्थान परिवर्तन में अन्तर्गत की अन्तरण हत्या सूट आदि की गई कि उमा स्मरण में मिह्रन भी हाना है। दण्ड विभाजन के फलस्वरूप नामका का अन्तः समस्या का सामना करना पड़ा। इन समस्याओं में अन्तराधिया का वमान की समस्या मयप्रमुख था। २६ जनवरी सन १९५५ का भारत का संविधान बना और भारत साम्प्रतिक अर्थों में सर्वोच्च मन्त्रायक स्वतन्त्र तन्त्र कहान का अधिकारी तन्त्रा। सरदार वल्लभभाई पटेल ने भाग्य का समस्त विचार दृष्टि रियामता का समन्वित करके एक सघ राय का नाव चला। हम समय पक्षधरों में यात्राओं का भाव्यवस्था की गई जिनके माध्यम में तन्त्र के अभाव का एक एक करके दूर करने का प्रयत्न किया गया। इन पक्ष धरों में यात्राओं में वक्ता का दूर करने के लिए कवि विद्यन गति उद्योग धर्म आदि के विकास का प्राथमिकता तन्त्र।

भारतीय जनता का काग्रेस शासन के प्रति अगाध विश्वास रहा है। प्रजातांत्रिक राज्य की स्थापना के कारण जनता की राजनीति में भाग लेने का पूरा अधिकार दिया गया। श्री जवाहरलाल नेहरू के समन्वयवादी या तटस्थ दृष्टिकोण तथा उदारमता राजेन्द्र प्रसाद जी के अथक परिश्रम से देश की राजनीतिक परिस्थिति शान शान सुवरती गई और भारत ने शीघ्र ही विश्व के जय महान देश के मध्य अपना स्थान बना लिया। नेहरू जी ने हम अमेरिका जाति सभी देशों के साथ भ्रातृपूज्य सम्बन्ध रखे और विरोध के अवसरों पर ध्यानात्मक समझौते का माग अपनाया। किन्तु भारत अभी स्वतन्त्रता का सुख भोग भी नहीं पाया था कि देश पर चीन ने आक्रमण कर दिया। यद्यपि इस आक्रमण का प्रतिरोध यथाशक्ति किया गया तथापि पड़ित नेहरू की समझौते की नीति से अधिक काम जनता क्षुब्ध हो उठी। देश की जनता में अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए सामूहिक उत्तजना एक उत्साह की प्रथम बार अभिव्यक्ति हुई। अभी तक चीनी आक्रमण की यह समस्या सुलझ नहीं सकी है। कश्मीर-समस्या भी इन दिनों अधिक उग्र रूप धारण कर चुकी है। भारतवासी कश्मीर को भारत का ही अंग मानते हैं परन्तु पाकिस्तान अपनी कूटनीति से निरन्तर कश्मीर की सीमा पर आक्रमण करने के अवसर की ताकत मरहता है। इन आन्तरिक बाधाओं के रहित हुए भी भारत ने विश्व राजनीति में समय समय पर महत्वपूर्ण योग दिया है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के प्रारम्भिक वर्षों में भारत की सामाजिक अवस्था अत्यन्त गौचनीय थी। पाकिस्तान से आए हुए अनेक व्यक्ति बेघर हो गए थे चारा और लूट गमोट हत्या और हाहाकार मच गया था। परन्तु धीरे धीरे इस परिस्थिति में सुधार हुआ और प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली होने के कारण यह स्थिति सुधरती गई। भारतीय संविधान में समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार दिये गए। वर्ण व्यवस्था की रूढ़ि को समाप्त करके पिछड़ी हुई जातियाँ तथा जख्म वगैरह की देश का सुधारने के लिए भरमक प्रयत्न किया गया। नारी की स्थिति पुरुष के समान ही गौरवमान हो गई। इन्दिरा गांधी विजयलक्ष्मी पंडित, राजकुमारी अमृतकौर आदि अनेक स्त्रियाँ ने उच्च पद पर आसीन होकर नारी जाति को सम्मानित किया। प्राचीन रूढ़िवादी पूर्णतया टूट गए समाज में शिक्षा का गौरव बढ़ा और निम्न वर्ग (जूत बनाना कपड़ा सया करना आदि) का उच्च वर्ग द्वारा अपना लिए जाने से इनके प्रति घणा की भावना भी दूर हो गई। इस प्रकार पूँजीपति मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग एक-दूसरे के निकट आने लगे। वस्तुन स्वतन्त्रता के बाद जनता का अपना सामाजिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए पर्याप्त अवकाश मिला है।

अप्रज्ञान भारत की आर्थिक अवस्था को बहुत गिरा दिया था। व भारत से बच्चा मान ले जाकर उसे अपने देश के कारखानों में अनेक रूपा में ढालकर पुनः भारत में ही दुगुन लाभ में बचने थे। इससे भारतीय उद्योग धंधा का भारी हानि पहुँची थी। इसलिये देश के स्वतन्त्र होने पर प्रथम पंचवर्षीय योजना में सर्वप्रथम

अपि और औद्योगिक विकास का आरंभ मध्य ध्यान दिया गया। अब तक तीन पंचवर्षीय योजनाएँ बन चुकी हैं, जिनका पन्चस्वरूप उद्योग धर्म आन्वयजनक प्रगति कर रही है। पहली योजना का अनिश्चित इजानियर भाग विन्मा में बुनाई तीन धर्म अनुअर उद्योग शिक्षण के अनेक विद्यालयों के खर्च जान के कारण भारत के अर्थनीयार का अन्वित और ताहारा अनेक मशीनों का निर्माण करने में समय हा गया है। सरकार पूर्ण शक्ति में अन्वित म मन्त्र है उसमें अनेक व्यक्तियों का विन्मा में अनेक ही समय भर्त्ता तकनीकी शिक्षा भाग निवाह है। इसमें निरंतर सरकार ने विन्मा में अन्वित भाग दिया है। हरि का दया का सुधारन के लिए अनेक कार्य बनाए गए हैं। अन्तर्भाषण तगन बांध उद्वेगनीय है।

श्रमिका तथा किसानों की दया का सुधारन का आरंभ वर्तमान भारतीय शासन में पर्याप्त ध्यान दिया है। अब सरकार उद्योगिक शक्ति का भूमि अन्वित है तो अन्वित करना करना है। जमानारी प्रथा समाप्त कर दा गढ़ ही और उत्पादन में बढ़ि हा रहा है। श्रमिका के कार्य के घण्टा भाग नियंत्रण कर दिया गया है और व अनेक अधिकारों के प्रति सजग है। सरकार में पूँजीपतियों का आग्रह पर भारी कर लगाकर अधिक सन्तुलन स्थापित करने का और भाग ध्यान दिया है। निम्न योग का आर्थिक दया अनेक परिणाम से किमा माता तक सुधार गया है। कवन मध्यम वर्ग ही ऐसा है जिस पर एन और सरकार के भारी करा का दबाव है ता दूसरा और निरंतर बढ़ती हुई महंगाई भाग उम विवर्ण किए है। किन्तु समय रूप में भागन का आर्थिक स्थिति पहल से बहुत अधिक उत्तम है। प्रतिवर्ष अन्वित के द्वारा अन्वित म सन्तुलन स्थापित कर दिया जाता है और धन की कमी का करा के द्वारा पूरा करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

विज्ञान की उत्पत्ति के साथ ही भारतीय संस्कृति भी आधुनिक रूप में रगती जा रही है। जनता अब कवन आध्यात्मिकता का महत्त्व न देखकर व्यापारवादी दृष्टिकोण का भाग उपयोग मानने लगी है। अन्तर्ध्यातव्य म बौद्धिकता अपने चरमात्मक पर है। प्राचीन संस्कृति का भाग बौद्धिक दृष्टिकोण से विनियोजन किया जा रहा है। पश्चिम के मना वाननिक फायदा का भाग भारतीय संस्कृति पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। वस्तुतः आवागमन के उत्तम माधन के कारण किमा भाग दया की संस्कृति दूसरे प्रभाव से अछूती नहीं रहना। अन्तर्ध्यातव्य भारतीय संस्कृति अनेक संस्कृतियों का अपने में समेटता हुई निरंतर मानव के माधन का आरंभ कर रहा है। अन्तर्ध्यातव्य म अनेक म माधन से हा चिन्तन किया जा रहा है। अन्तर्ध्यातव्य म प्रसार माधन के दृष्टि में अन्तर्ध्यातव्य म विभिन्न संस्कृतियों का अन्वित मन्त्रितन दृष्टिकोण हाता है।

प्रस्तुत प्रबंध के विषय में

प्रस्तुत ग्रंथ में वर्तमान कथा विनिर्माण की प्रतिभा का कानूनमानुसार विवर्णन किया गया है अर्थात् उनके माधन का प्रवर्तितमूलक अनुमधान न करके कृतियाँ के

रचना-काल का ही प्राथमिकता दी गई है। कुछ रचनाओं पर सन-सवन का उत्पन्न न हान में ललिकाओं व ऐतिहासिक त्रम निर्धारण की समस्या प्रारम्भ में बड़ी विकट प्रतीत होती थी। कुछ लेखिकाओं के पुस्तिक सूचक नाम अथवा लेखका व स्त्रीलिङ्ग सूचक नाम भी जटिलता का बटान में सहायक हुए। सभी प्रकार एक ही नाम की दा ललिकाओं द्वारा प्रायः समानांतर रूप में रचना करने पर यह जानने में कठिनाई रही कि व एक ही है अथवा न भिन्न व्यक्तित्व हैं। इन सबसे बड़ी समस्या पुरुष लेखका द्वारा स्त्री के छद्म नाम से रचना करने की सम्भावना में उत्पन्न थी। ज्ञान-वान अनुमान परामर्श आदि का आधार पर न समस्याओं का यथोचित समाधान करने की चेष्टा की गई है।

प्रस्तुत प्रवेश में ललिकाओं की मौलिक रचनाओं की ही समीक्षा की गई है अनुवादों की नहीं। कारण यह है कि अनूदित रचनाओं में लेखिकाओं के भावा अथवा विचारों का मूल्यांकन संभव नहीं होता। प्रबंध की रचना में सबसे अधिक कठिनाई सामग्री सचयन का थी। ललिकाओं की रचनाएँ इतने स्पष्ट रूप में प्रकाशित होती रहीं ह कि कि-ही एक दा स्थानों पर उनके सुनने होन का प्रश्न ही नहीं उठता था। प्रबंधगत सामग्री का राज मने मुख्य रूप में निम्नलिखित पुस्तकालयों में की था—

दिल्ली

मारवाणी पुस्तकालय दिल्ली पत्रिक नाबरी सनातन धर्म कानून रामजन कालज लड़ी श्रीराम कालेज दण्डधु कालज आदि के पुस्तकालय दिल्ली विश्वविद्यालय का पुस्तकालय।

आगरा

नागरीप्रचारिणी सभा चिरजीलाल पुस्तकालय।

इलाहाबाद

सम्मेलन संग्रहालय भारती भवन पुस्तकालय।

वाराणसी

नागरीप्रचारिणी सभा का आयभाषा पुस्तकालय।

कलकत्ता

नगनन नाबरी बड़ा बाजार पुस्तकालय हनुमान पुस्तकालय मारवाडी पुस्तकालय मूरज जालान पुस्तकालय।

मैं इन पुस्तकालयों के प्रबंधाधिकारियों की आभारी हूँ जिनसे सहयोग व बिना सामग्री का व्यवस्थित सवर्नन प्रायः असंभव ही रहता।

हिन्दी विभाग

माहन कॉलेज पार मिमन

डिप्टेम कानानी नई दिल्ली।

—उर्मिता गुप्ता

प्रथम प्रकरण

स्वातन्त्र्योत्तर काल की प्रमुख कथा-लेखिकाएँ

श्रीमती सत्यवती मल्लिक

श्रीमती सत्यवती मल्लिक ने अनेक चरित्रप्रधान सधु कथाओं का प्रणयन किया है जिनमें स अधिकांश रखाचित्र के गुणा से युक्त हैं। अब तक उनके चार कहानियाँ संग्रह प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें इस प्रकार हैं—'दो फूल बग़ार की रात' जिन रात नारी हूँ' की साथ। इसमें जिनमें उनकी 'दुकीस' तथा 'उनास' कहानियाँ संगृहीत हैं। इस प्रकार कुछ कहानियाँ की संख्या ज़रूरी होनी चाहिए किंतु वास्तविकता यह है कि जो आदमायिकाएँ किसी एक संग्रह में विद्यमान हैं उनमें से अनेक अन्य नकलना में भी स्थान पाती हैं। फलतः उनकी कहानियाँ की संख्या केवल इकतालीस है जिनके पापक अधोलिखित हैं—'मानी की नडकी' नीरम कश्मिर में हुसैन जीवन में 'या नारी' जिन, 'मानी' दो फूल बग़ार में उच्छ्वस जिन रात की मुक्ति इनकी जात की और चिट्ठा नारी हूँ' की साथ मिट्टी सगाई के दिन, एक सगाई द्रुत नूरी यात्रा में सगाई प्रमा व क्षण पर जो चला जाता वसंत है या पतझड़ बग़ार की रात, 'दयारी' में 'यामा' उलमन, स्मृति सुभाना भस्मर आसू उल्लेखना दधि 'गड' गह घाना एक 'मन' गुडस टेल।

पूर्वोक्त कहानी संग्रहों का तिरिक्त सत्यवती जी द्वारा सम्पादित कृति 'अमिट रेखाएँ' में भी उनके तान रेखाचित्र (जून दली वदा नूरी) संग्रहित हैं। इनमें स यहाँ जून ददा 'पीपक' रेखाचित्र की ही आनाचना की गायी क्योंकि अन्य दो रेखाचित्र तो पूर्वोक्त मञ्चलनों में स्थान पा ही चुके हैं।

कथाना

आराध्य लखिवा की यह सहज प्रवृत्ति है कि व एक पाप व चारा आर घन नाआ का ताना घाना बुनकर कथानक का मण्डि करती है। इसी कारण उनकी रचनाएँ कहानियाँ का अथवा रेखाचित्र की सीमा में अग्रिम जानी हैं। वस्तुतः यह रेखाचित्रात्मक कहानियाँ कहना अधिक उपयुक्त होगा। उनकी कहानियाँ में घटनाएँ जटिल हैं कथित गथा में तो जाया व अज्ञान सधु क्षणा का कथानक का रूप र दिया गया है—

एक सन्ध्या नूरी व क्षण यात्रा में बेकारी में लया बनी और निरी गीतों का निर्या
इस प्रसंग में उल्लेखनीय है। उदाहरणार्थ एक सन्ध्या गाएक काना में कथाना तब
पतना है कि एक स्त्री को बाजार में बीजें खरीदने समय एक वरुण पुत्रा मुता २१।
जान हुआ कि एक निधन धर्मिक बाना ताग के नीचे दब ग ॥ अभिज्ञान तन्त्र गीत
पर कही थाव न आ जाए ॥ म नय में उम स्त्री में चान्दर भा उम बाना का हृदय में न
नगाया और वह चीखता गगडाता हई उठकर गनी गई।

सत्यवतो जी की प्रतिनिधि कहानिया व है जिनमें उगान ममा २२ उपनि
दीन हीन मूक पात्रा (कुनी मवक घोखाना हरिजन जानि) का मन्त्र निष्पत्ति
एक दुर्भाग्यजन्य यथा का मुखर अभिपक्षि प्रान्त की है। माना का तन्की नूरा प्रमा
पर जा चला जाता एक सन्ध्या हसन स्यामा सुभाना ॥ नकी जानि गात्राता वकाश
में कदी जानि कहानिया ॥ म न्त्रि स पत्नीय है। उदाहरणार्थ प्रमा गीतक कहानो में
हरिजन बाना प्रमा व जन्ड तथा राख व किराव की सजाव भाकी प्रमन का ग है।
जाताय राति व अनमार जपपाय में ही विवाह हा जान व पक्षस्वरूप वध ॥ व भार में
बाभिन उस हममुख कि तु अन्तर में कानामयी बाला का यह रेखाचित्र ज्यन मारिम
एक वरण वन पडा है। उक्त कहानिया म सविता ने जहाँ पीन्नि पात्रा व प्रति मवन्ता
एक महानुभूति का प्रकाशन किया है यहा अभिज्ञानवर्गीय पात्रा व प्रति दग्गपूण दलि
कोण का परिचय भी दिया है। उदाहरणार्थ मानीकी नटकी गाएक कानो का कथान
नट प है— देवकुमार का परिवार गर्मिया में पहाड़ पर गया ता बहा ॥ नन नह पक्ष
विजय का परिचय मानी की ॥ ही नका मवता स दुधा। विजय न उस नडा करम
ताग जानि मिखाकर उसन न ह हृदय की जीत दिया। जय नवकुमार पन्ना स लाट
आए ता मुक्ता व हृदय का गहरी ठस पहुचा। विजय जस साथी का पावर उसन अपन
चरवाहे साधिया की दुःकार दिया था कि तु अब वह निराश्रिता रह ग ॥ उधर पर
नौटने पर तब विजय की बजा उम चिताने व निए उसक सामन माता की नडका की
चचा करती ता व महु पुता गता कयाकि उसक निए ता यह पमान था। इस प्रकार
बान मनाविना ॥ का सहायता स तेलिका न सामाजिक भन्नाय का मारिम चिन्ताकन
किया है।

कनिपय कहानिया म गतिवा न बाग मनाविना का अत्यंत सू में एक सहन
निप्रण दिया है। माना का नका व अतिरिक्त भाई वलिन साथी दो पून नकी
जात तथा प्रमा गीतक कानिया ॥ सका प्रमाण हैं। ॥ नम भान वनि कहाना अत्यंत
राखन एक मनाविना वन पये है। ॥ नका कथानक ॥ प्रकार है— निमना और
कमन वलिन भा ॥ ॥ निमना बाना वी वह मन्व कमन का चिन्ता रतानी रहती पा।
माना की वी ॥ नकार का उम पर का प्रभाव न पत्ता था। एक निन जलूस में कमन
को ला गया ममभवर निमना ध्यानु हों उठी वन रोई और उसके नौन पर प्रमाथु
प्रवाहित करने लगे। सावित्री अपनी पुत्री व मन में छिपी इस स्नहमयी बहिन का परि

चय पावर मुख्य हो उठी। 'सत्यवती जी की यह कानूनी जयत प्रसिद्ध हुई है और अब तक अनेक प्रतिनिधि कहाना सक्कना में स्थान पा चुकी हैं। इसकी सफलता का मुख्य कारण यह है कि इसका कथानक कल्पित न होकर सत्य की भाँति बना है। इस विषय में श्रीमती सत्यवती मलिनक के नाम में कहाना क्या और कम मिलता है। मैं यह उद्धरण दूँ— दा फून कहानी सच बनना है केवल एक भाव का प्रस्फुटन करने के लिए। बिना नाई बहिन में एक लड़की के जन्मजात मुझे इतना प्रभावित किया मानो बार बार कोई अदरस बह बठा—इह समेट ला। यह छाड़न का पात्र नहीं है।'

सत्यवती जी ने आसू दृष्टि, अघड एक भनक, दिन रात नारा हृदय का साथ आदि अनेक कहानियाँ में नारा हृदय की सत्यता, भावुकता, मानव की कमक एक परिस्थिति जनित व्यथा के मर्मस्पर्शी चित्र अंकित किए हैं। उदाहरणार्थ अत एव विधुर जमींदार के घर बठा हुई बतनुमा नारा का रत्नाचित्र है। पति की मृत्यु के बाद उसके छोटे भाई उसका विवाह हुआ था उसका भी मृत्यु पर उसका चचेरे भाई से किन्तु किसी निरर्थक सदेहवश वहाँ से जो निकाली गयी सक्कना ने भाग दिया और उस एक विधुर जमींदार के घर उमर तथा उसकी मौमी के बठोर नियंत्रण में जीवन काल को बिता होता पड़ा। इसा प्रचार दृष्टि में एक ऐसी नववधू का कारण चित्र है जो सुन्दर न होने के कारण पति का प्रसन्न न कर पाई फलतः पति अविनाश ने उसका खर्च का प्रयत्न करते दूसरा विवाह कर लिया और उससे उपाय पुत्री को पालन पोषण के लिए एक मिन के घर भेज दिया। अनन्त प्रगति की उस दशाता वधू के मन में मन्त्र के लिए मातृत्व का कथक व्याप्त हो गई और उसकी दृष्टि में भाँति करण ने घरा डाल लिया। 'माँ की लड़की, नाई बहिन, माँ की, 'यम न है या पनभइ' की एक अनेक कहानियाँ में सत्यवती ने गार्हस्थ्य जीवन का मधुर भौतिक प्रस्तुत की है। मिदवा कहानी में भाँति कथानक का अन्त हुआ है 'मुझसे टन' में हास्यरसपूर्ण घटनाओं की आयोजना की गई है और 'जुना ददी में जूनी' में अथाह चला माँ का सहृदयता का चित्रण हुआ है जिसमें नारामार पात्रों में उनकी सत्यता तथा उमरे सहपात्रियों का आहार, आश्रय आदि देकर सेवा की।

उपमयुक्त विशेषताओं के अनिवार्य सत्यवती जी का कहानियाँ का अर्थ उत्पन्न नीय गुण इस प्रकार हैं—(अ) वे प्रायः आत्मकथन की पंक्ति में लिखित हैं (आ) उनमें अनुभूतिजय गार्हस्थ्य का समावेश हुआ है (इ) उनमें कथन रस की भाँति प्रामाण्य रहा है (ई) कथानक अथवा अपेक्षा उनमें विचाररस तथा भावार्थक अथवा प्रासंग्य है। उद्दिष्ट पात्रों के चलाचल हाव भाव मनोभाव अन्तर्कालीन जीवन घटनाओं आत्मचिन्तन आदि साधना से प्रत्येक कथानक का विकास हुआ है। हम

श्री यथित हृदय के वस कथन में सहमत नहीं है कि उनकी अधिकांश कहानियाँ में जीवन के सामीप्य की अपना भावकता की प्रशंसा है— सत्यवती की कहानियाँ में भावकता का अंग अधिक है कि न किसी निम्न कहानी में जीवन का अधिक सामीप्य भी है।^१ वस्तुतः उनकी कहानियाँ में न दोना गुणों का समन्वय हुआ है।

चरित्र चित्रण

सत्यवती जी की समय कहानियाँ चरित्रप्रधान हैं। प्रायः प्रत्येक कहानी में उन्होंने एक पात्र का लक्ष्य भर रखा है और उसके जीवन का कुछ मार्मिक घटना या तथा उसका चरित्र की स्थिति एवं सूक्ष्म प्रवृत्तियों को ही कथानक का आधार प्रदान किया है। समाज का पान्ति एक उपनिषद् पात्रों के लिए सत्विका ने अपने हृदय की समस्त कण्ठा एवं सवन्ता उड़ान दी है। एक स या म मजदूर का प्रमा में हरिजन श्रमिका प्रमा की जाति में गिराव और गोपान नामक दो पहानी मकर पर जा चला जाना में लक्ष्या नामक पहानी घोखाला बजारों में का जन्मो महाराजी कदी में कदी मुभाना में धरतू मकर मुभाना नि रात में गोआ निवासिनी निधन युवती आनि पान की प्रचार में हैं। सत्विका ने एक ओर इनके अंतर का यथा एक मनोवन्ता का मार्मिक चित्रण किया है ताद्वारा और उनकी सत्तागीलता स्नेह सेवापरायणता विश्वास आनि गुणा का भी सहज प्रकाशन किया है। अभिजातवर्गीय पात्र अपने स्वार्थ के लिए निम्नवर्गीय पात्रों से सम्पर्क रखते हैं किन्तु उन्हें अपनाकर अपना गौरव क्षीण करना उन्हें मेल नहीं उनकी-सी अलहता एवं निश्चितता भी ता अभिजात वर्ग में नहीं। इस प्रकार सत्यवती ने उक्त दोना वर्गों का तुलनात्मक मूल्यांकन करते हुए पान्ति वर्ग के प्रति सहानुभूतिपूर्ण एवं अभिजात वर्ग के प्रति व्यंग्यपूर्ण दृष्टिकोण का परिचय दिया है।

सत्यवती जी की अधिकांश नायिकाएँ समाज द्वारा उपेक्षित एवं परिस्थितियों द्वारा प्रताड़ित हैं। उदाहरणार्थ आँसू की मातपितृहीन शोभा किसी प्रकार उपेक्षित भा पत्नर बड़ी हुई तो विवाह में बाँध भरमय प्रेम करने पर भी पति ने उसका त्याग कर दिया। दृष्टि की नायिका सौन्दर्यहीन होने के कारण पति को रिक्त न पाई तो पति ने उससे उत्पन्न पुत्रों का एक मित्र में घर भेज दिया और स्वयं दूसरा विवाह कर दिया। यहाँ में एक दुखी यूनानी युवती की करण जीवन गाथा एवं सजग कमठ व्यक्ति का चित्रण है। अन्तिम प्रकार एक कनक में एक पीड़ित बच्चा का जीवन चित्र है जिने अनाथ पाकर भी पति का स्नेह हा दिया। पति के प्रति उसकी वितण्णा आनि नाम में उसका निरपेक्ष एवं वीतराग चरित्र का मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। अर्ध की माया तथा जीवन मध्या का गंगा भी ऐसा ही व्यथापूरित पात्र हैं। वृत्त की नायिका में भारताय गरीबी का समस्त विदग्धता करण और स्नेहा भावना मानो साकार

हो उठी है। 'वशाख की रात' में पन्ना के विचित्र आचरण हाव भाव एवं मनोभावों का स्थिति-सापक्ष मनोवर्णन जकन हुआ है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सत्यवती जी ने नायिकाप्रधान कहानियों में पीड़िता पानाशा की चेद्रबिन्दु के रूप में चुना है। इनके अतिरिक्त उद्दान नायकप्रधान कहानियाँ की भी रचना की है और उनमें भी प्रायः मुख्य सुविधाओं से वचित अभाग पाना के चतुर्भिः ही कथानकों का ताना बाना बुना है। हबीरा दाहवाना सुमाना कदी-गावान बिहारी आदि पूर्वोक्त पाना के अतिरिक्त हमन में हसन उत्तेजना में नरपति 'टुवार' में चित्रकार मुक्ति में महद्र और सगाद के तिन में विद्याधर नामक पान भी इसी श्रेणी के हैं। बान मनोविज्ञान के चित्रण में ललितवा विनोद सफल रही है। दाफूल में कमला पन्ना भापी आदि बालकों की बालाचित्र जिज्ञासा एवं चंचल मनोवृत्तियों में तथा भाई बहिन एवं माली की नटनी में बालाचित्र स्नेह के विविध प्रसंगा में बान-मनोविज्ञान के विविधरूपी सृष्टि चित्र अवित्त किए गए हैं। ललितवा का एक अन्य विषयता यह है कि उद्दाने पाना के आकार प्रकार हाव भाव वगैरह आदि का लक्ष्य अनेक सजीव चित्र अवित्त किए हैं। उदाहरणार्थ प्रभा कहाना में यह अवतरण देखिए—

ये दोनों बहनें कितनी अधिक फूर्तीनी खुशमिजाज और भला निव्वनवाला था। बड़ी बहन की आँख तेज दुःखितता की झलक नित ही है। नाकीनी नाक गिला हुआ चहरा यौवन के उमर का प्रकट करता था। नान नहगा धुती ओटनी साफ मुनरा काम। किन्तु छाटी यहाँ प्रेमा जब तब बिछर खूब का मनी आटनी में डका मावना चहरा छोटी नाक भुक्काय नना के साथ मरी आँखा के नामने से गुजर जाता। दाना बहनें एकमात्र खाना खाता एकमात्र भाड़ू लिये सफाई करन आता और काम धाम दाड़ यही पिछवा मड़क पर घूल में बैठ करेरा में मल रहा हाना।^१

इसी प्रकार अनेक 'गीपक' कहानी के प्रारम्भ में नायिका माया के 'यकिन'व एवं पहनाव का चित्रात्मक उल्लेख हुआ है।^२ वस्तुतः श्रीमती मन्मथीयमा की भाँति सत्यवती जी ने भी अपने पात्रों के अतबाह्य 'यकिन'व का सूक्ष्म विवरण दिया है। कनिष्ठ पान प्रागात्र आत्मचिन्तन की धानी में ही चित्रित किए गए हैं। उन कथनों के अपना ^३। उदाहरणार्थ 'गी और चिट्टा' में वगावाक का अविनित्व साकार नहीं है। उनकी वगैरह वगीधनि से ही लेखिका उमक 'यकिन'व का अनुमान लगाती हैं। इस प्रकार इसी कहाना में अनात पत्र प्रथक की हठी बहिन का चरित्र भी आत्मचिन्तन एवं भावुकता के द्वारा अनुमानित रहा है। नारी हृदय की माध में सम्बन्ध तथा गणनाग नामक नर्तिका में बहिन भाइ के सम्बन्ध का कथना करके लेखिका ने उनका मानवीकरण द्वारा मुख्य भावनाओं का प्रकट किया है।

१ पन्ना की रात पृष्ठ ५३

२ देखिये 'दिन रात' पृष्ठ ८४

कथोपकथन

जानो-य कहानियाँ में नाटकीयता की अपेक्षा वर्णनात्मकता का प्राधान्य रहा है। केवल उलूख 'गीपक' गल्प में सवाला के माध्यम से मुख्य कथाओं का विभाग हुआ है जैसा माली की चूकी ब्रिस्तान में जहाँ बेकारी में गांधी आदि अधिकांश कहानियाँ में केवल यत्र तत्र अत्यंत विरल वार्त्तात्माप की जापाना की गई है। नीतम बगी और चिट्ठी बगाल की रात स्मृति आदि भावप्रधान गल्पों में प्रस्तुत तत्त्व का एकांत अभाव रहा है। आलोच्य सवाला की उत्तमनीय विभापना यही है कि य अत्यन्त लघु साहस्य एव पानानुबल हैं। पाना के व्यक्तित्व को मगर अभिव्यक्ति दन में इनका निगम योगदान रहा है। उत्तरणाय बेकारी में 'गीपक' कहानी में कथानायक एव जलसा मन्नरानी का यह वात्तात्माप कितना सजाव है—

जाने क्या मैं अपने से भैंस से भया और अनायास ही मरान में मह पाछन हुए पछ बटा— जतने मनपाह गिन गई ?

उमर हाथ में चमकता हुआ एक रुपया था जिसका दम बार माथ से छजारर बना जीत रही बाबूजी—बच्च बने रहे बाबूजी ।

उमर भी मभ उमर बातें करना सुहान लगा । मन फिर पूछा कितने रुपय हो जान हाग ?

भगवान बनाय रहे बाबूजी । छ सात रुपए वन ही जाने है बाबूजी और कुछ बच नत —माँजी मन्त परवरिग करती है । अब यह बात है बाबूजी गरीब मानग कभी राध कभी न राध ।^१

उक्त उद्धरण की विभापता यह है कि सखिका ने तीन पाना की भाव भंगिमा मनाभावा तथा परिस्थितिजन्य परिवर्तना को एकसाथ नक्ष्य में रखा है। इन कहानियों में सवाला की एक-ज य उन्मैनीय विभापता यह है कि उनमें पानानुबल भावा की भाँति नापा में भा पानानुबलता का ध्यान रखा गया है। यही कारण है कि सुभाना का नायक सुभाना पजारी मिश्रित गान्धनी का व्यवहार करता है और नरी कहानी में तलिका गय गानिका नूरा ठठ काश्मीरी भाषा में वार्त्तात्माप करत हैं।^२ कदी कहानी में कदी ने ना म्मा प्रसार गढ़ का भीर नापा का प्रयोग किया है। एमे स्थला पर तलिका ने प्राय वात्तक में मून उक्तिना व हिन्दी अनवाद मी द दिय है निमम पाठका का भाव ग्रहण में कनिना नहा हली ।

१ बगाल की रात पृष्ठ १०२

२ दलित दो फूस पृष्ठ १४

दलित बगाल की रात पृष्ठ २१

४ दलित नारी हृदय की साथ पृष्ठ ६३

दशमोऽङ्कः

श्रीमती मलिक ने अपनी कहानियाँ स सामाजिक समस्याओं का अपना पात्रों की व्यक्तिगत समस्याओं का अवन किया है। कनिष्ठ कहानियाँ स विाप क सामा्यीकरण द्वारा कछ परिणाम निश्चित किय जा सकत हैं किन्तु ाविका की आर स एमा कोई आग्रह नह। ३। फिर भी अत्यन्त बिरल कहानियाँ स य तत्र समस्यातीन समस्या का विषय स जो व्यंग्यपूर्ण सवन किय गए हैं व उन्नेछनाम है। उन्नेछनाम वृत्त तथा पर जो चना चना गोपक ग पा स गहरी समस्या के प्रति बटु व्यंग्य द्रष्टव्य हैं—

(अ) वने वने मय्य नगरा म जहा एम पानी माँगना भी सनाक स बाहर के वहा म धार अका के जमान म भी हघर दाना म भसराता घर द्वादन लिए अवदय रता होगा ऐमा उनका अनुमान था। ४

(आ) यह नहा जानता था कि मलानी मवार उस दुनियाँ म आ रहा है जहा मरता जाना चारा कना घाखा आदि तनिक भा अनाखी वाने नहा। जीवन क मूल्य नहा प्रतिपण यन रह हैं। किसी की स्मृति म चार बीसू वहान का भी जहा अवकाश नहा और न व या मिलन पर ह्य प्रवट करना भी जहाँ उपहास जयवा जारी भावुनता गिा जाता है और मनुष्य का मन गिरनर यह मय सन्न मय माना चहान मा अनता जा रहा है। ५

नीलम गोपक जाप्यायिका के पूर्वाद्ध म नायक नामक अव (जा उक्त कहाना का नायक है) का वन बनापन भारत विभाजन क समय घटित नूटमार मारकाट आदि क मय्यात्मक चित्र अजित किय गए ह। उन्नेछनाम एक उक्ति अवलोकनाय ६— नि के वार वजय। पर चारा जोर अदभुत मनाना था तान नि का लमानार माका नूटमार क अनंतर भी लग अघबुता दुकाता बगमना, लम्भा क काना म नेटिया की नाति छिप बठ था। पुलिस की सारी तनिक आ निकल ता व नून दो। ७

प्रकृति की चित्राकन करते समय सत्यवती जी ने विवेक तमयता का परिचय दिया है। काशीर के पवतीम प्रदों (पहनगीक धानगर चन्नवाडी गुलमग आदि) का हिमाच्छादित चानिया भागों, वना नाना, मौला, जलप्रपाता आदि का वणन करते समय व ताम विमृत्त भी हो उठी है। नूरी, भाता का लटका नारी हृदय की माय, पर जो चना जाना हय, बदा स्मृति एक मय, गहवाना आदि जनक कहानियाँ स विविध प्रकृति दुमा की सुन्दर अवतारणा हुई है। नारी हृदय की माय और

१ वगल की रात पृष्ठ १०

२ वगल की रात पृष्ठ ८३ ८४

३ वारा हृदय का साथ पृष्ठ १६

गाहवाणा म सम्योदरा और गेपनाग ताम्बी गदिया की नसगिब धा का मातामुघरारी चिनाकन किया गया है।^१ हसन बहानी में बाम्मीर का यह अनुपम गीत्य अनन्यनीय है— वह बरी नाग वह मातण वह अछाबल नीत नभामण्डन व नीत छापी छोटी पवतमादाआ के विस्तृत घरा म दर तब फनी हुई बाम्मीर की हरा भरी घाटा स्थान स्थान पर दुःखन सी धवल जन धाराए फवत हुए भरन नगाना वमत न्ना स पूरित सरावर धूप म सहसहात हुए घान व तत 'अहा यही है उगना प्यारा दग।'^२ इस प्रकार स्मृति कहानी म प्राकृतिक एवं मानवीय सौन्दर्य का गामूहिक भावोक्तिनी मनोरम बन पणी है— चन्द्रभागा पहाव स प्राय एक ती गड नीच गहर बहता है। बहकड तथा जगली जनार की भाडिया व बीधाबीध माग बनासी न् जती तन पतनी पगडडी पडी है बटा छाट छाट सफंद पत्थरा की झर उधर न्वाती हुन प्रमाण पहाडी कपाए सिर पर पातन के बनस रले आती जाता रहती हैं।^३

उद्देश्य

सत्यवती जी म प्रमुख रूप स रेखाचित्रात्मक आख्यायिका का रचना का है जिनम मर्याद न उद्देश्य का निवाह हुआ है—

(अ) मानव मन का गहराईया म पठकर पात्र की चारित्रिक प्रवृत्तिया का सभावनात्मक चित्रण।

(आ) माता व वात्सल्यपूर्ण हृदय की मफन उदभावना एवं घान मताविनाम का सहज अवतरण।

(इ) प्रकृति जी का रम्य जातेखन यथा—हरे भरखत पात्र सरसा का लह लहाता सौंदर्य काश्मीर तथा उसक निकटस्थ पवतीय प्रदेशों की प्राकृतिक सुपमा जल प्रपात नदी-नाल जाति।

(ई) पीणित वग व प्रति हादिक सवेना—उनका सरलता सहज विवास सत्तनीयता तथा स्नेह भाव का सफल चित्रण और उनका तनना म अभिजात वग की स्वाधपरता कृत्रिम स्नेह प्रदशन जादि हम प्रवृत्तिया का व्यंग्यात्मक उतर।

सत्यवती जी की कहानिया व उद्देश्य अथवा गुणा का जन्य जी ने दो फल गायक कथा-संग्रह की समीक्षा करत हुए नगना म यक्त किया है— दो फूल एक ऐसे व्यक्ति व मनाभावा का प्रतिबिम्ब है जिसकी सौन्दर्यानुभूति ओमत स काफी ज्यादा है। मानव जीवन व खामकर नारा जीवन व दुःख क्लेश का जिक्र पुस्तक म है किन्तु उनम सतिका का सम्बन्ध सौन्दर्य की खोज करारवान का ही सम्बन्ध है सुधारक का

१ देखिए दिन रात पृष्ठ ६८

२ नारा हृदय की साथ पृष्ठ ३३

३ दो फूल पृष्ठ ६६ ६७

नहा दागनिक का नहीं, निरुद्धे यथाय सय का खाज करनेवाले का नहीं। यही सय वनी जा की कहानिया की विगपता है। और यही उनका प्रधान गुण भी है। 'सत्यवती जा की कहानिया म उद्देश्य प्राय अमिव्यजित रह हैं किंतु कतिपय कहानिया व अन्त म उन्होंने उनका प्रत्यक्षत उल्लेख भी कर दिया है। उदाहरणाय वमत ह या पतक' तथा 'दा फल गोपक कहानिया म जीवन की निस्सारता का प्रतिपादन उनका प्रमुख लक्ष्य रहा है। दण्डात रूप म दा फूल कहानी के अन्त की व पकिनया अवनवावनाय है—

ओह मैं तुम्हे अपन भाषी स बचाया था मगर फिर भा मैं मनावान म तरी रक्षा नहीं कर पाह। एक क्षण तक बड़े गम्भीर भाव स मैंने उस मुरभाये गुनाह क कन की ओर देना। उसक बाद मर गरीर म कपकपी-सी दीन गई। माना वह मुझम बह रहा था—

बया तुम्हार मानव जीवन का अतिहास भी मर समान नहीं है।^१

भाषा शैली

विविध कहानिया की भाषा क्षीयवाक्याचित होने पर भी सरल स्पष्ट एवं प्रभावपूर्ण है। परमादा चरमा, अजीब इलियार हबूर आदि उन्ना^२ म्मारा टाईपायड म्यूटर आदि प्रचलित अप्रज्जी गन्ना^३, छाछ सीत दहलीज आदि प्रानाय गन्ना^४ एवं प्रसंगानुकूल तत्सम अथवा तत्सम गन्ना^५ व प्रयोग न उनका भाषा की वाचिन संजीवता एवं पावहारिकता प्रदान का है। इनक अनिरिक्त रोचक अनुश्रामात्मक युग्मा (गोन्पाट, मली-कुचला, हन मस, टढी-मढी अढोमिया पडाभिया उनट-पुलन भन्क पन्क जहाँ-तहाँ नम घडग ताट मरोह आदि) एवं सुन्दर तथा युक्तियुक्त उपमाया (नयनीत-मा कौमल, दूध सा मफे^६ परिया मी मुन्^७र दुग्धफन-मी धवन सफ^८ दूध-म मपडे पखडिया सी पतनी आदि) व प्रयोग म भा वे सिद्धहस्त हैं। भाषा की मजान मकारन के लिए उहाने 'यवहार महज महावरा का भी प्रसंगानुकूल प्रयोग किया है। अभिज्ञान बग के दम्भ एवं स्वाय का उन्त करत समय उनकी गली 'प्रसंगपूर्ण हागट है' और गम्भीर भावा का विलक्षण करत समय उहाने प्राय सूक्ति गली का प्रयोग किया है। यथा—

जीवन व आदि स अत तक मनुष्य न जान कितन सम्बन्ध यमाना और साठता चला जाता है किंतु इनम स कुछ एवं एस होत हैं जिनका यान विस्मृति का मूला पाटी म वभी वभी अकस्मान् किसी उन्^९ राल पहाड़ी नान व समान उमडकर न

१ त्रिगु पृष्ठ १०७

२ बगाल की रात पृष्ठ ६४

३ देखिए बगाल की रात पृष्ठ ७ ६ १५ २४ ३५

४ देखिए बगाल की रात, पृष्ठ ७ २६ ३४

५ देखिए बगाल की रात, पृष्ठ १० ११ ११

६ देखिए बगाल की रात, पृष्ठ ८

जाने कमी हलचल सी मचाकर उसे आप्लावित कर देती है ।^१

श्रीमता मलिनक की क्या गनी मूनत बिबरणात्मक एवं चित्रात्मक है और उसमें मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के अनुरूप ही वर्णनोचित गाम्भीर्य को स्थान प्राप्त हुआ है। वस उसमें सब न सत्यत्मक माधुर्य के दान होत हैं। जब गणिना वर्णन प्रवाह में बहकर तमय हो जाता है तब अत्यन्त कायात्मक अथवा भावात्मक गणिना की प्रशंसा करने लगती हैं। यथा—

(१) दशाक्ष प्रणाम की इस प्रगति में रवि गणि का इस आँग मिचीना में और तिन रान की इस हेराफेरी में भरा यौवन वस त विलर पया था ।^२

(२) इन क्या बनानेवाला में कौन भाग्यगानी है जिसकी पवतत्रामिना आधार नना से उसकी प्रतीति कर रही है ? कौन वह कनी विरनी या है ? अटपटा जन्म के दान भ्रात मना धान के खता में टिककर एकटक ताकने हुए प्राण जिसके लिए विवद हैं—नमस्स में नहा जाता किन कपितहाया में बिट्टी मोपा जाण और कहां सजा या उत्तर दिया जाण ।^३

एसा उक्तिमा का गति करके ही श्री चन्द्रगुप्त विद्यानारायण नारायण का साथ की नमी से करत ए श्रीमती मलिनक की भाषा में गणका ज जत प्रवाह के दान किए हैं— श्रीमता सत्यवती मलिनक—का रचनाओं में मानव हृदय की कोमल भावनाओं का बहुत नाजक चित्रण रहता है। सर्वव्यापकता उनका एक असाधारण गुण है। कथा का दृष्टि से भा उनको कहानियाँ जल्द कोटि का हैं—श्रीमती मलिनक का कुछ कहानियाँ पूरी तरह गद्यकाव्य है। इस उक्ति से स्पष्ट है कि सत्यवती जी का क्या निया पूणत कलात्मक हैं।

निष्कर्ष

सत्यवती जी ने प्रायः एकाग्रनीय कहानियाँ का सृष्टि की है जो अनेक रंग चित्र की सामाग्री का रूप करना प्रतीत होती हैं। कथात्मक भाषा की अपेक्षा उनकी कथानिमा में बोद्धिकता एवं भावकता का प्राबल्य है। इनमें समाज के गोपित पात्रों के लिए सर्वव्यापक तथा अभिजातवर्गीय पात्रों के लिए पर्याप्त दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति है। दान मनाधिमान का महज चित्रावन तथा प्रकृति जी का रम्य अवतारणा इन कहानियों की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इस प्रसंग में श्री बनारसीनाथ चतुर्वेदी की यह उक्ति अपनाकनाय है— नारी हृदय के भावा का जमा कनापूण और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

१ बंगाल की रात पृष्ठ ६६

२ बंगाल की रात पृष्ठ ६

३ नारी हृदय की साथ पृष्ठ १ ८

४ भाजकस अक्टूबर १९६१ पृष्ठ ५०

श्रीमती कमलाम्बी चौधरी ने किया है वसा सत्यवती जी अभी नहीं कर सकती और न उनमें श्रीमती होमवती जी की तरह हिंदू नारी के दुभाग्या तथा दुःखा का वर्णन करने की शक्ति है पर कुछ चीजें ऐसी हैं जो सत्यवती जी की निजी विषयताएँ हैं। बाल मनाविज्ञान का बड़ा ही आकर्षक वर्णन उनकी रचनाओं में पाया जाता है और प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण तो मानो उन्हीं के हिस्से में आया है।^१ लेखिका ने काश्मीर के प्राकृतिक सौन्दर्य का घट्टलतापूर्वक चित्रण किया है। उनकी कहानियाँ में आद्य-काल के रम की मार्मिकता व्याप्त रही है। प्रायः सभी कहानियाँ आत्मव्यथन की शक्ति में लिखी गई हैं और उनमें अनुभूतिजन्य गाम्भीर्य का विशेष अन्त प्रसार रहा है।



श्रीमती रजनी पनिकर

श्रीमती रजनी पनिकर न अनेक सामाजिक मनावनानिक कहानिया की रचना की है जिनमें सारिका समाज साप्ताहिक हिंदुस्तान आदि पत्र पत्रिकाओं में प्रायः प्रकाशित होनी रही है। उनकी कहानिया का एक सक्त्र सिगरेट के टुकड़े नाम से प्रकाशित हुआ है। यहाँ उनकी कहानी ब्रह्मा का मूल्यांकन क्या के आधार पर किया गया है। इस कथा-संग्रह में निम्नलिखित सोनह कहानिया का स्थान प्राप्त हुआ है—नई पीढ़ी यह पत्र दो दीप आपतम सिगरेट के टुकड़े सातवीं बहन ममस्या उत्सर्जनी गण भगवान् जन गया मन की जाँचें कुसुम सुनेखा मृतिया मनबन्ता परधर और मगीत रजनी और रमण गुणवन्ती मौसा। इन कहानिया में व्यक्ति और समाज का विभिन्न समस्याओं का उल्लेख हुआ है।

कथानक

इस संग्रह की प्रथम कहानी नई पीढ़ी में मनोरमानाम्नी एक शक्तिशाली कथा का चरित्रांकन है जिसमें अपन माता पिता की ऐश्वर्य प्रियता के विरोध में सारा जीवन को ग्रहण किया और निधन रवता से विवाह करके जन सेवा का अपना नक्षत्र बनाया। यह पत्र में एक विरह विह्वल पत्नी का प्रवामी पति के नाम पत्र है जिसमें वह पति से अप्रह्न करती है कि वे पत्नी को गलत पत्र न लिखकर रसमीना पत्र लिखा करें। उनके माग दान के लिए वह पति की ओर से एक पत्र भी लिखकर भेजती है। दो दीप में कप्टेन राजा के मनोभाव का चित्रण है—दापावती का दबकर उस अपनी प्रयत्नी उमा की स्मृति आ जाती है और वह उसमें गा जाता है। आपतुम कहानी में आधुनिक सम्प्रदाय पर तीव्र व्यंग्य है। कथा नायिका उमा अप्रधान धनी माना पिता की स्वच्छता बना है। वह युवक रमण को धनी सम्प्रभकर उस अपनी ओर आकृष्ट करना चाहती है किन्तु जब उसे यह पता हुआ कि वह बलक है तब वह उसकी दरिद्र दगा पर घृणा से भर उठता है। सिगरेट के टुकड़े की नायिका उमा विवाह के लीसर निम्न अपन पति प्रकाश से स्पष्ट कहती है कि वे सिगरेट पीना त्याग दें अन्यथा वह नहा बातगी। प्रमाण गृह त्यागकर चला गया और पत्नी के नाम हाटन से एक पत्र लिखा कि यदि वह समझीता करना चाहती उस पति का स्वादा के सामन भजना पत्नी। मानवा बहन में एक निधन मध्यमवर्गीय परिवार का करण चित्र है जहाँ पत्र की जागत में प्रतिवध पुत्री की

वर्द्धि हानी जानी थी। समस्या उत्पन्नी यह म किंगोर की पत्नी द्वारा परपुत्र्य म प्रम करने की समस्या का चित्रण है।

भगवान जल गया' म जमानारिन चम्पों के दु खी जीवन का चित्रण हुआ है। मन का श्राव म किंगोर द्वारा माला पिता का विरोध करके मातृविका अन्तजानाय विवाह करना मातृविका के सवापरायण चरित्र द्वारा साम का मन परिवर्तन आर्ष प्रत्याशा द्वारा अन्तजानीय विवाह का समयन किया गया है। 'कुसुम म विधवा कुसुम की मातृविकार आशा का मात्मिक चित्र अर्जित किया गया है। सुलग्रा म दाम्पत्य जीवन के मनमुटाव के कारण पत्नी द्वारा पति यह के योग का चित्रण है। मृत्तिया म कथा का जीवन चित्र है त्रिगुण विवाह व करने का प्रण किया था किन्तु दाहपद धार के सम्पर्क से उसका मन परिवर्तित हो गया। मनचली म सविता के चरित्र द्वारा पत्निकविषय का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। ललिका का अर्थ कहानिया म भाष्यनि समाज जयना परिवार की मौखिक प्रवर्तिया की प्रकट किया गया है। उद्भूत कथाओं म माध्याम्य वस्तुमान न करके घटनाओं के चुनाव म मनोविधान का विधान मान रता है। प्रत्येक कहानी एक न एक समस्या अथवा विवर्गता की लक्षण दिखा गई है। यही कारण है कि पाठक के मन पर उसका प्रभाव स्थायी होता है। 'रजनी और रमन कहानी म रजनी और उसका अत्याचार पति रमन के मनोभावों की अत्यन्त सहज रीति से उभारा गया है। इस कहानी म कथाओं का विकास चरित्र चित्रण के मटनोम से हुआ है। 'गुणवन्ती मीसा हास्य रस की कथा है। श्रीमती पतिकर की कहानिया म घटना बाहुल्य अथवा जात्रमिक समाज-जसी किता अथ वृत्तिमत्ता के दान नहीं होता। व जीवन के सहज चित्र प्रस्तुत करती हैं, जत समस्या चित्रण की दृष्टि से उनकी कहानिया महत्वपूर्ण हैं।

चरित्र चित्रण

श्रीमती रजनी पतिकर ने अपना कहानिया म पुरुष पात्रों का अपरा नारा चरित्रों का विधान मन्त्राव चित्रण किया है। नारा की विविध भावनाओं, परिस्थितिया विवर्गताओं, दुःखों तथा समस्याओं के अत्यन्त सहज चित्र उनकी कहानिया म अर्जित हुए हैं। 'नई पीढ़ी का मनोरमा अपने माता पिता की सुख-ऐश्वर्यपूर्ण जीवन पद्धति का मन्त्रिय विरोध करके दरिद्रता का सवा को अपना जीवन न्यय स्थिर करती है ता सानवी महन की गामा में अपने पिता के क्रूर तथा स्वार्थी स्वभाव का नकर मन हा मन पता का पोषण करता है। यह पत्र का विमला अपने प्रयासा धनि से स्नेहभरा पत्र पान को आनुर है तो कुसुम की कुसुम का वात्सल्यपूर्ण न्यय मानस की मृष्टा से विन्तुल है। भगवान् जन गया की चम्पा अपने बच्चा के सुख के लिए जानी परियम करता है और अन्त म उहा का नाजुन जुटाने म प्राणों से हाथ धो बैठता है।

रजनी और रमन, 'कुल्ला तथा मिशरेट के टुकड़े' की नाविराएँ अपने

पनिया की प्रवृत्तियां से तग आकर न्यायपूर्ण जीवन का त्याग कर देता है। रजना पांच वष तक पनि की क्रूरता को सहनी रही पर ज न म उमका मन भी थोड़ा कटु था। पाक के हृदय में उसकी प्रति सहानुभूति के भाव हो उभरने लगे। सुलेखा का सुनना तनिक-से मनमटाव पर अपने पनि हमला का त्याग करके प्रगन न रू मकी। उमका किरायेदारनी प्रभा भी पनि से होनेवाले छोटे मोटे मतभेदों के कारण पनि का त्याग कर चली गई और हमला से विवाह कर लिया। मिगरेट कटक का नायिका उमा और भी अमहिष्णु है। उस पनि का सिगरट पाना सह्य नहीं। इन वही विवाह के तान शिन् के भीतर ही यह नाट्य-ग्राह्य जाना दे देती है कि यदि पनि मिगरेट नहीं छाड़ता तो वह उनसे नहीं बालेगी। वस्तुतः उक्त पात्रों में आधुनिक नायिका का प्रतीक है जिनमें भारतीय उन्नत गुणों की अपेक्षा पाश्चात्य वृद्धिमत्ता तथा मिथ्या स्वयं का कामना अधिक कर लिया है। इसी कारण वे पनि से मतभेद नहीं सह पाती।

मा की आँखों की मानविका भारतीय नारी की प्रतीक है जो निस्वार्थ सेवा आदि सत्गुणों से सास के विराधो मन को भी अपने पक्ष में कर लेती है। पत्थर और संगीत का निगा भी ऐसी ही शक्तिशाली नारी है जो अपने परिश्रम एवं महत्कीर्तिता के बल पर राकेण जस गुप्क प्राध्यापक को भी शक्ति कर देती है। आपतम की नायिका रमा तथा मनचनी की सविता आधुनिक कानूनबुद्ध यवतिया की प्रतीक है—विनाश ही उनके जीवन का ध्येय है। सविता फिर भी श्रद्धा है क्योंकि उसमें दीना के लिए दया भी है। समस्या उनमनी गर्ल का निगा विवाहित होकर भी राजा नामक पुरुष से प्रेम करके एक नवान सामाजिक समस्या का नेकर सम्मुख आती है।

उपयुक्त विमर्शों से स्पष्ट है कि श्रीमती पनिकर की पात्राणों में पर्याप्त विविधता है। अधिकतर के वनमान नारी की प्रतीक बनकर सम्मुख आई हैं—मानविका तथा निगा इसका जपवाण है। इन कहानियों में पुरुष पात्रों में उल्लेखनीय विविधताओं का स्थान नहीं दिया गया। परिस्थितियों के सम्भ्रम में जसा उचित होता है वसा व्यवहार के करते हैं—कोई विविष्ट मानसिक दृष्टि अथवा विविधता उनमें लक्षित नहीं होती। यदि कुछ विविधताएँ हैं भी तो वे वयगत हैं जस रजना के पति गाँव के मुखिया गजानन्द की अत्याचारी प्रवृत्ति भगवान जल गया में नरराज के मद्यपान करके अपना पत्नी चम्पा तथा यश्वि पर अत्याचार करने की प्रवृत्तियां पुरुष जगन्नि के एक बग पर प्रकाश डालती हैं।

मन का आँखें में किंगार का चरित्रत्व शक्तिवारा है। माना पिता के विरोध की उपेक्षा करके वह मानविका में अंतर्जातीय विवाह कर लेता है। अन्य पुरुष पात्र परिस्थितियों के अनुरूप उत्पन्न अथवा अवस्था के प्राप्त हुए हैं। दो पत्र में राजा सिगरट कटक में प्रकाश समस्या उनमनी गद में राजा पत्थर और संगीत में राकेण आदि पात्रों का चरित्र परिस्थिति प्रेरित स्वरूप में विवक्षित हुआ है।

व्यापकथन

जालोच्य लेखिका ने उपयासा की भांति अपनी कहानियां म भी मवात् तत्त्व को गौण स्थान दिया है। नई पीढ़ी यह पत्र, दा दीप सिगरेट के टुकड़े सातवीं बहन मन की आँखें कुसुम मृनियां मनचली रजना और रमन, गुणवती मौमी यदि कहानियां इस तथ्य की प्रत्यायक हैं कि लेखिका ने वणनात्मकता अथवा चिंतनपरक प्रवाह के मध्य अत्यंत विरल स्थला पर वात्सलाप का बिगान किया है। ऐसी उक्तिया प्रायः सधु हैं किन्तु पाना की भावाजा को मुखर रूप देने और क्यानक म नाटकायता की सृष्टि करने में उनका योग उल्लेखनीय है। उन्माहरणाय मन की जाल औपक कहानी म मालविका तथा उसकी साम के अधानिगित सवाद से मालविका के स्नही सवापरायण तथा नि स्वाथ वरिन का बोध होना है—

किंगोर की मा कइ बार कहती— बहू तेरा रूप कही नाट न हो जाए।

बहू सदब एक ही उत्तर देती— माता जी गरीर का कोई अंग दुखी हो तो उस काटकर तो नहीं फेंक दिया जाता फिर आप चिन्ता न कर मैंने भी सब के साथ टीका लगना लिया था।

और तो कोई भरे पास भी नहीं फटकता बहू।

किमी को पुसत नहा रहती माताजी आप अथवा न साच।^१

माता को चेचक निकलने पर जहां पुनियां अपना रूप नष्ट होने के भय से पास भी न फटकी बहा बहू मालविका ने तन मन से सेवा करके उन्हें स्वस्थ कर लिया। उसकी उक्त बातें उसके मन की सौम्यता तथा सौजन्य की परिचायक हैं। इसी प्रकार गुणवती मौमी म मौमी की उक्तिया हाम्य रस की सृष्टि करने के अतिरिक्त उनके वरिनाकन म भी विराप सहायक रही ह।

देवकान

श्रीमती पनिकर ने अपना कहानियां म विविध सामाजिक समस्याओं का स्थान दिया है। नई पीढ़ी म नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के व्यक्तियों के वैचारिक मतभेद का समस्या अवित है तो आपत्तुम जमा कहानियां म उच्च थग के परिवारों में नारी-स्वातन्त्र्य के कारण उत्पन्न होनेवाली विविध समस्याएँ चित्रित की गई हैं। कुछ कहानियों म पति पत्नी म अनबन रहने के कारण दाम्पत्य जीवन की समस्याओं का समावेश हुआ है। इस अनबन के कई कारण हो सकते हैं—(अ) पत्नी अथवा पति द्वारा दूसरे पक्ष की किसी प्रवृत्ति के प्रति अन्वि (सिगरेट के टुकड़े), (आ) नारी की स्वतन्त्र जीवन-यापन की चाह के बलवती होने के कारण पति के विरोध को

सुश्री कचनलता सब्बरवाल

सुश्री कचनलता ने अनेक सामाजिक उपायों की रचना व अनिश्चित कहाना क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। अब तक उनके दो कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए हैं— भूख और प्यासी धरती मूल तान । इनमें क्रमशः १६ और १ सामाजिक कहानियाँ संगृहीत हैं जिनके नीचे के प्रकार हैं—

भूख—भूख दुःख दो पर आया आत्मसम्मान दो पहुँच चारवप वह बना पावन मरम्मत वामना और प्रेम जीवन आत्मशान्ति वह तम था मजदूरी करता हू कुछ चोरी तो न करना बचारा मास्टर कमकार वह बचारा स्वर्ग और नरक ।

प्यासी धरती मूल तान—मन का सोना दूँ सर भला आत्मी नय आँसू निल ही ता है अजमे का डायरी विसहरी चादी के देवता धरती गा उठी प्यासी धरती मूल तान ।

कथानक

आलोच्य कहानियों को मुख्य रूप से तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है— (अ) जिनमें महरी नौकर जमानार आया चित्रकार श्रमिक गिरफ्त दर्जी आदि समाज के गणित पात्रों की विवशताओं पीडाओं तथा करुण अनुभूतियों का सहानुभूति पूर्ण चित्रण किया गया है (आ) जिनमें जीवन उमकी क्रमिक अवस्थाओं तथा अनुभूतियों पर दार्शनिक दृष्टि से विचार किया गया है (इ) जिनमें ग्रामीण जीवन का समस्या मूलक चित्रण हुआ है । प्रथम वर्ग की कहानियाँ अभिजातवर्ग के एकाग्र अत्याचार तथा निष्ठुरताओं और गणित वर्ग के अभाव विवशता आ दय एव शोषण को प्रायः तुलनात्मक रूप में अवयव कारण काय रूप में चित्रित किया गया है । पीडाओं के हृदय में पटक रचिका ने उनकी भावनाओं का जातमसात करके एक करुण चित्र प्रस्तुत किया है कि पाठक का चेतना अनावाम ही करुणा विगठित हो उठती है । अन्तिम आत्मसम्मान दो पढ़न भग २००० सर भला आत्मी विसहरी चाँदी के देवता आदि कहानियाँ इस प्रयोग में प्रमाण हैं । भारनाय नारी का भा रचिका ने किसी सीमा तक स्थापित माना है । वह तम था चारवप वामना और प्रेम मन का सोना निल ही ता है अजमे की डायरी आदि कहानियाँ समाज के परिवर्ग में नारी का विवशता चेतना आदि का सामिक चित्रावन हुआ है ।

दूसरे बग की कहानियाँ म दो पर वह कली वासना और प्रेम तथा जीवन शीपक कहानियाँ उत्प्रेरणीय है। नवजात शिशु के पर कितने कोमल तथा प्रिय लगते हैं बाद में वही पर जीवन की अनेक दुःख तथा सुख रास्ता पर वलते हुए अतः म चित्तागोहन का पथ ग्रहण करते हैं—इस प्रकार 'दो पर कहानी म दो परा को माध्यम बनाकर मानव जीवन की निस्सारता का प्रतिपादन किया गया है। वह कली म जीवन स्पी कली के मुद्राभावा का प्रतीकात्मक चित्रण हुआ है। 'वागना और प्रेम म इन दाना भावों के अन्तर को स्पष्ट करते हुए तपित और अतपित को प्रेम और वासना की विभाजन रेखाएँ माना गया है। जीवन' कहानी म आत्मकथन की शली म मृत्यु के समस्त मानवीय विवशता के दृश्य अंकित किये गये हैं। नय आसू धरती या उठी और प्यामी धरती सूखे तान ततीय बग की कहानियाँ है। इनमें लेखिका ने प्राम्य जीवन के सुख दुःख राग-द्वेष कलह मत्री आदि म समचित कथानक प्रस्तुत किये हैं। ये कहानियाँ प्रायः सुखात हैं इनमें प्रमचन्द जी के कथा गिल्प जसी सरलता एवं सहजता के दशन होते हैं। 'प्यामी धरती सूख ताल म ग्राम विकास योजना म कृषका को आरामनिभरता की प्रेरणा दी गई है। यह आदामादी कहानी है और इसमें नारी जाति का विशेष गौरव गान हुआ है। इसक कथानक का सारांश यह है कि खेती म जल के अभाव की पूर्ति के लिए ग्राम की एक बधू ने अय स्त्रियों के साथ मिलकर एक ताल खोदना प्रारम्भ किया। इसस पुष्टा को भी प्रेरणा मिली अतः आप काय उहोने पण किया।

सुश्री सचरवाल ने अनेक कहानियाँ म दो भिन्न स्थितियाँ अथवा भिन्न प्रवृत्तियोंवाले पात्रा के तुलनात्मक चित्र प्रस्तुत किये हैं। उदाहरणार्थ मन का सौन्य म शारदा और सुमन नाम्नी दो सखियाँ का चित्रण है। शारदा ने माता पिता की धमकियाँ और सामाजिक मर्यादा का विचार करते हुए अपने प्रेमी युवक की अपक्षा माता पिता द्वारा चुने गये युवक से विवाह कर लिया, फलतः उसका सारा जीवन विपाकत हो गया। सपर सुमन ने किसी की भी चिन्ता न करके अपने प्रमी स ही विवाह किया तो वह सुखी रही। उसे धनवान् होते देख समाज भी पुरानी बातें भूलकर उसका सम्मान करने लगा। इसी प्रकार दर्द सर म दो तुलनात्मक दृश्य अंकित हैं—एक ओर कूँवर से गीतल कमरे म लेटी हुई अमिजात बग की नारी फिर भी सर नद से व्याकुल और दूसरा ओर विलचिताती दोपहरी म घोर श्रम कर रहे श्रमजीवी बद्ध तथा बालक और फिर भी उनमें धवावट एवं वलाति का नाम नहीं। इस दृश्य तथा अय कहानियाँ म ऐसे ही अय दृश्या के अनुशीलन से स्पष्ट है कि लेखिका ने कथा-मयोजन म अनुभूति चित्रण की बार अत्यन्त सजगनायुक्त ध्यान लिया है।

चरित्र चित्रण

मात्रोच्य कहानियाँ म मुख्यतः दो प्रकार के पात्रा की सृष्टि का गई है—'गोपक' तथा गोपित। इनके चरित्रावन म प्रायः बगलत प्रवृत्तियों का आधार लिया गया है।

गायक पात्रो में अहं जातीय गव क्रूरता स्थापनता आदि दुगुणा का प्राबल्य है तथा पीड़ित पात्रों में दोनता हीन भावना मवा आदि भाव प्रमुख रहें हैं। दुस्तिन में जमानार दम्पती आत्मसम्मान में महरी का पत्री दो पहनू में भिन्नारिन और गिमहरी में चित्रकार इसी प्रकार के हीन हीन पात्र है। ये पात्र स्वाभिमान एवं गौरव के पुनर्न है किन्तु निधनता रम्यता ऋण आदि विनयता का कारण अपनी दगा गुधारन में असमर्थ हैं। अभिजात वर्ग के पात्रों का अनेक 'यम्यात्मक' चित्रण हुआ है। चाँगी के देवता में रानी का चरित्र इसा प्रकार का है। वह अपने कुत्त की गवा गधूगा करती है और पत्थर के भगवान का बन्धन प्रभावना से शृंगार करती है किन्तु सवहारा वर्ग के व्यक्ति को भी भरपूर उप ना करती है। वतिपय कहानिया में अभिजात वर्ग के एक पात्रों का भी समानन हुआ है जिनके मन में पालित वर्ग के प्रति न्या और सदभाव हैं। मूल में गिगिर और दुदिन में गोला का भी प्रकार के परदे खकातर पात्रों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अनेक कहानिया में नखिबान दो विरोधा स्वभाव के पात्रों को तुलनात्मक रूप में चित्रित किया है। उगाहरणाय मन का मोला में एक बार गारना है जो स्वेच्छा से समाज का बन्धी पर अपने प्रणय सम्यय का बलिदान कर देती है और दूसरी ओर मुमन है जो सबकी उपेक्षा करके अपने प्रियतम को पाकर ही रहती है। इसी प्रकार भला आदमा में एक ओर डा श्रीमानी हैं जो प्रत्यक्ष में प्रभ भक्त निष्ठावान हिन्दू और घमा मा हैं किन्तु परा में निधना के गले पर छरी करनेवाले दुष्ट दुराचारी व्यक्ति हैं ता दूसरी ओर डा बर्मा हैं जो प्रत्यक्ष में मध्यवस्था नास्तिक हैं किन्तु परा में एक सहृदय एवं दयावान महात्मा से भी बदल रहे हैं।

नखिबा ने चार वर्ग वासना और प्रेम आदि कहानिया में नीतिमा दूबा आदि पात्रों का माध्यम से नारी की विवशताओं सौजन्य सहानुभूति आदि का भी अच्छा चित्रण किया है। जिस ही तो है तथा अजम की डायरी में दो वेनानातुर नारियों की आन्तरिक पीड़ा का भावपूर्ण उत्तरण किया गया है। नये आँसू धरती गा उठी तथा प्यासी धरती मूल तान गीतक कहानिया में जीवन पूनम रघुआ जगेसर काका मनदू आदि ग्रामीण कृषकों के मनोविज्ञान का सुन्दर चित्राकन हुआ है। प्यासी धरती सूखे ताल में मनदू की पत्नी जिसने परिश्रम तथा सहयोग से ताल खोला और गाँव की कच्ची सड़क का जीर्णोद्धार किया एक जाग्य ग्रामीण महिषा के रूप में प्रस्तुत हुई है। इस प्रकार स्पष्ट है कि आजाय कहानिया में विविध रूप पात्रों का सरोदन हुआ है। चरित्रा वन के लिए लखिका ने मरुपत वर्णनात्मक और नाटकीय शक्तियों का आश्रय लिया है तथा पात्रों के स्वभावों का जतना सजाव वर्णन किया है कि चारित्रिक विशयताओं सहित पात्रों का व्यक्तित्व साकार हो उठता है। उगाहरणाय बेबारा मास्टर कहानी के आरम्भ में मास्टर जी के व्यक्तित्व का चित्रण स्पष्ट है—

घटना तक का जयमला घानी चढ़ाए जब भी वह भरे सामने जाया मैंने उसे उग्या का हा दृष्टि से दया। उसका बड़ा बन्धी मयानक तो निछाई देनेवाली आँखों के

नीच बाल-बाल से बड़े-बड़े घबराये। गाला के गाना और का हटिया निकली हुई था। चौड़े माथे पर अगणित मलबटें थी। सावल मुख पर कुछ विचित्र भाव था—जिस दीनता गव और उदासीनता का सम्मिश्रण कह सकते हैं। बोलते समय उसके हाठ कुछ विचित्र ढंग से मुड़ जाते थे।^१

वयोपकथन

आलोच्य कहानियाँ में सज्जित तथा मारणमय सवाण की सज्ज की गयी है जिनमें पात्रों की व्यक्तिगत विशेषताओं की अपेक्षा उनकी वर्गगत प्रवृत्तियों का अधिक सफलता से प्रकाशन हुआ है। ये वयोपकथन कथानक चरित्र चित्रण देना-बाल तथा उद्देश्य की अभिव्यक्ति में समय-समय पर उपयोगी सिद्ध हुए हैं। उनकी अधिकांश कहानियाँ में अभिजात वर्ग की हृदयहीनता तथा पीड़ित वर्ग की विषम दीनता का तुलनात्मक अथवा एकपक्षीय अंकन हुआ है। दोनों पक्षा का वास्तविकता में वर्णन विपरीतता की अभिव्यक्ति हुई है। अभिजात वर्ग के व्यक्ति की उन्नति में उनकी स्वायत्तता निष्ठुरता तथा नीचा प्रति घणा का प्रकाशन हुआ है। उन्माहरणाथ बादी के दबता में रानी जी की उन्नति में निधन मानवा का प्रति निष्पत्ति एक निर्जीव पापान प्रतिमा तथा कुत्त जसे तुच्छ प्राणियों के लिए चित्ता उनके अभिजातवर्गीय व्यक्ति का घोरक है।^१ इसी प्रकार पीड़ित व्यक्ति के सवाण में उनकी दयनीयता अभावजन्य विषमता और कातर कहना माना साकार हो गई है। वह बचारा कहानी में माँजी तथा मास्टर जी की उन्नति में प्रस्तुत प्रेम में उल्लेखनीय है।^१

इन कहानियों में सवाद भाषा के अतिरिक्त भाषा की दृष्टि से भी पात्रानुकूल हैं। सुदित कहानी में जमानार की उन्नति— चलित हैं मरवार अरू देव लया — इसका प्रमाण है। इसी प्रकार ग्राम्य कहानियाँ के पात्रों ने प्रायः गवार् भाषा का व्यवहार किया है। उन्माहरणाथ नय आँसू में छटकी जीजी के प्रति उनकी दबराजी की यह लाटना अवनीयनीय है— तब सबरे मरार अगनुआ में बरार काह ल बठी और उम छटकी का ता देमा यह भा गजब की है माँ के साथ-साथ हाथा में राख लगाय बठा है जसे और कोई ता बरदया हई है नाहा।^१ कुछ विविध गली में प्रस्तुत कहानियाँ में सवाद अत्यंत विरल है अथवा ही नहीं। उन्माहरणस्वरूप लिखिता तो है का रचना पत्र गाना में की गई है और अगम का डायरी का पात्र के चितन प्रवाह में प्रस्तुत किया

१ भूल, पृष्ठ ११२

२ देखिये 'प्यासी घरती सुले ताल' पृष्ठ ६६ ७२

३ देखिये भूल पृष्ठ १३२

४ भूल पृष्ठ १६

५ प्यासी घरती सुले ताल पृष्ठ ३१

गया है। मास्टर ने दानता में कहा 'माँजी बिग' उठी जा' गिनात्मन पात्र' भी यथोपबन्धन की सजीवता में सहायक रहे है। 'गिना' का मत बान का भी उचित ध्यान रचा है कि सवाद अति विस्तृत और उबा दनवान न हा।

देन काल

श्रीमती सवरवाल ने उपन्यास का भाँति कहानियाँ में भाँ आर्थिक उपपन्न व चित्रण पर अधिक ध्यान दिया है। नौकर महरी जाया मास्टर दाँि थमजोधी जमागर कताकार आदि की जीवन गायामा का चित्रण करव उहाँ आर्थिक गौपण का विविध दृष्टियाँ से निरूपण किया है। प्रायः प्रत्येक कहानी में इस समस्या के दोनो कोण चित्रित हैं—एक ओर अभिजात वर्ग व अहंकार एवं अपयय आँि का चित्रण किया गया है तथा दूसरी ओर पीडित वर्ग व अभाव दीनता और ब्रिगताओं का सामिक चित्रण हुआ है। उदाहरणाय भूख गौपक कहानी में गहिणी की सकुचित मनो बति का यह उदाहरण देखिय — अरेता जोरक्या नीकरो का मक्कन जड़ दिये जायेंगे । यह हमार बान बच्चे तो म न गायें और नौकर खीज न छोडें । ' अनेक कहानियाँ मे नारी की सामाजिक परतंत्रता दहेज समस्या की बिकरानता और अय सामाजिक एवं यक्तिगत ब्रिगताओं का भावकतापूर्वक वर्णन किया गया है। उदाहरणाय आत्मसम्मान गौपक कहानी में नसिका का क्षोभ इष्टव्य है— सच ही तो पनी पति की सम्पत्ति मान ही ता है। उसका अधिकार है उसी तरह जैसे अपने घर पर मो पर वह दुख की साधिन नहीं केवन अधिकार की वस्तु है । ' स्वर्ग और नरक कहानी में सेतिका ने बरमीर के मूल निवासियों का निधनता का हृदयस्पर्शी चित्रण किया है। नये आसू धरती गा उनी तथा प्यासी धरती सूख तान में ग्राम्य जीवन क कथानका के अनुरूप अनेक समस्याओं का प्रसंगवग उत्पन्न हुआ है जिनमें से मुख्य में हैं—सम्मिश्रित परिवार के दाप सतति में जमीन के लिए भगड मनामारी जैसे भयंकर रोग का प्रकीर्ण तथा योग्य डाक्टर व न हाने से जकाल मर्य जन के कृत्रिम साधना के अभाव में वर्षा नहोने से खता का नष्ट हो जाना आदि । प्रस्तुत कहानियाँ में केवल ग्राम के दोषों की ही खर्चा नहा हुई अपितु गुणा का भी यत्र तत्र उत्पन्न हुआ है। यथा—वृत्तों गाय भस आदि के कारण अन दुग्ध की पूणता परस्पर अपनत्व की भावना जिसका नगरो में अभाव है तीज पाहार आदि पर मस्ना भरनेवाना राग रग पचायत के कारण भगडो का सहज ही निबटारा गड बागु खाद्य पदार्थों का गदता नपका की आत्मनिभरताजय प्रसन्नता आदि ।

१ दलिये भूख पृष्ठ १३२

२ ३ भूख पृष्ठ ५ ४०

४ ५ दलिये प्यासी धरती सूख तान पृष्ठ ७८ ८२

उद्देश्य

आलाच्य कहानियों में उद्देश्य की प्रधानता रही है। जीवन की विविधरूप अनुभूतियाँ एवं सामाजिक विवृतियाँ का यथाथ चित्रण इन कहानियों का सद्यः है। उक्त उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए लेखिका ने प्रायः जीवन और समाज के अस्वस्थ चित्रों को ही कहानियों में स्थान दिया है। उनमें जीवन के प्रति बाह्य निष्ठा अथवा आत्मा की भूलभ्रम अत्यन्त विरल है। प्रत्यक्ष उन्होंने समाज के यथाथ चित्र ही अंकित किये हैं किन्तु परोक्षतः समाजगत विकारा व निवारण की प्रेरणा दी गई है। जिन कहानियों में दो भिन्न स्थितियाँ अथवा पात्रों के तुलनात्मक चित्र अंकित किये गये हैं वहाँ उक्त प्रेरणा और भी स्पष्ट है—मन का सौदा तथा भला आदमी 'गीपक' कहानियाँ इस प्रसंग में पठनीय हैं। जीवन की कुरूपताओं को अभिव्यक्त करने का लक्ष्य होने से लेखिका की अधिकांश कहानियाँ दुःखी रहती हैं किन्तु ग्राम्य जीवन विषयक कहानियाँ इसकी अपवाद हैं। इनमें ग्राम्य जीवन की निराशा, विवाता, सघप आदि व अतिरिक्त आशा, उत्पत्ति उत्साह एवं आदर्शों की भी सुन्दर अभिव्यक्ति मिलती है। वस्तुतः उक्त कहानियाँ में यथाथवाद की अपेक्षा आदर्शों का यथाथ चित्रण किया गया है।

उद्देश्य की अभिव्यक्ति के लिए लेखिका ने पात्रों के वार्तालाप आत्मचरित्तन तथा स्वोक्ति व अतिरिक्त प्रत्यक्ष वचन की प्रवृत्ति भी अपनाई है। उदाहरणार्थ स्वर्ग और मरण कहानी में कदमीर निवासिया की आधिक्य विवशताओं की पृष्ठभूमि में लेखिका का यह उद्देश्य जीवन-दर्शन दक्षिण—आज तो स्वर्ग की सृष्टि होगी मानव की भुक्ति के आधार पर उसके सुख के आधार पर न कि उसकी विवशता की आधारभूत पर यथाकि वस्तुतः मानव ही विधाता की सर्वाधिक सौम्यपूण रचना है।^१

भाषा शैली

वचन-दर्शन जी ने कहानियों की रचना 'यावहारिक' भाषा में की है जिसमें संस्कृत व तत्सम शब्दों व अतिरिक्त तत्सम और देशज शब्दों का विपणन प्रयोग हुआ है और उर्दू-अंग्रेजी के विपणन शब्दों की प्रायः अपेक्षा की गई है। ग्राम्य जीवन की कहानियों में लटकीरा जुठास, हटकना माँदी तत्समों का सुगम आदि देशज शब्दों का प्रचुर प्रयोग हुआ है। संवादा व अतिरिक्त प्रत्यक्ष वचन में भी अनेक वाक्यांश एवं वाक्यांशों में देशज शब्दों का मिश्रण हुआ है। यथा—(अ) चाची भी तनिक चुपाय गई,^२ (आ) 'बढ़ने माँ की छुटकी लटकी के भी कौनों लटका-बाँला हुआ नहीं।'^३ बोली ठोली हल्ला-

१ भूल पृष्ठ १४१ १४२

२ देखिय प्यासी घरती सूखे ताल पृष्ठ २८ ४६ ७७, ७९, ८२, ८४

३ ४ प्यासी घरती सूखे ताल, पृष्ठ १, ३०

गुल्ला चीखती चिल्लाती जोड़ बटोर लोट पोट मारते पीटते पूजा पाठ आदि घुमव गाना और प्रसंगानुबल महावरो ने भाषा में पर्याप्त सजीवता का संचार किया है।

उपन्यास की भाँति लेखिका की कहानियाँ मध्य दोष वाक्यों को स्थान नहीं देती। यदि उसे वाक्य कहा है तो भी आवश्यकता में अधिक दोष नहीं है। मुँह स्थित है और भावकता की छाप पड़ी है। कहीं-कहीं जो 'अ' व 'मध्यवर्ती' अनावश्यक प्रयोग से भाषाप्रवाह में जबरजस्ती उत्पन्न हुआ है। यथा—(अ) आज छुट्टी जो हा जाता था ' (आ) आज वह 'ग' जा है ' (इ) उमन मुँह के हाथ से सोने का बूझियाँ जो उतारते हैं आदि। दूसरा और कतिपय वाक्यों में 'याकरण सम्बन्धी' अशुद्ध प्रयोग भी मिलते हैं। यथा—(अ) सबर सररफ़िजूस हा इतना बकाशिया ' (आ) तब ही ता दिना निन चोरियाँ बन्ती हो जा रही ह ' (इ) स्कूल का बना जाया जाता है आदि। ऐसा अशुद्धि अधिक तो नहीं है किन्तु जहाँ-तहाँ वाक्य विन्यास में अस्वाभाविकता अवश्य आ गई है। 'गली का दृष्टि से इन कहानियों में वर्णनात्मक 'गली और नाटकमय 'गली का प्रसंगानुरूप सज्जन प्रयोग किया गया है। कहीं कहा 'गली भावावगमया भी हो गई है। उदाहरण के लिये कहानी का यह अंश— मृत्ति तटहारी अनुपम दन स जगमगा रही है फिर भी तुम क्या भूले हो ? क्या नग हा ? तटहारी सतान क्या सुख माधना से वंचित है—ह कमकार ! उत्तर हो—इस महान सौंदर्य के प्राण ! कुछ तो बोलो—तम क्या दीन हो—दीन हो—वंचित हो।

निष्कर्ष

आलोच्य कहानियों के उक्त वर्गीकरण एवं विवेचन से यह स्पष्ट है कि इनमें पर्याप्त विषय विविध एवं 'गली' विविध के दान होते हैं। उसे 'लेखिका की प्रतिनिधि कहानियाँ' वे हैं जिनमें अभिजात वर्ग और गरीब वर्ग की प्रवृत्तियों का तलनात्मक अध्ययन कारण-कारण रूप चित्रण हुआ है। ग्राम्य जीवन एवं नारी जीवन विषयक कहानियों के संयोजन में भी लेखिका प्रायः सफल रही हैं किन्तु जिन कहानियों में जीवन की क्रियाओं एवं प्रतिक्रियाओं का दार्शनिक विवेचन हुआ है उनमें विषय के अनुरूप किंचित नीरसता आ गई है। एक अन्य दोष यह है कि एक साथ उपवाचस्वरूप कहानियाँ के अतिरिक्त लेखिका ने प्रायः जीवन के अस्वस्थ चित्रों को ही व्यक्त किया है। उपन्यास में उन्होंने जो आत्म-प्रतिस्वस्थ कथानक प्रस्तुत किये हैं कहानियों में उनका प्रायः अभाव रहा है।



१ देखिए 'प्यासी घरती' मूल ताल पृष्ठ ३ ३१ ३२ ३५ ४२ ४५, ८० ८

२ ३ ४ भूल पृष्ठ १३ १८ ३३

५ ६ ७ भूल पृष्ठ १५ ३३ ५८

श्रीमती शिवरानी विश्नोई

सुश्री शिवरानी विश्नोई हिन्दी की उदीयमान गल्प-लेखिका हैं। चन्नायन क्रमशः 'दुर्भाग्य' उपकार एवं जीवन की अनुभूतियाँ 'गीपक' तीन कहानी संग्रहों की रचना की हैं जिनमें कुल मिलाकर तैंतीस कहानियाँ संकलित हैं। अत्यंत समकालीन लेखिकाओं की भांति इन्होंने भी नारी के सामाजिक तथा पारिवारिक जीवन चित्रों को अपनी कहानियों में स्थान दिया है।

कथानक

दुर्भाग्य 'गीपक' संग्रह में 'तपण' एवं दुर्भाग्य इन दो कहानियाँ व अतिरिक्त नौ कहानियाँ में विषयवस्तु प्रायः एकरूप है। इनमें पति भगैतर अथवा प्रेमी द्वारा पत्नी, भावी पत्नी अथवा प्रेयसी के प्रति विभिन्न कारणों से विमुखता का चित्रण हुआ है। किसी अथ नारी पर मृग्य होने के कारण पत्नी के रूपहीना होने के कारण वाद में सौंदर्य क्षीण हो जान के कारण धन के दम्भ के कारण पत्नी से पुत्र प्राप्ति न होने के कारण अथवा सुरा एवं नर्त्या के फेर में पड़कर पथभ्रष्ट हो जाने के कारण नायक न प्रायः हृदयहीनता का परिचय दिया है। वाद में ठोकर खाने पर नायक का हृदय परिवर्तन अनुताप एवं क्षमा याचना इन कहानियों की मुख्य घटनाएँ हैं। कतिपय कहानियाँ में पति को अपने कृत्य पर अंत तक अनुताप नहीं होता। एस में लेखिका न उपेक्षित पत्नी की मृत्यु द्वारा दुष्सात कथानकों की सृष्टि की है— रूप के लिए तथा पुष्प का प्रेम इसी प्रकार की कहानियाँ हैं। कतिपय अथ कहानियाँ में अनताप तो हुआ है किंतु पत्नी अथवा प्रेयसी की मृत्यु के बाद। ऐसे कथानक दुःखान्त होने पर भी अप्रिय प्रतीत नहीं होते। सुन का गोज एवं कलविनी इस संग्रह में प्रमाण हैं। तपण एक काल्पनिक कहानी है किन्तु इतिहास के आवरण में प्रतस्त की गई है। इसका कथानक इस प्रकार है—जजमर के निवटवर्ती अचलगढ़ किले के स्वामी विष्णुसिंह की नर्त्या विलासकुमारी के रूप में प्रसिद्ध औरगजेव के सेनापति अफजल खाँ न विभ्रम को मारकर बिनाम का हरण करना चाहा किंतु एक मुसलमान फकीर न कुमारी का रक्षा की। कुमारी न प्रण किया कि वह अफजल खाँ के ग्यून से पिता का तपण करेगी और रात्रि सेनापति की सहायता से उसने अपना प्रण पूरा किया। दुर्भाग्य प्रस्तुत संग्रह की अंतिम कहानी है। इसमें लेखिका ने मन् १९४७ की बाद से पीडित बंगाल का कथन दृश्य अंकित करते

हुए कथानायक रामू, उसकी पत्नी तुनसी और उनका बच्चा के कष्टमय जीवन का चित्रण किया है।

दुर्भाग्य क्या सग्रह में आलोच्य लेखिका ने जिन नौ कहानियों की एक ही शृंगला प्रस्तुत की है उपकार सग्रह की प्रथम कहानी उपहार उसी की एक छिटकी बड़ी है। इसमें एक श्रमिक परिवार का चित्रण है जिसमें गलू उसकी पत्नी सुदिमा तथा दो बच्चे हैं। प्रारम्भ में मछपान एवं रेगमी जान के संसर्ग से गलू चरित्र भ्रष्ट होकर पत्नी तथा बच्चों से निष्ठुरता का व्यवहार करता है किन्तु एक बच्चे की मृत्यु उस मुराह पर साकर उसके हृदय परिवर्तन का कारण बनती है। उपकार शीघ्र सग्रह की प्रतिनिधि कहा गया है जिनमें लेखिका ने युवक युवनियों के स्वच्छन्द प्रेम के विभिन्न परिणाम दर्शाए हैं। एक कहानी में यदि एक स्थिति का एक पक्ष प्रदर्शित किया गया है तो दूसरी में उसी स्थिति के दूसरे पक्ष का चित्रण है। उदाहरणार्थ अपूर्व मित्र में नायिका उषा पिता द्वारा निर्वाचित वर को स्वीकार नहीं करती पिता द्वारा वह निष्कासन पाकर स्वतन्त्र जीविकोपार्जन करती है किन्तु विवाह अपने प्रेमी से ही करती है। दूसरी ओर प्रेम की राख में नायिका उषा पिता द्वारा निर्वाचित वर को स्वीकार कर लेती है किन्तु सुखी नहीं रह पाती और प्रेमी निमन की स्मृति में धुन घसकर प्राण त्याग देती है। दगावसी में नायक और नायिका के सजातीय न होने से उनका प्रणय परिणय में परिवर्तित न हो सका तो दोनों न आज्ञा में विवाह न करने का प्रणय कर लिया। उधर यू लाइट की नायिका सौदामिनी समाज अथवा परिवार के विरोध की अपेक्षा करके भी सजातीय भवक मण्डिस्ट प्रकाश को अपना जीवन-साथी चुन लेती है और अपने जीवन का सुखमय बनाती है। विधि की विडम्बना में जमींदार पुन सुधीर के कृपक पुत्री मोनी के प्रति आकर्षण प्रेम एवं विवाह की घटनाएँ अंकित हैं। विश्वास में पाना के स्नेह ईर्ष्या द्वेष अन्याय आदि भावों के आधार पर एक जमींदार परिवार के पतन एवं पुन सुधार की रोचक घटनाएँ अंकित हैं। सुहाग की चूड़िया में एक ओर हिन्दू पत्नी के एकाग्र पति प्रेम एवं दण्डास्था का चित्रण है तो दूसरी ओर समाज के बदलते रंगों के प्रति तीखा व्यंग्य है। पुन की मृत्यु का मिथ्या समाचार पाकर माता अपनी पुत्रवधू से अत्यन्त दुःखित होती है और जब वह लौट आता है तो उसी पुत्रवधू की सौ-सी बलाएँ लेती है। सग्रह की अन्य कहानियाँ में मिलन में स्वच्छन्द प्रेम का चित्रण है और नमक की खान में स्वायत्त पर आधारित प्रेम का उत्प्रेषण हुआ है।

जीवन की अनुभूतियाँ शीघ्र कहानी सग्रह की गल्पना में उक्त दो सग्रहों की भाँति विषय सम्बन्धी एकरूपता का दोष नहीं है। इस सग्रह की कहानियाँ तीन वर्गों में विभक्त की जा सकती हैं—(अ) भावकताप्रधान कहानियाँ—श्याम की होली निष्पन्न प्रयास (आ) पारिवारिक अथवा सामाजिक कहानियाँ—विवाह के बाद अभिलाषा जीवन के मोह कागड़ा के आचल में विदा यात्रा की तला (इ) वातावरणप्रधान अथवा राजनीतिक कहानियाँ—दिवानी अभाव गुण्य जीवन परिवर्तन। श्याम की होली तथा

निष्फल प्रयास में दो भिन्न कथानका द्वारा यह चित्रित किया गया है कि श्रीकृष्ण तदा राधा आदि गाविया का अनन्य प्रेम उनकी आत्मा का आकर्षण था रूप मोह अथवा वासना का परिणाम नहीं था। विवाह के बाद तथा अभिलाषा 'गोपक कहानिया में मुहाग की चूड़ियाँ की भाँति समाज के प्रति तीव्र 'व्यंग्य है। विवाह के बाद में विवाह के पूर्व नायिका कुसुम से वर पक्षवाला ने अनेक प्रश्न पूछे उसके अनेक गुणा की परीक्षा की और बाद में उसे चूल्ह चोके में फँसा दिया, पूर्व गुण (संगीत प्रेम आदि) अवगुण की काटि में गिन जाने लगे। अभिनाया में निहित किन्तु बकार नायक की कष्टपूर्ण जीवन-कथा का वर्णन करके लेखिका ने समाज पर तीव्र 'व्यंग्य किया है। शेष पारिवारिक कहानियों में उन्होंने सुख दुःख क्लेश समझौता, हृदय परिवर्तन आदि के आधार पर जीवन के विभिन्न चित्र अंकित किये हैं और प्रायः उक्त कथानका को सुमान्त मोड़ दिया है।

राजनीतिक कहानियाँ में मुख्यतः स्वातन्त्र्योत्तर भारत के राजनीतिक वातावरण का चित्रण किया गया है। उदाहरणार्थ दिवाली में स्वातन्त्र्योपरान्त साम्प्रदायिक दंगे का कारण नायिका चारमणि का अपने पति धीरेन्द्र से पृथक् होकर संयोगवश पुनः मिल जाना वर्णित है। अभाव में एक दरिद्र परिवार का चित्रण है। नायक के भाई ने देश रक्षा में पुलिस की गोली खाकर प्राणापण किया किन्तु स्वतन्त्रता के उपरान्त उसके परिवार को इसका कुछ भी पुरस्कार न मिला। गुण्डा कौन में स्वतन्त्रता पूर्व के भारत में अंग्रेजों की दमन-नीति की चर्चा है। समाज में निधनों की तो गुण्डा कहा जाता है और धनी सब-कुछ टूटकर भी पवित्र कहलाते हैं। 'परिवर्तन में साम्प्रदायिक दंगे का एक चित्र है—कथानायिका उषा के सद-व्यवहार तथा क्षमाभावना ने धर्मांध यूसुफ के क्लृप्त हृदय को परिष्कृत एवं पावन बना दिया। लेखिका ने मुख्य रूप से सुखात कहानियाँ की रचना की है किन्तु रूप के लिए पुरुष का प्रेम 'अभाव दुर्भाग्य आदि अनेक दुर्घटना कथानका को भी सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया गया है। वस्तुतः जीवन की नसर्गिक गति को लक्ष्य में रखकर उन्होंने सुख एवं दुःख दोनों प्रकार की भावनाओं को स्थान दिया है। उपहार संग्रह की भूमिका में अपनी बात में उन्होंने उक्त तथ्य को स्वीकार करते हुए लिखा है— इन कहानियाँ में हमारे समाज के रंगमंच पर सदब घटित होनेवाली घटनाओं में सम्बन्धित मानव जीवन के उत्थान और पतन का एक उत्सव अन्तर में नित्यप्रति होनेवाला द्वन्द्वा का गन्त और हास्य के सम्मिश्रण का सजीव चित्र सींचने का प्रयास किया गया है।

गिरानी जी की कतिपय कहानियाँ में यह दृष्टि है कि उनका कथानकों में अनाचार प्रणालियों का समावेश हुआ है जो कथा के सृजक प्रवाह में अनुरूप आधुनिक सिद्ध हुए हैं। उदाहरणार्थ पूजा कहानी में न्यायाधीश मोहिनी के घर जाना मोहिनी की भाभी द्वारा मिनेमा देखने का प्रस्ताव सबका मिनेमा जाना आदि घटनाएँ निरर्थक हैं मुख्य कथानक से इनका कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं है। इसी प्रकार कलविनी में एक बच्चा

द्वारा डाक्टर अविनाश को बुलाना एक युवक व घर जाता युवक का उन्मात्प्रसूत होकर अपनी जीवन गाथा सुनाना आदि अनावश्यक प्रसंगा की अपेक्षा यदि प्रत्येक कहानी प्रारम्भ कर दी जाती तो प्रभावार्थिता अपेक्षाकृत तीव्र हो जाती। जहाँ भाषा यह तो स्वीकार करना पड़ेगा कि आलोच्य लेखिका की कहानी बना उत्तरातर विकासामुग्य रही है। दुभाग्य की अपेक्षा उपकार की मर्याद कथानक विविध प्रकार सम्पोगित हैं और जीवन की अनुभूतियाँ म यह विविध और भी स्पष्ट है।

चरित्र चित्रण

श्रीमती बिश्नोई ने पात्रों के चयन एवं उनके चरित्र चित्रण में बाह्य विविध-रूपता को प्रयत्न किया है। अन्य अनेक लेखिकाओं की भाँति उन्होंने भी पानाओं के चरित्र चित्रण में अपेक्षाकृत अधिक सचेतना एवं सहानुभूति का परिचय दिया है। उनका अविनाश नायिकाएँ भारतीय मस्तिष्क की गोद में पली हुई पतिपरायणा कष्ट-सहिष्णु क्षमाशीला राजवंता जात्या महिलाएँ हैं जो पति को देवता मानकर पूजती हैं। मजु की मज पूजा का मोहिनी रूप के लिये का प्रयास परिवर्तन का दृष्टि-मुक्त का खोज की रमा विनाश की मातृता अभिवादा का प्रयास 'याय का तला' की कामिनी और उपकार का सुलिया एसी ही पानाएँ हैं। ये अपने पतियों के उचित-अनचित व्यवहार का चपचाप सहन करती हैं। इस धरा की नारियों का एक वग वह है जो सामाजिक श्रृंखलाओं की अनिवार्यता के कारण विवाह भाव से पति अथवा घर की अधिकारिणी स्त्री (सास पति की चाची भाभा अथवा पूर पत्नी) के अत्याचार सहन करती हैं। विवाह के बाद की कुसुम कायदा के आधस में की रागिनी जोर मनोवेचना की उपा एसी ही विवाह नारियाँ हैं। उनकी मनोवेचना एवं कुठाओं का मनोवर्णन किंचित अक्षिप्त करने में लेखिका विफल रह गई है।

सुख की खोज की कथन तथा अभिनेत्री की गीता इस धरा का होकर भी अपने कायसम पृथक कर लेती हैं क्योंकि जब तक उनसे सहन होता है तब तक वे अत्याचार अवहलना तिरस्कार सब सहती हैं किन्तु जब पानी सिर से ऊँचा हो जाता है तब वे भाइट का जवाब पत्थर से देती हैं। कथन जब देवता है कि उसके पति धीरे स्वार्थी हैं—व केवल अपने सुख के लिए कभी उसका और कभी उनकी सपना रमा का आदर करते हैं—तो वह भी एक दिन पति गृह का त्याग कर देती हैं और फिर कभी नया लौटती। गीता भी अपने पति एवं सास के क्रूर व्यवहार से पीड़ित होकर एक दिन स्वानिमानपूर्वक सोचती हैं— नारा वदना उभा। जसा कोई उसका साथ करेगा वह भी वसा हा करेगी। आज बामवी मदा की नारी प्रतिगोच्य चाहता है। अपने अब तक के त्याग और बलिदान का बदला चाहता है जिसका पुण्य न उसका कमबोरिया और मजबूरिया बहुरूप उपहाम में उठा दिया। वह अब अपमान न सहनी।^१ अपने विचारों

का वाय रूप में परिणत करत हुए वह अभिनेत्री बन जाती है और एक दिन उसका पति अपने पूर्व-न्यवहार पर अनुत्पन्न एवं मतपन्न होकर उसे सम्मानपूर्वक लौटा लाता है। 'तपण' की नायिका विलासकुमारी अथवा दवरानी की बीरता का चित्रण करके लेखिका ने इतिहास प्रसिद्ध क्षत्रिय वीरागनाओं की बीरत्व की स्मृति को सजीव कर दिया है।

आलोच्य पात्राओं का दूसरा वर्ग वह है जिसकी नारियाँ प्रेम एवं बलिदान की दिशा में विभिन्न जादू प्रस्तुत करती हैं। विधि की विडम्बना की नायिका मोती सुधीर से प्रेम करत हुए किंचित् स्वाभिमान का परिचय देती है किंतु मिलन की सुधा विनोद से विवाह होने के अनुमान से बिप खाकर प्रेम की बंदी पर आहुति देने के लिए तत्पर रहती है। दंगदासा की सत्ता बिप तो नहीं खाती किन्तु दिनेश से विवाह न होने पर आत्म-ग्रहचारिणी रहकर दंग सत्ता का प्रण करती है। अपूर्व मिलन की उपा साहसी है, वह अपने प्रेमी निमल को पाने के लिए पिता द्वारा अपमान की बिस्ता न करके विवाह के पूर्व पितृ गृह से भाग निकलती है और संयोगवश अपने प्रेमी को पा सती है। प्रेम की राख की उपा इतनी साहसी न सही, फिर भी पिता द्वारा मनोनाश वर की स्वीकार करके वह प्रसन्न नहीं रहती और पति-गृह में अपने प्रेमी की स्मृति में घुलकर प्राण त्याग देती है। 'यू लाइट' की सोनामिनी भी कुछ कम दब एवं साहसी नहीं है। माता के विरोध की उपेक्षा करके वह उच्च शिक्षा प्राप्त कर सदी डाक्टर बनती है और विवाह करना स्वीकार नहीं करती। बाद में योग्य एवं गुणी पात्र प्रकाश को अपनाकर अतजानीय विवाह करके वह समाज के मुँह पर मानो तमाचा जड़ देती है। नमक की छान की सलीमा प्रेम के पथ में बहककर विजय की मिथ्या बातों में आकर 'गुरु' के सच्चे प्रेम की उपेक्षा करती है किन्तु जब बिपम परिस्थितियों में दोनों प्रेमियों के हृदयों का सच्चा रहस्य उदघाटित हो जाता है तो अपनी भ्रुति को सहज ही सुधार सती है। सुहाग की चूड़ियाँ में गारदा की साँस 'विश्वास' की माया 'माय' की तुला की लक्ष्मी आदि द्रव्य प्रकृति की नारियाँ के चरित्राकन में भी लेखिका सफल रही हैं।

नारियाँ की भाँति पुरुष पात्रों के चरित्राकन में भी लेखिका ने बहिष्कृत एवं अनेकरूपता को ध्यान में रखा है। 'दुर्भाग्य' गीपक कथा संग्रह के पात्रों का चरित्र प्रायः एकरूप है—कृत्रिम सौन्दर्य के बनीभूत होकर भयपान आदि कुप्रवृत्तियों के कारण पत्नी में रूप का अभाव होने अथवा बाद में सौन्दर्य क्षीण हो जाना के कारण पत्नी अथवा माया पत्नी के प्रति विश्वासघात इन पात्रों की उत्तलनीय प्रवृत्तियाँ हैं। मनु का विनोद पूजा का चन्द्रमोहन, अभिनशी का विजय परिवर्तन का रमण, सुख की खोज का लक्ष्मीचन्द्र, मनोवदना का नायक सुरेश, 'कनक' की नायक आशिष पात्र ऐसे ही भ्रूत एवं दम्भी पुरुष हैं जो अपने दुष्टता द्वारा पत्नियों के मन को ठस पहुँचाते हैं किन्तु ठोकर खाने पर अपने दुष्टता पर अनुत्पन्न करके क्षमा याचना द्वारा स्मृति को सुधार लेते हैं और पाठकों की संवेदना के अधिकारी हो जाते हैं। रूप के लिए का नायक रमण

तथा पुरुष का प्रेम का नायक उक्त पात्रों से इस बात में भिन्न है कि वह अनन्त तक अपने पापों का प्रायश्चित्त नहीं करते। उनकी पत्निमाँघुल घुनकर प्राण दे देती है किन्तु उन्हीं तनिक भी अन्याय नहीं होता। दुर्भाग्य का नायक रामू भी ऐसा ही स्वार्थी है जो एक बार भीख लेने गया तो लौटा ही नहीं और उसकी पत्नी तलसीअन्न तक बच्चा का नजर मोत से लांती रही। ऐसे पात्र पाठकों के हृदय में रोप एवं क्षोभ की सृष्टि करते हैं।

उपकार सग्रह में केवल उपकार कहानी का मनु तेमा पात्र है जो उपयुक्त नायक की भाँति पहले पत्नी तथा बच्चा पर धीरे अत्याचार करता है किन्तु बाद में परिस्थितियों के घात प्रणिघात से सुभाम का अवलम्बन करता है। आलोचन सग्रह में उपकथानायक (विधि की विडम्बना का सुधीर मिलन का किनो देगामी का निना मुहाग की छूड़िया का माहन यूसाइट का प्रकाश भाँति) भाँगा पात्र है। इन सबका एक सा गुण जो इनके चरित्र में सर्वोपरि है यह है कि वह अपनी पत्नी अथवा प्रमिया के प्रति दृढ़ अनुराग रखते हैं और अन्त तक उसका निर्वाह करते हैं। जीवन की अनुभूतियाँ नीपक कथा-सग्रह में परंपरागत पात्रों में पर्याप्त अनवरूपता है। जीवन के मोड़ का रमण और विद्या तथा अभाव कहानियाँ में नायक उत्तार एक सहृदय पात्र है। विवाह के बाद का विजय अभिलाषा का विपन पाय की तुला का राजनारायण परिवर्तन का प्रमुख भाँति पात्र सामान्य हैं जिनका आचरण परिस्थितियों से प्रभावित होता रहता है। जीवन के मोड़ का महेंद्र कामुक पात्र है। जलिका ने प्रायः पात्रों का परीक्षण चरित्र चित्रण ही किया है किन्तु कतिपय स्थलों पर प्रत्यक्ष कथन भी किया गया है। उदाहरणार्थ मजु का यह चरित्र-कथन अवलोकनीय है— मजु गिर-सी भोली इद्रधनुष सी सुन्दर हिमावत-सी धन मज छूटे बह जमीर गरीब सब की जीवन प्राण थी। क्योंकि मुझों में भाव वह जन जीवन जागति का मात्र धन पत्कर पूर रही थी। विनाश के गत में डूबे हुए ससार को बचाकर अमर जीवन के सुख की ओर ले जा रही थी। देग के कोने कोन में उसका नाम फल चका था।^१

कथोपकथन

विवाह नगिका ने अपने पात्रों के भनाभावा को मुखर रूप दत्त हुए सक्षिप्त एवं अवसरानुक्त सारगर्भित संवादा की योजना का है। पात्रों के वात्सलाप में उनकी निगाह-नीला सस्कार रचि जाति विपत्ताओं की अनुरूपता स्पष्टतः प्रतिबिम्बित रही है। यही कारण है कि वह नितान्त सजीव एवं स्वाभाविक प्रतीत होते हैं। स्नेह धना व्यय उद्दाम रूपा स्पष्टा आदि भावा को व्यक्त करते समय पात्रों विपत्त पात्रों की उक्ति या कृता सप्राण हो उठी हैं कि वक्ता का चित्र साकार हो जाता है। उदा-

हरणाय, 'अभिनेत्री' कहाना में गाला के प्रति उसकी सास की यग्याकिया, मुहाग का चूड़ियाँ में शारदा के प्रति उसका सास के बाग्याण तथा 'याय की तुना में वामिनी के प्रति उसका जठाना की कटूकितया उत्तेलनीय हैं।^१ लेखिका ने सत्राग में मयावमर वक्ता की भावभगिमा आदि की भी चर्चा की है और इस प्रकार कथोपकथन को और भी सजीव एवं आकर्षक रूप प्रदान किया है। यथाप्रसंग पात्रों की उक्तिया में बाग्यदग्य तक वितक उक्तिवचिष्य आदि प्रवनिता का भी समावेश हुआ है। चरित्र चित्रण एवं कथानक के अतिरिक्त कथोपकथन अनन्त उद्ग्य की अभिव्यक्ति में सहायक सिद्ध हुए हैं। उदाहरणार्थ परिवर्तन कहानी में उपा तथा उसके भाई के सम्भाषण उत्तेलनीय है जिनमें वे निम्ननिमित्त विषया की चर्चा करते हैं—असीस चलचित्रा का प्रचलन, आधुनिक शिक्षा के दोष निम्न स्वाधपरता एवं 'गोपण बलि के बडावा लिया है पत्राक नोआलली, विहार आदि प्रग्या में हिंसा का आलबाला आदि।^१

किन्ता विगय मन स्थिति मपात्र किम प्रकार का सम्भाषण करसकता है इसका लेखिका का अनुभूतिपरक गान है और हमारे कारण उनके द्वारा आयोजित सवाद मना वपानिक हा मक हैं। उदाहरणार्थ मुहाग का चूड़िया में माहम तथा उसका नवपरिणीता पत्नी 'गारग का रेल में लिया गया सम्भाषण विगेष रोचक एवं मधुर बन पडा है।^१ कनिषय स्थला पर लेखिका ने पात्रा के वार्तालाप के परस्पर होनेवाले प्रभाव का भी आलकारिक गाली में साथ साथ उत्तेलकर दिया है। उदाहरणार्थ 'जीवन के मा' में कथानामक रम्य एवं उसकी पत्नी आगा का मह सवाद द्रग्य है—

'बयो नाराज हो ? आज हम चाय भी नहीं दोगी।

घटे भर से ली पटा पा, पा क्या न ली। माना आगा में बिना कर्पा के बिजली चमक गई हो।

तुम तो थी नहीं, मैं तम्हारी प्रतीक्षा में था अकसा कसे पीता। मानो मलय समीर का एक भोका बह गया हो। पर बस के झुट में उससे भा आग लग गाली है हृदय की आग हलके ममीरण ने और घथका दी।

देग काल

गिवरानी जी ने अपनी कज्ञानिया में विषयानुकूल पाग्वारिक, सामाजिक एवं सामयिक राजनानिक स्थितिया के चित्र अवित करने के प्रति विगय जागरूकता का परिचय दिया है। उक्त समस्याओं के जा विभिन्न पडा उद्गाने ग्रहण विषय है, वे इस प्रकार हैं—

१ दगिए 'जीवन की अनुभूतियाँ', पृष्ठ १८४

२ बलित 'जीवन की अनुभूतियाँ', पृष्ठ १४७ १४८

३ देखिए 'उपहार', पृष्ठ ७० ७२

४ जीवन की अनुभूतियाँ, पृष्ठ ६५

१ पारिवारिक समस्याएँ

(अ) सत्यवत परिवार में घर की बड़ी बूढ़िया अथवा अधिर बत्ता पानपाव पतिया की पत्निया द्वारा नवपरिणीता जा पर कठोर शासन करने का डित नारिया की कूठाएँ।

(आ) समाज ने परंपरा की नारा की अपेक्षा जो अधिक स्वतंत्रता एवं अधिकार प्रदान किये हैं उनका दुर्भ्योग करनेवाले पुरुषों का अपना पत्निया के प्रति दुर्प्रवृत्ति जिसके लिए मद्यपान वेश्यागमन परनारी रमण उपद्रव निराश्रित अवहता अथवा ताड़ना की प्रवृत्तियाँ अपनाई जाती हैं।

२ सामाजिक समस्याएँ

(अ) यवक यवतिया के स्वच्छंद प्रेम के विभिन्न परिणाम—जहाँ समाज से दूरे रहकर चला जाए वहाँ निराशा और जहाँ साहस का परिचय देकर विराध किया जाए वहाँ सफलता।

(आ) प्रेम विवाह जाति भेद आदि सामाजिक संकलताओं का क्रूर बधन।

(अ) समाज में व्याप्त आर्थिक दयन्य के भयंकर परिणाम धनिता द्वारा निधन का शोषण निधन की दयन्य अवस्था।

(ई) हिंदू समाज में विधवा के प्रति दुर्प्रवृत्ति पतक यह एव पति-गृहक वातावरण में दयन्य का कारण नारी का असन्तोष पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित नारी की विनाशोन्मुख प्रवृत्ति आदि।

३ राजनीति सापेक्ष सामाजिक स्थिति चित्र

(अ) जंगलों के शासन काल में दयन्यता के प्रति शासक जाति का क्रूर अत्याचार।

(आ) स्वतंत्रता के उपरांत होनेवाला भयंकर साम्प्रदायिक रक्तपात शरणार्थी समस्या बापू द्वारा शांति-स्थापना का प्रयत्न आदि।

(अ) बंगाल का भयंकर अकाल का रोमांचकारी विभीषिका।

आलाम खान ने अपने कथानक में जो उक्त समस्याओं को अभिव्यक्त किया है उसका अतिरिक्त पाठों की उक्तियों एवं उनके विचारधारा में अनेक सामाजिक दृष्टिकोण का चित्रण है। उदाहरणार्थ अधोलिखित उक्तियाँ अवलोकनीय हैं—

(अ) पूजा कहानी में किशोर की माता के प्रति कथित उक्ति— आज देश रोटा रोटी चिन्ता रहा है पर रोटी का टुकड़ा नसीब नहीं हो रहा है। जो देश दूसरा का पट भरता था—आज उसका अपने बच्चा को रोटी नहीं है। उसका हजारों साल भूख से दम ता रहा है—लागा एक कदम खा पीकर अपनी आत्मा को कुचलकर पड़ रहते हैं।

(आ) कम्बुकिनी कहाना म मुरेग द्वारा हिंदू विधवा की दुःशा का चित्रण करते समय की उचित—'सकल हिन्दू विधवायें अपन बचपन के कठिन जीवन को नहीं सह सकती किस प्रकार अपना कलुषित जीवन यतीत करती हैं। क्या यह पुनर्विवाह स अच्छा है ? पर समाज इसी को श्रेयस्कर समझता है। इस समाज म एक पुरुष अपना दजना शादी कर सकता है पर एक बाल विधवा को आज म बचपन की कठोर सेज पर सुलाना चाहता है।'^१

(इ) 'अभाव कहानी म नायक की विचारधारा— मा रसोईघर म छत्पट कर रही थी और मैं सोच रहा था—क्या वास्तव म हम स्वतंत्र हैं। आज प्रत्येक वस्तु का अभाव हम खाये जा रहा है।'^२

परिस्थितिजन्य वातावरण व अतिरिक्त आलोच्य संश्लिष्ट ने प्राकृतिक वायुमण्डल के भी अवसरानुकूल सुंदर दृश्य चित्र अंकित किये हैं। प्रमाणस्वरूप एक उद्धरण अब लाकार्य है— 'संध्या का समय था। उपाराणी के साम्राज्य पर निगरानी अपना आगि पर्य जमा रहा था। उपा युद्ध म हारे हुए राजा की नाइ गन गन क्षीण हो रही थी। उसका लाहित आचल की लालिमा सुदूर गितिज मे अब भी व्याप्त हो रही थी। इधर निशीथिनी प्रियतम व साथ स्वतंत्रता संश्लिष्ट के प्राणन म उत्तर रही थी। उसकी अलकावनिता म गुंथे तारक भाती सहसा झिनमिला उठते थे।'^३

उद्देश्य

चावन एवं समाज म व्याप्त दुरूपताओं के प्रति विद्रोह अत्याचार का तीव्र विरोध तथा उच्च एवं उदात्त आदर्शों की प्रतिष्ठा आलोच्य कहानियों का प्रमुख लक्ष्य है। पारिवारिक एवं सामाजिक क्षत्रा म नित्यप्रति सम्मुख आनेवाली समस्याओं का लेखिका न प्रमुख रूप स चित्रित किया है और कृष्णा सहानुभूति हृदय परिवर्तन सबदना अनुताप आदि भावनाओं का जाथय लेकर उनका आदर्शवादी समाधान प्रस्तुत किए हैं। इस प्रसंग म श्री भगवतीचरण वर्मा का मत य पठनीय है— 'आदर्शवाद को साधन रखकर इन कहानियों का सज्जन हुआ है। इन कहानियों मे आज के जागते हुए और उन्नतिशील राष्ट्र की सजीव चेतना है। वे आज व यग का प्रतिनिधित्व करने का प्रयत्न करती हैं।

श्रीमता विनोई न पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों म समता एवं समरमता का पोषण किया है। रूढ़िवादी परम्पराओं (विधवा विवाह नियम नारी

१ दुर्भाग्य पृष्ठ १५४

२ जीवन की अनुभूतिया पृष्ठ १७

३ उपकार पृष्ठ १३७

४ दुर्भाग्य भूमिका, पृष्ठ ४

पर पुरुष द्वारा शासन सत्यक परिवारा में नववधूआ पर परिवार का आग्रह शास्त्रियों का नियंत्रण माता पिता द्वारा कन्या के घर निर्वाचन की स्वतंत्रता का विरोध जानीय भेद भाव का कारण प्रेम विवाह पर समाज का नियंत्रण आदि) का कुत्तर परिणाम दिया। घर उठोने प्रकारांतर से बदलते युग का नवीन मायतावादी कामधन दिया है किन्तु पश्चिमी सभ्यता की आड में मनमाने भोग विलास में लिप्त रहकर समाज का दूषित करनेवाला नर नारियाँ के प्रति उह सहानुभूति नही है। पूजा कहाना में आधुनिक नारा की पतनामुख प्रवृत्तियाँ—सोसाइटी में बैठकर मद्यपान मद्य रचना मायावादी गान कहलाना भदों का साथ नाचना पस के लिए सब कुछ करना आदि का भरपूर निन्दा की गई है। जीवन का माया पीपक कहाना में आया पल इसा चकाची का गिरार बनकर पति से दुःखवहार करता है किन्तु बाद में ठोकर खाते का पूरा हा सभलकर गुराह पर आ जाती है।

जो भी हा यह स्वीकार करना पड़गा कि आन्तरिक तलिका की कहानियाँ में मानवमात्र के कल्याण की कामना निहित है। यन्त्रि एव समाज प्रजा एक गामक पुरुष एव नारी प्रत्येक बग की विराधी इकाइयाँ के लिये उहान समानाधिकारा एव सम रसता गनक भावा का प्रतिपादन किया है। तलिका का विचार है कि यन्त्रि कलव्य को नश्य म रखा जाए और अधिकारा का लोभ न किया जाए तो जीवन एव समाज की विपमता स्वतः दूर हो जाएगी।

भाषा शली

आने य कहानियाँ में त्रयवाक्यावत सरन एक व्यावहारिक हिंदी का प्रयोग हुआ है जिसमें तत्सम एव तत्भव शब्दों का अतिरिक्त नफरत निल कटुक विराग मजबूर किस्मत दुःखमन शलीम आदि प्रचलित विदगी शब्दा अध गूमडा आदि शब्दों का अंतरम संतरम कड कचरे अलम गलम आदि शब्दों का प्रयोग एव हृदय कोकिल समार सागर आदि रूपका न पर्याप्त सजावना का संचार किया है। तलिका ने महावरा आर लाकाकिया का प्रयोग की ओर भी 'यापक' रूप से ध्यान दिया है। इनकी अमिष्यमिष्य मरुदन अमिष्यमिष्य स्त्रिया की उक्तिनया में हुई है। शीमती विमो की

१ दलिय उपकार पृष्ठ ६३

२ दलिय दर्भाय पृष्ठ १६ २०

३ दलिय दर्भाय पृष्ठ ६६ ४६ ११७

४ दलिय जीवन की धनभूतियाँ पृष्ठ १४८, १४९ १६६, १६७

५ दलिय दर्भाय पृष्ठ ३४ ६१

६ दलिय दर्भाय पृष्ठ २ १८६ १८६

७ दलिय उपकार पृष्ठ ७२ १४५

कहानियाँ मरणोत्तरक एव नान्वीय शक्तियों के संयोग से रोचक तथा प्रभावपूर्ण बन गयी हैं। विकास हुआ है। अवसरानुसूल आलंकारिक शक्तियों एव सूक्ति वाक्या का प्रयोग उनकी गली की उल्लेखनीय विशेषतायें हैं। उदाहरणार्थ निम्नलिखित उद्धरण अवलोकनीय है—

१ आलंकारिक शक्ति

(अ) "ओर मजु शिशु सी भोला, इन्द्रधनुष सी सुंदर हिमाचल सा दड मजु छोटे बड अमीर गरीब सब की जीवन प्राण थी।"

(आ) टिमटिमाते हुए सितार स्वाधियों के स्वन पर मानो खिलखिलाकर हस रहे थे।

२ सूक्ति गली

(अ) 'दाम्पत्य जीवन में स्वर्गीय प्रेम ही सब सुखों की कुंजी है।'

(आ) कुचला हुआ सप जव घात करता है तो अच्छे अच्छे भी उसके दाव को नहीं बचा सकता।

कुल मिलाकर शिवरानी जी की भाषा शली भावानुरूप सक्षम बोध्यम्य एव प्रभावपूर्ण है। उन सब ने भी चाय पिया सड़की की कितना विभाग है 'किर पया अपनी मजाक उड़वाऊ आँखें कतिपय वाक्यों में 'पाकरण सम्बंधी अनुश्रुति चित्रण हैं किंतु ऐसी अनुश्रुतियाँ अधिक नहीं हैं। अतः इनसे भाषा के सहज सौंदर्य में कोई बाधा नहीं पहुँची है।

निष्कर्ष

श्रीमती शिवरानी विन्नोई की रचनाओं में अनुशीलन स्पष्ट है कि वे पारिवारिक कहानियाँ लिखने में विशेष सफल रही हैं। उनकी कहानियाँ मरतमान मारी जागरण की सजीव चेतना को स्थान प्राप्त हुआ है। पारिवारिक सामाजिक एव राजनीतिक समस्याओं का चित्रण जोर करण सहानुभूति तथा आत्मवाद के आधार पर उनका सुन्दरतम समाधान उनकी कहानियों की उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं। इन कहानियों का प्रमुख स्वर है—जीवन एवं समाज की कुरूपताओं के प्रति विद्रोह तथा अत्याय एवं अत्याचार का तीव्र विरोध। रूढ़िवादी विवृत परम्पराओं का मण्डन एवं नवालाक मुक्त सिद्धान्तों का मण्डन भी उक्त कहानियों की विशेषता है किन्तु पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित दुगुणा के प्रति लेखिका ने घणा प्रकट की है। आलोच्य कहानियाँ मारी अपने भारत में आदर्शों को सबर सामन आयी है किंतु अत्याय की अति हान

१२ वर्तमान, पृष्ठ ८ ११७

१४ जीवन की अनुभूतियाँ पृष्ठ ५८ ११५

१५ उपहार, पृष्ठ ६ २२, ६२

पर वह ईंट का जवान पत्थर से ग्रेती है। दूसरी ओर लेखिका ने पात्र पात्रों ने प्रम
 एव दस सेवा के क्षय में उज्ज्वल जाग्य प्रस्तुत किये हैं। जीवा की गुण दुग्मयी अनु
 भूतियों का स्वाभाविक चित्रण उनकी कहानिया का लक्ष्य है और वे दृग्म सफत भी
 रही हैं।

श्रीमती मन्नू भट्टारी

श्रीमती मन्नू भट्टारी ने हिन्दी कहानी की दुनिया से मुक्त रहने का सपना का साधन बनाया था। वह रचना की है। अतः उनका तीन कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए हैं—मैं हार गई तीन निगाहों की एक तस्वीर एक पुरुष एक मारी। प्रथम दो मरना मेरे लेखिका की जन्म बारह और आठ कहानियाँ को स्थान प्राप्त हुआ है। तृतीय संग्रह में कुल छह कहानियाँ हैं जिनमें प्रथम तीन लेखिका के पति श्री राजेंद्र यादव की हैं और शेष तीन लेखिका की हैं। इसी उक्त तीन कहानियाँ लेखिका के प्रथमांक स्वयं सफलता में स्थान पा चुकी हैं अतः उनकी तीनों रचनाओं में कुल मिलाकर बीस कहानियाँ हैं जिनमें तीसरी जन्म इस प्रकार है—ईसा के घर इंसान मीत का सुम्बन जीता बाड़ी की हार एक कमजोर लड़की की कहानी सयाजी युआ अभिनता इमान दोवार बच और बरसात पड़ित गजाधर गाँधी कील और बसक दाकलाकार मैं हार गई तीन निगाहों की एक तस्वीर अकली अनयाही गहराईयाँ छोटे मिक्के घुटन, हार मजदूरी चम। उनके अतिरिक्त लेखिका ने कुछ अन्य कहानियाँ भी लिखी हैं जो समसामयिक पत्रिकाओं में स्थान पाती रही हैं किन्तु उनकी कथा प्रवृत्तियाँ निधारण के लिए यहाँ केवल संग्रह में कहानियाँ का आधार लिया गया है।

कथानक

श्रीमती मन्नू भट्टारी ने व्यक्तिगत चरित्रों को मुख्य चरित्र बनाकर कथानक की मृष्टि की है। पाँचवाँ कथा साहित्य के प्रभावस्वरूप व्यक्ति-वचन पर बल देने पर भी उन्होंने भारतीय रमानुभूति की प्रायः उपयोग नहीं की है। इसलिए उनकी कहानियाँ कथानक की दृष्टि से अत्यन्त प्रभावपूर्ण हैं। विषय की दृष्टि से इन कहानियों का पात्र वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—(अ) वर्ण रस की मामूली टीम लिए हुए असफल प्रेम-कथाएँ (चम घुटन एक कमजोर लड़की की कहानी) (आ) रमाचिन की सीमाओं का स्पर्श करती हुई चरित्रप्रधान कहानियाँ (अकेली अनयाही गहराईयाँ दाकलाकार मजदूरी सयाजी युआ नाग निगाहों का एक तस्वीर कील और बसक) (इ) 'राष्ट्र चित्र' (पड़ित गजाधर गाँधी मैं हार गई अभिनता यात्रा मिक्के) (ई) मानव के सामान्य मनाविधान का पश्चिमात्मक कहानियाँ (जीता बाड़ी की हार इमान ईसा के घर इंसान) (उ) वर्तमाननारा की अधिकार मजदूर कान्तिवादी चेतना का प्रतीक रूप

कहानिया (हार दीवार बच्चे और वरसात)।

प्रमदरक कहानियो मे तलिका न बाह्य परिस्थितिया अथवा प्रम पान की दुबल ताओ को हेतु रूप मे रखकर असफलताजय निराशा बदना एव बुठाआ वे हृन्त्यस्पर्शी चित्र अंकित किय ह । चरित्रप्रधान कहानियो म क्यानक प्राय दो रूपा म चित्रित हुए हैं— एक तो वे जिनम पात्रो की मानसिक युद्ध ग्रि ययाँ बाह्य परिस्थितिया म मस्तिष्क रती हैं और दूसरी वे जिनम पात्रो की मनाग्रन्थिया की अपक्षा बहिमखी प्रवर्तियाँ प्रगन हैं । तीन निगाहा को एक तस्वीर एव कीन और कसक प्रथम वग की प्रतिनिधि कहानियाँ हैं । तीन निगाहा की एक तस्वीर की नायिका नना पति की दोघ रग्णावस्था क कारण काम बुठाआ एव अतप्त लालसाआ का आधार बनती है और अवचतन म की प्रक्रिया उस पडासी युवक हरीश की ओर आकृष्ट करती है । इसी प्रकार कील आर कमक की रानी की अतप्त यवा प्रवर्तिया पति की नीरसता से उपक्षा पाकर पडासी युवक गल्लर नारा की गई अपनी प्रगासा और सहानुभति म तप्सि का माग खोजती है और जब शखर उसमे अधिक मुन्गरी नारी से बिवाह कर रता है तब वह प्रत्यक्ष रूप स अकारण ही वधु के प्रति असहिष्ण हो उठती है और तनिष सी बाता को लेकर तिस्य उसस भगडती है । त्तितीय वग की चरित्रप्रधान कहानिया अवेसो मजबरी सयानी बुआ और अनयाही गहराया हैं । नम पनिपादित चरित्र अपेक्षाकृत साधारण मनोप्रयियो के हैं (असे यक्ति वचित्र्य महा भी है) और उनके मनाविश्मयण क लिए सामाय एकसुत्रात्मक क्यानक की मृष्टि की गई है जिनम मुख्य रूप से उन चरित्रो की मन स्थिति और स्वभाव का कहां घटना मस्तिष्क और कही विश्लिष्ट वग से विश्लेषण किया गया है ।

गजावर गास्त्रा म उन आधुनिक लेखका पर व्यग्य है जो मौनिकता के अभाव मे तस्कर वक्ति ग्रहण करते हुए आत्मप्रगामा द्वारा अपने को स्पष्ट माहित्यकार सिद्ध करने के प्रयास मे रहत हैं । मैं हार गई म आधुनिक नेताओ क चरित्र स्वखन पर तीखा व्यग्य है । इसी प्रकार ल्वाटे सिक्के म सबहारा वग के प्रति पूजीपतिया की हृदयनीनता पर व्यग्य ह ता अभिनता म अमरवक्ति युवको क पतारक यक्वित्व का यग्यपूण चित्रण हुआ है । तीती बाजी की हार मगान और ईसा के घर ईसान पीपक कहानियो का मूल स्वर यह है कि मानव की जो जमजात सहज प्रवर्तियाँ हैं उन पर कृत्रिम नियन्त्रण रखना प्राय असफल ही हाता है क्याकि स्थायी रूप स उनका दमन कभी नहीं हो सकता । अत उचित यही है कि जीवन की प्राकृतिक लालसाआ को तप्त होने दिया जाए । हार तथा दीवार बच्चे और वरसात म नारी को घर परिवार और परम्पराओ से ऊचा उठाकर स्वतंत्र वक्तया म सगन लिखाया गया है । हार की नायिका पति के हृन्त्य की महानता का बोध होने पर अत म अपना माग परिवर्तित कर लेती है किन ऐसा वह हृदय की निष्ठा से ही करती है परम्परागत मा यताओ के बंधना से विवश होकर नहीं । घटन और दो कलाकार पीपक कहानियो म तथिका ने परिस्थितिया एव पात्रो की मनावर्तिया को तलनात्मक रूप म चित्रित किया है । इस प्रकार लेखिका ने हडिगत

विषय की अपना चित्रण से सम्प्रेषित नूतन प्रसंगा की ग्रहण किया है। गौरव की बात यह है कि उनके कथानक एक ओर तथाकथित नयी कहानिया की व्यष्टता एवं दुरुहता में मुक्त हैं और दूसरी ओर प्राचीनता का पिच्छेपण भी उतम नहीं है। अपनी इसी विवेकता के कारण उनकी अधिकांश कहानियाँ विशेष स्वच्छ एवं प्राजन रूप में प्रस्तुत हुई हैं।

चरित्र चित्रण

आलोच्य विवेक ने अपनी कहानी कला को व्यष्टि के धरातल पर प्रतिष्ठित किया है। प्रायः प्रत्येक कहानी में किसी एक पात्र की विसी एक विवेकता को जो प्रायः उस पात्र के व्यक्ति-विविध की छोटक है वह बिंदु बनाया गया है और उस पात्र के समस्त बल, परिस्थितियाँ अथवा पात्रों का सहयोग सब उसी एक उद्दिष्ट प्रवृत्ति की मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति में सलग्न रहे हैं। कुछ कहानियाँ जिनमें दो पात्रों की विरोधी प्रवृत्तियों की तुलना ही लेखिका का लक्ष्य है, उनमें कथन की अपवाद हैं। वे कहानियाँ ये हैं—घुटन अभिनेता, दो कलाकार, चरमे। उनकी अधिकांश कहानियाँ नायिकाप्रधान हैं। नायिका के विविध रूप जो इन कहानियों में चित्रित हुए हैं इस प्रकार हैं—

(अ) अतुल्य गानसाज से विह्वल व्यक्ति। यथा—तीन निगाहों की एक तस्वीर की दाना कील और कसब की रानी, ईसा के घर इस्मान की एजिला।

(आ) मनुहृदय, स्नेहमयी सहजविद्वानमयी कोमलायी नारिया जो विषम परिस्थितियों में समझ सहज ही घुटने टक देती है। यथा—घुटन की मोना और प्रणिमा चरमे का गल एक कमजोर लड़की की कहानी की रूप अभिनेता की रजना, गीत का चूमन की यनिका।

(इ) चित्र-विविध से सम्प्रेषित ममतामयी बच्चाएँ। यथा—अकेली में मोना बुआ, सयानी दुआ में सयानी 'मजबूरी में बूझी अम्मा।

(ई) अधिकार सजग क्रान्तिकारी नारिया। यथा—दीवार, बच्चे और बरमात में नयी विरायदारनी 'हार में दीपा।

दो कलाकार की अक्षणा और चित्रा उनके वर्गीकरण की अपवाद हैं। वस्तुतः लेखिका का उद्देश्य इनके चरित्रों की विरोधी प्रवृत्तियों की तुलना करना रहा है अतः उसी ने अनुरूप इन पात्रों का चरित्रांकन हुआ है। चित्रा एक उत्कृष्ट चित्रकर्त्री है जबकि अक्षणा का उद्देश्य दोन दुखिया की सेवा करना है। एक मृत भिखारिन के गरीब से बिपक्षर रीत निरीह बच्चे के दर्श को चित्रा ने अपने चित्र में स्थान देकर घन एवं गंभीर प्राप्ति किया जबकि अक्षणा ने उन बच्चे को अपनी सन्तान की भाँति पाल पोसकर गम्भीर नागरिक की भाँति जीवन का अधिकार दिया। इसी प्रकार जीती बाबू की हार में आना, नतिना और मुरमा का चरित्र विकास सोद्देश्य हुआ है।

पंडित गजाधर गाम्त्री चरमे अनथाही गहराई, 'अभिनेता और हार

शीघ्र कतिपय अपवादस्वरूप कहानिया के अनिरुध्न संगिका ने पुष्प पात्र का प्रायः गौण स्थान दिया है। उदाहरणार्थ तीन निगाहा की एक तस्वीर में हरीश मजबूरी में रामेश्वर, 'घुटन' में निरजन अरूप और प्रतिमा का पति भीत का चुम्बन में निमित्त कीन और कसक में कनाग और नेखर दो कलावार में मनोज सयानी बजा में सयानी का पति और अकेली में सोमा का पति प्रायः नायिकाया के चरित्र विनाम में गौण संपादन बनकर प्रस्तुत हुए हैं। त्रिखिन्ना पात्रा के चरित्रावन में मनोविश्लेषण अतद्वृष्टि का परिचय दिया है। उनका कहानिया में चरित्रा का मनोविश्लेषण प्रायः अत्युपरा की धाली में हुआ है। वह पात्र जो वह रूप अर्थान में के रूप में कथानक प्रस्तुत करता है प्रायः गौण होता है और निरपेक्ष विनयपण के रूप में वह मुख्य पात्र की उचित विनयता का एक परिस्थितिया का ध्यवत करता है। तीन निगाहा की एक तस्वीर की नना सयानी बजा की 'मैं इसा के घर इसान की मैं पति गजाघर नास्त्रा का मैं और हार की दीपा एस है पात्र पात्राए हैं।

कथोपकथन

मन्तूजी की कहानिया मनोविश्लेषात्मक जवश्य हैं किन्तु एक जन विनयपण की नीरसता का अपक्षा उहाने अपना कहानिया को नाटकाय सजीवता से अनुप्राणित किया है। लक्ष्य संवाद-योजना का भी वहा है 'गणनात्मक' एक विनयपण अंग का है अर्थात् कथारूप पात्र की विविष्ट मनोवृत्ति का मुखर अभिव्यक्ति देना। कथोपकथन की प्रायः निम्नलिखित गलिया आलाच्य कहानिया में प्राप्त होती है—

(अ) स्वतन्त्र कथोपकथन—अनयाहा गहराई में मुनंदा और निवनाय का अघालिखित वाक्पलाप सवा उदाहरण है—

उरा ठहरा एक बात पूछनी है। तम टमूगन करना चाहोगे ?

बाहन से भी मिनगा वहाँ ? स्वर बभा सा था।

मैंने एक जगह बात का है। तासरा और चौथी कक्षा के दो बच्चे हैं एक घण्टा रात्र पना गग तो बास द देंगे—तम्हारा खच ही निकनगा।

यदि दिनवा दें ता सच आपका बड़ी कृपा हागी मैं उस समय बन्त ही कपट में हूँ। आप सच भी नहीं सकते इतने कपट में।

कृपा की क्या बात है तम काम करागे और वे पसे देंगे। चना यहा पास ही है। तम्हें जभा मिनता जातो हूँ।^१

(आ) पात्रा का गतिविधिया के बाच में प्रस्तुत किया गया सवा—इस दृष्टि से मजबूरी 'शीघ्र कहाना में यह उदाहरण द्रष्टव्य है—

अम्मा का काम समाप्त हुआ तो मिटटा में मना दोना दयनिया का जमान पर

पूरे जार में टिकाते हुए उहाने उठन का प्रयत्न किया पर एक सद आह सा उतने मह मे निकलकर रह गई। वे उठ नहीं पाइ तो बड़े ही कानर स्वर में वालीं अर नवरा, मुझे जरा उठा दे री धुने तो जैसे फिर जुड़ गय।

‘जुड़ेग तो सही। ऐसी मर्नी में जरा स मिटटा में मनी बठी हो। बेटे बहू आ रू हैं तो ऐसी क्या नवार् हो रही है सभा के घर आते हैं। और नवदा ने अम्मा को महारा दकर उठाया उनके हाथ धुलाये और खनिया पर निग्न लिया।’

(६) कवता के काय-यापारा एव मनोभावा व सवन सन्निष्ट मवात् । यथा—

जनार की प्लट का अपनी ओर सरकात हुए निमल ने कहा— लाभा, मैं खुश था नूगा। जार बहू बठन का प्रयास करने लगा।

‘क्या भरे हाथ म क्या जनार का मिठास जाती रहता है? —और प्लट उसन वापस लीच नी।

‘पगली। निमल फिर लेट गया और बड़ मावपण नेत्रा से घूमन हुए पल का निहारन हुए बोला— पिताजा के सामन कुछ न कुछ बहाना तो बनाना हा हागा। नर पर मैं यहाँ स बही न जाऊँगा।’

मन ही मन निहान हात हुए पल के बनी अन्त स आखें नचात हुए कहा— हाथ राम। हतने बड़े हाकर फूट बोलागे। और अपनी ही बात पर बहू खिलखिलाकर हन पडा।’

श्रीमता भडारा की कहानिया में कथापकथन यथाप्रसंग विनाद व्यग्य स्नहृतया जावन के अय महज तत्वा स अनुप्राणित रहे हैं। उहान अनिर्गित स्त्रिया के वातालाप अत्यन्त स्वाभाविक एवं सजीव गनी में प्रस्तुत किये हैं। मावानुस्पता के अनिर्दिष्ट भाषा की पानानुकूलता न उनमें और भी अधिक राचकता का सचार किया है। उदाहरणाय दावार बच और वरसात में भगो भाभी तथा अय स्त्रिया व सम्भाषण और अकनी में मोमा वभा का उक्तिर्मा अवलोकनीय ह। भगो भाभी की यह उक्ति प्रमाणम्बटप सद्वरणीय है—

वा और सुना। ताय सब बधात बातें हो गद। लुगई पर ने आन्मी की तो परवा कर नहा और दूसरा ने साथ मटरगस्ता करता फिर अलबारा म निर निरकर धपाव दूसर गनों के साथ चिट्ठी पत्री करे अब वर तक किमी व वर्गस्ति होव आविर— वर्गस्ति की भी एक हट्टाव है। फिर एक महीन पहल बहे हैं कि बड़ी लडाई हुई पाना म। यह बहू भी कि एक स्कूल म जगह खाली हुई है सो मैं ता काम बन्ना पाना वा। आदमा न ना साफ बहू दी कि तुगाई स नौकरी बराज उम इज्जत व बर नना कराने।

१ तीन निगाहों की एक तस्वीर पृष्ठ १०४ १०५

२ एक पुष्प एक नारी पृष्ठ १२५ १२६

जिन आदमी में कमाने की लियावत नहीं होव वह अपना जुगाड़ को भेज कमान क लिए । उने तो बस कह दो कि नौकरी कम्मी पर आदमी को तो घर की दखत का भा लियाव रखना पड कि नहीं । कहें खूब लडाई हुई दाना में जीर सब में ही बग अनरोना था । अब तुम्ही बताओ अम्मा य सब बातें आब न मुझ भार यानी कि नहा ? आमी तम्ह रानी की तरह रख तो तम कहो कि नहीं हम तो नौकरानी की तरह रह्य । औरत का तो काम ही हाव घर वार देखना धान बच्चे रखना पर घाल बच्च भी ऐसी औरत क कहा स हाव भरद पास आव तो तम्ह चिन् छूट है जान मरा कायता हाव ।^१

ऐसा उक्तिया कहा कही दोष अवश्य हैं, किंतु अपनी विनिष्टता के कारण पाठक को ऊबने नहीं देता और पात्रों के मनाविमान को समझने में सहयोग देती हैं ।

देश काल

मीमता मन्नू भट्टारी की कहानियाँ प्रायः व्यक्ति चरित्र के घरातन से निर्मित हैं। हर मनोवचानिकता की दिशा में विकसित हुई हैं । वर्तमान युग में मुख्य रूप से ऐसी ही कहानियाँ की रचना की जा रही है जिनमें बाह्य देश काल का स्वतंत्र चित्रण नहीं होता अपितु पात्रों के मानसिक वातावरण के पास में बाह्य वातावरण की अवतारणा की जाती है । मन्नू भट्टारी ने भी देश काल के अंतर्गत परिस्थितियों का विनिष्ट चित्राकन न करके पात्रों के काय व्यापारा एवं चिन्तन की गतिविधियाँ के संश्लेष में उनका अवतारणा की है । उनका यह चित्रण अपने में इतना जगमगा है कि एक ओर उसमें बाह्य दृश्या की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है और दूसरी ओर कहानी की सम्पूर्ण संवेदना सम्बद्ध पात्र की गतिविधि को लेकर पाठक को सम्मुख उदभूत हुई है । घुटन कहानी के प्रारम्भ की ये पंक्तियाँ ऐसी ही हैं—

प्रतिमा ने एकाएक महसूस किया कि हवा एकदम रुक गई है और उमस बढ़ रही है । उसने उठकर धीरे-धीरे ऊपर से चार हटा दी बनी पसाने से भीग गई थी । क्या मौसम है यहाँ का भी कभी एकदम ठण्ठ हो जाती है और कभी बुरी तरह उमस हो जाता है । उस पल पल बदलत मौसम में ही तो बेबी की सेहत ठीक नहा रहती ।

सूखे नजरो से वह आसमान को देखने लगी । नीला स्वच्छ आसमान और बेशुमार छिन्न-टूटे तारे । उसने साँचा लोग तारा भरे आसमान के सौन्दर्य की बड़ी चर्चा करत है पर जान क्या उस आसमान पर ये तारे भी अच्छे नहीं लगत मानो आसमान के मह पर धनी चर्चक निकल आई हो । दूसरे ही क्षण अपना इस धिनोनी कल्पना पर वह सन्न हो घणा से भर उठा । उस जगह उसका सौन्दर्य-बोध धीरे धीरे मरता जा रहा है । इन चार साँचा में ही किन्ना परिवर्तन आ गया है उसका जीवन में धीरे धीरे नायक सभी

कुछ मर जाए। उसने आभमान से नज़र हटा ली। करवट सवर नीचे पान पर देखने लगी। 'सारी घास मूख गई। अब तो बारिश में ही हरियाली होगी। जब वह यहा आई थी कितन जतन में अपने बगीचे को साफ़ी और सवारती थी पर अब उसका मन नहीं लगता।'।

इस अवतरण में प्रतिमा का मानसिक संघर्ष एवं बाह्य परिस्थिति का अ-यो-या श्रित चित्रण हुआ है जिसमें पाठक के मन में अनायास ही घण्टी का साकार चित्र अंकित हो जाता है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि जिन कहानियों में लेखिका ने बिन्ही विशिष्ट पात्राओं का चित्रण रसकर व्यंग्य चित्र अंकित किये हैं उनमें अनायास ही समसामयिक देश-काल से सम्बद्ध सख्त प्रस्तुत हुए हैं। उदाहरणार्थ छोटे सिक्के, नीपक कहानी में सब हारा वगैरे प्रति पूजापतिया की हृदयहीनता का व्यंग्यपूर्ण चित्रण हुआ है। अभिनता और पड़ित गजाघर गारुनी में भी लेखिका की दृष्टि इस शैली के अनुरूप रही है। मैं हार गई मैं किता 'यक़िन चरित्र को सक्षय में नहाने रखा गया अपितु बड़े मौलिक एवं प्रभावपूर्ण ढंग से नताना की दुबलता का पर्याप्त किया गया है।

उद्देश्य

आलोच्य लेखिका ने कहानियाँ की रचना प्रायः दो रूपों में की है—(अ) समाज के परिवेश में व्यक्ति की आलोचना के धरातल में लिखी गई कहानियाँ (आ) व्यक्ति विशेष का मन स्थिति को सवर लिखी गई मनोवैज्ञानिक कहानियाँ। प्रथम प्रकार की कहानियों में भाव्यता स्पष्ट है। इनमें चरित्रगत नीतिगत अथवा समाजगत कोई न कोई लक्ष्य निश्चित रूप से अभिव्यक्त हुआ है। जैसे घुटन अभिनेता, एक कमजोर लड़की की कहानी ईसा का घर इन्सान दीवार बच्चे और भरसात छोटे सिक्के, गात का चुम्बन जीती बाज़ी की हार, अमान मैं हार गई और दो कलाकार नीपक कहानियाँ इसी प्रकार की हैं। 'नमः सामान्य जीवन दान और समाज के परिवेश में व्यक्ति दान की प्रवृत्तियाँ प्रमुख रही हैं। उदाहरणस्वरूप ईसा के घर इन्सान नीपक कहानी का लक्ष्य यह सिद्ध करना है कि प्राकृतिक लालसा का कुठित करने से व्यक्ति में विकार आ जाते हैं अतः जतप्त कामनाओं को तुष्ट करके सहज एवं स्वस्थ जीवन जीना चाहिये। लेखिका द्वारा अभिव्यक्त यह लक्ष्य फायड का जीवन-अर्थन से प्रभावित है। इसी प्रकार घुटन कहानी का लक्ष्य यह सिद्ध करना है कि समाज में सब व्यक्तियों का रजि समान नहीं होनी, अपितु कई बार प्रायः विरोधी ही होती है। घुटन की एक पात्रा प्रतिमा यक़िन के वामनात्मक संघर्ष की अतिशयता से दुःखी है ता हूनरी पात्रा माना अपना माता को सनकना का फलस्वरूप प्रमी का साहचर्य में वचित रह जाने का कारण व्याकुल है। दो कलाकार में भी दो सविया का रजि-व्यक्ति का प्रस्तान है।

जिम जादमी म कमाने की लियागत नही होव वह अपनी गुमाई को भज कमाने क निए । उन ता बस क दो कि नौकरी कहेगो पर आत्मी को तो घर की रखन का भा खियाल रखना पड कि नही । कहै गूबलडाई हुई दाना म और तब स ही बग अनजोना या । अब तुम्ही बताओ अम्मा य सब बातें आबल मुझ मार वाली हैं कि नहा ? आत्मी तम्ह रानी की तरह रख तो तम कहो कि नही हम तो नौकरानी की तरह रह्ये । औरत का तो काम ही होव घर वार दछना बान बच्च रखना पड बाल बच ओ ऐसा औरत के वहाँ स हाव भरद पास जाव तो तम्ह चि हू है जान मरा बान्ना हाव ।^१

एमी उक्थिया वही कही दीध जरय है किंत अपनी विगिष्टता के कारण पाठक को ऊबने नही दता और पात्रा क मनोविज्ञान को समझने म गहुर्योग देती हैं ।

दश काल

जीमना मल्लू भडारी की कहानिया प्राय व्यक्ति चरित्र क घरातन स भिन्न होकर मनावनानिकता का दिगा म बिकसित हुई हैं । वर्तमान युग म मुख्य रूप स ऐसी हा कहानिया की रचना की जा रही है जिनम बाह्य देग काम का स्वतंत्र चित्रण नहीं होना अपित पात्रा क मानसिक बानावरण के पात्र म बाह्य वातावरण की अवतारणा की जाती है । मल्लू भडारी न भी दश काल क अतयत परिस्थितिया का विशिष्ट चित्रावन न करक पात्रा क काय व्यापारो एव चिन्तन की गतिविधिया क संश्लेष म उनका अवतारणा की ह । उनका यह चित्रण अपन म क्त्ता अगाध है कि एक ओर उसम बाह्य दृष्या की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है और दूसरी ओर कहानी का सम्पूर्ण संवेदना सम्बद्ध पात्र की गतिविधि का लकर पाठक क सम्मुख उदभत हुई है । घुटन कहानी क प्रारम्भ की व पकितया ऐसा हा है—

प्रतिमा न एकाएक महमूस किया कि हवा एकदम रुक गई है और उमस बढ़ रही है । उसने उठकर बेबी क ऊपर से चादर हटा दी बेबी पसीने से भीग गई थी । क्या मौसम है यहा का भी कमा एकदम ठण्क हो जाती है और कभी बुरी तरह उमस हा जाता है । इस पन पल बदलत मौसम म ही तो बेबी की सेहत ठीक नही रहती ।

सूय नशरा स वह जासमान को देखने लगी । नीला स्वच्छ आसमान और बंधु मार छिन्नक हुए तार । उसने साचा लोग तारा भरे आसमान के सोदय की बड़ी चर्चा कृत है पर जल कया उसे आसमान पर य तारे भी अच्छे नही लगते मरना आसमान के मह पर घनी चक्क निक्स आई हो । दूसरे ही क्षण अपना स धिनोनी कल्पना पर वह स हा घणा स भर उठा । उस सया उसका सोदय-बोध धीरे धीरे मरता जा रहा है । इन चार साता म हा किन्ता परिवर्तन आ गया है उसक जीवन म धीरे धीरे नायद सभी

कुछ मर जाए। उमने आममान से नजर हटा ली। बरबट लेकर नीचे लान पर देखने लगी। सारी घाम सूख गई। अब तो वारिंग म ही हरियाली होगी। जब वह यहा आई थी, कितने जतन म अपन बगीचे को सजाती और सवारती थी, पर अब उसका मन नहां लगता।^१

इस अवतरण म प्रतिमा व मानसिक मधप एव बाह्य परिस्थिति का 'यो'या धित चित्रण हुआ है जिससे पाठक के मन म अनायास ही वण्य का साकार चित्र अंकित हो जाता है। यह ध्यान देने योग्य धान है कि जिन कहानिया म लेखिका न किन्ही विविष्ट पाना को बह म रखकर व्यंग्य चित्र अंकित किय है उनम अनायास ही समसामयिक दण काल से सम्बद्ध सक्न प्रस्तुत हुए हैं। उदाहरणाय छोट सिकके 'गीपक कहानी म सव हारा बग के प्रति पूजापतिया की हृदयहीनता का 'यम्यपूण चित्रण हुआ है। अभिनता और पडित गजाधर 'गास्नी म भी लेखिका की दष्टि इस गला के अनुरूप रही है। मैं हार गई म किंसा व्यक्ति चरित्र का लदय म नही रखा गया अपितु बडे मौलिक एव प्रभावपूर्ण ग स नताआ की दुवलताआ का पर्नाका किया गया है।

उद्देश्य

आलोच्य लेखिका न कहानिया की रचना प्राय दो रूपा म की है—(अ) समाज के परिवेग म व्यक्ति की आलोचना के धरातल से लिखी गई कहानिया (आ) 'यक्ति विवेक की मन स्थिति का लेकर लिखी गई मनोवैज्ञानिक कहानियाँ। प्रथम प्रकार का कहानिया म सादृश्यता स्पष्ट है। इनम चरित्रगत नैतिकता अथवा समाजगत कान न कोई लक्ष्य निश्चित रूप स अभियक्त हुआ है। चरम घटन अभिनेता एव कमकार लडकी की कहाना ईमा व के घर इमान दीवार बच्चे और बरमात खाटे मित्र, गीत का बुम्बन जीनी घाजी की हार 'मगान में हार गई और दो कलाकार गाएक कहानिया इसी प्रकार की हैं। इनम सामाय जीवन दशन और समाज व परिवेग म व्यक्ति दान की प्रवृत्तिया प्रमुख रहो है। उदाहरणस्वरूप 'ईमा व घर इमान' गाएक कहानी का लक्ष्य यह सिद्ध करना है कि प्राकृतिक लालमाशा का कुणि कन म व्यक्ति म रिकार आ जात है अन अतप्त कामनाओं को तुष्ट करक सुदृत्र घट स्थान जीवन जीना चाहिय। लेखिका द्वारा अभिव्यजित यह लक्ष्य फायद व वाचनिक म प्रभावित है। इसा प्रकार घुटन कहानी का लक्ष्य यह सिद्ध करना है कि समाज म स्थितिया की रचि समान नहा होती अपितु कईवार प्राय विरोधा हा हाता है। 'गा' की एक पात्रा प्रतिमा यणि पनि व वागनात्मक मसग की अतिव्यक्त म दृष्टि म दृष्टा, पात्रा माना अपनी माना की सनकता व फनस्वरूप प्रमा व सादृश्य म व्यक्ति म कारण ब्याकुल है। दो कलाकार म भी दो सनिया व रचि-वनि म दृष्टि म दृष्टा है।

इस कहानी में अरुणा व चरित्र में और हार कहानी में दापा व पति व चरित्र में लेखिका ने आदर्श की प्रतिष्ठा भी की है। उनकी मनोवैज्ञानिक कहानियाँ का मुख्य सत्य यथार्थ वचित्र्य की प्रतिष्ठा करना है। ये कहानियाँ प्रायः अनुभूति का प्रेरणा स्रोत बनी गई हैं वही कारण इनका पाठकों की संवेदना को महज ही जाग्रत कर देता है।

भाषा शैली

नीमती भंडारी ने प्रायः गम्भीर और परिष्कृत भाषा का प्रयोग किया है। मनोवैज्ञानिक कहानियों के लिए यही शैली उपयुक्त भी है। अविनाश कहानियाँ में उत्तम पुरुष की शैली को स्थान दिया गया है। तीन निगाहा की एक सस्वार अकाली अनथाही गहराईया हार ईसा व घर इनाम सयानी बुद्धि पति गजाघर शास्त्री और मैं हार गई मैं यही घड़ी प्रयुक्त हुई है। प्रायः मैं सभी कहानियाँ में एक गौण पात्र प्रत्यक्ष दृष्टि के रूप में समूची कहानी को चलाकर चलाता है। उसके आत्मचरित्र का मुख्य केंद्र वही पात्र है जिसकी मनस्थिति का विवरण उस कहानी का उद्दिष्ट है। अन्य कहानियों में अन्य पुरुष की शैली का प्रयोग दिया गया है।

मनोविज्ञानात्मक होते हुए भी आलोच्य लेखिका का भाषा शैली नीरस नहीं है क्योंकि उन्होंने उस आवश्यकता से अधिक अतिसूक्ष्म नहीं बनने दिया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपनी मध्यमरोचिता नाटकीय सजीवता का भाव संचरण किया है। अपनी वचित्र्य की दृष्टि में अकेली सयानी बुद्धि पति गजाघर शास्त्री और मजबूरी नीपक कहानियाँ लेखिका की शैली में लिखी गई हैं। दीवार अन्धे और बरसात गुद नाटकीय शैली में विरचित है और तीन निगाहा की एक सस्वार में आत्मव्यक्त शैली तथा डायरी शैली का समावेश हुआ है। चम्पू नीपक कहानी शैली की दृष्टि से एक नूतन प्रयोग है। चम्पू कथानायक निमन वर्मा और धामती वर्मा का संवाद एक वायव्य-व्यापार प्रत्यक्ष है किंतु मध्य घटनाओं की अवतारणा श्री वर्मा की स्मृति के माध्यम से हुई है। घुटन और दो कलाकार में तत्सनात्मक शैली का प्रयोग है। मैं हार गई नीपक कहानी में भी शैलीगत मौलिकता प्रामाण्य है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में यह कथित है कि सुनील भंडारी ने मौलिक कथानक मनोवैज्ञानिक सूक्ष्म वृक्ष शैलीगत विविधता और भाषा की प्राणमयी कृतज्ञता के धन पर वर्तमान कहानी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। अन्य नये कहानीकारों की तुलना में उनकी कथानी कला की उत्कृष्टता यह है कि वे पात्रों के अंतर्मुखी चरित्र के साथ साथ उनके बाह्य वायव्य व्यापारों को भी उतना ही महत्व देती हैं जितना परिणामस्वरूप उनकी कहानियाँ अस्पष्टता अथवा दुर्बलता का दोष से

मुक्त रहकर सजावता एवं रोचकता से अनुप्राणित रहते हैं। एक अन्य उल्लेखनीय विषयता यह है कि उन्होंने पश्चिम के व्यक्तिवचित्रवाद और भारतीय स्ववाद की ओर समान रूप से ध्यान दिया है। इसीलिए उनकी अधिकांश कहानियाँ मसौदात्मक अभिरुचि, मनोविज्ञान विषय बोध की प्रामाणिकता और कलात्मकता का सहज ही लक्षित किया जा सकता है।

श्रीमती शान्ति मेहरोत्रा

श्रीमती शान्ति मेहरोत्रा कवयित्री के अतिरिक्त सफ़र गद्य लेखिका भी हैं। खुला आकाश भरे पक्ष और 'सुरशावक' पर म उन्नकी गद्य रचनाएँ संकलित हैं। सुरशावक पर म बबानीस गद्य रचनाएँ हैं किन्तु दूसरे संग्रह म बत्तीस गद्य रचनाओं के अतिरिक्त चौबीस गीता और बक्कीस कविताओं को भी स्थान प्राप्त हुआ है। गद्य के अलग-अलग उद्घात कहानियाँ लघुकथाओं एकांकीयों स्केच अथवा रेखाचित्रों हास्य-व्यंग्य चित्रा और लखा की रचना की है। लखा के अतिरिक्त उर्वर समस्त गद्य रूपा का सम्बन्ध कथा साहित्य से हो है अतः इन सभी को ध्यान में रखकर लेखिका के कथा गल्प की समीक्षा यहां अभीष्ट रही है।

कथानक

श्रीमती मेहरोत्रा ने प्रायः 'यष्टि' के घरातल से कथानक प्रस्तुत किये हैं। विगिष्ट परिस्थितियाँ स आहत एक पात्र को जलकर व उसके परिवर्ण एवं आंतरिक प्रतिक्रियाओं का इतना भासिक एवं जमी-यात्रित कथाकन करती हैं कि उस पात्र का पूरा मनाविमान परिस्थितियाँ सहित पाठकों के सम्मुख उभरकर आ जाता है। खुला आकाश भरे पक्ष म मकनित मन की घाटी दद के बादल अपने अपन दायरे साक डन तल और सतह तक से परे सम्पदा लुट गई छोट हाथ छोटा बात सूने दिन सूनी रातें सब बहुरो पड़ी चट्टान के नीचे और नीनाम नीधक कहानियाँ इसी प्रकार की हैं। उन्हरणार्थ मन की घाटी दद के बादल म एक ऐसी वधु का चित्रण है जो सम्मिलित परिवार म रहती है और अपने अधिक परिश्रम से सास ननद पति देवर सबको प्रसन्न रमन का सप्ता म मज्जन रहती है। फिर भी जहां कहीं तनिक चूक हुई कि उसकी स्थिति दयनीय हो जाता है। एक दिन अकाल के कारण उठने म तनिक देर हो गई तो सास ने व्यंग्य ताना स छुट्टा डाला और ननद ने बहु फुला लिया। सास ने सीध से यहां नहा बता कर लिया कि क्या सज्जी बनेया और जब बहु उनकी आननसार ननद दवर पति सबस सज्जा के वार में धूझन गता सबने टाल लिया। परिणाम यह हुआ कि समय पर खाना नही बन सका पति मूख ही दक्षतर बन गया और सास बड़ी सफाई से सब दोप वधु पर टानकर स्वयं एक बार का हट गई।

लघुकथाओं म लेखिका ने एक घटना एक उद्देश्य अथवा एक पात्र को लक्ष्य में

रखकर आकार में लघु विन्तु प्रभाव में गम्भीर कथानका का सृष्टि की है। मोनी क तार 'वर्षों का गज मत्ता अभिव्यक्ति और अनुभव तथा गिरबी रंगा हुई आत्मा गीपक क्याए इसा प्रकार की हैं। उन्हाहरणाथ अभिव्यक्ति और अनुभव में अभिजात वग के एक लम्बे का चित्रण है जो तपना हुई कोलतार का सड़क पर जा रह मजदूर के पीड़ा के लिए कोई उपयुक्त उपमा साजना चाहता है। जब वसी काइ उपमा में सूझी ता उसने निश्चय किया कि वह स्वयं वसी सड़क पर एक राग खड़ा होकर प्रत्यक्ष अनुभूति की महायत्ना से समुचित उपमान खोजना। बसा करने पर उसकी जा अवस्था हुई उसका था वह उस न्ति निगने घोड़ा ही कहा रह गया। गात्रता से बगन में नीचा पड़ा तब किया तलवा में भरतम लगाई स्वयं के परत सर विय और जमहा पाहा के भवन के निय नाग का गाला साकर सा गया। कितने सामित किन्तु प्रभावपूर्ण गान्धि में लखिका में सवहारा वग एवं अभिजात वग के जीवन-व्यपम्य का तपना का है।

एकानापक कहानिया में सबसे एक हा पात्र है जा मैं की गली में अपना किसी भावात्मक अनुभूति का व्यक्त करता हुआ घटनाओं एवं पात्रों की पूजापर सम्बन्ध में चर्चा करता है। प्रतीक्षा मिदूर की रंगा दूरा दपण गहरी छाया जिन्गी एक उलझी डोर और निवा-स्वप्न गीपक गद्य चित्र इसी गली में लिखित हैं। इनमें प्रत्येक में एक पात्र की कर्तव्य विनिष्ट भाव-गान्धि अपने सम्पूर्ण विकास में कथानक का मर्यादित बनकर प्रस्तुत हुई है।

सुरक्षा के पर में समूहात गद्य चित्रा की विवेचता यह है कि उनमें हाम्य 'यग्य का प्राधाय है। लखिका में विविध विषयों का लेकर हाम्य रस की सृष्टि की है जिनमें में मुख्य ये हैं—पतिया की लापरवाही, भुलकट प्रवृत्ति दीधमूत्रता आलस्य परनारी के प्रति रससिक्क भावना तथा अथ ऐसी ही विविध प्रवृत्तिया ग्यातिपिया तथा पटा के डागपूण काय ध्यापार अपमरा का चापलूसा के विविध ढग महमाना का मजदूरान के प्रति गीपक प्रवृत्ति पढामिया और मकानदारा की अनधिकार चपटायें सपाका के अनान के फलस्वरूप अयोग्य ध्यवितिया का सान्त्वित में प्रवृत्ति, नीकरा और मजूरिया के लखन आदि। कहने का तात्पर्य यह है कि कहीं लेखिका ने सामयिक समस्याओं का लेकर हाम्य 'यग्य की सृष्टि की है और कहीं 'यक्ति-व्यक्ति के आधार बनाया है। इन कहानियों की विवेचता यह है कि 'नम व्यग्य का पुत्र सम्मता निय है उसमें कटता कहा भा नहीं है। पास पलट गया 'जनवासा' मौ का नाग नया मकान' प्रगतिनी यात्रा का नार आनवद दुधन साग आदि अनक कहानियां हास्य-व्यग्य की गान्धि में उत्कृष्ट रचनाएं हैं किन्तु सुरक्षा के पर, रजाज का चक्कर, घर का पुनाई 'वनिश-वग आदि कतिपय कहानिया का पठकर उद्दिष्ट रसानुभूति उतनी नहीं होता। कहा कही तो ऐसा प्रतीत होना लगता है मानो लेखिका ने हास्य-व्यग्य की मायास योजना का है। फिर भी यह कम महत्वपूर्ण नहीं है कि उद्धान पारिवारिक कहानियों का बंधी हुई लोक गहककर लेखिका का ध्या नए विषय-गान्धि की ओर आकृष्ट किया है।

चरित्र चित्रण

रालो-य लेखिका न कथानका की भाँति चरित्र चित्रण को भावविध्यम सम्प्रेषित किया है। जिन कथा चित्रों को कहानियाँ का सपा दी गई है उनमें समाज के परिवर्तन में व्यक्ति की विराग मनोदशा का मनोवैज्ञानिक चित्रण हुआ है। प्रामाण्य सभ्य कहानियाँ में केवल पात्र की परिस्थितियाँ बहिर्मुख बाह्य व्यापार। एवं आंतरिक संवेदनाओं का स्तर। मुगुम्फिन एवं अनपातमय कथाएँ हुआ है कि प्रत्येक पात्र अपने परिवर्तन के साथ पाठक की चेतना में सजीव हो उठा है। उदाहरणार्थ साँभ डने को घट्टा की मनोदशा उत्प्रेषणीय है। वडावस्था की विडम्बना ने उस मुजली का रोग त्तर भीठ पक्षय खाने से बचित कर दिया है। उधर घर में गुलाबनामन जस स्वादु पदाय बनन हैं। पात पाती का खाते देखकर उसका मह म पानी जा जाता है और अभिवापा उसके गालों में व्यजित होकर ही रहती है। वसा होने पर गुलाबनामन तो मिन जाता है किंतु वहू की कभलात महाराजिन की यम्योक्तिर्वा रोग की अत्यधिक वडि पुत्र का क्रोध एवं डाक्टर का भय सब मिलकर उसका स्थिति का दमनाय बना डालत हैं। जब रोग परीक्षा में बाद उसका अंत समय निकट जानकर डाक्टर ने अपना निणय द लिया कि अब वह सब कुछ खा सकती है तो उसका रोग रोग खिन गया। उसने बिजय गय से महाराजिन और वधु का आर दखा। इस प्रकार अपने अपने दायर और छोटे हाथ छोटी बात गोपक कहानियों में एक-जसी स्थिति में रहनेवाले बच्चों की मन स्थितियों का मनोवैज्ञानिक जका हुआ है। बच्चे चाहते हैं कि अपने साथियों में खलें किन्तु माता पिता उन्हें अधिकतर घर में ही रहने को बित्त करत हैं। घर में भी माता पिता के यस्त रहने के कारण उन्हें किसी से बात करने का संयोग नही मिलता फलत वे उदास रहत हैं।

एकानापा में भी गली में पात्रों की संवेदनात्मक अनुभूतियों का आत्म विश्लेषणपरक अभिव्यक्ति दी गई है। ऐसी प्रत्येक कहानी में प्रमुख पात्र की आत्मचेतना समस्त परिस्थितियों एवं गौण पात्रों का मरुत बनकर व्यक्त हुई है। लघुकथाओं में लेखिका ने चरित्र चित्रण में सोद्ध्यता रखी है। इनमें पात्र प्रायः वर्गों के प्रतीक हैं और उनके चरित्र सकल गली में प्रकट हुए हैं।

गाँति जा का हास्य-व्यंग्यप्रधान कहानियाँ में प्रायः दो प्रकार के पात्र दृष्टिगत होत हैं—एक वे जो व्यक्ति बहिर्मुख के कारण पात्रों का ध्यान आकृष्ट करते हैं और दूसरे वे जो समाज में प्राप्त वर्गों अथवा दशावतगत प्रवृत्तियों के प्रतीकरूप होकर सम्मुख आते हैं। वस्तुतः इन कहानियों में भी पात्र रचना सोद्ध्य हुई है। वही तो लेखिका ने किसी पात्र का मूडता का चरित्र हास्य की सट्टि करनी चाही है और कहा किसी की दुष्टता अथवा वाक्यापिन को लेकर। यन्त्रा प्रकार के पात्र प्रायः कृत्रिम एवं चट्टित हैं

किन्तु य हा इन कहानिया के नायक हैं। सहज पात्रो को भी इनम स्थान प्राप्त हुआ है किन्तु बवल गौण रूप म। उहाने मुष्पत पात्रो की प्रवर्तियो एव परिस्थितियो का हो चित्रण किया ह परन्तु अनेक स्थला पर उनकी जाकृति एव वेशभूषा क चित्रण द्वारा चरित्र चित्रण म सजीवता एव चित्रोपमता का समावेश किया गया है। यथा— दूर कया जाते हैं रामदास को हो लीजिए न। धोबी को घुली हुई कमीज खाकी नेकर डेर-पा तेल ठाककर माये पर दोना ओर करीने से चिपकामे हुए बाल—देखने म लगता है जसे किसी बड़ घर का नडका हो। पद्मह सोलह बरस का है लेकिन चेहरे को बड़े-बूढ़ो की तरह गम्भीर बनाये रहने का बराबर प्रयास करता है। काम करता तो फुर्ती से है लेकिन इस भाव स जसे किसी पर अहसान कर रहा हो।^१

कथोपकथन

श्रीमती मेहरोना ने अपनी कहानिया को सवादा की रोचकता से विभूषित करके उनम सजीवता का सचार किया है। उनके कथोपकथन देगकाल पात्र की परिस्थिति और कहानी की गति क अनुकूल हैं। लघु एव सुगठित होने के कारण वे कथानको को गति देने के साथ साथ पात्रा की भाषनाभा को मुखरित करने म विशेष उपयोगी रहे है। उनम पात्र एव प्रसंग के अनुरूप व्यंग्य, विनोद स्नेह घृणा रोष क्षाम, हास परिहास मान हठ कातरता, राग-द्वेष आदि विभिन्न भावा की सारसभित अभिव्यक्ति हुई है। वात्तालाप करते समय पात्रा की मुख मुद्रा एव अंग गतिविधिया के सकेता ने प्राय चित्रोपमता की मृष्टि की है। उदाहरणस्वरूप सम्पदा 'टुट गई' 'गिपक कहानी का नाटकीय प्रारम्भ द्रष्टव्य है—

कुमुद^१ 'एक बात बताती हूँ, किसी से कहियो मत ! तुम्हें मेरी वसत है।

क्या ?

कृष्णा ने इधर उधर देखकर कुमुद के कान म धीरस कहा बुडिया क पाम बहुत घन है।

सच ? कुमुद की आँखें आश्चर्य से फल गया। मुह खुला का खुला रह गया। और नहीं तो क्या भूठ ! मैंने अपनी आँखा से देखा है।

कुमुद ने कृष्णा क पास खिगकत हुए आग्रह भरस्वर म पूछा 'पूरी बात बताओ जीजी ! कमे देखा कव दखा क्या दखा ?'^२

लेखिका न सवादा की भाषा गली म प्राय पात्रानुकूलता का ध्यान रखा है। उदाहरणार्थ महरी की मह उचित अवलोकनीय है— अव महरी प्रसन होकर वाली हैं और कया ! सच पूछो अम्माजी, जौन हमरी बहुरिया ऐमन हुकुम चलाव तोन हम ओहका

१ मुरझाव क पर, पृष्ठ १६६

२ पुता घाकाउ मेरे पंत पृष्ठ ७३

खड खड निकार देई। बिठवा पाछे कित्तअ गुस्माय। बिठियन बहुरिया का ढग स चर
का चाही। ई नाही कि उड गइ पुर स। 'इस उक्ति म भापा का स्वल्प तो द्रष्टव्य है।
विरोपता यह भी है कि सतिना ने सवाद क माध्यम से परिवार की इस समस्याविषय
को अत्यन्त रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है।

देशकाल

गान्ति जी ने अपनी कहानियाँ म वातावरण के प्रसंगानुसूल सजाव विषय अंकित
किये हैं। उन्हाहरणाथ मन की घाटी दद के बाल्ल अपन अपन दापर साँझ तक
तक स पर नीम हकीम सम्पदा लुट गई और बटे का बापसा शीपक कहानियाँ म
घरेलू वातावरण का सजीव दयाकरन हुआ है। तब बहुरा पडा कहाना के प्रारम्भ म
रेल के उनान दिव्य का अत्यन्त स्वाभाविक एक सूक्ष्म चित्रण किया गया है। उन्हाहरणाथ
निम्नलिखित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं— ठव के भीतर छासा चहल पहल था। एक जा
घुटनो स नीधी फाँक पहन और कंधा पर सफेद दुपट्टा डाल कुछ इमाद महिलाएँ सुबह
की प्रायना के बाद आँखें बंद करके तीखे स्वर म भूम भूमकर गा रहा था जयजय
ईसू जयजय ईसू। पास ही तीन चार अधक स्त्रियाँ बायी ओर कमर म धाती का पना
वास पान चवाती हुई अपना बहुआ का व्याख्या कर रही थी और धार धीरे इस निष्कण
पर पहुँच रही थी कि आजकल के नडक बिलकुल बेहाय हा गये हैं और बहुआ की बिगाने
म काफी दिनचस्पी लेते हैं। बीच की सीट पर बड़ी कानजकी पाँच छह लडकियाँ म बहस
चल रही थी कि बत्तास म सबसे भला लडका कौन है। भल स उनका आशय गायन उन
इन गित लडका स था जा लडकियाँ के सामने पड जान पर साज स गुलाबी होया तो नाट
यक के बंध हुए फीत को जल्दा जल्दी खोलकर फिर स बावने लगते हैं या मोख ठीक करने
के बहाने सिर झका गते हैं।^१

लघकथाओं में गान्ति ने देशकाल अथवा वातावरण का अप ता उद्देश्य का अभि
मजना पर अधिक बन दिया है। एकालाप म पात्रा के मानसिक चिन्तन के सहज म बाह्य
परिस्थितियाँ का उत्पन्न हुआ है। इस प्रसंग म वातावरण और पात्रा की गतिविधियाँ
की पारस्परिक सम्बन्धसहित प्रस्तुत किया गया है। प्रताक्षा शीपक एकालाप के प्रारम्भ
की म पंक्तियाँ उन्हाहरणस्वरूप द्रष्टव्य हैं— रात बहुत अधरी है। लकिन आज पूर्णिमा
भा हाती तो मरे तिए क्या अधरा कुछ घट जाता ? दद कुछ बट जाता ? सून घर पर
छाया मनुसियत कुछ कम हा जाता ? पता नहा के सोय हैं या जाग रहे हैं दद
पाँच चरवा बायी हू और खडा खडी तरी राह दख रहा हू।^२

१ मुरलाब के पर पृष्ठ १५६

२ सुता घासग मरे पल पृष्ठ १०१

३ सुता घासग मरे पल पृष्ठ १६५

हास्य-व्यंग्यमयी कहानियाँ म परिस्थितियाँ के प्रत्यक्ष चित्र अत्यन्त विरल रहे हैं और बसा होना उचित भी है क्योंकि उन कहानियों के हल्के फुल्के कथानकों में बसे गम्भीर चित्र विषय से दूर जा पड़ते हैं। फिर भी लेखिका ने हास्य-व्यंग्य का सट्टिक लिए जिन विषयों का चयन किया है उनमें अनायास ही दण्डकालपरक सामयिक प्रवृत्तियों की पर्याप्त अभिव्यक्ति हो गई है। यथा—ज्योतिषियों के पाखण्ड मातहतों द्वारा अफमरो की चापलूसी मिफारिश, तीव्र और महुरिया के नखरे पड़ोसियों की अनधिकार चेष्टा, मकान मिलने की कठिनाइयाँ और मकान-भातिका का चित्र विचित्र प्रवृत्तियाँ, सम्पादन की सापरवाही से साहित्य में व्योम्य व्यक्तियों का प्रवण वरपण वालों की क्यापक्षवाला पर धौम आदि।

उद्देश्य

शान्ति मेहरोत्रा की कहानियाँ प्रायः सोद्देश्य हैं और उनमें अनुभूति की प्रेरणा सबत्र विद्यमान है। उनमें विषयगत वक्थिष के अनुरूप लक्ष्य की भावना भी विभिन्न गानियाँ म अभिव्यजित हुई है। जिन कहानियों में समाज के पक्षितविषय की अनुभूतियों को व्यक्त किया गया है उनका लक्ष्य प्रायः यह प्रदर्शित करना है कि परिस्थिति चक्र मनुष्य को कितना दीन कितना कातर एवं कितना निरुपाय बना डालता है। इन कोटि की कहानियाँ म परण रस की मार्मिकता का आपक अन्त प्रसार रहा है। लघुकथाओं में तो सोद्देश्यता ही कहानी की समूचा मवर्णा का मरुदण्ड बनकर प्रस्तुत हुई है। उदाहरणार्थ सती कहानी में सती के विषय में एक नूतन आदर्श की प्रतिष्ठा प्रमुख लक्ष्य है। क्यातायिका कमली अथ स्त्रियाँ के साथ दीनेवाले बाबा से अखण्ड सौभाग्यवती होने का वरदान माँगने जा रही थी, किन्तु इस विचार से बीच में ही लौट आई कि यदि वरदान सत्य हो गया तो उसने वियोग में दुखी उनके पति का जीवन विपाकत हो जाएगा। इससे तो अच्छा है कि जो भाग्य में लिखा हो मा हा हो। यदि पति पहले मर गया तो वह जसे भी होगा कष्टों को सह लेगी, किन्तु पति अत समय तक उसकी सेवाभा से वचित न रहे सभी अच्छा है। इसी प्रकार 'अभिव्यक्ति और अनुभव', बपों का मज गिरवी रखी हुई आत्मा' शीपक अथ लघुकथाओं में मा उद्देश्य की प्रेरणा सर्वोपरि रही है। एकानाया में पात्रों की आत्मानुभूति को मुखरित करना चरम उद्दिष्ट रहा है। हास्यप्रधान कहानियों का प्रमुख उद्देश्य पाठकों का मनोरंजन है और इसके लिए लेखिका ने जिन विषयों का चयन किया है (व्यक्तिवचिष अथवा समसामयिक अनतिष्ठ प्रवृत्तियाँ) उनमें मूढम अनुभूति एवं व्यापक लोक दण्ड की प्रेरणाएँ अनिवार्य निहित हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि उनकी अधिकांश कहानियाँ म उद्देश्य की अभिव्यक्ति प्रायः यथायज्य अनुभूतियों पर आपन रही है आत्मानुभव अथवा नतिवता के दृष्टान्त रूप में नहीं।

भाषा दोली

मेहरोत्रा जी की कहानियाँ म भाषा गती का भावानुरूप प्रयोग हुआ है। हास्य

यस्य प्रधान कहानियां म प्रायः हल्की पुत्की गरन एव सुखी भावा ना प्रयोग है जसकि अय कथा चित्रो म गम्भीर एव परिष्कृत गानवली को स्थान दिया गया है। वणन एव नाटकीयता के अनुपातमय समावेश से गनी प्रायः निम्नरे ह्रा प्राजस रसम प्रस्तुत हुई है। कहानियां और नधुक्थाया म प्रायः अय परूप की गनीका प्रयोग है एकातापाम उत्तम पुरूप की गली का और हास्य व्यंग्य चित्रा म कहीं उक्त एव गली के स्थान होते हैं और कही दूसरी के। सखिका की गली का उत्तमनीय गुणय है कि उसमे वणनात्मक प्रमगा म चिन्तात्मक गली की सजीवता का प्रायः सचार रहा है। इसी गनी के चल पर वे अनेक विम्व विधान म मफल रहो हैं। उदाहरणाय चट्टान क नीच धोपक कहानी के प्रारम्भ म उद्धत अधोलिखित दृश्य चित्रण जनोक्तनीय है—

दवाइया की गद्य म बसा अस्पताल रोगिया स विरा जीवन। नवजात शिशुआ का ममतामयी बाहा स घरे गौरव गालिनी माताए ठण्ठी लाँ असाध्य रोगा पर विजय पाकर परिवार के बीच वापस नीटती प्रसन्न स्त्रियाँ कतया स बधा मरा कुवारा जीवन। जस में उन सबके लिए थी भरे लिए काइ नहा। असम्पृक्त औरा के मुख मे अछूती औरो के दुःख से दूर। रोगिया के गरीर को जाचते हुए हाथ चीरते फाड़त मौत से निरन्तर लपते हुए हाथ पराय शिशुआ को स्पष्ट करते हाथ स्त्रान्दीन भावना हीन हाथ।^१

आनोच्य कहानियां म प्रसंगानुक्रम विविधता दर्शन होते हैं—कही सकेतात्मक गला है कही भावात्मक कही सरल एव प्रसादगुणा वित भापा है और कही तनिक गम्भीर एव परिष्कृत और कही चमत्कारपूर्ण एव अनहत। एक उदाहरण देखिए—
'जितनी गहरी लगन नवविवाहिता को अपन कपडो से नवल करनेवाले किसइडी लडके का पिछनी कोनेवाली सीट स तथा नवयुवका को सियरेट के पकेट से होती है उससे कही गहरी लगन मातहत को अपने अफसर स होती है।'^२

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सुखी गान्ति महरोना ने भाव एव अभिव्यक्ति दोनों क्षेत्रा म विविधता को प्रयोजित किया है। एक विनिष्ट गान्ति मे अपनी प्रतिभा का विकास करने की अपन उद्देश्य समस्त प्रचलित कथा रूपा को अपनी लेखनी का विषय बनाया है और भावानुरूप सगवन अभिव्यक्ति क बन पर प्रायः सभी दिशाओ मे उहे किसी सीमा तक सफलता की उपलब्धि हुई है। गौरव की बात यह है कि करुण एव हास्य दो विरोधी रसा की कथात्मक अभिव्यक्ति म वे समान रूप से सफल रहो हैं। हास्य-व्याय पूरा कहानियां की लिखिका के रूप म उनकी प्रतिभा विषय विकसित हुई है और इस दिशा म उद्देश्य हिन्दी कथा-साहित्य म एक अभाव की पूर्ति की है। पुरूप कहानी-लेखको ने तो इस गान्ति म फिर भी ध्यान दिया है (सो भी विधानही) कि नारी-लेखिकाओं

१ सत्ता आकाश मेरे पल पल १२७

२ मुरताब क पर पल ५१

श्रामती गान्ति मेहरोत्रा

मे तो प्रायः इसकी उपेक्षा ही की है। अतः गान्ति मेहरोत्रा द्वारा प्रस्तुत की गई हास्य-मय-कथाओं का महत्त्व स्वतः सिद्ध है। यद्यपि यह सत्य है कि कतिपय कहानियाँ मलेखिका द्वारा प्रस्तुत हास्य चैण्डित सा प्रतीत होन लगता है किन्तु सबत्र ऐसा नहीं है। फिर, इतनी बहुसंख्यक कहानियाँ म एक आघ कहानी जसी श्रष्ट न भी हो तो उतनी खलती नहीं।



श्रीमती सरूपकुमारी बख्शी

श्रीमती सरूपकुमारी ने कौटुंबिक जीवन तथा निष्कर्ष या जीवन की तीन कहानी संग्रह की रचना की है। प्रत्येक कथा संग्रह में दस कहानियाँ को स्थान प्राप्त हुआ है जिनका नाम प्रमाण इस प्रकार हैं—

(अ) कौटुंबिक जीवन—टूटा हुआ चिराग जगीसिंह लुटेरे का दान प्लास्टिक की दुनिया निराली गान काश्मीरी मुल्ता तिलकिया की सभा फगन की घुड़दौड़ मानियत का नकाब और कौटुंबिक जीवन का नाच।

(आ) निष्कर्ष कथा—मंगीन की पीड़ा घर की बंटी बाँके और बंटी काश्मीर का फूँ बजला का प्रमी गीने की मेम मास्टरजी ठीकी मशीन मंगीनो के आँसू तथा निष्कर्ष कथा।

(इ) निष्कर्ष कथा—निष्कर्ष कथा बंटी की भाँड नारी का आँख फीफो का फगन चन्द्रिया तारा की ज्योत्स्ना बेटा सेंट की गीनी कोकिला बुनबुल और जीवन की सात समस्याएँ।

श्रीमती बख्शी की कहानी कला के माध्यम के लिए उनके सभी कहानियों को एक साथ दृष्टि में रखा जाएगा।

व्यापक

ललितान टूटा हुआ चिराग जगीसिंह लुटेरे का दान मास्टरजी तथा ठीकी मंगीन 'गायक' कहानियाँ में रेखाचित्र और कहानी के समन्वित रूप को स्थान दिया है। प्लास्टिक की दुनिया निराली गान काश्मीरी मुल्ता तिलकिया की सभा और फगन की घुड़दौड़ में जहाँ यात्रिक सम्मता की वृत्तिता लोचनेपन तथा ऊपरी निष्ठा का प्रवृत्ति के प्रति तीव्र योग्य है वहाँ घटनाओं के आकस्मिक आरोह अवरोह अथवा रात्रि कथोपकथन के द्वारा हास्य रस का भी सुन्दर परिपाक हुआ है। मानियत का नकाब तथा कौटुंबिक जीवन के भिन्न कथानक द्वारा यह चित्रित किया गया है कि आधुनिकता के बहाव में मानव कितना पतित होता जा रहा है—यहाँ सम्म वह है जो पाटिया में बटकर मलपान कर अथ 'यकितिया का दिग्गवेपण कर उनका उपहास करे रसफास में घन नष्ट करे आदि।

मंगीन की पीड़ा तथा मंगीन के आँसू में आधुनिक यात्रिक सम्मता के प्रति

श्रीमती सरपदुमारी बहनी
 मामिक व्यय है। यन्-युग ने मानव को भी एक यन्त्र बना डाला है, न उसमें विचार
 गति रहो न जीवन का आनन्द उठाने का समय तथा सुविधा न अपना के प्रति वह
 प्रेम और ममत्व जो कभी उम हृदय पर छाया रहता था। 'घर की बत्ती और बंके और
 बनो नीपक कहानियों में क्रम' दीनानाथ और राजराना तथा बाके और बनो के मध्य
 दाम्पत्य-कलह बाद के अनुताप और पारस्परिक सुनह के चित्रों को समान स्तर पर
 प्रस्तुत किया गया है अन्तर केवल परिस्थितियों का है जिसे लेखिका ने कौशलपूर्वक
 ध्यान में रखा है। 'कदमीर का फूल', 'कजरी का प्रमी' नीने की मम तथा रेडियम
 के अक्षर नीपक कहानियाँ में परिस्थिति सापेक्ष सामान्य दुख सुखमय जीवन चित्र
 अंकित किये गये हैं। इनमें यथायथ बोध और अनुभवजनित मामिकता को सहज ही देखा
 जा सकता है।

या तो लेखिका की प्रायः समस्त कहानियाँ में घटनाएँ चरित्र चित्रण के समक्ष गौण
 रही हैं, फिर भी निम्नरक्त्या की कहानियाँ में उक्त विरोधता सर्वाधिक दृष्टव्य
 है। इस मस्रह का कहानियाँ का पन्ते पठत पाठक का स्पष्ट आभास होने लगता है।
 विपत्ति की प्रवृत्तियाँ व विपत्तिपथाय ही मानो घटना प्रवाह आघोजित किया गया है।
 निम्नरक्त्या की सदैव हलनेवाली भ्रमरा बनो का भाड़ू की तेजस्विनी जमादार
 गहिणी बनो (जो भाड़ू में ही जीवन की सब समस्याएँ हल करती है) नारी का
 जीवन की दुगा जो जीवन की विषम परिस्थितियों से सघप करन के लिये सिर मुड़वा
 पर पुरुष रूप में रहती है फीफी का फान' की फानवल फीफी 'बुनरिया तारा की
 की बालिका निगा अयोध्या बेटा का नायक रजोदर सिंह सेंट की नीनी की सट
 चुरानेवाली कुमकुम कोकिला की बालिका कोकिला (जो पगु पलिया स अनय प्रेम
 करती है) और युनबुल की अनाथ बालिका बलबुल (जो परदुख से सहज ही द्रवि
 होनी रहती है) आदि सभी पात्र पात्राएँ ऐसी हैं जो अपनी विविध प्रवृत्तियों के कारण
 अनायास ही उक्त कहानियों में केन्द्र रूप हास्य हैं। लेखिका ने अत्यन्त ही अनायास
 भक्ति इन कहानियों में भी यथावसर आधुनिक सम्प्रदाय की इतिहास अनायास घूस
 गोरी पोषण आदि प्रवृत्तियों पर व्यय किये हैं। व्यय की तीव्रता अथवा सबादा की
 अतिशयता अथवा अनादर्य के आवरण में अनेक कथानक कुछ दब सा गया है फिर
 भी लेखिका की कहानी-बनना में प्रभावशालिनी है—इस तथ्य को भुलाना नहीं जा
 सकता। उनकी कहानियाँ अधिनागत रोचक चमत्कारपूर्ण एवं मौलिक हैं और उनमें
 ध्वन्य व साथ अन्य की प्रवृत्ति भी प्रायः मुखरित रही है।

चरित्र चित्रण

श्रीमती बहनी ने पात्रों को वगणत एवं व्यक्तिगत प्रवृत्तियों के चित्रण की ओर
 पर्याप्त ध्यान दिया है। समाज व उपाति वगैरे प्रति उनके अन्तर्गम गहन संवेदना है।
 टूटा हुआ चिराग में फटेहाल सतनवी गायर मीन की पीडा में भाला मास्टर जो

म मास्टर तुलसीराम तथा रेडियम के अणु में कणव का जीवन चित्रण एक प्रगम म उत्प्रेरणीय है। इनमें सर्वाधिक ममस्पर्शी व्यक्तित्व मास्टर तुलसीराम का है। अपने उद्दण्ड गिण्या के प्रति भी उनका हृदय म ममत्व का जो कोमल स्रोत विद्यमान रहता है उससे पाठक का मन भी भीग उठता है। प्लास्टिक का दुनिया निरासी गान नितलियों की सभा कान की घुड़दौड़ इन्सानियत का नकाब बौड़िया का नाच तथा मीन के आँसू म प्रमुख पात्र पात्राआ को आधुनिक सम्यता व प्रतिनिधिया व रूप म प्रस्तुत किया गया है। झूठ दिखावे और झूठी गान व पीछे पागना की भाँति दोन्कर वास्तविकता से दूर भागना कान व चक्कर म अपना सबन्ध लुटा देना मद्यपान कान पाटिया रेसकोस आदि म नि सकोच भाग सभा ऊपरी टीपटाप द्वारा अपन को अपना आयु से छोटा दिखाने का प्रयत्न करना आदि उक्त पात्र पात्राआ की प्रमुख प्रवर्तियाँ हैं जिन्हें लेखिका ने हास्य-यम्यपूर्ण शैली म अंकित किया है। एक आधुनिक का चरित्र लेखिका के गन्दा म उद्धरणीय है—

डाली समाज की प्रमिका है। बिगड़कर जब से उद्धान अपने पति को तलाक दे दिया है तब से तो वह बहुत प्रसिद्ध हो गई है। सुना है कि बहुत अमीर हैं और बड़ ठाठ से जिंदगी बसर कर रही है। बगना है मोटर है बरा है। उनकी आमन्नी का खरिया क्या है यह किसी को भानूम नहा है। उनकी आँखें सुन्नर हैं होस्त क साइन-बोर्ड की तरह चमकदार गरीर छरहरा अधरे कमरा म जाने व लिय बनी हुई सीडी की तरह घमावदार। जावाज सुरी गी जसे गराबखाने के काउटर पर सिक्को की खनन खनन।^१

फीफी का पगल तथा सेंट की गीगी म फीफी तथा कुमकुम फगन की प्रवर्ति का दूसर ही ढग म सन्ध करती हैं। कान करव समाज म अपनी घाव जमाता तो उन्हें प्रिय है किन्तु इसके लिय अपना धन-यय करना उन्हें स्वीकार्य नहीं। अत वे चोरी तथा छल द्वारा दूसरा को उन्न बनावर अपना उल्लू सीधा करता है। सन्पकुमारी जी पात्रा की दुबलताआ को भा सहानुभूति की दृष्टि से देखता है और इसी कारण वे उनकी प्रवर्तिया का मनोवज्ञानिक चित्रण करल म सफल हो सकी हैं। अय कहानिया मे बन्नो की भाडू नारी का आँचल काविला और बलबल म नमग बन्नो दुर्गा काविला और बलबल का व्यक्तित्व अत्यन्त सजीव रूप म उभरा है। यह कहना अमगत न होगा कि पुरप पात्रा की अपना नलिका नारी पात्राआ व चरित्र चित्रण म अधिक सफल हो सकी हैं।

लुटरे का दान म मारवाडी सठ का चरित्र एव ठडी मगीन मे मठानी सोना वार् का व्यक्तित्व उनका अपना ही समापणा म मखर हो उठा है। सठ जी की वाक्पटुता कृपाणा तथा गणपण-वर्ति एव सठानी सोनावार् की वाक्पटुता वाग्वदय तथा वदि-

बोगन का परिचय पाकर पाठक दाना तल उँगली दबा लेता है। घर की बटी में राज रानी और 'बाँक' और बनो म बनो का चरित्र मानो एक ही सचि में ढाला गया है। ये दोनों जवान स तीखी हवा में हृदय की बुरी नहीं हैं। दोनों ने ही राश में अपने अपने पति पर प्रहार करके उन्हें घर से निकाल लिया था किंतु बाद में इन दोनों पात्रों को अपने कृत्य पर अनतप्त एवं सतप्त होते निखाकर लेखिका ने उनके चरित्र का अति वादी होने से बचा लिया है। वस्तुतः लेखिका ने किसी भी पात्र अथवा पात्रा पर अस्वाभाविकता का आरोप नहीं लगाया जा सकता। वचन में स्वाभाविकता के लिए उन्होंने श्रीमती महानेवी वमा की भाँति पात्रा की वाह्य आकृति एवं वैभूषण का चित्रात्मक वचन किया है। उदाहरणार्थ 'जमींसिंह तथा कौड़िया का नाच' गोपक कहानियाँ में य उद्धरण द्रष्टव्य है—

(अ) उसका चेहरा भा खूब था रंगमुख दीद करारा की तरह बड़े बड़े बटावदार। नाक मीनार की तरह सम्वी कुछ घुमाव लिय हुए। गाल गुम्बद की तरह फूल हुए खूब गोल गोल हाँठ फाटक के कपाट की तरह मजबूत और दाँत नह नह दीपा की बतार। बड़ी बड़ी मूँछें ऊपर की तरफ बंग हुए लोकदार। सब कहूँ जनाव ऐसा मानम हुआ करता था जैसे छहर और उधर दा सिपाही अपन हाथ में नेडा लिये उस चहरे की हिफाजत कर रहे हैं।^१

(आ) लाला जी ठाठ में थे जालीदार लबेब का कुर्ता मोन के बटन, खून घरेदार और लटके का सलवार, चाचदार तिनाई जुती^२

कथोपकथन

आलोच्य लेखिका ने चरित्र चित्रण में सजीवता एवं स्पष्टता साने के निम्न बातों-वचन के अनुरूप रहित सहादा की योजना की है। उनका अधिकांश पात्रों को बालन में इतना लगाव है कि जब भी बोलना आरम्भ करेंगे तब सामान्य आध्यात्मिक अथवा साहित्यिक त्रिम किसी विषय पर बालन ही जाएँगे मानो धाराप्रवाह भाषण चले रहा। मनीष की पीडा में भाषण तथा रक्षिण के अन्तर में वचन की उक्तिपा इसी प्रकार का है। ऐसे सवालों में पाठक चमकृत तो होता है, किन्तु ये कथानक के मूल प्रवाह में व्यापक उलटन करते हैं और पाठक के मस्तिष्क पर बोझ की भाँति छा जाते हैं। जो सवाल हम प्रश्नित में मुक्त हैं उनकी उत्प्रेषणीय विपत्तियाँ यह है कि ये भावना एवं भाषा दोनों का अति सपात्र के सस्वारा एवं स्तर के अनुकूल हैं। निराशी गान में सबिना चम्पा गढ़ पूर्वी हिंदी में बालती है^३ तो अयोग्य बटा में पात्र पंजाबी होन के कारण गुरु पंजाबी में ही बातचीत करती है। यथा—

१ २ कौड़ियों का नाच पृष्ठ २५ ११५

३ रक्षिण कौड़ियों का नाच, पृष्ठ ६६

वेजी मैं रोटी नइया खाणी,' रजी-दर ने कहा।

तू रोटी नइया खाणी। मैं तेरे वास्ते तन्दूर दी रोटी बना के रखी ए। लस्मी दी गडबो रिडक रिडक के मेरी बाँह की दुपदी पई ए।

ना वेजी मैं लस्सी बजारो पी आया।

कोई गल नइ राजी। इक गिलास होर पी न न। मुह हाय धोल। ऐनी घर न पुत्तर सरनारनी ने उसे पुचकारकर कहा।^१

कोडियो का नाच म श्रीमती कमानी अपनी उक्तिया म नरकी भन गया (गया) जादि गंगा का प्रयोग करती हैं^२ तो ठडी मनीन म सठानी सोनाबाई धुद मारवाडी भापा का प्रयोग करता है। उदाहरणार्थ उनका अधालित्वित राचक उक्ति अवलोकनीय है—

अय किन्नी^३ बहू सेबाली कोर् जायो रहासरकारी भनिया करम फूटो। म्हामू एक बात पूछो। वा पूछा कि आप टूथ पण्ट करो या मजण दातण। मैं बात्यो आपां ता भाई दातण कर लवां। फिर पूछवा लागो कि आपां मेज कुरसा पर खाओ वा अठणी उठणी खा सेवो। तो मैं ता भाई कह दियो किगाण री मेज कुरसी उतरा नोकर का स ताऊ। आपां तो सीदा सादा चौका मा री जीम लो। आप जादातर मोटर ऊ जाओ वा रिक्शा ऊ बूज सवारी आप बत्तो। ए बाई महाने तो घणा डर नागो ई कोर् हाय इणकम टिकमवाला जायो है पछना को लर् कि आपणी आमदणी बत्तरी की होम और सामण मोटर खडी हा। तो मा ता बासो कह दिया जजी जाओ जी किन्नी मोटर किगा रिक्शा आपां ता भर् बगमा चली जाआ और राम जी मोखलिया पर दिया मैं कोण वास्ते जाऊ गवारी मा। ए भाई गाव आप ही बताओ इतरा पगा काग आय। और जो आपां ये माटर देखो ता या तो मेर बेटे की हो सरकारी अफसर हो हैसियत राखवो क त राखणी पाड। ईको अतरो इस्तामाल कइ तो पिटरी ल रा खर्चो न हो जाय। ए बाई रहा कोई इणकम टिकमवालो।^३

देगकाल

ग्रामता ग्रहणा न अपना कहानिया म निम्नलिखित सामयिक समस्याओं को स्थान दिया है—

(अ) पान्चात्य सभ्यता ने भारतीय युवक युवतियों को उस सीमा तक प्रभावित कर लिया है कि वे कर्मिता एवं दिखाव की ओर अधिकधिक उन्मुख होकर अपने वास्तविक वृत्तिया को मूलते जा रहे हैं। इस सन्तुलन उठाने फगन कृत्रिम सौन्दर्य

१ निहार क्या पृष्ठ ६३

२ देखिए कोडियों का नाच पृष्ठ ११६

३ रेडियम क मस्तर पृष्ठ ७८

प्रमाणन, बलव मद्यपान, रसकौस आदि की अनेक स्थला पर चर्चा की है।

(आ) भौतिक विज्ञान की यात्रिकता ने मानव के अंतर का रस चूसकर उसे एक निर्जीव मशीन में परिवर्तित कर लिया है।

(इ) आर्थिक वपम्य ने अभिजात वर्ग को सचहारा वर्ग का गोपण करने की सुविधा प्रदान करके उनके जीवन को अभासप्रस्त बना डाला है। इस प्रसंग में 'रेडियम' के अंतर में बद्ध रमजानी के प्रस्तुत शब्द उल्लेखनीय हैं—“यह समाज भी अच्छा मजाक है। जिनके हाथ में राज की चागडार है वे खिलाडी हैं और हम गरीब भूख लाग हैं काली सफा गाँ पिटने और पीटने के लिये।”

(ई) चौथी समस्या नारी वर्ग की है। आज के प्रगतिशील युग में नारी स्वतंत्र जीवन का अपनापन या परिवार पर अपन स्वतंत्र जीवन की आहुति दे ? और यदि वह दोनों में समीकरण कर तो कैसे ?

(उ) आज विज्ञान ने साहित्य को सौ वर्ष पीछे छोड़ दिया है यदि यही गति रही तो गीघ्र हो विज्ञान मानव का नष्ट कर देगा।

समस्याओं की इस विविधता से सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि लेखिका की सग्रह गति और यथाथ-वाप में कितनी गहराई है। ये समस्याएँ कुछ विनिष्ट कहानियाँ में ही न उभरकर प्रायः सभी कहानियाँ में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में अनुस्यूत रही हैं। इस पारस्परिकता का कारण यह है कि इन सभी के मूल में मानवता की प्रतिष्ठा का प्रश्न है।

उद्देश्य

यात्रिक युग की विभीषिकाओं का चित्रण आलोच्य कहानियाँ का प्रमुख लक्ष्य है। भौतिक विज्ञान के प्रगतिशील चरणा ने मानव के शरीर हृदय तथा आत्मा को पतनवत् बनाकर साहित्य को परास्त किया है, आर्थिक वपम्य को जटिल बनाया है तथा नारी का पारिवारिक वस्तु-या से विमुख किया है। विज्ञान अपने सजनात्मक एवं ध्वसात्मक दोनों रूपों में मानव का शत्रु है यही सदा इन कहानियाँ में प्रतिबिम्बित है। यद्यपि लेखिका ने यथाथ के उग्र वटु चित्र अंकित किये हैं और समाधान की शिन्ना में कोई प्रत्यक्ष सुभाव नहीं दिया। तथापि आलोच्य कहानियाँ में यह ध्वनित है कि वे एक आदर्श सत्सृष्टि का निर्माण करने के पक्ष में हैं। उनकी यह इच्छा यही है कि 'विज्ञान' के बल पर मानव की स्वतंत्र सत्ता का लोभ जाएँ। इसी कारण वर्तमान परिस्थितियाँ के प्रति उन्होंने मन में गहरा क्षाम निहित है।

भाषा शैली

सरूपकुमारी जी अभिव्यजना पक्ष की सज्जा के प्रति विनाय जागरूक रह रही हैं।

अनप्राप्त की धकाचौंथ नवीन उपमाओं चमत्कारपूर्ण रूपका और धारासाहिव वगन प्रवाह समुक्त उनकी भाषा शरीर-यग्य एवं वक्रता का विगण अत प्रसार रहा है। गली का दृष्टि से अधोलिखित उद्धरण अवलोकनीय है—

उसने गीगा और कथा ताकचे पर रख दिया और नजर की चार-बत्ती चारा और घुमाई। सूय की फीकी फानी सी रोगनी टको पर बिक्ने वाली ब्याक समान उसके मले कुचल बिस्तर पर लोटकर फलदार नीले टक का टटोतकर ताकच पर रत गीगे में प्रपनी ही चमक स चुहसकर सिर के भटक स अधरा गिलरकर गिडकी क रास्ते गली में निकल भागी थी।^१

आलाच्य कहानिया में यावहारिक एवं रोचक स दावसी को स्थान प्राप्त हुआ है। मुसलमान पात्रों का प्रसंग में गुप्तगु आबाद खद जगाव खपनन हवाम भादि उद्ग-फारसी के शान्ते अशिक्षित पात्रों की उक्तिया में सम्बन्धी बदमास दन्ता टम सहृद आदि विवृतिया पाश्चात्य सम्प्रदाय में रगे पात्रों क कथना में माई डियर हाइडोजन आदि गंगा तथा इसी प्रकार सिन्धी मारवाडी आदि विभिन्न पात्रों का प्रसंग में विभिन्न प्रांतीय भाषाओं का गंगा को लखिका ने अपनी भाषा में मिश्रित किया है। गद्य भाषा में अनुप्रासमयी गली की सप्टि करने में उन्हें विगण रुचि है। उनकी कहानिया में पग पग पर ऐसे उद्धरण प्राप्य हैं। यथा—

(अ) इतने में बाधा पहुंच गया। हम सबका फटकारा। खट्टू की खदिया पर हल्की सी खपत लगाई और भाफी मागकर महमान को फा पर बठाया।^२

(आ) एक एक कर सबको निकाला गया और उनके स्थान पर मल्लो मानिन चुनो खपरासिन बनो जमादारिन माती मिसिराइन और बसो चौकीदारिन की सेना भर ली गई।^३

लेखिका की गली अधिकांशत विनारमक है यहाँ तक कि नेत्रों का समग्र एक सजाव विन्र अंकित हा जाता है। उदाहरणार्थ निम्नलिखित उद्धरण अवलोकनीय है—

(अ) सोइ की बोतनें जन स रतन रही थी बियर भलक रही थी काउटर पर निक्क खनलना रहे थे हसी ठटठा हो रहा था।

(आ) विम्मी न निम्मी की चोटी पकड़ ली निम्मी ने उसका धान नोच लिय विम्मी न निम्मी की ओल्नी चीर डानी निम्मी न उसका मुहू धीन लिया। उसने उसकी बापी पावर फेंक दी जमने उसकी मुडिया पटक दी। एक ने दूसरे की कनार् मरो दी

१ रेडियम के क्षण पर पृष्ठ १२

२ कीडिया का नाच पृष्ठ ५

३ रेडियम के क्षण पर पृष्ठ २८

४ रेडियम के क्षण पर पृष्ठ ११५

दूमरी न उसकी गरजन पकड़ ली । ^१

इसके अतिरिक्त लेखिका ने कतिपय स्थला पर तुल्य-भाष्य द्वारा भाषा में चमत्कार की सृष्टि का प्रयास किया है। यथा — वास्तविक बात यह थी कि वह ऐसी कथा को पत्नी बनाना चाहता था जो उसके लिए लाये साइकिल अगूठी और बटन और लाये चाँदी की छुरी सोने की घड़ी मोती की लड़ी । ^१ इसी प्रकार उन्होंने अनेक स्थला पर मौलिक उपमाओं की खोज की है जिनमें रोचकता भी सहज विद्यमान है। निम्नलिखित उद्धरण इसी प्रवृत्ति के परिचायक हैं—

(अ) सहर की टोपी देखते ही उनका निल गुडप से डूब गया जैसे झील के पानी में पत्थर का डला । ^२

(आ) फटी हुई पाग के जूँदर से निकला हुआ उसका सिर ऐसा लग रहा था जैसे कोई बम का गोला हो अभी फूटनेवाला । ^३

(इ) पगला क बिना संत मूना रहता है जैसे बच्चा के बिना घर या नौकाओं के बिना झील । ^४

लेखिका की गनीमत्त यम्य की छाया प्रायः सबत्र व्याप्त रही है। यह यम्य मुख्य रूप से गोपबन्धन के प्रति है। कतिपय प्रसंगा में यम्य विनय तीव्र एवं स्पष्ट रूप में मुखर हो उठा है। यथा— दोनू के नाना में हवा का सीटियाँ सी बज रही थी। वह बार बार कान को ढाँपने का यत्न कर रहा था किन्तु कालर फटा हुआ था। फटा हुआ न होता तो सभा के मेम्बर मिस्टर भवानीदास उस लड़के को अपना कोट भला क्या देने लगे थे ? दुर्गा भी किसी प्रकार अपनी हड्डियाँ को चादर की गठरी में जो उस गोभा रानी ने दी थी छिपाये बठा था। चादर फटी हुई थी सभी तो उसे ओढन को मिल गई घरना कौन गूहलदमी इतनी बुढ़ू होगी कि घर की अच्छी चादर एवं नौकर को दे डालेगी । ^५ इस प्रकार लेखिका की भाषा में सबत्र एक चुलबुलापन है। ऐसे कतिपय स्थल कृत्रिम-से प्रतीत होते हैं किन्तु सबत्र ऐसा नहीं है और जहाँ मामा-य वणनात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है वहाँ निश्चय ही उसमें सहज सौन्दर्य का समावेश हो गया है।

सत्पुत्रमारी जी की कहानियों का विश्लेषण करने पर निष्कर्षस्वरूप यह कहा जा सकता है कि उन्होंने यथाय के कटु चित्रांकित करके परीक्षित आत्म मस्तिष्क की सृष्टि पर बल दिया है। पात्रों के चरित्र में उन्होंने सूक्ष्म दृष्टि का परिचय दिया है और उनकी विपत्तियों का ये इतना साहसिक एवं चित्रात्मक रूप प्रस्तुत कर सकी हैं जसा अधिकांश महिला कलाकारों की रचनाओं में प्रायः दुर्लभ रहा है। उनकी कहानियाँ चरित्र

१ रेडियम के अक्षर, पृष्ठ १७

२ रेडियम के अक्षर पृष्ठ १७

३ ४ ५ निम्नर कथा पृष्ठ २४, २४, २४

६ निम्नर कथा, पृष्ठ ३४ ३५

प्रधान ह और पात्रा के साबार चित्र प्रस्तुत करने में उन्हें गराहनीय सफ़रता मिला है। इसका श्रेय उनकी शली को भी दिया जाना चाहिए जिसमें ताजगी साप्ता और गक्ति का एकसाथ समावेश है। सत्य यह है कि उनकी कहानियाँ में कथानक न गिल्प को नए मोड़ दिए ह और दूसरी ओर कथा गिल्प की सुचारुता से कथानक का गोभा बढ़ गई है। इसका यह अर्थ नहीं है कि इन कहानियाँ में कथानक और गली आत्मनिभर नह ह। बलत में दोनों तत्त्व सबन एक दूसरे के विकास में सहायक रहे ह।

सुश्री सोमा वीरा

सुश्री सामा वीरा के कहानी संग्रह 'धरती की बेटी' मसौतीस कहानियाँ संकलित हैं जिनमें अधिकतर इससे पूर्व पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी थी। इन कहानियों का विषयानुसार वर्गीकरण निम्नलिखित है—

- १ वृद्ध विवाह—सधप सोमा बिन्द्या।
- २ पर्दा प्रथा—दण्डिदान, अधूरी गाठ।
- ३ पति का पत्नी के प्रति अत्याचार—ढहती कगारें, मूनी भाग भूल।
- ४ दहज प्रथा—राख की पुड़िया।
- ५ ज्यातिप सम्बन्धी अंधविश्वास—माय्य रेखा अटूट अमंगल जन्म कुण्डली।
- ६ विधवा विवाह—रत के टील।
- ७ पति-पत्नी के मध्य अनबन, मतभेद समझौता आदि—अधूरी गाठ सक्की रात लाल बोतल पील पत्त भग्न स्वप्न मजिल का दीप अम्मा पापा कटार ल।
- ८ सास सौतेनी सास और विमाना का दुःखवहार—आत्महत्या घर की लाज डगमगाते चरण, अवगुठन।
- ९ समाजगत वषम्य (वर्गभेद वर्णभेद)—आधी का आम सलोनी अगूठी मिटटा के खिलौन ममता बाजी स्वर्णदीप, मुभागी धरती की बेटी।
- १० रेवाचित्र—सध्या लहरें और वे दोना।

य कहानियाँ सामाजिक हैं और इनमें नारी हृदय की भावनाओं को भरल एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति प्रदान की गई है।

कथानक

विषयवस्तु के उनके वर्गीकरण से यह स्पष्ट है कि लेखिका ने प्रायः दृढ़िगत विषयों को ही स्थान दिया है किन्तु विषय प्रस्तुति नितान्त मौलिक रूप में की है। उन्होंने परम्परागत विषयों को अनिवार्य विवशता के रूप में अंगीकार नहीं किया अपितु उनमें विरुद्ध तात्कालिक विरोध की प्रेरणा दी है। कथानकों की यथार्थ परिस्थितियाँ लेखिका के मनोनुकूल सच में ढलनर उल्लेख हैं जो उठी हैं और यही इन कहानियों की सबसे बड़ा सफलता है। इनमें भावना की अपेक्षा बौद्धिकता का प्राधान्य है। इसका प्रमाण यह है कि अधिकांश कहानियाँ में अन्त में संयोग तथा हृदय परिवर्तन के द्वारा घटनाओं को अप्रत्याशित मोड़

दे दिया गया है। कतिपय कहानियों में यह परिवर्तन स्वाभाविक गति सा हुआ है। फलतः वे सफल रही हैं। आत्महत्या सबरी राह लान बोनन पीले पत्ता ममता, भग्न स्वप्न मिट्टी के गिलोने अवगठन विदिया और घरता का बेटी एमी ज़ी कथाएँ हैं। कुछ कहानियाँ में हृदय परिवर्तन के लिये उचित पृष्ठभूमि प्रस्तुत नहीं की गई फलतः एसा प्रतीत होने लगता है कि कथानक को बलपूर्वक एक निश्चित निष्ठा में ठसा गया है। राख की पुडिया अधूरी गाँठ स्वर्णदोष और दृष्टिदान गायक कहानियाँ इसी प्रकार की हैं। इनमें कथानक की समाप्ति अप्रत्याशित रूप में हुई है फलतः इनमें गिविलता एवं अस्वाभाविकता आ गई है।

नारी होने के नाते ललितका ने नारी जीवन की परिस्थितियाँ एवं प्रवृत्तियों का अत्यंत सहज चित्रण किया है। इस प्रसंग में श्री विष्णु प्रभाकर की यह उक्ति द्रष्टव्य है— “न कहानियाँ में हिन्दू मध्यवर्ति परिवार की नारी के अपमान बदनामी पीड़ा का ज़ा बिना उभर हैं व मम को छूत हैं। नारी के इस दुःखद इतिहास का वे जिस प्रभाव गाली दग स चित्रण कर पाई हैं उतना गायक इतिहासकार नहीं कर पाता। ‘अधिकांश कहानियाँ में घरेलू जीवन के चित्र अंकित किये गये हैं जो नितान्त सजीव एवं स्वाभाविक हैं। सध्या लहरे और वे दोनों तथा बाजी गीपक कहानियाँ ज़मश इस तथ्य की प्रत्यायक हैं कि सोमा जी रखाचित्र एवं व्यंग्यचित्र की रचना में भी सिद्धहस्त हैं। अम कुण्डली भाग्य रखा एवं अटूट अमंगल के कथानक की देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि ये तीन स्वतंत्र कहानियाँ न होकर एक उपन्यास के तीन परिच्छेद हैं। इसका कारण यह है कि इनमें मुख्य पात्रों के नाम वही हैं और घटनाओं में परस्पर पूर्वापर सम्बन्ध है। इन्हें लय उपन्यास का रूप देने में ललितका की सफलता मिल सकती थी। इनमें हिन्दू परिवारों की कृत्रिमता और प्रचलित अंधविश्वासों का चित्रण हुआ है। उन्होंने कुछ कहानियाँ में बाल मनोविज्ञान की भी सुंदर भाँकी प्रस्तुत की है। सध्या आधी का आम सलोनी मिट्टी व खिलौने और अम्मा पापा कटार से गीपक कहानियाँ इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। उनकी कहानियों की एक सामान्य विशेषता यह है कि प्रारम्भ नाटकीय और जिज्ञासावद्ध है विकास में सहजता एवं स्वाभाविकता है तथा अंत में साविकता का आश्रय लिगा गया है। उन्होंने प्रायः कथानक के समाहार में निष्कर्षक पंक्ति नहीं अपनायी है अपितु उन्हें ऐसी बिंदु पर समाप्त किया है कि पाठक को कथान्त में कथना का अवसर मिलता है। इससे उनकी कहानियाँ ज़ला में अतिरिक्त प्राणवत्ता आ गई है।

चरित्र चित्रण

मुन्नी सोमा बीरा ने मुख्य रूप से नारी की परिस्थितियाँ एवं मनोवृत्तियाँ का

चित्रण किया है। उनकी अत्रिका नायिकाएँ क्षिति, साहस और स्नेह की प्रतिभूति हैं। यथा—सधप की रणु 'ढहती बगारें की मजु दष्टिगान की शुभा 'अधूरी गाठ की नरिता, 'अगूठी की रूपना रत के टील की गौरी भाग्य रेखा की गुभा स्वणदीप का रागिनी डगमगात चरण की रेणु घरती की बेटा की चित्रा और भाई बहन की मुनीता। अत्रिका पात्राएँ परिस्थितिजय विवगताया एव विपमताया के विरुद्ध लड़ा लेती हैं किन्तु एम प्रसंगा म य कटुता का परिचय न देकर त्याग, तप एव स्नेह के बल पर विजय प्राप्त करती हैं और यही कारण है कि उनका गौरव पाठका की दृष्टि में बहुत ऊँचा उठ जाता है। रण मज 'गुभा और मौरी ऐसी ही गरिमामयी पात्राएँ हैं।

ललितका न नारी को बचन मधुर रूपा म ही प्रस्तुत नहीं किया, अपितु विमाता, मास सौतेली साम अभिजातवर्गीय दम्भ की प्रतीकरूपा रमणी आदि के रूप में उद्घाने नारी के कटु वक्ता रूप भी प्रस्तुत किये हैं। यथा—सधप म मा रत के टीले म गौरी का मास जातमहत्या म नियाकर का मा जान बोसल पाल पत्त म हरिमति 'अव गुण्डन म रोहित की मा घर की लाज म हमा की सौतेली मास, डगमगात चरण म गरद का मा गौर आँखा का जाम म बोना। इन पात्राया की रचना सबन सादृश्य हुई है क्योंकि इनका दृश्यवहार नायिकाया की विपम परिस्थितिया का हेतुस्वरूप रहा है। भूग की राधा और सीमा की सीमा ऐसी ही नायिकाएँ हैं जिन्होंने अत्याचार एवं अत्याय का विवग भाव से अगोचर कर आत्मा का हनन किया है अथवा सभी कहानिया की नायिकाएँ साधना का उदता एव विद्रोह की तीव्रता से परिस्थितिया का अपन अनु कूल बनाकर हा दम लेती हैं।

इन कहानियाँ म पुरुष पात्र विविध रूपा म प्रकृति हुए हैं। सधप 'ढहती बगार' मृता मांग अधूरा गाठ भूज अगूठी सीमा त्रिदिया राव की पुडिया आदि कहानियाँ म एक एक पात्र ऐसा अत्यय है जिसे अयायी, अत्याचारी अथवा प्रतारक का मना हो जा सकती है। इस दृष्ट पात्रा की सामाय प्रवृत्ति यह है कि नारी के तप त्याग अथवा श्रमिण के सम्मुख उनका हृत्प परिवर्तन हो जाता है और वे उदारवेत्ता हो जाने हैं। दष्टिगान म 'मा क नमुर राव का पुडिया म मठ जो अधूरी गाठ म रमणी त्रिदिया म सठ विगारीलान और स्वणदीप म हिमानु का चरित्र एगा ही है। पात्रा म इन आबल्लिख भाव परिवर्तन म कहा बड़ा बयानक म जस्वाभाजिकता भी लक्षित होती है। दूसरी ओर नरिबान एम पात्रा को भी स्थान दिया है जो स्नेही विचारक उदात्त अथवा राव के रूप म सामन पाएँ हैं। 'ढहती बगारें' म उपद्रव अगूठी म रतन सामा म जनर और रत के टील म रेखा का चरित्र भी कोमल का है। बाभू तथा मय विपमताया के निष्पन्न क उद्गम म नरिका ने पात्रा का ना चरित्र प्रस्तुत किया है यह प्राय विन्यपित है अथवा निम्नवर्गीय पात्रा का चरित्र हीन भाव म युग तथा दोषता से प्रभिन है तथा अभिजातवर्गीय पात्रा का चरित्र दम्भ एवं स्वाय का उदाहरण है। कनिय पात्र दमके अपवा म भी हैं 'स्वणदीप' म रागिनी

हरिजन बानव' चंदन से तनिक भी घणा नहीं चरती और धरना की बटा म चिना चमारो और भगिया के उपचार म रचि लती है। चरित्र विगण व प्रमग म घर की राज से यह रेखाचित्र अवनाकनीय है जिसम पात्र का जाति का राका विवरण दिया गया है—

नरेग को दंग देखकर मभ विधाता व हथौड पर त्रिमय जा करता है। क्या ही अनाखी अदभुत गकनें ठोका करता है वह अपन काग्या म भ्रम । विपत् विपदे गाल, छोटा सा माया जिस पर सदा बाना का न भवता रहता है। छांगी छांगी ओव, जा सदा गडा म धसो रहती हैं। भिणी चना नाक तरइ जती कमर का कमर म एक घसा जमा द खन खन म ता उमक मूग मूग परा म एतनी भी गकिन नहा रि मन गारार का बाभ ही मभान सक। जा दुगाट वह पहनता है उसम व जडा गासा चलता फिरता जिडियाघर या किसी सिनेमा का पोस्टर लगा करता है। जिस पर मजा यह कि वह अपन दल क नडना मे सबसे अधिक सुंदर सबसे अधिक फगनवन माना जाता है। '

कथापक्थन

सुनी सोमा वीरा न पानानुरूप महज सगिप्त एव सारगभित सबाना का विधान किया है जो कथानका के सरल विकास म साधक सिद्ध हुए हैं। उन मवादा की सर्वोपरि विपत्ता यह है कि य पाना की चरित्रगत प्रवृत्तिया का अभिव्यक्ति म विगप मटायकर रहे है। उदाहरणाय मामा कहानी म उपा और उसकी सौनेरा मा क ये वात्तालाप उद्धरणीय हैं जिनम उपा की विगेटपूण भावनाआ और सीमा क धीर गम्भार यक्तित्व की नाटकीय अभिव्यक्ति हुई है। उपा का इस बात का अत्यंत साभ था कि सीमा न अपनी इच्छा क विरुद्ध उसके बढ पिता को पति रूप में ग्रहण कर लिया—

सब कुछ जानती हू। समझती हो छोटी मा। फिर भी तमने यह जयाय हाने दिया ? क्या नहीं प्रतिकार किया सका ? क्या नहीं समझाया अपना ताई जी को ?

मुग मुग स चनत चा आय सस्कारा ने मेरे मख पर तांरा डाल दिया था। जत तक हमारे धरेनू वातावरण म परिवर्तन नहीं हाता ।

परेनू वातावरण का नाम न ता भरे सामन । अग्निशिखा भी भभक उठी थी उपा वातावरण बनानवान भी ता हम ही हैं न ? यदि मैं होता तुम्हारे स्थान पर

यान अघरा छां उम चप रह जात न्थ सीमा न कुछ मस्करावर पूछा था ता क्या करती तम ? गीग मका कुछ साचने लगी थी उपा । सहसा वह समझ न सका थी कि क्या उत्तर दे । फिर कुछ सोचत-न स्वर म कहा था— एसा स्थिति म मैं क्या करखी यह इस समय मैं कस कहू । रिन इतना मैं निश्चित रूप से जानती हू कि तुम्हारी तरह

मैं बलि का बकरा बनना स्वीकार न कर लेती। समय सब कुछ मुझा दना मुझे। मैं बिगोह कर बैठती किंतु किसी वासना व भूखे की भूख बुझाने व लिए

इस मग्न की कहानियां मैं पति पत्नी मास वधु पिता पुत्र माता पुत्री आदि के घरेलू वातावरण इतने स्वाभाविक रूप में जकित हैं कि वही भी आभास जयवा कृत्रिमता की छाया नहीं है। वस्तुस्थिति ता यह है कि इन कहानियां की सजीवता का मुख्य आधार इनमें आयोजित मवाद ही हैं। नविका में वणनात्मक शरीर का अत्यल्प प्रयोग किया है मुख्यतः नाटकीयता से विभिन्न होकर हा उनको कहानियां विकसित हुई हैं। ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक ही है कि जय तत्त्व अस्मितागत मवाग के माध्यम में विकसित हुए हैं। उपाहरणस्वरूप टगमगान चरण गोपक कहानी में वकारी से निराग पति से वाता वाप करती हुई रेणु की अधानितित उक्ति में दगनालविषयक तथ्य की किन्ती सहज एवं अवमरोचित अभिव्यक्ति हुई है—

रेणु अधीर हो उठी। बोली— क्या तुम भरी वाता को बालका की बकवास के समान उपा नैना चाहत हो गरद ! एक वात बता सकत हा तुम मुझे ? अपना घर घर छोकर प्रिय परिजना से विलग होकर कितने अभागे प्राणी आय पजाव से। पर तु उनमें से क्या किसी ने भी आत्महत्या की ? किसी व सामने अपने दुखडे राय। तम्हार देगी नीजवान बकार घूमत रहे। वे गरन्ति जनना जवना घ घा चन समी प्रकार क पवसाया में अपनी धाक जमा बठ। बोलो गरद गेर-पजाव रणजीत की किस मतान को तुमने भीख मांगत देखा ? भूगफली बेवकर चाट का ठला लगाकर उहाने नय सिरे से जीवन आरम्भ किया किंतु आश नहीं छोड़ी।

भावा की दृष्टि से आनो य कथोपकथन सवत्र पात्रानुकूल हैं किंतु भाषा का दृष्टि से वे प्राय एकरूप हैं। गिगित्त अगिगित्त उ-ववर्गीय निम्नवर्गीय सेवक-स्वामी सत्र प्रकार के पात्र एवं जमी भाषा का प्रयोग करते हैं। हा गली अर्थात् टान सबका भिन्न है और यह होना भी चाहिए था।

लेशकाल

सुश्री सोमा ने कहानियां में दो प्रकार की समस्याओं का चित्रण किया है—एक वे जिनका मध्यम मुख्य में नारी में है और दूसरी वे जो समाज में प्राप्त वधगत एवं वधगत वधम्य की आर मवेत करती हैं। प्रथम प्रकार की समस्याओं में मुख्य में हैं—बद्ध विवाह पत्नी प्रया विधवा व सारहीन जीवा की नीरमना दहज प्रया अत्रविश्वास पत्नी व प्रति पति का दुर्व्यवहार तथा साग सीनना मास एवं विमाता की अनोनी। य समस्याएं विगत गताली तक नारन की ज्वनन्त समस्याएं थीं और आज भी न वधन गावा और वस्वा में अपितु नगरा में भी कम से कम बीस प्रतिशत घर ऐसे हैं जहां

परम्परागत स्त्रियों हिंदू नारी के जीवन को विपाक किया है। सोमा बीरा की कहानियाँ की गिपता यह है कि उनमें स्त्रियों का यथार्थ चित्रण मात्र ही नहीं किया गया अतः उन पर सशक्त प्रहार किया गया है। उदाहरणार्थ सधप की नायिका रेण का जो यह नात होता है कि सोनती माता की प्रेरणा से उसके पिता का नौसर्गोंग मुँज वर से उसका विवाह करने जा रहे हैं तब वह भावी वर को पत्र लिखती है जिसमें एक अंग इस प्रकार है—

एक प्रश्न का उत्तर यदि आप सच कहें तो सारी नारी जाति ममस्त पुरुष वर्ग को सम्पूर्ण उत्तरदायित्व से भक्त कर देगी। यदि आपका प्रथम विवाह एक तीसरे वर्ष की प्रौढ़ दो नव बालिका की से होना निश्चित हुआ होना तो क्या आप सह्य उस विवाह का अनमति दन ? और क्या आज आप ऐसी दुविया को सह्य अंगीकार करने को तयार हैं ?^१

रेण का उक्त पत्र न तो पुरुष का आत्मा को झूझभार डाला और प्रत्युत्तर में उसने उस बहन मानकर समायाचना की। श्री विष्णु प्रभाकर का यह प्रश्न कहानियों की विपत्ति का ही चित्रण नहीं करना विपत्ति से मोटा देने की प्रेरणा भी देती है।^१ दूसरे प्रकार की सामाजिक समस्याएँ जिन्हें उल्लिखित ने प्रायः अंकित किया है य है— वगभट्ट जानिभट्ट ऊँच नीच छत्राछूत। इनसे सम्पन्न कहानियाँ में बड़ी व्यंग्य है तो वहीं तनना वहीं ययाय है ता कहा आत्मा कहा आत्मिकता है और वहीं सयोग। उ हान बाह्य सधप और अन्तः की अपरा परिस्थितियों के अनायास प्रभाव एवं आत्मिक हृदय परिवर्तन के द्वारा समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया है और यह विपत्ति अनन्त कहानियाँ में उनकी कला की दुबलता बनकर प्रकट हुई है।

उद्देश्य

गोपण अथाप्य एवं भेदाभाव के विरुद्ध विरोध सोमा बीरा की कहानियाँ का मूल स्वर है और यही उनका मुख्य भाग है जो उनकी कहानियों में उड़ी कुशलता से व्यक्त है। सदाशिव रूप से तो वह युग अत्यंत उद गया जब नारी जाति को पुरुष के अध्याप सहन पत्ते थे पञ्चापतियों द्वारा मजदूरी वग का अपमान होता था और हरिजन की जस्पृश्य समझा जाता था किन्तु प्रायः हरिजन से उम यग की छाप अभी प्रकट नहीं हुई है। बल विवाह दण्ड प्रथा व। प्रथा परम्परागत अंधविश्वास धार्मिक गलतानुष्ठान और कुप्रवृत्तियाँ हिंदू समाज का जीवन में छोटा किया है और जानिभट्ट वगभट्ट उक्त का कास्म निम्न वर्ग को हीनता और कीटाणुना ने उसे बाहर म प्रमित कर रखा है। उल्लिखित का मत यह है कि समाज की अजरता तथा

१ परती की बी पत् ६

२ देखिए परती की बटी दो पत्

अक्षर का नाग करके जान एवं समरमना का प्रकाश किया जाए। इस दृष्टि से उनकी कहानियाँ निश्चय ही पाठकों के लिये प्रेरणा-स्रोत एवं गविन पुज हैं। उन्होंने परिस्थितियों के यथार्थ चित्र अंकित किये हैं और प्रायः उन्हें आत्माओं मुख रखत हुए समाधान की दिशा में प्रेरणा दी है। किन्तु महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उन आत्माओं की सक्ति मात्र न्ये हैं। उपदेश मात्र अथवा प्रत्यक्ष कथन द्वारा उद्देश्य को स्पष्ट करके कहानियों के सीन्स का क्षीण कर देना उनकी प्रवृत्ति नहीं है।

भाषा शली

सामा जी की कहानियों की भाषा आडम्बरपूर्ण नहीं, सरल एवं प्रभावशाली है। अभिव्यक्ति की सरलता और सहजता उनकी कहानियों का सर्वाधिक उल्लेखनीय गविन है। आक्षर का दृष्टि से उनका अनेक वाक्य सज्जित हैं किन्तु प्रभावशाली दृष्टि से अनावश्यक तीर की भाँति अनावश्यक हैं। पात्रों के भावों में यत्न का प्रकट करने के समय वे निरन्तर न यत्न तब वचनात्मक गला का प्रयोग किया है जहाँ प्रामुख्य रूप से नाटकीयता एवं चित्रात्मकता का संयोग रहा है। चित्रात्मक अभिव्यक्ति का सजीव उदाहरण द्रष्टव्य है—

सभी के अग्रगण्य पर हमी थी जाना मैं चमक थी चान में उमग थी। सभा दुकले थे। हरेक के साथ पाई न कोई चल रहा था—एक दूसरे में छलना करते जानानतापूर्वक सग सग चलते या स्नह स हाथ में हाथ बाँध के सब न जान कहा कहा स आय थे, और न जान कहा लौट जानवाल न।

उही के बीच वह बूढ़ा भी था—

नि मग ! एकाकी ! नीरव !

जिंदगी के भार से माना उसकी कमर भी झुकन लगी थी। छाती पर दोना हाथ बाँध कर अकला चुपचाप अपने विचारों में डूबा था, एक एक कदम आगे बढ़कर रहा था।

भाषा के अलंकरण की प्रवृत्ति लिखकों की नहीं रही किन्तु अत्यंत विरल स्थलों पर अनायास ही अलंकारों का समावेश हो गया है। उदाहरणार्थ यह उत्प्रेक्षा श्रितना मोतिव है— दो की सितकियाँ एकत्र धम गइ माना किसी न समने का उपनता हुई चीनल में डाट लगा दी हो। कुछ कहानियों में व्यंग्य का सुंदर प्रयोग है किन्तु उसका सम्बंध गली की अफवाहें वगैरह घटनाओं एवं परिस्थितियों से अधिक है। लिखकों का अभिव्यक्ति गला के विषय में श्री विष्णु प्रभाकर के इस मत का उद्धृत करना पसंद होगा— भाषा सरल अद्वितीय और छत्रा के यत्न में अछूना है इसीलिए महारा प्रभाकर छात्रनी है। अभिव्यक्ति में भी व्यंग्य का आवेग नहीं है अतिरक्त और आडम्बर भी नहीं है श्लोकादि अनायास ही मन में छू जाती हैं। ये कहानियाँ पढ़कर चित्त उत्तम होता

है। लगता है उस स्वस्थ लेखनी से निकल हुए कुछ प्रेरणादायक चित्र दंग लिए हैं।
वस्तुतः सरलता इन कहानियों की बहुत बड़ी शक्ति है।^१

निष्कर्ष

अतः मैं यह कहना उचित होगा कि सुग्रीव सोमा वीरा की कहानियाँ गविन और प्रकाश की प्रेरिका हैं। परम्परागत विषया को अपनाकर भी उन्होंने गजीय एव गणवत् कथा चित्र अंकित किये हैं। सरलता उनकी कहानियों का मुख्य गविन है और गचकता उनका विनोद गुण है। उनका गारा चित्रित समस्याएँ प्रायः पिष्टपिण्ड हैं किन्तु उनके समाधान समसामयिक प्रवृत्तियाँ के अनुरूप हैं। समाज का ज्वर मायताभा पर मनुता किन्तु दन्ता से प्रहार उभर कहानियों का नय है। वननगन स्वाभाविकता एवं नाटकीयता उनकी भाषा गमा के ऐसे गुण हैं जिनके फलस्वरूप अश्वि-शक्ति में आडम्बर का जन्म रहा है। जागरूक प्रतिभा अनुभूति का विविधता और परिष्कृत दक्षिण के योग से वे अपनी कहानियों में मौलिकता स्थायित्व आन्ति गुणा को न सक्ती हैं इसमें कोई संदेह नहीं है।

पता है। जय विजय में वनक और वद्ध पवित्र के सवाँ तथा प्रेम की बेनी पर म दिनेग और रजनी के वात्सलाप का इसी काटि में रखा जा सकता है।^१

कुमारी किरण ने अपनी कहानियों में समकालीन देशकाल का निरर्थक वर्णन विस्तार न करके उद्देश्य कथन की प्रणाली को सफ़रतापूर्वक अपनाया है। उन्होंने समाज द्वारा अभिगृहीत नारी भावत्व का महिमा सामाजिक सद्गुण के फलस्वरूप आनयहीन नारी द्वारा आत्महत्या आदि का परिस्थितिमूलक चित्रण किया है। ऐसे प्रसंगों में देशकाल और उद्देश्य दोनों मुखर रहते हैं।^२ यहाँ यह उल्लेख है कि लेखिका को वातावरण के सुखद अथवा दुःखद चित्र अंकित करने में जितनी सफ़रता मिली है उतनी सफ़रता से वह सवन उद्देश्य का निर्वाह नहीं कर सकी हैं। बहन का हृदय जीवन का अन्त और प्रेम की बेनी पर क्षीपक कहानियाँ उसी प्रकार की हैं। उद्देश्य निर्वाह की दृष्टि से उन्हें सवाधिक सफ़रता जय विजय में मिली है जिसमें उद्देश्य (भावत्व का महिमा की स्थापना) का प्रत्यक्ष कथन न करके उस व्यञ्जना के द्वारा समझाया गया है। अतः यह उल्लेखनीय है कि उन्होंने भावना और भाषा दोनों की दृष्टि से भावुकता को विगम प्रत्यय दिया है। चकोरी और सुमिनकुमारी सिन्हा की भाँति उनकी अभिव्यञ्जना में भी कवित्व का नासित्य लिय हुआ है। दो चार स्थानों पर भाषा सम्बंधी त्रुटियाँ की अपवाद मानना होगा।

३ सुथी इन्दुमती

सुथी इन्दुमती में उलूख विरवे गीतक कथा संग्रह की रचना की है जिसमें निम्नलिखित सोलह सामाजिक कहानियाँ संगृहीत हैं—हम स्वतन्त्र हैं हीर राक्षा पापाण मीना पुनू पुनू भातन उमड़ विरव धम की नास्ति कार्तिक की मौ रगमयी द्रापणियाँ मानवता जीएगी युवन वनिगान कहा से कहाँ टिमटिमाता दिया कनियगी दुर्गितया। इन सब कहानियाँ के कथानक भारत विभाजन के समय के साम्प्रदायिक दंगों के विषय में सम्बद्ध हैं। भारत विभाजन के उपरान्त पीड़ित जनता के समान अनेक समस्याएँ आई हैं। उहाँ समस्याओं के किसी एक रूप का प्रत्यक्ष कहानी में चित्रण है। किन्तु दो या तीन कहानियों में प्रायः एक ही समस्या को धार्मिक चित्रण के साथ चित्रित किया गया है। उदाहरणार्थ पुनू पुनू में कासिम चाचा द्वारा एक हिन्दू परिवार की रक्षा में प्राणाहुति देने की कथा अंकित है तो यकत धनिगान में भी इन्फाक ने अपने मित्र मुनीन के परिवार की रक्षा के लिए आत्महत्या की है। कहाँ कहाँ कहानी का कथानक मध्यम विभिन्न है। मध्यम नविकारों में जिस मौलिक समस्या का जोर इंगित किया है उस आरंभिक चरित्रों एवं अन्य साहित्यकारों का ध्यान सम्भवतः अभी न गया होगा।

१ दक्षिण सप्त किरण पृष्ठ १० ११ ४६ ४७

२ दक्षिण सप्त किरण पृष्ठ ११ १४ २१ २२

द्वितीय प्रकरण

स्वातंत्र्योत्तर युग की अन्य कहानी लेखिकाएँ

वर्तमान युग में कहानी रचने की ओर बहुसंख्यक महिलाओं की रुचि रहा है। सत्यवती मल्लिक, रजनी पत्रिकर, मन्नू भंडारी प्रभृति मुख्य लेखिकाओं की अतिरिक्त इस युग में निम्नलिखित अडतास लेखिकाओं ने भी हिंदी कहानी में विकासक्रम में योग दिया है—मुन्नी चारंगीला मिना सावित्री मिहिराण इंदुमती हीरादत्त चौबेदो कौशल्या अश्वनीला गमा मालती डिंडा राजकुमारी शिवपुरी तारा पोतदार, लीलादत्त नमिता नुम्बा प्रकाशती नारायण नीला अवस्थी विरगुमारी गुप्ता उपासकसंता माधवी मत्स्यवती देवी नया पुष्पा भारती राधिका जोहरी पुष्पा महाजन, रीता गकुलता देवी गकुलता शमा इन्डिरा नूपुर मानती परूनकर गति जाती विमला रमा पद्मा बती पटरप माता विपुला देवी, काता सिंहा उपासकसंता उपा आशा रानी अंगु मुमन कारनकर निजमलक्ष्मी गौर रत्ना बापा अणिमा सिंह कृष्णा सोमती।

कहानी-लेखिकाओं का उपयुक्त क्रम निर्धारण उनके कथा संग्रहों की प्रकाशन कालों की आधार पर किया गया है। यद्यपि इनमें से अधिकांश लेखिकाओं की कहानियाँ पत्र पत्रिकाओं में आगे पीछे प्रकाशित होती रही हैं। सभी लेखिकाओं की विषय में यह जानना कठिन है कि उनकी प्रथम कहानी कब प्रकाशित हुई थी अतः हमने कथा-संग्रहों को ही प्रमाण माना है और प्रकाशन-काल का वहाँ भी उल्लेख न होने पर अनुमान का आधार लिया है। इन लेखिकाओं में से अधिकांश का एक-एक कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ है। इस विषय में बस यों अपवाद हैं—मालती डिंडा और सत्यवती देवी नया की दो-दो कथा संग्रह उपलब्ध हैं तथा कृष्णा सावती का कथा मंचन प्रकाशित न होने पर भी यहाँ उनका बहुचर्चित कहानी संग्रह का समीक्षा का गई है। कहानी-लेखिकाओं की संख्या का भी अडतीस या चालीस तक ही सीमित न हो किया जा सकता क्योंकि वर्तमान युग में अनेक नई प्रतिभाओं का उदय हो रहा है। कुछ ऐसी प्रसिद्ध लेखिकाएँ भी हैं जिनके सम्बन्ध में कहानियों की रचना तो की है किन्तु पत्र पत्रिकाओं में प्रिंट नहीं हुई है। कारण उनकी कहानियों का क्रमपूर्वक मूल्यांकन तथा सुविधाजनक है और न ही हम उनको विकासमान प्रतिभा का सही मूल्यांकन हो सकेगा। सभी लेखिकाओं में प्रमुख हैं—संग्रह प्रभा प्रिया कपूर गिवाणी, गतिप्रभा गायत्री और गति नटनागर। तथापि यह उल्लेखनीय है कि इनमें भी अन्य समकालीन लेखिकाओं की भाँति मुख्यतः सामाजिक

पता है। जय विजय में कनक और वद्ध पणिक व सवाद तथा प्रेम की बेदी पर' में मणिनें और रजनी के वात्तालाप को इसी कोटि में रखा जा सकता है।^१

कुमारी किरण ने अपनी कहानियाँ में समकालीन दंगलान का निरर्थक वर्णन विस्तार न करके उद्देश्य कथन की प्रणाली को सफरतापूर्वक अपनाया है। उन्होंने समाज द्वारा अभिगन्त नारी मातृत्व की महिमा सामाजिक सभ्यता के स्वरूप और यही नारी द्वारा आत्महत्या आदि का परिस्थितिमूलक चित्रण किया है। एक प्रसंगात्प्राप्त काल और उद्देश्य दोनों मुखर रहे हैं।^२ यहाँ यह उल्लेख है कि किरण को वातावरण के सुख अथवा दुःख चित्रित करने में जितनी सफरता मिली है उतनी सफलता से वे सवन उद्देश्य का निर्वाह नहीं कर सकी हैं। वहन का हृदय जीवन का अन्त और प्रेम की बेदी पर गीपक कहानियाँ इसी प्रकार की हैं। उद्देश्य निर्वाह की दृष्टि से उन्हें 'सवाधिक सफरता जय विजय में मिली है जिसमें उद्देश्य (मातृत्व की महिमा का स्थापना) का प्रत्यक्ष कथन न करके उसे 'यजना' के द्वारा सम्बन्धी बनाया गया है। अतः यह उल्लेखनीय है कि उन्होंने भावना और भाषा दोनों की दृष्टि से भावुकता को विगम प्रत्यक्ष दिया है। चकोरी और मुमिनकुमारी सिन्हा की भाँति उनकी अभिव्यक्ति गली भी कविता का गालित्य लिये हुए है। दो चार स्थानों पर भाषा सम्बन्धी त्रुटियाँ का अपवाद मानना होगा।

३ सुनी इंदुमती

सुनी इंदुमती में उलझे विरह गीपक कथा संग्रह की रचना की है जिसमें निम्नलिखित सोनह सामाजिक कहानियाँ संगृहीत हैं—हम स्वतंत्र हैं हीर राधा पापाण मीना पुन पुन मानन उलझे विरह धम की गालित्य कार्तिक की माँ रगमयी गोपदियाँ मानवता जीएगी युक्त बलिदान कहा से कहाँ टिमटिमाता दिया कलियुगी हुई तयाँ। इन सब कहानियों में कथानक भारत विभाजन के समय के साम्प्रदायिक दंगा के विषय में सम्बद्ध है। भारत विभाजन के उपरान्त पीड़ित जनता के समक्ष अनेक समस्याएँ आईं। उन्हें समस्याओं के किसी एक रूप का प्रत्येक कहानी में चित्रण है। बिना सोचा तीन कहानियों में प्रायः एक ही समस्या को याँकचित् अंतर के साथ चित्रित किया गया है। उदाहरणार्थ पुन पुन मानन में कासिम चाचा द्वारा एक हिंदू परिवार की रक्षा में प्राणाहुति देने की कथा कथित है तो युक्त बलिदान में भी इसाफ ने अपने मित्र मुनीन के परिवार की रक्षा के लिए आत्मबलि दी है। कहाँ से कहाँ कहानी का कथानक सबमें विचित्र है। इसमें देखना कि जिस भौतिक समस्या की ओर इंगित किया है उस ओर अधिवारियाँ एवं अधिसाहित्यकारों का ध्यान सम्भवतः कभी न गया होगा।

१ देखिए सप्त किरण पृष्ठ १ ११ ४६ ४७

२ देखिए सप्त किरण पृष्ठ ११ १४ २१ २३

आलोच्य कहानियाँ का लक्ष्य है। अनेक कहानियाँ में दर्शक सकारण आदर्श पात्रों का आश्रय लेकर लेखिका ने उन समस्याओं को समाधान प्रस्तुत किये हैं वे निश्चय ही सराहनीय हैं। उनकी विविध कहानियाँ में यथाय एव आदर्श का सुंदर समर्थन प्रस्तुत किया गया है। यह उल्लेखनीय है कि उन्होंने अपने सशक्त विचारों के अनुरूप तीव्र तथा अभ्युपगम भाषा शैली का प्रयोग किया है। यथा— हम स्वतंत्र हैं। हम धार्मिक स्वतंत्रता भी मिला है क्योंकि हमने मुसलमानों को पाकिस्तान दे दिया। और जब हम गांधीजी को भी मार सकते हैं क्योंकि हम हिंदू हैं हिंदुस्तान के निवासी और गांधीजी तो मुसलमानों की ही बात कहते हैं। गांधी बार बार यही कहती हैं हमने ही मानवता को हत्या की है हमने ही उस युग पुरुष को मरने दिया है और यह मिला हम स्वतंत्रता सब काय करने की। अराजकता की भाँ।^१

४ श्रीमती हीरादेवी चतुर्वेदी

श्रीमती हीरादेवी विरचित उलझी लड़कियाँ शीपक कहानी संग्रह में निम्न लिखित पंद्रह सामाजिक कहानियाँ संग्रहित हैं—उलझी लड़कियाँ, निर्माण मोल तोल घूम और निर्माण घर की राना तीखा घूट कवि लहर मलजो न पिस्ती का धडाका कनाकार भाग्य चन भूमि न स्मृति रक्त स्नान हड़ताल। नम जीवन की मुख दुःख मयी परिस्थितियाँ में उनमें हुए पात्रों के रूप गोकुण भावाँ की सहज रूप में प्रकट किया गया है। कथा अभाव एव सघर्षों में पिप्त मानव की बदनापूर्ण विह्वलता प्रतीकितियाँ द्वारा सबहारा वग का गोपण तथा साहित्य-मनवका की आर्थिक विपन्नता उक्त कहानियाँ का मुख्य विषय हैं। लेखिका ने चमत्कार जयवा घटना-आहुत्य को प्रत्यक्ष देकर अनुभूति प्रेरित एक कथा चित्र अंकित किया है जो जावन का यथाय स्वरूप प्रस्तुत करते हैं।

अधिकतर कहानियाँ में पतन प्रवाह पद्धति में कथानका का विकास हुआ है। उनमें लड़कियाँ निर्माण मोल तोल घूम और निर्माण तीखा घूट लहर, भूमि न स्मृति तथा रक्त स्नान शीपक कहानियाँ इसी काटि की हैं। घटनाओं की भाँति, आलोच्य कहानियाँ में, पात्रों की सख्या भी सीमित है। प्रत्यक्ष रूप से प्रायः एक ही पात्र अथवा पात्रा मधुसूत आता है और उसकी चिन्तनधारा में जय मधुसूत पात्रों की चला हाती है। उदाहरणार्थ उलझी लड़कियाँ में नायिका रूप का अंतरा अवनाना है।^१ जाय नम हान व कारण उसका पति का नौकरी व लिय कनरता जाना पडा चिन्तु मवान न मिन्न व कारण व उस आठ महीन तक भी न चुना पाय। पिछली मुखद स्मृतियाँ एव वर्तमान विरह अन्ता की तुलना करके वह बार बार अनुनाय करती है कि

१ उलझी लड़कियाँ, पृष्ठ १२

२ विषये उलझी लड़कियाँ, पृष्ठ १-७

न भावा को मुखर रूप देने में सवाद योजना अनेकाना विशेष उपधायां सिद्ध हुई हैं। उदाहरणार्थ टिमटिमाता निया में सावित्री तथा उसका देवर का यह संसार अचानक नीय है—

सावित्री का मुख कठोर हो जाया। उसने अवीर स्वर में कहा— आप क्या मनुष्य नहीं हैं वद जी? गाति न आपकी बान्ता है! आप ही जागा का अतिहाम बताता है अपना बान्ता आन लिए इसी दग क निवासी अपना रक्त बहा दन न। वह रक्त जब सफ हो गया है न।

हटाओ भी भाभा किम कर में पड़ी हो। गान्ति मरे फिर काम न बना अब? व ने दुबारा दुहराया।^१

गाति वेद की बान्ता थी किन्तु विभाजन के समय जाततायिया के बान्ताकार का गिकार होने से वह वेद की दृष्टि में अपावन हो चुकी थी। उक्त सवाद में सावित्री की मवदनगीत प्रवृत्ति और वेद की संकुचित दृष्टि का संक्षिप्त किन्तु मार्मिक निरूपण हुआ है। सवादा की भाषा प्रायः पात्रानुकूल है। उदाहरणार्थ कालिका की मां ममा में अनेक स्थानों पर गड बगना में सम्भाषण किया है। इस प्रकार पुनः पुनः में उमरा की अधोलिखित उक्ति में पञ्जाबी भाषा का प्रभाव द्रष्टव्य है— उमरा की जाका से अश्वधारा उह रही थी। उसने रोते रोते कहा— छादना जी को मैं खाजूगी पुनः पुनः। तम जाओ जहा तम जीत रह सको चला।^२

उल्लङ्घन विरुद्ध की कहानियां में देवकान का सवाद के माध्यम से तो चित्रण हुआ ही है लेकिन ने प्रायः प्रत्यक्ष कहानी में समकालीन भारत की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति का प्रत्यक्ष रूप में भी वर्णन किया है। उदाहरणार्थ अधोलिखित उल्लङ्घन द्रष्टव्य है—

(ज) और फिर दग के दो टुकड़े हो गए। अस्वाभाविक प्रश्न चिह्न-सी सीमाओं में भारत भूमि बाँट दी गई। आमने-सामने अक्षीहिणी बनाए लगीं न हुई तो क्या भाई न भाई का रक्त उनीचता छुट किया ही।

(आ) 'तभी जाघात आया दग पर। कन्मीर भी जख्मी न बचा। मनु की सन्तानों के भीतर बठा हुआ दामव जाग्रत हो उठा और अपनी ही सृष्टि सम्पत्ता को अमर्य मुखा में चालने लगा।'^३

भारत विभाजन के उपरान्त जनसंख्या के इतस्ततः जाने तथा साम्प्रदायिक दंगा जादि के कारण जनता के समक्ष तो अनेक समस्याएँ आईं उनका यथावत चित्राकन

१ उल्लङ्घन विरुद्ध पृष्ठ ११६

२ देखिए उल्लङ्घन विरुद्ध, पृष्ठ ७

३ उल्लङ्घन विरुद्ध पृष्ठ ४३

४५ उल्लङ्घन विरुद्ध पृष्ठ १११ ११७

आलोच्य कहानियाँ का लक्ष्य है। जनक कहानियाँ में दल सकल्पवान आदर्श पाना का आश्रय लेकर नविका ने उन समस्याओं के जो समाधान प्रस्तुत किये हैं वे निश्चय ही सराहनीय हैं। उनकी विविध कहानियाँ में यथाथ एव आदर्श का सुंदर समर्थन प्रस्तुत किया गया है। यह उल्लेखनीय है कि उन्होंने अपने संशय विचारों के अनुरूप तीव्र तथा यथपूण भाषा शलाका का प्रयोग किया है। यथा— हम स्वतंत्र हैं। हम धार्मिक स्वतंत्रता भी मिली है क्योंकि हमें मुसलमानों को पाकिस्तान दे दिया। और जब हम गांधीजी को भी मार सकते हैं क्योंकि हम हिंदू हैं हिंदुस्तान के निवासी और गांधी जो तो मुसलमानों का ही बात कहते हैं। दीपा बार बार यही कहती हैं हमें ही मानवता की हत्या की है हमने ही उस गरीब पुरुष को मरने दिया है और यह मिनी हम स्वतंत्रता सब काय करने की। अराजकता की भी।^१

४ श्रीमती हीरादेवी चतुर्वेदी

श्रीमती हीरादेवी विरचित उलझी लड़ियाँ गीतक कहानी संग्रह में निम्न विहित पाँच सामाजिक कहानियाँ संग्रहीत हैं—उलझी लड़ियाँ निर्माण माल तोल घूम और निर्माण घर की रानी, तोला घूट कवि लहर मलजोल पिस्तौल का घडाका कनाकार भाग्य चन भूमिल स्मृति रक्त स्नान हडताल। इनमें जीवन की सुख दुःख भरी परिस्थितियों में उलझे हुए पात्रों के हृदय शोकपूर्ण भावों को सहज रूप में व्यक्त किया गया है। कथा अभावों एवं संघर्षों में पिसत मानव की बदनाम बहिष्कारता पूजोपतियों द्वारा सवहारा बग का शोषण तथा साहित्य सेवा की आर्थिक विपन्नता उक्त कहानियों का मुख्य विषय है। लखिका ने चमत्कार अथवा घटना बाहुल्य को प्रश्रय न देकर अनुभूति प्रेरित एम कथा चित्र अंकित किया है जो जीवन का यथार्थ स्वरूप प्रस्तुत करते हैं।

अधिकतर कहानियाँ में तेजना प्रवाह पद्धति में कथानका का विकास हुआ है। उलझी लड़ियाँ निर्माण माल तोल घूम और निर्माण तोला घूट, लहर भूमिल स्मृति तथा रक्त स्नान गीतक कहानियाँ इसी काटि की हैं। घटनाओं की भाँति आलोच्य कहानियाँ में पात्रों की संख्या भी सीमित है। प्रत्यक्ष रूप में प्रायः एक ही पात्र अथवा पात्रा समुह आती है और उसकी चिंतनधारा में नये सम्बद्ध पात्रों की चर्चा हाती है। उदाहरणार्थ उलझी लड़ियाँ में नायिका रूपा की अत्यंत अवलोकनीय है।^२ आरंभ में हानव कारण उसका पति का नौकरी के लिये कनकता जाना पड़ा किन्तु मरान न मिलने के कारण वह उस आठ महीने तक नीचे नुना पाव। पिछली सुखद स्मृतियों एवं अनमान विरह वृत्तों का तनना करके वह बार बार अनुताप करती है कि

१ उलझी लड़ियाँ पृष्ठ १२

२ वसिष्ठ उलझी लड़ियाँ पृष्ठ १-७

नाहक ही उसने पति को परदेग जान को बाध्य किया। निर्माण घर का राना आदि कहानिया भी इसी प्रकार आत्म चित्तन के घरातन स लिखी गई है। बनि नहर मनजोन आदि म भी प्रमुखता तो एक पात्र का है किन्तु उनम अव पात्र ना प्रत्यक्षत सम्मुख आए है। अभी कारण इन कहानिया म क्यातक एक चरित्र चित्रण म पूर्वोक्त कहानिया स भिन्नता है।

आरोक्ष्य पात्र प्राय परिस्थिति प्रतापित रह है कन्ना एव अनुताप हा उनक जीवन क मुख्य प्राप्य है। पात्रा की अपक्षा पात्राजा का चित्तनगारा इन कहानिया का मूल तत्व है। नलिका न पात्रो म मवन मानवाचित स्वाभाविकता की रक्षा की ह। कतिपय पात्र जात्या का सामाआ का भी स्पष्ट करत है किन्तु व भी मानवीय औचित्य क भीतर ही रहत ह। घर की रानी की सरना निमाण का मनका ताखा घट की परवतिया और मेन जान का साज ऐम ही चरित्र ह। अधिकांश कहानियो म गोपित पात्रा की जीवन गाथा अंकित है गोपक पात्रा की चचा प्राय पराक्ष रूप म हुइ ह।

चित्तनप्रधान कहानिया म सवाद याजना को अधिक स्थान नहीं मिला किन्तु मनजोन पिस्तौल का घडाका नहर आदि कहानिया म क्यापकथन का मुचाए विधान हुआ है। अधिकतर सवाद सक्षिप्त सारगर्भित एव पात्रानुकूल है तथा चरित्र-चित्रण म उनका विशेष योग रहा है। लहर म विमना क पति हरीग जब तनिक-मा घात पर क्रुड होकर बिना खाद्य चन गये तो विमना स भी न खाया गया। इस पर उसका अपनी सखी कमना से अधोनिखित वार्तालाप उदरणीय है—

कमला ने गम्भीर वाणी स कहा— चला तुम मरे कहने से भोजन कर नो।

नही कमना यह मैं नहा कर सकती। बे भूख चले जाए और मैं खाना खा नू।

तकिन व ता वही भी खा सकत है। कमला ने कहा— दिन भर भूल रह कर थोड ही काम करत रहग दफनर म ? और कुछ नहीं तो दोस्ता क कहन पर चाय नाता उह स्वीकार करना ही पड्या वहा।

मैं उह खब जानती हू कमला। व हरगिज नहीं खाएग पिएगे कुछ। दिन भर पूरा पूरा उपवास रखम। उनका ऐसा स्वभाव नहीं कि मैं घर म भूखी बठी रहू और बे बाहर कुछ खा पी नैं।^१

उक्त सवाद म विमना एव उसक पति की चारित्रिक प्रवृत्तिया एव एक दूसरे क प्रति धनिष्ठ प्राति का अभिव्यक्ति हुइ है। वसे प्रस्तुत कहानी सग्रह म निम्नलिखित समझाजा का चित्रण भिन्नता है—निधनता मरगाई बकारी पूजोपतिया द्वारा सवहार वन का शोषण त्या का स्तनजना क बाद का साम्प्रदायिक रक्तपात धन क अभाव म साहित्यकार का कला का ह्रास आदि। गोपिता क प्रति नलिका क हृदय म गहन सहानु

भूति है और गायिका के प्रति घोर शोभ जिस उद्देश्य के लिए किया है। उदाहरणार्थ माल तोल कहानी की ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं— 'आज के युग में पूजापतियाँ का रवया कुछ अनोखा ही है। व नीकरी करायेंगे कसकर भट्ठाना दाने कम से कम और तुरा यह कि इतने पर भी यह अपना करण कि नीकरी करनेवाला साहित्य मण्डल भी उनकी हा में हा मिलान का आदी हो। जो ऐसा नही कर सकता वह चाहे कितना श्रमी और विद्वान क्या न हा पूजापतियाँ की नमस्कृत उसका कोई मूल्य नही। बाजार की वस्तुओं के माल ताल का तरह ही ये पूजापति साहित्यिक का भी मूल्य आंकना चाहत है।'

श्रमिक वर्ग की परस्पर आत्मीयता उच्च विचार कठोर परिश्रम आदि के चित्रण में लग्निका विगपत प्रगत्त हुई है। उनकी सदविषयक विचारधारा पर प्रायः प्रगतिवादी का प्रभाव है। रक्त स्नान कहानी में देव विभाजन के उपरान्त साम्प्रदायिक रक्तपात की चर्चा हुई है।^१ समस्या चित्रण के अतिरिक्त इन कहानियों में प्रसंगात्कूल प्राकृतिक सौन्दर्य का भी चित्रण हुआ है। उदाहरणार्थ कवि शीपक कहानी में यह उक्ति देखिए— 'कवि बराबर जागता रहा। सतप्त आकाश के तार धीरे धीरे उसी में विलुप्त होने लगे। प्राची में सुनहरी उषा एक सजी सजाई सुकुमार बाला सी आकर अपनी सुंदरता बिखरती हुई कवि को निहारने लगी। रात्रि ने मानो कवि की दयाग्र दशा पर आँसू बहाकर उसे सात्वना दी और अपने अधु कण ओस के बिंदुओं के रूप में सत्तार के पुष्प पुष्प और पल्लव पल्लव पर बिखेरकर वह चली गई।'^२ प्रगतिवादी की भाँति लेखिका को गांधी जी के सिद्धांतों के प्रति भी विगप श्रद्धा है। गांधी जी द्वारा प्रस्तावित तप सत्य एवं सदाचार को उद्देश्य के लिए अधिकांश समस्याओं का समाधान माना है। निर्माण तथा मनजोल कहानियाँ इसकी प्रमाण हैं।^३ परिस्थिति प्रस्तावित जीवन के यथापि चित्र अंकित करना इन कहानियों का लक्ष्य है किन्तु लेखिका ने अनेक इस ओर संकेत किया है कि मानव आत्म सत्य एवं आत्म-परिष्कार द्वारा अनेक विषम परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर सकता है।

हीरादबी जी की कहानियों में भावानुरूप प्रौढ एवं परिष्कृत भाषा गली की स्थान मिला है। श्रमिकों तथा पूजापतियों का वर्णन करते समय उद्देश्य के लिए व्यंग्यपूर्ण भाषा की प्रशंसा दी है। उदाहरणार्थ धूमिल स्मृति से यह परिस्थिति चित्र देखिए— 'और जो गरीब हैं मजदूर हैं उन्हें श्रीम की प्रखर धूप नहीं लगती नूनही लगती। गीत की तीर जसी हवा उन्हें बचा नहीं सकती। भूखलावार वर्षा उनका कुछ बिगाड़ नही सकती। चाहे कितना पसीना उन्हें बहाना पड़े, बचावित उन्हें बचावट भी

१ उन्नीसवीं सदी पृष्ठ २५

२ देखिये उन्नीसवीं सदी, पृष्ठ १२४

३ उन्नीसवीं सदी, पृष्ठ ५६

४ देखिये उन्नीसवीं सदी, पृष्ठ १६, ७७

नहीं जाती। यदि यह सब होता भी हो तो हुना कर पर तु उनरा मुँह पर नमका कोई चिह्न नहा दीयता।^१ सारा यह कि आनोय कहानियाँ म आनोय की अपा अनुमति को अधिक प्रश्रव दिया गया है। नम समकालीन आवाज व चित्रण पर विचार ध्यान दिया गया है और साथ ही पात्रों की वहिमगी प्रवृत्तियों की अपा उनव अन्तर्गत का चित्रण हुआ है। इनमें से अधिकतर कहानियों की एक विशेषता यह भी है कि य चेतना प्रवाह पद्धति में लिखी गई हैं।

५ श्रीमती कीसल्या अरक

पेघारा श्री उप द्रनाथ अरक और श्रीमती कीसल्या अरक का कथा संग्रह है जिसमें दोनों की पाँच पाँच कहानियाँ संकलित हैं। कीसल्या जी की पाँच कहानियाँ कभीपक नमग वस प्रकार हैं—ठस यकान निम्मो फसला और जग नाथ। अपने मरल एव भावक व्यक्तित्व के अनुरूप जसा कि उक्त संकलन में अ क जी द्वारा प्रस्तुत श्रीमती जी के रेखाचित्र से स्पष्ट है^२ आनोय नेपिकाने अपनी आस्थापिका में भी बाधगम्य सहज एव भावुकतापूर्ण कथानका की सृष्टि की है। व्यक्ति अपने मन में निविष्ट कलिए अनेक ज़ची कल्पनाएँ सजोता है जाने अतजान अनेक अतप्त आकांक्षाएँ उस ध्याकुल बनाएँ रहती हैं और उनकी पूर्ति की दिशा में वह सँव जागा बत रहता है किन्तु जब कठोर यथाथ स टकराकर व धूर धूर हो जाता है तब वह असह्य बदना स पाकुन हा उठता है—नमिकान इमी भाव को विभिन्न कथानका द्वारा प्रस्तुत किया है। उदाहरणार्थ ठस की नायिका कवि की कृपा स भिखारिणी के जीवन स छटकारा पाकर उसक घर की प्रवाधका बन जाती है किन्तु उसका मन कवि स कुछ और के लिए आतुर रहता है और न मितने पर कुठा निरागा बेदना आदिका जन्म होता है। यकान का नायक हरितया फसला का नायक ब्रजग अमुन्तर पत्नियाँ के कारण बदना एव कुठा व बोझ को ढाले हैं। निम्मा पत्र गनी में लिखित भावपूर्ण कहानी है। य पत्र नायक दुग्गन द्वारा अपना प्रयोगी निम्मो को निषेध गये हैं जिनमें विगत मुश्किल दिवसों की मधुर स्मृति व अनिश्चित प्रयत्नों की बतमान कटता क प्रति नायक व उपायम स्नेह प्रिकायन फलवार मीठी अत्सना आनि विभिन्न भाषा का सम्मिश्रण है। दुर्भाग्य स राजनीतिक उडवट व कारण व पत्र निम्मो को यथासमय नहीं मिल पात और अपने को अनिश्चित समझकर प्रमा पहुँच ही यद्ध में वीरगति पाकर परदास्वासी हो जाता है। आनाय कहानी एक घरनु कमचारा का मनावतानिक चरित्रचरन है। घर में मानवित्व द्वारा प्रगता न पान पर बाहरवाला स नत्र प्रगता मितती है तब उसका स्नेहपूर्ण मन उनक प्रति अपना नियामक कृतज्ञता (उह अपना बनाया भाजन चखन सो देकर

१ उत्तमा लखिया पृष्ठ ११२

२ दक्षिण दो घारा पृष्ठ ३३ ३६

अथवा उनका काम करके) का अभिव्यक्ति किये बिना नहीं रहता। फलतः एक दिन उस अपनी नोकरी से हाथ धोना पड़ता है। इस कहानी से प्रमाणित है कि थोमसी कोशल्या अर्थात् अपने कथा पात्रों का सहज एवं मनोविज्ञान सम्मत चित्रण करने में विशेष सफल हुई हैं।

पात्रों के यथित्व एवं त्रिया कलाप का भी लेखिका ने अनेकशः अत्यन्त सजीव एवं नाटकीय चित्रण किया है। उदाहरणार्थ 'जगन्नाथ' कहानी के नायक जगन्नाथ का वह रोचक रेखाचित्र अवलोकनीय है— उसकी नाक चपटी थी, जिसकी नोक छाती ऊपर को उठी हुई थी अर्थात् टेढ़ी थी और नाक भी चढ़ाने में उस कोई कठिनाई नहीं होती थी। जब भी उस अप्रसन्नता अथवा क्रोध प्रकट करना होता, वह नाक भी चढ़ा देता। 'इन कहानियाँ में चरित्र चित्रण के लिए मुख्यतः वर्णन विवरण पद्धति का आश्रय लिया गया है, किन्तु यथावसर पात्र और प्रसंग के अनुरूप संवाच भी प्रस्तुत किये गए हैं। पात्रों के मानसिक स्वरूप एवं आत्मपीडा को मनोवैज्ञानिक रूप में व्यक्त करने में संवादा का योगदान महत्त्वपूर्ण है। पात्रों की चेतना प्रवाह का चित्रण करते हुए लेखिका ने मानसिक वातावरण की सहज अवतारणा की है। इसी प्रकार बाह्य दशांश की मूर्च्छाकरण में भी वह सफल रही हैं। उदाहरणस्वरूप 'फसला' कहानी की प्रारम्भिक पंक्तियाँ उद्धरणीय हैं— शिशिर की हिम गीतल ठिठुरती हुई रात अपने धुएँ और धुंध के साथ बब की उतर आई थी। नगर की समस्त कालाहल का जल गला धोकर उसने उस चुप करा लिया था। ट्राम मोटरें तागे सब मौन हो गए थे और धुंध ने पूर्ण रूप से सबन अपना एकाधिकार जमा लिया था—मार्गों की विजलियाँ (युद्ध काल की वृत्त के कारण) बुझी हुई थी। सूची भेद अन्धकार और नीरवता छाई हुई थी। और किसी इनके दुक्के ताग या साइकिल की घड़घड़ाहट अथवा उसकी टिमटिमाती बत्ती इन नीरव अन्धकार की ओर भी घनीभूत कर रही थी।^१

निम्ना कहानी में यद्यन्तः सन १९४२ के भारत की राजनीतिक स्थिति की सूचकांतिरिक्त एक पत्र में नायक द्वारा सनिराज कम्पन जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।^२ प्रस्तुत लेखिका का उद्दिष्ट कल्पना और यथार्थ में वास्तविकता का चित्रण करना व्यक्ति और परिस्थितियों के प्रति व्यंग्यपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत करना है। यद्यपि, इन गल्पों में सरल भावपूर्ण तथा साहित्यिक भाषा पात्रों को स्थान प्राप्त हुआ है। 'गली' मुख्यतः विवरणात्मक जनवर्ग चित्रात्मक एवं संवत्सरगम्भीर तथा मनावैज्ञानिक रही है। परिस्थितियों के अनुरूप मानव के मनोभावों का परखने की सूक्ष्म प्रतिभा लेखिका में विद्यमान है। इसी कारण अपने पात्रों के अन्तराल में पठकर सहज चित्र उभारने में वह

१ दो पारा, पृष्ठ २१६-२२०

२ दो पारा, पृष्ठ २०१

३ बखिरे दो पारा, पृष्ठ १६०-१६१

आगातीत सफरता प्राप्त हुई है जिससे उनकी कहानियाँ नया म गयीं जा सकी हैं।

२. श्रीमती शीला शर्मा

श्रीमती शीला शर्मा के दूटी चूड़ियाँ गीपक कथा संग्रह में निम्नलिखित तरीके से सफर कथाओं को स्थान प्राप्त हुआ है—गिरार सिगरेट रोना जूती की जोड़ी दूटी चूड़ियाँ मिठाई की दुकान की काका गुड़िया ननकू लठत ताई जी रतुई जावारा केकवाला हरीरा कोनी राजा मुन्ना याय कुर्ता टोपी सोन का करघना परिस्थिति कमीने कही के। इन कहानियों में लेखिका ने दैनिक जीवन के सामान्य जनभवा का रोचक एवं प्रभावपूर्ण कथानकों का रूप प्रदान किया है। बान पाना की बाजोचित भावनाएँ एवं त्रिया कलाप दाम्पत्य जीवन की कट अथवा सरस अनुभूतियाँ सोतरी सत्तान के प्रति विमाता का कट व्यवहार सास का बहु के प्रति अत्याचार और ग्रामाण पाना की दैनिक समस्याएँ उक्त कहानियों में प्रमुख रही हैं। गिरार गुड़िया और कुर्ता टोपी गीपक कहानियों में लेखिका ने कल्पना का जाय लेकर श्रमण मग मगी गुड़िया कुर्ता टोपी आदि अमानवीय पदार्थों को मानव की भाँति वात्तानाप विचार विमर्ग तथा प्रेम गोक आदि की अनुभूति में ससज्ज दिखाया है। उनका अधिकांश कहानियाँ में समाज याय विधान परिस्थिति अथवा यस्तिविगप के प्रति तात्र यय एवं विद्रोह के भाव निहित रह हैं। गुड़िया ननकू लठत ताई जी आवारा हरीरा राजा मुन्ना याय सान की करघनी और कमीने कही के गीपक आख्यायिकाएँ इस दृष्टि से पठनीय हैं। यह उत्सखनीय है कि अधिकांश कथानक विषय ध्विष्य से सम्प्रेषित राचक एवं सुगठित हैं। लेखिका में जीवन के सामान्य क्षणों से भा सुन्दर एवं आकषक घटना बयन की क्षमता है और उन्हें सुव्यवस्थित रूप में कथा-बद्ध करने में भी उन्हें वाञ्छित सफलता प्राप्त हुई है।

विषय कहानियों में पाना के सहज एवं सजाव चरित्र अंकित किय गये हैं। या ता लेखिका ने प्राय विभिन्न वय और वय के पात्रों को अपनी कहानियों में स्थान दिया है किन्तु बान पाना के आगा निरागा उत्साह जावग स्पर्मा आदि परिस्थिति सापक्ष चरित्र चित्रण में विशेष सफल रही हैं। इसके अतिरिक्त नारी सुत्र में ईर्ष्या द्वेष स्नेह ममत्व वाचालता सत्तानीयता त्याग दम्भ आदि मनोभावों के अत्यन्त स्वाभाविक चित्र उद्धान अंकित किय हैं। अशिक्षित अथवा अधशिक्षित पुरुषों और नारियों की तदनुरूप भावनाओं के द्रुत नाटकीय एवं सजीव रूप लेखिका ने प्रस्तुत किय हैं कि उक्त कहानियों में विगप गीत्य का सचरण हुआ है। गिरार गुड़िया और कुर्ता टोपी गीपक कहानियों में मृग मृगा गुड़िया कुर्ता टोपी आदि अमानवीय प्राणियों अथवा पशुओं का मानवीकरण इतना मूल है कि उनमें पाठन का सहज ही साधारणीकरण हो जाता है। कथानक में मगर त्रिपाठी और उनका पत्नी बाना के चरित्रों के असम्य एवं अज्ञान रूपों का अनावरण करके अनिज्वात वय के प्रति व्यंग्य

पूण सकेत किये गए हैं। लेखिका न पात्रानुकूल, रोचक एवं सजीव कथोपकथन का सयाजन किया है। सवादो में सम्बद्ध पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है और भाषा भी वक्ता के स्तर के अनुकूल रह गई है। बाल पात्रों की उक्तियाँ मीठी छिगट (सिगरट), ऊपन (ऊपर)¹ आदि शब्दों अशिक्षित पात्रों के वाक्यों में लौडिया चुभे हैं, निकल है² आदि प्रयोग तथा फर्शपरस्त आधुनिक रंग में रंगे पात्रों के सवादों में थक यूँ लाला, कर्नेस लिवर, बेबी, हमबड आदि अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग इसका उदाहरण है।

प्रस्तुत कहानियों में मुख्य रूप से पारिवारिक वातावरण के चित्रण में लेखिका को विशेष सफलता मिली है। बच्चे के प्रति सामाजिक अत्याचार विमाता का सौतेली सत्ता के प्रति दुष्प्रवृत्ति पड़ोसी स्त्रियों की परस्पर ईर्ष्या पति द्वारा पत्नी के प्रति अनुचित व्यवहार आदि विभिन्न नैतिक समस्याओं के सहज चित्र प्रस्तुत कहानियों में अव्यक्त हुए हैं। कहीं कहीं लेखिका न समाज के लोगों की तुलना करके सामाजिक व्यवस्था के व्यंग्यपूर्ण चित्र प्रस्तुत किये हैं। ननकू लठठ, हरीरा, पायल तथा कमीने वही के गोपक कहानियाँ उक्त प्रसंग में पठनीय हैं। व्यक्ति समाज अथवा परिस्थिति के प्रति तीव्र व्यंग्य इन कहानियों का लक्ष्य है और लेखिका इस दृष्टि से विनायक सफल रही हैं। उनकी अधिकांश कहानियाँ में अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह की भावना निहित है।

टूटी चूड़ियाँ की कहानियाँ में सरन एवं सजीव भाषा का स्थान प्राप्त हुआ है। लेखिका ने श्रावणी घड़ो एवं वाक्यांशों का बहुलता से प्रयोग किया है। यथा— बकसिया, लौडिया भाग जइयो, छटिया डगर ठनुआ खटुलिया आदि। ठाकुर साहब की बाँछें खिल उठी ननकू के काटो तो खून नहीं आज सबरे ही सबरे क्या बरस पड़ी, 'नाला जी छोट से लगे हैं' आदि सरन एवं प्रसंगानुकूल मुहावरों³ के प्रयोग ने भाषा को अतिरिक्त सजीवता प्रदान की है। श्रीमती गर्मा की विशेषता यह है कि उन्होंने घटनाओं की सहजता, मनोविज्ञान की सजगता यथार्थता और भावानुकूल भाषा को अपनी कहानियों में अनिवार्य स्थान दिया है।

७ सुधा मालती डिंडा

मुन्नी मातली डिंडा ने एकान्त गायना और मधुप गोपक दो कहानी संग्रहों की रचना की है जिनमें प्रथम आठ (एकान्त साधना चूड़ोवाला हसीन स्वाद, भाई माइव, गडहर चित्रा चिरनिद्रा माँ) और ग्यारह (जीवन मधुप गो माइ अजुमन अमर

१ देखिए टूटी चूड़ियाँ, पृष्ठ ६

२ देखिए टूटी चूड़ियाँ, पृष्ठ ३४, १०८

४ देखिए टूटी चूड़ियाँ, पृष्ठ २८, ३२, ३३, ४५, ७१, ८१, ८२

५ देखिए टूटी चूड़ियाँ, पृष्ठ ४५, ४७, ५७, ६३

भावना अतप्त मरी दीदी दुख दः परवः वस वसोटी इन्वेवसन दःता) कहा नियाँ सन्तित है। विषयवस्तु की दृष्टि से न कहानियाँ को निम्नलिखित वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

(अ) राष्ट्रीय चेतना से युक्त कहानियाँ— एकांत साधना, जीवन सघर्ष अमर भावना और दुख दः गोपक कहानियाँ इस वर्ग के अंतर्गत गण्य हैं। इनमें भारत की स्वतंत्रता के लिए किए गए संघर्षों का जलन शान्तिकारी दः का संगठन पुलिस का दमन चः जादि की चर्चा की गई है।

(आ) ऐतिहासिक कहानियाँ— हसीन रवाब और अजुमन गोपक कहानियाँ इसी प्रकार की हैं। इनमें ऐतिहासिक पात्रों का आश्रय लेकर (मालिका और गजब, सिन्दूर और गजब की पुत्री अजुमन जादि) काल्पनिक चित्रों को चित्रित किया गया है।

(इ) सामाजिक कहानियाँ— नूतनीयता आई साहब चित्रा चिरनिद्रा खडहर मा दो भाई अतप्त मरी दीदी परवः बेबस वसोटी इन्वेवसन और दःता गोपक कहानियाँ मः प्रायः सामाजिक विषयों को स्थान प्राप्त हुआ है जिनमें से मुख्य ये हैं—भ्रातृ प्रेम अपत्य-स्नेह पति शरा पत्नी के प्रति अवायव्य आचरण विवाहिता का पर पश्य स प्रेम अथवा विवाहित पश्य का पर स्त्री के प्रति आकर्षण।

यद्यपि मानती डिडा की कहानियाँ का विषय-क्षेत्र सीमित है तथापि सरलता एवं रोचकता की दृष्टि से वः पठनीय हैं। डा हरिवंशराय बच्चन ने सघर्ष की भूमिका में लिखा है— उन्होंने पारिवारिक जीवन और आधुनिक समाज के तर नारी सम्बन्धों का उन्त पुलटकर देखा जाचा है। और इनमें निः भी वे यथाई की पात्र हैं। मानती की ने नारी हः की आकांक्षाया मानसिक शक्तियों एवं समस्याओं को विविध रूप से अंकित किया है। उनकी रचना में नारी का प्रयत्न रूप सर्वाधिक प्रबल रहा है—कतिपय कहानियों में यह प्रबलता दोष की सीमा तक पहुँच गई है। उदाहरणार्थ हसीन रवाब की नायिका नसीम अतप्त की नायिका अचना और परवस बेबस की नायिका छाया विवाहिता हाकर भी पर पश्य स प्रेम मध्यक स्थापित करती है। अचना और छाया तो इसी पात्रों में पतकर प्राण त्याग देती हैं कि उनका प्रमी उन्हें प्राप्त न हो सकते क्योंकि वे सघर्ष हैं। एकांत साधना का राधा अपने प्रमी की तृप्ति के लिए पृथ्वी की देश सेवा की ओर उन्मुख करती है। उन्त चित्रा का नायिका वासना के कुत्सित जल में अपने मात वस्तु तक का विस्मरण कर देती है। वर्तमान युग में उन्त प्रकार की पात्रों का अस्तित्व नः काल विरह अथवा अस्वाभाविक न हो माना जा सकता किंतु फिर भी साहित्य में ऐसे पात्रों एवं स्थानों की दृष्टि समाज के विरुद्ध अथवा अशिव है। इनमें अतिरिक्त यह उल्लेख कः सन्तुष्टि दः कोण का सूचक है कि उ होने नारी के

पुत्री भगिनी पत्नी, और सखि चरम मात रूप तक की अपेक्षा करके उमर प्रेयमी रूप को मायता दी है।

पुरुष पात्रा को आलोच्य लेखिका ने सहज रूप में प्रस्तुत किया है। उनमें मानवोचित श्रुतियाँ भी हैं और गुण भी। मेरी दीदी और इजेकान कनायक—जमना जगमोहन और सुरेश—अपनी पत्नियाँ के प्रति अयायपूर्ण आचरण करते हैं तो हसीन स्बाब का नादिराह और 'अतुष्ट' का कामस्वर ऐसे पात्र हैं जो अपनी पत्नियाँ सज्ज तम प्रेम करते हैं। चिरनिद्रा का कुमार दो भाई का भोपाल कमीने का विविन 'अजुमन' का सिकंदर, देवता का कमन आदि जनेश पात्र ऐसे हैं जिन्होंने उन्नत भावा का परिचय देकर अनुरूपणीय आत्मा प्रस्तुत किये हैं। राष्ट्रीय कहानियाँ में लेखिका ने ऐसे पात्र पात्राओं की सृष्टि की है जो देश भक्ति के लिये सर्वस्व अर्पण करके अपने को धन्य समझते हैं। उन्होंने पराधीन प्रणालियों के अतिरिक्त जनेश वणनारमक गली में भी चरित्र चित्रण किया है। उदाहरणार्थ एकांत साधना 'गीपक' कहानी में प्रारम्भ में राधा के व्यक्तित्व का वर्णन अवलम्बनीय है— सदा की गम्भीर राधा के चेहरे पर भीमी भीमी मुस्कराहट सदावहार की तरह खिली हो रहती थी। उसके माथे पर बल कभी भी बिम्बी ने न देखे थे। उसका मुँह मुस्कराता हुआ चहुरा एक न भूलनेवाली चीज थी। राधा का पति गजेंद्र कभी कभी साँचता—यह मातवी है या देवी? उसने जितना ही बार राधा को प्य की बातें पर डाँटा भी था अपनी ही गलती पर उस पुरा नारा भी कहा था पर राधा ने कभी विवादित न की कभी आँखें न उठाई। सोपा की निगाहों में उनका जीवन लक्ष्यहीन सा था। न पहिनुन का शोक न घूमन का और न ही अपनी मुँदरता का होश।^१

पात्रों के आन्तरिक भावा का वर्णन करने के लिए लेखिका ने प्रमत्तानुकूल रोचक वयोपरचयन की योजना की है। उदाहरणार्थ चूड़ावाला कहानी में बालिका तारा तथा चूड़ीवाल का यह सम्भाषण अत्यंत रोचनीय है—

बालिका न जय से दो पस निवानकर कहा— दो पछाल लो चूड़ीवान।

चूड़ीवाल ने गम्भीरता से कहा— जाभा भीतर स जोर न जाओ। अतमनी सी बालिका भीतर गई। चूड़ावान ने भीतर ही से बालिका की आवाज सुनी— जम्मा कहती हैं दा आता नोग?

चूड़ीवान ने कहा— नहा माड तीन आना ही न दा।

जम्मा कहती है दो आना नये, नही लो चूड़ा उठार ला। निराना नरे स्वयं में बालिका ने कहा। फिर अरुन मन में जोड़ा— नो पगा न नान चूड़ीवान।^१

आधुनिक नारी की शक्ति मान्यता प्राप्त करने के मन्वीव चिन्तन प्रकट करने

आलाच्य कहानियों का लक्ष्य रहा है। इसके लिए समकालीन दशकाल को दृष्टिगत में रखकर प्रायः समस्याओं के यथार्थ चित्र प्रस्तुत किये गए हैं। वर्तमान भारतीय नारियाँ पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर अपने चिरप्रथित आदर्श का विस्मरण करके पकित भाग का अनुसरण कर रही हैं। वे त्याग एवं जात्या कर्षण से भ्रष्ट होकर वासना के अस्थिर आकर्षण को सत्य मानकर भगिनी पत्नी माता आदि के पावन कर्तव्य का विस्मरण करके प्रयत्नी रूप पर बल दे रही हैं। श्रीमती जिन्ना ने नारी जीवन की यह समस्या तो प्रस्तुत की है किन्तु इसके समाधान के लिए उन्होंने कोई प्रयत्न नहीं किया। इस प्रसंग में बच्चन जी की यह उक्ति देखिए— आधुनिक समाज में नारी के सामने उपस्थित हानिवानी समस्याओं से वे खूब परिचित हैं। समस्याओं का हल ? आया है वह इस पुराने माननीय यति मैं कहूँ कि उसकी ओर उन्होंने ध्यान नहीं दिया। जहाँ दिया है वहाँ नवीन मान्यताओं का सामना करने में वह समर्थ नहीं है। पर समस्याओं को ठीक में रखना भी कम गणनीय नहीं। आज का सामाजिक जीवन जिन मानसिक परिस्थितियों को सामने लाता है उनकी माननीय जी ने देखा है जहाँ उन्होंने पुरानी मान्यताएँ रखी हैं व उनकी प्राण प्रतिष्ठा नहीं कर सका।^१ यहाँ यह उल्लेखनीय है कि नविका ने पारिवारिक कहानियाँ के अतिरिक्त अपनी राष्ट्रीय कहानियाँ में भारत की स्वतन्त्रता के लिये किये गये अहिंसात्मक एवं नातिकारी प्रयासों की वर्णना करके तत्कालीन स्थिति को प्रतिबिम्बित किया है।

विषय कहानियों में सरल एवं यावहारिक भाषा शैली का प्रयोग हुआ है। कुर्तनिषेध गिरफ्तारी सुपुत्र तकाजा जि । खूखार तबाही जादि व्यावहारिक उल्लूग^२ तथा हृदय हिन जाना बीडा उठाना तीर निगान पर बठना सिर चगाना^३ आदि मुहावरों के प्रयोगानुकूल प्रयोग ने भाषा में पर्याप्त सजीवता की वृद्धि की है। उनके वाक्य यथु एवं प्रभावानुष्ठाक हैं तथा शैली मध्यम वर्णनात्मक है। प्रमाणार्थ एक उदाहरण द्रष्टव्य है— ललिता कुमार के लिए पहली बहन मई कभी न सुननेवाली पहली। जब कभी कुमार उसे हसन की कोणिका करता तो वह अधिक विषित हो उठती। साकार चलत फिरत गम को खकर कुमार का हृदय रो उठता। एक दिन कुमार को सब कुछ असह्य मानूँ हुआ। वह कहने लगा ललिता एस कब तक काट सकोगी जिदगी ? ललिता ने अपनी पूना आँखों से कुमार की तरफ इस तरह देखा जैसे वह ऐसी बात कह रहा है जो वह समझ नहीं पाता।

माननीय जी का कहानियों के अनुशीलन से स्पष्ट है कि उनमें आधुनिक समाज भाषा में नारी की समस्याओं का यथार्थ स्वरूप अंकित किया गया है। किन्तु समस्याओं

१ सधष भूमिका पृष्ठ ४

२ दलिये सधष पृष्ठ १२ १३ ४ ४१ ६२ ६४ ६५

३ देखिये सधष पृष्ठ ७ १४ १३१ १३२

४ एकांत साधना पृष्ठ ४५

का समाधान देने के लिये लेखिका ने अपनी ओर से विशेष प्रयत्न नहीं किया जोर जहाँ किया भी है वहाँ नवीन मायताओं को न ला सकने के कारण वे सफल नहीं हुई। उनकी कहानियाँ का विषय-क्षेत्र परिमित है—घर और नारी का हृदय। तथापि प्रतिपाद्य को सरल और राचक रूप में प्रस्तुत करने में वे सफल हुई हैं।

८ श्रीमती राजकुमारी शिवपुरी

श्रीमती राजकुमारी द्वारा लिखित स्मृतियों की 'बाँधी' शीपक कहानी संग्रह में निम्नलिखित पाँच कहानियाँ संग्रहीत हैं—दा फूल हाता हीरा, उलूखत अवगण, कनक, राय लो कुत्र ममन्त नहा, भरने से पहन एक बारतुमसे अवश्य मिनूगी प्राचीन रोमान्स माये का टीका, हाय रे समाज साधना, पूजा के फूल, नया कहीं ऐसा न हो। ये कहानियाँ सामाजिक हैं और इनमें निम्नलिखित विषयों की अभिव्यक्ति हुई है—अमर्ष प्रेम, माँ की ममता धनिकों द्वारा निपना की उपेक्षा अछूतों के प्रति समाज की हृदयहानता बड़ा सास का भारस्वरूप मानकर बहुआ द्वारा उसका मृत्यु की कामना, गम्भीर प्रेम नारी की निष्ठुरता एवं सहृदयता विधवा के प्रति समाज के अन्याय विचार। कनक और माये का टीका शीपक अपवादस्वरूप कहानियों के अतिरिक्त उक्त सभी कहानियों में घटनाओं का विकास एवं परिणति प्रायः कथन रस में हुई है। अधिकांश कहानियाँ में प्रेम के असफल चित्र चित्रित हुए हैं। सामाजिक याथाया के कारण किसी भ्राति के कारण अथवा पुरुष वर्ग की निष्ठुरता के कारण नायक और नायिका का प्रेम चिर मिलन में परिणत नहीं हो पाता और अंत होता है नामक अथवा नायिका की मृत्यु में नया दोना की या किसी एक की वेदनातुरता का समाप्ति।

श्रीमती शिवपुरी ने भावुकता एवं कथना को रखा-मा से अपने कथा पात्रों का चरित्र निर्माण किया है। एक आधुनिक पात्रों के अतिरिक्त प्रायः सभी पात्र पानाएँ वास्तविकता की अपेक्षा भाव लोक में अधिक विचरण करत हैं। प्रायः परिस्थिति प्रतापित होने के कारण वेदना एवं निराशा ही उनका प्राप्य है आह्लाद एवं उत्पन्ना रुधिर उनका जीवन में अत्यन्त विरल रहे हैं। कतिपय पात्रों ने आत्मवांछिता का परिचय भी दिया है। उदाहरणार्थ अवगण में पकड़ समाज की उपेक्षा करके भी अछूत बालिका कायनी का भाइ का स्नेह देता है कनक में कनक कुत्सितहृदया निगा द्वारा सताये गए कवन का उद्धार करने में अपने प्राणा का बाजी लगा देता है। यह उत्पन्ननीय है कि पात्रों के व्यक्तित्व के अनुरूप उनके संवादों में भी भावुकता एवं वस्तुवाच्य निराशा का बाहुल्य रहा है। विचारणीय पात्रों की चर्चितियाँ में जीवन दर्शन विषयक तथ्यों की विनम्रपरक अभिव्यक्ति हुई है। उदाहरणस्वरूप हाय रे समाज शीपक कहानी में प्रमाण एवं 'सोचि के' कथोपकथन का यह अंग अवलोकनीय है—

कारण ?'

कारण । मुझमें कलक है ज्योति ।

कलक ? हूँ चाँद मैं भी कलक है प्रकाश । किन्तु चाँद मैं कलक हात हुआ था वह आकाश में रहता है चाँदनी निवानक होकर उबान होकर भी पृथ्वी पर बिछी रहती है ।

किन्तु मैं तुम्हें दुखी नहीं देख सकता ज्योति ।

प्रकाश ससार में आकर परपीडा से पीड़ित होना मानव का धर्म है अपने ही सुख में डूब रहना भी कोई जीवन है ।

किन्तु मैं तुम्हारा जीवन धूल में नहीं मिलाना चाहता ।

धूल में धूल में हीरे का जम होता है । प्रकाश धूल में ही मिलकर बीज बोधे का रूप धारण कर सुंदर सुंदर पुष्पा की सृष्टि से ससार को मुख कर आन्ध्र सागर में डूबा देता है । और एक दिन मानव भी धूल में मिल जाता है फिर । '

उक्त उद्धरण से यह भी प्रमाणित है कि पानों के कथोपकथन में प्रसंगानुक्रम उचित अधिनियम बाध्यकारी एवं तक का भी समावेश हुआ है । इन कहानियों में अधिकांश संवाद प्रायः ऐसे हैं कि जिनमें या तो जीवन दान के तथ्या का विवरण हुआ है अथवा पानों के भावसंकुल मनोवेगों की अभिव्यक्ति हुई है । फलतः सहज संवाद अत्यल्प है और इसी कारण प्रस्तुत कहानियों में प्रायः कृत्रिमता एवं नीरसता का प्रसार रहा है ।

राजकुमारी जी ने प्रायः रुढ़िप्राप्त समस्याओं का चित्रण किया है अर्थात् समाज की जातीय संकीर्णता, निधन, एवं अछूतों का निरादर विषयों के प्रति अनुभूति का प्रमिया के माग में बाधा आदि से आगे नहीं बढ़ी है । उनका लक्ष्य प्रायः करण अनुभूतियाँ का चित्रण रहा है । इसी लक्ष्य की प्रेरणा से उन्होंने जीवन के सुखी एवं सन्तुष्ट चित्रों को प्रायः ग्रहण नहीं किया । जीवन के प्रति यह अस्वस्थ एवं एकान्ती दृष्टिकोण विगल प्रसन्नता नहीं माना जा सकता । आखिर जब कथा साहित्य मानव जीवन का सच्चा चित्रण है तो जीवन के आह्लाद एवं उल्लास के प्रति लेखिका की यह विरक्ति क्या ?

आलोचक कहानियों में तत्सम-बहुता समस्त गतिवित्त गम्भीर एवं परिष्कृत भाषा गति को स्थान मिला है । जस जटिल एवं बाधित विषय है वसी हा गुह्य-गहन भाषा भी है किन्तु मानव भावसुश्रुता ही अभिव्यक्तता की उत्कृष्टता सिद्ध नहीं कर सकती । विनयपरायण एवं नीरस संवागों ने लेखिका की गति का और भी बाधित बना दिया है किन्तु सबत्र ऐसा नहीं है । सामान्य घटनाओं एवं पानों की गतिविधियों में यत्न तथा सारगर्भित संवादों ने निश्चय ही गति में सजीवता का मंचार किया है । भाषा एवं गतिगत गम्भीरता के अनुरूप अनवरत सृजित वाक्यों का भी समावेश हुआ है । यथा— नियति के चक्र के तपटे में जा जानवाले प्राणी के लिए ससार की समस्त

वस्तुएँ ममान हो जाती हैं चाहे वे कितनी भी अमूल्य क्यों न हों।^१ निष्कपस्वरूप साराण यह है कि सुश्री गिबपुरी को सफलता का उपलब्धि क लिए अभी बहुत माधना करनी होगी। करुण रस की एकागिता को लाँघकर उह जीवन का उसकी सम्पूर्णता में ग्रहण करना होगा। भाव एवं अभिव्यक्ति दोनों क्षेत्रों में गम्भीरता का ज्वन छोड़कर महजता के बरातन पर पद-यास करने में निश्चय ही वे सफलता की निशा में अग्रसर हो सकेंगी।

८ सुश्री तारा पोतदार

सुश्री तारा पोतदार ने रेखाएँ और बिन्दु क्षीपक कहानी-संग्रह की रचना की है जिसमें निम्नलिखित चौदह कहानियाँ को स्थान प्राप्त हुआ है—उसके पन नौकरा का राशन पतिगा किमकी पसंद, वह हालो ग्यारह साल कीन जाने फारेनजाइटिस कहानी मलमल का कुर्ता मानव और दानव उस दिन सरूप समपण। इन कहानियाँ का स्वरूप प्रायः बौद्धिक है और कथानक में प्रायः नगण्य अथवा विभ्रूलक्ष्य रूप में यक्त हुए हैं। घटनाओं के उस तारतम्य का जो कहानियाँ में रोचकता और सजीवता का आधार होता है आलोच्य कहानियाँ में प्रायः अभाव रहा है। अगिवाण कहानियाँ में या तो क्या भूत्रा के संकेत देखिये गए हैं अथवा मुख्य पात्र का मानसिक ऊहा पोह अथवा भावा का आवेग में कोई भूली जिसरी सम्बद्ध घटना दृष्टांत रूप में प्रस्तुत कर दी गई है। नौकरा का राशन ग्यारह साल मनमल का कुर्ता सरूप आदि कतिपय कहानियों में लेखिका क्रमबद्ध कथा-सूत्र प्रस्तुत करने में तनिक मायास रही ना ह तो धीरे धीरे में आवश्यकता से अधिक विषयान्तर की प्रवृत्ति ने कथानक को अव्यवस्थित सा बना दिया है।

पतिगा कीन जाने कहानी, मानव और दानव क्षीपक अपवादस्वरूप कहानियाँ में अतिरिक्त जय कहानियाँ एकपात्रीय हैं और वह पात्र में का रूप में व्यवन हुआ है। उस पात्र की चिंतनधारा का अस्त व्यस्त प्रवाह का हा इन कहानियाँ में अनिवार्य प्राप्त हुई है। चाहता उस जिसरा छिटका कथानक रह लें और चाहे उस उस पात्र का मानसिक ऊहापाह की ही मनाद। उस दिन और समपण क्षीपक कहा नियाँ में ता स्वयं चित्वा ही अपनी अनुभूतियाँ को लेकर मैं की शरीर में उपस्थित हुई है। जो ना ना प्रस्तुति यह है कि इन कहानियाँ में भावना की अपेक्षा विचारा का प्राधान्य है जिससे प्रायः कहानियाँ की सहज विपत्ताओं से बहुत दूर जा पनी है। वणन विनयण का धारा प्रवाह में लेखिका ने संवादों की भी याचना का है किन्तु उचित अनुपात में अनाव में ये संवाद उतन सफल नहीं हुए हैं। 'मनमल का कुर्ता उस दिन सरूप' समपण आदि कतिपय कहानियाँ में तो संवादा का नाम पर यत्र-तत्र एक पात्र

उक्तियाँ ही हैं जो उक्त कहानिया की वणनात्मक नीरमता को दूर करने में विशेष महत्त्व का सिद्ध नहीं हुई है। वस्तुतः इन कहानियों में गणना और वातावरण का प्रधान है। कहानी तथा मानव और गणना 'गीपक' आख्यायिकाएँ गद्य रूप में वातावरण प्रधान हैं। इनमें अथवा इति तक साम्प्रदायिक रचनाएँ एक धर्मा धरा प्ररित क्रूरता का चित्रण हुआ है। इस प्रकार अन्य कहानिया में भी वही मुख्य रूप में और कहीं प्रासंगिक रूप में दृश्यात्मक सम्बन्धी तथ्यों का उल्लेख हुआ है। यथा—

(अ) 'आजन्त माहित्य सेवा के नाम पर खलनमस्कुला यवमाय हो रहा है। मैं दोष भी नहीं देता। गलाम भारत में उदरपूर्ति का कोई भाग नहीं मिलने से यबिलांग हमें अपनाए तो हम उन्हें दोष ही क्या दें। फिर भरे समान तो लाखा बेकार पड़ रहे हैं।'

(आ) कहाँ ऊँच पूरे खूबमूरत घोड़े जिनकी तारीफ में तवारीख के पन्ने भर पड़े हैं और कहाँ यों उधर पर समय जो बदल गया है। इस समय आत्मिया को ही खाने को नहीं मिलता तो घोड़े की क्या विमात? सुना है एक समय था जब हमारे यहाँ के राजा महाराजा तो क्या मठ साहूकार भी हीरा जवाहारात बोरा में भरकर रखा करते थे। भगवान की माया कहीं धूप कहीं छाया।'

सुनी पोतदार ने कहानिया की रचना प्रायः सोई य की है। नीरमता का रागन और उसके पत्र में समसामयिक परिस्थितियों की अभिव्यक्ति प्रमुख लक्ष्य है और प्रतिभा तथा ग्यारह मान में जीवन गणना सम्बन्धी विनिष्ट दृष्टिकोण की स्थापना की गई है। वह हानी उस निमित्त तथा समरण में किसी वक्ष्य अथवा सरस अनुभूति का चित्रण है और जिस की पमत् तथा सरूप में व्यक्ति वचित्र की अभिव्यक्ति रही है। भाव पक्ष सम्बन्धी उक्त तथ्यों में भी अधिक उद्दिष्ट लक्ष्य जो आनन्द्य कहानियों में समान रूप से प्राप्त रहा है यह है कि लेखिका की दृष्टि गल्प विधान विषयक नूतन प्रयोगों की ओर रहा है। जहाँ तक भाषा का प्रश्न है इन कहानियों में सरल गणना का प्रयोग शान पर भी गणनाम्बर का प्रवृत्ति है। इससे गली में दुरहता एवं नीरसता का अन्त प्रसार को सज्ज ही नित किया जा सकता है। पाठक प्रायः इन कहानियों को उन्मुक्तता से पढ़ना नहीं चाहता क्योंकि गनी की कनिमता प्रायः भस्तिष्क पर बोझ बन कर छा जाती है। उमर्ति और समरण जमी कतिपय कहानिया तो भाषा गली की अस्पष्टता एवं विशृङ्खलता के कारण कहानी की अपेक्षा विशेष गनी में निवेद्य निवेद्य व अधिक निकट है।

१० सुनी सीता देवा

सुनी सीता देवी का आम्णी 'गीपक' कथा संग्रह में निम्नलिखित आठ कहानियाँ संग्रहीत हैं—पुनज में हाथी का दाँत पत्र का हृत्प पाप का मूल्य अपना पराया नि

का नूला सौतेला वेटा बिना टिकट की यात्रा। ये सब कहानियाँ सामाजिक हैं और इनमें निम्नलिखित विषयों का चित्रण हुआ है—सामाजिक सक्षीयता देश विभाजन के समय साम्प्रदायिक दंगे रक्तपात किया-हूठ किया चरित्र, विमाता का दुर्व्यवहार युवका की आत्मवादित। पाखण्डी समाज सुधारकों का व्यावहारिक छिछला रूप आदि। प्रायः सभी कहानियाँ में चरित्र चित्रण का प्राधान्य है। लेखिका के पात्र कल्पना लोक के अमृत प्राणी नहीं हैं, अपितु यथावत् जगत् के सरल एवं सहज व्यक्ति हैं। यदि वे आदर्श काय भी करत हैं तो भी मानवीय सम्भावनाओं की सीमाओं का अतिक्रमण नहीं करते। उदाहरणार्थ हाथी के दाँत का रामनाथ अपने घर उपदेश कुशल समाज सुधारक पिता को बारात नहीं नौटाने देता अपितु गुण्डा द्वारा सतायी हुई गम्भवती लीला का पाणिग्रहण करके हो रहा है। तिन का भूना की सुनीता अपने कुमार्गों मुख पति को सवनाश हान व पूर्व ही समाप्त लेती है। सौतेला वेटा का रामप्रकाश अपनी सौतेली माता से सब प्रकार का कष्ट एवं जयाय पात्र भी उनके शब्द की जादू से अत्येष्टि करता है। ऐसे पात्र समाज में दुर्लभ नहीं हैं। अहम जसे रंगे खियार रायबहादुर दीनानाथ जसे पर उपेक्षित विष्णुप्रिया जसी पाप प्रतिमाएँ सावित्री जसी सौतेली माताएँ भी समाज में सदा सुलभ हैं। तात्पर्य यह है कि लेखिका ने चरित्र चित्रण में मनोवैज्ञानिक सम्भावनाओं का सतत ध्यान रखा है। मानवोचित दुर्बलताएँ विवर्णताएँ एवं आत्म उन पात्रों में साकार हो गयी हैं। वस लेखिका ने पात्रों की प्रवृत्तियों का सूक्ष्म चित्रण किया है। उनका मनोभावों की गहराई में पठकर अन्तर्द्व द्व अवस्था परिस्थितियों को ठाँक का चित्रण का उद्देश्य प्रयत्न नहीं किया। परीक्षा चित्रण के अतिरिक्त उद्देश्य अनेक प्रत्यक्ष चरित्र चित्रण भी किया है। उदाहरणार्थ हाथी के दाँत शीघ्र कहानी के आरम्भ में द्रष्टा रायबहादुर दीनानाथ एवं उनके पुत्र रामनाथ की चारित्रिक विभिन्नताओं का सूक्ष्म पक्ष अनुच्छेदों में वर्णन किया गया है।^१

आलोच्य कहानियाँ में पात्र एवं स्थिति का अनुकूलता का ध्यान रखा हुआ है एवं सारगर्भित संवाद का आयोजन हुआ है जो चरित्रांकन के अतिरिक्त घटनाओं के तात्पर्य में भी योगदान रहे हैं। संवाद में यथाप्रसंग तकनीकता एवं उचित विषय का सुन्दर अन्त प्रसार रहा है। पात्रों में चित्रण के समावेश के लिए पात्रों की चर्चा का निरूपण भी उद्देश्य स्वाभाविक रूप में किया है। यथा—(अ) विष्णुप्रिया मसाला पीसत पीसते बोली ^२ (ज) मैं बड़ा साहस करके बोली। ^३ पात्र विविध एवं घटना विविध के अनुरूप सदा । में भी उक्ति विविध का स्थान दिया गया है। संवादों की भाषा प्रायः एकल है वचन पुनः कहानी में मूलमान पात्रों के मुख में बुद्धिमान पात्रों में अत्यन्त सामान्य उद्देश्य का व्यवहार कराया गया है।

मुन्नी सीता देवी की कहानियाँ में जिन सामाजिक प्रवृत्तियों का उल्लेख हुआ है वे सामकालिक हैं। बल्ल पुनज में भारत विभाजन के समय मानवान् साम्प्रदायिक दंगों की चर्चा इसका अपवाह है। हाथी के दाँत में समाज सुधार का काम भरनेवाला रंग सियारा एवं विना टिकट की यात्रा में सरकार की ओर से धुन भावपूर्ण बिना टिकट यात्रा करनेवाला पर गहरा व्यंग्य बिखर गया है। पुन का हृदय पाप का मूल्य जिन का भूना तथा सीतेला बेटा में ग्राहस्थ जीवन के विविध चित्र अंकित करत ए उल्लेख न स्वाय विवर्गता रूपट आदगावादिता आदि भिन्न विविधताओं में घिर गृहस्थ पात्रों का यथातथ्य चित्र अंकित करने का प्रयास किया है। पाप का मूल्य में वृद्ध विवाह की विडम्बना तथा त्रिपा चरित्र की विचित्रताओं की ओर भी इंगित किया गया है। वस्तुतः इस कथा सग्रह में लेखिका का लक्ष्य समाज धर्म एवं संस्कारों के अनुरूप पान वविध्य का चित्रण करना है।^१ इस दिशा में उन्होंने विना पापक दृष्टि का परिचय तो नहीं दिया फिर भी जिन पात्रों को उन्होंने अपनी कहानियों में स्वान दिया है उनके चरित्र के विभिन्न पक्षों के परिस्थिति सापक्ष उत्कर्षापक्ष में वे सफल रही हैं।

वाहणी की कहानियों की रचना यास गली में हुई है। यद्यपि मनम प्रचलित देशज तत्त्व एक विदेशी घाटा का पर्याप्त प्रयोग उल्लेख हुआ है तथापि भाषा का मुकाबल गढ़ाद्विदी की ओर अधिक रहा है। कन्नड पर लटकाय बठ हुए ये सीधे बात भी न करती थी।^२ आदि मुहावरों के व्यवहार से भाषा में विविधता प्राप्त हो सका है। पुनज में पाप का मूल्य तथा विना टिकट की यात्रा गोपक कहानियों की रचना आत्मकथन की शैली में हुई है तथा गैप गल्प अन्य पुरुष की शैली में प्रणीत हैं। शैली में सबल सजीवता एवं मार्मिकता के अतिरिक्त एक विना प्रवाह परिनिक्षित होता है। पाप का मूल्य कहानी सय पविनयाँ द्रष्ट य है—

सत्तापन वप की अवस्थावान प नक्षमीगकर मिथ जय अपना चौथा विवाह करक उनीस वप की विष्णुप्रिया की घर से आये तो न जाने क्यों अनायास ही मेरा हृदय स्पन्दित हो उठा। इस क्षेत्त सगमरमर सी विष्णुप्रिया का मैं एकटक देखता ही रह गया। एकहरा वपन मुनीन मुह श्वेत रंग आरक्त कपोल—जीर सत्तावन वप के बड़ जजर समाप्तप्राय सूत्री सा टांगावान तथा ऊँची धोती पहिने हुए सत्तावन वप नक्षमीगकर।^३ आक।

११ श्रीमती नमिता लुम्बा

श्रीमती नमिता लुम्बा के ज़िन्दगी के अनुभव गोपक कहानियों सग्रह में निम्नलिखित छोट्ट कहानियाँ सम्मिलित हैं—प्रतिमान ज़िन्दगी का अनुभव अपराजिता

१ देखिये वाहणी शीर्षक पृष्ठ ६

२ ३ ४ वाहणी पृष्ठ ३० ३३ २७

लेडीज कम्पाटमट, खूनी बाती बात कमल कुसुम, तद्रा उफान निराशा कवयित्री, बिसजन, सिविल साइन दिल्ली दूर है जनवरी की एक रात, मातहीना। इनमें मानव जीवन के मुल दुःख के विविधतापूर्ण चित्र अंकित किये गए हैं। अविवाह कहानियाँ में पुरुषों की भ्रमर वृत्ति उनके द्वारा प्रवर्तित नारियों की आत्म-पीड़ा पति अथवा प्रेमी की स्वायत्तता पत्नी अथवा प्रेमिका की विवाह कुठाँझ आदि को भूत रूप प्रदान किया गया है। इससे विपरीत 'खूनी' गीपक कहानी में श्रद्धा पुत्री उत्पला द्वारा ड्राइवर विनय से प्रेम करने और फिर एक धनी युवक से विवाह कर लेने का बणन करके नारी द्वारा पुरुष के प्रति प्रवचना की भी चर्चा की गई है। किन्तु विनय ने इस घटना को नारी की भाँति मौन भाव से न सहकर उदाला की हत्या करके चित्र का दूसरा पहलू प्रस्तुत किया है। अपराजिता लेडीज कम्पाटमट, कमल कुसुम, तद्रा सिविल साइन दिल्ली दूर है आदि कहानियाँ में नारी जीवन के विविध चित्रों के अतिरिक्त अछूत समस्या दलित वर्ग के अभाव और मातहीना वाणिज्य की व्यापकता का यथार्थवादी शक्ति में चित्रण हुआ है। इन कहानियों में कहीं मुखपूँज कहा करण और कहीं हास्य योग्यपूर्ण चित्र प्रस्तुत किये गए हैं।

श्रीमती नुम्बा न नारी-जीवन की विविधता का अंकन करके चरित्र चित्रण में एकरसता नहीं आने दी है। उनका उद्देश्य यह चित्रित करना है कि जहाँ नारी सहनशीलता और त्याग के बल पर पुरुष के विवासघात को भी सहन भाव से स्वीकार कर लेती है वहाँ पुरुष ऐसी ही परिस्थितियों का बदला नारी का शोषण करके लेता है। चित्रण का अनुभव और बीती-यात गीपक कहानियाँ खूनी गीपक कहानी से इस अर्थ में भिन्न हैं। डॉ० रामकुमार वर्मान श्रीमती नुम्बा की चरित्र चित्रण पत्नी के विषय में ठीक ही लिखा है— चरित्रों की रूपरेखा में लेखिका ने परिस्थिति और संस्कार का समन्वय करते हुए ममस्पर्शी स्वन उपस्थित किए हैं। प्रतिदान और लेडीज कम्पाटमट इसके उदाहरण हैं। अभी कभी पात्र के व्यक्तित्व की प्रत्येक रेखा स्पष्ट करने में कथा नए विस्तृत होकर बिखर गया है। कमल कुसुम कहानी देखी-देखी हो गई किन्तु ऐसा कम स्वतंत्रता पर हुआ है। श्रीमती नुम्बा न चरित्र चित्रण में मनोविज्ञान के निर्वाह की ओर भी उचित ध्यान दिया है। इसीलिए वे सामाजिक परिस्थितियों के प्रति व्यक्ति की अनुभूति और प्रतिबल प्रतिनिधियों का मार्मिक चित्रण कर सकी हैं। फिर भी उनका कहानियाँ में एक दोष को अवश्य स्वीकार करना होगा। उन्होंने नारी के प्रति सहानुभूति में प्रेरित हानर पुरुष पात्रों का चरित्र प्रायः एकांगी रूप में प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि उनका अधिकांश कहानियाँ में पुरुष को प्रभारक, विवासघातक हथियार तथा स्वार्थी प्राणी के रूप में चित्रित किया गया है।

श्रीमती नुम्बा न पात्रों के मनोभावों के आदान-प्रदान के लिए महत्त्व पात्रानु-

कूल एवं रोचक सवाली का विधान किया है। कमन कुमुम क्वयित्री, विमजन सिबिन लाइन जनवरी की रात और मातहीना गीपन कहानिया का प्रारम्भ कथोपकथन से हुआ है। उन्होंने सवाली को भाव और भाषा दोनों की दृष्टि से पात्रानु कूल रखा है फलतः पात्रों की उचितता में पर्याप्त सजीवता और राचरना विद्यमान है। उदाहरणार्थ दिल्ली दूर है कहानी में फुलिया और उसका पति चमरू का यह वार्त्तानाप देखिये—

‘वह कहती तम्ह क्या ? काहूँ को खामखा अपना पसीना प्लात हा ? क्या तुम्ह कोई राज मिन जायगा ? या हम एक दिन सिनेमा गिरना पाजोग ? यही ताव ख भूखे मरते है और तम लग हो काग्रस जीरा गाधी बाबा क नाम पर उछन कूट करन । हाँ नहीं तो ।’ और वह मह फुलाती हुई एक ओर जा बठती । चमरू हसता हुआ जाता और उस छत्रने गगता । अरी तू ता हमारा फहड़ हो रहगी । आज काग्रस की बात कौन नहा जानता ? काग्रस तो हम लोगन की पचायत है । देखती नहीं गाधी बाबा दिलना म हरिजना क बीच बठ रहत हैं ?—उनका राज होगा तो हम सबरा भाग फिर जायगा । फिर तम्हको ऐस याड हो रहना पडगा । देखना तुम्हे बगिया खिलाऊगा । बगिया पह नाऊगा ।’

जालोच्य कहानिया में वर्तमान समाज की निम्नलिखित समस्याओं का चित्रण हुआ है—(अ) विवाहित पुरुष द्वारा परनारी से प्रेम करके पत्नी और प्रेमिका दोनों से विश्वासपात करना अथवा बेव्यागमन भ्रष्टाचार आदि कुप्रवृत्तियों के कारण पत्नी की उपेक्षा करना (प्रतिदान निराशा क्वयित्री) (आ) धनी पुरुष अथवा स्त्री द्वारा निधन का प्रमोदन बनाकर मन बहाना और स्वावृत्ति के उपरान्त उसे दूध की मक्खी की भाँति निकाल फेंकना (खिन्दगी का अनुभव खूनी) (इ) जछूती तथा दलितों का समाज द्वारा तिरस्कार तथा उनके आर्थिक अभाव का चित्रण (कमन कुमुम दिल्ली दूर है) (ई) दहेज-समस्या के कारण कन्या को भार समझना (निराशा) आदि। श्रीमती नुम्बा ने दलित वर्ग के प्रति पाठकों की सहानुभूति जाग्रत करने के उद्देश्य को सम्मिलित रखत हुए जावन के विभिन्न पक्षों के स्थिति सापेक्ष चित्र प्रस्तुत किये हैं। उन्होंने धर्मिक वर्ग की भाँति नारी को भी गायित के रूप में स्वीकार किया है। पंजीपति धर्मिका पर अत्याचार करके उनके जीवन में अभाव का सृष्टि करते हैं और पुरुष पति अथवा प्रेमी के रूप में नारी की सन्वृत्तियाँ का अनुचित लाभ उठाते हैं। सप्रसंग में क्वयित्री गीपन कहानी में नवन की विचारधारा का निम्नलिखित अंग उद्धरणोप है— नारी के जन्म पर जा महान आत्मामुत्पादकता में पड़ी हुई है उस कौन जगाए ? उस इस सामाजिक गिर्यन्तता में मिथ्या बबसों को नाटक उठ खड होने में कौन सहायता करे ? पुरुष ? कभी नहीं । नरा बच्चा अपना नकसान क्या कर हाने दगा ? क्या कभी किसी पूजापति ने

अपन मजदूरा का उनकी असहायता मानने—हृदयमान का हक बताने की भाँति की है। 'यहाँ यह उल्लेखनाय है कि उन्होंने इन समस्याओं को व्यापकता गला में प्रस्तुत करने पर भी इनके मूल में मुश्किल की प्रेरणा व्यक्त रखी है।

श्रीमती नुम्बा का भाषा प्राज्ञ महावर्णर और प्रवाहपूर्ण है। उनकी गला में वषणात्मकता की अपेक्षा चित्रात्मकता की अधिक स्थान प्राप्त हुआ है। 'यदि समाज अथवा देश की कुल्लताओं का उल्लेख करते समय गला में व्यंग्य विद्रूप का तात्परता का भी स्वतः समावेश हो गया है। यथा— सध्या की 'की टूटने में क्या दिव्य नहीं हुई। भारत में सड़कियाँ की कोई कमी नहीं है। सौत है तो क्या हुआ? आदमी दुश्चरित्र है तो भी कोई बात नहीं। गाँदी के बाद खान पान के तो दो हाँ दगा। बाप माँ के कथ का तो बाँझ हुआ होगा। वे निश्चितता हो जाएँगे। कुमारी होने की बग़नामी तो मिट जायगी। फिर गरीब माँ-बाप को दहेज की सजा भान भुगतना पड़ेगी। मरघट के मुँ से तो ज़ुद्धा है।' निष्कपस्वरूप यह कहना उचित होगा कि श्रीमती नुम्बा की कहानियाँ में व्यापक रोचकता सजीवता एवं व्यंग्यात्मकता प्रायः सबत्र सुलभ है। वर्तमान सध्यों के ससग में मानव की भावनाओं विवर्गताओं एवं कुठाओं के चित्रण में उन्हें विषय सफलता मिली है। उन्होंने हृदय का सहज प्रेरणा से उत्साहित होकर कथा रचना की है, इसी कारण उनकी कहानियाँ में सबदना भाविकता सक्ति वक्रता आदि गुणों का सफल समावेश हुआ है।

१२ श्रीमती प्रकाशवती नारायण

श्रीमती प्रकाशवती ने दूरा प्रेम 'गीपक कथा-संग्रह' में निम्नलिखित ग्यारह कहानियाँ को स्थान दिया है—जब 'की लौटियो कुरूपों की माधना निवाल पाप की छाया अपन अपन देवता, गारवाँ नूया सावन का पयिक प्यास गाँव का घर दूरा प्रेम। इनमें से अधिकांश कहानियाँ में नारी जीवन की दुख-सुख, परिस्थितिजय विवर्गताओं एवं अन्तर्वेदना के समस्पर्शी चित्र अंकित किये गए हैं। 'जब देश की लौटियो के कथानक पर रश्मि और माहराव का कहानी की छाया स्पष्ट है। कुरूपों की साधना सामान्य कोटि की दार्शनिक कथा है। निवाल में अधिक खानवान नोकर को निकाल देने के विषय में गृहिणी कुरूपों के हृदय परिवर्तन की कथा अंकित है। पाप की छाया बग़ाल के दुग्ध से पीड़ित नारी की कथा है जिस तन बँचकर भोजन जुगाना होता था। एक दिन उसने पाप की छाया उल्टे पानि का त्याग देने का निश्चय किया किन्तु मातृत्व ने उसका हृदय परिवर्तन कर दिया। 'गारवाँ' में पशु हिंसा का विरोध किया गया है। दूरा प्रेम में पुण्य की प्रतिहिंसा तथा नारी की क्षमा, उद्दण्डिता आदि का

चित्रण हुआ है। इसी प्रकार लेखिका की अन्य कहानियाँ में भी विभिन्न पारिवारिक एवं सामाजिक स्थितियाँ चित्रित हैं। उन्होंने मनोविज्ञान का अध्ययन करके कथानक प्रायः सुखान्त रखे हैं और प्रायः सब कहानियाँ परिवर्तन की योजना का हैं। यह उल्लेखनीय है कि वे आकस्मिक हृदय परिवर्तन द्वारा चरित्रों और घटनाओं का अस्वाभाविक नहीं बनाती अपितु पृष्ठभूमि में मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों को स्थान देती हैं।

श्रीमती प्रकाशवती ने पुरुषों की अपला नारियाँ के चरित्रावली के प्रति अधिक आग्रह रखा है। दया उदारता क्षमा सहनशीलता सेवा आदि विगुणताएँ प्रायः सभी पात्रों में लक्षित की जा सकती हैं। निवास की कठिनाई तथा प्यास की दीपी यदि उक्त गुणों से कुछ कान के लिये रिकत हो गई तो इसमें लेखिका ने परिस्थितियों को ही दोषी ठहराया है और बाद में उक्त नायिका का हृदय परिष्कार द्वारा उन्हें पुनः नारी की उज्ज्वल गरिमा में युक्त कर दिया है। लेखिका नारी की दुर्बलताओं से भी परिचित है। गोरवा में चच्ची तथा गफर की माँ का पीर औरिया तथा माँ फूँक में अवबिश्वास इत्यादि उदाहरण हैं। पाप की छाया में मणि के स्नेहपूर्ण मातृत्व की सपना अभियन्ता की गई है। दूटा क्रम में गैलर श्यामा तथा रेखा के चरित्र का तुलनात्मक चित्रण अंकित करते हुए पुरुष की प्रतिगोचर भावना बटुता और स्वायत्तता तथा नारी की सहनशीलता क्षमा एवं कठिनाई का उल्लेख किया गया है। अपने-अपने देवता में मनु तथा कुकुम नामक भाग्य-विहिन की बान सुलभ उचितियों और प्रियाओं की अभिप्रेरणा वाला मनोविज्ञान के सबंध में अनुरूप है। सबाद योजना तथा घटना योजना के अतिरिक्त लेखिका ने मरण रूस पात्रों के मनोभावों के विश्लेषण द्वारा उनके चरित्र की विगुणताओं को स्पष्ट किया है। कुरुपा की साधना में पूर्णता का आत्मचिन्तन इस प्रसंग में अवगुणाय है।^१ प्यासा में स्नेह वत्सन सानू के पिता हृदय का मार्मिक अंकन हुआ है। लेखिका ने यथायथा आदर्श दोनों प्रकार के पात्रों की सृष्टि की है किन्तु स्वाभाविकता का उल्लेखन कहीं भी नहीं किया है। किन्तु पात्रों के मनोभाव विवरण पर बल होने के कारण इस संग्रह की कहानियों में सबाद की योजना गौण रूप में हुई है।

आलोच्य लेखिका ने अधिकांश कहानियाँ नारी समाज की समस्याओं पर विचार व्यक्त किये हैं। इस विषय में कुरुपा की साधना पाप की छाया भूखी तथा दूटा क्रम गौण कहानियाँ उल्लेखनीय हैं। कुरुपा का साधना में रूपहीन नारी की पुरुष समाज द्वारा उपेक्षा तथा नारी की उत्तम व बदनाम अंकन हुआ है। यथा— पुरुष कुरुप द्वारा नारी पर विजय पाता है पर नारी ? यवती है। निश्चित हो सत्य है। सुगीत हो तब भी पनाह नहीं जब तक कि प्यासी जा । को निदान का आकषण उत्तर पास नहीं है।^२ अन्य क्षण में भी पुरुष को नारी से अधिक सामाजिक मुक्ति प्राप्त है। पुरुष लाख पाप करके भी दूँ का घोसा रहता है किन्तु नारी के किसी एक पाप पर चाह वह

विविध परिस्थितियाँ का ही परिणाम रहा हा नमान तुरन्त उगली उठाता है। 'पाप की छाया कहानी' मन्त्री तबय की अभिव्यक्ति की गई है। नूतनी कहानी म अनाथ ब्राह्मण कथा यमुना का समझा क मूल म समाज की स्मृतिवादिता हा है— पाव भर सत्सू पचा माँगन पर भी मय की भवें तन जाती। बाहर समाज ! ब्राह्मण की लडकी हाने स कोई काम नही करवाए और काम क बिना खाना कौन दगा ? इन कहानियाँ क अनुगीतन स स्पष्ट है कि इनका मुख्य उद्देश्य नारी जीवन की दुबलताओं समस्याओं, विवशताओं तथा विपत्तियों का चित्रण करना रहा है। इसमें अतिरिक्त कुछ कहानियाँ म विशिष्ट उद्देश्य की भी अभिव्यक्ति हुई है। कुरूपता की साधना म यौवन तथा सौन्दर्य की नश्वरता गोरवा म पंगु हिंसा क प्रतिगामिता तथा गाँव का घर म ग्राम्य जीवन की सरलता एवं नागरिक जीवन की कृत्रिमता आदि उद्देश्य की व्यञ्जना की गई है।

धोमती प्रसादवती ने अपनी कहानियाँ म मुख्यतः तरसम गंगा का प्रयोग किया है किन्तु गारवा म जमीना सोहराव आदि मुसलमान पात्रों के हाने के कारण प्रायः उद्गमिधित हिंसा का व्यवहार किया गया है। गौजना धला, घटर घटर आदि दंगल गंगा का प्रयोग विधेयत उत्तरलनीय है। इस सनाटी रात म, तुम्ह हृदय नहीं है मैं साइबिल लाई है दबता की अतचक्षु तीव्र हो उठी आदि कतिपय अगुद्ध वाक्य व्याकरण सम्बन्धी अभावधाना क परिणाम हैं। वस इन कहानियों की शता बिनात्मक भावपूर्ण एवं प्रवाहपूर्ण है। जगन्नी की लोटिया की गली का भावुकता क अतिरक्त म गद्यकाव्य की लयात्मकता म युक्त हो गई है। यथा— काँची की वह मगहूर गली अपना विस्मृत को गला फाड़ फाड़कर धककर—जस चुप होने के अभिनय म तीन-सा जूँ नहीं दूँ तीन ठारा की छड़ छड़ धायल की चीख की तरह रह रहकर उठती और उस नीरसता म फलकर चुप हो जाती। भाव यह है कि लखिका की कथा शली प्रमाणानुसंग संगत तथा प्रभावपूर्ण है।

१३ मुन्नी लीला अवस्थी

मुन्नी लीला अवस्थी न उपयाम लखन क अतिरिक्त कहानी क क्षेत्र म भी प्रतिभा का परिचय दिया है। दूज क फूल उनका प्रथम कहानी संग्रह है। यद्यपि इसमें इस गोपक की वाइ कहानी नहीं है तथापि यह नाम इसलिए रखा गया है कि इन कहानियों की कहानी म भारतीय नारा का विवगता एवं मोड़ा का चित्रण है और दूज की तुच्छता का चित्रण म नगर नारी क लिए उम प्रकाश रूप माना गया है। प्रस्तुत संग्रह की समस्त

१ टूटा फल, पृष्ठ ६६

२ बतिए टूटा फल, पृष्ठ २६ ३५ ३५

३ टूटा फल, पृष्ठ ५, ५ १८, ४३

४ टूटा फल, पृष्ठ २

कहानियाँ पारिवारिक हैं। प्रतीक्षा ग से गधा और घ स घर कुमस्वार अतः व्यक्तित्व जादि और अतः प्रवाह और नीप बदना तथा बात की बात नीपक कहानिया म नारी के बालिका बहिन माता प्रयसी पत्नी नत्तनी जाति विविध रूप का परिस्थिति प्रताडित एव समस्याप्रधान चित्रण किया गया है। नयी आंधी और परिवर्तन गायक कहानियाँ गरणार्थी समस्या का उकर निखा गई है। बि दा का भया म रक्षा व न्नक दिन समुराल म गई हई बहिन बि ने की स्मृतिया स पीडित उमक भा मात्न की जाकुन भावनाका का चित्रण है। अत म बहिन की विवगताका का अनुमान करव माहन स्थय उसकी समुरान जाकर राखी बधवाने का निणय कर लता है। नयी आंधी तथा मै हू हवी कहानिया म कथानक का सत्त्व प्राय नगण्य है। इनम जीवन न अति सीमित अग की लकर अपूण परिणाम प्रस्तुत किये गए हैं। सामायत ललितका की सनी कटा निया—विगपत अन्तः हू मै हू कदी यक्तित्व जादि और अतः परिणय तथा स्वप्न —म गिबिल कथानक क दान होते है। जाति और अतः म परिस्थितिया क अभिगाप क चित्रण द्वारा निरहृत्य ही नजमा क जावन म कष्टा की अवतारण की गई है। श्रीपत मावननान अतुर्वेदी क गता म यह कहानियाँ खिचीना की तरह गुरू हाती हैं होना की बीती नई घटाका की मसास पदा करती हैं और पाठक का परिणाम पर पत्त चान क निण उला छोड देती हैं। हमारी समरूप मे यह चन कहानियो का गण नहा अपित दोष है।

सुनी नीला अवस्थी न भारतीय नारी के कष्टा का सूक्ष्मता स अध्ययन किया है थार सदनरुप नारी पात्रा का सट्टि का है। इस सयह की भूमिका म उहोने निपा है—

इसम ऐसी ही नारिया पात्रवनी हैं जिनम फूल पन नाममान का और दूब पन की ही गरमार ।^१ कोर प्रमी क दुयवहार स पीडित है तो कोड भाइ के किसी क माता पिता उसस उचित व्यवहार नहा करत तो ग स गधा और घ स घर की नायिका काकी अपन पुन हिम क अत्याचारा स यवित है। अतः की कम्पी प्रवाह और द्वीप की श्रृज बात की बात की मारा तथा स्वप्न की एत ही पीडित नारी चरित्र ह। यक्तित्व की चान अपन पटोसी रमेग तथा रजनीका त के अत्याचारो का गिकार जनता है ता बदना की कभन का बन्धामापी पति चमन उसक घर ससार म जाग लगाय रखता है। कामाहृत्या नारिया मन ही मन मुरती ह और सब कुछ सहन करती है नित वतिपय पात्राए विद्रोह की साकार प्रतिमाण नी हैं। यदि बीसवी गता की का पुष्प राम की भाति एकपत्नीव्रतवारी नहा रह सकता तो नारिया भी सीता की भाति निविराध पुरपा क अत्याचार महन नही कर सकती।^२ बन्ना की कमन अपन पति की

१ दूब क फूल पण्ड ग

२ दलिये दूब क फूल माप से पण्ड ल

३ दलिये दूब क फूल पण्ड १४८

चहेती बेइया को फसाकर पति को सुराह पर ल जाती है 'व्यक्तित्व की चट्टा धनलोभप प्रसिद्धि से अपनी रक्षा करना जानती है और अन्तर्द्वन्द्व की कम्पों तथा 'प्रवाह और नीप की शृङ्खला पुरुषों से घृणा करती है।

पुरुष पात्रों की अत्याचारी, ईर्ष्यानु गतानु धनलोभप जादि रूपा में चित्रित करके लिखिका ने उनके साथ बाध नहीं किया। बीसवाँ गता की नारी इतनी पिथी तथा घटी हुई नहा है जितना लिखिका ने उसे दिखाया है। 'कुम्हार म डाक्टर भाटिया अन्तर्द्वन्द्व में दिलीप 'परिवर्तन में हरमल स्वप्न में नरेग आदि कतिपय गुणवान पात्रों की सन्धि करके लिखिका ने किसी सीमा तक अपने लिखिकाण का जातीय पक्षपात से दूषित हान से बचा लिया है। नयी आँधी और मैं हूँ लूनी' में ब्यापक क साथ साथ चरित्र चित्रण के तत्त्व की भी उपयोग की गई है। गप कहानियाँ में लिखिका ने धननात्मक गली में अथवा पटना विवरण के माध्यम से पात्रों की चारित्रिक प्रवृत्तियों का अनावृत्त किया है। उदाहरणार्थ प्रवाह और द्वीप में शृङ्खला चरित्र चित्रण अब लीय है— 'शृङ्खला का बड़ी मोटी गली थी प्यारी गली थी। वस तो वह गरीब थी परन्तु गायद वह गरीब ही उसकी मिठाई है। वह चाह जिससे भी स्नेह करे पर तब ग्या ही कोई दूसरा उससे स्नेह करता वह बिगड़ पड़ती। मुहल्ले के सभी सन्ध के उसकी सन्धि में मिट्टी के प्रतीक थे उन सबके माँ गाय उस अपने मा-बाप के समान लगते। 'शृङ्खला और नजमा की वाञ्छित प्रवृत्तियों का चित्रण मनोवैज्ञानिक दृष्टि से रिया गया है। यह उल्लेखनीय है कि लिखिका ने अपने पात्रों का किसी उच्च धरातल पर प्रतिष्ठित नहीं किया। अपने व्यक्तिगत सुख-दुःख के दायरे में घिरे व समाज अथवा राष्ट्र के लिए कभी कुछ नहीं सोचते, करना तो दूर का बात है।

मुद्रा लीना अवश्यी ने कहानियाँ में सवाद-तत्त्व की याजना की ओर यथोचित ध्यान नहीं दिया है। धननात्मक गली के मध्य यन्त्र-तन्त्र जो सवायनात्मक उचितता प्रस्तुत की गई है उनमें आकार की लघुता के अनिश्चित अथ किसी उल्लेखनीय निष्पत्ती का जोड़ व्यर्थ होगी। यस्तुत उनकी कहानियों का महत्त्व इस बात में है कि वे दण्डान सापदा हैं। उन्होंने बाँसवा गता-ग की नारी को त्रिदोषी के रूप में प्रस्तुत किया है। व्यक्तित्व की चट्टा की भाँति उनमें समग जस पुरुषों की प्रवृत्तियों का भू-याजन करने की पूर्ण क्षमता है। अन्तर्द्वन्द्व तथा प्रवाह और द्वीप की नायिकाओं की भाँति वह विवाह करने का प्रण करने अपने पाँव पर स्वयं गढ़ी हो सकती है। बदना की कमान की भाँति वह पति के अत्याचारों का बदला लेकर उस सुराह पर ला सकती है। इस प्रसंग में समन की विनोदात्मक दृढ़ता उल्लेखनीय है— नारी बदना लगी। जसा बाई उसने साथ करणा वह भी बना ही करगी। आज बीमारी सगे का नारी प्रतिगोष चाहती है। अपने अब तक के त्याग और बलिदान का बदला चाहती है जिससे पुरुष ने उसकी

कमजोरिया और मजबूरिया बहकर उपहाम म उठा दिया। वह अब अपमान न सहेगी।^१ नयी जायी तथा परिवर्तन शीपक कहानिया म भारत विभाजन व परिणामस्वरूप उत्पन्न नगरणार्थी समस्या की चर्चा की गई है। कुसस्कार कहानी म अग्रजी सभ्यता से प्रभावित बनना तथा नया पर बहुत ही सजीव योग्य बिय गए हैं। यथा— जस ही बलब म घुसते है अपनी वासना की तृप्ति के लिए जो भी करना चाह बिलायती ग से कर सकत है। इस कामक मनावृत्ति पर गान चंगने व लिए ऊपर से कुछ पी भी गिया जाता है जिससे कि चेतन बुद्धि तनिक भी हा न न कर पाय और मन म जा भी इच्छा उत्पन्न हा वह गिना किसी बाहरी या भीतरी स्थावर के कर गुजरा जाय। परन्तु बिलायती गिप्टाचार व साथ यह लोग मन मे उद्दाम वासना लेकर जाते हैं और उह एक बिनायती ग म तप्त कर लते है। भला हो इन अग्रजा का जि होने हमार उच्च शिक्षित और सम्पन्न समाज को वासना की तृप्ति के लिए एक व फामूला क स्थान पर नये भूमि पर भूमा क प्रगाढ आसिगन से तृप्ति पाने की राह निखाई।^१

भारतीय नारी की विवर्णताया का परिस्थिति मापेक्ष चित्रण विवेक्ष्य नखिका की अधिका कहानियो का प्रमुख लक्ष्य रहा है। कतिपय कहानियो म उक्त उद्देश्य की अपेक्षा किसी अन्य लक्ष्य का भी दृष्टि म रखा गया है। उदाहरणार्थ बिन्दो का भया मे भाई बहिन के स्नेह की पावनता तथा गम्भीरता का चित्रण ही एकमात्र लक्ष्य है। नया आजी तथा परिवर्तन शीपक कहानिया भारत विभाजन व परिणामस्वरूप नगरणार्थी समस्या को लेकर प्रणीत की गई है। कुसस्कार म रूबी के चरित्राकन द्वारा यह अभिव्यक्त किया गया है कि अग्रजी सभ्यता ने भारतीय सस्कृति की पावनता मे विपघात दिया है। मैं हू रूबी तथा आदि जीर जगत म कोई उल्लेखनीय उद्देश्य नहीं है। नखिका ने मुरपत नारी जीवन की पारिवारिक समस्याओं का चित्रण किया है किन्तु विवाह से घणा करन जयथा पुरुषा से बदला देने के अतिरिक्त कोई अन्य उपयोगी सुझाव प्रस्तुत नहीं किया है। जी माखनान चतर्वेणी के गंगा म— यह कहानिया नारी समस्या पर ही अधिक बल देता है परिस्थितिया उत्पन्न करती है उनकी गम्भीरता से वातावरण बनाता है और सुनभाव व दरवाज पर आकर मौन रह जाती है।^३

नीना अवस्थी ने अपनी कहानिया म वात्सानाय की सामान्य क्षावनी का प्रयोग किया है इसी कारण उनम सहज बोधगम्यता के दान हान हैं। तत्सम एव तदभव गंगा की अप ग उहोन देगा एव विप्रेणी गंगा का प्रयोग बहुलता से किया है। उदाहरणार्थ नयी जायी कहानी की निम्नलिखित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं— सरयू बाबा के हाथ मगीन की तरह पराठ बनते जा रहे व और करारे करार सँककर घासी पर रखते

१ दूब क फूल पृष्ठ १४८

२ दूब क फूल पृष्ठ ४३

३ दूब क फूल पृष्ठ ४१

जा रह था। मगू पहाड़ी दौड़ दाढ़कर कभी पराठे कभी साग-सब्जी कभी चन्नी ग्राहका का पत्तल पर डालता जा रहा था। मगू का सरयू बाबा की चुप्पी पर जबरजस्ती गंहा था। नही तो बाबा की हाथ भर की खान भी मगू की तरह फुट्टी से चलती थी। कभी ग्राहको न बात करत और कभी मगू पर हुक्म चलात। ग्राहक भी मन लगाकर बाबा की बातें सुनते। 'अतः यह कहना अनुचित न होगा कि प्रस्तुत कहानियाँ में अनिष्टजना की अपेक्षा वातावरण के चित्रण और सोद्ध्यता पर अधिक बल दिया गया है।

१८ श्रीमती किरणकुमारी गुप्ता

डा० किरणकुमारी गुप्ता ने पुरस्कार जीपक कहानी संग्रह में निम्नलिखित नौ कहानियाँ का स्थान दिया है—पुरस्कार नारी प्रेम का बन्ना, उम पार अमर बन्ना रत्ना नाग्यचक्र बनिदान मिसरानी या चमारी। इनमें विवाह पूर्व प्रेम और दाम्पत्य प्रेम के मधुर जववा वरुण चित्र अंकित किये गए हैं। रानी प्रेम का बदला उम पार आदि अधिकांश कहानियाँ में लेखिका ने यह व्यक्त किया है कि वामना विवाहपश्चात् उम पार आदि भाव प्रेम के सौंदर्य को विलपित कर देत है किन्तु इन दुगुणों के लिए उन्होंने नारी के स्थान पर केवल पुरुष जाति का ही बोधी ठहराया है। नारी की कामायनी मनुष्य प्रेम में स्वयं का त्याग करके मत्स्य लाक में जाती है किन्तु मनु उसका मौ दय का उग नाग करके गन्धर्वस्था में उसकी उपजा करत है। 'प्रेम का बदला की रानी बदला-पत्री होकर भी श्रेष्ठ पुत्र विष्णु के माथे रहकर पत्नी के त्याग पर गौरव का परिचय देती है किन्तु विष्णु आर्थिक अभाव से तस्त होकर उस त्यागकर पित गृह लौटकर किसी अन्य कथा में विवाह कर लेता है। उम पार में चित्रवार चित्रक के प्रति नायिका कविता पावन प्रेम और चित्रक की उसकी प्रति अनुपित दृष्टि का चित्रण हुआ है। नाग्य चक्र का नायिका पत्न अपने प्रमी गोपाल के विवासपात का गिकार हानी है किन्तु बाद में मयोग से पुन प्रिय का एकनिष्ठ प्रेम प्राप्त करती है। मिसरानी या चमारी में बाल विधवा मिसरानी के प्रति उसके देवर बनवारी के कुभाव वासनापूर्ण हान पर उम निष्ठापूर्वक दुःखान और तब एक माँ की द्वारा उम अपने प्रमाश्रय में स्थान देने का चित्रण हुआ है।

उपरोक्त स्पष्टीकरण से यह तात्पर्य रहा है कि आचार्य लेखिका ने पुरुष जाति के साथ संबंध अग्रिम ही किया है। पुरस्कार रत्ना तथा बनिदान जीपक कहा निया में पुरुषों की सहृदयता प्रेम एवं त्याग के सुन्दर आदर्श प्रस्तुत किये गए हैं। पुरस्कार में राजकुमारी मनाता के प्रति राजकुमार जनक के निष्कलुष प्रेम का उत्कृष्ट हृदयस्पर्शी चित्रण हुआ है। रत्ना में गाम्वाभी पुत्रमीलन के पत्नी प्रेम की प्रेरणा से नैतिक प्रेम की राम भक्ति में परिणत करने का चित्रण हुआ है। बनिदान में प्रगल्भ और गुनगामी के प्रमोदगम का मामिक चित्र अंकित किया गया है। अमर बन्ना में

विरहिणी नायिका कवयित्री सुनयना की कवितायां व माध्यम से यह प्रकट किया गया है कि विरहावस्था में प्रणीत काव्य में मार्मिकता की चरम सीमा रहती है। जानो-न कहा नियम घटनाओं के आरोह-अवरोह को अत्यन्त सहज रूप में जायाजित किया गया है। घटनाएँ चरित्र के विकास में सहायक हैं और चरित्र घटनाओं का गतिशील बनाने में सक्षम रहें। 'रखिका' को क्यागत विभिन्न घटनाओं में तारतम्य एवं मार्मिकता के आयोजन में भी सफलता मिली है। उन्होंने नारी पात्रों की उच्च गुणों से विभूषित करत हुए उन्हें गहिरे भावों से निरूपित रखा है। उन्होंने पुरुषों की आदम और मयाय दोनों से प्रभावित दिखाया है। फिर भी अस्त-प्रवृत्तिवाचक पुरुषों की सख्ती अपेक्षाकृत अधिक है। कहना न होगा कि 'रखिका' को नारी जाति के प्रति विविध ध्यान है। निम्न पुरुषों के प्रति उक्त दृष्टिकोण निश्चय ही एकांगी है। उनके पुरुष पात्र यदि गौरवमय कार्य करत भी हैं तो नारी की प्रेरणा से ही ! उदाहरणार्थ बलिदान का बगल गुलाबी का प्रेरणा एवं जाना से प्रभावित होकर ही प्रेम मार्ग में गहिरा हुआ। रत्ना के तनवी पत्नी की प्रेरणा से ही जमर हुए— रत्ना के बिना रामचरितमानस की रचना न होती और भारत की जनता को उत्तम प्रेम तथा भक्ति का उपलब्ध न मिला होता। तलमी साधारण तनवी ही रहत वह महात्मा गोस्वामी तुलसीदास के नाम से विख्यात न हुए होता।^१ 'रखिका' में सम्पन्न एवं सारगर्भित कथोपकथन की योजना द्वारा पात्रों की भावनाओं का मजबूत अभिव्यक्ति प्राप्त की है। कथानक का विकसित करने के अतिरिक्त सवाल-पात्रों की चारित्रिक विपत्तियों का प्रकाशन में भी उपयोगी मिष्ट हुए हैं। उदाहरणार्थ रत्ना में तनवी के प्रति रत्ना की उक्तिया उनकी विवशता एवं दाग निशानों की परिचायिका हैं।^२ 'रखिका' में पानानुसृत सवाल-योजना द्वारा भी बड़ा निष्ठा में स्वाभाविकता का समावेश किया है। जमर रत्ना का मयाय और मिम रानी या चमारा गीतक कहानियाँ का प्रारम्भ सवाल-गानी में हुआ है जिससे क्या प्रारम्भ में नाटकीयता आ गई है।

आमती मप्ता में यन्त्र-न हिंदू समाज की कुप्रवृत्तियों का उल्लेख करत हुए दातावरण के सजीव चित्र प्रकट किए हैं। प्रेम का बलिदान गीतक कहानी में विष्णु के पिता ताराचरण के प्रति राधा की यह योग्याक्ति इसी प्रकार की है— एक वेश्या को पानी रूप में अपनाते में तम्हारी मयाय नष्ट होती है क्योंकि उस समय वह तम्हारी पूजा करती है तम्हें अपना देवता मानती है किंतु जब वही वेश्या प्रेम का दिखावा करती है तो तब कठपुतली की भाँति उसका हृदय पर नाचते हो।^३ इससे अतिरिक्त उन्होंने नारी जाति की उच्च मर्यादाओं का मार्मिक दृष्टिकोण की निस्तारता जानि का भी

१ पुरस्कार पृष्ठ ६४ ६५

२ बलिदान पुरस्कार पृष्ठ ६५ ६४

३ पुरस्कार पृष्ठ ३५ ३६

अनक स्थाना पर प्रकट किया है। नारी गीपक कहानी में उहाने स्वर्ग लोक का सुन्दर गरिमापूर्ण चित्र अंकित किया है और मनु एव कामायनी की पौराणिक कहानी का नूतन रूप में प्रस्तुत किया है। इन कहानिया का उद्देश्य है—भारतीय नारी का गौरवास्पद भावा का मूल्यांकन। नारी पुरुष की प्रेरणा गन्ति है उसका पद प्रद दिया है—कष्टा में भी मुस्करानेवाली पुरुष का अत्याचारा को बचपूवक महन करके उसका दुगुणा का भी सदगुणा का नाम दसर प्रकट करनेवाली भारतीय नारी निश्चय ही महान है। नारा जीवन के इन विविध रूपा का यक्त करने के अतिरिक्त लेखिका ने उमक मात रूप में गरिमा का भी चित्रण किया है। नारी की कामायनी मानस्य का बरदान पाकर मनु की निदमता का विस्मरण कर देती है। मिसरानी या चमारो की मिसरानी यदनामी में बचन के लिए अभस्य गिगु की हस्या करने को तयार नहीं होती। भाग्य चक्र की कमला जनकानक कष्ट सहकर भी गिगु के मुख के लिए सचष्ट रहती है।

श्रीमता विरणकुमारी ने प्रस्तुत कृति की भूमिका में लिखा है— 'नारी में मरे आत्मा प्रसात जी हैं। मैंने उनकी नकन करने का प्रयास तनिक भी नहा किया है। हाँ कामना अब यका ह। 'मम्भवत द्रमो कामना के फलस्वरूप उहान तममद्वुला भापा का प्रयोग किया है। पत्नी में सहजता और यावहारिस्ता लान का लिए उहाने मुद्रावरा और नाकोशितया का भी पयाप्त प्रयोग किया है। कतिपय म्यना पर उनकी पत्नी का वातमन भी हो गई है। यथा— ऊपान जब स्वर्ण धान में रानी भरकर बिखर दी तो पूर गिगा मस्करा उगा और गुलाबी की अतसाई आछा में अनुराग डा गया। 'उनका गनी में प्रसगानुकूल मरलता एव गाम्भीय विद्यमान है किन्तु कहा-कहा असाय धानता जन ध्यानरण विरुद्ध प्रयाग भी मिनत हैं।' निष्पयस्वरूप यह कहा जा सकता है कि श्रीमती गुप्ता प्रतिभा सम्पन्न कहानी-लेखिका हैं। प्रेम के सरस और मार्मिक चित्र अंकित करने में उह विगप सफरता मिनती है और उनकी भापा गत्ती भावानुकूल तथा प्रसाहपूर्ण है।

१५ कुमारी उपा सक्सना 'माधवी'

कुमारी उपा सक्सना ने गद्यराय की गनी में भावप्रधान गल्पा का प्रणयन करके हिता कहाना क्षेत्र में एक मौलिक कडा का सयोजन किया है। यहत वातन में उनका ग्यारह भायात्मक कहानियाँ मकनित हैं जिनमें गीपक मयाक्रम दस प्रकार हैं—

१ बलिपु पुरस्कार, पृष्ठ ५५, १००

२ पुरस्कार को गम्ब' से उद्धत

३ पुरस्कार, पृष्ठ ६४

४ पुरस्कार पृष्ठ ४१

स्वप्न वसत वष डाकू विजय की पराजय विद्युत् मन्त्र वासना का पुजारी मगई मगनमय योति और कल्पना स्वप्न सत्य । डा० धीरेन्द्र वमानन्त कहानिया का आनो चनात्मक परिचय देते हुए सयह व आरम्भ म किया है— प्रस्तुत कहानियाँ एक गिाप गला III निरती गई हैं जिनम कहानी-कथा तथा मयसाध्य गुणा का अनाग्रा मिश्रण है। फिर इन कहानियाँ अगो व मोटे कुछ सन्त भी छिपा हुआ है। नि सन्त ह तगिका म प्रतिभा है और शोभ्यता है।^१ आलोच्य कहानिया की विषय की दृष्टि से दा वर्गों म विनवत किया जा सकता ह—(अ) वे कहानियाँ जिनम घटना म एउ चरित्र चित्रण की उपक्षा की गई है और प्राकृतिक सत्या क मून म निहित जीवन दान का विनयण किया गया है (जा) व कहानिया जिनम पात्रा और घटनाओं को सहज मान वीय धरातल पर प्रस्तुत किया गया है। प्रथम बग की रचनाओं म स्वप्न वमन्त वष विजय की पराजय विद्युत् वासना का पुजारी और मगनमय योति गीपक कहानिया उत्सखनीय है। इनम मध विद्युत् मृगी पवत भीन वक्ष जाति प्राकृतिक पदार्थों की पात्र रूप म प्रतिष्ठा की गई है तथा प्रकृति क प्राणण म हानवाल नरियन आवतन विवतना को मानव जीवन क किसा तदनु रूप प्रतीक काय यापार व रूप म अथवा जीवन क किसी प्ररक तथ्य क रूप म अंकित किया गया है। डाकू सगाइ तथा कल्पना स्वप्न सत्य द्वितीय बग की कहानिया है। इनम कहानी एक पाठन क मध्य प्राकृतिक काय व्यापार का माध्यम नहा है। इन कहानिया म ममग डाकू व जीवन की हेतरूप विवगताओं और वाद की समस्याओं प्रम की विवाह म परिणति न होने पर मन क अनुताप एव दाम्पत्य प्रम की मबुर अनुभूतिया का सोद्ध्य चित्रण हुआ है।

बहते बादल की कहानिया म मानव पात्रा की अप ता प्राकृति पदार्थों की पात्रा व रूप म अवतारणा की गई है। मृग मृगी तितनी वष नीम का रक्ष गिनहरी कीजा पवत भीन विद्युत् तक्षन वसुंधरा पवन गुनाव च भान जाति प्रकृति तत्वा की लेखिका ने अपनी कहानिया म स्थान दकर उनकी मूक भावनाओं को मखर रूप प्रदान किया है। यद्यपि पुराण महाभारत गतपथ ब्राह्मण पवत व हितोपदेश आदि प्राचीन ग्रंथा म तदनुरूप पात्र चयन सबन उपन व है तथापि विवेच्य रचिना न इन पात्रा क प्राणा म जिस जाजस्वी एव प्ररक व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा की है वह वहाँ दुनन है। उगाहरणा व विजय की पराजय गीपक कहानी वद नीम व वक्ष का व्यक्तित्व उत्तख नीय है। जय उस यह तात होता है कि उस गीध्र ही काट लिया जाएगा तर एक गृष्ठ विचार व की भांति अपन जतीत क सुख दुःखमय जीवन का विनयण करता है आनय म निवास करनवान कोए तथा गिनहरी क विषय म चिन्तित होता है तथा अपन अन्न क विषय म विरक्त रूपि की भांति उपक्षा प्रकट करता है। इसी प्रकार नीन पवत मध जाति पात्रा म रचिका न मानववत र्घ्या रूप मव दम्भ जाति गिापतना का जत प्रसार

किया है। वय 'भगार्ड तथा 'बल्पना-स्वप्न सत्य शीपक कहानियाँ म मयक छवोली राजू याभिनी, राका, गापात्र, चितन वनमासा नीलू आदि मानव पात्रों का स्थान दिया गया है और कथानक के अनुरूप उनकी चारित्रिक विशेषताओं का परिस्थिति सापेक्ष चित्रण किया गया है।

आलोच्य लखिका ने प्राकृतिक उपकरणों का मानवीकरण करके उनके मध्य सजीव एवं मार्मिक आत्माओं की योजना की है। इन कथोपरचना में एक आर प्राकृतिक तत्त्वा का मूक भावों के

म मानव जीवन का सत्य मने सामाजिक कहानियाँ में भी सवादा को आदर्श की अभिव्यक्ति में महायक रखा है। वातावरण में चित्रण में भी उनकी दृष्टि मानव-ममान तक साक्षित नहीं रही है अपितु उन्होंने प्रकृति क्षेत्र की समस्याओं की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट किया है। आखटक द्वारा छल में मृग की हत्या वसंत का जागमन तथा गमन मानव द्वारा स्वायत्त वक्षा को काट देना भुलाव के काँटा से तितली का गराव विध जाना आदि ऐसे प्रसंग हैं जो इन कहानियों में सबत्र सुनभ हैं। जय समकारीन परिस्थितियों का चित्रण का प्रसंग में कल्पना स्वप्न सत्य शीपक कहाना में नीलू का उचितता में युवानुत्प परिवर्तनशील साहित्यिक मानदण्डों की चर्चा की गई है। यथा— आज का 'पवित्र कल्पना स्वप्न एवं आत्मा के पीछे सागना मूळता समझता है। वह यथाय चित्रण जर्वात् नग्नमय का ही दर्शन करना चाहता है।^१ लखिका को यथाय के दस पक्ष से सहानुभूति नहीं है अतः उन्होंने सामाजिक कहानियों में तो आदर्श को प्रस्तुत किया ही है प्रकृतिवरक कहानियों में भी आत्मा का मयेत प्रस्तुत करने पर ही उनका अधिक बल रहा है। डा० रामकुमार वमा का निम्नलिखित अभिमत में उनके इसी दृष्टिकोण को स्वीकृति मिली है— जीवन का अतः त राग की रत्ना में मनाभावों के जो आकषक रंग उपाते भर हैं वे कभी भूमिल न हागे एता मरा विस्वास है। इन कहानियों में प्रेम का आलाक है वासना की छाया नहीं। प्रकृति का अतमगत मानवीकरण में जीवन का सत्य गतमुखी बन गया है।^२

सुखी ग्या सक्मना की कहानियाँ में गुड साहित्यिक हिंदा का प्रयोग मिलता है। उनका भाषा परिष्कृत होते हुए भी सरल एवं सरस है। गणन गता में नाटकीयता एवं रागात्मकता का मिश्रण से अतिरिक्त प्रवाह जा गया है। भावुकता का आवग में उनकी गला प्रायः कथा गती की सीमा का स्पष्ट करती हुई गजका का रागात्मकता से आत्मस्थ स्थापित करती प्रतीत होती है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है— रात्रि का बारह बज गिरजापर ॥ बड़ी जोरा की घण्टा घनि का साथ साथ नव वय का स्थान एवं अनि

१ 'देसिए बहते बावस' पृष्ठ ८३

२ बहते बावस पृष्ठ ११६

३ बहते बावस भूमिका पृष्ठ ७

नन्दन हुआ। इसी समय मन्दिर में भी भगवान की आरती तथा जपना हुई जो मुझे नव वष की वन्दना ही प्रतीत हुई। प्रातः कालीन बाल अरुण की चञ्चल निरणो न ओस रूपी मुखताजा का उपहार नव वष को दिया। हरी हरी नम्यो दूर गुन्नाव कमल तथा विभिन्न पुष्पा ने नहरा सहाराकर नव वष की अभ्युदय की। जब मुझ पवन के आनन्दको न जगाया तो मैं अपने का पाया एक मवीन अल्हड़ मुठुमार करा म।

कतिपय स्थिति पर सखिया की अभि यचना प्रणामी में विचित दोनत्य का आभास होता है किन्तु इस प्रसंग बहुत कम है। प्राकृतिक उपकरणों के मानवीकरण तथा रागात्मक गीतों के प्रयोग की दृष्टि से यह कथा-संग्रह हिन्दी कहानियों के क्षेत्र में एक नूतन प्रयोग है और इस दृष्टि से इसका महत्त्व अस्मिन्दिग्ध है।

१५ सुश्री सत्यवती दवी 'भया'

सुश्री सत्यवती दवी के विचारी आगा और जीवन की पहलिया गीपक दो कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। 'नमः प्रम' नौ और दस कहानियाँ को स्थान प्राप्त हुआ है जो इस प्रकार हैं—

विचारी आगा—जीवन की साथ विचारी आगा माता का हृदय नत्तकी एक ही कसक सुख की छाज बनव और प्रेम, मानवता की पुकार दीपावली का भट।

जीवन की पहलिया—विजयी पीरप कमल पन दगदा की राह पर कतध्व १५ जीवन का अभिगाप जीवन का प्रेम भाग्यसिधि जुए का नगा घुघट ससार चक्र।

उपयुक्त कहानियाँ में विजयी पीरप दगास्तपरक काल्पनिक कथा है क्योंकि 'सम चन्द्र नगर' 'सूय नगर' 'मूय सिंह' 'त्रिभवन' आदि ऐतिहासिक स्थानों एवं व्यक्तियों का उल्लेख हुआ है। 'गप' कहानियाँ सामाजिक हैं और 'नमः सयोग' हृदय परिवर्तन तथा आत्मवादिता का विंगप रूप से स्थान दिया गया है। उदाहरणार्थ विचारी आगा में सध्या और रावेन पति पत्नी होने पर भी घटनाका अपरिचित रूप में पथक रहते हैं परस्पर प्रेम करने लगते हैं और कथागत मरहस्योद्घाटा होने पर एक दूसरे को स्वीकार कर लेते हैं। 'सी' प्रकार भाग्य सिधि में भाग्यवता डाक्टर चन्द्रभूषण के पत्नी तथा पुत्री से विलग होने तथा उसी चक्र से सयागवग पुनः मिल जाने की कथा अंकित है। मानवता की पकार और जीवन की साथ में भी इसी प्रकार सयोग का विंगप महत्त्व रहा है। माता का हृदय नत्तकी बनव और प्रेम दीपावली की भट जुए का नगा और घघट गीपक कहानियाँ में पात्रों के हृदय परिवर्तन द्वारा घटनाका को मुखा त रखा गया है। जीवन का प्रेम तथा एक ही कसक में पात्रों की आत्मवादिता को उभारकर सुखान्त कथानक के उक्त नय की पूर्ति की गई है। कहने का तात्पर्य यह है कि इन कहानियाँ में सयाग जावस्मिकता एवं हृदय परिवर्तन की सहायता से कथानकों को मुखा त की ओर

प्रति किया गया है, जिससे कही-कहा कथानक के सहज विकास में बाधा पहुँची है। जीवन का अभिग्राह और सुख की खोज में नायिकाओं की मृत्यु हो जाने में कथानक दुबला-पतला हो गया है। कमल पत्र तथा देखुदा की राह पर गीपक कहानियाँ में भारतवासियों द्वारा स्वतंत्रता के लिए किये गए नातिकारी प्रयत्न की भूलक दिखाई गई है। उक्त दोनों कहानियाँ कथानक की दृष्टि से किंचित शिथिल रही हैं। हम विवेचन में स्पष्ट है कि इन कहानियों में किसी निश्चित लक्ष्य को लेकर घटनाओं की योजना की गई है। जीवन एवं समाज की विविध समस्याओं का अंकन करके लेखिका ने अनेक आदर्शवादी समाधान भी प्रस्तुत किये हैं। कतिपय कहानियों में घटनाओं का संयोजन भौतिकीय घटित के दशन होते है। फिर भी, मानव-जीवन एवं समाज के कया चिन अपने में रोचक एवं शिक्षाप्रद है।

आलाप्य कहानियों में मुख्य पात्रों के चरित्रों को प्रायः आदर्श रूप में चित्रित किया गया है। युवकों के चरित्र में मानसिक दृढ़ता का विषय अन्तः प्रसार रहा है। कूर काल की कठिन परिस्थितियों में भी वे अपने सिद्धांतों पर अटल रहते हैं। विजयी पौरुष में युवराज त्रिभुवन कमल पत्र में मधुकर देखुदा की राह पर में नातिकारी दल का नेता चंद्रकेत कृतव्य पथ में मुधागु जीवन का अभिग्राह में मुगील जीवन का प्रश्न में सुधीर एवं योगी घूषट में गौर जीवन की माय में रमाल नत्तकी में करणद्र बभ्रव और प्रम में विशोर मानवता की पुकार में ममर और मीप एस ही आत्मा पात्र है। चिन आत्माओं के पालन में वे कटिबद्ध हात हैं उहपूण करत हैं माता पिता समाज अथवा परिस्थितियों को स्वतः उनके आगे परामूल होना पड़ता है। नारी पात्रों को लेखिका ने प्रायः भारतीय संस्कृति के अनुरूप सौम्य रूप में प्रस्तुत किया है। उनमें पति परायणता, सहनशीलता धर्मशीलता आदि विषयों पर अधिक है। विजयी पौरुष की बलना कमल पत्र की निगा एवं 'कृत यन्त्र' की सुधा की नाति साहस एवं गीप की पुतलियों भी इन कहानियों में हैं किन्तु अधिकांश पात्रों पर प्रायः परिस्थिति प्रताडित रही है। लेखिका ने वणनात्मक गली में प्रत्यक्ष चरित्र चित्रण प्रायः नहीं किया किन्तु परिस्थितियों के सन्तर्भ में पात्रों की क्रिया-कलाप तथा उनकी युक्तियों द्वारा ही उनकी विशिष्टताओं को प्रकट किया गया है। कथानकों को नाटकीय मोड़ प्रदान करने और पात्रों की चारित्रिक प्रकृतियों को स्पष्ट करने के लिए इन कहानियों में संक्षिप्त एवं नाटकीय संयोजन का विधान किया गया है। परिस्थितियों एवं वक्ता की मन स्थिति के अनुसंधान में तत्पराता में वक्ता राय धूणा, उक्ति वचित्र, नायिका आदि का भी समावेश हुआ है। संवादा का भाषा को भी लेखिका ने प्रायः पत्रानुसूल रखा है। उदाहरणार्थ 'आदर्श' का प्रश्न में साबिर की पत्नी की उल्लेखना गीपसी द्रष्टव्य है— वहन पदराओ नहीं, अगर सुदा की मजूर हुआ तो मैं तुम्हारे भादरे बदन जरूर नेज दूंगी पर तुम सोच तो तुम्हारा मजहब तुम्हें बचल करेगा ? अगर तुम कहो तो मरा नाई

वहीद अभी बिन याहा है निकाह पदा दू ।^१

आलोच्य कहानियाँ म द्वाकास का रुढ़ि प्राप्त निरूपण किया गया है। ३ मन-पत्र दे सुदा की राह पर तथा जीवन का अभिगाथ गाथक कहानियाँ म स्वतन्त्रता के पूर्व भारत की राष्ट्रीय स्थिति का चित्रण है—नेताजी का कारावद्ध होना अहिंसात्मक आन्दोलन प्रातिकारी दल के प्रयास पुलिस का दमन चक्र स्वतन्त्रता की घोषणा आदि घटनाएँ इन कहानियाँ म प्रसंगानुसार उल्लिखित हैं। जीवन का प्रश्न म गरणार्थी क्याओ की निराश्रयिता एवं सम्बन्धियों द्वारा अस्वीकार करने की समस्या का चित्रण हुआ है। अन्य कहानियों म समाज की समुचित मनोवृत्ति अवलम्बी पर अत्याचार दहज प्रथा विधवा विवाह निषेध आदि कुप्रथाओं का चित्रण हुआ है। नतकी की तिरातमा मरत समय कहती है— समाज को खबकी ने पीमकर मुक्त नतकी रूप म गदा है।^२ इसी प्रकार मानवता की पुकार म महीष की यह उक्ति द्रष्टव्य है— तो फिर वह समाज रसातल म जाय जा एक मती स्त्री को कुसटा कहकर घर से निकलवा सकता है। एक निर्दोष परित्यक्ता बाना को ठुकरा सकता है।^३ इन उक्तियों से स्पष्ट है कि ललितार्थ का स्वर प्रातिमूलक तथा रुढ़ि विरोधी है। अन्य कथा पथ की मजु सौरभ स कहती है— समाज हमारा बलिदान चाहता है तो फिर बलिदान ही हा। पर उसकी मोह निद्रा तो खुल समाज की दष्टि म हमारे स्निही नहीं होता मानो हम मिट्टी की पुतली ही हैं। सुख-दुःख से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं तो फिर वह हमारे सामने स्वयं ही जादू रखता क्या नहा। चार चोरी करके दूसरे को चोरी न करने का उपपन्न दे तो कितना हास्यास्पद होगा। जिस समाज म भ्रूण हत्याएँ बान बद्ध विवाह बहु विवाह आदि हो जहाँ विधवा पुनी जीर पुनवधु क रहने बूढ़ बाबा बर बन जान हैं उस समाज को क्या अधिकार है हम बान विधवाओं का हृदय मसलन का।

आलोच्य कहानियाँ का उदय समाज सुधार है। स्तर लिए ललितार्थ ने नवयवका की आदत एवं प्राति की प्रेरणा दी है। कटु स कटु परिस्थितियाँ म भी यदि यवक अपने निश्चय पर दृढ़ रह और नवयवतियाँ परो मत उनका साथ दे तो सहज ही कुरीतियों का उन्मूलन हो सकता है। कथा पथ म सौरभ द्वारा मजु क प्रति पदित य विचार उद्घरणीय हैं— तम तो यह भी नहा जानती कि कब तम्हारा विवाह हुआ और कब विधवा हुई फिर भी तम्हारे दूसरे विवाह की सम्मति समाज नहा देगा तब आवश्यकता है हम प्राति बरन की समाज को बता देने की कि समय पनट चुका है अब बाबा आत्म य जमाने की रीति निबन सकेगी।^४ इसी प्रसंग म जीवन का प्रश्न कहानी स प्रम-.

१ जीवन की पहलियाँ पृष्ठ ८२

२ बिलरी आगा पृष्ठ ५६

३ बिलरी आगा पृष्ठ ११३

४ ५ जीवन की पहलियाँ पृष्ठ ६१ ६२ ६२

सुधीर एव योग्य की ये उक्तियाँ द्रष्ट्य हैं—

(अ) 'नवयुवका परदा का भविष्य अवलम्बित है उन्हें दब होना चाहिए।'

(आ) "प्रत्येक युवक का कर्तव्य है कि वह सिद्धा तवादी तथा दब निश्चयी हो।"

भारतीय नारी का गौरव-मान आलोच्य कहानिया का द्वितीय प्रमुख उद्देश्य है। नस्तकी म तिलोत्तमा टीपावली की भेंट म पूर्णिमा जादि स्त्री चरित्र इसके प्रमाण है। 'जीवन की साथ म सतिका के पिता माधव बाबू की यह उक्ति कितनी गौरवपण है— ठीक है तब मैंने यह नहीं सोचा था कि गंगा शिव के ही मस्तक पर ठहरती है। सती हि दू नारी पति क सिवा दूसरे की पूजा नहीं कर सकती। सोचा था तुम्हारी शिक्षा स वन सस्कार मट दया। किंतु नहीं अब समझा भारत की नारी का गौरव कतना ऊँचा गया है।'

आलाच्य कहानिया की भाषा सरल और लघुवाक्यगमित होने के साथ साथ मुहावरण भी है। एक मछली सारे तालाव को गन्ता करती है, वह आम्तीन का साप आपको ही डसने को तयार है उनका बान भी बाँका न होगा जाखा देखी मछली निगनन वाली नहीं सेठ गणेशनाल कच्ची गोटी नहीं खेले ये आदि उक्तियाँ ऐसी ही हैं। लम्बिका ने वणनात्मक एव नाटकीय शैली के मिश्रण द्वारा कहानिया म रोचकता का सुंदर समाहार किया है। सवाद की भाषा भावपूर्ण एव रोचक है तथा शैलीगत प्रवाह पर विशेष ध्यान दिया गया है। निष्कपम्बरूप यह कहा जा सकता है कि यद्यपि श्रीमती मर्यवती देवी की कहानिया म समस्या चिन्तन अथवा युगीन चेतना की उपेक्षा के कारण मना चानािक सौंदर्य का अभाव है, तथापि भावपूर्ण आदर्शोन्मुख कथानका की सृष्टि म वे सिद्धहस्त हैं। असन् पानो के चरित्रा का सत् म परिमाणन करके उन्होंने अपनी उदारता एव महानुभूति का परिचय दिया है।

१७ सुथ्री पुष्पा भारती

सुथ्री भारती न किनारा के बीच और विधाता क निर्माता 'गीपक उप'वास के अतिरिक्त 'मरियम म अपनी तेरह कहानिया का संग्रह किया है। इनका क्रम इस प्रकार है—वस्ती का कारीगर रहस्य भूल युग स्रष्टा बदना मरियम जायुनिका या पहिल ईश्वर क जाय मधु चनी गई, समस्या का अंत, एक रात एक दिन गंगा समाधान। इसम परिचितिज म वयविकर कुठा जाय निरागा, हास्य चिन्ता इत्या

१२ जीवन की पहलियाँ, पृष्ठ ६०, ६१

३ बिलरी घागा, पृष्ठ १४

४ बतिए (अ) बिलरी घागा, पृष्ठ १५, १७ ४६, (आ) 'जीवन की पहलियाँ, पृष्ठ ६२ ११३

द्वेष अनुराग विराग भावकता नीरसता आदि का विविध म दर्भा म चित्रण हुआ है। वस्ती का कारीगर रहस्य बदली मरियम, दो पहिये और समस्या का अन्त इस सग्रह की श्रेष्ठ रचनाएँ हैं। यद्यपि इ ह भी उच्च काटि की कहानियाँ नहीं कहा जा सकता तथापि नम त्रेविका व उद्दिष्ट मून भाव स पाठक का तात्पर्य हो जाता है और इसी दृष्टि से अ य कहानियाँ की तनना म इनका महत्त्व अप्रामाण्य अस्ति है। इसक विपरीत युग स्रष्टा और एक रात एक दिन गापक कहानियाँ प्राय निरुद्ध हैं तथा अन्य कहानियाँ भी कहानी कथा की दृष्टि म विषय प्रभावशाली नग बन पनी हैं। त्रिविका म अधिकांश कहानियाँ म पारिवारिक जीवन क मुख-प्रथम चित्रा का स्थान लिया है बदली 'आधुनिक' कथा-समाधान और स्वरक आम गापक कहानियाँ इसी प्रकार की ह। वस्ती का कारीगर म कारीगर जमना क जीवन क उतार चढ़ाव क माध्यम मे छत्र कपट एव धन तिप्सा को जम दनवान नागरिक जीवन की तुलना म सरलता साप्ती सत्ताप और निधनता म यक्त ग्राम्य जीवन की उत्कृष्टता मित्र की गई है। रहस्य म मित्र के प्रति विश्वासघात को दण्णीय अवगुण मानकर राक्षस कथानक की सृष्टि की गई है। मून तथा समस्या का अन्त म विधवा जीवन की नारसता एव यत्रणाजो का चित्रण करत हुए ननका समाधान पुनर्विवाह म माना गया है। मरियम दो पहिये और मधु चली गई म क्रम ससय भाव दाम्पत्य प्रेम और प्रमी प्रमिका व अनुराग की जागामूनक चर्चा की गई है।

पुष्पा भारती की कहानियाँ म एक और एस पान हैं जो परिस्थितियाँ व घात प्रतिघात से प्रभावित होते-ए कथा विकास म योग दत हैं और दूसरी ओर उन पाना को प्रस्तुत किया गया है जो विपरीत परिस्थितियाँ म नी चारित्रिक दृढ़ता का परिचय दत हैं और पाठक की महानुभूति अथवा श्रद्धा को सहज ही पा दत हैं। वस्ती का कारीगर म पति का स वा हित चाहनवानी सुहाग्री भूत म विधवा दय्यानी को दुःखापूर्वक अपनावनेवाला नायक कुमार मरियम म सस्य स्नेह का आदग प्रस्तुत करन वाली रोज और मरियम तथा समस्या का अन्त म विधवा भाभी का अपनाकर उक्त सुखा बनानेवाला जागेर एस ही पान हैं जिन पर समाजका गव हा सकता है। त्रिविका म चरित्र निरूपण व त्रिए मरुयत कथोपकथन का आश्रय लिया है तथा वस्ती का कारीगर युग-श्रेष्ठ वस्ती मरियम, आधुनिक आदि अनेक कहानियाँ का प्रारम्भ वात्तावप स हा किया है। य मवात् चरित्र व अतिरिक्त प्राय दगावान की अभिनयक्ति म भी सहायक रह है। आधुनिक म प्राचीन और आधुनिक का प्रारम्भिक दाप सवात् एगी प्रकार का है।

मरियम म सन्नित कहानियाँ म दगावान सम्बन्धी निम्नलिखित समस्याओं का स्थान लिया गया है — (अ) नगर और ग्रामा की जीवनधारा का तननात्मक अ-उता

(जा) विधवा के सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन की मन्त्रणाएँ (इ) नारी द्वारा प्राचीन और नवीन सस्कृतियाँ में समन्वय स्थापना की आवश्यकता। इन समस्याओं के लिए लखिका ने जो समाधान प्रस्तुत किये हैं उनमें उद्देश्य की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति के स्थान पर व्यञ्जना का आश्रय प्रमुख रहा है। उन्होंने नागरिक जीवन के कष्ट कदममय रूप की अपेक्षा ग्राम्य जीवन की सरलता को अधिक महत्त्व दिया है विधवा के पुनर्विवाह का समाज के लिए मंगलकारी माना है तथा नारी आदर्शों में सनता पति की अधभक्ति का समन्वय किया है और न ही अहवादी विद्रोहिणी नारी का। उनकी दृष्टि प्राचीन एवं नवीन के समन्वय पर केन्द्रित रही है। अतः प्रस्तुत कृति के कलाक्षेत्र पर विचार कर लेना भी उपयुक्त होगा। अपने उपन्यासों की भाँति उन्होंने कहानियाँ भी मावहारिक भाषा का अपनाया है जिससे उनकी अभिव्यञ्जना गली सबन सरल स्पष्ट रही है। फिर भी, लखिका के कलकत्ता निवासिनी होने के कारण स्थानीय प्रभाव के फलस्वरूप भाषा में जनक त्रुटियाँ हैं, जो सवयाचित्य हैं। यथा—(अ) तुम्हारी सफर कसी रही, (जा) मुझ मरियम से मुलाकात न हो सकी (इ) तुम्हारी चाल चलन अच्छी नजर नहीं आती। 'ग'दा वाक्यान्ता अथवा वाक्यान्त में इस प्रकार की अशुद्धियाँ बहुत अधिक न हान पर भी कथा ग्राहक में बाधक सिद्ध हुई हैं। फिर भी यह स्वाकार करना हागा कि उनमें कहानी लेखन की प्रतिभा है और कल्पित कहानियाँ में वे जहाँ तक सगर्व रूप में हमारे सामने आई हैं।

१८ श्रीमती राधिका जोहरी

इन्होंने पलकें गीपक कहानी संग्रह में बारह लघुकथाओं को स्थान दिया है जिनका प्रम इस प्रकार है—साधू प्रति प्रवाह जमादारिन ममत्व इमरती का कमला, एक राह, विदा, हिनार गवाट अभागी, आवग, पनक। इनमें जीवन सघन स उत्तम विभिन्न प्रतिप्रियाओं (अतः, द्वेष घणा तण्णा अथ-लानसा आगा, निरागा तपित अस्तताप जाति) को चित्रित किया गया है किन्तु उपस्थापन की गली प्राय उत्तनी प्रभावगाली नहीं है। इनके कथानक जीवन की सामान्य घटनाओं से घुने गए हैं किन्तु उनमें न तो मामिगता जा सकी है और न ही उनके औचित्य को सिद्ध किया गया है। इसका कारण यह है कि इन कहानियाँ में सामाजिक समस्याओं के निरूपण और समाधान का प्राय अभाव रहा है। जमादारिन कहानी उनके कथन की अपवाट हो सकती है क्योंकि इसमें हरिजना के प्रति उच्च वगवाली के दुर्व्यवहार का उल्लेख है और यह समस्या बिरकाल तक भारतीय समाज की ज्वलन्त समस्या बनकर साहित्य में स्थान पाती रहा है। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि इस कहानी में विषय संयोजन में भी उनी कला का परिचय दिया गया है जो विषय चयन में सुलभ है। वस्तुतः लखिका

ने अपन कथानका को स्थूल वणन का जाग्रत सार वाचित्र तथा नीरस बना दिया है।

विवेच्य कहानियाँ के पात्र परिस्थितियाँ न सम्मुख अत्यन्त विवर्ण हैं। निराशा तथा वदना के दोष में भूतते हुए परिस्थितियाँ से उत्पन्न कठायों का चरित्र धुनत रहना और एक दिन उसी अवस्था में मृत्यु का वरण करना—यही इन पात्रों का मामाई जीवन नम है। भावकता उनके चरित्र का विविध अंग है किन्तु रिनी प्रचार के जागृ की जागृ मनस नहीं की जा सकती। तात्पर्य यह है कि राधिका जी को कथानक की भाँति चरित्रा के सहज तथा स्वस्थ विकास में भी असफलता मिली है। व्योपकथन का तत्त्व तो और भी अधिक उपेक्षित रहा है। वणन गनी का प्राथमिकता नेत हुए सखिका ने पात्रों की भावनाओं को अत्यन्त विरल स्थलों पर वार्त्तालाप के माध्यम से मखर किया है किन्तु उनमें कोई उत्सखनीय विपत्ति अप्राप्य है। हाँ सवादा से कथानक में विविध नाटकीयता का समावेश अवश्य हो सका है। यहाँ यह उल्लेख्य है कि राधिका ने इन कहानियों में जिन समस्याओं को स्थान दिया है वे प्रायः यथिगत हैं। किन्तु वे सामाजिक याघात से उत्पन्न हुई हैं अतः उनमें कतिपय स्थलों पर दण-काल सम्बन्धी संकेत भी अक्षित होत है। यथा—

(अ) नारी आज से नहीं युग युग से ही प्राकृतिक ईश्वरप्रदत्त वरदान गारा सदव ही अधिकृत रहती आई है—रहगो भी।^१

(आ) स्वतन्त्र भारत में जब से बापू ने हरिजनता से स्नेह कर अपनी धनध्यापा उन पर की तब से किसनी मजान जो इहे अधिक कठोर यातनाएँ दे या इनमें अधिक संस्था का व्यवहार करे? वे भी स्वतन्त्र हैं मनुष्य हैं।^२

संक्षेप सग्रह में जमादारिन के अतिरिक्त अन्य किसी कहानी में उद्देश्य की स्पष्ट प्राप्ति नहीं है। राधिका ने अपने मन के भावाँ अथवा जीवन के कुछ सामान्य घटना-खण्डों का इतिवृत्तात्मक गनी में चित्रण मान किया है फलतः अभियोजनात्मक की पुनरुत्पत्ति को प्रायः सबल लक्षित किया जा सकता है। उनकी भाषा में जटिलता के स्थान पर यावहारिकता और मुहावरो की विवर्धता ता है किन्तु अगुद्ध गनी (धयता सीधयता स्वरूपता मोनता आदि)^३ और अगुद्ध वाक्यान्ता (मजाक करनी प्रारम्भ की भडकाएँ में आकर आदि) के प्रयोग से अभियोजना प्रवाह निरुचय ही बाधित हुआ है। अतः यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत सग्रह की जाख्यायिकाएँ मयस्पृगी नहीं बन सकी हैं वयार्त्ति राधिका में सूक्ष्म अतृष्टि द्वारा समग्र वणन गनी का अभाव है।

१६ सुथी पुष्पा महाजन

सुथी पुष्पा महाजन की संक्षेप और गति गीपक इति में निम्नलिखित पाँह

१२ पन्ने (अ) पृष्ठ १ (आ) पृष्ठ २३

३४ पन्ने (अ) पृष्ठ ४१ ४७ ५२ ६५ (आ) पृष्ठ ८७ ९६

कहानियाँ का स्थान प्राप्त हुआ है—नव निर्माण परित्यक्ता उतार चढ़ाव, मजबूत मनोरंजन, अंतरा, मदहू मधुप और गति दराना और जठानी, एक पता अनुपमा विचित्रता रिक्शावाला पद निर्माण बाइ आर। ये कहानियाँ सामाजिक हैं और इनमें निम्नलिखित विषयों का समस्यामूलक चित्रण हुआ है—याचक का एक श्रमजीवी वर्ग की दयनीय अवस्था याचक वर्ग की क्रूरता एवं हृदयहीनता, दाम्पत्य जीवन जयवा गृहस्थी के विभिन्न उतार-चढ़ाव विधवा की आत्मनिर्भरता दहेज प्रथा विरोध शिक्षा समस्याओं में प्राप्त धराजकता, भारत विभाजन के उपरांत साम्प्रदायिक रक्तपात। आनंदीय कहानियाँ मकानरु सुगठित एवं सुव्यवस्थित हैं। 'देवरानी और जठानी' गोपक कहानी में देवरानी जठानी के रागद्वेषमय चरित्रों एवं बास मनाविधान के अन्त में ललितिका विनय मय रहती है। सहेह कहानी में मालकिन उर्मि द्वारा सविका बुनियाद पर साड़ी की चारी का आरोप लगाने तथा उसके मिथ्या सिद्ध होने की घटना द्वारा जर्मि जात वर्ग का उच्छा उपहास किया गया है। सुखान्त कहानियों की अपेक्षा दुःखान्त कहानियों के मयोदन में लेखिका को अपेक्षाकृत अधिक सफलता मिली है। उद्धान्त कहानियाँ के आरम्भ में गति यदि य की ओर विनय ध्यान दिया है। विषय वस्तु की दृष्टि से नव निर्माण मदहू 'एक पता, विचित्रता तथा रिक्शावाला गोपक' कहानियाँ के पान गोपित वर्ग एवं याचक वर्ग के प्रतीक रूप में व्यक्त हुए हैं। गोपित पात्र प्रायः श्रमजीवी वर्गवाचक हैं जिन्हें जीवित रहने के लिए अभिजात वर्ग की डाँट फटकार उपमा, अवह नना मार भिन्नकार ममो दुःख महना पड़ता है। मय वर्ग एवं अभिजात वर्ग के अधिराज पात्र मानवीय सर्वनाश में गत हैं। गोपिता को पीड़ा पहुँचाना उनकी विचित्रताओं से अनुचित लाभ उठाना उद्दुष्टकारना मानो उनके धर्म है। नव निर्माण में सुनीर, मधू म उर्मिना और विचित्रता में मास्टर साह्य इती कोटि के पात्र हैं। नव निर्माण का कुमार उम का हाकर भी उमसे पक्का है क्योंकि दोनों के प्रति न्याय एवं प्रेम उमके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

पुष्पा जी ने इस चरित्रों में पति अति न्यून प्रेम स्वानिर्भरता आत्मनिर्भरता आदि गुणों का समावेश किया है। 'परित्यक्ता' का अन्तिम पतिव्रतापणा जाना नारी है। पति त्यक्ता होने पर स्वयं आत्मिकापाजन करती है किन्तु पति की स्मृति उमर मत्तु म पूरवत विद्यमान रहती है। 'तार' चढ़ाव की युवा तथा मधुप और गति का मरना उद्द एवं माहमा नाथियों हैं विरस होने पर सम्बन्धियों के दुःखद्वार का व उचित मनाधान पात्र पाता है और आत्मनिर्भर रहकर अपना सन्तानों की वांछ बनाती है। मजबूत का मजबूत उद्द नगत्या के विरोध में मह त्याग करती है और अन्त में बिना उद्द के ही विवाह करती है। 'तार' की अलगाव अपनी स्वयं उद्दयाजा में व्याघात उत्पन्न करावाना नोकरी का त्याग उती है। पय निर्माण की मजबूत अपनी गहरी पति के आँखों में निष्ठा रखने हुए नम बनकर मानव सेवा का सत्य ग्रहण करती है और प्रत्येक प्रतापन को दूर करने वाली है। ललितिका न पुरुष पात्रों का भी प्रायः सहज मानवीय धरातल

से विव्रित किया है जिनमें गुणों की अपेक्षा दुर्बलताएँ नहीं अधिक हैं। पत्नी की अपेक्षा परस्त्री में रचि देना निर्दोष पत्नी का ध्याय तथा द्वितीय विवाह मद्यपान एवं जलमयन वानाश करके पत्नी तथा बच्चों को पीछा पहुँचाना अधिकांश पुरुष परित्रा की प्रवृत्तियाँ हैं। नव निर्माण में कुमार पथ निर्देश में मञ्जु का पति आदि विरत पात्रों ने दया देगभक्ति मानव-सेवा आदि उच्च आदर्शों का स्वरूप किया है। इन कहानियों में दगावत पात्र एवं परिस्थिति का अनुरूप रुचिर सवालों की योजना की गई है। कथोपकथन पात्रों के व्यक्तित्व को मढ़ाव करने में विशेष उपयोगी सिद्ध हुए हैं। पात्र एवं परिस्थिति का अनुरूप योग्य विमोह स्नेह रोष क्षोभ घणा तिरस्कार ईर्ष्या रूप आदि भावों की सकल अभिव्यक्ति हुई है। यद्यपि सवादा में पात्रानुकूल भाषा बहिष्कृत दगावतों होती तथापि उनमें सरस एवं सजीव भाषा गली का प्रयोग हुआ है।

आलोच्य कहानियों में हिंदू परिवारों एवं समाज की निम्नविवक्षित विडम्बनाओं का चित्रण किया गया है—(अ) विधवाओं का प्रति सम्मान व्योम का उपयोग (आ) दाम्पत्य जीवन की समस्याएँ यथा—पति द्वारा पत्नी की अपेक्षा विश्वासघात बनाकर परनारी रमण जानि (इ) सास-बेनवा जिठानी दवरानी का कथन स्वभाव एवं कथन नीति (ई) भिक्षक वगैरे की हीनावस्था तथा दाताओं की निष्ठुरता (उ) अन्ननिर्णय परिधम करके भी अन्नजीविका का अनावश्यक जीवन (ऊ) दहजल समस्या (ए) पिता सस्याजों में अधिकारी वगैरे तथा उनका चमत्कार का प्रसन्न रहन कथन आत्महत्या का समस्या। वस्तुतः इस मञ्च की कहानियों का लक्ष्य मानव की साहसपूर्ण परिस्थितियों से जलने की प्रेरणा देना है। इस दृष्टि से सधप और गाति शायद कहानी में नायिका सरता की यह उक्ति स्पष्ट है— मनुष्य यदि परिस्थितियों से सधप कर सके तो मनुष्य है। नहीं तो काल से नीचेतर है। जो अब जाय उस ससार देवाता है। जल बना अपना समस्त वक्तव्य का नकर अपन पथ पर बढ़ो। तब परिस्थितियों की दास नहीं परिस्थितियों तम्हारी दास हैं।^१

नायिका कहानियों में तत्समय का भाषा का स्थान देखकर भाषा परिष्कार पर अधिक ध्यान दिया गया है। उक्त कथन का प्रमाण रूप में अनुपमा कहानी की यह पवित्रा अथवा कथा है— सधप का प्रगात दातावरण। चिड़ियाँ भरमटो में चहल रहा था। अस्तावत्गामी मूय का निस्तब्ध प्रकाश प्रकृति को रजित कर रहा था। सधपा राना जल सोन्य पर इतरा रही थी। नीरवता का साक्षात्कार था। एक बड़ी कोटा का बाहर उद्यान में एक अनिष्ट मुन्नी वक्ष का तन का आवार नकर चित्र निहित प्रतिमा सी लड़ा था। त्रासनाय नरा में काइ निरागा जोर दो जल बिन्दु मल मल जाकर और विषण्ण।^२ नविकर्ता नरनरता का भासमान तथा भाव की सहायता से जटिल-गम्भीर बनान का प्रयास किया है। 'नरनरका' नियन्त्रणाधिकार काथा

१ सधप और गाति पृष्ठ ६८

२ सधप और गाति पृष्ठ ११६

भिभूत अस्ताचलगामी' व्यक्ति-सक प्रमाण हैं। इक्का दुक्का हक्की बक्की कपड
रत आदि घ-युग्मों^३ वहिनापा पिछवाड़ा चपतियाया दिहाड़ी आदि दगाज ग-^४
एव दाल म कुछ काला है दूसरो की जूतियाँ चाटती रह आदि प्रचलित मुहावरो न
भापा को पर्याप्त व्यावहारिक सौंदर्य प्रदान किया है। अविकाश कहानियो म चित्रात्मक
एव भावपूर्ण गली का सौंदर्य विगपत प्राप्त रहा है तथा वर्णनात्मक एव नाटकीय
शली के अनुपातमय संयोग ने गली में पचाप्त सजावता का संचार किया है।

२० कुमारी रोता

कुमारी रोता के एक कली दो कटि गोपक कहानी-संग्रह मे निम्नलिखित
अट्टारह कहानियो को स्थान प्राप्त हुआ है—अधरा उजाला इसान या भडिया
पोट का हक्कार कोन विद्वाम और घोछा आत्महत्या रात जवरी है करण गाय
आ जा दिल म है अभिनय हमी सोय हम दोपी है रास्ते का काटा गानाम
निर्दृश्य सदावत के क्रीड जुमाना परानदुलभलोकान राजू। य कहानिया सामाजिक
है और इनम देशकाल का प्राणाय है। प्राय प्रत्येक कहानी म एक समाज अथवा
व्यक्तिविषय (गो वस्तुत समाज क एव विगिष्ट वग का ही प्रतिनिधि हाना है) क
इन कहानिया म क्यालक का दष्टि स निम्नलिखित विगपताए प्राप्त होती हैं—(अ)
उच्च वग की हृत्पहीनता स्वायवरता तथा अय हेय प्रवर्तिया का व्यग्रपूर्ण चित्रण
(आ) घोषित सहहारा वग के अभावा वर्णनात्मक भावा एव अय समस्याओं का
करण चित्रात्मक (इ) आर्थिक एव सामाजिक वपम्य क परिणामस्वरूप वर्तमान समाज
में प्राप्त असंगतियाँ (ई) भ्रष्टाचार धांशपड़ी जायाय स्वाय आदि एसी यकिन
गत तथा वगगत प्रवृत्तिया या चित्रण जो तब और समाज को नित्यप्रति पतन क गत
की ओर उगुल कर रही हैं (उ) पुरुष एव नारी क समानाधिकारा क प्रति सचन वन
मान नारी की सजा चेतना का उद्घोषण।

जमा रि उग्रवर्ण विषय विवर्तण स स्पष्ट है आताय कहानिया म प्राय
प्रगतिवाद का प्रसार रहा है। इनम प्राय यकिन रूप म नही अपितु समाजात विगिष्ट
यगो र प्रता र एव म प्रस्तुत हुए हैं। यहा कारण है कि अनेक कहानिया म सत्तिका न
पाश क नामालिन्य की भी आवश्यकता नही समझी नेवन उनकी प्रगतिवादी का हा संकत
रिया है जो उनक यकिन की अगमा उनो वागत चरित्र की छातिवा है। उन्हाहरणाय

१ रचित सपय धीर गाति पृष्ठ ४६ ६८ ६९, ११६

२ रचित सपय धीर गाति पृष्ठ ९, २४, १०२

३ रचित सपय धीर गाति पृष्ठ ८२ ८३ १३३

४ रचित सपय धीर गाति, पृष्ठ २४ ३३

सान या भेडिया कहानी में रमा और हेम जब प्रमण करने निकलती हैं तो माग में उनका सामना अनक पुरुषों से होता है—हम का पीछा करनेवाला जावारा नडका रेस्टारट में उनका साथ बैठने का इच्छा करनेवाला पुरुष सिनेमा में मुफा टिकट देने की बात कहनेवाला यवक हसन परफॉर्मिंग करनेवाला सरदार जी गांधी टोपीवाने सामान दा साइनिंग सवार आदि। उनका समस्त पान एक विविध पुरुष वर्ग का प्रतिनिधि हाकर प्रकट हुए हैं। यह वर्ग का पुरुष जावारा होता है और पराई नारी का जाकण करना हा उनकी प्रमल प्रवृत्ति होती है। जहां पाना का नामोत्पन्न हुआ है वहां भी ये प्रायः अपने वर्ग का प्रतीक रूप में प्रस्तुत हुए हैं। अधिकांश पान सर्वहारा वर्ग का अभिजात वर्ग की विषमताओं से घेतक रह है। गोपनीय निरुद्देश्य तथा पराइनदुलभताकाने कीयक कहानियों में रमाचित्रा की भांति एक पान का कद बनाकर समस्त कहानिक की सृष्टि हुई है कि तब पान भी समाज का विविध वर्गों की मनोवृत्ति को ही प्रकाश में लाते हैं।

आलोच्य लेखिका ने कतिपय कहानियों में नारी का उसका परम्परागत पराश्रयी रूप में ही चित्र किया है। जवारा उज्जाना आत्महत्या अभिनय तथा राजू में नारी को निरीह तथा परवर्ण रूप में चित्रित किया गया है। किन्तु आग जो दिल में है तथा रास्त का काटा की नायिकाएं हम तथ्य की प्रमाण दे कि उन्होंने वर्तमान नारी का विद्रोहपूर्ण चित्र को भी उभारा है। ये नायिकाएं पति को परमात्मा मानकर पूजने वाली नहीं हैं। यद्यपि आग जो दिल में है का नायिका का मन अपने कान तो दियल गवार मनिनवपी पति का अपक्षा किसी स्वच्छ चेत परिधानवान नागरिक युवक के सम्पर्क में जाने का लिए आतुर हो उठता है तो इस एकलव्य अस्वाभाविक क्यों माना जाए ? इस प्रकार रास्त का काटा की गांठ अपने कुलसनी पति की उपेक्षा सहकर घर की चहार दीवारा में बंद नही रह सकी और अपने निये भी बसा ही एक माग अपना निया तो क्या बुरा किया ? आज की जागरूक नारी समानाधिकार चाहती है। समाज धर्म जवारा मानव का किसी भी बंधन का स्वीकार करने में लिए वह प्रस्तुत नहीं है। कुमारी रीता की एनी नायिकाएं श्रेमती सुमित्रा कुमारी बिहा की कथा-नायिकाओं के समकक्ष समाज विरोधी नावा का पोषण करती प्रतीत होती हैं।

कुमारी रीता ने कतिपय स्थानों पर वर्णनात्मक गानी में प्रत्यक्ष चरित्र चित्रण किया है कि त मुख्य रूप से परिस्थितियों के प्रति पानों की प्रतिक्रियाओं और उचितियों में ही उनकी प्रवृत्तियों का प्रकाशन हुआ है। अपने कथानकों की वर्णनात्मक एकरूपता की नीरमता में उचित हुए उन्होंने पान एवं प्रमण का अनुरूप तत्त्वज्ञान का आयोजन किया है कि त आग जो दिल में है निरुद्देश्य आशय के पीछे आदि अनेक वर्णनात्मक कहानियां में उनका प्रवृत्ति अत्यंत विचित्र रही है। पाना के कथोपकथन में वर्तमान का मन स्थिति का अनुरूप करणा सरलता भावकता एवं दम्भ आदि भावा का यथा प्रमण समावेश किया है कि त फिर भी यह उत्तरेनीय है कि लेखिका ने सवादात्मक की आरंभिक ध्यान नहीं दिया। यही कारण है कि सवादा में उचित-वचित्प्रयोग

तक वितक आदि विपत्ताओं का प्रायः जभाव रहा है। अनेक-मवाद जनाव यव एव निरयक भी रह है। माना मान नाटकायता का इच्छा म प्ररित होकर हा समाविष्ट क्रिय गण हा। इसी कारण सवाग म सुयवस्या की यूनता रही है।

वास्तविकता तो यह है कि लेखिका का ध्यान जितना देशकाल की जलन्त मम स्याज की प्रस्तुत करन की जार रहा है उतना अय किसी तत्त्व म वद्वित नही हुआ। उनकी कहानिया का उद्देश्य ना यही है कि समाज म व्याप्त आर्थिक वपम्य वगभेन निधनता भ्रष्टाचार नारी-समाज द्वारा परम्परागत दासता का खण्ण आदि समका लीन प्रचलित प्रवर्तिया क प्रति पाठका आ ध्यान आकष्ट किया जाए। देशकाल और उद्देश्य क प्रति व इतनी पूराग्रही हैं कि हमी ता थ और हम दापी है म बनल इतिहास की विभिन्न घटनाओं ना हवाला नकर मात्र गापित वग की वकालत की गई है। 'कना नक का जग इनम तनिक ना नही है फिर इह किस आधार पर कहानिया का सता दा जाए ? जत इन दोनों का प्रगतिवाद से प्रभावित नख मानना ही उचित हागा।

भौतिक वातावरण क जतिरिक्त लेखिका नयन नन प्राकृतिक दश्या का भी चिन्तन किया है। एस चित्र प्रायः जानकारिक गली म उद्दीपनवन् अथात दश्यजगत सापेक्ष रूप म व्यक्त हुए है। यथा— रात्रि किमी हत्या की आरमा की नाति कालि माभय थी। आकाश व तारागण अमल्य पुष्प का नाइ अपनी मधुरता और ज्वाति का निरयक नष्ट कर रह थ। रात्रि व उस निमूल नाम्राज्य म मिन का धुआ चतुर्णि विमर्जित होकर वायुमण्डल को विपाक्त कर रहा था।^१ प्रकृति चित्रा क अतिरिक्त जय स्थना पर लेखिका न प्रायः सरन व्यावहारिक एव सामाय भाषा गला का प्रयोग किया है। उनकी भाषा लघुवाक्यगमित एव सुयवस्थित तो है किन्तु उसम सरमता का प्रायः अभाव रहा है। या लेखिका न गनीगत प्रवाह की जार पयाप्त ध्यान लिया ह और उसम व सफन भी रही हैं।

२१ श्रीमती शकुन्तला देवा

स्त्रीगिया शमता गकु तला देवा बिहार की उीयमाना लेखिका था जिनकी मत्यु गन १९५६ म पवन नागह वष की अल्पायु म हो गई थी। एव और कना गापक कहाना-संग्रह म उनकी आग सामाजिक कहानियाँ मकनित हैं—जय और प्रतिष्ठा नावु कता और दायित्व पसा और डिन्मा मन और तपति न्द्वि और जावन वासना और प्यार जीवन और गवानी एव और कला। इनम नारी-जीवन की विविध परिस्थितियाँ ना नायकतापूर्वक चित्रण किया गया है जिसके मूनम वचारिकता ता है किन्तु अनुनूति

१ देखिये एक कला दो काँट' पृष्ठ १२, ३४, ३७

२ देखिये एक कला दो काँट', पृष्ठ ६४, ७१

३ एक कला दो काँटे, पृष्ठ ५८

विस्तार अथवा समस्याओं का सम्यक् निर्वाह प्रायः नहीं हो पाया है। कहानी कला की प्रौढ़ता का दृष्टि से इन रचनाओं की समीक्षा 'यथ' होगी। इनका समागत भावक हृदय के उदगारों के रूप में ही किया जा सकता है। सग्रह की एकमात्र उत्तमखनीय कहानी रुद्धि और जीवन है किन्तु इस कहानी में भी उत्तरार्द्ध अधिक प्रभावशाली नहीं है। कथानायिका रमला नरोत्तम की तृतीय पत्नी है जो विवाह के पाँच वर्ष बाद ही विधवा हो गई जो तथा जिसे कालांतर में रमण के स्वायत्त प्रेम की प्रतीक सन्तान के कारण वाञ्छित होना पड़ा। 'लखिका' की अन्य कहानियों में दहज समस्या बद्ध विवाह, वेश्यावृत्ति परस्त्री के प्रति मानसिक अभिचार, वासनामूलक प्रेम प्रेम विवाह आदि का परिस्थिति जय चित्रण हुआ है। ये समस्याएँ दूर यापी हैं किन्तु लखिका को घटना निबंध में वाञ्छित सफलता नहीं मिली है। यहाँ यह उत्तमखनीय है कि उन्होंने घटनाओं के माध्यम से चरित्र निरूपण किया है किन्तु वे दोनों में से किसी के प्रति भी 'याय' नहीं कर पाई हैं। उनकी कहानियाँ में समस्याओं का सम्यक् विकास तो हुआ ही नहीं है चरमोत्कर्ष के जिज्ञासामूलक संघटन और समस्याओं के निदान के प्रति भी वे उदासीन रह गई हैं। फलतः उनके पात्रों में अतद्वन्द्व और स्वाभाविक मनोविकास की खोज भी बिगैर फल दायी नहीं होगी। उनका उद्देश्य नारी पात्रों की विवशताओं का चित्रण करना है किन्तु सरिता बिना माधुरी शोला आदि कथा नायिकाओं ने परिस्थितियाँ स सघटन न करके जिन हृदय-त्रोहस्य का परिचय दिया है उसकी सराहना नहीं की जा सकती।

आलोच्य लखिका न कथापकथन का जोर वाञ्छित ध्यान न देकर पात्रों की मनोवृत्तियों को वणनात्मक गति में प्रकट किया है। इसी कारण उनकी कहानियों में रोचकता और सजीवता का अन्त प्रसार नहीं है। वस्तुतः उन्होंने वातावरण की सज्जग अभिव्यक्ति अथवा तथ्य निरूपण को प्राथमिकता दी है और इस तथ्य को भुला दिया है कि सवाल योजना से वे अपने कथ्य में अधिक 'वास्तव्य' ना सकती थीं। यदि उन्होंने वही कथापकथन का यत्किंचिन्नात्म्य किया भी है तो वे पात्रविशेष की उक्तियों में समवाचीन दृष्टान्त के विस्तृत निरूपण के बोध का संवर्णन नहीं कर सकी हैं। अथ और प्रतिष्ठा 'गोपक' कहानी में सरिता के प्रति 'गवासिनी' की उक्ति इसी प्रकार की है जिसमें उसने पुरुषाचार्य महिना समाज को जनता का अवसर न देने पर असन्तोष व्यक्त किया है।^१ रुद्धि और जीवन 'गोपक' कथा में दो पक्षों के वास्तविकता के या विषय मान विवाह एवं बद्ध विवाह की निंदा से भी लेखिका की इसी प्रवृत्ति का बोध होता है। तथापि यह स्वीकार करना होगा कि बिहार समाज में प्रचलित समकालीन सामाजिक विषमताओं के प्रति 'लखिका' की दृष्टि अत्यन्त जागरूक रही है। समाज में मुनीति अथवा आदर्श की स्थापना उनके अंतर्मुख की कामना है किन्तु इसके लिए उन्होंने समाज को आदर्श के कोमल आवरण में रखने की अपेक्षा स्वार्थी पुरुषों के प्रति

पीड़िता नारी की विद्रोही भावनाओं को सहज मुखर रखा है।

'गुलतला जी की कहानियों में अभि यजना पक्ष के तीन सोपान रहे हैं—कयागत भावुकता चिन्तन और ओज की अभिव्यक्ति तदनुरूप शली में ही की गई है। उनकी शायरी में एक अनगुन स्वच्छन्द प्रवाह है जिसमें मौलिक उपमानों (गहू से लाल कपोल, चाँदनी से नरम कलाई) 'प्रचलित मुहावरों (लकीर के फकीर बात करना आदि) ' प्राचीन युग का (अठान कठान, मोसी फूसी, आरजू गरजू आदि),^३ सूक्तियों और चित्रभाषा का सहज व्यवहार है। किन्तु 'याकरणिक जघृद्धियों की बहुलता के लिए लयिका की प्रगमा नहीं की जा सकती। इस प्रकार के चित्र प्रयोगों में से कुछ ये हैं— (य) नया करत मुख गये' (आ) बिप बुद टपक पड़ा ' (इ) तीन चार चाँचि जड़ थी ' (ई) कहा गया पा तुम। ' तथापि यदि हम इन जघृद्धियों के प्रति महानुभूति रखें तो लेखिका की उपलब्धियों की सराहना की जा सकेगी, विशेषतः इसलिए कि इन कहानियों की रचना केवल पन्द्रह-साल के बचप की आयु में की गई थी।

२२ श्रीमती गुरुनारायण दत्त शर्मा

श्रीमती गुरुनारायण दत्त शर्मा ने 'अजलि (कविता-संग्रह) और 'हिंदी काव्य में सौंदर्य भावना' उपरान्त 'चाँचो गया' गोपक कहानी संग्रह की रचना की थी जिसमें बारह कहानियाँ सम्मिलित हैं। पुस्तकाकार प्रकाशित होने के पूर्व ये कहानियाँ विविध पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी थी। विषय-विविध की दृष्टि से इन्हें चार वर्गों में रखा जा सकता है—सामाजिक (पाती शिक्षा स्थापन, कयाकुमारी, गतिहीन फसला कल होगा) पौराणिक (शिव अदेव, बीरी जाल कम मखला) भावात्मक (दण की कारा, चाँचो गया) तथा ऐतिहासिक (फास का लाल फूल)। पाती और कयाकुमारी गोपक सामाजिक कहानियाँ रेखाचित्र की शली में लिखी गई हैं। इनमें नमूने पाती नाम्नी निधन कया क लेखिका के प्रति घनिष्ठ सौहार्द तथा कृष्णवर्णी के अपने प्रवासी

अनुराग में पर्याप्त भेद है प्रिय अथवा प्रिया का पूरा प्रेम प्राप्त करने के लिए धन, दया अथवा गव की नहीं अपितु अनुराग के सच्चे प्रतिष्ठान की अपेक्षा रहती है। गतिहीन में पत्नी का स्नेह बाँट लेनेवाले पुत्र सामू के प्रति ईष्यानु कुमारस्वामी की कुण्ठित भावनाओं का चित्रण किया गया है। फसला कल होगा में शत्रु के अपराधों के गम्भीर हृदय

१२ रूप धोर कता पृष्ठ १, २

३ रूप धोर कता पृष्ठ ३, ३१, ४१

४५ रूप धोर कता पृष्ठ ११, १३

६७ रूप धोर कता पृष्ठ ४६, ५८

वसे ही मल छिपाय छिपाये तरह शिखरा पर इधर उधर जल्दी में अटक गए दुबूला को धीरे धीरे समेट रही थी। चारों ओर दूर दूर छोटे छोटे घरों से लगनेवाले मकानों की ओर बढ़ती हुई घास काटनेवालीयों की पंक्ति चीटियाँ की बत्तार सी घनी ओर पतनी दिखाई पड़ रही थी और मैंने पहले पहल देखा था पर्वत का यह मनोहर दृश्य।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि श्रीमती गुरुत्तागर्मा का प्रस्तुत कहानी सग्रह भावना और अभिव्यक्ति दोनों की दृष्टि से पर्याप्त सफल रहा है। उनकी कहानी निया उद्देश्यपरक होने पर भी वर्णन की स्थूलता के स्थान पर विक्षिप्त उचित भंगिमा लिये हुए हैं। नारी लेखिकाओं की कहानियाँ में प्रायः जीवन की ससीम चर्चा रहती है—परिवार और निवृत्तवर्ती परिवेश से आगे बढ़कर वे जीवन की इतिहास दर्शन मना विज्ञान आदि के सन्दर्भ में सर्वांगीण अभिव्यक्ति नहीं दे पाती किन्तु प्रस्तुत कहानी सग्रह इसका अपवाद है।

२३ सुश्री इंदिरा नूपुर

सुश्री इंदिरा नूपुर ने उपन्यासों के अतिरिक्त गद्या के आंगूठापर कहानी सग्रह की भावना की है जिसमें निम्नलिखित बारह सामाजिक कहानियों को स्थान प्राप्त हुआ है—पत्नी और धुरी बिंदिया काकी मोड़ वापसी गद्या के आंगूठा पर अपराध बान्धन पट गया ध ठरें की बोतल पराजित रिक्त बिन्दु मोह का बंधन काज का टकड़ा। उक्त कहानियाँ में मुख्य रूप से नारी जीवन की समस्याओं का चित्रण हुआ है। अधिकांश कथाओं में पुरुष मान नारी के कष्टों के हेतु रूप सिद्ध हुए हैं। पत्नी के अतिशय होने के कारण पुत्र न होने के कारण अथवा अन्य किसी कारण से पूर्व पत्नी के हात हुए भी दूसरा विवाह करना (मोड़ अपराध मोह का बंधन) पत्नी के स्नेह एवं कष्टों की उपेक्षा करके उसके प्रति कठोर व्यवहार करना (बान्धन फट गए थे रिक्त बिन्दु) पत्नी के प्रेम में अविश्वास प्रकट करना (पराजित) जादि विभिन्न अत्यायपूर्ण कृत्यों द्वारा पुरुष पात्रों ने पात्राओं के अन्तः को ठस पहुँचाई है अथवा कतिपय आख्यायिकाओं में सामाजिक परिस्थितियाँ उनके कष्टों की मूल हेतु रही हैं (पत्नी और धुरी बिंदिया काकी ठरें की बोतल)। अन्तिम आलोच्य पात्राओं ने प्रतिकार रूप में केवल अपनी उदात्त विपत्तियों का ही परिचय दिया है। भारतीय नारी के स्नेह त्याग कष्ट सहिष्णुता प्रति परायणता आदि आदर्श गुणों को उभारने में आलोच्य लेखिका विशेष सचेष्ट रही हैं किन्तु आदर्शवादिता की भ्रम में पुरुष पात्रों के प्रति उन्होंने अन्याय अत्याय का परिचय दिया है जिसकी सराहना नहीं की जा सकती। पात्रों के भावों को मुझ अभिमान प्रदान करते हुए उन्होंने परिस्थिति के अनुकूल प्रायः सक्षिप्त एवं रोचक कथोपकथन का संयोजन किया है। पात्राओं की उक्तियाँ अपभाषा अधिक मार्मिक एवं गरिमा मयी बन सकी हैं।

प्रस्तुत कहानियों में निम्नलिखित सामाजिक समस्याओं को स्थान प्राप्त हुआ है—
पति द्वारा पत्नी के प्रति कठोर व्यवहार, दहेज समस्या (पथी और धुरी, वापसी) तथा
निधनता अथवा बंकारी का अभिशाप (ठरें की मोतल कागज का टुकड़ा)। सुधी इंदिरा
को रानीधत क प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति विरोध जाकषण है। अपनी अनेक कहानियाँ
(श्या के आँसू रिक्त बिन्दु कागज का टुकड़ा आदि) में उहाने रानीधत की प्राकृतिक
मुपमा की चचा की है। उदाहरणाय ग या के आँसू कहानी से उदत अधोलिखित
पक्षियाँ द्रष्ट य हैं— 'रानीधत की सबके काफी चौड़ी हैं। एक ओर ऊँचे ऊँचे चौड क
वक्ष दिखाई पडते हैं और दूसरी ओर कहा-कही ढाल और वही वहाँ गडड भी।' इन
कहानियाँ का न्दय भागताय नारी की गरिमा का उन्धोष करना है। वही पुत्री तथा
भगिनी व रूप में वही पत्नी क रूप में कहा प्रमिका के रूप में और कही माता के
रूप में प्रस्तुत गल्पा में भारताय नारी के चरित्र को उत्कष प्रदान किया गया है।

विवक्ष्य बयाओ में सरल एवं मुहावरेदार भाषा का प्रयोग हुआ है (लेना एक
न देना दो वह रात पलका में ही कटी)।^१ लेखिका की गली चित्रात्मक नाटकीय एवं
भावानुकूल मार्मिक वन पडी है। अवसरानुकूल अलंकारों के समुचित प्रयोग न अभि
ध्वजना पक्ष का अतिरिक्त सौष्ठव प्रदान किया है। उक्त विरोधताभा क उदाहरण रूप
में अधोलिखित पक्षियाँ अवबोचनीय हैं— अतीत के तिन उसकी पलकों में भूम उठे
जानकी व साथ रिताये हुए मुगद सहवास क वे कुछ दिन। उस याद आया जानकी
सुंदर जी, नानी जीर मुकुमार। रननन भी अपनी माँ का स्वरूप सेव ही ससार में
आई है। जब वह काम करत करते थक जाती है तब उसक दीप्त मुखमण्डल पर स्व
बूँद कमल की पलुरिया पर हिमवण की भाँति चमकने लगती है।^२

२८ सुधी मातली परलर

कुमारी मातली परलरर अर श्रीमती मातली सिरसीकर न 'तुम बड़ी पागल
हो तथा अन्य कहानियाँ दीपक कृति में पारिवारिक तथा सामाजी जीवन धारा की ग्यारह
कहानियाँ का समावण किया है—नीड की जार, विदा का उपहार यात्रा का चान,
विद्या में बदलर पक्क वधन की कडियाँ, तुम बड़ी पागल हा मृगजन स दूर विप
रीत जिगा कट्टो स्नेह-भूष। सन्धिका क गल्पा में य कहानियाँ कुछ यक्षितया की अनु
भूत जीवन पटनाओं पर आधत हैं।^३ फलत इनमें अनुभूतित्रय गाम्भीर्य की खोज निरथक
न होगी।

नाड ही जीर इस मग्रह की अत्यन्त सगवन पारिवारिक कहानी है। इसमें एक

१ गल्पा के आँसू पृष्ठ ६३

२ देखिये गल्पा क आँसू, पृष्ठ २१, २५

३ गल्पा क आँसू पृष्ठ १०४

४ देखिये तुम बड़ी पागल हो भूमिका, पृष्ठ ५

मद्यमवी सखन क जीवन का यथायथादी धलो म चित्रण किया गया है। परन्तु व प्रति दुःखवहार उसके लिए साधारण बात थी जिसके पत्रस्वरूप उसका पुत्र अजय और पुत्री नीनू के मन में पिता के प्रति घणा और माता के प्रति सहानुभूति का भाव रहने लग। अतः म बच्चा के पारस्परिक सवाद से अजय के पिता के मानसिक परिवर्तन का मार्मिक चित्रण किया गया है। कट्टा गीषक कहानी की रचना पचत्तन तथा हिनापत्ता की भाँति उपद्रावत्मक गाना में की गई है। कट्टो गितहरी माता में छिपकर स्वर्गोपम गाना की खोज में निकली तो गिट्टा गारा पकड़ ले गई किन्तु सयागवग उसका पत्र में छटकर अपनी माता के पास जा गिरी और इस प्रकार उसकी जावन रक्षा हो गई। 'ब' वन की कटिया में कबखिनी हम्रा के पिता तथा पति गारा उसको का य प्रतिभा की ओर ध्यान न देना और फलतः उसकी मानसिक बदना का चित्रण किया गया है। त्रिगुणा न जय कहानियाँ में वासनामयवत अथवा वासनामयवत प्रेम की हृद्योत्पत्ति अन्तर्भूतियाँ का अंकित किया है। यात्रा का चाद और तम बड़ी पागल हाँ रामानी प्रेम बताया है जिनमें प्रेमग राघू और निमला तथा तबीन और नीमा के प्रेम परिस्थितिज में प्रेम मान मनोवर्तन आदि का चित्रण हुआ है। विदा का उपहार तथा विवाह संवत्सर में कथा नायका की प्रेमविषयक कुण्ठाओं तथा मानसिक स्थितियों की सहानुभूतिपूर्ण चर्चा की गई है। एकन और स्नेह सूत्र में प्रेमग त्रिनेग और गिरीग के जीवन को लेकर आत्मावाणी कथानक प्रस्तुत किया गया है। त्रिनेग अपनी पत्नी चाह से एकनिष्ठ प्रेम करता है किन्तु उसकी गौरीरिक् असमयता के कारण कभी-कभी बर्खास्त हो जाता है। स्नेह सूत्र में त्रिनेग के प्रति गिरीग के अपाधिक प्रेम का उल्लेख है। यह उसकी प्रेरणा बन गया और मान प्राप्त करता है फलतः उनके स्नेह में सहज अकस्मिकता है। त्रिनेग और श्रीधर के विवाह में उसके मन में कोई कुठा नही है किन्तु श्रीधर के मन में गिरीग के प्रति निराधार गंवा बनी रही और उसने सर्व उसका तिरस्कार ही किया। त्रिगुणा ने कथानक के संघटन और विकास में सहजता का सर्वत्र ध्यान रखा है। कौतूहल की सन्धि और समस्याओं के समुचित निर्वाह के प्रति भी वह सजग रही हैं।

सुखी पहचान कर अपनी कहानियाँ में पात्रों की समस्या सीमित रखी है और उनकी आँखों के प्रकाश को मुखर हुए रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। नारीपात्रों की चरित्रगत विगणताओं को व्यक्त करते समय उन्होंने भारतीय संस्कृति का नया रूप रखकर उनमें स्नेह ममता प्रेम औदार्य सहानुभूति करुणा सहनशीलता आदि उदात्त गुणों का विगण रूप में समावेश किया है। नीनू की आँखों में अजय की माता विदा का उपहार में नाभी यात्रा का चार्म में निमन और पक्क में मधुगाना का शक्तिवत् प्रतीक प्रसारका है। विपरीत त्रिगुणा में मजह तो सहनशीलता की साक्षात् प्रतिमा है। बजू गारा सतान गिरायत करने तथा पिटवान पर भी वह नारी गान की सावधानता प्रकट करते हुए उस सोहार् तथा सहयोग ही अपित करती है। विवाह संवत्सर में त्रिगुणा की

दम्पिनी तथा स्वार्थी पत्नी गारंग तथा उसकी कठिन बहिन प्रमा जाभाइस नामा चित होकर भी उसकी निंदा ही करता है उपयुक्त गुणा स रहित दानक कारण अपवात्स्वरूप हैं किन्तु कहानी में इनका स्यान अत्यन्त गौण है।

पुरुष पात्रा क चरित्र में लेखिका ने मुख्यतः सगुणा के विकास को ही नक्ष्य म रखा है। नीड की जार में जयक पिता का मद्य-मदन तथा पत्नी के प्रति दुर्व्यवहार विधित छटकता है किन्तु बच्चा के वार्त्ताभाष से वे गाछ ही समझ जाते हैं और पत्नी में भ्रमा योजना कर पत हैं। इसी प्रकार विपरीत दिशा में बज्जू का अपनी धान-सहचरी मज्जू के प्रति श्रूतापूर्ण व्यवहार बाद में मध्यव्यवहार में परिणत हो जाता है। बंधन की बन्धियाँ में हमारा पिता तथा पति उसकी वाध्य प्रतिभा का उचित मूल्यांकन नहीं करन परिणामतः हमारा मन कुट्टित होकर रह जाता है। विशा का उपहार तथा विवाह से बढ़कर में लेखिका ने पात्रा (गोपान तथा किशन) की मानसिक प्रविया का सहानुभूतिपूर्वक चित्रण किया है। मृगजल से दूर गोपक कहानी में एक जार विवास का दैर्घ्यवित संचरण और काय सनभता का चित्रण है और दूसरा जार स्वार्थी तथा बिलासी ओरेट्र की माना उमम तुलना की गई है। पक्ष में श्रिंग और स्नेह मूत्र में गिरीग ने मयम तथा एकनिष्ठ प्रेम का गौरवपूर्ण आदर्श प्रस्तुत किया है। स्पष्ट है कि लेखिका ने चरित्र चित्रण में विविधता रखी है किन्तु यह उल्लेखनीय है कि उन्होंने यथाय जगत की सीमाओं का उल्लंघन बहो भी नहीं किया। चरित्र चित्रण के लिए सवांग घटनाभा, मानस-मथन आदि पराग गतिया का आश्रय नन के अतिरिक्त उन्होंने वणनात्मक गता का भी प्रयोग किया है। उदाहरणार्थ विवाह से बढार में विद्या का पारित्रिक प्रवृत्तियों का चित्रण देखिए

विद्या में उसने एक नया गुण पाया—वह भी चरित्र की दुवता और एक नतिक गति। वह जिस बात को मत्स्य समझती थी उस करक छोड़ती थी। प्रतिष्ठा कीति सम्मान या तोर राज का माह उस वभी अमत्य की जार न कका सका था। उमका अपना नीतिशास्त्र था जिसमें रुडि और परम्पराओं की नही शक्ति गुञ्ज मानसता की जाभा थी।^१

श्रीमती परलकर की कहानियाँ में कथोदधन की बहुत ही सजाय मानना हुई है—महिषा नावपूर्ण शत्रु तथा मनावर्त्तित रवाद उक्त कहानियाँ के लिए प्राणस्वरूप हैं। मनावर्त्तित शत्रु की नष्टि में नीड की जार में अजय और नानू का वानाचित्र वात्तालाप विापन उल्लेखनीय है।^२ उनकी धान दतना मार्मिक है कि माद रहित की आत्तरिक्त श्राना वात्तर होकर पाठक के आँसुओं का जनापास बरोनिया उस पात्र जाती है। लेखिका ने अग्रिम कहानियाँ में प्रमी-युगल के करापरधन का

१ तम बड़ी पागल हो, पृष्ठ ६२

२ दगिय तुम बड़ी पागल हो, पृष्ठ १५ १७

मार्मिक विधान किया है। उनकी कहानियाँ म कथोपकथन पाना की चारित्रिक प्रवृत्तियाँ ने अनकूल उनके भाव प्रकाशन में विघ्न सहायक रहे हैं। यदि यह रहा जाए कि सुथी पल्लकर की कहानियों का अधिकांश सौंदर्य उनमें आयोजित वास्तविकता का कारण है तो कोई अत्युक्ति न होगी।

प्रस्तुत कहानी संग्रह में मुख्यतः परिस्थिति सापेक्ष मानसिक वातावरण जयवा सहज पारिवारिक वातावरण का चित्रण हुआ है। एकज में वंशज-जीवन की धृति का चित्रण है तथा वधन की कठिनाई में नारी के सामाजिक पारतन्त्र्य की ओर सङ्गत किया गया है। फिर भी यह कथित है कि आलोच्य कहानियाँ की समस्याएँ प्रायः व्यक्तिगत जीवन की नकर हैं। उनका सामाजिकीकरण करने में काई नाभ नही। ललितता ने बाह्य सामाजिक समस्याओं जयवा प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण करने की अपेक्षा मानव मन के रहस्यों का विश्लेषण करने की ओर अधिक ध्यान दिया है।

नामती पल्लकर ने उद्देश्य का प्रत्यक्ष कथन न करके उस प्रायः कथा के अंतर्गत योजित रखा है। पारिवारिक सुख दुःख के रूप में कथित बिना अङ्कित करने हुए मानव मन की तन्त्ररूप प्रतिनियोजना का चित्रण उनका मूल उद्देश्य है। उनकी कहानियाँ में उद्देश्य की दृष्टि में एकपक्षता न होकर विविध कारण प्रस्तुत किये गए हैं जिन्हें हम प्रकार निरूपित किया जा सकता है—(अ) गणस्वामी द्वारा मद्यपान का परिवार के अन्तर्गत विघ्नपत बाध हटाना पर दुःप्रभाव (भीड़ की ओर कहानी में) (आ) अपनी पत्नी के अतिरिक्त किसी अन्य स्त्री से पारवन् स्नेह भी समाज की दृष्टि में दूषित माना जाता है (विवाह सन्दर्भ कहानी में) (इ) प्रेम विवाह तब सफल हो सकता है जब उसकी आधार गिला ऐहिक सुखभोग की अपेक्षा आत्मिक सरलता एवं विश्वास पर आधारित हो (मग जन से दूर) (ई) परिस्थितियों के उतार चढ़ाव में निश्चय धना और धनी निश्चय बनते रहते हैं (विपरीत दगा) आदि।

यस कहानी संग्रह में मुख्य रूप से यावहारिक तत्त्वम गाना और गीण रूप से प्रचलित उद्देश्य। तथा प्रातीय गाना का प्रयोग किया गया है। वाक्य सक्षिप्त और प्रभावपूर्ण हैं। फलतः भाषा में सबन सहज सौन्दर्य प्राप्त रहा है। मुहावरों के प्रयोग की ओर ललितता की विघ्न प्रवृत्ति नहीं रही। यत्र तत्र अत्यन्त सामान्य महावरा का व्यवहार किया गया है। वणनात्मक गाने और सवाद की सङ्घन प्रयोजिता होने के साथ साथ उद्देश्य की नहीं भावात्मक गाने का भी सौन्दर्यपूर्ण प्रयोग किया है। उद्देश्य पाव याता का चाद गीणक कहानी की य पक्षिर्मा देखिए— निमला को लगा जम वह पुकार ठ—राध ! राध ! त मगी मत बजा। तपर म भरारी ने राधा को जितना दना उतना बढ़त है राधू। तू मुक्त मत द्यन मरे प्राणा में त्वार उमडता है राधू। मैं तुम दूर कम रहूँ ? कब तक रहूँ ? मत बजा बजा—या ही तो तू मक्त रात रात भर जगाता है।

२५ श्रीमती शान्ति जोशी

श्रीमती शान्ति जोशी के कथा-संग्रह 'भाटी का गंध' में बारह भावपूर्ण कहानियाँ हैं—अभिशाप, अनुभव का बोध वह किमी की नयी मौसी प्रकृति का पुनः पिचू कालवक्र, चोर, डाक्टर भया, धननिष्ठा रामी, विलास। इन कहानियों में जीवन के सहज सरल चित्र प्रस्तुत किये गए हैं, जिनके पीछे लाकानुभव का मर्म अमिटिम्ब है। यद्यपि उह पिचू चार तथा 'डाक्टर भया' में हास्य रस का निर्वाह करने में सफलता नहीं मिली है तथा रामी में नायिका रामी के चरित्र का उपयुक्त निर्वाह नहीं हुआ है तथापि अन्य कहानियाँ में उह पर्याप्त सफलता मिली है। उनके कथा-गल्प की उत्कृष्ट स्तरीय विगपता यह है कि उह हान प्रायः किसी एक घटना अथवा चरित्र के स्पष्टीकरण पर विगप बत दिया है। विभिन्न घटनाओं का ऊहापाठ जयवा बहुसंख्यक चरित्रों के घात प्रतिघातों का रचनात्मक दुलभ है फलतः उनमें प्रभावशालिता की प्रतिभा अत्यंत सज्जामाविक रही है। उह हान परिस्थितियाँ और पात्रों की मनोभावा को प्रकट करने के लिए प्रायः रत्नाविन को गनी का आधार लिया है। प्रायः प्रत्येक कहानी का आरम्भ पात्रों की जिज्ञासा के दृष्टि में रखकर किया गया है और अधिकांश कहानियाँ के अन्त में रोचकता तथा जाकस्मिकता को स्थान दिया गया है। श्रीमती जानी न नागी की सामाजिक समस्याओं एवं तज्जय मानसिक गुणों की संवदनापूर्ण अभिव्यक्ति की है। अभिशाप में कमला और लाजा 'अनुभव का बोध' में पत्नी वह किमी की नयी में रूपा पिचू में शोला और 'विलास' में एक चरित्र चित्रण में रत्निका नारी मनाविगान को निरन्तर ध्यान में रखा है। इसी प्रकार उह हान पुरुषों के मनोभावों का भी सन्तुलित चित्रण किया है। उनके पात्र यथावत निकट होन पर भी आत्मा से दूर नहीं हैं फलतः चरित्र चित्रण में एकामी दृष्टिकोण का लोप नहीं जा पाया है। उह हान चरित्र चित्रण के लिए संवादों की बहुत कम योजना का है, तथापि इस गीत में जा उक्तियाँ उपन्यास हैं उनकी सहजता और सजावता असंदिग्ध है— वह किमी की नयी में रूपा की उक्तियाँ इसी प्रकार की हैं।^१

आचार्य रत्निका न पात्रों की मानुष मनस्थिति के चित्रण का प्राथमिकता दा है किन्तु उह हान प्रमाणमुक्त गीतकाल में निरूपण की ओर भी ध्यान दिया है। उह हान रत्निका में माता का शिद्रावयी प्रकृति, धन-लालुष माता पिता का सतान के प्रति वनन्य पात्रों में करना पुरुषों द्वारा अहम्भयता के फलस्वरूप नारी का उपाधा आदि समस्याओं को समझ वह विनोदों का नया, धननिष्ठा और अनुभव का वाचन गायक कहानियाँ में स्थान दिया गया है। दशकाल के प्रति उनका जागृकता इनमें भी प्रमाणित है कि जीवन की अनुभूतियों का सहज चित्रण उनका प्रमुख सत्य रहा है। या तो उह हान जीवन के यथावत चित्रण प्रस्तुत किये हैं किन्तु उनमें आदेश का भी उचित

समय मितता है। नारी के चरित्र को उहाने प्रायः भारतीय संस्कृति के अनुरूप आगे धरातल पर प्रतिष्ठित किया है। राजा पत्नी रूपा और इंदु एसा ही पानाए हैं जो स्व को पर के लिए मानकर पति जयवा प्रियतम के मुख के लिए अपने का मिटा देने का तन मन ग तत्पर हैं। 'नमः' रूपा का चरित्र अधिक सफर है क्योंकि पोटिता को सदा ही उसने जीवन का सदा है।

श्रीमती जोगी ने वाचान की गायिका और प्रचलित मुहावरा को अपनाते हुए मुख्य बात इस बात पर दिया है कि उनकी भाषा तत्समबहुना और गुड है। असह नीयता और असमजसता जैसे अंगुष्ठ प्रयोग उनकी कहानियाँ में अधिक नही है। उनकी गली मूलतः वणनात्मक है किंतु उसमयथावसर चित्रात्मकता आनकारिकता एक सूचित वाक्या का भा स्थान मिला है। उदाहरणार्थ प्रकृति का पुनः संवेपकियाँ दखिए— इस प्यास को बुझाने के लिए उसने प्रकृति को धरणी ली। पर जिसका हृदय विगुड प्राकृतिक रस से सिंचित हो न हुआ हा उस प्रकृति कस मोहती? प्रकृति के रंग बिरंग फल उस तितलियाँ की भाँति स्वच्छ उडान भरना न सिखा सकें इन्धनुष प्रयत्नी की सत्त रणी सानी का स्मरण न मिला मका हिम से आँखादित गगनचम्बी पहाड़ उस प्रिय का सदा नही सक। इस उक्ति में प्रकृतिक ममवधा सौन्दर्य का अप्रत्यक्ष रूप में आँखा उल्लेख हुआ है। तलिका की जय कहानियाँ में भी भावुकता गम्भीरता और अभि व्यञ्जना की स्वच्छता का एसा ही समाहार मितता है।

२६ श्रीमती विमला रना

स्वात 'योत्तरकान' की हिंदी कहानी तलिका नाम श्रीमती विमला रना का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उहाने विभिन्न सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक समस्याओं का चर्चा कहानी रचना की है और यथास्थान उपयुक्त समाधान भी प्रस्तुत किए हैं। उनकी कहानियाँ बुद्ध दीप में सङ्कलित हैं जिनका नाम इस प्रकार है—सोत जागते सपने चार दिन सुहाग रखा जरे काटा की मुसीबत कौन जान नई माँ महन बुद्ध दीप। यद्यपि उक्त सङ्कलन का नामकरण अंतिम कहानी के नाम पर हुआ है तथापि यह सग्रह की सब अच्छी कहानी नहीं है।

प्रायः प्रत्येक कहानी में तलिका ने जीवन के प्रति आगा विवास तथा आस्था की स्थापना की है। सान जागते सपने चार दिन तथा जरे आत्मचिन्तन की गली में प्रणीत एकपात्रीय कहानियाँ हैं। 'नमः' नाम राधा पचासवर्षीय बूढ़ तथा बाल नामक पान मन विचिंतन माध्यम से अपने शक्तिगत जीवन तथा समस्याओं का व्यक्त करत हैं। उदाहरणार्थ सोत जागते सपने की राधा अभी अपने पति राजा का अधिक गौरवमय

मानती है, और कभी अपने विवाह से पूर्व व प्रभी राजा के मित्र को कभी अपने मन का दुःखता पर नकलता है और कभी साँचता है कि उसका पूर्व प्रेम पाप था किन्तु अन्त में इस निष्पक्ष पर पञ्चनी है कि वह एक स्वप्न की भाँति था और स्वप्न कभी पाप नहीं होता। स्वप्न की स्मृति की भाँति उसकी स्मृति ना उसके अस्तित्व को मधुरता से भर देती है। इस प्रकार लेखिका ने 'यष्टि की समस्या' के माध्यम से समष्टि की समस्या का समाधान प्रस्तुत किया है।

मुहाग रत्ना तथा नई मा मन्मथ सास बहू तथा सौतेली मा और सौतेले बच्चा के पारस्परिक सम्बन्ध पर विचार किया गया है। उक्त दोनों समस्याएँ हिन्दू परिवारों की विरज्जित समस्याएँ हैं। मुहाग रत्ना की रम्मा ने सास को प्रसन्न करने का भरसक चष्टा की, किन्तु वह सफल नहीं हुई जब पुत्री की भाँति 'सास' के प्रति स्नेह का माग अपनाया। नई माँ की नायिका ने भी कृत्य का भाव त्यागकर जब स्नेह का आश्रय लिया तब वह सौतेले बच्चा का हृदय जीत सकी। अरे, चार दिन तथा महक में विभिन्न प्रकार के कथानक द्वारा यह दिखाया गया है कि बवाहिक प्रेम में जो स्थय एवं गाम्भीर्य होता है वह विवाह के पूर्वकालीन प्रेम अथवा विवाहांतर पर पुष्पासक्ति में सम्भव नहीं हो सकता। काटा की मुसीबत एक मनोवैज्ञानिक कहानी है जिसमें आधुनिक मन्मथता के प्रति व्यंग्य है। कौन जान तथा बुद्ध दीप में सामाजिक आघात से उत्पन्न व्यक्तित्वगत पीड़ाओं का चित्रण किया गया है। 'कौन जाने' की नायिका ने अपने पति श्याम के साथ पुण्य भूमी भी किन्तु विवाह के पूर्व उत्पन्न उसका अवयव पुत्र जन्मा शायद में पल रहा था। इसी आंतरिक पीड़ा के प्रभाव में एक दिन उसने आत्मघात की चरण लेकर अपने पीड़ित जीवन का अन्त कर लिया। बुद्ध दीप में एक दुष्टता के फलस्वरूप गोपाल की पत्नी राधा तथा उसके छोटे भाई प्रान के एक-साथ मृत्यु हो गई। गोपाल की माता गोपाल का पुनर्विवाह करके उसे सुखी करना चाहती थी जबकि प्रान की पत्नी बीना को विधवा होने के कारण छाने पहनने का स्वच्छन्दता से भी वंचित कर दिया गया था। गोपाल ने स्पष्ट कहा कि जब तक बीना को सुखी नहीं बनाया जाएगा तब तक वह भी जीवन में उत्साह न पा सकेगा। इस प्रकार पुरुष एवं नारी का एक ही स्थिति में आकर लेखिका ने सामाजिक पक्षपात पर करारा व्यंग्य किया है।

धामती रत्ना ने प्रायः भावुक एवं चिन्तनशील पात्रों की सृष्टि की है। व्यक्तित्वगत तथा सामाजिक समस्याओं का विवेक भाव से स्वीकार नहीं करते अपितु उनके प्रतिकार के लिए युक्तियों का खजाना लगा रहते हैं। 'बुद्ध दीप' का गोपाल, चार दिन का नायक मुहाग रत्ना की रम्मा तथा नई माँ का सौतेली माँ इस प्रकार के पात्र पाएँ हैं। बादर थड़ा और परिथम से भी जय रम्मा की सास प्रसन्न न हुई तो भी उगने हार न मानी और अन्त में सावधान विचार कर उन्होंने यह उपाय खोजा कि वह पुत्री का स्नेह दूर हो जाने का हृदय जीत सकेगी, कृतव्य नायिका द्वारा नहीं। नई माँ

वहानी में मोतेरी माँ ने भी गहन चिन्तन के उपरान्त स्नेह द्वारा सोनू के बचाव का काम करने का उपाय साज निराला। बुद्ध दीप की रीना जोर कोन जान की रेनु उक्त कथन की अपवाद हैं क्योंकि वे विषम परिस्थितियाँ के साथ घबराकर अधिकार डाल देती हैं। कौन जाने का नायक क्याम जादू पात्र है अपना पत्नी के विवाह-पूरा प्रेम में उसे कोई दाप प्रतीत नहीं होता। पत्नी के आत्मघात के उपरान्त वह उमक अवधि बचने का अनायास्य से नाकर पुनर्वत अपना बता है। बुद्ध दीप का नायक मापात्र भी ऐसा ही जादू पात्र है जो स्त्री और पुरुष को समता के धरातल पर खाने का इच्छा है।

इन कहानियों में मुख्य रूप से पात्रों के व्योपकथन चित्रण तथा जाचरण द्वारा उनकी चारित्रिक प्रवृत्तियों का प्रकाशन हुआ है। परिवार के विभिन्न सन्तानों के अनिक वक्तानापा का मजीव एवं पात्रानुसूच विधान करने में लेखिका विषय सफर रही है। उदाहरणार्थ मुताग रेखा में रम्यो की सास की जलानिधित उचित अवलोकनीय है—

‘मैं भिन्न भी न हुए होग कि माजी गरजने लगी और त ही रह गई है मर मह में कालिख पतवान का ? वह दोनों कहा है ? वह ता सता नई-नवली ही रहगी। फिर चाची की जोर सयत पर बोनी— क्या री छोटी तरी महारानी कहा है ? तू जा सुयह स गाम तक बटे बहू और उनक बच्चों पर हडिया तोड़ है सो क्या ? बुनाना अपनी वहजा का। य कन की भाई मरे पाव दाब और तरी १० साल का मेम रगरलियाँ उगाय ? जर मरी नहा ता तरा ही कुछ खबर रखनी चाहिए उसे। ऐसा ही नाउ करती गई ता ब नयन का ऊनी बनकर रह जायगी।

वर्तमान युग की कतिपय बरत समस्याओं का चित्रण करके उनके निराप उप मुक्त समाधान प्रस्तुत करना आनाच्य कहानियों का लक्ष्य है। इन समस्याओं में मव प्रमुख है ‘वर्द्ध’ प्रेम की समस्या। हमारा समाज एन प्रेम का घणा की दृष्टि से लुप्तता है कनत यक्षि का घार मानसिक यत्रणा का नाजन बनना पता है। नविका ने पु ती ‘गुत्तता जादि पीराणिक पात्रा के लहरण कर बतमान समाज में गका की लक्षि से दख जानवान इन सम्बन्धों का सहज आधार प्रदान करने की चेष्टा की है।^१ उक्त समस्या का समाधान यही है कि समाज अपने दृष्टिकोण को उदार बनाय। विवाह के पूर्व जा प्रेम किया जाता है अथवा विवाह के बाद किसी सनक के कारण अथवा पाश्चात्य सम्प्रदाय के प्रभाव में परपुरुष अथवा परस्त्री से जा मधुर वात्ताताप किया जाता है उसमें बवाहिक प्रेम-जमा साम्प्रदायिक एन सय नहा हाता। विवाह पूर्व प्रेम को नखिका न स्वप्न की मपा दो है।^२ पाप पण्य का प्राचीर समाज में स्वयं रखी का ह भारतीय सस्ति उनका समयन नहा करता। मुताग रेखा तथा नई माँ कहानियों का लक्ष्य

१ चत दीप पृष्ठ ३६

२ देखिये बुद्ध दीप पृष्ठ ८८

३ देखिये चत दीप पृष्ठ ८८

यह सिद्ध करना है कि सात और वह में जयवा सोतली माँ और बच्चे में स्नेह द्वारा जो सहज सम्बन्ध स्थापित हो सकता है, कृत-य द्वारा प्ररित कृत्रिम स्नेह तथा जात्र स वसा नही हो सकता। 'बुद्धे नीप' म विषया की समस्या का सु दर समाधान प्रस्तुत किया गया है और विद्रोहात्मक स्वरा में समानाधिकार की माग की गई है।

आलोच्य लेखिका की भाषा 'यावहारिक' है। प्रचलित शब्दों का प्रचुर प्रयोग तथा सक्षिप्त एवं रोचक वाक्यावली उनका भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं। उक्त कथन के प्रमाणस्वरूप 'चार दिन' कहानी की निम्नस्थ पवित्रता उद्धरणों में हैं— बच्चा ने दुनिया देखी है। जमान का उतार चढाव देखा है। ऊँच नीच की परख उनको है। अभी २२ वर्ष के हो हैं तो क्या। बहुत कुछ देखा, सुना और किया है जो हमने अभी तक न देखा न सुना, न किया। और मजिल की आखिरी सीढ़ियाँ सामने दिख रही हैं—थोड़ा ही जिदगी बाकी है। फिर मरग का दरवाजा खुल जायेगा और मैं उसमें हमारा—हमारा के लिए बंद हो जाऊँगा। ' इस उद्धरण से प्रत्यक्ष है कि सच्चे वाक्यों के कारण लेखिका की भाषा विशेष सशक्त हो उठी है। दुर्लभता अथवा अस्पष्टता के दाप में वह सवधा मुक्त है। जय स इति तक उसमें एकरूप सौन्दर्य के दर्शन होते हैं। कतिपय प्रमयाँ में लेखिका ने सूचित गली में मानव मन के रहस्या का विश्लेषण किया है। उदाहरणार्थ 'महक' कहानी का प्रस्तुत उचित उल्लेखनीय है— न जाने ऐसा क्या होता है कि जो घट सत्य हम सुनना नहीं चाहते उसी को जानने के लिए बेताब हो जाते हैं। '

आलोच्य वाक्यावली के प्रयोग में श्रामता रता विशेष मिदग्न है। उनकी उपमाओं में मौलिकता स्पष्टतः गनीय है। उदाहरणार्थ 'सोते जागत सपने तथा 'चार दिन' गोपक कहानियों से प्रमयाँ ये उदाहरण दानिए—(अ) समय एक अजगर ऐसा 'वय' म'यर हो रहा था ' (अ) 'उमकी जाँना में अनेक सुख' स्वप्न नील गगन के सपने' बालों में टुकड़ा की तरह तरत हुए आ जा रहे थे। ' कतिपय स्थान पर लेखिका ने भाववाचक सत्ताजा का मानवीकरण करके काव्यात्मक गला का उदाहरण प्रस्तुत किया है। उदाहरणार्थ 'महक' कहानी में यह परिस्थिति चित्र प्रष्ट है— स्मृति अताव की गोद में मुह ठार पड़ी सोती रहती, पर कना कभी अचानक ही रजनीग धा की महक का आवा अरिनी को पीछे छूटा हृद राहा पर स जाता। '

२७ सुथरी पयावती पटरय

सुथरी पयावती पटरय के मौलिक पटरय गोपक कहानी सग्रह में बारह सामाजिक एवं पारिवारिक कहानियाँ संकलित हैं—रखिया, वसर, डाक्टर गोपा मित्त जाएँ, लिली मय जाना, बोन रिमका चिता के धून, जो रह हैं समझोता,

काका जी राम भरोस। यह लेखिका का प्रथम कहानी संग्रह है और इसकी अधिकांश कहानियाँ इसके पूर्व पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी थी। इनमें 'मिलत जाइय' काका जी की कौन किसका और राम भरोस कथानक की दृष्टि से पुष्प एवं सुनियोजित कहानियाँ हैं। किन्तु जब कहानियाँ मचटना प्रेम विवशनी तथा अपवस्थित-मा प्रतीत होता है। रघिया डाक्टर कसर और गोपा गीपक कहानियाँ का प्रारम्भ पर्याप्त रोचकता एवं स्पष्टता लिय है विकास भी किसी सीमा तक मर्यादनीय है किन्तु चरम सीमा तथा अन्त का निर्वाह लेखिका ने उचित रीति से नहीं किया। समझौता भी ऐसी ही गिरिधर रचना है जिसके अध्ययन से पाठक को सतोष नहीं हो पाता। लिनी मत जाना तथा जी रहे हैं गीपक कहानियाँ में कथानक का विकास पत्रों के माध्यम से हुआ है किन्तु इनमें घटनाएँ तब तक अत्यंत सक्षिप्त हैं। दिल्ली मत जाना में एक प्रेमांगी पति ने पत्नी में लिनी न आने का आग्रह करते हुए पत्र लिखा है। जो रहे हैं में जयन वर्मा ने अपनी वकालती तथा पत्नी द्वारा नौकरी करने में परस्पर काम विपर्यय का तला जोखा दत्त हुए अपने मित्र बन्नु का जो पत्र लिखा है उसमें हास्य रस का सफल निर्वाह हुआ है।

मुन्नी पटरय में यथायथा महत्त्व दत्त हुए भी अनेक स्थानों पर आदर्श की प्रतिष्ठा की है। उनके कतिपय कथा पात्र यदि सामाजिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों के परिणाम स्वरूप कुठा और निराशायक जीवन बिताते हैं तो रघिया कसर गोपा मनजीत गल्लर यदि पात्र उक्त विवशितता एवं कुठाओं पर विजय पाकर तजस्वी व्यक्तित्व का परिचय दत्त हैं। मिलत जाइय में सुनेमान और इमरान अली की चारित्रिक विशेषताओं की लेखिका ने अत्यंत सहज एवं सरस ढंग से प्रकट किया है। काका जी में काका और कौन किसका में उमा का बच्चा दादी का व्यक्तित्व भी अत्यंत प्रभावपूर्ण बन पाया है। जब तक घर की बात चला खाना के सामने कह न से तब तक बच्चा दादी को धन ही नहीं पड़ता। पात्रों की भाव धारा को मुखरित करने और कथानक में नाटकीयता आने के लिए लेखिका ने सक्षिप्त एवं सारगर्भित संवादों का भी योजना की है। इस दृष्टि से रघिया में रघिया और रमझा के वार्त्तालाप में दाम्पत्य प्रेम की मधुर अभिव्यक्ति उल्लेखनीय है एवं मिलत जाइय में कथा का विकास ही पुरातन सुलमान और रमझा जैसी वार्त्तालाप द्वारा हुआ है। लेखिका ने इन कहानियों में विभिन्न सामाजिक समस्याओं का उल्लेख किया है। काका जी कौन किसका और जी रहे हैं में वकालती की समस्या का चर्चा और समझौता तथा राम भरोस में दहेज तथा की आर ध्यान आकृष्ट किया गया है। लिनी मत जाना में लिनी में मकानों की तंगी तथा महंगाई के कारण जीवन यापन का कठिनाई का उल्लेख किया गया है। डाक्टर तथा मिलत जाइय में भारत की परत प्रतापीय सामाजिक राजनीतिक स्थिति की चर्चा का गद्द है। गल्लर में ममलमाना की साम्प्रदायिक भावनाओं का उल्लेख है तथा

मिलते जाइये म सन १९४२ के आतंककारी आन्दोलन का चित्रण है।^१ कसर मे लेखिका ने विधवा की पारिवारिक दुर्दशा का अंकन किया है। इन कहानियाँ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पद्मावती जी ने अधिकांश यथाथ और आदम का समन्वय करते हुए सामाजिक और पारिवारिक जीवन के सुखदुःखमय चित्र अंकित किये हैं नरन यथाथ जयवा कारे आदम की अभिव्यक्ति उनका उद्देश्य नहीं है।

विवेच्य कहानियाँ में सरल एवं व्यावहारिक भाषा का प्रयोग किया गया है। सवादों की भाषा पत्रानुकूल है, जहाँ अधिष्ठित पात्रों की उक्तियाँ में बखत औगुन कमती लग दिया उरभट औसधी जादि तद्भव शान्ति को पर्याप्त स्थान दिया गया है। आनुद्ध शान्ति (विद्यो)^२ और मना ने बहुत चोखा चित्रनाश^३ जस पाकरण विवृद्ध प्रयोग इस रचना में अधिक नहीं है। निष्कर्ष रूप में यह पात-पह कि सुभा पदरथ की अधिकांश कहानियाँ भावना और कला की दृष्टि से सामान्यकाटि की है तथापि मिलते जाइये की न किस्का आनि उत्कृष्ट कहानियाँ इस तथ्य की सूचक है कि लेखिका का भविष्य उज्ज्वल है। यथाथ की अपेक्षा आदम की प्रतिष्ठा में उन्हें अधिक सफलता प्राप्त हुई है।

२८ सुश्री सीता

3335 20 5
147

सीता जी ने प्रचलित भारतीय लोककथाओं का आधार पर भारत की लोककथाएँ गोपक बहुद्ग प्रथ की रचना की है। इसमें ६८७ पृष्ठ हैं और विभिन्न विषयक ६७ लोक कथाएँ संकलित हैं—त्यौहार की कहानियाँ नस्ति रस की कहानियाँ प्रेम कथाएँ शिक्षा प्रक कहानियाँ नीति-कथाएँ बुद्धि की कहानियाँ अद्भुत साहस की कहानियाँ कला की महत्ता सम्बन्धी कथाएँ सामाजिक कहानियाँ आभ्य सम्बन्धी लोककथाएँ काल्पनिक लोककथाएँ चोरा और ठगों की लोककथाएँ हास्य रस का लोककथाएँ बाल कथाएँ विविध विषय पर लोककथाएँ। इस कृति के द्वारा उन्होंने लोक साहित्य के विकास में उत्तुल्लेखनीय योगदान दिया है। इस संग्रह में अदनील लोककथाओं को स्थान नहीं दिया गया और कहा नहीं सुसम्बद्धता एवं सहजता देने के लिए यत्किंचित् परिवर्तन भी किये गए हैं। लेखिका ने हिंदू परिवारों में प्रचलित कथाओं को उनके व्यावहारिक रूप में ज्यादा-का-तया प्रस्तुत करने का विशेष ध्यान रखा है। यह उत्तुल्लेखनीय है कि उन्होंने गिन कथाओं को ग्रहण किया है व प्रायः भारत के अतिरिक्त स्त्रा-वर्ग में प्रचलित हैं। जसा कि प्रायः लोककथाओं में होता है इनमें भी मानव पात्रों के अतिरिक्त पशु पक्षियों की दवताओं राक्षसों प्रकृति-तत्त्वा आदि को स्थान दिया गया है। लेखिका ने अनन्य लोक कथाओं को प्रारम्भ करने के पूर्व कहा थोड़ा और कहो अधिक शान्ति में सम्बद्ध कथावस्तु के

१ देसिये मास के पत्थर पृष्ठ ३१ ६८ ५०

२ ३ ४ देसिये मास के पत्थर (घ) पृष्ठ १२, १३, १४ १५, १७, १८ (घा) पृष्ठ

३८ ३९ (ङ) पृष्ठ ४२

विषय में कुछ आवश्यक सूत्र प्रस्तुत किया है उपाहरणार्थ कथाकार से पाह करारों को पीक कहानी में उद्देश्य को यक्त करनेवाली प्रारम्भ की ये पंक्तियाँ प्रिय— कला की शक्ति जदभुत है। बिना किसी गुण के जदभी का मात नहीं।^१ कतिपय कहानियाँ में ऐसी उक्तियाँ एक दाह अवस्था सूचित वाक्य के रूप में प्रस्तुत की गई हैं। यगना सुपारी और हसने पून तथा हार पीपक कथाओं का प्रारम्भ इसी गीत में हुआ है।

लोककथाओं की सम्पूर्ण गरिमा उनके मौखिक रूप में सुरक्षित है। सामान्यतः मौखिक और लिखित भाषा में अन्तर हा ही जाता है तथापि लिखित न सवाँ की भाषा को प्रायः भाषा का त्याग उद्धृत करने का प्रयत्न किया है। फलतः इसमें कथानक की स्वाभाविकता वातावरण का स्पष्टता और पात्रानुकूल भाषा को सहज ही पाया जा सकता है। इसीलिए लिखित न तद्रूप और दंगल गीत एक मुहायरा शोकोक्तियों का भी प्रचुर प्रयोग किया है। उदाहरणार्थ लच्छा पीपक कहानी की ये पंक्तियाँ लेखि— लच्छा की बगोती का सहारा लच्छा की लठियाँ मुखन भी जब समाप्त सचन दमा तो लच्छो की नगा जस उसकी दुनियाँ लाक में भिन गई है। वह अधिक रो भी न मकी क्योंकि लच्छा मारा रोव और लच्छा मारा सावे। अतः यह कहा जा सकता है कि सुधी सीता ने हिन्दी में नावगीता को सगहीत करने की दिगाम प्रथम बार सुव्यवस्थित प्रयत्न किया है और उह भावना और भाषा दाना ही का मूल के निकट रखने में सफलता मिली है।

२८ श्रीमती विपुला देवी

श्रीमती विपुला देवी ने अनेक ऐतिहासिक एवं सामाजिक कहानियों की रचना की है जो समय समय पर पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही है। सवाँन रूप में अब तक उनका कवन एक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है— पूव का पन्ति। इसमें निम्नलिखित बारह कहानियाँ सम्मिलित हैं— पूव का पन्ति विजयनम पछी बोना और तब मरण रे वरदान विगान स्थान श्रुतना की खोद कनी किनरी जागत स्वप्न कहानी जा पूरी नहीं है नेत्रा मोसन पछतावा। उक्त कहानियाँ में सामाजिक कथा सूत्रा का आश्रय अवश्य लिया गया है किन्तु इनकी मूल ध्वनि दार्शनिक है। इनमें जीवन मरण आत्मा कर्मफल निष्ठा प्रकृति परनाक बालि विभिन्न दार्शनिक समस्याओं पर विचार किया गया है। कम दृष्टि से पूव का पन्ति विजयनम पछी बोना मरण रे श्रुतना की खोद कनी जागत स्वप्न और पछतावा पीपक कहानियाँ विशेषतः उत्तरवर्तीय हैं। मरण रे विगान स्थान श्रुतना की खोद कनी किनरी और जागत स्वप्न पीपक कहानियाँ रसाक्षि की सामाजिक स्वरूप करता प्रतीत होती है— उक्त प्रत्येक कहानी में

१ भारत की लोककथाएँ, पृष्ठ २१६

२ भारत की लोककथाएँ पृष्ठ १६

किसा एक एत पात्र की चर्चा का गढ़ है जिसकी प्रवृत्तियाँ सामान्य पाना से सबका भिन्न हैं। इनका एक उत्कृष्टतम विवेकता यह है कि इनमें समाज दश परिस्थिति अथवा व्यक्तिविवेक व प्रति तीव्र योग्यता का भाव निहित है। वरुण रसक मार्मिक कथानक प्रस्तुत करने में देखिका विशेष सिद्धहस्त है। 'औरतों तथा मरणर' छीपक कहानियाँ इसका प्रमाण हैं। फिर भी यह स्वीकार करना पड़ा कि विपुला जी की कहानियाँ में भाव-भक्त की अपेक्षा चिन्तन-सत्त्व अथवा बोद्धिकता का विषय महत्व प्राप्त हुआ है। विचार-सत्त्व का अत्यधिक महत्व इनमें कुछ कहानियाँ के कथानक अस्पष्ट एवं नीरस रह गए हैं— पूर का पंडित विजय में पड़ी बोला नेना-मीलन आदि रचनाएँ ऐसी ही हैं।

विपुला जी अपनी कहानियाँ में सीमित पात्रों की सृष्टि करता है और प्रायः प्रत्येक कहानी में एक या कहीं दो पात्रों के चरित्रों का सायापाया विलक्षण प्रस्तुत करता हुआ जन्म पात्रों की कथल चर्चा अथवा नामांतर ही करता है। उनकी कहानियों का प्रमुख पात्र कुछ ऐसी जड़भूत चरित्रिक विशेषताएँ लिए होता है कि अनायास ही पाठक का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो जाता है। पूर का पंडित में पूर का रहस्यपूर्ण पंडित कभी उत्पन्न हो जाता है और कभी सहसा प्रकट होकर डा० हैमिन्टन की जिज्ञासाओं का समाधान करता है। विजय में पड़ी वाला की दीपा प्रेम की व्यर्थ समझकर प्रेमी की भावनाओं की उपेक्षा करती है 'मरणर' की मौसी कभी अपने प्रीति पति के विरुद्ध गिरावट करती है और कभी उससे अहित की जागृका से अभ्यर्तित होकर उससे निकट पहुंचने की आतुरता व्यक्त करती है विंगल स्थान का निरजन एक कुशाग्र बुद्धि नेपायी युवक था कि तु परिस्थितियों की ठाकरें खाकर वह एक छोट्टे हुए अपराधों के रूप में परिणत हो जाता है। ठुल्ला की छोई नदी की अलका अत्यन्त भावुक एवं दुबलहूया पात्रा है कि नरी का किन्नरी रात भर अकली एक विविष्ट गीत गाती हुई घूमती है कहानी का पूरी नहा हुई का मुधोर सबसे विचित्र है। वह स्वयं कष्टपूर्ण जीवन यापन करता है, किन्तु ससार के अन्य व्यक्तियों के हितों से तब प्रयत्नगाल रहता है। वस्तुतः विपुला जी का कथा-पात्रों का चरित्र प्रायः नागनिक है और इनके कारण वे 'नाम' व्यवहार से भिन्न आचरण करते हुए प्रतीत होते हैं तथा क्रिया कलाप की जगह चिन्तन में अधिक लीन रहते हैं।

प्रस्तुत कहानियों में कथापकथन की योजना मुख्य रूप से कथानक को गति प्रदान करने के लिए की गई है। यही कारण है कि कहीं-कहीं तथ्य रह हैं और कहीं जहाँ पात्र घटनाओं का विस्तृत वर्णन करते हैं उन्निपाँ दोष हो गई हैं। सामान्य वाचनार्थक अतिरिक्त इन कहानियों में दार्शनिक सम्भाषण भी हैं जिनमें दशन नम्य पाँत-यों का उम्मीर विलक्षण किया गया है। इससे अतिरिक्त कतिपय सवालों में 'सवाल सम्बन्धी तथ्या' का चर्चा हुई है। उदाहरणार्थ कहानी जो पूरी नहीं हुई में मुधोर की व उन्निपाँ द्रष्टव्य हैं, जिनमें नाश्मीर व प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रशंसा का गढ़

है।^१ इसी प्रकार ज्ञात स्वप्न गीषक कहानी में बदलू पानशन की उन्नतियाँ म त्तीय महायुद्ध के समय बढ़नेवाली महगाई टक्स क ट्रोल आदि की अनेकान रचा हुई है।^२ आलोचक कहानियाँ में देशकाल एवं वातावरण की विधि प्राथमिकता प्राप्त हुई है। इस प्रसंग में 'नविकान' ने प्रायः निम्नलिखित प्रवृत्तियों का समावेश किया है—

(अ) त्तीय महायुद्ध के समय की तथा उसका तत्काल बाद की स्थिति— महगाई क ट्रोल टिकाऊ वस्तुओं का अभाव टक्स बढ़ि जाँ।

(आ) भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति देश का विभाजन तथा अन्य सम्बद्ध राजनीतिक समस्याएँ काश्मीर समस्या साम्प्रदायिक उत्पात आदि।

(इ) निधन विषय असहाय तथा अनाथ 'यक्तियों' प्रति समाज की सकीणता दुर्व्यवहार स्वाय नाव उपहास आदि।

(ई) कहानियाँ में वर्णित स्थानों के अवसरानुक्त प्राकृतिक सौन्दर्य की धर्चा।

विपुला श्री ने प्रायः सब राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति के चित्रण में व्यंग्य पुरुष गान्धारी का आश्रय लिया है। उदाहरणार्थ किन्नरी कहानी की अपोलिखित पवित्रता द्रष्टव्य है— १५ अगस्त १९४७ को अखंड भारत दो भागों में विभक्त हो गया और उसकी दो सरकार बन गई। पारस्परिक झगडा में हिन्दू और मुसलमानों के रक्त की नदियाँ इस देश में बह गई किन्तु मैं इन सारी बातों की ओर से निरपेक्ष रहा। सारे ससार के कूटनीतिज्ञों ने मिलकर भारत की राजनीतिक गत्थी सुलझाने के लिए यह हथखोज निकाला था जिससे अपना देश में लागू करने के लिए कभी समय न होत। किन्तु तब भी मेरी गति अन्तिम रही।^३

किन्नरी कहानी में प्रारम्भ में 'नेखिकान' काश्मीर के आन्तरिक भागों तथा मार्गों कपिण हिन्दूकुण कुभा गौरी जादि नदियाँ एवं चितरान अफगानिस्तान जाँ स्थानों का ऐतिहासिक परिचय देकर उनकी भौगोलिक स्थिति का विस्तारसंक्षेपण किया है। इसी प्रकार कहानी जो पूरी नहीं हुई में प्रासंगिक रूप से काश्मीर के प्राकृतिक एवं मानवीय सौन्दर्य की विधि मराहना की गई है।^४ 'नविकान' को एक विनिष्ट प्रवृत्ति यह है कि वह अपनी कहानियों में प्रासंगिक रूप से कहीं 'व्यंग्य रूप में कहीं सामान्य सूचनात्मक रूप में और कहीं धोष के रूप में भारतीय रीतियों तथा प्रथाओं का उल्लेख करती है। उदाहरणार्थ अधोलिखित उद्धरण अवलम्बनीय हैं—

(अ) लेकिन हिन्दुस्तान में कोई बाहरी आत्मी किसी रोगी के निकट

१ देखिये पूव का पङ्क्ति पृष्ठ १३६ १४०

२ देखिये पूव का पङ्क्ति पृष्ठ १२५ १२७ १२६ १३

३ पूव का पङ्क्ति पृष्ठ ११६

४ देखिये पूव का पङ्क्ति पृष्ठ १०५ १ ८

५ देखिये पूव का पङ्क्ति पृष्ठ १३६ १४०

सम्बन्धिया स यह नहीं कह सकता कि रागी उस नहीं चाहता नल ही बीमार तथा उनके सम्बन्धिया स चिरगन्तुता आजीवन रही हो।^१

(आ) किन्तु कभी-कभी सारे आनन्द पर पानी फेरने के लिए यह विचार मन में आ ही जाता कि समय-मपना क हिसाब स मरी गति अधिक तेजी स दैनिक एवं दौड़िक प्रानि कर रही है और एक भारतीय पिता की सामाजिक एवं जायिक कठिनाइया की दखत हुए यह बात किसी सुलक्षण की द्योतक नहीं है।^२

(इ) यह भारत है जहाँ झूठी बदनामी से तो अच्छा मृत्यु है।^३

आलाप्य कहानिया का सन्ध है—मानव जीवन क आन्तरिक एवं बाह्य मयों क व्यम्पपूर्ण अथवा दानिक चिन अकित करना। सखिका क अपन घाँदा मानव का अपक क्षय उसका असीम स्नह सोहान मानधना उसका बाह्य तथा आन्तरिक दुःख जीवन स सामजस्य स्थापित करने क निग 'सक' उठाव गए पग सकीण समझ तथा उसका भाँगा के प्रति 'यय आदि दन कयाजा का विषय है। आत्मा की अपमा उक्त आख्यायिकाभा स यथाय को अत्रि महत्त्व दिया गया है। गिल्प का दण्टि स य कहा निया पर्याप्त मुगठिन हैं। इनम साहित्यिक एवं स समयहुला गंगावला का म्यान प्राप्त हुआ है। बारह वष बाद पूर क भी दिन फिरत हैं एक मद्यरी ताताव दा करन के लिए बहुत है आदि 'नौकोकितयो' एवं 'मनुष्यम मञ्जोरिया ह जार वह अपन का उनका गिकार पाकर मन को यह कहकर समझा लता है कि दूसरे मूख हैं आदि सूक्ति बाक्या^४ न नापा गला का दानिक कधानक क अनरूप सजोव एवं प्रौढ रूप प्रदान किया ह। सगिका की गली प्रवाहपूण है और उसम जनकग व्यक्त अथवा परिस्थिति क प्रति व्यय की तीव्रता विद्यमान है।^५ निष्पयस्वरूप यह स्पष्ट है कि विपुला जा का कहानिया स दानिक विचारधारा का अधिक्य रहता है। इमोर्निए उन्हान पात्रा क आन्तरिक एवं बाह्य मयों का गहन विन्नेपण किया है। कहा-कहा कथन व्यय एवं विचारा की प्रौढता स मन अनायाम प्रभावित हो जाता है। नापा-गला की दण्टि स भी उनकी कहानियाँ मुगठिन साहित्यिक गम्भीर एवं प्रवाहपूण हैं।

३० श्रीमती वांता सिंहा

श्रीमती वांता सिंहा न काँच का रास्ता गीपक कहाना-सग्रह स मुस्कान अमागिन टो मदी पाडदियाँ गुण्डा भ्रम जठानी जा, सोगत वकर पदा गस्ट मोमी

१ २ ३ पूज का पडित', पच्छ ६ १५१, १६१

४ देखिय पूज का पडित, अपनी बात

५ देखिय पूज का पडित', पच्छ १३४, १३६

६ पूज का पडित पच्छ ६४

७ देखिय पूज का पडित, पच्छ १२० १२१

जी, विद्रोही सध्या की वापसी जठारह वष बाग और काँच का रास्ता गीपक तरह कहानिया को स्थान दिया है। उ हाने इनम सामाजिक और पारिवारिक कथानका क माध्यम से पक्षित जीवन और समाज क प्रति विभिन्न व्यय चित्र अन्तित किये हैं। नारी की समस्याओं और भावनाओं को मूल रूप देने में नमिका विगम सफल रही है। प्राय सभी कहानियाँ सक्षिप्त एवं रोचक हैं और उनमें विषय की दृष्टि से अनन्यपता विद्यमान है। जेठानी जो सोगत वकर और मोसी जी गीपक कहानियाँ रखाचित्र की गती में लिखी गई हैं। अभागिन, टनी मनी पगण्डिया और जठारह वष बाग गीपक रचनाओं में नारी क प्रति पुरुष क विवासपात और कयवहार का चित्रण है। गण्डा त्रम विगही और काँच का रास्ता में जाकस्मिक मयाग ह्यय परिवर्तन अवस्था स्थिति परिवर्तन की सहायता से जीवन क विभिन्न अभावग्रस्त चित्रों का मुखान्त रूप प्रगान किया गया है।

आलोच्य नल्लिका न समाज क विभिन्न धना से पात्रों का चयन किया है और उनकी विगपताओं को मनोवर्णनिक रीति से उभारा है। मस्कान अभागिन टेडी मनी पगण्डियाँ भ्रम काँच का रास्ता जालि कहानियाँ में नायकाओं की दृष्टा मरन विगम विगगता कुठा महनगीलता भातत्व आदि का सफल अवन हुआ है। जेठानी जो मजेठानी जी का और सोगत वकर मदीवान जी का यग्यपूण चरित्राकन रिया गया है। अधिकांश कहानियाँ मपात्र यन्तितविशेष होते हुए भी समाज के विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करत हैं। कथानक में स्पष्टता और गति लान क लिए लल्लिका ने सक्षिप्त एवं सारमभित कथापकषम की योजना की है। इन सवालों ने कथानक क साथ साथ चरित्र विकास में विशेष योग दिया है।

प्रस्तुत कहानियाँ समाज की विचार सकीणता स्वायपरता, अय लोनुपता और पुरुषों की नारी जाति क प्रति हृदयहोनता क यग्यपूण चित्र अन्तित हुए हैं जिह प्रत्यक्ष कथन क अतिरिक्त सवालों द्वारा ना वन्त किया गया है। समाज की इन विभिन्न परिस्थितियों क चित्रण में लल्लिका ने दगाव और उहस्य की भी ययोचिन योजना की है। उहान पाठक को सामाजिक क्षिण से सावधान करत हुए यह सदा दिया है कि उम परिस्थितिजय बाबाओं की अवहवना करक आत्मनिभर बनना चाहिए।

श्रीमती बान्ना सिहा की भाषा सरल साहित्यिक एवं मुहावरेदार है। गलीगल प्रवाह एवं रोचकता का यह उदाहरण द्रष्टव्य है— प्रतीची में उतरते हुए सूय की अतिम और पीनी मिरणा का निध्मन प्रकाश चम्बा की पहाडियाँ—नन्नी क उस पारवान—गाँव क साथ अटखनियाँ कर रहा था। ज वनार जब नी सघन न हो पाया था। वन क पता दन वसरा उन का तयारी कर रहे थे। नन्नी क विनारा क वधा की पुनर्गिया पर मुत्तर मुत्तर चिडिया का समूह ऊँचा भून रहा था और दूर बन्त दूर नन्नी क विनार

एक कतार बाँधे, गाव की सात आठ स्त्रियाँ पानी भर रही थी।" अतः यह उल्लेखनाय है कि श्रीमती सिन्हा व्यंग्यपूर्ण लघु आख्यायिकाएँ लिखन में सफल रही हैं। इनमें भावविषयक रोचकता एवं सजीवता तो है ही, भाषा शैली की प्राजलता भी इनका सहज गुण है।

३१ श्री उषा प्रियम्बदा

श्री उषा प्रियम्बदा की कहानियाँ पत्र पत्रिकाओं में प्रायः प्रकाशित होती रहती हैं किन्तु कहानी सफलता के रूप में अभी कबल 'जिंदगी और गुलाब' के फूल का प्रकाशन हुआ है जिसमें निम्नलिखित बारह कहानियाँ संकलित हैं—परम्बुलेटर, माहब ध, जाले, छुट्टी का दिन कच्चे घाग, पूर्ति कटोली छाह, दो अक्षरे चाँद चलता रहा दण्टि-दीप, वापसी जिंदगी के फूल। यद्यपि इस संकलन का नामकरण अंतिम कहानी के शीर्षक के अनुसार किया गया है तथापि यह उल्लेखनाय है कि प्रायः प्रत्येक कहानी में इस शीर्षक की छाया विद्यमान है। व्यक्ति अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए अनेक कल्पनाएँ करता है जो गुलाब के फूल की भाँति सुंदर और सरम होती हैं, किन्तु प्रायः जीवन के यथाथ की कठार गिलास टकराकर बचूर बचूर हो जाती है और व्यक्ति पीड़ा से सिसककर रह जाता है। इस संग्रह की कहानियों में कल्पना पर यथाथ की इसी विजय का दिग्दर्शन कराया गया है। उदाहरणार्थ परम्बुलेटर की नायिका बालिंदी अपने भावी शिशु के लिए सुंदर परम्बुलेटर को उमंग-सहित खरीदती है किन्तु उसकी कामना पूरी नहीं हो पाती क्योंकि शिशु का जन्म होने पर आर्थिक अभावों के कारण उसकी आपत्ति आदि के लिए परम्बुलेटर को बचना पड़ता है। दो अक्षरे में मुमिना मोहम्मद में अचला, कच्चे घाग में कुन्तल दण्टि १५ में मधुर आदि पात्र प्रेम-माग की सफलता के मधुर स्वप्न देखते हैं किन्तु प्रेमी अथवा प्रेमिका की अनिच्छा अथवा अपनी विवशताओं के कारण उनकी आशाएँ अतृप्त हो रह जाती हैं। जाले कटोली छाह और वापसी में भी पात्रों की अमंगल कल्पनाओं और तज्ज्वलित कुठाओं के चित्र अंकित किए गए हैं। छुट्टी का दिन पूर्ति तथा चाल चलता रहा इस विषय में अपवादस्वरूप हैं। छुट्टी का दिन में नायिका माया की दिनचर्या का वर्णन है तथा अन्य दश कहानियों में यह व्यक्त किया गया है कि जीवन में होमियन कुछ आकस्मिक सहाय्य व्यक्ति की जीवन शिष्टा को अथवा व्यक्ति के आमूल परिवर्तित कर देती है। श्री उषा प्रियम्बदा ने जो कथा चित्र प्रस्तुत किए हैं। उनमें व्यक्ति की कुठाओं पीड़ाओं अतृप्त आकांक्षाओं आदि का ही दृष्टि में रखा गया है। नारी हान पर भी मुग्ध और स्वस्थ भावस्थ जीवन के चित्र उनकी रचनी में अंकित नहीं हुए यह आश्चर्य की बात है। इसका कारण यह है कि वर्तमान युग में व्यक्ति के भावनाओं को सर्वोपरि महत्त्व देने का जो सहर-सी चल पड़ो है वह इसमें यह नहीं है। फिर भी, वर्तमान जीवन की समस्याओं का चिन्तित करने में यह पयास सफलता प्राप्त हुई है।

प्रियम्बदा जी की कहानियाँ का विकास मुख्य रूप से पात्रों की मानसिक भावनाओं के माध्यम से हुआ है। उनके पात्रों की वृत्तियाँ प्रायः अन्तर्मयी हैं। उदाहरण के तौर पर नारी की जीवन समस्याओं को विशेष आग्रह से चित्रित किया है और यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया है कि आज की भारतीय नारी प्राचीन नारी की भाँति त्याग अथवा तप का जीवन यत्नीत न करके व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की सर्वाधिक आकांक्षा रखती है। इसीलिए माया (छट्टी का दिन) तारा (पूति) और मुमिना (दो अक्षर) स्वतन्त्र रूप से अर्थापान करके यह समझती है कि अब उन्हें किसी पुरुष के आश्रय का आवश्यकता नहीं रही कि तु उस स्थिति में भी क्या वे प्रसन्न रह पाती हैं? वे अपने मन में जिस रिक्तता और एकरसता का अनुभव करती हैं लगभग वही आकांक्षा (दो अक्षर) और चन्दा (दृष्टि दाप) की है क्योंकि वे विवाह करके भी इसीलिए प्रसन्न नहीं रह पाती कि पुरुष के लिए अपनी च्छाया का वसिदान उनके मानस में क्षाब्ध हुआ खीझ और हीन भाव को जन्म देता है। वस्तुतः नारी स्वातन्त्र्य की दुहाई देकर वर्तमान युग में नारों के साथ व्यवहार ही किया है। पहलू वह अपने आदर्शों की छाया में प्रत्येक स्थिति में मनुष्य रहती थी और अपने उदात्त गणों द्वारा उदात्त की पात्रों की कि नु अब का भी स्थिति उस अपने अनुकूल प्रतीत नहीं होती। किन्तु आज सुमस्कृत नारी (कटीनी छाँह में च्छाया वापसी में गजाक्षर की पत्नी आदि) पति की अपेक्षा अपने मुख का अधिक महत्त्व देती है। पुरुष पात्रों में परमेश्वरी (परम्युनेटर) और नरिन (पूति) के अतिरिक्त अन्य पात्रों में तो स्वयं अपनी पत्नी अथवा प्रेमिका से विश्वासघात करते हुए या उनकी पत्नियाँ अथवा प्रेमिकाएँ परिस्थितियों अथवा जानबूझकर उनकी उपेक्षा करती हैं अथवा विश्वासघात करती हैं। वस्तुतः आलोच्य लेखिका ने स्वस्थ एवं अनवरणीय चरित्र प्रस्तुत न करके पात्रों की समस्याओं और भावनाओं के यथार्थवादी चित्र अंकित किए हैं अतः उनके द्वारा किया गया चरित्र चित्रण एकांगी माना जाएगा। पुरुष पात्रों की सृष्टि मानो नारीयों के चरित्र चित्रण के लिए ही हुई है अतः किसी पात्र में किसी उत्प्रेक्षणीय विषयों के स्थान नहीं होता।

श्रीमती प्रियम्बदा ने इन कथाओं में मुख्य रूप से पात्रों के चिन्तन प्रवाह को यत्न किया है किन्तु चरित्र चित्रण में सुविधा के लिए पात्रों के मध्य भावों के आशय प्रदान की भी गंभीर योजना की गई है। उन्होंने सवाल को सबल संक्षिप्त रखा है तब बितक अथवा विचार विमर्श के लिए दीर्घ सवाल का योजना उन्होंने नहीं की। यद्यपि स्वकृति में सवाल ने अत्यन्त वे विचारों में विचार योग नहीं दिया है तथापि यह उत्प्रेक्षणीय है कि कथोपकथन ने पात्रों के चरित्र को दोष की सीमा तक अन्तर्मुखी होने से बचा लिया है। सवाल की भाषा को पात्रों के स्वयं की भावना से लेखिका ने अतिशय पात्रों की भाषा में तन्मय करने का और निश्चित पात्रों की भाषा में अग्रणी भाषा का वर्णन से प्रभाव किया है। कतिपय उक्तियाँ में तो अग्रणी भाषा इतनी प्रमुख हो गई है कि लेखिका की स्वयं प्रवृत्ति की सराहना नहीं की जा सकती। उदाहरणार्थ

पूर्ति' कहानी में सुनीला की यह उक्ति देखिये— 'बट तारा, यू हैव इम्प्रूव्ड आई मीन, यू आर बुकिंग एज इफ —इफ —इफ ।' १

नारी जीवन का विदलण करत हुए लेखिका न केवलिक जीवन का समस्याओं का मनोविज्ञानानुसार चित्रण किया है। सवय और अगाति के इस युग में व्यक्ति किसी भी दिशति में अपने का मनुष्ट नहीं पाता। क्याकि भौतिकवाद ने उसकी समस्त वस्तियाँ को अपने में केन्द्रित कर लिया है। पर के लिए बलिदान के भाव प्रायः लप्त हो चके हैं—नारी हो या पुरुष जहाँ उसे अपनी स्वच्छन्दता में किसी भी बाधा का आभास हुआ, वही उसकी कुठाएँ उभर आती है। स्वतन्त्र रूप में जीवन बिताने में मन में रिक्तता और अभाव का अनुभव होता है और विवाह बंधन में बंधन पर स्व की भावना का त्याग असह्य हो उठता है। इसलिए इन कहानियाँ में ययायवाद की प्रधानता है। कल्पनाओं का प्रसाद बनाता मानस की सहज प्रवृत्ति है, किन्तु ययाय का गहन कल्पनाएँ प्रायः सफल नहीं होती—यही सिद्ध करने के लिए इनकी रचना की गई है।

आलोच्य कहानियाँ की भाषा विषयानुकूल सरल और यावहारिक है। वाक्य तन्त्र एवं सारगर्भित हैं—यथ के गण्डम्बर अथवा भावुकता से भाषा को कहीं भी बोझिल नहीं बनाया गया है। गली रोचक एवं प्रभावपूर्ण है, जिसमें सबकुछ सहजता का मृदु आवरण है। भाषा में सहजता लाने के लिए लेखिका ने तदनुव एवं विदली गण्टो का भी प्रचुर प्रयोग किया है। उपाहरणम्बरूप निम्नलिखित उक्ति का अध्ययन पर्याप्त होगा— तारा की आँखा में चौड़ापन था। बिना साँच ही उसके दोनों हाथ वाला पर धन गण उह छकरी ठीक कर वह जल्दी से जेब में ही वहाँ से चले पड़ी। उसके अग्रमन पर चले रह था पर उस दिखाई नहीं दे रहा था। उसका आँखा के आगे उव पृथक्ता भा हो गया था। अपनी भावनाओं की तीव्रता ने उस स्वयं ही गहना दिया था। १ यस्तुत यह कहा जा सकता है कि प्रियम्बदा जी का कहानियाँ में युग का समस्याओं, सम्भावनाओं और आकाशवाणी की मुखर अभिव्यक्ति रही है और गण्डम्बर युग में न केवल यज्ञता ने उसकी कहानियों को कृत्रिमता से मुक्त रखा है।

३२ सुश्री उपा

सुश्री उपा के छिद वस्तु में भाषा गीषक कहानी संग्रह में निम्नलिखित संग्रह के निम्न का स्थान प्राप्त हुआ है—मनका रभा उवगा, नास्त आश्रिता, मान और हठ नष्ट नीड पूर्ति नई कापन लूकान व बाण, मुक्ता और गणि अकला राह विपरीतित नया नोट क्रियम त आया। सकारण रूप में प्रकाशित हान व पूर्व में कहानियों गरिता में स्थान पा चुकी थी। इनमें पारिवारिक जीवन का सुगन्धु उममा विविध अनुभूतियों व सहज चित्र अंकित मिल गये हैं। मुख्य रूप से इन कहानियों में

सफ़्त अथवा असफ़्त प्रेम की भाविया की अवतारणा हुई है और गौण रूप से निम्न लिखित विषयों को स्थान मिला है—दाम्पत्य जीवन की नीरसता अथवा मरमता विषम परिस्थितियों के कारण किसी अनाथ पान अथवा पात्रा की पराश्रयिता अतजातीय विवाह और सामाजिक विरोध माता पिता के द्वारा सत्तान के लिए उपयुक्त जीवन साथी की खोज में सफलता अथवा असफलता ।

उपा जी ने अपने पात्रों को प्रायः पारिवारिक जीवन में बना है अतः स्वभावतः उनमें परिवार सुलभ ईश्या द्वय स्नेह-सहानुभूति घणा उपजा कटता मनुता जाति भावनाओं की प्रसंगानुकूल अभिव्यक्ति हुई है । मध्यवर्त्ति परिवारों में नारी को पुत्री भगिनी पत्नी माता जाति विविध रूपों में जिन कालों और मधुर परिस्थितियों में से होकर गुजरना पड़ता है उनको दृष्टि में रखते हुए लेखिका ने प्रायः भारतीय नारी के सहज स्वाभाविक चरित्र प्रस्तुत किये हैं । पुरुषों के चरित्र भी इसी प्रकार प्रसंगानुकूल रहे हैं । जिन पात्रों एवं पात्राओं का प्रभो प्रेमिका के रूप में चित्रित किया गया है उनकी सबदशाओं एवं कामल स्निग्ध भावनाओं के अंकन में लेखिका का प्रायः सफलता मिली है । इस कथा-संग्रह में वयनात्मकता के शब्दों में नाटकीयता कथानकों का अभिलिखन रही है । सवादों को स्वतन्त्र रूप में आयाजित न करके लेखिका ने उन्हें प्रायः घटनाओं अथवा पात्रों के कार्य व्यापारों के मध्य प्रस्तुत किया है । उन्होंने कथोपकथन का सजीवता एवं चित्रात्मकता से विभूषित करते हुए प्रायः वक्ता की मनस्थिति एवं गतिविधियों के संकेत दिये हैं । यथा—

माथ पर चढ़न का टीका अथ प्रभावगाली तिवारी जी ने पूछा तुम्हारे माथ पर नहीं है ?

मिर हिनाकर जताया— नहा

ठाकुर करनसिंह तुम्हारे कौन हैं ?

मणि के परकाश और वह दीवार की टेक लेकर खड़ी हो गई फुमफुमाकर कहा काइ नहा ।^१

प्रस्तुत कहानियों में हिन्दू परिवारों में ध्याप्त घरतू वातावरण की सहज भाविया अवस्था की गई है । परिवार के परिवर्ग में रहकर व्यक्ति को समय-समय पर जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है उनको लेखिका ने सफलतापूर्वक चित्रित किया है । वस इस शिष्टा में उनकी दृष्टि 'यापक' समस्याओं की ओर न जाकर मुख्य रूप से प्रेम और विवाह तन्त्र ही सीमित रही है । वस्तुतः पारिवारिक भाविया के अन्तर्गत् प्रेम की कारण एव मधुर अनुभूतियों का जन्म-पल्लव देता ही कहानी लेखिका का उद्देश्य है । उद्देश्य की दिशा में अत्यधिक सजग रहने के कारण उन्होंने परिवार और समाज में ध्याप्त अथवा अनक बोझों की ओर प्रायः दृष्टिपात नहीं किया । उक्त तथ्य को प्रस्तुत कहानियों की

दुखलता कहिये जयवा सबलता, फिर भी कथानक में वर्णित भावा की मामूलीता एवं प्रभावोत्पादकता निर्विवाद है। आताक्ष्य कहानियाँ वात्तालाप की सरल एवं सुबाध गली में लिखी गई हैं। जनान्वयक गण प्रवाह जयवा गली शैल्य का दोष कही दृष्टिगत नहीं होता। वर्णनात्मक एवं नाटकीय गणियाँ क मिश्रित प्रयोग से लेखिका ने भाव एवं अनुरूप ही स्पष्ट एवं स्वच्छ अभिव्यजना गिल्प का विकास किया है। कुल मिलाकर इनकी कहानियाँ सहज मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी हैं।

३३ श्रीमती आगरानी जणु'

श्रीमती आगरानी का कहानियाँ लहरें बोल पाती गीपक कहानी-मग्न ह म ग्यारह कहानियाँ संकलित हैं जिनमें गीपक नाम का इम प्रकार है—का कहानियाँ लहरें बोल पाती मुस्कान का मूल्य विश्वास की डोर में निरंतर एक कप चाय, मृत्यु जयतरण सत्यता की पत्त रवा में निरंतर संध्या तारा क्या गप रहा। इनमें से प्रथम दो कहानियाँ में दो भिन्न कथानकाँ द्वारा अक्ष भक्ति का भावा का पापण किया गया है। का कहानियाँ लहरें बोल पाती का नामक मराठा सनाध्यक्ष दामोदर पहल नत्तकी कल्याणी क रूप का उपासक था किन्तु जब रूपमविता यगमविता कल्याणी ने उसकी उपधा का ता उसने अपनी चित्तवृत्तियाँ को दण सवा में एकाग्र किया। मुस्कान का मूल्य में सन १८५७ की क्रांति का चित्रण करत हुए नत्तकी अजीउन का दण के लिए आत्म प्रदान का चित्रण किया गया है। गप नी कहानियाँ में व्यक्ति तथा समाज का दुर्भाव के विरुद्ध विद्रोहात्मक कथानक प्रस्तुत किया गए हैं। विश्वास की डोर में रतन जीर छवि के स्नेह का दो गेणा से चित्रण किया गया है—रतन छवि का अपनी प्रेमिका सममता था किन्तु छवि उस भ्रातावा मानती थी। समस्या का समाधान छवि का अन्य विवाह हान जीर उसका द्वारा रतन की समझाने का रूप में हुआ है। नत्त कीरण में बच्चा रानी अस्पश्यता का कटार समादिका थी किन्तु उसकी पौत्री गनी को माग में तपावग से मूर्च्छित देखकर शिन् चमार ने पानी पिल कर उसकी रक्षण की। इस प्रकार उसने रानी की मायताजा पर तीखा प्रहार करके मानो नयी कीरण प्रवृत्ति की।

एक कप चाय गीपक कहानी में सखिया ने धनी नीना और निधन कीरण की के माध्यम में यह सिद्ध किया है कि निधन का तुच्छ दान धनी का बहुत दान से अधिक महत्त्वपूर्ण है। निधन का दान का मूल्य बुझाने का लिए जीवन में अनक अभाव का सामना करना होता है, किन्तु धनी की गुन सुविधायाँ में दान दन से तनिक भी अंतर नहीं पता। मृत्यु अवतरण में सामाजिक व्यवस्था की चर्चा करत हुए मृत्यु की अनिवार्यता प्रकट की गई है क्योंकि प्रजापति ने मृत्यु का विधान मानव हृदय की शान्ति के लिए ही किया था। सन्न्यता की पत्त में बाधुनि सन्न्यता का खोखलपन पर व्यंग्य किया गया है। कथानादन राजन की कृतियाँ स्त्री की जाण्टिदायक जीवनमिलता था वह उसका मोकर दोनू के लिए दुःख था। राजन की पत्नी छह बच्चा की माता बनकर

बनत मुरभा चुकी थी जबकि स्त्री की प्रसव व पूर्व ही टीका लगवा दिया जाता था जिससे उसका मौ-दय जखत रहे। रजा में नायक राजा द्वारा अपनी बीमार पत्नी रेवा में विश्वसपात करके उसका सघोर रज्जु से सम्बंध स्थापित करने और रेवा द्वारा उनके सुख की कामना से यह त्याग वर्णित है। प्रेम चिह्न में दृष्टवर्ण कुमारी के विवाह की समस्या और रज्जु समस्या का चित्रण करते हुए इन समस्याओं से पीड़ित कथानायिका गौरी द्वारा आत्महत्या का प्रयास करने और सुधीर द्वारा उसकी रक्षा करके उससे विवाह कर देने की कथा का रोचक और विचारोत्तजक गंभीर प्रस्तुत किया गया है। इसमें वर और बहु के समान सामाजिक स्तर पर बन गिया गया है। इस कथा द्वारा मे नायिका रेवा का विजातीय मनुष्य विवाह में पान और सजातीय विजय में विवाह हान पर कान्तर में मन द्वारा दिये गए प्रसोभना का भारतीय नारी की गरिमा के अनुरूप जस्वीकार करने का वर्णन है। कथा में रेवा में सीतल माता का सम्भावना का पहचानने वाले परिवार के प्रति योग्य किया गया है। कथानायिका साता का अपने सौतेले पुत्र रजन के प्रति सच्चा स्नेह का चित्रण रजना की दादी और उसके पिता के अविश्वास में साता को उससे दूर रहने को विवश कर दिया।

उपयुक्त कहानियाँ में दामोदर अजीवन रेवा सुधीर सीता तथा रजन के चरित्र विषय भाषिक बन पडे हैं। काग तहरे बोल पाती और मुस्कान का मूल्य में श्रम दामोदर तथा नाना साहब ऐतिहासिक पान हैं किन्तु लेखिका ने चरित्र चित्रण के लिए इतिहास की रखाभा में कल्पना के सुन्दर रंग भरे हैं। लेखिका ने कुछ कहानियाँ में पाना के अंतर्द्वारा सहज सजीव चित्रण किया है। कथा में रेवा में सीता और रजन की पक्षिगत कुटुम्बा को अत्यंत सफरता से उभारा गया है। पात्रों के भावों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए सक्षिप्त एवं सारगर्भित कथोपकथन की योजना की गई है। रेवा में पान कहानी में रेवा और राजा के वास्तविक में राजा की चारित्रिक दुबलता और रेवा के प्रेम की महानता एवं चारित्रिक दृढ़ता की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है।^१ यस्तुत इस संग्रह की अधिकांश कहानियाँ में व्यक्ति और समाज पर योग्य किया गए हैं जिनमें दण्ड-कान और उद्देश्य नाना मखर रहे हैं।

श्रीमती आगरानी की कहानियाँ की भाषा परिष्कारित और साहित्यिक है। उन्होंने गंभीर भावानुरूप सरलता जयवा गम्भीरता की उचित योजना की है। गंभीर स्पष्टता प्रवाह और गम्भीरता का यह उदाहरण द्रष्टव्य है— स्त्री जब तक अनमारी में सुरक्षित पुस्तक के समान बंद रहती है तो मोन ही रहती है पर एक बार पुनः जान पर खतरी हो चली जाती है। लेखिका ने कथा में रेवा की रचना पत्र गंभीर की है। इसमें रजन ने सीता के प्रति सीता ने अपनी सखी गीता के प्रति और रजन के पिता ने सीता के प्रति

१ देखिये काग तहरे बोल पाती पृष्ठ ८१-८०

२ काग तहरे बोल पाती, पृष्ठ ८५

पत्र लिखकर अपने अपने भावा और कुठावा को भिन्न दृष्टिया से व्यक्त किया है जिससे कहानी में निगिष्ट गतिवता जा गई है।

उपयुक्त विवरण से स्पष्ट है कि श्रीमती आगरानी में कहानी लेखन के लिए अप्रतिष्ठित सूक्ष्म अतृष्ट विद्यमान है और उनकी अविकान कहानियां में उसका सफ़ा प्रतिफल हुआ है। तारी होने के नाते उहाने नारी का परिस्थितिया, समस्याओं भावनाओं और उसके गौरवपूर्ण आदर्श सहज चित्र अंकित किये हैं। रुढ़िवादिता छत्राधूत, वर्तमान समाज की कृत्रिमता आदि को लेकर उहाने तीव्र व्यंग्य किए हैं और व्यक्ति की दुर्घलताओं का अंकन करते समय उनके कारणों का उचित विश्लेषण करके सर्वजनप्रवणता का परिचय दिया है।

३४ श्रीमता सुमन कारलकर

श्रीमता सुमन कारलकर ने महाराष्ट्र प्रदेश को हाकर भी हिंदी में कथा रचना की है। इनके अधूर चित्र गोपक कहानी संग्रह में दस कहानिया का स्थान मिला है— अधूर चित्र अपने राज में अपाहिओं की टोली, जीवन ज्योति, विदा विद्या भवन दोष किसका है आदि। इन कहानिया में समाज की निम्नलिखित कुप्रवृत्तिया का चित्रांकन हुआ है—(अ) मुह से भवेना प्रकट करनेवाले किन्तु श्रवहार में निधना का गदा काटनवान नताओं का कुलित प्रवृत्ति (आ) सामयिक जभावा का विस्मरण करके नाया रूप में ग्रहण करके ग्रहण करनेवाले साधुओं की रुढ़िवादी हठी प्रवृत्ति (इ) आर्थिक पक्ष में पत्रस्वरूप अभिजात वर्ग का दम्भ एवं अनाचार और पीडित-वर्ग के कष्ट (ई) जातीय भेदभाव (उ) विधवाओं और सीतेली माताओं पर अकारण ही लाछन उगाने की हथ भावना (ऊ) पतिता के उद्धारक को भांति भांति की यंत्रणा देकर लक्ष्य अष्ट करने की प्रवृत्ति आदि। उक्त कहानिया में पात्रों का प्रवास यही रहा है कि वे यथाय स लक्ष्य करके आदर्श की स्थापना करें। कतिपय कहानिया में ऐसे पात्र अपने आदर्श में गफलत रहें हैं और अन्यत्र उह मुह की खाना पनी है। आदर्श पात्रों में दवत्त वितास श्याम राधा दीपक जीवन ज्योति अशोक चण गोभा तारा मोहन, उषा विद्या तथा डाक्टर के नाम उल्लेखनीय हैं। उक्त पात्रों में कथानक के अनुरूप दंगसवा ग्राम सुधार, प्रेम का पावनता एवं एकनिष्ठता पति प्रेम पतित पात्रों का उद्धार आदि विविध क्षेत्रों में अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। इनमें से तारा डाक्टर आदि कतिपय पात्र समाज की हृदयहीनता के निवारण हाकर अपने लक्ष्य को पूरा करने के पूर्व ही मरणाप्त हो गये किन्तु अन्य पात्रों में समाज के विरोध को जीतकर आत्म के जीवन्त उदाहरण स्थापित किये हैं। असन् पात्रों में दागी बकना तबीर के फकीर साधु यासना न कीट तथा धन के भव में उमत्त सठ, जातीय भेदभाव से मुक्त समाज के कणधार नारी की निष्ठा की हत्या करनेवाले मनुष्य पुत्रा एवं दामास् का जीवन विपन्न बनाने वाली जनता आदि पात्र उल्लेखनीय हैं। इनमें से मकुन जमुना प्रकाश आदि कतिपय

पात्रवाद में अनुरोध करने अपने पूरे अपराधों का परिणाम कर लेते हैं। चित्रिका ने यह उचित ही किया है कि समाज के दुबले एवं सख्त पक्षा का चित्रण करने वाला प्रकार के पात्रों को प्रस्तुत किया है। "मैंसे अगले एक अमुक्त के त्याग का महज प्रेरणा प्राप्त होती है।

चित्रिका ने संक्षिप्त एवं सारगर्भित संवाद योजना द्वारा कथानक। में नाटकात्मकता का स्वरूप की स्थापना की है। पात्रों की उक्तियाँ में उनके आन्तरिक मनोभावों का प्रकाशन तो हुआ है। यथाप्रसंग उनसे कथानक, चरित्र चित्रण देगकाएँ एवं उद्देश्य के विकास में भी योग प्राप्त होता रहा है। "न कहानियाँ में कथोपकथन सामयिक सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों के उल्लेख में सर्वाधिक सहायक रहते हैं। उदाहरणार्थ अन्तर चित्र कहानी में भिक्षाग्नि एवं दबदब का यह वातावरण स्पष्ट है—

आप घर छोड़कर कहाँ जा रहे हैं बाबूजी ?

भूतान आगान में सम्मिलित होने के लिए आज ही नामका गाड़ी से रवाना होनेवाला हूँ। अपना गरीब जीवन जनसेवा में ही बिताने का मैं निश्चय किया है। आज से यह विश्व ही मेरा घर है।

भगवान् यन्त्र हा मुना है। लेकिन बाबूजी किससे क्या होगा ? उसने उत्तुंगता से प्रश्न किया।

इससे जन साधारण का जीवन सुख समृद्ध तथा समान बनगा। अथ तबट बकारी निधनता और नवमरा का सदा के लिए अंत होगा। मगरबारी नवोत्थ समाज का निर्माण होगा। गति स्थापित होगी। इस नान नान बनने और भारत में रामराज होगा। सभी ।^१

प्रस्तुत कहानियों का रचना रुढ़िवादी काल में बद्ध तथा अज्ञान के अंधकार में निष्ठ भारतीयतामयों के बौद्धिक नतिक एवं सामाजिक उत्थान की भावना से हुई है। फलतः इनमें देगाना एवं उद्देश्य दोनों मखर रहे हैं। कतिपय कहानियों के अंत में नमिका में भाव विह्वल होकर उद्देश्य कथन भी किया है किंतु इसके लिए उद्देश्य पाठकों का सम्भावित करने की प्रवृत्ति नहीं अपनाई है।

धामती कारनकर न सरल वाक्यहारिक भाषा गली में कथा रचना की है किन्तु सरलता का जाग्रतता उद्देश्य का मूल रूप को हानि नहीं पहुँचाई है। उनके वाक्य संक्षिप्त तथा सरल हैं जो गली में वाक्यरूप प्रमाणगुणमयी एवं प्रभावपूर्ण है। गली में चारता नान के लिए उद्देश्य उमे भीतर वर्णनात्मक न रखकर यथास्थान नाटकीयता के समावेश का जोर भी ध्यान दिया है। उदाहरणार्थ अपने राज में गोपक कहानी में यह परिस्थिति चित्र देखिए—

सब त्योहार छुट्टिया और उन सबका जान-द य कवन महला म ममाय रहते हैं जहाँ तिन रात रुपये पसा की मचुर भकार स बातावरण गूजता रहता है कापडिया म नहा । वहाँ ता दिवाई दते है कवल आसुआ व माना और भूष प्यास निल का दद भरा बाह । 'समाज क प्रति लेखिका व मन म गहन सवेना प्राप्त है अन तदनुरूप वणन प्रसंगा म उनकी भाषा शब्दी भी वसी ही मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी हा मई है ।

३४ सुधा विजयलक्ष्मी गौर

सुधी विजयलक्ष्मी गौर न आधी और तिनके सापक कहाना संग्रह म बारह कहानिया का समावेश किया है जो इस प्रकार हैं—रजिता, रणु और यग उजान का अघकार अतीत विनकार आधी और तिनके दीवार दा राह जाय बहुत आग एक पहनी, नया सूट गीला और रवी कहानी का अंत । इन कहानिया म एक जार जायन के रामास का चित्रण है दूसरा जार आर्थिक विपमताआ स पीड़ित निम्न मन्त्रांगीन समाज की वर्णन क्या है और तीसरी आर चित्रकार एन एक पहला म मध्यमान इतिहास स दो प्रम कथाएँ प्रस्तुत की गई हैं । प्रस्तुत संग्रह की सबसे सफन कहानी रजिता है जिसम समान द्वारा उपलब्धता निराश्रिता रजिता ने अपन अंतर्द्वार विजय पाकर महर के मुसलमान होन पर ना उस मानवीय सहानुभूति म युक्त पाकर उसस विवाह कर लिया । इसम कथानक के सनी सून इतन सुचारु रूप म संयोजित है कि संग्रह की अन्य कहानिया म अज्ञात और आधी और तिनके त ही इसकी तुलना का जा सक्ती है । अतीत विचारप्रधान सामाजिक कहानी है जिसम राष्ट्रीय सकीणताओ क पनस्यरूप महिम स विवाहन कर पानवाली अविवाहिता गद्दी की भाव सवदनआ का आत्मकथन के रूपम चित्रण हुआ है । आधी और तिनके म बास्तर अमल और पापा क निश्छन प्रेम और परिस्थितियन दोषा की मृत्यु का कारणिक चित्रण है । प्रस्तुत संग्रह म कथानक की दृष्टि स य तीन कहानिया हा मशक्त हैं । अन्य कहानिया म या तो क्या यत अत्यधिक लक्षित है अथवा उनम भावकता की अतिशयता है जयवा उदिका न उनम परमोक्ष एव अा की सुचारु योजना नहा की है । दावार आग बहुत आग और एक पहनी की रचना लघुकथाआ क रूप म बा मई है किन्तु इनम कथानकत्व का सम्पन्न निर्वाह नहीं हो पाया है । रणु और यग एव कहानी का अंत परस्पर पूरक मपाएँ हैं, अत इन दोना का पृथक्-पृथक् न निउरर एा म हा समाधिष्ट कर लिया जाता तो अधिक अच्छा रहता ।

सुधी विजयलक्ष्मी न कथा-याचना की अपना चरित्र चित्रण न अधिक सफलता प्राप्त बा है । महर और डाक्टर अमल क अतिरिक्त चित्रकार गीषक कहाना म कालि वधन का भी जागवादी नायक क रूप म प्रस्तुत किया गया है । रणु और यग न यग

वा दृष्टिकोण यथावदादी रहता है क्योंकि रण के प्रति उसका भावनात्मक प्रेम की ज्योत्स्ना मानना की अधिकता है। नारी पात्रों में ज्ञान में रोमांच का व्यक्तित्व भी इसी प्रकार वासनाप्रधान है। रजिता को रजिता के जन्म और व्यक्तित्व का विवेक करने में सर्वाधिक सफलता प्राप्त हुई है। जाँची और तिनक में गोपा और दो राह में रत्ना के चरित्र को भी अन्तर्दृष्टि के माध्यम से दीप्ति प्रप्ता की गई है। रजिता न चरित्र विकास में कथोपकथन के माध्यम का भी प्रायः दृष्टिपथ में रहता है। अतीत और नया मूढ गोपा और रत्नी ऐसी ही कहानियाँ हैं जिनमें मर्यादा योजना का जगता आत्म चिन्तन जयवा प्रत्यक्ष कथन की गयी का आधार दिया गया है। जगत में कहानियाँ में अधिकांश कथोपकथन या तो समाजव्यापी आर्थिक रूप से सम्बद्ध हैं अथवा पाना ने प्रेम के भावकतापूर्ण उत्प्रेरण का यन्त्र किया है। उदाहरणार्थ चित्रकार में कालविवर्धन के प्रति मुनखा की यह उक्ति देखिये— आज तक मैं नहीं समझ पायी चित्रकार कि नमः स्वयं चित्र हो अथवा चित्रकार? तुम इतने सम्भोर इतने मुग्ध इतने आरुपक और ज्ञान प्यारे क्या हो चित्रकार?

आलोच्य कहाना समग्र में अधिकांश कहानियाँ सामाजिक हैं जिनमें समाजवादी दृष्टिकान की अभिव्यक्ति के प्रति जागरूक दृष्टि का परिचय दिया गया है। रजिता ने जीविकाप्राप्त करनेवाला महिलाओं की समस्याओं का चित्रण को प्राथमिकता दी है। रजिता रण गयी दीपा रत्ना जाँची के माध्यम से उन्होंने ऐसी नारियों की जीवन चर्चा के विविध रूपों को पथक पथक निरूपित किया है। यह एक स्थान पर एकत्रित कर देने पर रजिता के दृष्टिकोण को समझना कठिन न होगा। शिक्षिता नारी कवन अर्थों पानन के लिए काम करने में भाग नहीं लेती अपितु उसका एक उद्देश्य व्यक्ति का विकास भी होता है। रत्ना का निम्नलिखित आत्मवचन भी तथ्य का बोधक है— अनूप से उस प्यार है। मगर अपना व्यक्तित्व अस्तित्व भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। क्या पुरुष का प्यार नारा का स्तन महँगे मूल्य पर ही मिलता है? कुछ बनने के सपने जा यह ध्वनन से देखती आयी थी क्या उन्हें मिटा देना पड़ा? रजिता सीपक कहानी में रजिता ने स्वयं विभाजन के पक्षस्वरूप उत्पन्न परिस्थितियों का संजीव वणन किया है। यद्यपि इस समग्र की दो कहानियाँ—चित्रकार एक पत्नी—मध्ययुगीन इतिहास से सम्बद्ध हैं तथापि रजिता ने ऐतिहासिक दृष्टिकान का निरूपण न करके ज्ञान प्रेम क्या-जा की ही स्थान दिया है। वस्तुतः इन कहानियों की रचना का उद्देश्य मानववाद की उभारना है जिसका पानन यथावत और जाँची की सीमा रेखाओं के मध्य में हुआ है। इस प्रकार रजिता न दृष्टिकान का उद्देश्य की अभिव्यक्ति में सहायक रहता है और यही कारण है कि इन कहानियों में जाँची विषयताओं का चित्रण भी वापक रूप में प्राप्त है।

मुन्नी विजयलक्ष्मी की कहानियाँ बापा गली की दृष्टि से भी पर्याप्त प्रसिद्ध हैं। वर्षान्त उनमें गति-क विकृति तथा और वाक्य विन्यास की असंगतियों को स्थान नहीं मिला है। उनकी अधिकांश कहानियाँ में भावुकता और चिंतन का अन्तर्मिश्रण है जिसमें फलस्वरूप शरीर में सरलता और गम्भीरता का स्वाभाविक प्रवाह रहा है। ललितका न कृत्रिम अथवा सायास से दयोजन नहीं की है, फलतः मानव व्यवहार तथा परिस्थितियों के स्वाभाविक चित्राकन में उन्हें यथोचित सफलता मिली है। उदाहरणार्थ उज्जैन का अंधकार में वातावरण का यह सजल अभिव्यक्ति देखिए— मनुजा की पीली टपक बाईं उदास नहर अफसर की लाल लाल आखा से टकराई। फिर उसके पीछे खड़ मिया हिमों को उसने देखा—फिर उसकी नजर चौटकर हथनी पर रख तावे और पीतल के उन टुकड़ों पर जाकर ठहर गया जा सत्य, 'याय और मनुष्यता जहाँ अमूल्य चीजों का भी खरीदने की शक्ति रखते हैं।'

३६ श्रीमती रत्ना थापा

श्रीमती रत्ना थापा ने सुख दुःख शीघ्र कहानी मध्यम जीवन के सुख दुःख और अन्धकार से उत्पन्न नाना प्रतिभियाँ की विश्लेषण ग्यारह मौलिक कहानियाँ प्रस्तुत की हैं जिनका नाम इस प्रकार है—सुख दुःख, दा फूल बिदा जावन की भूल, अचना निष्प्राण प्रतिमा कत्त य तिरगा बलिदान ओ आम्मी और स्मृति का पुरस्कार। उक्त आख्यायिकाओं में निम्नलिखित विषयों का उल्लेख किया गया है—(अ) साक्षात् दा फूल के प्रति निमग्न व्यवहार (सुख दुःख कत्त य) (आ) पति अथवा प्रियतम का पत्नी अथवा प्रियमी के प्रति विद्वेषासथात तथा पति अथवा प्रिय के भाग को निष्कृतिक बनाने के निमित्त नारी का भूक बलिदान (तिरगा जीवन की भूल अचना निष्प्राण प्रतिमा) (इ) सामाजिक दाया अथवा प्रिय के रूप से पीड़ित नारी का पुनर्जन्म प्राणोत्साह (दो फूल दा आम्मी) (ई) नारी द्वारा पुरुष का दण्ड भक्ति की प्रेरणा देना तथा स्वयं भी उसी पथ में अपने का पीछाकर करना (तिरगा, बलिदान स्मृति का परस्कार)। स्पष्ट है कि इन कहानियों में विषय की दृष्टि से प्रायः पारिवारिक जीवन में प्रेरणा ला गये हैं। रत्ना ने अपना जीवन घटनाओं अथवा निवृत्तियों समाज से ही विषयों का चयन किया है। इनके लिए विद्वत् व्यापक समझ और आचार उद्देश्य नहीं लिया। उनमें पति श्री रामाविह थापा कल्पन रहे हैं। प्रस्तुत कहानी प्रायः प्रत्येक कहानी में नायक का भना में नहीं होना यद्यपि कल्पन बनने अथवा महावीरचरित्र में पद प्राप्त करते दिखाया गया है। रत्ना ने घटनाओं का प्रायः स्वरूप यथावत गलाफ प्रस्तुत किया है। उक्त चयन अथवा मयाजन में सूत्र में अन्तर्दृष्टि का दर्शन दुर्लभ है। प्रायः सभी आख्यायिकाएँ दुर्लभ तथा अधिकांश में नायिका की मृत्यु और नायक

न अनुताप का समबधी चित्रण हुआ है।

विवेच्य कहानियाँ म नायकों की अपेक्षा नायिकाओं के चरित्र चित्रण पर विशेष ध्यान दिया गया है। पति अथवा प्रियतम के प्रति एकनिष्ठ प्रेम पति के सुख-सन्तोष तथा याग के लिए स्व का उत्सर्ग दर्शावित्त के माग म नायक की प्रेरणा प्रकट बनकर उह गौरवाचित करना आदि उक्त पात्राओं की उत्सर्गनीय विगपताए है। नायिकाओं के अतिरिक्त गौण पात्राए भी है जिनमें से कुछ का कहना म अत्यन्त सामान्य योगदान है तथा कुछ—विग की खरीना तथा जीवन की नून का मरियम की भाँति—अन नायिकाए हैं जो विवाहित हात हुए भी पर परया का अपन वासना जाल म आवद्ध कर धन ऐँटती हैं और उनकी पत्नियों की पीना पनुचाती है। आलोच्य कहा निया म पर्यप पात्र प्राय परिस्थितियाँ के प्रवाह म बह जानवाल दुबल चरित्र प्राणी हैं जो कुमगति म पकर साध्वी पत्नियाँ तथा प्रयसियों की उपशा करत हैं और उनका आत्मघात के हत बनत हैं। निष्प्राण प्रतिभा का राजन वनिदान का राजीव स्मृति का परस्कार का मुनीन आदि क्यानायक देग अक्ति की शिशा म स्तुत्य काय करत हैं किन्तु मका नय अधिकतर उह प्रेरणा दनेवाली नायिकाओं को दिया गया है। लेखिका न पात्रा के सुख-सुख इर्ष्या द्वेष आवग उद्वग प्रेम धडा आदि परिस्थिति जय भावा को उनके कथोपनयन मसफरतापूर्वक मखरित किया है। ये सबाद कथानक चरित्र चित्रण एवं पात्रा के विकास म विग सारगभित सिद्ध हुए हैं। विग अचना तथा वनिगान गीपक कहानियों का तो प्रारम्भ ही वास्तवताप से हुआ है।

मीमती रतना थापा ने यकितयत एवं पारिवारिक समस्याओं के अतिरिक्त भारत की समवासीन राजनातिक घटनाओं की भी चर्चा की है। तिरगा कहानी मे एक और गाथा के मत्याग्रह की चर्चा की गई है और दूरी आर दग की भावा समस्या पर विचार विमर्श है।^१ इसी प्रकार वनिगान म असम के नागा विद्राह का विस्तृत वर्णन किया गया है। प्राय लेखिकाओं न राजनीतिक समस्याओं की जार बहुत कम ध्यान दिया है अत मीमती थापा का उक्त प्रयास नि चय ही प्रासनीय है। भारतीय नारी के आदर्श चरित्र का गान करत हुए नारियों की ओर से पुरषों को साहस वीरता तथा देग नतिन का प्रेरणा गिनाना इन कहानियों का मुख्य नद्य है और किसी सीमा तक लेखिका को असम सफरता की उपरनिध भी न्द है। कित पूर्वाग्रही दष्टिकोण एवं स्थूल पानात्मक पद्धति के कारण नायक की चतना का इनम अभन साधारणीकरण सम्भव न हा मन्गा।

हात कहानियाँ म सरल नापा सधु वाक्या एवं महावरा की मि रचना का उचित ध्यान रखा गया है। दीवारा न की कान होत है जूनिदाँ चाटना आदि

महावरा' व अतिरिक्त लखिका ने कनिषय मुहावरा का स्वच्छा से रूपान्तर भा किया है। 'खून का घूट पीकर रहना' के स्थान पर 'नीम का घूट पीकर रह जाना' जाड़े हाथा लिया का अपरा लम्ब हाथा लिया जादि प्रयोग उक्त कथन क प्रमाण है। लखिका की गली म वर्णनात्मकता चित्रात्मकता एवं नाटकायता का यथाप्रसंग समावेश हुआ है। साराश यह कि श्रोमता थापान अपनी कहानिया म सुख सुव क परिस्थिति प्रेरक चित्र अंकित किये हैं। सूक्ष्म मनाव्याप्तिक प्रसंगा की अपक्षा स्थूल घटनाभा को प्रप्रय देने क कारण इनका महत्त्व अधिक नहीं है। फिर भी सामयिक राजनीतिक प्रसंगा का स्थान देने क कारण इह नुलाया नहीं जा सकता। साइस बारन एवं चरित्र की उच्चता का सदेव देने क कारण भी इन कहानिया का महत्त्व अक्षुण्ण है।

३७ सुश्री अणिमा सिंह

सुश्री अणिमा सिंह ने नारी शीषक कथा संग्रह की रचना की है, जो निम्न लिखित आठ लघु गल्पों का सकलत है—फगनेबल बीबी बुभुक्षित हृदय साधारण भून, वह नारी थी दीवार, विमाता रोमास और सुन्दरता। इनमे नारी हृदय क सवेदनशाल पक्षा का मार्मिक चित्रण किया गया है। वह नारी थी म प्रयत्नी की गरिमा का उल्लेख है, तो 'बुभुक्षित हृदय', दीवार तथा विमाता म नारी क मातृत्व स सम्बद्ध तीन करुण चित्र प्रस्तुत किय गए हैं। फगनेबल बीबी और 'रोमास' म लेखिका ने नारी क कस्तूर्य भ्रष्ट होने क परिस्थिति सापेक्ष चित्र अंकित किय हैं किंतु नारी जाति के प्रति पूर्वाग्रह से प्ररित होकर उहोन उक्त कहानिया क पुरण पात्रा को इसक सिधे दोषी ठहराया है। उदाहरणाय फगनेबल बीबी की राधा सरत एवं पतिपरायणा नारी

रमागकर लुई नामक विदगा मुक्क क साथ फ्राम चली गई। इसी प्रकार रोमास की विरण अनील पुस्तका तथा नह विथा म रवि रखनवाल पिता स प्रभावित होकर कुमाय का आर प्ररित हुई। साधारण नूत और सुन्दरता म पुरुष पात्रा को दाम्पत्य जीवन की मधुरता म विष भोजन और फलत नारा पात्राभा को मृत्यु का ग्राम बनते दियाया गया है। इस प्रकार लेखिका ने प्रस्तुत कहानिया म पुरुषा क चरित्राचन की आर समुचित ध्यान नहीं दिया। उनके चरित्र नारी की चरित्राभिपक्ति म माधन रूप होकर प्रकट हुए हैं। पुरुषों की उपधा करना तथा मनी दुषटनाभा के लिए उन्ही को उत्तरदायी ठहराकर नारा क प्रति पाठवा की महानुभूति को जख्म रखन का प्रयत्न करना पुरुष क प्रति लखिका क अयान का मूक है। यथाय का विस्मरण करके

पूर्वाग्रह प्रेरित भावना (वह भी एकांगी) की स्थापना भी तो उचित नही।

अणिमा सिंह ने इन कहानियाँ में विवरणात्मक शैली को अत्यधिक प्रशंसित किया है। फलतः इनमें सबाँ तत्त्व को विधिमान् स्थापन प्राप्त नहीं हुआ। फलतः बड़ी-बड़ी दुःखित हृदय तथा रोमांच में कोई भी स्थान ऐसा नहीं है जहाँ प्रत्यक्ष रूप से पात्रों के मध्य सम्भाषण हुआ हो। क्षण-क्षण में यद्यपि पात्रों के सम्पूर्ण चरित्रों का अन्वय एकपात्रीय चरित्रों के द्वारा होता है जिनमें कथानक अथवा चरित्र चित्रण को सामान्य नाटकीय अभि-यक्ति प्राप्त हुई है। इसी प्रकार इन कहानियों में किसी पात्र के सामान्य समस्याओं का भी उल्लेख नहीं हुआ अर्थात् नारी जीवन का कतिपय पक्ष समस्याओं को स्थापन प्राप्त हुआ है। नारी स्वभावतः स्नेह भक्तता त्याग विश्वास एवं पावनता की प्रतिभूति है किन्तु पुरुष अथवा समाज उसे सक्षय प्रष्ट करता है (फलतः बल बौद्धिक रामायण) किसी पुरुष से पावन सम्पर्क रहने पर भी उसे परित्याग लगाता है (दुःखित हृदय सुन्दरता) उसके हृदय को परित्याग ही उस पर पूर्वाग्रहपूर्ण विचारों को लागू करके उसके प्रति अविश्वस करता है (विभाता) पति रूप में उसे परित्यागपूर्ण भावना करना चाहता है (माधुर्यभक्त) तथा प्रियतम के रूप में उससे प्रतिप्रकारण करता है (वह नारी थी)। किन्तु नारी फिर भी अपनी गरिमा में महान् है वह केवल स्नेह और आत्म-वर्णिता ही जानती है। परिस्थिति चित्रण के अन्तर्गत लेखिका ने मुख्यतः नारी जीवन की समस्याओं का अन्वय किया है। प्राकृतिक वातावरण की दृष्टि से वह नारी थी कहानी के आरम्भ में ग्रीष्म ऋतु के प्रभाव से जाकुन प्रकृति का आन्तरिक एवं चित्रात्मक वर्णन द्रष्टव्य है।^१ वस्तुतः नारी जाति के गौरव का उन्मुख चित्रण इन कहानियों का एकमात्र लक्ष्य रहा है। इस ओर अत्यधिक जागरूकता होने के कारण ही लेखिका ने नारी का दुर्बलताओं के प्रति भी पाठकों की संवेदना अर्जित करने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत कहानियाँ में सरल एवं साधारण भाषा तथा प्रवाहपूर्ण वर्णनात्मक शैली की स्थापना प्राप्त हुई है। पति की सारी जागीर पर उसने पानी फेर दिया स्टेशन मास्टर की जाकिम है घर में उपहारों की ढेर लगन नहीं किरण के रूपों पर मौन उड़ाया जाने लगा आदि वाक्य-वाक्य की दृष्टि से संवदा अंगुष्ठ है। ऐसे वाक्यों ने भाषा के प्रवाह को पर्याप्त जीवित किया है किंतु यद्यपि सुस्पष्ट वाक्यों ने भाषा में संजीवता का संचार करने के उक्त दोष का किसी सामान्य तत्त्व परिभाषण भी किया है। वर्णनात्मक अथवा विवरणात्मक शैली की अपेक्षा यद्यपि लेखिका ने नाटकीयता की ओर अधिक ध्यान दिया होता है किन्तु कहानियाँ अपने प्राकृत संजीव एवं प्रभावपूर्ण हो सकती थी।

१ देखिये नारी पृष्ठ २४

२ नारी पृष्ठ ३ ८ ५४ ५५

३८ सुथो कण्ठा सोवती

सुथो कण्ठा सोवती ने डार से बिछुड़ी उपवास के अतिरिक्त कुछ कहानियाँ भी लिखी हैं जो समय समय पर पत्रिकावा म स्थान पाती रही हैं, कि तु सग्रह रूप में अभी व प्रकाशित नहा हुइ । यहा उनकी 'तिन पहाड' गीपक लम्बी कहानी की समीक्षा की जा रही है जो हिंदी की नई कहानियाँ में बहुचर्चित है । जसा बि इस कहाना में गीपक से भी यज्ञित है, इसमें तीन प्रमुख पात्र हैं—जया श्री और तपन । जया श्री की माता का पालिता पुत्री थी जिसे उन्होंने श्री के जाग्रह और अपने हृदय की पूरा सहमति से भावी पुत्रवधु के पद पर प्रतिष्ठित कर लिया था । श्री जब पढ़ने के लिए विदेश गया तो गौरांग सहपाठिनी एडना पर विमुख होकर अपने अतीत का गौरव न रख सका और उससे विवाह कर लिया । माता और जया पर माना बदना का पहाड टूट पडा । अपनी 'पया का लिय दिय जया दार्जिलिंग की जार चल पडी जहा उस तपन मिला, जो एक मुन्तर और भावुक युवक था । जया की झर झर झरती पीडा ने उस इतना आकण्ट किया कि वह अपनी प्रथमी एव वाग्दत्ता पुत्तल को भूतकर उत्तरोत्तर उसी के अनुराग में रगता गया । उधर जब एडना का 'बकर श्री घर लौटा तो मा ने उसके प्रति पूरा उपस्था निवाइ एडना को अपने घर नहीं आने दिया और श्री से जाग्रह किया कि दार्जिलिंग जाकर जया का लोना लाए । दार्जिलिंग में एडना के पिता रोस भी रहते थे । सयागवा जया और तपन से उनका परिचय भी हो चुका था । एडना को लेकर श्री दार्जिलिंग पहुँचा किन्तु जया ने उस धमा करना तथा उससे साध लौटना अस्वीकार कर दिया । तपन के प्रति उसके अपनत्व को दखकर श्री को ईर्ष्या हुइ किन्तु बात बहा तब रही क्याकि जगन दिन जया ने अपने प्यून जाकर पुल से छलांग लगा दी और इस प्रकार सब समस्याओं का अन्त हो गया ।

जालांध्र पत्रिका ने अपने भावुक व्यक्तित्व के अनुरूप पात्रों को भी भाव विह्वलता में धरातल में चित्रित किया है । तपन श्री, जया ताना पात्र चित्रण में हीत हुए भी अपना भावनाओं का आवग के सम्मुख विवश है और न चाहकर भी उसी दिशा में चलता है जिस ओर उनकी भावना उन्हें प्रेरित करती है । माँ रोस, एडना जालि लोण पात्रों का भी यहा द ग है । मानवीय अनुभूतियाँ का भाव मनुल चित्रण में पत्रिका विनाय मयन रही है । पात्रों का गूँम काय-व्यापारा और उनका मूत एवं अमूत स्पन्दना का गगात्मक रूप प्रस्तुत करना उन्हें विनाय प्रिय है । यद्यपि पत्रिका ने पात्रों का गतिविधि का भी उनका मना-भावों को मूत कर दा का प्रयास किया है तथापि कहा-नहा साँप मयान याजना भी की है । पात्रों का उचितता का उनके काय व्यापार के मध्य में ही चित्रित किया गया है जिससे वे अत्यंत सजीव हा उठी है । एवं उदाहरण द्रष्टव्य है—

‘रात सोने से पहले श्री माँ के पास जाए। पताने बठ माँ ने पाँव ठू लिये ता वह मन ही मन लस हुई।

श्री मा का देगल रहे, तब जननय न स्वर म बाने—

जो कहने जाता हू मा सा तो तुम पहल से ही जानती हो।

मा नदी नदी उठ बठी।

रस भाव म इतनी ममभक्त्या है कानू

श्री कुछ कहन म पहन जस मा का मन तीनते रहे फिर अधिकार नरे कण्ठ म कहा— बुआ माँ न ससुराल की रस दर पार का नडकी को पान पोस बडा किया है तमने पर क्या इसी स इम दूसर घर ग्राह दानी ।

बेट न मानो आधा युद्ध जीत लिया।

मा धडी भर नडक का दबती रही तब बोला— जिसे आँचल स लगाए रही हू उने कितना चाहती हू यह तो कहना नही होगा पर एक बात सा कह यह बात तेरे मन म छाई कब ?

श्री रस बार उर नही। अधिकारपूवक कहा— मा ऐसी बात क्या एक दिन म सोची जाती होगी।

मा जसे जानती ही थी कि बटा यही कहेगा। हसा। हसती चली कि आगीबाँद बरसाती हो।^१

प्रस्तुत कहानी म दार्जिलिंग की प्रकृति श्री का सु दर चित्रण हुआ है। चित्रिका ने अपनी विगिष्ट कायात्मक गानी म प्राकृतिक दृश्यों की अत्यन्त रम्य अवतारणा की ह। यथा— अबर स बादला की पात फन फल धुँव बनने लगी। नीच के गहरे खड्ड धुँव क जसीम जाचल म लो गए। ऊपर क पहाड तक वधनकी बाहों म सा गए।^२

सु श्री सोवती की अपनी विगप भाषा गली है जो उठ अय सबसे पथक् करती है। एकवचन न स्थान पर बहुवचन का प्रयोग (यथा—तपन साए नही बाहा से चिरी जया खडी रही) उफाड बतागिया रुभाती घूप अनभूपी दीठ उजियारी भील^३ आदि विशिष्ट गान ध्वन उनकी भाषा की विगपताए हैं। इनक जतिरिक्त क्रियाओं क विगिष्ट प्रयोगा स भी लखिका न गली म जाकपण की सट्टि की है। यथा—

सुनरर वह कुछ कहने जाती था कि सहसा आया पर हाथ रख लिया ओर माकुल सी भर्राय कण्ठ यही दाहराती चना— जिसे सचमच म ही बीत जाना है आज यही दिन है—वही दिन है—

१ हिंदी ललितकामों की प्रतिनिधि कहानिया पृष्ठ ८३ ८४

२ हिन्दी ललितकामों की प्रतिनिधि कहानिया पृष्ठ ६३

४ देखिये हिंदी ललितकामों की प्रतिनिधि कहानिया, पृष्ठ ६८ ७१

५ देखिये हिंदी ललितकामों की प्रतिनिधि कहानिया पृष्ठ ६२ ६४ ६८ ६९

दस बार तपन नहीं तपन के सामने जया सिर झुकाय बठी था और किमा बंदी उठे द' के आग रह रह मिर धुनती थी । ^१

सारा यह कि सुश्री कप्पा सोबती न हिन्दी वाकरण की उपेक्षा करके अपनी भाषा के लिए कुछ गंगा को स्वेच्छा से विकृत किया है। ऐसा करने में उनका लक्ष्य यही है कि भाषा जली में काव्यात्मकता एवं लयात्मकता के संयोग में विनाश माधुर्य एवं आकर्षण का समावेश किया जाए। यह सत्य है कि लेखिका अपने लक्ष्य में किसी सीमा तक सफल रहो है किंतु अनेक शब्दाडम्बर में भावगत सहज सौंदर्य दम-सा गया है। उनकी कहानियों में भाव सौंदर्य की अपेक्षा गंभीर सौन्दर्य प्रमुख लक्ष्य बन गया है जो निश्चय ही कथा के धर्म में गुण नहीं है।

मूल्यांकन

पूर्ववर्ती लेखिकाओं की भांति स्वातन्त्र्योत्तर युग की लेखिकाओं में भी मुख्य रूप से सामाजिक कहानियों की रचना की है। इन कहानियों में प्रमुख विषय हैं— (अ) प्रेम के सफल अथवा असफल चित्र, (आ) दाम्पत्य जीवन की मधुर एवं कटु अनुभूतियाँ, (इ) पारिवारिक जीवन के विविध दृश्य (ई) दान्त एवं गोपित बग की पीड़ा। इस युग की लेखिकाओं में जिन सामाजिक समस्याओं का निरूपण किया है उनमें से अधिकांश प्रायः कल्पित हैं। यथा—वस्त्र जीवन विवाह जीवन की यंत्रणाएँ, दहेज प्रथा, पूजोपस्थिता द्वारा मयहारा बग का गोपण पति अथवा प्रेमी की स्वायत्तता, प्रवचिता नारियाँ की जातपीड़ा, अछूतोद्धार का समस्या, समाज का विचार मकीणता स्वायत्तता अथ सातुपता आदि। कुछ समस्याएँ ऐसी भी हैं जो इसी युग की दन हैं। उदाहरणार्थ उपा प्रियवन्त ने अपनी इनक कहानियों में यह दिखाया है कि नारी स्वातन्त्र्य की सामान्यता में प्रथम में अनेक नारियाँ स्वतन्त्र जाविकाप्राप्त करके समझती हैं कि उन्हें अब कुछ नहीं चाहिए अर्थात् वे प्रसन्न हैं किन्तु मानसिक रूप से अतृप्त रहती हैं बाई अभाव उन्हें बचावता है। रजनी पनिकर ने भी अपनी कहानियों में नारी की नारी मानसिक हेतुचन का मुखरित किया है। इस युग की एक अन्य दन है—विवाहिता नारी का परपुरुष के प्रति प्रेम अथवा मानसिक व्यवहार जिसका विषय सुमित्र कुमारी मिश्रा ने अपनी कहानियों में किया था। इस बात को जय लेखिकाओं में मासती शिवा की नायिकाएँ इसी प्रकार की हैं। मासती विमला रत्ना ने विवाह पूर्व के प्रेम को पाप नहीं माना है तथा अनुमला, कुन्ता आदि पौराणिक नायिकाओं के उदाहरणों पर प्रेम का समर्थन किया है। यह दृष्टिकोण वर्तमान में समाज-व्यवस्था का परिणाम है।

सामाजिक कहानियाँ न अतिरिक्त इस युग में राजनीतिक पौराणिक इतिहास

सिक नावपूण, प्रतीकात्मक आदि विभिन्न विषयक कहानियाँ की रचना की गई है। राजनीतिक कहानियों की रचना प्रायः नौ रूपों में हुई है—(अ) वे कहानियाँ जिनमें स्वतन्त्रता-पूर्व काल के भारत की मनःपरिस्थितियों की चर्चा की गई है—सत्याग्रह आन्दोलन आतिशायी दल पुत्रस का दमन चक्र आदि (आ) वे कहानियाँ जिनमें ममकारीन अथवा आसन्नभूतकारीन राजनीतिक स्थिति का चित्रण है जैसे—गरणार्थी-ममस्या भारत विभाजन के अवसर पर साम्प्रदायिक रक्तपात आदि। उदाहरणार्थ नीला अवस्थी की नई आधी और परिवर्तन गीपक कहानियाँ ममकारिणी ममस्या का चित्रण है सत्यवती भैया की जीवन का प्रथम कहानी में गरणार्थी कथाओं की निराश्रयता की चर्चा है और होरादेवी चतुर्वेदी के उस भी लड़ियाँ गीपक का सग्रह का एक कहानी में सभी समस्याओं के लिए लिखी गई है। सुश्री इन्दुमती ने उदाहरण गीपक कहानी सग्रह में स्वतन्त्रता की परवर्ती विभीषिकाओं का चित्रण किया है जिनकी आरंभ हमारे नेताओं और साहित्यकारों का ध्यान ही नहीं गया। उदाहरणार्थ साम्प्रदायिक विचारों में पीड़ित। को उनके प्रियजनों से हो विनम्र नहीं किया अपितु गमस्थ गिणों को भी अपग बना दिया। रत्ना बापा की तिरंगा कहानी में यात्रा के सत्याग्रह की चर्चा है और देश की भाषा समस्या पर विचार किया गया है। इसी की विविधान कहानी में असम का नागा विद्रोह का विस्तृत वर्णन है। इसी प्रकार सुमन कारलकर का कहानी में आधुनिक नेताओं और साधुओं पर व्यंग्य किया गया है और कुछ कहानियों में भूदान आन्दोलन की भी चर्चा है। कहने का तात्पर्य यह है कि यद्यपि अधिकांश कहानी चित्रण का समाज एवं परिवार का चित्रण की ओर ही उन्मुख रही तथापि सामाजिक रूप से विवर्धन करने पर यह स्पष्ट है कि इस काल की कहानियाँ युगीन प्रभाव से अछूती नहीं रही। अनेक लेखिकाओं ने दण्ड यापी महंगाई निधनता बकारी आदि का भी उल्लेख किया है। उदाहरणार्थ पद्मावती पटवर्धन की कहानियाँ दण्डयात्रा प्रधान हैं उद्धान्तिनी में मराना की लगी तथा बकारी की अनेक चर्चा की है।

इस काल में ऐतिहासिक एवं पौराणिक कहानियाँ भी लिखी गई हैं। उदाहरण स्वरूप गुरुत्तरा गमा की फास का तान पून कहानी में मण्डारियन बानापाट के जीवन का अन्तिम भाग की कथा है। भालती डिगा ने हसीन रवाव और अजुमन गायक ऐतिहासिक कहानियाँ लिखी हैं। इन कहानियों में इतिहास एवं कथा का सुन्दर सामंजस्य है और माय का सरमता एवं प्रवाह है। पौराणिक कहानी रखन में गुरुत्तरा गमा का नाम उल्लेखनीय है। इनकी देव अदव बीजा जात तथा बम मखन गीपक कहानियाँ मविधाता विष्णु प्रज्ञान पौराणिक पात्र एवं घटनाएँ हैं। चिरणकुमारो गप्ता की नारी कहानी भी पौराणिक है। मम मद्धा और मन का भावपूर्ण कथा भी गई है। उदा माधवी सक्मता सावित्री सिंह चिरण तथा गुरुत्तरा गमा की कुछ कहानियाँ में प्राकृतिक पदार्थों के मानवीकरण द्वारा प्रतीकात्मक गति अपनाई गई है। गुरुत्तरा गमा एवं विपुला देवा ने दार्शनिक कहानियाँ भी लिखी हैं। इसी प्रकार मुनि सीता ने लोक

कथाया को लेकर कहानियाँ को रचना की है।

इस युग में चरित्र चित्रण के क्षेत्र में अनेक नवीन गलियाँ का उभय हुआ है। अधिकांश लेखिकाया न स्यूख काय यापारा का वणन न करके मानसिक विश्लेषण जयवा मनावनामिक चित्रण की ओर ध्यान दिया है। प्रकृत एव समाज के सधष से उत्पन्न यकिनगन कुठाओ एव पीडाओ को कहानियाँ में मुख्य स्थान मिला है। वतमान कहानियाँ में मानसिक ऊहापोह पर विशेष बल रहता है। श्रीमती तारा पोतदार की कहानियाँ इसका उगाहरण ह। आत्मचिंतन की प्रवृत्ति जयवा चेतना प्रवाह पद्धति भी रमय की कहानियाँ की मौलिक विशेषता है। ऐसी कहानियाँ में पायो की सख्या सीमित हातो गइ ओर प्रत्यक्ष चित्रण की प्रणाला का बहुत कुछ त्याग दिया गया। इन लेखिकाया न पात्रा की बहिरंग प्रवृत्तियाँ की अपला उनक मन कोणा का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण किया है। यद्यपि पूर्ववर्ती लेखिकाया की भांति इस युग में स्त्री चरित्रा को अपेला वृत प्रावमिकता दी गई है किन्तु इस युग की स्त्रियाँ पहले की भांति केवल भारतीयता में आवक्त दानू नारियाँ नहाँ है। जयय होत दखकर व विद्राह भी कर बठती हैं। सत्यवती जया लीना अवस्था, कुमारी रोता आदि लेखिकाओ न पात्राया का चुनाव इसी दष्टिकाण से किया है। यह प्रवृत्ति युग चेतना का ही परिणाम है। यह उल्लेखनीय है कि इस काल की अधिकांश कहानियाँ प्रकृत के धरातल से लिखी गइ हैं। उनमें सोइ दयता भी है किन्तु अनुभूति चेतना अधिक है। लेखिकाया ने प्राय यथाथवाली चित्रण पर मन दिया है। उनकी कहानियाँ में जादू के मन्त्र यत्र-तत्र है किन्तु ण्टा त रूप में आणा प्राय प्रस्तुत नहीं हुए। अधिकांश लेखिकाया की जातरिक भावना एक सी है। प्राय सभी में सामाजिक पुरीतियाँ, ज धविदवाला बामिक जाडम्बरा आदि के सुवार का जाग्रह है दुग्दय मानवता के प्रति मवदना है पीणित-व्यथित का के प्रति करणा है तथा पतित के उधान की प्रबल जाकाधा है।

गिप का दृष्टि से इन कहानियाँ में मुख्यतः एकरूपता है—घटना-समाग सुय यस्थित कथानक यद्यु अथवा दान वातालापा का मरन शती उक्ति-वचिप्य ओर हास परिहामपूण रम्यात्मक प्रवरण अधिकांश कहानी लेखिकाया में प्राय एक जमे राग्रह के साथ विद्यमान हैं। याकरण सम्ययी अनुदियाँ मुख्यतः उहा सगिकाया की कहानियाँ में हैं जा अदि-दीभायी हैं। वणन गली का दृष्टि से लेखिकाया न जात्मन मन एव त्रय पुरुष दाना प्रकार का गलियाँ का प्रयोग किया है। पीणित्य जयवा की निम्ना नूनी पय गली में निरित है। इसी प्रकार आगा राना अनु को का गय रण कहानी ना पय गली में है। साराग यह कि जालोच्य युग में कहानी लेखिकाया का ध्यान रम्यता न अनुकरण की अपणा नवीन प्रवात्तया का अपनान का ओर रहा है।

तृतीय प्रकरण

स्वातन्त्र्योत्तर युग की प्रमुख उप-यास लेखिकाएँ

स्वातन्त्र्योत्तर युग में बहानी रचन की भाँति उप-यास रचन के क्षेत्र में भी महिलाओं ने जागरूक दृष्टि का परिचय दिया है। प्रस्तुत प्रकरण में इस युग का मुख्य उप-यास लेखिकाओं के कृतिरत्न की समीक्षा की जायगी जिन्हें निम्नलिखित क्रम में अंकित रखा गया है—रजनी पनिकर वसन्तप्रभा दृष्टा सारंगी नीला अवरोचक किरण सोनरेवसा अनपूर्णा तागन विमल बंद। इस क्रम निर्धारण में लेखिकाओं के उप-यासों के प्रकाशन काल को दृष्टि में रखा गया है।

श्रीमती रजनी पनिकर

वर्तमान युग की उप-यास लेखिकाओं में श्रीमती पनिकर का अग्रणी स्थान है। उन्होंने मात्र उप-यासों की रचना की है जो प्रकाशन क्रम में अनन्तर रस प्रकार हैं—ठाकरे पानी की दीवार, मोम में माती प्यास बादल जाड़ की धूप बानी नदकी एक लड़की दो रूप। ये सभी उप-यास सामाजिक हैं और इनकी रचना मध्यम नारी जीवन की समस्याओं को लेकर की गई है। इनमें लेखिका ने समकारीन समाज का विस्लेषण तो किया ही है उनकी प्रवृत्ति नारी की भावनाओं के मानवार्थिक विस्तार की ओर विगपत रही है।

१ ठाकरे

श्रीमती रजनी पनिकर ने विवाह के पूर्व रजनी नायर के नाम से ठोकर गोपक सामाजिक उप-यास की रचना की थी। इसमें शिक्षित मध्यवर्गीय समाज में विकास पानेवाले स्वच्छ वातावरण एवं उसमें सीमित लोभाल पात्रों के कार्य-यापार का मूल रूप प्रदान किया गया है। मणाल और उसकी सखी जूही समस्त कथानक का केंद्र रही हैं। मणाल अपने रूप तथा धन पर अत्यधिक गर्व करनेवाली वस्तुवादी नारी है। अपने पिता के मर्जी के पुत्र वसन्त को पहचान नहीं करती थी किन्तु जब उस वसन्त के प्रति जूही के आकर्षण का आभास हुआ तब वह ईर्ष्याविष वसन्त को अपनी ओर आकृष्ट करने में प्रयत्नमान हो गई। अपने समाज-सेवी अग्रज अटन और जूही का प्रेम भी उस सखी नहीं हुआ अतः उसने गणार्थी कथानीसिमा में बटल के विवाह का प्रयास

किया। किंतु उसकी कोई भी इच्छा पूरा न हो सकी। प्रिय कोमल—जिन्हें वह अपने लिए चाहती थी—नीतिमा के हो गये अटल और जूही में विकल्प न हो सका और एक दिन उस मध्यपान करने देखकर बसंत ने भी उसमें विवाह करना स्वीकार कर दिया। इस प्रकार रूप और मन के मेल में मणाल ने जम कभी बसंत तथा जूही को ठुकराया था बसंत ही परिस्थितिमा ने उनका जह चूष करके उस जायात पटुचाया। प्रस्तन क्यानक में मध्यवर्गिय समाज का जा स्वच्छन्द चित्र अंकित किया गया है उस ययात्रवाणा गली का उत्तम उद्गारण माना जा सकता है। १०२ पन्नाएँ इस पद्य उपन्यास में गौण कथाओं के लिए अवकाश न हो अतः त्रिविधा न हो मणिमा में प्रयत्न न करके उचित ही किया है अथवा कमसे कम कथा का साथ पाए न कर पाता। क्यानक का एक सामित बल में बंद रहना दाप हो सकता था किन्तु बगल गली की सभ्यता तथा मनावधानिक विनयपण ने उक्त दोष का पर्याप्त सीमा तक मापन कर दिया है।

ठाकरे में चरित्र चित्रण का मध्यमवापरि है घटनाएँ उसकी छाया में विकसित हुई हैं। इसमें खूब पात्र हैं—अटल बसंत, प्रिय कोमल मणिमा जूही तथा नीतिमा। मणाल के मन विकास का सूक्ष्म विनयपण प्रस्तुत करने में लखिरा का विनय मध्यपान मिली है। ईश्वरी दम्भ जह दूरता आदि दुर्गुणों ने उसमें व्यक्तित्व का इस सीमा तक आच्छादित किया है कि उसमें नारी सुनभ कोमल भाव सवधा देव गए है। इसमें विपरीत जूही अमुदर एव हरिद्र हात हुए भी अपने सम्पर्क में आनेवाले प्रत्येक पक्ष का प्रभावित करता है क्योंकि ममता भावुकता कृतपता कथा प्रेम तक-पटुता तथा त्याग आदि गुण उसमें घूट-कूटकर भरे हैं। इस प्रेम में त्रिविधा द्वारा उनका चरित्र की महत्तुता प्रकट है—मिनी यदि प्रेमिका की तरह थी तो जूही कृष्णामयी थी। जूही में भी किसी का स्नेह और ममता मित्र बिना नहीं रह सकती थी। मणिमा के विपरीत उनका भाव अटल उत्तरे एव कामन हृदय है। आधुनिक युवका की भाँति वह चाहे सौंदर्य अथवा धन का महत्त्व नहीं देता अपितु आंतरिक गुणों का आदर करता है। इसी कारण बहिन की इच्छा के विरुद्ध भी वह जूही का पत्नी रूप में पाने का प्रयत्न करता है। इसमें नीतिमा प्रिय कामन आदि पात्रों का विनयताका कालमिमा ने अत्यंत सीमित रूप में व्यक्त किया है जिनमें बसंत का मणीत कोमल और नीतिमा की मणि एव मणि प्रकृति उल्लेखनीय है। उनमें समाचार मध्यवर्गिय गिरित समाज में सम्मिलित हैं इसी कारण नारी एव पुरुष पात्र स्वच्छन्द रूप में मिलते हैं सम्मिलन करने है तथा अपना जीवन पाया का स्वर ही चुनने करते हैं।

श्रीमती पतिवर ने प्रस्ता उपन्यास में बगल विवरण गली की अपेक्षा मणिमा यात्रा के माध्यम से क्यानक का चित्रण किया है। पात्रों की चरित्रित प्रकृतियाँ प्रमाणित में भी समाज का दाग उगलनीय है। उद्गारणाएँ उपन्यास में प्रारम्भ में बसंत के

विषय में मणान तथा जूही के चर्चा-वाचक मणान की दम्भी अविवेकी तथा स्वाधपूण प्रवृत्तियों का तथा जूही की की नम्रता विवक्षणीयता जाति विभाषताओं का सज-तुननात्मक परिचय प्राप्त होता है।^१ परिस्थिति विविध के अनुरूप पात्रों की उन्नतियाँ भी विविध प्रतियों का समावेश मिलती हैं। उदाहरणार्थ वसन्त के प्रति मणान के प्रारम्भिक मवाद तिरस्कार एवं अवहेलना के सूचक है।^२ निम्न वर्ग की उन्नतियाँ भी जो उनसे स्थावरी वसन्त की अपना जोर-आकर्षित करने का निश्चय कर लिया था उससे प्रति प्रेम एवं प्रीति के भाव हैं।^३ जूही के प्रति अटन की उन्नतियाँ विषय भावपूर्ण एवं मार्मिक बन पड़ा है। चित्रकला ने सदा के मयाप्रमग उन्नत-वर्चस्व वाग्वदाम्य तथा तक नीयता को भी स्थान दिया है।

ठाकर में समकालीन सामाजिक प्रवृत्तियों का प्रत्यक्ष दर्शन जनित चित्रण हुआ है जिसके विषय में श्री राहुन साहूत्यायन की यह उक्ति द्रष्टव्य है— रजनी की आधुनिक ढंग के शिक्षित मध्यवर्गीय समाज का वस्तु-चित्रण परिचय है परिचय क्या वह उसी वातावरण में पड़ा है और पसी।—रजनी ने उसी समाज तथा उसके स्पर्श-वातावरण में अपनी वस्त्रों का पात्रों के अभिनय का चित्रण किया है।^४ किन्तु यह कहना अनचित न होगा कि मणान के चरित्र में चित्रकला ने यथावत को अत्यधिक प्रत्यक्ष के कारण बर्णनकार के आदर्श का विस्मरण कर दिया है। यद्यपि आधुनिक उच्च मध्यवर्गीय परिवारा में मणान ने वस्तुवादी दम्भी नारी चरित्र दुःप्राप्त नहीं है तथापि साहित्य में ऐसा पात्रों की सृष्टि लाभ्य नहीं की जा सकती और उस मद्यपान करत दिवाकर तो चित्रकला ने पाठक का व्यक्तिगत रूप-संवेदन का भी अन्त कर डाला है। यह उपन्यास सन १८८८ में प्रकाशित हुआ था जबकि देश की सर्वाधिक वसन्त ममत्ता पाकिस्तान से जाय एए गणार्थियों के पुनर्वास की समस्या थी। समाज-मुधारक अटन के सदा के मयाप्रमग चर्चा करके चित्रकला ने युग धर्म का उचित निवाह किया है। गणार्थियों के प्रति ये सबन समान मेविका जैसी संवेदना से प्रेरित रही हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में चित्रकला की दृष्टि निम्नलिखित उद्देश्यों पर केन्द्रित रही है—

(अ) शिक्षित मध्यवर्गीय समाज के स्व-देश-वातावरण का चित्रण (आ) भारतीय मस्कारों की प्रतीक ममतामयी नारी एवं पारम्परिक वस्तुवाद को प्रत्यक्ष देनेवाली स्वाधपूरा नारी के चरित्रों का तन्मात्मक मूल्यांकन (इ) नारी मनोविज्ञान का परि-

१ ठाकर पृष्ठ १

२ ठाकर पृष्ठ १३

३ देखिये ठाकर (अ) पृष्ठ ४४३ १ २ (आ) पृष्ठ ८१ ८२, १०० १०१

४ ठाकर प्रस्तावना से उद्धृत

५ देखिये ठाकर पृष्ठ ६८

६ देखिये ठाकर पृष्ठ ४२ ६०

स्थिति साफल मूकम विदलपण, तथा (इ) जीवन क यथाय पर जादना को विजय का निरूपण। मृणाल तथा जूही उक्त उद्देश्या की अभिव्यक्ति में कद्रूपा हैं। मणाल क चरित्र द्वारा यह अभिव्यक्ति है कि वस्तुवादी नारी किस प्रकार अपन उदात्त गुणा को तिलाजलि दे देता है और इष्यावा अपनी सजातीय नारी का ही ठोकर मारन क लिए यत्न रहती है। इसा प्रकार जूही क चरित्र म भी नारी मनाविमान की विविधताओं का ध्यान म रखा गया है।

श्रीमती पनिकर न ठाकर म प्राय सरल एवं सजिष्ठ वाक्य विन्यास पर बल दिया है। करला फिर नीम चढा आसमान स गिरना साय छछन्दर को भी गति अपने परा पर कुल्हाड़ा मारना आदि मुहावरा क यथाप्रसंग प्रयोग स भाषा का आवाहारीक स्वरूप निखर उठा है। जूही का मन जाग ही भरा हुआ था क्या जाग हम कम हैं आगि वाक्या म आग का पहल के जम म अगुद्ध प्रयोग हुआ है। मैं तुम्ह क्या पूछा है जम वाक्या म सबनामा का अगुद्ध प्रयोग भा चिन्तनीय है। लखिका की गती म नाट्याय मजावता सबन अवलोकनीय है। वणनात्मक प्रसंग भी स्वाभाविक मधुष्ण एवं मार्मिक हैं। उपादवी मिना की भाति उन्होंने पाना क व्यक्तित्व का चित्रण करन क लिए मात्रीपमा और उन्माहरण नामक जनकरा का प्राय प्रयोग किया है। उदाहरणस्वरूप य उक्थियाँ दगिए—

(अ) जूहा बह तो ठाक जूही की तरह कोमल जोस की तरह ठडी हवा की तरह मुड़कर पा।

(अ) मूय का एक किरण कही से आकर प्रिन्स क मुख पर मटरान लगी। मिनी न मरमरी पट्टि स उस आर दडा जस काइ मेल म बिकनवाल बार घाड का देखता है।

२ पाना की दीवार

पाना की दीवार श्रीमती रजनी पनिकर का सपन मनावनात्मिक उपयोग है जिसन विषय म श्री भाषताचरण वर्मा की यह उक्ति उल्लेखनीय है— मुझे इस स्वरूप और सुन्दर मनावनात्मिक उपयोग का पढ़कर प्रसन्नता क साथ-साथ सताप ना हुआ कि हिन्दी साहित्य की उतना वास्तविक साहित्यिक सज्जन क प्रति सज्जन है।^१ देख

१ ठोकर, पृष्ठ ४४, ५७, ५८, ५९

२ ठोकर पृष्ठ ३८, ५७

३ ठोकर पृष्ठ ६

४ ठोकर, पृष्ठ १५

५ ठोकर, पृष्ठ ३३

६ पाना की दीवार भूमिका पृष्ठ ७

उपयान का कथानक संक्षिप्त है और इसकी रचना नायिका नीना का आत्मकथा के रूप में हुई है। नीना और उसके बालसहचर राजकुमार का पारम्परिक प्रेम राजकुमार का उच्च शिक्षा के लिए विदग्न जाना नीना का ग़मना कालज में चित्रकला की शिक्षा नियुक्त होना और कालज के कायवाहक प्रधानाचार्य के तिनार चौधरा का उसके प्रति आकर्षण इस उपन्यास के कथावस्तु के पूर्व पक्ष का स्पष्ट अंगनराना घटनाएँ हैं। वस्तुतः उपन्यास की प्रमुख कथा नीना और तिनार में ही सम्पन्न है—राजकुमार के व्यक्तित्व और नीना से उसके सम्पर्क का घटनाएँ नीना के स्मरणों के रूप में चित्रित हैं। तिनार चौधरा एक उत्प्रिय व्यक्ति है किंतु उनकी पत्नी करुणा जावन में जामात प्रमोद की आवश्यक मानती है अतः पति पत्नी में बाह्य रूप से सौहार्द गान पर भावनात्मक निकटता का अभाव है। इसीलिए एक ओर दिलीप ताना के साथ और स्वभाव से प्रभावित हुआ और दूसरी ओर उसके व्यक्तित्व के नाना को भी प्रभावित किया। यद्यपि दिलीप का पत्नी करुणा और अपने बालसहचर राजकुमार की स्मृतियाँ ने उसे मर्यादा में रहने को विवश किया किन्तु फिर भी दिलीप का सम्पर्क उसके मानस में नित्य नूतन सघष की सृष्टि करता रहा। उस मानसिक सघष का प्रतिबिम्ब अप्रिय हाँसकती थी किंतु ग़मना कालज में नीना की निषेधन के दा मांम उपरान्त ही राजकुमार के विदग्न से लौट आने और उसके कालज के प्रधानाचार्य के पत्र पर नियुक्त होने से दिलीप ने त्याग पत्र दे दिया और इस प्रकार नीना के मानसिक सघष की समाप्ति हो गई। कथानक का यह मर्यादापूर्ण अन्त पाठकों को रुचिकर नहीं प्रतीत होगा इसमें कोई संशय नहीं है। सामान्यतः मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में जिन समान विरोधी भावनाओं की अभिव्यक्ति रहती है अमली पनिकरन उस प्रयत्न के दृढ़ निर्वहण का स्वस्थ प्रतिपादन प्रस्तुत किया है। कथानक में जिनका स्वाभाविकता और ग़मना का निवाह और संरक्षण में उचित यथाचित सफलता प्राप्त हुई है।

पानी की दीवार में नीना एवं तिनार प्रमुख पात्र हैं। राजकुमार के व्यक्तित्व का उन्नयन का उतना अवसर चित्रकला में नहीं दिया। उसके अभावान्ति का यत्किंचित परिचय ताना प्राप्त होता है जब ताना अपनी परिस्थितियों की सम्भीरता और जित्नीता पर विचार करते समय उसका स्मरण करती है। दिलीप का पत्नी करुणा और उसके भाइयों की विविध चारित्रिक प्रवृत्तियों के प्रति पात्रों के अनायास ही आकर्षण का अनुभव करता है। करुणा का चरित्र अतिसौंदर्य विषय मार्मिक है कि वह पति का परस्त्री के प्रति अत्यंत दृढ़ दृष्टिकोण रखती है और अत्यंत ही अत्यंत ही अत्यंत ही सहन करती है—कवच कावच है उसका मन के भेद को जान पाता है। चित्रकला के गान के चरित्र को विषय अभिव्यक्ति नहीं है तथापि उसका विनोद प्रिय व्यक्तित्व पाठकों को सज्ज हा प्रभावित करता है। वस्तुतः यह उपन्यास में नीना के मानसिक सघष की अभिव्यक्ति प्रमुख है। तिनार के मन में भी नीना के सम्पर्क में आने पर अन्ध का आविर्भाव होता है किन्तु प्रत्यक्ष रूप में चित्रित न होने के कारण उसके प्रति पाठकों की

सवेदना जागृत नहीं हो पाती। वही कही लखिमा न पात्रा की चारित्रिक प्रवृत्तियाँ की तलना भी की है। उदाहरणार्थ नौना का इस उक्ति में दिलीप और राज की तलना देखिए— यह क्या हुआ दिलीप का—वह मर इतन निकट क्या जाना चाहता है इसकी पत्नी है, और बच्ची है मेरे पास राज है मैं भी तो इसके अत्यन्त निकट जाना चाहता हूँ राज और दिलीप दोनों में कितनी समानता है। दिलीप राज से कोमल है। स्वभाव में भी और व्यवहार में भी। 'नौना की विचारबारा प्रायः आत्मचिन्तन के रूप में व्यक्त हुई है किन्तु ये पात्रों का व्यक्तित्व उनके संवाग में भी प्रतिफलित हुआ है। इस दृष्टि से कल्याण और नौना के संवाद विगपत उत्पन्न है—कल्याण की उक्तिों में उसकी विषमता और वृत्ता को माना मूल रूप मिल गया है।

इस उपमास में बाह्य वातावरण की अपेक्षा मानसिक प्रतिनिध्याभा के चित्रण पर अधिक बल दिया गया है फिर भी लखिमा ने निम्नलिखित व प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रसंग बना अनन्त स्थानों पर चित्रण किया है। उदाहरणस्वरूप यह उक्ति देखिए— इन्हीं खुसी लिङ्गियों में मैं तिन को उजल-जाल बाँधल दिया करती हूँ। दूर सुदूर आकाश में मित्रे हुए भूर पहाड़ जो सुना है बरसात में हरे भरे सगत हैं। साथ ही देखती हूँ रत्न की सड़क बन जाती हुई पहाड़ों का कलजा चीगती हुई स्टेन के पास जाकर समाप्त हो जाती है। 'शिमला के प्रकृति चित्रों के अतिरिक्त उन्होंने वहाँ के जन-जीवन का भी रोचक वर्णन किया है। पहाड़ी पुरुषों और स्त्रियों की बगभूषा और स्वभावादिको उत्प्रेषण करने के अतिरिक्त उन्होंने पण्डक, कुतिया आदि की प्रवृत्तियों का भी प्रसंग नरूप चर्चा की है। 'गरणार्थी होने के नाते श्रीमती पनिकर ने अपने उपमास में प्रायः भारत विभाजन की प्रासंगिक रूप में चर्चा का है। प्रस्तुत उपमास की यह उक्ति भी ऐसी ही है—'विभाजन के बाद पञ्जाबी सम्यता में बरती आकाश का अन्तर आ गया है। इस उपमास में चेतिका का उद्दिष्ट जीवन का विस्तार करना है। इसके लिए उन्होंने पात्रों के अन्तर्गत और परिस्थितियों के माध्यम प्रतिघात की समुचित योजना की है किन्तु अन्तर्मूलक जममादित चित्र प्रस्तुत करने का और उनकी प्रवृत्ति नहीं रही है। मानसिक जगत में आरोह अवरोह का चित्रण करने के प्रसंग में वे बाह्य जगत के प्रति सज्जया उदासीन नहीं रही हैं। निम्नलिखित प्रति उनके मन में गहन संवेदना है 'तुम समन-समय पर व्यस्त होना रहा है। ग्यारह वर्ष के निजारी वास्तव को अपनी ही स्थिति विचारान्ता के प्रति अनिश्चिततापूर्ण स्थितियों का अन्वय, निम्नलिखित कुतियों की निम्नलिखित भाषा के प्रति माना की सहानुभूतिपूर्ण विचारबारा इस कथन का प्रमाण है।'

श्रीमती पनिकर ने इस उपमास में आन्तरिक भाषा प्रयोग को मान दिया है।

१ पानी की बीमार पृष्ठ ६३ ६४

२ ३ देखिये पानी की बीमार, (घ) पृष्ठ ८६ ८७ १४६ १४७ (घा) पृष्ठ १०

४ ५ देखिये पानी की बीमार, (घ) पृष्ठ ४१ (घा) पृष्ठ ३३, ८०, १४३

नोलिए उनकी भाषा म कही गही पजारी ग । गरी रा प्रान भी गित किया जा गना है । प्यानी मह को गगाई ही धा ' जम वास्या का प्रयोग इसका उद्धारण है । 'म उपवास गी गनी मुख्य रूप म वणनप्रधान है किन्तु उम अस्थ गनी एव मूर्ति मयी ग गरी क द्वारा गम्भीर और प्रभावपूर्ण बनाया गया है । मूर्ति गली का एक उद्धारण अवतारनीय ^३— जहम् गण न हान हुण भी कई बार हम विराम परिस्थितिया से उबा नता है क्यानि वह हमारे रहस्य नहा चुनन गता ।

हिी क मनोबनानिक उपयासा की टुखला म पानी की दीवार का महत्त्व पण स्थान है । कषावस्त का मक्षप इस उप यास की दबसता है किन्तु स्वस्थ मना बनानिक चरित्र चित्रण में उक्त दीप का पर्याप्त सीमा तक मात्रा न कर लिया है । दिलीप क अन् को पानी की दीवार की मना गी ग है जा ठोम प्रतीत होने पर भी नीना क सम्पक स तरन यम जाती है । वस यदि 'पीपव' का सम्बन्ध सीमा क जीवन म रहता तो अपगाहन अधिक उपयुक्त हाता । यह उपयास अत्यन्त शक्क है और यही इसकी सफलता की गम्भ्य कसौटी है । डा० प्रतापनारायण टंडन क गगा म उपन्यास आत्म चरितामक गरी म लिखा गया है जिसक फलस्वरूप उसकी प्रभावशालकता म बढि हो ग है । ^३ म मम सहमत हैं ।

३ माम क मोती

प्रस्तुत उपयास म एक तजम्बिनी यवती माया की जीवन कथा अंकित है जो अपने परिवार के आर्थिक कष्टों के कारण मठ वनप्रति की विनापन काम में नौकरी करने का विवग ^१ है । उसकी काय पत्ता न मठ जी क 'गापार को बन्त उल्लत किया और परिणामस्वरूप उसका जाय भी धत्ती गई । तना हात हुण भी माया प्रमन्न न की ययाकि अपने हृदय क उच्छ्वासो को बवाकर उस कृत्रिम जीवन यतीत करना पगता था । उसक जीवन म तीन पुरप जाए—पहना था उसका बाल्य साथी कताग जिसने माया क पिता की आना मानकर कामरतापूत्रक अ यन विवाह कर दिया । दूसरा यक्ति पा कवि मधुकर जो अपने मन की गाति क लिए माया क प्रेम का आश्रम खोजता था किन्तु समय समय पर सठ धनपति का नकर उसका अपमान कर बैठता था और उस अन गानुप समनकर ध्यय करता था । उसकी तस प्रवृत्ति से पीडित होकर माया ने उससे मध्य य वि छे करर विवाह क विचार का त्याग लिया । तीसरा यक्ति था राजन जो एक अमिव स्त्री उ गठ वनपति का अवतार पुन था । उसकी सौम्य प्रकृति और ममाज गुरार का प्रगति माया की प्रगति क समता थी । ज न म राजन ने उस पत्नी रूप म ग्रहण करर उमर समन्न कता का न कर लिया ।

१ २ दासय पात्रा का दोवार (घ) पृष्ठ ५१ (घा) पृष्ठ ७४

३ हिंदी उप यास का उदभव और विस्तार पृष्ठ २८४

उन प्रमुख कथानक व अतिरिक्त मेजर कबाड मधुकर व भाई मुधाकर चर्चा विन्दिपा, एलिस विमना आदि विभिन्न पात्रों का जीवन घटनाओं का प्रासंगिक उत्पत्ति हुआ है जिनसे पुरुष की नारी व प्रति कामुकता छत्र उमर वृत्ति विश्वासघात स्वयं आदि विभिन्न कुरूपताओं का प्रणाली बनाया गया है। उपर्युक्त सभी पात्र पात्रों में सखी दासी आदि विमान किसी रूप में माया व मात्र सम्बद्ध हैं। जत कहता न होगा कि प्रासंगिक कथाएँ मूल कथा व पात्रों में विरहित हैं। मुधाकर ने माया की भगिनीतुल्या अपनी सखी कला स प्रथम विवाह किया कि मुधा व नारी आदि में सम्बन्धों को लेकर भाग गया। बाद में माया का प्रणाली स वह पन बना के सत्ता न जा गया। इसी प्रकार अन्य प्रासंगिक कथाएँ भी पुरुष की हृदयहीनता का पदार्थ करता प्रतीत होता है। श्रीमती पानकर का यह सामान्य प्रवृत्ति है कि वे अपने उपन्यासों में प्रासंगिक लघुकाओं का अत्यधिक प्रयोग करते हैं। सभी प्रासंगिक कथाओं का उद्देश्य लगभग समान है, जो उनका सत्ता विस्तार कई बार पाठकों के अस्तिष्ठ पर भार स्वरूप बन जाता है।

प्रस्तुत उपन्यास को यद्यपि चरित्र प्रधान रचना कह तो अनुचित न होगा। इसमें अनेक पात्र हैं जिन्हें हम सुविधा के लिए दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं—पुरुष पात्र तथा नारी पात्र। पुरुष पात्रों में सठ धनपति मेजर कबाड मधुकर कला जाल मुधाकर तथा राजन उल्लेखनीय हैं। राजन के अतिरिक्त सय पुरुष पात्रों का उल्लेख ने एक ही सात्व में आसकर तयार किया है। स्वयंभूति तथा नारा व प्रति विश्वासघात उनकी प्रमुख विषयताएँ हैं। सठ धनपति पत्नी तथा बच्चा के हात हुए भी अपने सम्पत्ति में आनवाली भातहत नारियाँ के साथ अव्यवस्थित स्थापित करने हैं। अपने धन के चल पर वे माया का सतीत्व लेना चाहते हैं किन्तु सत्ता न हान पर लक्ष्मी पाते हैं। मेजर कबाड अपना विवाहिता पत्नी योत्सना का अपमान करके त्याग देने और माया, अनीता आदि रमणियाँ से सम्पत्ति बनाना चाहते हैं। माया व पत्नी में बराबर पुरुषों की उत नीच धन का कीटाणु है जो राग फलान में कार्य करता नही छोड़ता।¹

मधुकर सठ धनपति तथा कबाड का किञ्चित् सन्तर्भ है जो भावना के लक्ष में रहता है किन्तु माया की भावनाओं का समर्थन का मूल नही करता। कला न पिता के नय से माया का न अपनाकर कामरता का परिचय दिया है। मुधाकर ने पत्नी कला के होते हुए भी चम्पा के प्रथम मजिद नवीनता की चाह का व्यवहार किया है वह ना अपने आप में एक गणना ध्येय है। राजन के अनिरिक्त प्रायः अन्य सभी पात्रों ने ऐसा ही चरित्र प्रत्यलता का परिचय दिया है। माया की भविष्य शिष्टि का पति तब महतरानों का उतर नाग जाता है। जान भी पत्नी ही पात्र है जो एलिस व बच्चे का

है। मठ धनपति तथा मंजर बबाड-जैसे पुष्ट माया जमी कामगारी स्त्रिया को अपनी भोग्या समझत है। मधकर जन्म पुरुष आवश्यकता पड़ने पर उमका नम्रत न नौडते हैं और बस काफी हाऊस म रेस्तरा म बठकर वह माया जसी नारिया की जानाचना करता है। उनके चरित्र पर लाछन लगाता है। 'इम प्रकार प्रत्यः कि श्रीमती पनिकर न बन्नी हुइ मामाजिन यवस्था म नारी की बिम्बना काम न कारण पुष्प को माना है। कामकाजी स्त्रिया का कितनी मामाजिन लाछना महनी पडती है इमका भी अनेक उल्लेख हुआ है। माया मठ धनपति की नौकरा करव भी अपन मतात्म का सुरक्षित रखती है बि न दनिया की नृष्टि म उसकी मना मठ धनपति का रखल क अतिरिक्त और कुछ नहा। नारी जाति क लिए यह कितना भयकर अभिगाप है कि वह सम्मानपवक जीविकापाजन भी नही कर पाती।

श्रीमती पनिकर ने उस उपन्यास म माया की विचारवारा क माध्यम स त्रिक वग क जीवन की विडम्बनाओं का भी मामिक उल्लेख किया है। यथा— त्रिका द्वारा अपनी कमा नाराव सिगरेट तथा मिनेमा म फटना उनकी पत्नियों का अपनी कमाई से घर का खचा चनाना पेट भर खान को तरसना रग्णावस्था म पतिया द्वारा उपेक्षा आदि। दूसरी ओर कला और सुधाकर की याह पार्टी के वजन क माध्यम स अविज्ञात वग क जावन की भी व्यंग्यपण असक दिखाई गई है। यथा—महिलाओं नारा आभूषणा तथा मूल्यवान वस्त्रा से शृंगार मिलि अफसरा की पत्निया तथा फौजा अफसरा की पत्निया का अपन पक्क गट म खड होकर एक दूसर गट की स्त्रिया की जानाचना करना स्त्रियों नारा मद्यपान पुरपा क साथ निनज्ज नत्य आदि।^१ प्रकृति चित्रण की अपेक्षा लखिका का मानव प्रकृति क बिम्बेपण का अधिक चाव है। फिर भी प्रस्तुत कति म कता द्वारा माया को लिख गए पत्रो म कामगार की सुपमा क वणन क लिए लखिका न पर्याप्त अवकाश निकाल लिया है। वहा के गुप्ता पवता बक्षा सोता आदि की छविका माहक वर्णन किया है।

मोम के मोती म वतमान नागरिक सभ्यता का व्यंग्यपूर्ण चित्र अंकित किया गया है। माया आर्थिक अभाव स विवग होकर अपनी जीविका कमान निनना थी किन्तु नागरिक जीवन ने उसका आकाशावा म अत्यधिक वृद्धि की और वह अपने परिवार क सदस्या क त्रिण एवम क साथन जुटान क नय हयकड सोचन लगी—श्रीमती का वह अनितय उम करना पडता जिसक त्रिण उसकी आत्मा उसे काचती रहती। जन्म म मोम क मोती क सत्ता कविम जीवन की उस पर क्या प्रतिप्रिया हुई यह स्पष्ट है—

१ मोम क मोती पृष्ठ ११२

२ ३ दक्षिण मोम क मोती पृष्ठ ५० ५६ ५६

४ दक्षिण मोम क मोती पृष्ठ ७१ ७२

“माया की शहर व जीवन इस दाव पेचा से घगा हा मइ थी । काग । उस समय उसे सठ धनपति का ऋण न दना हाता तो वह गाँव व उ मुक्तवातावरण न बना जाती । चाहे उन गाँव म जाकर बसल न क्विया की पाना पडता बहा अनन स्पय ना न मित्त । रूप्य का जब उम जयिब चिन्ता भी न था । स्पया कामती नाशिया आभूषण उम नाता था जस जी का अजान है । घर पर रहनेवाली स्त्रिया माचना हैं काग उनक वाम नातरा हाती । व नी अपना मौकगीपता बहिना का तरह स्व च्छन् हाती । माया यत्त सी महिनाजा व सम्पन्न म जाद है जिनका ऐसी च्छा है बि व नी काम बर । व अपन निजा यबित्व का विकास चाहती हैं अपन निजस्व का विकास चाहती ह अपन निजस्व का बढाना चाहती ह । वह नहा जानती यह सब झूठ है मिथ्या भावना है । इस जीवन का गामा ओर जाव मोम क मातिया की तरफ है जो एतन म अतीव मुत्तर लगत ह । व्यवहार म लान म पता चन जाता ह उनम कुट्ट भी नही वह पिघलकर मोम की तरह बन जात है । ”

आलोच्य कृति के गीपक म उपयास व उद्देश्य की सार रूप म समाहित क श्रिया गया है । लेखिका की दृष्टि म कामकाजी नारी का समस्या को जटिल बनानवाला पुरुष समाज है जा नारी का बवल भाग्या समझकर उगमे मम्पक रखता ह जोर जपमा इच्छा पूर्ति म बाधा दसकर नुनता उठता है नारी का उपहास करता है उम लाछिन करता ह । इस दिना म लेखिका का दृष्टिकोण एकांगी तथा पक्षपातपूर्ण है इसम काइ स दह नहा ।

श्रीमती पन्विकर ने अथ उपयासा की भांति माम व माती म नी मनावरगार प्रवाहपूर्ण नापा का प्रयाग किया है । उद्ग गाना क जतिग्वित उद्गाने जप्रता क प्रचलित ग । का नी अनन स्थना पर प्रयोग किया है । उपयास का गली प्रमादगुणमथा मना विलपणामक तथा अवयपूर्ण है । ऐस स्थना पर लेखिका व नाव-बाध आर जमिय जना-जीवन का अछा समाहार हुआ है । उगाहरणाथ यह उक्ति दनिए— माया उसर मुख पर जानकास नावान्तर को दन रही थी । वह यह समझती ह कि मधुकर इन समय यह चाहता है कि माया उसस पूछ बयावात ह तुम अननचित्त बना हा ? यह ना पुष्प ना एर मय ह मइ उठाव चन आत हैं कि नारी दह स्नह स दुलार पुषकार । गामद एम अक्ति जीवन नर वच्च बन रहत हैं । यनि नारी स जान करत ना है ता गोभ पर ध्यय कर, जस उनन मिर पर एहसान कर रह हा । १

४ प्यास यात्रन

इन उपनाग म कोटिया म रहनेवाले उच्च मध्यम श्रेण और गढका व किनार

तथा पुल के नीचे जीवन व्यतीत करनेवाले भिवारी वगैरे स्तर उपम्य का तुलनात्मक चित्रण करते हुए रोज़गीला व जीवन एवं चरित्र द्वारा यह सतत लिया गया है कि यन्त्रि समाज का कांक्ष समझ जाननेवाले लोगों के साथ महानुभूति एवं आदर का व्यवहार किया जाए ताकि नीचे यथाथ न न मानव बन सके हैं। उपम्या का कथानक नगर की एक उच्च अट्टरिका से प्रारम्भ होता है जिसमें उच्चमय वगैरे प्रतिनिधि जयन्त और उसका परिवार रहता है—उसका छोटा तथा अपाठित भाई बलराज चंचरी बहिन का ता बह स्वयं नोकर चकर और एक कुत्ता टामी। तभी टामी की पेट में भाजन घुसनेवाला रोज़गीला नया म प्रविष्ट होती है। वह पुनः नीचे आपसी में रहनेवाला एक निराश्रित है। उसकी माता किसी धनी घराने में जाया भी बहा रहकर उसने पुत्री का एक अच्छी पाठशाला में शिक्षा दी थी किन्तु दुर्भाग्यवश माता और पुत्री का निर्वान लिया गया और रोज़गीला मद्रिय तक पढ़कर भी परीक्षा में दसवीं। माता का मरण का यह सब निराश्रित था। जयन्त ने उसे आश्रय दिया और उसका अच्छा प्रेम एवं महानुभूति पाने वह गोप्य ही एक सुसंस्कृत रमणी बन गई। जयन्त उससे विवाह भी करना चाहता था किन्तु उसके समझाने पर जयन्त ने सामाजिक मर्यादा का निराह करते हुए अपना वाग्यता बनाकर विवाह कर दिया। जया की जन्म दत्त ही धन बना की मृत्यु हो गई। जयन्त गोला और जयन्त के प्रेम को विवाह में परिणत होने का मुख्यमंत्र मित्र किन्तु वनराज का नाव एवं व्यापारिक सिद्ध हुई। उस मुनी करने के लिए जयन्त ने उसका तथा जया का नारंगीला पर छाड़कर विदेश भ्रमण का कार्यक्रम बनाया और वहाँ पर कथानक का अन्त हो जाता है।

याम वाग्य का कथानक प्रायः एक वय की घटनाओं का विस्तार है। त्रिकोण ने कथानक का सहज एवं मार्मिक रीति से विकसित किया है। उसमें रोचकता है और है महजता का अपूर्व माधुर्य। जिन समस्याओं को उसने कथानक में सुलभित किया गया है वे निराला मोक्ष हैं और उनके समाधान की शिक्षा में जो सकेत प्रस्तुत किए गए हैं उनमें मर्यादा का सबन पान रखा गया है। कथानक का आवार स्वाभाव होकर महानुभूति और त्याग है। उपम्या में पात्रों का चरित्र विकास अत्यंत सहज एवं मना न्यायिक रीति से हुआ है। जयन्त के घर जान के पूर्व कथानाविरा रोज़गीला अपने स्वयं का विषय महत्व देती है क्योंकि जिन परिस्थितियों में वह पड़ी थी वहाँ उसे पटुता निष्कला एवं स्वायत्त ही दान हुए थे। जयन्त द्वारा प्रेम एवं सदभावना पाने उसने हृदय में अनन्त नाव परिष्कृत होकर कोमलता एवं त्याग में परिणत हो जाते हैं। उन जयन्त का वह मना प्रेम प्राप्त होता है जाकाता और बना भी नहीं पा सका। किन्तु अनावश्यक होने पर भी वरदान रूप में प्राप्त हुए प्रेम को भीना त्याग देता है—जयन्त का सामाजिक मर्यादा एवं प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए। पुनः नीचे जीवन यापन करनेवाले अनावश्यक वगैरे प्रतिनिधि वह धनी का गर्वोन्मी पनी बना एवं स्वच्छ प्रकृति की कान्ता से किन्ता ऊंची है। परन्तु और कान्ता अनेक प्रयोग

वरन भी उसकी चरित्र की पतन की आर से जाने में असफल रहते हैं।

जयन्त उदयास का नायक है। रोज़गीला तथा कान्ता को आश्रम दान में उसकी उदारता यत्न भई है तथा अपाहिज भाई के लिए स्नेह उसका अप्रतिम गुण है। इसके अतिरिक्त रोज़गीला की प्रेरणा से भी उसकी आत्मा में बीज रूप में निहित गुणा का विकास होना है—वेला से प्रेम न होने पर भी यह उससे इसलिए विवाह करता है क्योंकि गाला द्वारा समझाने पर वह सामाजिक मर्यादा से उत्पन्न कृत्य भावना का महत्त्व स्मरण करता है। 'म प्रदाम जयन्त की अधिकांग विपत्ताएँ गीला के चरित्र द्वारा प्रकट होती हैं। उदयास के अन्ध पाना में कान्ता के चरित्र द्वारा नैतिकता में वर्तमान

पति में सामंजस्य रखना उनके लिए कठिन हो जाता है क्योंकि उनके विचार परिपक्व हो जाते हैं और वे झुकता नहीं। प्रायः परिणाम यह होता है कि वे पति से पयक रहना हैं किन्तु सुख नही मिलता। ऐसी अवस्था में तनाव होते हैं किन्तु लौकिकता ने पाना की परिस्थिति विवाह द्वारा पति के समीप पन रोज़ने की स्थिति का चित्रण करती है। उक्त समस्या का मर्यादापूर्ण समाधान प्रस्तुत किया है।

श्रीमती पनिकर नवलराज बला पराजिदि अन्य पाना का एक और बग विचार के प्रकाश रूप में प्रस्तुत किया है और दूसरी ओर व्यक्ति-व्यक्ति के अनुसार उनकी विपत्तियों का भी उल्लेख है। वे मनोवैज्ञानिक एवं वर्णानुसूचित चरित्र चित्रण में विचार सफल रहा है। विपत्ति राजशाला की विपत्तियों का उद्घाटन अत्यन्त मर्यादा विरुद्ध गति में हुआ है। उसके चरित्र की भाविकता एवं आदर्श प्रवृत्तियाँ स्वतः ही पात्रों को आकृष्ट करती हैं। उसके सवांग में उसकी चरित्रिक शक्ति की मुद्रा अभिव्यक्ति हुई है। उद्घाटनार्थ 'जयन्त' के प्रति यह उक्ति दी गई— आप समझें हैं कि नरपट रानी पार मरा निमग्न जानमान पर चढ़ गया है। एनी बात नहीं है जयन्त बाबू। लान का माट का कृत्य के सामने झुकना जाना नहीं है। मर हृदय का ज्वालामुखी हृदय के नातर नहीं ही मुक्त करता है परन्तु कृत्य का यही भाव कि आप नती अब करन जा रहे हैं यही करता है। इसी नीति के पात्रों के सवांग में भी उनकी भाविकता का उद्घाटन अत्यन्त उत्तमता से नावना सवांग में प्रतिमान रही है।

धामता रजनी पनिकर अपने शक्ति का तावरण के प्रति अत्यन्त जागरूक रहती है और उद्घाटन अपने कथा शक्ति में वर्तमान समाज की नितान्त जयन्त समस्याओं का रवाना किया है। उच्च मध्य वर्ग की समस्याएँ उनके उपवासों का प्रिय विषय हैं। आत्मिक उपवास में जयन्त का घर ऐतहासिक प्रतिनिधित्व करता है। यद्यपि जयन्त नायक नहीं है तथापि उनके घर में गुप्त जीवन-वापन के सब साधन सुलभ हैं।

उनके कुत्त को जसा पीटिय एव रचियर भोजन गुनम है उमस निम्न वम र नाग
 जीवन भर वचित रहत है। नयिका न रोजगीना के प्रति तयन की मन्द्यता या निम्न
 करव वा-यषम्य को दूर करने की आय-यवता का जा-य प्रतिपा-य किया है। तात्ता
 के चरित के माध्यम से स्वच्छ-य विचारावाजी उनमान नारी को यह गि ता नी गद है
 नि मोतिन तप्याजा के जावग म पति और महस्था की उप ता करना उचित तृ है।
 परेण वतमान काल के पषध्रष्ट युवक का प्रतिनिधि और उसका चरित्र हम गत का
 प्रमाण है कि एम यवता का नयिष्य उ-वन नहीं हुता। दूसरी जा-य धनी परिवार का
 यवतिया का जीवन कितना कृत्रिम अकमण्य एव रागना है यका पञ्चय नयिका न
 वला के चरित से दिया है। उ-य-रणस्वरूप य-यम्यपूण चिन-य है— जागिर
 बना म क्या कमी है? मोनियर बग्गिज का पारक्षा म फन हा ग- है ता क्या? उस
 कोन सी नौकरा करना है? एक मफ-य पत्नी म जितन गुण हान चाहिए व सन बला
 म हैं। वह खूबमरता से मस्करा गवता है जिस यवित के सामन मस्करा रही हा वह
 चाह उन मस्करा-ट के योग्य हो या न हो। वह मुन्दर बप- और गहने पहन सकती है।
 बगिया मकअप स्तमान करने के सब तरीक जानती है। ब्रिज गन मक्ता है। पार्टी म
 बैठकर बड़ी से बड़ी गप्प हाक सकती है। नौकरा का डाटना नी जानती है।^१

श्रीमती पतिवर न रोजगीना के परिस्थिति प्ररित चरित्र विकास गारा मह
 मिद किया है कि यदि समाज के बाढ ममभ जानवान पात्रा के साथ मरन एव सहज
 यवहार किया जाय ता ये भी समाज के प्रतिष्ठित सदस्य बन सकत ह। अनाव शपा
 एव बदना की पृष्ठभूमि म विकसित होने से एस पात्रा का यक्तिरव बढ घर के पात्रा
 की अपक्षा अधिक स्पृहणीय एव उ-वन हाता है। उपयक्त उद्-य की अभियजना
 के त्रिय ही प्यास बादन की रचना हुई है और कहना न हागा कि जयन्त के घर आने
 के पूर्व म जयन्त के जा-य म जान के बाद तक की घटनाजा की छाया म राशनीना के
 चरित्र का जो मनोवैज्ञानिक सहज विकास नम एव रचि परिवर्तन नयिका ने चित्रित
 किया है उसम उ-हाजागीतीत सफनता प्राप्त ह है। उद्-य प्रति की दिना म मह उनकी
 मराहणीय उपनधि है।

रजनी जो ने जवन अ-य उप-यासा की भाति प्याम बादन म नी यावहारिक
 भाषा गती का प्रयोग किया है। इसम वाक्य तपु तथा मुयवस्थित है जोर नाटकीय
 तारतम्य न गली का और भी अधिक सजीवता प्रगन की है। प्रम नारी के लिए सोनाम्य
 हाता है। उसने जीवत की महत्वपूण घटना होती है। आदि वाक्या ने अभियजना पक्ष
 म यथाचित गाम्भीय का समाव-य किया है। नयिका की गली म एक विगप प्रवाह है

और साथ ही भावा को बहान करने की अनुकूलता भी लक्षित होती है। पापा के मनो-
भावा का विनयण अथवा विग्रह करत समय उनका गली विरोध मामिक हो उठी है।
प्रस्तुत रचना के प्रमाणस्वरूप जयंत की भावबारा द्रष्टव्य है— 'गीता' को देखते हा
उसके अन्तर्गत में एक वक्ता सा क्या बरबट लती है ? जाने 'गीता' में 'एस' क्या है ?
वह जानता है कि उसके लिए ऐसा करना उचित नही है। एक बार उसके मन में आया
भी कि जान किम किस ने 'गीता' के गारर का टूटा हागा। परंतु उससे क्या ? मुनि
जब बनती है तो न जाने कितने हाया स निकलती है कोई गड़ता है कोई तरागता है
परंतु जब उनकी प्रतिष्ठा कर दा जाती है, तो पुनारी अपन बच्चा स भा कहता है कि
वह स्वच्छ हुए रिता मूर्ति का न छए। श्रीमती पतिकर ने अपनी भाषा अथवा गीता
की सृजना का आर 'यान' न दखर अछा हा किया है अ यथा इस उपन्यास में जा महज
प्रभावात्पात्कता है वह ललम होती। 'मनि' 'गडम्बर' अनिपजना पक्ष के महज
मोल्न्य का क्षीण ही करता है।

५ जाडे की धूप

श्रीमती रजनी पतिकर ने 'जाडे की धूप' 'गीतक' समस्याप्रधान सामाजिक उप-
न्यास की रचना १०३ पृष्ठा में की है। इसका प्रत्येक परिच्छेद पत्रा के रूप में लिखा गया
है जो उपन्यास का नायिका भारती द्वारा अपने प्रमी अजय के प्रति लिखित है। भारती
पवन की पत्नी है और टीपू नामक पंचवर्षीय बालक की माता है किन्तु पवन स अनशन
होन के कारण उसका दाम्पत्य जीवन विरोध मधुर नही रह पाता। तभी उसके जीवन में
अजय का प्रवेश हुना है किन्तु उसके भारतीय सम्भार पनि को तलाक दकर अजय का
अपनान में निचिचात है। सम्भव था कि यह क्रिकक और और समाप्त हो जाती किन्तु
इसका पूरा ही उम पान हो गया कि अजय का प्रेम अनित्य मात्र था। वास्तव में वह एक
तहानी तरंग था और भारती स निरन्तर प्राप्त करके अपनी किमी कहानी के लिए
अनुभूतियाँ एकत्र कर रहा था। कहानी पूरा हात ही वह उस बचन के लिए किमी अनि-
मनो के साथ बम्भइ चला गया। भारती का अपन छन जान पर बहुत दुःख हुआ किन्तु
पवन ने सब कुछ जानकर ना उससे समझौता कर लिया। भारती ने मोरुरी में लोम
पत्र लिखा और निधन तथा अनिष्टित वातका का गि ता कर उनके जीवन मुरार का
अपने जीवन का तथ्य बना लिया।

उन आतिशक्ति के माक अतिशक्ति-भारती की पुत्रा या पुत्री मालती का औरत
भावा इस उपन्यास की मुख्य योग्यता है जो मुख्य रूप से पात्र में विनिमित्त है।
मातला का विवाह होने पर वह दुःख किन्तु उस जीवन का वास्तविक पुत्र प्राप्त न हुआ
क्या कि उसका पिता कु मारी के और उ ह न सा न गारर ना। उपन्यास में प्रभाव

अथ गौण कथाओं का समावेश भी हुआ है। चीन के दार्शनिक की कथा जोर ताता जा जिनके पर भारती टूटान पतन जाती थी के परिवार का कथा इसमें उल्लेख है। पत्र पत्री में निहित होने के कारण इस उपवास का अभिवादन कथा भारतीय कथा में उसकी भावनाओं समस्याओं और विचित्रताओं की अभिव्यक्ति में सम्मिलित है। कथानक में पतनाओं का विषय प्रसार न होकर बर्णन का महज मनोवैज्ञानिक प्रवाह है। अतः 'नमः रात्रि' का मायित्वता जाति गण मन्त्र 'मृत्यु' है। माम के माता का भाति 'म' उपवास का कथानक भी जादगो मुख है। इसीलिए प्रारम्भ में भारती का अजय के प्रेम में व्यस्त लिखाकर मग मारीचिका में भटकवाया गया है और बाद में अजय के प्रेम का निस्कारता निज करत हुए भारती को पुनः दाम्पत्य जीवन में समावेश स्थापित करने के लिए प्रयत्न गीत दिखाया गया है।

नीमती पतिवर के अथ उपवासों का भाति जाड का रूप में भी चरित्र चित्रण की प्रमुखता रही है—घटनाओं का आयाजन भी चारित्रिक सौष्ठव का दृष्टि से हुआ है। परंपरा का अपेक्षा नारी पात्रों का समस्याओं और भावनाओं का चित्रण में चर्चिका का विषय सफलता मिली है। भारती और मातली दोनों ऐसी पात्राएँ हैं जो विवाहित जीवन में सुखी नहीं हैं। भारती अपेक्षाकृत भावुक है 'स्त्री' कारण वह अथ के बागजाल में रह जाती है। फिर भी कृत्य के प्रति सचेत हान के कारण वह अपना गह त्यागकर पणत अजय की नहा बन पाती। मातली अपने श्रेणी तथा गर्वी पति का प्रकृति से गृह पान का एक अथ सुविधाजनक उपाय खोज निकालती है—वह यह कि अपने पुत्र और पुत्री को लेकर ही यस्त रहती है, पति से कम से कम सम्बन्ध रखती है। 'उपवास' की अथ पात्राओं में पात्रा जी की पत्नी का अपने गहवर के चाचा से प्रेम है उनका पुत्री का गहवर से प्रेम है पवन की माँ पुत्रवधु का गायण करके स्वयं पोष्टिक भाजन लेती हैं—और ये सब पात्राएँ न केवल चारित्रिक बहिष्कार का प्रकट करती हैं अपितु उनका प्रवृत्ति का स्वयं में अनोखा विदूष प्रस्तुत करती हैं।

परंपरा में अजय और पवन का स्थान मरप है। अजय का यकित्व कपटपण है—कदाचार होने के कारण वह जसा चाह अभिनय कर जाता है और उसका कितारी व्यक्तित्व पर मग्न होकर भारती पवन से विमुक्त हो जाती है। पवन का यकित्व विषय प्रथम ताने की कित उसमें अजय का भाति काइ दुराव नहा है क्योंकि वह अपनी दुःखताओं का गुप्त रहन की अथ यकता नहीं समझता। बाद में भारती ने स्वयं स्वीकार किया कि उसका पति अजय से बड़ा महान नहीं ऊँचा है। 'रात्रि' गुप्त विचारकार ने इस उपवास की समाप्ति करत दृष्टि से अथ यथा किया है कि लिखिका ने अथ के चरित्र का उभारन का और मयिक रूप में ध्यान नहीं दिया है—'म' उपवास का विषय ऐसा है जिस वासनान् बचाकर रखना बलवन्ति था। पर लतिका 'म' बात में पूरी तरह सफल हुई है कि 'जा' की पूर्ण कथा भी वासनान् नहीं बनन पाया। भारती का उन लिखिका की मनोदशा का अजय मनोवैज्ञानिक चित्रण इस उपवास

मह पर अजय व चरित्र और मनाविमान पर बहुत कम प्रकाश डाला गया है। मरी राम से यहाँ इस रचना का सबसे बड़ी कमजोरी है।^१ चन्द्रगुप्त जा का सुभाव निश्चय ही अच्छा है किन्तु ऐसा हान पर तखिया द्वारा निरूपित समस्या का जावार ही छिपित हो जाता। उपयाम में कथानक व चुनाव की अपेक्षा उसका निवाह का प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण होता है और इन दृष्टि से यह उपयास निश्चय ही सगवत रचना है।

उपयाम व अथ पात्रों में भारतो का अपसर मलबानी भी उन्नतनीय है जो अधातन महिमाओं में सम्पन्न बढान में मवष्ट रहने व कारण अपन वग का प्रतिनिधित्व करता है। मालना का पति उन वना पुरुषों का प्रतीक है जो घन क गव में चूर रहकर पत्नी से कथन त्रिक मध्य रहते हैं उसका नावनाजा का मूय नही जानते नाकरा व रहते हुए भी उसे अपना सवा में लीन गेवना चाहते हैं आदि। अथ पात्र पात्रों का भाति नरिका न मालनी के पति का विपत्ताभा का उत्सर्ग करत समय भी प्रसगवग पुरुषों की मनोवर्णनिक प्रवृत्तियों की ओर सक्त किया है। उदाहरणार्थ उसकी वासना पूर्ण दृष्टि व विषय में त्रिका की यत्र उक्ति दगिए— पुरुष की दृष्टि में नारी का कवर एक ही मूय है उसका गरीर उसका सौन्दर्य। आजकल का प्रगति प्रमी पुरुष किसी भा नारी से बात करता है तो कुछ ऐसा असम्भ नाव लिये हुए कि वह नारी उन धना के लिए उसकी पत्नी व समान होती है।^२ इस उपयास में पात्रों का चरित्र चित्रण मुख्यत चतना प्रवाह पद्धति व अनुसार हुआ है जत इसमें कथापकथन में माध्यम में पात्रों के विचारों का आदान प्रदान बहुत कम स्वरों पर है। एत सवात् तथ सवा मारगभित हैं और प्राय कथानक तथा चरित्र की अभिव्यक्ति में सहायक रहें हैं।

जाड़ की घूष मल्लिका न विवाहित स्त्री द्वारा पर पुरुष म प्रेम का समस्या का स्थान दिया है। जाड़ की गितित नारी प्राचान अधिष्ठित नारिया की भाति पति की प्रत्येक उचित अनुचित बात नही सहपाती और परिणाम होता है—मानसिक अगान्ति। परपुरुष का कृत्रिम प्रेम में आपात का सहनकर माना नारी का एक नया माग सुभावा है—पति का तलाक दवर प्रमा न विवाह करन का माग—किन्तु क्या वह एक मकल उपाय है? त्रिका का इसमें विश्वास नही क्योंकि मनोवर्णनिक दृष्टि से तत्र पुरुष एक मह पत्र नारी का मिथ्या आवामन गेये और विवाह के बाद क्रूरता का दव हार करेगे। मला मिड करने व त्रिग हान अजय व कथपूर्ण प्रेम का रहस्य प्रकट करके उक्त समस्या की जागरण दग समुन्मेषा है। पुरुष और नारी की प्रवृत्तियाँ का मनाविमान वि रूप करत हुए सचित्रा न पात्रों वनक उक्तिगो प्रस्तुत का है जिन।

१ जाजरत मस्तुदर १८५८ पृष्ठ ५२

२ जाड़ की घूष पृष्ठ ७०

३ दगिए जाड़ की घूष पृष्ठ ५६

नेकाल और उद्देश्य दोनों को सुन्दर अभिप्रेक्षित है। उन्मुखता व अवतरण स्पष्ट है—

(अ) तब कहा कि आजकल तुम बहुत लड़कियाँ बनाकर विस्थापित लड़कियाँ का जिनम विवाहिन अविवाहित दोनों ही शामिल हैं। स्त्री की बम्बई की ओर कदम की मडका पर अपनी अस्मत् बेचत हणदगत है। लड़कियों ने अभी मौका मिल तो उनमें जाकर उनके दिल का हाल भाँखना। नारी स्वच्छा से गरीर तन देती है जब जीवन की कोई अन्य आवश्यकता उस बसा करने पर विवश करती है।^१

(आ) आजकल पचास प्रतिशत विवाह जीवन सम्भव न रहकर बम जैसी मिचौनी का मेक भर रह गए हैं।

इस उपयोग की भाषा नविकल्प का अर्थ उपयोग की भाँति रोचक एवं प्रभावपूर्ण है। सरल तत्सम गंगा तटस्थ गंगा उद्गम के प्रचलित गंगा और मुहाने तक। कितना के प्रयाग गंगा भाषा में यावहारिकता का निर्वाह करने के अतिरिक्त उन्होंने गंगा में समस्पर्शिता और भावमयता की ओर भी यथाचित ध्यान दिया है। उन्मुखता मिश्रित नविकल्प मगधकाय-जसी भावात्मकता दिये— मध्यमार्थ में अपना स्नेह दाप जगाय बठी रहूँ प्रतीक्षा करती रहूँ तुम जाओ और मतम्ह पहचान न पाऊँ जब पहचान तो पान सकूँ। विदम्बना।^२ अनेक प्रसंगों में नविकल्प न बड़ी मौलिक उपयोग जटाई है जिससे उनके नाक-दगन की यापकता का बोध होता है। यथा— जा बात प्रकृति में नहा उसको करना नाक पर बोतल टिकाकर चलने से कम नहीं होता। नविकल्प न भारत के मनोभावों को यत्न करने के प्रसंग में अनेक स्थानों पर मनावना निकमूक्ति वाक्यों का भी प्रयोग किया है। यथा— बाहर की गतिवत्ता भीतर की वस्तुओं को सहलाती नहा सजगा देती है।^३ अतः यह कहा जा सकता है कि चरित्र विनयण की सजगता और समस्याओं की प्रखरता की भाँति नविकल्प का अभिव्यक्ति की सहजता में भी सराहनीय सफलता मिली है।

६. काला लड़की

इस नव उपयोग में एक काली लड़की के पारिवारिक वातावरण और उसकी प्रतिनिधिता का मनोवैज्ञानिक रीति से चित्रण किया गया है। कथाकार की सोद्देश्यता और मौलिकता के प्रति नविकल्प का अतिशय जाग्रह है जिस कथा-नायिका रानी के गंगो में इस प्रकार यत्न किया गया है— किसी उपयोग में किसी काली लड़की की समस्या का वर्णन नही किया गया था किसी नारी काली लड़की का उपयोग हीरोइन

नही बनाया था। बकिमचन्द्र ने अर्थात् लड़की से ली। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने गूगी लड़की को चित्रित किया परन्तु दोनों में से किसी ने भी यह आवश्यक न समझा कि किसी लाली लड़की को भी हीरोइन बनाए।^१

कथा-नायिका रानी की आधिकारिक कथा के अतिरिक्त लेखिका ने इस उप-वास में दो प्रासंगिक कथाएँ रखी हैं। इनमें से सुन्दरी की कथा मुख्य प्रासंगिक कथा है और टडन परिवार की कथा गौण प्रासंगिक वस्तु है। सुन्दरी की लेखिका ने स्वतन्त्र रूप में रहनेवाला आधुनिक यस्या के रूप में चित्रित किया है जो समाज की दृष्टि में कुमारी हान का बाग रचती है। टडन परिवार में आर्थिक साधनों व सीमित ज्ञान पर भी वतमान समाज की अपमान की प्रवृत्ति (नौकर गवर्नेस पगल माँ के प्रति मोह) की साकार विधा गया है।

लेखिका ने रानी लड़की रानी का नरन सन्तान का प्रतीक माना है। पिता तथा नौकरानी चादी व अतिरिक्त सब उसकी उपेक्षा करते हैं जब विधवापत्न्या में हूँ उसका हृदय में कुठारा बस जाती है। अपनी बहिन कावरी के पति कमल नारायण होने पर उनका मन और भी व्यथित हुआ जाता है। अपनी सभी सुन्दरी और कमल बाबू के अवयव सम्पत्ति पर सुन्दरी और कावरी द्वारा सिगरेट पीना आदि बातों से उस नई संपत्ति में घणा हो जाती है। बहिन कावरी व साथ में मूरा जान पर कावरी और कमल के मित्र धीरे-धीरे धुले मित्र व्यवहार में आ उसका मन का ठप पड़ता है। उधर कावरी ने अपने पति के साथ उसके सम्पत्ति पर मिथ्या संहार कर उस और चादी का घर से निकाल दिया। वह कुछ दिन सुन्दरी व साथ रहती तथा उसका निष्पत्ति सरल व्यवहार पर मुग्ध होकर कमल उसका प्रेम व्यक्त में बंध गए। उधर कावरी कमल का बहुत सा धन बटारकर माता और धारेन्द्र का साथ बिगाड़ती गयी। माता ने पति का त्याग करके बिगड़ में धनी विधवा से विवाह कर लिया जब रानी के पिता लखनऊ का महान रानी को लेकर अपने गढ़ के आश्रम में चले गए तथा रानी और कमल वहीं रहने लगे।

प्रस्तुत उप-वास में नारी और पुरुष की भावनाओं का मूलम चित्रण किया गया है। पुरुषों द्वारा स्त्रिय स्वच्छाचार हान पर नौ दूसरों की निंदा करना^२ आधुनिक माताओं द्वारा अपनी सुन्दरी पुत्रिया के वत पर स्वायत्त साधन करना^३ पूज्यपतिया द्वारा मात्र स्वायत्त साधन व निवेद्य दत्त साधन का भोजन देना, आर्थिक व्यवस्था सौकरता होने पर भी पतिया नारायण पुराना ज्ञान का निष्ठावा करना^४ आदि तथ्या का चित्रण न ममस्पर्शी रूप में प्रकट किया है। वस्तुतः उद्देश्य वगैरह चरित्र प्रस्तुत निवेद्य हैं—रानी कावरी, सुन्दरी कमल नारायण का माता आदि सभी पात्र वगैरह हैं। रानी के माध्यम से उद्देश्य का नौ उद्देश्यों का विचारमय प्रतिक्रिया, होने नाय विवेक आदि का मानिक

१ काली लड़की, पृष्ठ ६१

२ ३ ४ ५ दलित 'काली लड़की', पृष्ठ ११० १२१, १७-१८ ८६

चित्रण किया गया है। कावरी सुन्दर हठी स्वानिमानिनी और प्रेम का अपराधन का महत्त्व देनेवाली युवती है। धन का विविध रीतिवा स दुरूपयोग करनेवाला वसन्त भी आवुनिन धनी यवका की दुष्प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करता है। तद्विमान का भी विद्वत् चरित्र प्रस्तुत किया है उनका दोषों का कारण भी अवश्य प्रकट किया है। रत्ना तथा का मूल स्रोत है—वर्तमान सम्प्रदाय और पश्चिम का अत्याचारण। रत्ना का पिता मातृत्व का स्नेह स्रोत इमोनिन सुख नहीं रहता कि वर्तमान सम्प्रदाय कठोर बाध्य सौम्य का मूल्य जानती है। वसन्त का पिता का मूल कारण भी स्नेह का अभाव ही है—उसका माता तो धन सम्पत्ति को अधिक महत्त्व देती ही थी। दुष्प्रभाव पत्नी कावरी और सप्त भावसी ही मिली। अतः यदि वह सुन्दरी और प्रेम जसी स्त्रियाँ के साहचर्य और मद्यपान द्वारा मन बहनाता रहता तब उसकी अपेक्षा उसका वातावरण को ही दीया देना होगा। रत्ना प्रकार रानी भी माता की उपेक्षा और बहिष्कार का व्यवहार के कारण ही विवाहिता बना। रानी के प्रति उसका सविका चाँगी के समत्व के द्वारा सम्भवतः यह सिद्ध किया गया है कि वर्तमान सम्प्रदाय से अवभावित हृदय में मन भी बड़ी स्नेह है जो भारतीय नारा का आभूषण रहा है। रानी के प्रति उनकी माँ का द्वेष अति की सीमा तक पहुँच गया है जिसका आभास स्वयं रेखिका को भी है— बीसवाँ सदी में अपनी सगा माँ ऐसी भी हो सकती है। गायन कृत का विवाम नष्ट आया।^१

प्रस्तुत उपन्यास में कथोपकथन की अपराध रत्ना का भाव और विचारों का विवरण पर अधिक ध्यान दिया गया है। तथापि ऐसे मन्त्रों का अभाव नहीं है जो कथानक का विकास और पात्रों के मनाभावों का स्पष्ट करने में सहायक रहे। रेखिका ने कथा पत्रयन में मनाविधान का उचित स्थान दिया है। उदाहरणार्थ कावरी का चरित्र चित्रण दक्षिण—

मन डरत डरत पूछा था चाँगी 'याह में दूल्हा की माँतर ही लखी जाती है ?

हा और क्या ! उसका मान और रपया भी दखन में बाइ हज नहा।'^१

वैज्ञानिक जीवन का पन्थावा से यह सिद्ध भी हो गया कि कावरी की दृष्टि में पति का अपराध उनके धन का ही अधिक मूल्य था। रत्ना के पिता की उक्तियों में रानी के प्रति स्नेह और उदारता की अभिव्यक्ति हुई है।^१ सुन्दरी और प्रेम का सवाद उनकी विद्वत् मनावृत्तियों का परिचायक हैं। रानी के गुणों पर मध्य वसन्त की उक्तियाँ भावपूर्ण हैं जिनमें रत्ना के प्रति स्नेह तथा आत्मीयता का भाव है।^१ रेखिका ने प्रायः सक्षिप्त सवादों को योजना का है किन कदाचित् भाववतांग कथित उक्तियाँ दीर्घ हो गई हैं। वसन्त द्वारा अपना

१ काली लडकी पृष्ठ ११८

२ काली लडकी पृष्ठ ८

३ रेखिका काली लडकी (अ) पृष्ठ २२ (आ) पृष्ठ ३२ ३३, ३८ ४६

४ रेखिका काली लडकी पृष्ठ १२७ १३६ १३७ १४५

दुष्प्रवृत्तियाँ की चर्चा यही प्रकार की है।^१ जालीब्य सवादों को भाषा पानानुकूल न होकर एकरूप है। लिखिका न सवादों में तक पद्धति को न अपनाकर प्रायः उह मना विज्ञान सम्मत सहज रूप में प्रस्तुत किया है जो निश्चय ही एक गुण है।

लेखिका के अन्य उपयोगों की भाँति प्रस्तुत कृति में भी अनेकश युग की सम कालीन प्रवृत्तियों की प्रसंगानुकूल चर्चा हुई है। कतिपय स्थलों पर स्थिति का सामान्य परिचयात्मक उल्लेख हुआ है किन्तु अविक्रान्त व्यंग्योक्तिपूर्ण अभिव्यक्ति का प्रथम दिया गया है। पूर्वोक्त बचन के प्रमाणस्वरूप यह उक्ति द्रष्टव्य है— १६५४ में दिल्ली में लड़कियों को भी नौकरी मिलनी उसनी ही मुद्रिकल थी जितनी शायद १६३१ में लड़कियों को। शिक्षित लड़कियों को सरया इतनी हाँ गई थी कि मामूली सा नौकरी के लिए बीसिया लड़कियों की जड़ियाँ आती। दूसरी लड़कियों का अड़ियाँ के साथ मरी अड़ियाँ भी प्रायः रद्दी की टाँकरी में फक दो जाती, क्योंकि मरे पास काई सिफारिश नहीं थी।^२ 'यम्यपूर्ण उक्तियों के उदाहरणस्वरूप अद्योतिष्ठित उद्धरण अवलोकनीय है—

(अ) घर से बाहर निकलना ही एक ऐसा अंतर है जो दीदी को पुराने जमाने की स्त्रियों से अलग करता है। पहले भी नारी की यही समस्या थी कि वह सत्तान को ज़माने देती थी, पुरुष उसके ग़रीब से अधिक उसके बलित्व का महत्व नहीं देता था। नारी की यह समस्या अभी तब ज़्यादा की-स्त्या ही बनी है।^३

(आ) 'मुझे माँ के दिल्ली आने से आश्चर्य नहीं हुआ। माँ की बड़ी बटी सुन्दर है। विवाह के बाज़ार में उसकी अच्छी कीमत मिली है। माँ यदि अपना एक मजिदा मकान लखनऊ-जग छोटे नगर में छोड़कर दिल्ली आ गयी हैं तो उसमें किसी के हेरान होने की कोई बात ही नहीं। दिल्ली में मैंने देखा है कि जिन स्त्रियों की सुन्दर लड़कियाँ हैं, सुन्दर न भी हों, लड़का बस्त और जवान होनी चाहिए उसने सभी काम चल जाता है।^४

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रस्तुत उपयोग में आधुनिक सम्यक्ता पर अनेक छोट-कस गये हैं। सुन्दरी और बसंत बाबू तथा कावेरी और धीरेन्द्र के मध्य अवध सम्बन्ध सुन्दरी और कावेरी द्वारा सिगरेट पीना आधुनिक माताओं द्वारा अपनी सुन्दरी पुत्रियाँ के बल पर स्थापनापन और तथ्या का पढ़कर वर्तमान सम्यक्ता के प्रति घणा हो जाती है। कई बार लेखिका इस स्थिति का प्रति व्यंग्य करने में इतनी तत्पर हो जाती है कि किंचित् बाल के लिए मुख्य बचानक का विस्तारण कर उसी का वर्णन करती रहती है। लवला कोट में वर्तमान बचियाँ एक बचिविनिश के साथ नए बचणित रूप का वर्णन, सम्पन्न

१ बेसिये वाली लड़की, पृष्ठ १४४

२ काली लड़की पृष्ठ ११५

३ ४ काली लड़की पृष्ठ ६२ १२०

५ काली लड़की, पृष्ठ ३५ ४२

मध्यवर्गीय तथा उच्चवर्गीय पूजोपति समाज के स्वाध्याय जीवा का विस्तृत उल्लेख^१ आदि प्रमग ऐसे ही हैं।

एक काली लड़की की विषम परिस्थितियाँ एवं तन्त्रय कुटिल अस्तित्व का मनोवैज्ञानिक चित्रण आनोच्य कृति का उद्देश्य है। त्रिगिणा की हार्मि नामना यह है कि इस कृति के प्रभाव से समाज में रानी-रानी-रानियों का जीवन विषमय न हो उनमें अभिभावक और माता-पिता उनकी यातना का जनमानस में जगमगाएँ।^२ इस उपयाम का द्वितीय प्रमुख उद्देश्य नई सभ्यता की निस्सारता को यकन करना है। यस्तु नई सभ्यता ही वर्तमान समस्याओं की जन्मदात्री है। उसमें पथर रहकर ही भारतीय युवक-युवतियाँ तथा उनके अभिभावक मानविक गति पा सकते हैं क्योंकि यह सभ्यता उन्हें भौतिकता की ओर उन्मुख करती है। पाश्चात्य सभ्यता का अध्यानुकरण करने जो नई सृष्टि विकसित हो रही है वह भारत की प्रभावशाली परिवार व्यवस्था का विच्छिन्न हो कर सकता है कुछ उत्कृष्ट की आशा उससे व्यर्थ है। इस विषय में रानी की अधोलिखित उक्ति स्पष्ट है— मुझ धीरे धीरे इस नयी सभ्यता और इस नए रहन-सहन से चिढ़ हो गयी क्योंकि इसने सुखी परिवार को डाल डाला। मुझ लगता कि कमल बाबू का परिवार भी टूट रहा था। मेरे माता-पिता का परिवार तो टूट ही गया था। नई सभ्यता और नये ढंग के रहन-सहन ने माँ का चक्काचौर में डाल दिया था।^३ यस्तु काली लड़की की विडम्बनाओं का स्रोत भी यही सभ्यता है जो केवल बाह्य सौन्दर्य का मूल्य आकती है। इसी कारण रानी को माता का सह-स्नेह सुलभ नहीं हो पाता और इसी कारण कमल बाबू प्रारम्भ में उसकी उपेक्षा करते हैं। सबिका चादी इसीलिए रानी से अपार स्नेह करती है कि उस अशिष्टता के पास वर्तमान सभ्यता में अप्रभावित स्नेहपूर्ण हृदय विद्यमान है।

त्रिगिणा के अर्थ उपन्यासों की भाँति प्रस्तुत कृति में भी सरल एवं प्रवाहपूर्ण भाषा रानी का प्रयोग हुआ है। मरमन के अधरे में उड़ाला हो गया— इन छह वर्षों में उन्होंने मुझसे सीधे मह-वात तक नहीं की थी^४ आदि प्रमगानकूल मुहावरों के अतिरिक्त अवसरानुकूल सूत्रियाँ भी भाषा-शैली में सजीवता का संचार किया है। यथा— चरित्रहीन मनध्या की कोई विधि नहीं होती। वे भी सज्जन पुरुषों की तरफ बुराकार की तरह अपनी व्यक्तिगत विपत्तियों द्वारा ही इस सगर में खड़े होने का स्थान पाते हैं।^५ इस उपयाम की रानी की सर्वाधिक मुखर विपत्तियाँ यह हैं कि इसमें जब किगत स्वयंपूजक गति की सदि की गई है। उत्पाहरणाय रानी की माँ के विषय में

१ रानी लड़की पृष्ठ ५६, ५६

२ काली लड़की भूमिका पृष्ठ ५

३ काली लड़की पृष्ठ १२४

४ ५६ काली लड़की पृष्ठ ४४, ७८, ५१

य छाटे कितन तीखे हैं— आज जब मैं उस जीवन का बहुत पीछे छाड़ चुकी हू तो साचती हू कि मेरी मा ने कौन सा अनघ कर दिया, यदि वह जमाई क घर आकर रहन लगी थी ? छोटे-से बच्चा का, यम वेतन पानवाला पति, यदि उह चालीस वष की अवस्था में लउनऊ में बांधकर नहीं रख सका तो इसमें भी उस बचारी का क्या दोष ? पच्चीस वष उन्हीं ऐस पति ने साथ निभाय था । अब उनक नौरस जीवन में जरा सी सरसता आ गई थी । दूसरा को दुरा लगन का कारण ? ' उपवास की भाषा जाडम्बगन्धूय सहजता से अनुप्राणित है । कहीं-कहीं गली के स्वाभाविक प्रवाह में जनायास ही नूतन उपमाया का समावेश हुआ है । यथा— मेरा विषय सदब लम्प पोस्ट की तरह मांग दिखनाता रहता था । ' लेखिका के अर्थ उपयासा की भाँति यह कृति भी चेतना प्रवाह पद्धति में लिखी गई है । नायिका रानी के आत्मकथन के माध्यम से सम्पूर्ण कथा का विकास हुआ है, जिसमें गला में सवय मौनिकता की छाँप विद्यमान है ।

७ एक लडकी दो रूप

इस उपयास में वर्तमान परिस्थितियाँ के समग्र म नारी सत्कारा और विवागताओं का अन्तर्द्व द्व चित्रित किया गया है । उपन्यास की नायिका माला निम्न मध्यम वर्गीय परिवार की कथा है । दहज कम होने के कारण उसका विवाह निश्चित होकर भा सम्पन्न न हो सका । अतः घर की आधिर दगा मुधारने के लिए वह सठ कनौडिया की निजी सचिव के पद पर बाय करन लगी । सठ जो के सम्पर्क से उसे धन का अभाव ता न रहा किन्तु अभी कभी उस एस इच्छा विरुद्ध काय करन पड़त थे जिनसे उसका मानसिक शांति प्राय नष्ट हो जाती था । जब कभी वह मौकरा छाडन का विचार करती था तब न केवल उसके अथ लोभी पिता अपितु उसके अपने अंतर में निहित महत्त्वाकांक्षी माता इतम बाधक रहती थी । उसक एकाकी जीवन में उसका पुष्प मित्र राजू जो एस उच्च अपसर था समय समय पर सरसता भरता रहता था । वह विवाहित था घर में पत्नी के सरोता पर नाचता था और बाहर माता से मन-बहलाव करता था । माता के पिता को झारावास का दंड मिला, क्योंकि ब कनौडिया का नकली आभूषण पर मुलम्मा चढ़ाने में सहयोग दत था । उहाने गानाबाना आत्महत्या करला और इस घटना से बन्धित होकर माता ने भी सठ जा की नीकरी से त्याग पत्र द गिया तथा महल के बच्चा का पुत्र लेकर गिदा देन लगा । राजू की स्वाधपरता में भी वह जन तक अवगत हा चुका थी अतः उसने उससे भी सम्पर्क न रखा । माता ने अतिरिक्त कथानक में गीत रूप में उगरी सखियों—अचला और उमा—के जीवन पर भी प्रकाश डाला गया है । मदन नामक युवक ने अचला से विश्रामपात किया किन्तु माता ने भाई रविन उग्रम विवाह करके उसा जीवन का नष्ट होन ग बचा लिया । उमा का पति अमिड डिपिल चरित्रवाला

पत्रकार था अतः वह भी दुखी रहती थी।

जासोच्य कथानाम जासोपात माना व मानसिव अन्तः द्वका अकन हुआ है। माना के दो रूप हैं—एक उसका चित्रण गोल रूप जो उस तृष्णाओं से विमल रहने का सन्देश देता है और दूसरा उसका महत्त्वाकांक्षी रूप जो उभे आर्थिक प्रयत्नों को जोर प्ररित करता है। इस द्वितीय रूप को लेखिका ने गन्या की माता दी है और उसके माता का मनावचानिक रीति से सुन्दर विवेक्षण किया है। उस प्रसंग में होने सभाज के उच्च वर्ग और मध्यम वर्ग के कतिपय विविध रूपों का चित्रण करते हुए आधुनिक सभ्यता पर अनक स्थिति पर मार्मिक व्यंग्य किए हैं। माता अपनी विवशताओं के कारण छड़ी गईं तो अचाना अपनी निरीहता के कारण मदन जैसे सम्पद के जाल में फँसी। विवाहित पात्राजों के अस्तित्व को नयिका ने अपेक्षाकृत सदस रूप में प्रस्तुत किया है। राजा और कनौश्या की पत्निया पत्निया पर शासन करता है किन्तु माना की माता की स्थिति अपमानजनक दयनीय है क्योंकि वह निम्नमध्यम वर्ग की गनी है। उसका पति कोई काम नहीं करता अतः वह सिराने रटाई करके कुछ उपार्जन करती है किन्तु पत्नी की बर्माई खाकर उभे वस्तु मानसिक पीडा होती है।

पुरुष पात्रा मराजु मुख्य है क्योंकि वह नायिका माता का प्रेमी है। घर में परनी का नामन माननेवाले और बाहर माता में मन बहानेवाले राजा के माध्यम से लेखिका ने आधुनिक विवाहित युवकों की स्वाधपरक भावनाजाल तथा विविध व्यक्तित्व पर बरारा व्यंग्य किया है। राजा की भाति विवामघातक मदन धन के बल पर माना को आत्मा को शय करनेवाले सठ कनौडिया माना के अथ लोभी पिता आदि अन्य पुरुष पात्र भी पाठक की सहानुभूति प्राप्त नहीं कर पाते। माना का अनुज रवि ऐसी कुरूपताओं से मयत है—पिता के अथ जीवन का विराध करके और परिस्थितियों से प्रताडित अचाना को अपनाकर उसने नसी का प्रमाण दिया है। लेखिका ने चरित्र चित्रण के लिए प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों प्रणालियाँ को अपनाया है। उनकी एक उल्लेखनीय प्रवृत्ति यह है कि किसी पात्र अथवा पात्रा की विपत्तया की चर्चा करते समय उन्होंने प्रायः पुरुष अथवा नारी की जातिगत विपत्तया का भी विवेक्षण किया है। उदाहरणार्थ वे उक्तियाँ दक्षिण—

(अ) बाहरे पुरुष ! कोई नारी थोड़ी सी प्रणामा दे थोड़ा सा महत्त्व दे तो पुरुष को लगता है कि वह उसे चाहती है।^१

(आ) औरत की यह भूष जाने क्या बढ़ गई है कि वह नायिका बने। गहिणी बनकर भी वह सुखी नही। मानो पति का प्यार तो उस मितना ही चाहिए था, उसका अधिहार था परन्तु दम पात्र का जोर न मिल जाए तो क्या बुरा है।^१

१ एक सड़की दो रूप पृष्ठ ४७

२ एक सड़की दो रूप पृष्ठ १३

श्रीमता पतिकर ने इस उपन्यास में कवानक की माला के मानसिक चिन्तन के रूप में यकत किया है फलतः इसमें कथोपकथन के लिए बहुत कम अवकाश रहा है। तत्त्विका ने मुख्य रूप से माला के बाह्य चरित्र और उसके आन्तर चरित्र (गुडिया) के संवाद प्रस्तुत किए हैं जो आत्मचिन्तन का ही दूसरा रूप है। इन संवादा में अनेक नई चीजें सजीव अभिव्यक्ति हुई हैं। ऐसी उक्तिया में गुडिया द्वारा माना का आर्थिक प्रशिक्षण की धार—'मुँह करने का विधान उल्लेख हुआ है।' इसमें अतिरिक्त तत्त्विका ने राजू माला आदि अन्य पात्रों के वातावरण भी कही कही प्रस्तुत किए हैं। उद्दान संवादों की संक्षिप्त एवं सारगर्भित रखने की ओर भी पवास्त ध्यान दिया है।

इस उपन्यास में वर्तमान समाज के वातावरण और सनस्रान्त के चित्रण पर विशेष ध्यान दिया गया है। वर्तमान युग उत्तरात्तर भौतिकता की ओर प्रवृत्ति करता जा रहा है फलतः इस युग में अर्थ और काम की समस्याएँ मग्न प्रमुख हो गई हैं। तत्त्विका ने उपन्यास के प्रारम्भ में ही अर्थ की उपमा पर ध्यान करते हुए कहा है—

आजकल देवता भी पत्थरमाला का ब्यायनोत्र की माना उस देखते हैं। पुण्या की क्या कीमत ? फूला का क्या मौल ? 'यही कारण है कि रवि-जैसे एक-दो पात्रों को छानकर इस उपन्यास में अधिकांश पात्र अर्थ निष्ठा से ग्रस्त हैं। सैठ बनौडिया नकलें जानूषणा की पकड़ी के स्वामी होकर भी जन से बाहर रह और माना के पिता को उनका साथ देने मान में पारावाना मिला—यह अर्थ की महत्ता के कारण ही सम्भव हुआ। काम सम्बन्धी समस्याओं की अभिव्यक्ति इस उपन्यास में अनेक स्थान पर हुई है। नारी अपने मन से चाह समता की दुहाई देती रहे किन्तु वास्तव में वह आन्ति युग की भाँति पुरुष की भाँति माना है। कम से कम पुरुष का दृष्टि उसे इससे अधिक कभी नहीं देती। 'नई रोगी का युनक कबल पत्नी से ही तुष्ट नहा होता अपितु घर से बाहर किसी प्रेमिका के समक की भी कामना करता है। अर्थ और काम' के इस युग में कवन वही व्यक्तित्व तुष्ट रह सकता है जो जादगों का गला पाट सक अपने सम्कारों को नुन द और पवन नीतिशता में रमण कर। उपन्यास की नायिका माला वसा न कर सका फलतः उसका जीवन अगान्त बन गया। काम ने उस राजू की ओर प्रवृत्ति दिया और अर्थ ने सैठ बनौडिया की ओर किन्तु जब सच्चा सुन कहा ना प्राप्त न हुआ तो उसने महत्पाकाशात्रा की निराजति कर सरल जीवन का स्वीकार किया। समवर्तीन 'बन्त गमस्याओं के इस विवरण में लेखिका ने देवता के अतिरिक्त वृत्ति के उन्मत्त का ना मुखरित किया है। उनका उद्देश्य यह निदि करना है कि धन निष्ठा मानव के मरुत से विचित्रित कर देती है अतः तत्प्रा का त्याग करके इच्छाओं पर नियन्त्रण रखना चाहिए।

१ दसिए एक सड़की दो कन' पृष्ठ ४०, ४१

२ एक सड़की दो रूप पृष्ठ ५

३ एक सड़की दो कन पृष्ठ ६५

जालोच्च वृत्ति की रचना सरल साहित्यिक भाषा में हुई है। नाजुब सत्रू इतना मोहताज आदि उद्धृत '१' स्टडी, प्रोफाइल क्लब आदि अग्रणी '१' १, पत्ने नहीं पड़ा, हाथी के दाँत ऐसे ही होते हैं आदि महावारा^३ और अनकानेक सूक्ति-वाक्या के यथास्थान प्रयोग से भाषा में सजीवता आ गई है। इस उपन्यास की 'गली की सर्वाधिक उत्प्रेक्षणीय विशेषता है—'यंग' के सजीव छोटे जो पाठक को सहज ही आकृष्ट कर लेते हैं। उदाहरणार्थ वर्तमान सम्यता पर मार्मिक यंग दिये—मातहत भी वही क्लब है जो अपने अक्रसर की पत्नी के साथ धार्मिक करने जा सकता है। अक्रसर कहीं दौरे पर हो तो पत्नी को घुमाने फिराने भी ले जाता है और सक्कड़ छो सिनेमा भी दिखलाता है। क्लब पत्नी की यही परिभाषा है कि पति की अनुपस्थिति में वह कभी भी घर में भोजन करने के लिए तैयार न हो। वह पति के मित्रों के साथ—नहीं तो अपने मित्रों के साथ—केवल होटल में खाए।"^१

इस उपन्यास की रचना नायिका के आत्मविस्मरणक रूप में हुई है और यह प्रकट किया गया है कि माला अपनी जीवन-कथा को उपन्यास के रूप में लिख रही है। फलतः इसके परिच्छेदों को सबन्ध उपन्यास कहा गया है और विविध स्थला पर लखिका की ओर से इस प्रकार की टिप्पणियाँ प्रस्तुत की गई हैं—(अ) लिखते लिखते जैसे माला हाफ गई ' (आ) माला इतना ही लिख पाई थी कि उसकी सखी एक समय की सहपाठिनी और अब पड़ोसिन उमा आ गई। ' लेखिका ने अपनी ओर से कम कहा है और माला की ओर से अधिक। यह 'नयी नवीन होने पर भी कहीं कहीं अस्वाभाविक प्रतीत होती है।

निष्कर्ष

श्रीमती रजनी पनिकर की उपन्यास कला के विषय में श्री च 'गुप्त विद्यानकार द्वारा व्यास बादल की समीक्षा के प्रसंग में प्रस्तुत किया गया यह निष्कर्ष द्रष्टव्य है—

श्रीमती रजनी पनिकर ने सभी उपन्यास लघु उपन्यास की श्रेणी में आते हैं वे सब नारी के सम्बन्ध में हैं और उनके किसी भी उपन्यास में मुखौटापन या उलझन नहीं अपितु एक सहज स्वाभाविक प्रवाह है। या सभी उपन्यासों में नारी जीवन के पृथक् पृथक् पहलू या समस्याएँ ली गई हैं अपने पात्रों के प्रति लखिका का सम्बन्ध और प्रति पात्र विषय पर लखिका ने अधिकार की बात सभी रचनाओं में लगभग समान रूप से प्राप्त होती है। लेखिका के मन में कुछ सामाजिक आदर्श हैं जिनसे भटकनवासे पात्रों

१ दक्षिण एक लड़की दो रूप पृष्ठ ५७ ११ १५

२ देखिये एक लड़की दो रूप पृष्ठ २६ ३३ ४३

३ देखिये एक लड़की दो रूप पृष्ठ २५ ५०

४ ५ ६ एक लड़की दो रूप पृष्ठ ४३ १२ १५ १६

७ हिंदी कथा-साहित्य में पंजाब का प्रदान (चंद्रगुप्त विद्यानकार) पृष्ठ ३२

की प्रवृत्तियाँ का चित्रण तिरुत व्यंग्य शली में हुआ है—विषय का इतिवृत्तात्मक उल्लेख मात्र उठोने नहीं किया है। उन्होंने मानव मन के विविध पहलुओं की 'पाष्या' की है तथा नारी की विद्यताओं और इसके लिए उत्तरदायी पात्रों की स्वायत्तरता के सफल चित्र अंकित किए हैं। चेतना प्रवाह पद्धति अथवा मानसिक चिन्तन के माध्यम से पात्रों में अतृप्त को चित्रित करना ही लेखिका की मुख्य शली है। पात्रों का अपने परिवेश में सघन मनोमयी का प्रेरणा-स्रोत है। इसके फलस्वरूप उनके उपन्यासों में सवाद कम आते हैं, किन्तु इसमें वर्णन रूढ़ियों को भी प्रोत्साहन नहीं मिला है जिसका कारण है मनाविरूपण की सम्भोरता। नई सत्यता को अपनाने का मोह जिस स्वायत्तरता आर्थिक तर्णा और मुक्त प्रेम-सम्बन्धों को जन्म देता है उसकी ओर स नती उठान आखें हा मूली हैं और न हा उस प्रोत्साहन दिया है—यथाच को अस्वीकार करने के पूव उसका विस्तेषण ता हाना ही चाहिए और यही उठान किया भी है। इस सम्बन्ध में उनके विचारों का अनुशीलन अप्रासंगिक न होगा— 'उप यास निष्ठत समय मुभ केवल इस बात का स्थाल रहता है कि मैं काइ ऐसा पात्र पान कर जो जाना पहचाना न हा। कोइ ऐसी घटना भी न चित्रित करूँ, जो अस्वाभाविक लग। आदस का ठाग रचने का मरा उद्देश्य नहीं। एक पात्र एक परिस्थिति में जीवन में जसा व्यवहार करेगा वसा ही दिखलाने का प्रयत्न करती हूँ। मेरे पात्र देवता नहा, केवल मानवा जसा व्यवहार करते हैं। '

श्रीमती वसन्त प्रभा

श्रीमती वसन्त प्रभा ने सांस्कृतिक साथी और अपूरा तस्वीर दीपक सामाजिक उपद्रवों का रचना की है जिनमें वर्तमान सामाजिक विषमताओं और पारिवारिक उत्थान का चित्रण हुआ है। वर्तमान परिप्रदय में बार बादगवाद की महत्ता नहीं रह गई है अतः उन उपद्रवों में पारिवारिक मर्यादाओं को यथायथे माध्यम से उभारा गया है।

१ सामक साथी

श्रीमती वसन्त प्रभा ने सांस्कृतिक साथी में एक मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण किया है। कथानक इस प्रकार है—मातृहीन माहून अपनी मामी सुखदेवी के कठोर नियंत्रण में पनकर बड़ा हुआ। नानी के जय से उसके पिता और भाई भी उसकी सुख सुविधाओं की ओर ध्यान न दे पाते थे। धन-सालुप सुखदेवी ने उसका विवाह एक धनिक की एकमात्र पुत्री क्षयरोगिणी कमला से कर दिया जो गीघ्र ही चल बसी। भाभी की कुटिल नाति से विरक्त होकर मोहन परिवार से दूर रहने लगा। प्रीतिवस्था में उसने विधवा अनाया गीता को जीवन-संगिनी बनाकर जीवन के एकाकीपन को दूर करना चाहा। नारत विभाजन के उपरांत जब मोहन और गीता दिल्ली आ गए तब भाई और ठीक ठिकाना न हान से भाई नानी और उनके बच्चे भी उसी के पास रहने लगे। भाभी के कट तथा मध्यपूर्ण बचन से पीड़ित होकर एक दिन प्रसविनी लीला ने दीवार से सिर फाँकर आत्मघात कर लिया और मोहन अपने नए पुत्र के साथ पुनः एकाकी रह गया। गीता का लखवा न माहून के लिए सांस्कृतिक साथी की सगा दी है। समस्त कथानक में सुखदेवी की कूटनीति एवं स्वावपरता का ज्ञान सा फटा हुआ है। उक्त मुख्य कथा के अतिरिक्त मोहन की पहली पत्नी कमला की मौतों पुष्पावती और पश्चिमी सम्प्रदाय से प्रभावित उनकी बहिन सासा की नानी नानी उसके पूर्व पति की चाची आदि भौषण पानाओं की जीवन घटनाओं को भी कथानक में आंगिक रूप से स्थान प्राप्त हुआ है। वसन्त कथानक में लखवा की दृष्टि घरेलू दुःखों तक ही सीमित रही है किन्तु सुखदेवी के क्रिया चरित्र अथवा उनके द्वारा आयोजित नित्य-नूतन कुटिल यंत्रिणा के अनन्तरूप कथानक में आरोचकता अथवा एवरसता नहीं जान पाई है।

आचार्य कृति में सर्वाधिक सजीव चरित्र सुखदेवी का ही है। वह अपनी कुटिल

युद्ध का अपन स्वाध के लिए नित्य नये रूपा में प्रयोग करती हुई एक विगिष्ट नारा-वग का प्रतिनिधित्व करती है। उसकी गूढ़ चाला को कुछ समझत हुए और कुछ न समझत हुए भी उमर पति, ननू श्वसुर देवर सब उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होते हैं। माहन व जीवन को मात्र में विपाक्त बनाते हुए भी वह ऊपर से ऐसा व्यवहार करती है कि वह कई बार साचता है— भाभी उवान की कितनी भी कठवी क्या न हा फिर भी दिन से बुरी नही है। ' जय नारी पात्राजा में लीला का सयत गम्भीर व्यक्तित्व एवं माहन के प्रति अनय अनराग सराहनीय है। माहन की वहिना (पावती यमुना गंगा) का भ्रात प्रम ना उत्पन्ननीय है। पुष्पावती और उनकी दोना पुत्रियों के माध्यम से ललिका ने पाश्चात्य मम्यता का ज्ञानुकरण करनेवाली नारिया के प्रति सफल व्यंग्य किया है। ललिकाने पुरुष पात्राका नारी के समक्ष दू एव निरोह रूप में चित्रित किया है। माहन व पिता और भाई वास्तविकता में जवगत हारर भी सुखी का खुनकर विरोध नही कर पात। मोहन भी मोर रहकर भाभी के सब अत्याचार सहता है—लीला की मृत्यु के बाद ही प्रथम बार उमने भाई और उनकी भाभी का यह त्याग का आदग कर अपनी आन्तरिक पुणा का व्यवन किया है। वस्तुतः सुखदेवा का व्यक्तित्व प्रस्तुत कृति में अतना गबल रहता है कि अन्य सभी व्यक्तित्व उमके नाच दब गए हैं। इस उपन्यास में ललिका ने प्रदक्ष अपन की अपना परोक्ष साधना से पात्रा की विगपताओं को यवत किया है। इस दिशा में भी घटना योजना की अपक्षा पात्रा के सम्भाषणा में उनकी आन्तरिक प्रवृत्तिया की सवाधिक अनियमित हुई है। उगाहरणाय मुखदेवी की उक्तिया में सबप्र उसकी वाकचातुरी, कूटनीति स्वाधपरता इत्यादि भावनाओं का प्रत्यक्षीकरण हुआ है। इसमें कोई सन्देह नही कि ललिका ने सबाना की याजना पात्रा और परिस्थितिया का ध्यान में रखकर का है।

सांकेतिक साधो में पारिवारिक जीवन के उतार चढ़ाव सुख-दुःख आगा निरागा छलन-पट आदि व चित्रण तारा घरेलू वातावरण की सहज अवतारणा की गई है। ललिकाने यत्र यत्र प्रासंगिक रूप में समकालीन राजनीतिक और सामाजिक स्थिति का भी उल्लेख किया है। उगाहरणस्वरूप यह उक्ति दसिए— पत्राब का बटवारा हो रहा था। लोग आपन में एर दूसरे के दुश्मन हो रहे थे। चारा ओर जहाँ दफने को भिन्ता वहाँ पुजा हो पुजा दिखाई देने लगी। कूठे वत्त व की जाट में धर्म और ईमान जल रहा था। ' इस उपन्यास में ललिका का उद्देश्य यह ज्ञात करना रहा है कि नारी अपन कुत्ति रूप में कितनी नयकर एवं स्वाधपूर्ण हो सकती है। एवं बार वह कमला-जसी मद्दत एवं निरोह और लीला जसी कमठ एवं मुगीला होती है ता दूसरा और सुखदेवी जसा बट्टा तन्मा नारियों का भी जभाव नही है जो दूसरा व भाग में काट बिछाकर अपना उत्तु

सोधा करती हैं और स्वाध्याय के उपरांत तत्त्वविद्या को दूध की मक्खी की भाँति त्याग देती हैं।

प्रस्तुत उपन्यास की भाषा यावहारिक हिन्दी है—सम तत्सम गंगा का जप ता तदनय तथा देगाज गंगा का प्रयोग अधिक मात्रा में हुआ है। बंगाली लिहाज इतज़ार बदर गुस्ताखी काफ़ूर आदि उर्दू शब्दों का भी प्रचुर प्रयोग हुआ है। भाभी कन्ची गानियाँ खनना नहो सीखी गया को कानो तो खून नहो नाक बंदी जा रही है तिन रखने के लिए भी उसमें स्थान नहो है आदि महावरा के समुचित प्रयोग न भाषागत यावहारिकता में बद्धि की है। किन्तु कतिपय स्थान पर अशुद्ध वाक्य प्रयोग चिंतनीय है। यथा—(अ) वे आप लोग ने ही तो दूर करनी हैं (आ) वह मले कपड़ उठाकर धोने लग पड़ी।^४ लेखिका की वर्णन शैली सरल एवं प्रवाहपूर्ण है। उन्होंने यत्र-तत्र चित्र शैली के अतिरिक्त आन्तरिक गंभीरता का भी सफल प्रयोग किया है। कहाँ-कहीं उन्होंने सूचित वाक्या द्वारा अपने अभिप्राय की पुष्टि की है। यथा—आदमी जब चलने फिरने योग्य होता है तो उसके भीतर अह का नाव बना रहता है। परन्तु इसके विपरीत पारपाई पर पडते ही यह अह सोप हो जाता है।^५ यह कहना उचित होगा कि उन्होंने कथानक की रुचिर स्वाभाविकता को गंभीरता भी अशुण्ण रखा है।

२ अधूरी तस्वीर

श्रीमती बसन्त प्रभा के अधूरी तस्वीर शीघ्र सामाजिक उपन्यास में भावावगम को मुख्य स्थान मिला है। इस विषय में उनकी यह उक्ति पठनीय है—अधूरी तस्वीर को मैं उपन्यास कह सकती हूँ उसमें कविता भी कह सकती हूँ क्योंकि इसमें भर मन का संगीत है मरे अंतर की सबेदना है।^१ इस उपन्यास का कथानक अत्यंत सक्षिप्त है—लेखिका उपयुक्त कथानक की खाज में निबन्धी तो उन्हें नई मिली न एक होटल के कमरे में रमा द्वारा तिस बीस पत्र प्राप्त हुए। रमा के पति विमान की साधना में तीन रहने के कारण पत्नी की ओर उचित ध्यान न दे पाते थे अतः एक दिन कुछ थड़ा होकर उसने पति यह त्याग दिया। उक्त पत्रों में उसने अपने विगत जीवन की सुख-दुःखमयी स्मृतियों के अतिरिक्त यह त्याग के बाद की अनुभूतियाँ पर भी प्रकाश डाली थी। रमा को अपने कर्तव्य पर नज़र आती और पति के प्रति थड़ा। वह इतने पत्रों का पति के पास भेजकर समझौता करना चाहती थी कि तु एक दिन उन्हें सुभा के साथ नृत्य करत और भक्षण करत देखकर उसने यह विचार त्याग दिया। पत्रों के बग़ल

१ सार्ध के साथी पृष्ठ १ ११ १२ १५ १६ २५

२ सार्ध के साथी पृष्ठ १८ १६ २१ १४२

३ ४ ५ सार्ध के साथी पृष्ठ ५५ १७७ २३

६ अधूरी तस्वीर दो गद

यो होटल के कमरे की अलमारी में ही छोड़कर वह अपनी पीड़ा को समेट अजनबि चली गई।

उपयुक्त पद्य कथानक को एक निश्चित आकार देने के लिए प्रभा (रमा की सखी), सुजाता (रमा की बहिन), विजय (रमा का प्रेमी) सिनहा साहब (रमा का पड़ोसी) फातिमा, सईदा सत्या आदि पात्र पात्रों (जो रमा के गृह त्याग के बाद उसके सम्पर्क में आए) की जीवन घटनाओं का रमा की अनुभूतियों के संसर्ग में जागिक उद्वेग व्यक्त किया गया है। रमा जिन स्थानों पर ठहरी उनके वातावरण का चित्रण करके भी नविका में उपवास के कथानक का विकास किया है। इस प्रकार उन्होंने इस रचना में एक लम्बी पत्र तथा को उपवास का रूप दिया है और नायिका रमा के मनाभावों का भावपूर्ण चित्रण करके उसके व्यक्ति को पूर्णता के साथ उभारने का प्रयत्न किया है। उसकी मानसिक पीड़ा को एक भक्तक द्रष्टव्य है— काग कि भरी डिब्बी मायके में ही फट रही होती। काग में बूनी होकर भी कुमारी रह जाती ताकि प्रियतम के घर जान के साथ खत्म तो न होती। सोचता हूँ तुम्हारे साथ रहकर मैंने क्या पाया ? मैं तुम्हारी प्रेमी भी बनी। मैं पत्नीत्व को भी निभाया मासिक बचकर तुम्हारे घर की व्यवस्था भी की। पर इतना सब करके भी मेरा जीवन रौता ही रह गया।^१ अपने गृह त्याग के लिए मैंने वह अपने पति राज को दोषी ठहराती है कभी अपने को और कभी परिस्थितियों को। अपने प्रति सहानुभूति रखनेवाले विजय के प्रति उसका आकर्षण उसके गौरव का क्षीण करता है किन्तु मनाविनाश की दृष्टि से यह ठीक ही है। उसके अतिरिक्त उपवास में प्रभा सुजाता सत्या सद्ग आदि अजनबी पात्र भी हैं जिनका चरित्र में ममत्व और सहानुभूति आदि सद्गुणों का समावेश है।

पुरुष पात्रों में राज सुजाता के पति डाक्टर साहब विजय तथा सिनहा साहब उल्लेखनीय हैं। राज महान् पण्डित है किन्तु नारी मनाविनाश को समझने का प्रयास नहीं करता। जब तक वह विनाश की माधना में लाने रहा तब तक वो उससे द्वारा पत्नी की उपेक्षा क्षम्य है किन्तु सिद्धि-लाभ होने पर जब वह पत्नी को न लाकर मुझ के साथ विनाशपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तब पाठक के मन में थड़का नहीं रहती। रमा के प्रति डाक्टर साहब का सद्भाव उनकी चरित्र गरिमा का परिचायक है। राज को त्यागने के उपरांत विजय के सौम्य व्यक्तित्व और सच्चिदानन्द वाला न रमा को आकर्षित किया किन्तु जब उस लोभ निम्न की भट्टी में आकर विजय स्वयं पत्नी भाँडकर एक ओर हो जाता है तब उसकी स्वायत्तता और व्यक्ति-चरित्र का पालन होता है। सिनहा साहब पात्र-भूति की आवाज से तब तक हाने का बहाना लेकर रमा के जीवन में प्रविष्ट हुए किंतु उसके बदनाम गम्भीर चरित्र ने उनके जीवन की शिष्टा परिचित कर दी और वे तत्पश्चात् रमा के सम्पर्क से दूर चले गए। रमा के अनिश्चित

उप-यास के अर्थ सभी पात्र गौण हैं। उनके जीवन का उतना ही जगत् चला गया है जितना रमा के चरित्र विकास में माहायक रह सका है। अतः सभी गौण पात्रों का चरित्र अपूर्ण सा प्रतीत होता है। पत्र पत्नी में लिखित हान का कारण भी उप-यास में ब्योपबन्धन के लिए विशेष अवकाश नहीं रहा। यद्यपि जिन चरित्र उक्ति का जगत् जना हृद है वे कथानक को गति देने और पात्रों के भावों का प्रसार स्पष्ट प्रगट करने में उपयोगी हैं। फातिमा सत्या सर्वदा जाति अत्यन्त गौण पात्रों की प्रामाणिक कथाएँ मुख्यतः महाद-तत्त्व के माध्यम से विकसित हुई हैं।

पति गृह का त्याग करने पर रमा को परिस्थितिवश विभिन्न नगरों एवं ग्रामों में रहने का अवसर प्राप्त हुआ। अतः अपने पति में उसने उन स्थानों का विपत्ताभा वहा के निवासियों के रहने-सहने आदि का मनोयोग से वर्णन किया है। पति वह अपनी सखी प्रभा के साथ किसी नगर की गली गली में रही। उहा धात्री उहार चमार जाति निम्न वर्ग के व्यक्ति रहते थे। वहाँ पति जब चाहता पत्नी को चुपचाप पीटता प्रति वरिष्ठा के लिए ये सामान्य दृश्य थे। अतः कोई भी बात बचाव न करता। पिटेवाली स्त्री भी इसे स्वाभाविक समझती थी।^१ इसके बाद रमा अध्यापिका के रूप में एक गांव में रही। पाचवें पक्ष तक करीब पत्र तक उस ग्राम की रीति रिवाजों, प्राकृतिक गोभा रहने सहने दरिद्रता धार्मिक प्रवृत्ति आदि का सजीव चित्रण हुआ है। दसवें पत्र में रत्न-यात्रा के अवसर पर रमा के सहयोगी जाट परिवारों की विपत्ताओं का रोचक उल्लेख हुआ है।^२ इसके उपरान्त अपनी बहिन सुजाता के ग्राम में जाने पर वहा के वातावरण का भी रमा ने विस्तार से वर्णन किया है। किसानों की 'यावहारिक बुद्धि होर भाई की ब्रह्म के भस्मे पर अपनी भुलाद पूरी करने जाना पव के तिन नदी स्नान करना भूत प्रता के प्रति अविश्वास' आदि का वर्णन इस प्रसंग में उल्लेखनीय है। उक्त विवरण से स्पष्ट है कि इस उप-यास में वातावरण की प्रधानता है।

रमा की अतृप्त बस्तिया का मनोवैज्ञानिक अंकन इस कृति का मुख्य लक्ष्य है। गोस्वामी तुलसीदास की मायता जिमि स्वतंत्र होई विगरेहि नारी के अनुसार 'सखिया का भी यही मत है कि यदि पति स्त्री पर अकुण्ठ रखे तो उसे पक्ष भ्रष्ट होने से बचा सकता है। इस प्रसंग में रमा की यह भावार्थक उक्ति पठनीय है— 'राज में मानती हूँ कि स्त्री के ऊपर किसी का अधिकार इसलिए होना जरूरी है कि वह बिना किसी अधिकारी के किसी भी समय उद्घाटन हो सकती है। उस रात मैंने स्पष्ट अनुभव किया कि मुझे पंकर अगर तमन मुझ पर अपना अधिकार दिखाया होता तो मैं किसी कारण से भी तम्हार घर की नहरी को नांघने की कोशिश न करती और न करती वह

१२ देखिये मधुपुरी तस्वीर पृष्ठ १८२० ७६ ७६

३ देखिये मधुपुरी तस्वीर पृष्ठ १८२ १०१ १२८ १२२

सब कुछ जा करना मरे लिए उचित न था। 'रमा' व 'मा' यम सनारी जीवन का चित्रा बन करने के अतिरिक्त समकालीन जन जीवन की अभिव्यक्ति भी लेखिका का उद्दिष्ट है।

"अधूरी तस्वीर" में मरस, भावपूर्ण और प्रवाहमयी भाषा 'गती' का प्रयोग हुआ है। फुसत मंगूल हैरान महसूस जुदाई आदि उदू 'गदो' और प्रमगानुरूप प्रयुक्त मूहावरा ने भाषा में सजीवता का संचार किया है। भावना की आवापूण स्थितिक कारण इसकी 'गती' में प्रायः गद्यकाव्य की सी लयात्मकता का समावेश रहा है। संपन्न यह कहा जा सकता है कि भावुकता अनुभूति प्रवणता और वाक्य विन्यास की सहजता इस रचना के उत्कलनीय गुण हैं।

निष्कर्ष

श्रीमती वसन्त प्रभा ने अपने दोनों उपन्यासों का प्रारम्भ 'कथानक' के अन्तिम बिन्दुओं से किया है और 'गप' घटनाओं को प्रायः पृष्ठभूमि के रूप में वर्णित किया है। उन्होंने इन उपन्यासों की रचना दो भिन्न 'गतियों' में की है जिससे इनमें नीरस एकरसता नहीं आ पाई है। साँझ के साथी में पात्रों की बहिर्मुखी प्रवृत्तियाँ एवं घटनाओं के विविध उतार चढ़ावों को प्रत्यक्ष दिया गया है जबकि 'अधूरी तस्वीर' में नायिका के पत्र रूप चेतना प्रवाह में समस्त कथानक का विवास हुआ है। साँझ के साथी में एक खल मदस्या के प्रभाव में विकसित होमवाल सम्मिलित परिवार की विडम्बनाएँ प्रमुख बिन्दु हैं तो 'अधूरी तस्वीर' में विभूतन दाम्पत्य जीवन की सवेदनात्मक चेतना सर्वाधिक मखर रही है। दोनों उपन्यासों में परित्र चित्रण की दृष्टि से पात्र बहिर्मुखी और अधिक ध्यान दिया गया है। साँझ के साथी में घटनाओं के आराह अवरोह पर विचार बल दिया गया है जबकि 'अधूरी तस्वीर' में वातावरण की प्रधानता रही है। अनिव्यजना पक्ष की दृष्टि से दोनों उपन्यासों में एक-जमा व्यावहारिक एवं प्रवाहपूर्ण भाषा 'गती' के दान हुए हैं। सतिषा ने गामाजिक परिप्रदय के चित्रण के लिए कटुता अथवा व्यंग्य की अपेक्षा मृदुल सहज यणन को अपनाया है जिससे उपन्यासों में स्वाभाविकता बनी रही है।

सुश्री कृष्णा सोवती

सुश्री कृष्णा सोवती ने डार से बिछुड़ी गोपक प्रसिद्ध तथ आचलिक उपन्यास की रचना की है। ग्यारह सपना का देग गोपक उपन्यास व दम सहयोगी नगका म स भी व एक हैं।^१ यहा उनकी उपन्यास कता का मूल्यानन डार से बिछुड़ी क आधार पर किया जाएगा। दस उपन्यास म एक आनी और अल्ट्र नवयवती की जीवन तथा अन्ति की गइ है जिस अपनी माता के पाप व परिणामस्वरूप अनेन कष्ट सहन करन पड। अपने परिवार की गाला स बह एसी वियुक्त हुई कि न सगी न साथी न बाई जानय। रह रहकर सोचती कि कब गाला स पन अँट हागी और परिस्थितिया के घात प्रतिघात के उपरांत अंत म यह मुयोग उसने जीवन म आ ही गया। श्री चन्द्रगुप्त विद्यानकार के गाने म— सभवत पताव की किसी पुरानी नोकगाया या किंवदन्ती क आधार पर इन आचलिक तथु उपन्यास की रचना की गइ है।^२

क्यानामिका पागो की माता ने गल जाति के एक भद्र सज्जन का स्वच्छा से पति रूप म ग्रहण कर अपने क्षत्रिय भाइया ने जाति मोरव का अपमान किया जिसका परिणाम भोगना पना भावी पागो का। उनके प्रत्येक क्रियाकलाप को मामा मामी और नाना गका की दृष्टि स देखत उस पर नय्य करत। इस कड नियन्त्रण तथा मार पीट स घबराकर एक दिन बह छन पार करती हुई रात्रि क समय अपनी माता की हवेली मे जा पहुची। उसके मामाओ का क्रूरता क नय स गल जी ने अपने एक विश्वस्त पक्ति के गारा उन अपने मित्र दीवान जी क घर पहुचा लिया। दीवान जी जायु की दृष्टि स तो पागा स बन्त बड थ किन्तु पति रूप म उनक प्रेम तथा आदर स सतपट हो बह गुप्प की भाति खिन उठी। दीवान जी की मौसी क गाला चाव न उसक मुख मे और श्री वृद्धि की किन्त जब एक पुत्र व पिता वनन ही दीवान जी चन बस तो पागो पर दुःख का पहाड टूट पना। दीवान जी क रिक्त के भाई मरकत न उसका सतीत्व नष्ट कर उस एक लाला व हाथ चपक स बच लिया। मौसी उस समय बाहर गइ नई थी अत वरकत ने सरलता स यह काम पूरा कर लिया। लाला जी ने उस अपन तीन पुता की पत्नी तथा घर की नौडो व रूप म खरीदा था। उनका मभ्रता पन उससे विगप प्रेम करता था। वह अग्रजा

१ देखिए ग्यारह सपनों का देग (सम्पादक—नरसीचन्द्र जन) पृष्ठ १६१ २ ६

२ आचलिक मई १९६० पृष्ठ ४३

स युद्ध करन सेना व साथ गया, ता पाथी का भी बलपूर्वक घाट पर उठाकर साथ ले गया । युद्ध में उसकी मृत्यु क बाद जब पागो पुन निराश्रित हो गईं तो मूर्च्छितावस्था में मलिक राजावा का वंश उस अपने घर ले आया और बहिन की भाँति माना । युद्ध में उसके मरने व उपरान्त वह पकड़कर फिरंगी की कचहरी में लाई गई जहाँ से उसका अपना भाई गल जी का पुत्र उस पहचानकर पुन घर ले आया । दावान जी की मौसी तथा अपना मन्ना भा उस वहाँ पर मिल गए ।

प्रस्तुत उपन्यास में लाला जी तथा मलिक राजा व परिवार की क्याए प्रामाणिक हैं किन्तु नायिका क जीवन में सम्बद्ध होने क कारण उनका मूल कथानक में विगण सम्बन्ध रहा है । ललिकान ने यह स्पष्ट नहीं किया कि पागो की माता जब गल की पत्नी बना तो पहले विधवा थी अथवा सधरा । कथानक की दृष्टि से यह उपन्यास निश्चय ही रोचक बन पड़ा है । ललिकान द्वारा अपनाया गया कथा वस्तु व्यापक लोक जीवन का समेट हुआ है किन्तु ललिकान व मन में उपन्यास क सक्षिप्त आकार का कुछ ऐसा माह रहा है कि वहाँ कहीं घटनाओं क आरोह अवरोह में सम्यक तारतम्य लक्षित नहीं होता । फिर भी इस उपन्यास की सबसे बड़ी विगणता यह है कि इसमें पञ्जाब क अचल विगण की बहुत ही सजाव अभिव्यक्ति मिलती है । इसमें मानव जगत का विविध प्रवृत्तियाँ का लक्ष्य में रख कर विभिन्न स्वभाव व पात्रों का प्रथम दिया गया है किन्तु यह उन्नतनीय है कि ललिकान ने पात्रों की रचना उन्हीं चारित्रिक विगणताओं की अभिव्यक्ति की है जो कथानक क विकास में आवश्यक था । इसी कारण उनके पात्रों व चरित्र क चरित्र कुछ अंग पाठकों में मर्म प्रत्यक्ष हुए हैं । कथानायिका पागो व चरित्र को तनिक विस्तार में अक्षिप्त किया गया है । उसका आलापन जीवनजनित सरमता तथा अहङ्गता अपने भाई पति तथा पति की मौसी व लिए उसका अगाध प्रेम और आत्मा क्रूर नियति व पपड़ा का वहन करने की महनशीलता आदि विगणताएँ उनमें चरित्र का प्रमुख अंग रहा हैं ।

साराप्राप्त में गल जी दीवान जी पागो व भाई दावान जी की मौसी तथा मलिक राजा के चरित्र उन्नतनीय हैं । अपना तथा पराया क प्रति इनमें विगण ममत्व तथा दया का भाव सजग रहा है । भ्रातृजाया पागो का विदेश करनेवाँ बरकर दीवान उनकी अत्याचारी माता पागो का शत्रु करके उन दासा बनाकर रखनेवाँ लाला जी तथा उनका मन्ना पुत्र जी पागो की इच्छा क विरुद्ध उस अपनी वासना-पूर्ति तथा सुखा व लिए बाध्य करता रहा असन् पात्र हैं । पागो क मामा मामा तथा नाना क पागो पर घोर अत्याचार तथा कष्टा निवृत्तपण देखकर उन्हें भी असन् पात्रों की कटि में रखा जा सकता था किन्तु ललिकान ने पागो का माँ की चरित्रहीनता का कारण रूप में प्रस्तुत करते उनसे प्रति पाठकों क ध्यान का प्रयाप्त सामा तक कम कर दिया है ।

यदि य ललिकान की सामान्य प्रवृत्ति है कि व प्रचल पुरुष पात्र की शिक्षा पढ़ा सम्पत्तियों का अवश्य प्रस्तुत करती है । दीवान जी की मौसी, बरकर दावान की माँ तथा मलिक राजा की बड़ी माँ क चरित्र इसके प्रमाण हैं । ये बड़ाई अपने

पुत्र जयवा पुत्रवत सम्ब धीव चरित्र का अपने मवान गारा स्पष्ट रहती है तथा शुभ अववा अगम कर्मों में पूण योग देती है। उदाहरणात् पात्रा का नाम का गता में पात्रों की माँ का चरित्र स्पष्ट है— उस मह उमका नाम न न वि या उमी रा करनी तुम भरनी थी। तेरे दोनो मामू उसे कितना मानत थे मह गाक न न जानता है पर वह नामहानी ता घर भर का मह काता कर गई।^१ प्रमत्त उपादान में स्वाभाविक तथा पात्रानुकूल वात्तालापा की योजना की गई है। पञ्चाविया के मन्भाव के अन्त कल कही मवाद अत्यन्त मधुर तथा हृदयस्पर्शी हैं और कही तीख। फिर भी यह निर्विवाद है कि समस्त कथोपकथना में पात्रों के मनोविधान को ध्यान में रखा गया है। प्रमाणस्वरूप पात्रा तथा उसके भाव के स्नेहित मवाद उत्तुखनीय है—

वहना जी न बुरा करा। ब० काट में चोटती बार नष्ट भित्तन जाऊगा।

गत गोले ठिठक गई।

तनी दूर काह जाना है बीर जी ?

बार पहल क्रिभके फिर भमभाकर बाले— वहना बन्ग नगर ठहरा वहां तो आना जाना नगा ही रहता है।

पहन मनवा फिर ध्यान वहां जा भटका। माम रोव पूछा— कही नगाइ ता नही छिनी बीर जी ?

बार कुछ वहना न चाहन थ फिर यादोना सा मुस्कराकर बोव— बन्ग हमारी नगा में नम नगा।

न न बार जा उम जोर न मख करना बरियो के गाध न पटना।

बार न मरे व थ पर हाथ रखा।

वहना गता का लका हू ता क्या मा ता खनाथा है।

नब ममक गई। हाथ पक बीर का अज का— स्थान-स्वास बीर का घाडी की राह तकता रूगा उस वहन को सिरान नगा।^२

उपमत्त पवित्रता में प्रत्यक्ष है कि विवक्षित नविकाने मवादरत पात्रों के हाव भाव गतिविधि आदि को बार भी साथ साथ गति किया है। इस वात्तालापा की स्वाभाविकता में जोर भी बढ़ि गई है। मधुर तथा रमणुण मवान के अतिरिक्त प्रसंगात्कूल वत्तिवत सवान की ना बडा नहज अभियक्ति हुई है। दोवान जी की मोसी रक्षा बरवत के मा के परम्पर वात्तालाप एव है।^३ वात्तालाप योजना में बरव पात्रों के चरित्र चित्रण में ही महायक रता है अति कथानक के विकास में भी उपयोगी सिद्ध है। वास्तव में प्रस्तुत कृति के मत्रा नधु तथा सारगर्भित है। उदाहरणात्

१ डार स बिछडा पृष्ठ ११

२ डार स बिछडा पृष्ठ ५२ ५३

३ देविर् डार स बिछडो पृष्ठ ६७

मलिक राजा को गद्दी में पागो व पूछने पर कि उस गद्दी पर किसकी मरदारा है राजा की सविवा सारी प्राचीन क्या सुनाती है।^१ मुष्टु सवादा न प्रस्तुत उपयास का चल चित्र की सी नाटकीयता प्रदान का है।

प्रस्तुत उपयास में पुराने पंजाब व सीमान्त जीवन की पृष्ठभूमि प्रस्तुत का गई है। पंजाबी परिवार की रीति रिवाज व कतिरय चित्र इममें अंकित किय गए हैं। प्रथम चित्र पाशोक मामा के घर का है जहाँ जानि गव तथा सामाजिक मयाग क समग्र दृष्टि को तुच्छ समझा जाता है। पाशा की माता न नाच जाति के गख को अपना लिया इस कारण पाशा को उठत बठत मंदा डाट फंकार पड़ता था। उनका अल्हड़ता में उलझनाप शृंगार तथा चरित्र भ्रष्टता की गंध आता थी। दूसरा चित्र दावान परिवार का है जहाँ पाशा व बह सुखमय दिन बात। ललिका ने करवा चौक के प्रेत का बड़ मनोपाग स वणन किया है।^१ दरबत दीवान ने विरवा पागो का लाना जो व घर बच दिया। लाला-परिवार का रीति सबस भदभुत थी। लाला के तीन पुत्रा के लिए पाशा हू एक मात्र पत्नी था। लाला तर में युद्ध में लाला के मरने पर पुत्र का मृत्यु का बाद पाशा मलिक राजाओं के वंश के घर पहुँची। मलिक राजा की बड़ा सविका न पाशा के समान विस्तार से लाला व पूवज की क्या सुनात हुए उनक वंश के रीति रिवाज की बचा का है।^१ उपयास के उत्तरार्ध में सिक्खा तथा फिरगिया व युद्ध का चित्रण किया गया है। सिक्ख बीरा न बड़ा धीरता में युद्ध किया, किन्तु फिरगिया का गस्तीगारी सना के सम्मन व विजया न हू सहा। बीरा की मृत्यु के उत्तरार्ध उनके परिवार की स्त्रिया को अग्रज विम प्रकार पकड़कर ले गए उनके घर को विम प्रकार निंदयता से जाम लगाई जादि दस्यु का कथात्मक चित्रण करने लेखिका न इतिहास और कल्पना का मामिक समन्वय किया है।

आनाथ उपयास में एक नावनात्मक सामाजिक कथानक व माध्यम से यह दिखाया गया है कि विम प्रकार कई बार माना पिता की करनी का फल उनकी मन्ताना को भोगना पड़ता है। योयन की अल्हड़ता युवक की जीर युवतिया को विवशहीन बना देती है और एक बार मात्र विचसित हुआ नहू कि सारा जीवन नष्ट हो जाता है। एक तो अपना माता व विरवासपात के कारण पाशा व मामू पहुँच ही उन पर कड़ा नियंत्रण रखत है और जब पागो के योयन का अल्हड़ता न उस करीमू व मामन मुस्करान तथा जमान देने की प्रेरणा दी तो मामाजी न पागो का हत्या की योजना बना ती। विम प्रकार पागो उनसे विचारा से अवात हाकर नाग निकला किन्तु उनका जीवन नुरी न रह सका। उसे बड़ दीवान पति रूप में प्राप्त हुए। उनकी मृत्यु के बाद तो उस बाग तर का काय करता पता। रह रहकर उसका मन में यही विचार आता— नाना झूठ न कहती थी—एक बार का विरवा पांव दिखानी घुल में मित्रा गता। सुष होर निकला

१ दार से बिछड़ी पृष्ठ १०२ १ ४

२ ३४ देतिए दार से बिछड़ा पृष्ठ ४२ ४४, १०२ १०५, ११२ ११६

नानी की दाक बाणी । ' उस प्रकार पागो के जीवन गरा लगिका न चारित्रिक पतन व अप्परिणामा पर प्रकाश डालने का उत्पन्न रखा है किन्तु पागो की माता व गुणों जीवन चित्रण के कारण तखिका उक्त उद्देश्य भविष्य स्थान उहा गका । पागो की माता का पर किमला तो उस गग जसा मज्जन पति तथा मुग एश्य का मंग मिरा । एम म पागो व वष्ट ववन सयोग का हो परिणाम प्रतीत गेन हैं ।

प्रस्तुत उप वास की रचना पञ्चावो मिश्रित हिन्नी म हुई है । पराग भोड गकजाने निगकारा सयान मिठठडा जादि गगे व अनिरिकन पञ्चावो वाक्यावली का भी प्रचुर मात्रा म प्रयोग किया गया है । यथा—

(अ) लीड उतार पानी डानने को पाटी पर बठी कि अपनी बिटटी दूध दही पर मूज रिसत मार व चित्तर देखती रह गई । '

(आ) न न बीबी राना उहरियावान काम नहीं । गान म तरी लाड पड त गया ऐसे काम करे । '

(इ) अखिया घिर आइ और छडी छडी लगी म कापन लगी । बारा उन राहा म जिन पर से मरा राजा बीर इम बयोडी पहुचा है । बारी इम मुलच्छी घनी जिनन यह मीठी खबर मुनाई ।

गली को मजीव तथा प्रभावोत्सादक बनाने के लिए पञ्चावो तथा हिन्नी के प्रचलित मुहावरों का प्रचुर प्रयोग किया गया है । यथा—

(अ) भनी कनी राबया इस चरते पानी का ठोर कहा ? '

(आ) भरी भरी अखिया डोर बाँध घड कुए म सरका दिए ।

(इ) हाय री जात की किरली गह्वीरा म गलबहियाँ । जरा फिर म तो पहना ।

मुना सोवता की गनी मायुग गुण से जातप्रोन है । उसम भावना का जावेग अजस्र रूप से प्रवाहित होता प्रतीत होता है । कबल डार से बिछडी म ही नहीं अपितु ग्यारह सपना का गग के अपने कथागो म भी उ हाने इसा गलीगत विगिष्टता का परिचय दिया है । यथा— ध्यार की सत्र कथा सब यथा गप कर मीमल नसिग होम की सीढियाँ उतरी तो न मन सिहरा न पाव काप । गा त हाँ गयी स्वच्छ हाँ गयी दह धल कपड-मी जडी अग वडा कडो । सादी सफ साडो म निपटी अगन पुराने सनरणी स्पर्ग को जन नसिग हाम म छाड आयी । वह जवग सी वकन वह रोहित को पुकार पुकार आने

१ डार से बिछडी पद्य ११७

२ डार से बिछडी पद्य ८ १ १६ २५ ४१ १०७

३ ४ डार से बिछडी पद्य २५ ४१

५ डार से बिछडा पद्य ४४

६-७ ८ डार से बिछडी पद्य १३ १४ ६३

वासोदन क पल वह मोह की मोहनी—मव रीत गए। सब बीत गए।^१

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में यह जानव्य है कि मुध्रा वृष्णा सावती उत्कल काल का उदोयमान उपवास-लखिका है। जाचलिक उपवास का प्रणयन करके उहने लखिकाया द्वारा लिख गए क्या साहित्य में एक अनाव की पूर्ति की है। उनका शरीर में जा भापागत विभिन्नता है जो सरसता एव मधुरताजय जाकषण है वह महज हा पाठक को प्रभावित कर लता है। परिमाण में अल्प होन पर ना उनर क्या-साहित्य में तना गीत जमा लाकप्रियता प्राप्त कर ली है वह हम बात की मूख्य है कि पाठक में एक प्रगतिगत लखिका की सक्षिप्त प्रतिभा का उचित मूयावन किया है। लखिका में मौलिक सन्न को प्रतिभा है और लखनी में विशेष बर है। यद्यपि कलात्मक मन्त्रा के जात्रह में अनकक्ष नाव पक्ष का सहज सौन्दर्य उभर नहा पाया है तथापि इसमें सन्देह नहीं कि उनका साम अमिव्यवित एव चित्रमयी भाषा में उक्त अनाव का किमी सीमा तक पूर्ति की है।



सुश्री लीला अवस्थी

मुन्नी नीना अवस्थी ने दो राह बिस्तर काट और बरवा बरसन आम गोपक तीन सामाजिक उपयासों का रचना की है। इनमें व्यक्ति एवं परिस्थितियों का सघन दिखाकर अन्त में व्यक्ति का भवजयी निष्ठ किया गया है। तैरिका ने प्रायः कथानक को साहस्य रखा है और घटनाओं की परिणति मुखान्त में की है। इनमें से प्रथम दो उपयासों में उनकी सघन कला-अपेक्षाकृत प्रौढ़ रूप में प्रकट हुई है तथा दो राहों को उनकी प्रतिनिधि रचना माना जा सकता है।

१ दो राह

इस उपयास में समाज के अभिमान वगैरे निम्न मध्यम वर्ग का तलनात्मक चित्रावन किया गया है। कप्टन रघनाथ का परिवार कथानक का मुख्य चरित्र है जिसके सदस्य हैं—कप्टन रघनाथ उनकी पत्नी हमा, उनके काका और उनकी दो पत्नियाँ रूबी तथा बेबी। हिन्दू की बाढ के अवसर पर चारवर्षीया बेबी नदी में बहकर माता पिता से विनग हो गई और एक निस्सन्तान हैडमास्टर के प्रकाश के घर में गोरी नाम में पनप गयी। एक ऋषटना के परिणामस्वरूप चन्द्रप्रकाश जन्ममय ही कालकवलित हो गए और निधनता एवं मरणा ने उनकी विधवा पत्नी जानकी का रघनाथ के घर में धिका घना किया। एक दिन एक कमरा साफ करत समय मन्ही गोरी का चित्र मिल जाने पर जानकी समझ गई कि उसकी गोरी वस्तुतः कप्टन की बेबी है किन्तु उसके ममत्वं ने उस मृत्यान्धाटन से रोक लिया और गोरी आया की पुत्री के रूप में रहकर उस परिवार की सेवा करती रही। जानकी के पावन सपने में रहकर गोरी ने उच्च विचारों का प्राप्ति किया और दानम कक्षा में प्रथम श्रेणी प्राप्त की। उधर रूबी अश्लील परिवारा तथा विनाश जानी आदि प्रमिया के चक्कर में रहकर सीनियर बेम्ब्रिज में बसपा हो गई। काका का बीमारी में बेबी बेबी रटन दख जानकी दयाद्व हो उठी और उनका स्वस्थ होने पर गोरी का वास्तविकता का रहस्यान्धाटन कर स्वयं गाव में अपनी मनः के पास चली गई। गोरी एक विदयी एवं संचरित्रा बानिका थी। कप्टन रघनाथ ने उसका विवाह प्रोफेसर बनारस से किया। उधर रूबी का विनोद से गम रह गया तो उसने जालमल्ल्या का विचार किया किन्तु उसका हिन्दी श्रम्याक कुञ्जीराल ने उस पत्नी रूप में ग्रहण कर उस तथा कप्टन दम्पति को उबार लिया।

इस प्रकार चन्द्रप्रकाश तथा उमक परिवार की कथा प्रागैकिक हात हुए भा मुख्य कथा के विकास में अत्यधिक महत्वांगी रहा है। उपन्यास का शापक 'दा राह उसी से साथक है कथानि कप्टन रघुनाथ का परिवार अभिजात वर्ग का प्रताक है और चन्द्रप्रकाश का परिवार मध्यम वर्ग के निधन परिवार का प्रतिनिधित्व करता है। गौरी व माध्यम से लड़िका न दाना का संयोग करात हुए दा तुलनात्मक दृश्य चित्रा की अवतारणा का है और इस बिन्दु पर अपना ध्यान इस सीमा तक केंद्रित किया है कि कथानक की समस्त घटनाएँ कवन उसी एक गाँव में चलकर रह गई हैं। इसलिये कथानक में एकलपता तो आ सकी है किंतु लड़िका का दृष्टिकोण कुछ सीमित सा हो गया है।

आलोच्य कृति में कथानक व अनुरूप दो प्रकार के पात्रों को स्थान प्राप्त हुआ है—(अ) मध्यम वर्ग के पात्र (आ) अभिजात वर्ग के पात्र। चन्द्रप्रकाश जानका राधा (चन्द्रप्रकाश की बहिन), गौरी तथा कुञ्जोनाल प्रथम प्रकार के पात्र हैं। उनमें सदाचरण सद्भाव परस्पर सहयोग आदि मद्गुण कूट-कूटकर भर हैं। दुर्गुण है तो केवल यही कि जानका और राधा-जम्हो अनिहित महिलाएँ स्त्री शिक्षा को ध्येय मानकर गौरी को विनाप उल्लाह से पढ़ाना नहीं चाहता किंतु घर गृहस्थी आचार व्यवहार आदि की उपयोगी शिक्षा व स्वयं हाँ उस देती हैं। पञ्चोपति वर्ग में लड़िका न दा प्रचार के पात्रों को प्रस्तुत किया है। एक ओर है कप्टन रघुनाथ और उनका पण्डितप्रिय पुत्रा लक्ष्मी जो पूणत पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंग हैं और दूसरी ओर है हमा और काका जो धन के पक्ष लगाकर स्वच्छंद गमन में उटना पसन्द नहीं करते अपितु भारतीयता के मद्गुणा व पक्षपाती हैं। लड़िका न कुछ पात्रों का चरित्र तननात्मक रूप में अंकित किया है। स्त्री और गौरी के व्यक्तित्व इस प्रसंग में प्रमाण हैं। यथा— गौरी रात सुबह उठकर और रात को सात समय हाथ जोड़कर भगवान से सक्त प्रार्थना व लिए प्रार्थना करती। लक्ष्मी साने से पहल और सवेर उठकर सबमें पहल जाना का प्रमत्त पढ़ती। गौरी अपना समय पढ़ाई व सम्बन्ध में साधन में व्यतीत करता लक्ष्मी जानी के। 'कुञ्जोनाल और विनोद का चरित्र भी इसी प्रकार तुलनात्मक रूप में विनित किया गया है।

विवक्ष्य कृति में प्रायः दो प्रकार के संवादों को स्थान प्राप्त हुआ है—(अ) ग्रामीय सम्भाषण जो यथाप्रमाण कथानक एवं चरित्र चित्रण के विकास में सहायक सिद्ध हुआ है (आ) तत्कालीन वातावरण जिनमें दाना पत्र अपनी प्रबल युक्तियाँ प्रस्तुत करते हैं और अन्त में हार और का निराश नहीं हो पाता। प्रथम प्रकार के कथापकथन आलोच्य कृति में भवतः द्रष्टव्य है। द्वितीय प्रकार के कथापकथन में कप्टन और काका पत्र वातावरण उत्पत्तीय है जिनमें रघुनाथ नागरिक सभ्यता के सद्गुणों और ग्राम्य वातावरण के दोषों का चर्चा करता है और काका ग्राम्य वातावरण के सद्गुणों व समग्र

नागरिक कृत्रिमता का उपहास करते हैं।^१ इसी प्रकार एक अथर्वस्थल पर वाक्वा और रुबी के तकपूण सवाद है जिनम वाक्वा रुबी का पा चात्य वाग्भूपा न ज्ञानुकरण क त्याग का तकपूण उपदंग दत्त हैं और वह भ्रमनाती हुई उनके तक वाटनर अपने पण म यन्तियाँ देती है।^२ उन दोना प्रकार के कथापक्थन रोचक एवं मनोव बन पड़ हैं। तकपूण सवाद भी अधिक दीघ नहीं है बोद्धिकता व अनिश्चित उनम भासात्मक यक्तिया का भी समावण है। आलोच्य सवाट प्राय पात्रानुगून हैं यथा—गौरी का उस्त्रियाँ नम्रतापूण हैं ता रुबी की अहंकारपूण विनोद व रचन प्राय कृत्रिम है ता कारा व विवक्पूण। इसी प्रकार जानकी राधा कुजीलास आदि पात्रा की भावाभिप्यवित उनकी प्रवृत्तियों के अनुरूप रही है।

सीला जी न प्रस्तुत कृति म देगकाल सम्बन्धी विविध दृश्या का चित्रण किया है। प्रारम्भ म हिडन नदी का बाढ स च गेली ग्राम की दुदगा का भयानक दृश्य अंकित है। इस प्रसंग म ग्रामवासिया क अधविश्वास का कितना महज चित्र लेखिका ने अंकित किया है— एक घना पीपन का पड़ था आमपास व ग्रामवासिया का विश्वास था कि जो उस पड़ को दखगा उनके घर म दो बार रोज म कुछ बुरा अवश्य होगा।^३ रघुनाथ क परिवार का कद्र बनाकर लेखिका ने पाश्चात्य सभ्यता की कृत्रिमता एवं त्यागलपन व विविध दृश्य अंकित किये हैं। हैडमास्टर चन्द्रप्रसाद क परिवार का चित्रण वर्तमान समाज का दूसरा रूप है जो प्राचीन भारतीय सस्कृति का अनगामी है। इश्वरोपासना पति पत्नी क मध्य दंड अनुराग दीना पर दया दूसरा क दख म महापता आदि इस परिवार क प्रमुख गण है। वस्तुतः लेखिका ने उपयास की रचना इस उद्देश्य का सम्मुख रखकर की है—वर्तमान समाज म निधन और धनी दो वर्ग है दाना व बोच विपमता की छाई है और उपयास का उद्देश्य इस छाई को भरने का प्रयत्न है।

दो राह की रचना सरन और मुहावरदार भाषा म हुई है। लेखिका न दशज गंगा तथा अनप्रासात्मक गंगा-यम्भो (बास बलनी घास फूस पानी पासी)^४ के प्रयोग द्वारा भी भाषा को यावहारिक सजीवता प्रदान की है। उनकी गली मुख्यतः वणनात्मक है जो यथाप्रसंग तुलनात्मक यथामक अथवा चित्रात्मक रूप धारण करती रही है। लेखिका न भाषा गती का प्रभावण बनाने के लिए उसका अनकण जनकरण किया है। यथा— जैसे तारा भरा नभ बिना चन्द्रमा क सुनसान लगता है उसी तरह बंग प्रकाश का परिवार चन्द्रकाश क अभाव म सुनसान लग रहा था।^५

१ देखिये दो राहें पृष्ठ ५८

२ देखिये दो राहें पृष्ठ ६६ ६७

३ दो राहें पृष्ठ ३

४ देखिये दो राहें निबन्धन

५ देखिये दो राहें पृष्ठ ८८ ८९

६ दो राहें पृष्ठ ४४

२ बिखर काटे

सुश्री नीला अवस्थी का बिखरे काटे गोपक सामाजिक उपन्यास १५८ पृष्ठा की सक्षिप्त रचना है। इसमें विन्म और नलिनी नामक दो भाई बहिना की जीवन कथा है जि दोनों पिताहीनता, निबलता बकारी आदि विपरीत परिस्थितियाँ में पितर कर समाज के हाथा अनेक कष्ट सहे। बाप म दुर्त्य ने उह माता की छाया स भी वचित कर दिया किंत वे दाना धयपूर्वक समस्त कष्ट का सामना करत रह ज उन विमुख परिस्थितियाँ स्वत पराभूत हो गई। विन्म को नीकरी मिल गई फनत नलिनी का बाधित शिक्षा क्रम पुन चानू हो गया। विन्म ने जाति भेद क सकीण विचार का दूर करव दिनीप चटर्जी नामक एक बगारी युवक, जो नलिनी के बापज म मनोविज्ञान का योग्य प्राफमर था और जिस वह मन ही मन अपना आराध्यमान चुकी थी स उसका विवाह पक्का कर दिया। बहिन और वहनोई क आग्रह से विन्म ने भी अपना नाम्नी मुन्तर युवती से अपने विवाह की स्वीकृति द दा।

इस प्रकार कथानक का सुखांत रूप दत्त हुए नयिका ने विन्म और नलिनी का विषय कमठ एव जादश पात्रा क रूप म प्रस्तुत किया है। उपन्यास के अय पात्रा का सत् एव असत् की श्रणी म रखा जा सक्ता है। दिनीप चटर्जी पारो (नलिनी की मगी) मोहन (विन्म का मित्र) आदि पात्र प्रथम वर्ग क है। अय अनेक स्लाघनाय गुणा के अतिरिक्त मुख्य पात्रा क प्रति नि स्वाध सदाचरण इनकी उत्तमनीय विगपता है। अमल पात्रो म विन्म ने चाचा चाची पीपलवासी मला क पडित जा (जा बड हात हुए भी पन के बल पर नलिनी क चाचा चाची को अपनी आर मित्राकर युवती नलिनी स विवाह करने क इच्छुक थ) माहन का अनुज अतिल (जो अपन नीच महपाठी केराग सिंह क बहनाव म आकर नलिनी स घणित सम्बन्ध स्थापित करन चला था) केराग सिंह आदि पात्र न्तीय श्रणी क हैं। अय दुगुणो क अतिरिक्त इनका सर्वोपरि दुगुण यही है कि य विन्म और नलिनी क मरन जीवन म कुटिलता क कटव शिखरन की कष्टा करत हैं। प्राय इन पात्रा का सचिका न अंत म सुधरत अनुताप करत अपवा ईश्वर द्वारा दण्डित हात सिखाया है। बसे उक्त दाना वर्गो क पात्र मुख्य पात्रा क चरित्र विकास म महयोग रह हैं और मात्र इसी उद्देश्य स उपन्यास म उनका प्रवण कगया गया है।

सचिका न कथानक का नाटकीयता म विनूयित करत दृष्ट रुचिर मवाता का योजना की है। इन सम्भाषणा का उत्तमनीय विगपता यह है कि य अत्यन्त सधु हैं प्राय एक हा पसित क और नाव एव भाषा दानो की दक्षि स यक्ता की प्रवक्तिया क अनुरूप है। उदाहरणाय पारो एव कुन्ती भाभी निम्नलिखित व्यावहारिक गत्यावसा म सम्भाषण करती हैं—(अ) भाई की खर-गबर पूछन कत नही जाइ ' (आ) तुम

अच्छा लग या बुरा मैं नहीं जान की। 'महाराष्ट्रीय रिवाजाना मराठी मिश्रित हिन्दी में अपनी बात कहता है— तुमने बताया है मरे को करके रहने मानू क्या? एन सिंगल गिगल पीक चिबड़ा खाना जोर मस्त रक्षा में साना। 'इसी प्रकार बताया सिंह वही-वही अपना मातभाषा पंजाबी में भाव व्यक्त करता है।^३

प्रस्तुत उप-यास में विवाह नए और समाज में रगत कीड़ा की ओर दृष्टिपात किया है। दहज प्रथा के कारण निधन घर की नया के विवाह में कठिनाई जाति पाति के बचन के कारण वमन विवाह बढ़ विवाह के कारण युवती विधवाओं का संस्था में बढ़ि बेसारी जातिगत भेदभाव एन प्रांतीय संकीर्णता जाति देन एव समाज में निहित कुत्पताओं की ओर नविका ने अनकग यग्य एव कल्याण सक्त निया हैं। प्रसंगानुकूल वातावरण के चित्रण में सलिका बिगप कुल है। विवाह के घर में हानवाना धूमधाम गाना गजाना 'कानज में उपद्रवी छात्रा का गाररत से भरा आचरण' जादि दस्यो न सहज अवतरण उक्त कथन के प्रमाण हैं। समाज का जजर माय ताजा पर कटु प्रहार करना आता है कृति का उद्देश्य है और रेखिका ने हममें आदर्शों 'मुख यथाय का चित्रण करत हुए पाठका का नव उदबोधन का सदेश दिया है।

सुनी नीता अवस्थी ने अपने अथ उप-यासों की भांति प्रस्तुत कृति में भी प्राय मानहारिक गणवता का स्थान दिया है। प्रसंगानुकूल मुहावरा के प्रयोग ने भाषा का पयाप्त सजीवता प्रदान की है। यथा— सुनते सुनते कान पकते जा रहे थे भाई की बकलीता बढी थी वह जान-बूझकर कुए में डकल रहा है। दूल्हे के सामने नाक नहीं रगड़नी पड़ती 'आदि। 'गनी में वणतात्मकता एव नाटकीयता का सुंदर सामंजस्य है। प्राय वणन गली में प्रवाह है कि-न कतिपय स्थलों पर किसी पान की दीध विचार धारा के कारण कथानक में सहज प्रवाह में बाधा उत्पन्न हो गया है। उदाहरणार्थ ननिनी के विवाह का तकर विनम का वह दीधकारीन चित्तन प्रवाह उल्लेखनीय है जिसमें वह भूत अतमान और अविध्यत का तकर कितनी ही यस्तिगत एव सामाजिक बातों पर विचार करता रहता है।^४ कुन मिलाकर रेखिका की भाषा गली सरन सरन एव प्रवाहण है।

३ बदरवा वरसन आए

डा० लीना अवस्थी विरचित बदरवा वरसन आए १४४ पृष्ठा का नव सामा

१२ बिलरे काट पृष्ठ ३८ ६४ ६५

३४ देखिये बिलरे काट (घ) पृष्ठ ८० (आ) पृष्ठ ४४ ५० ६१

५६ देखिये बिलरे काट पृष्ठ ३४ ७७

७८६ देखिये बिलरे काट पृष्ठ ३२ ३३ ३५

१ देखिये बिलरे काट पृष्ठ ४३ ५०

जिक उपायम है। इसम नलिका न समाज एव दुभाग्य द्वारा प्रताडित कुछ नावुक पात्रा को वन्दन म रखकर एक प्रेम कथानक की सृष्टि की है जिसम शृंगार रस क मयोज एव विप्रनयन दोना पक्षा का विस्तार से वर्णन किया गया है। कथानक का प्रारम्भ गौतम और सलमा क प्रथम परिचय से हुआ है। गौतम एक कुमारी कथा का पुत्र था जो एक मठ की बानना का निकार बनकर समाज म कलकित जीवन यापन कर मृत्यु को गोल म गति पा चुकी थी और सलमा एक वधवा की पुत्री था जिसन प्रसिद्ध स्यानिय मास्टर अमर से विवाह रचाकर महसु बनकर रहने क स्वप्न सजोय थे किन्तु समाज की अरसना से आनकित अमर ने एक बप बाद ही सलमा का परिदाग कर दिया। समाज क अपमान एव तिरस्कार से व्यथित गौतम एव सलमा गरीबा क मुहल्ल म बसरे बिराए पर लकर रहन लगे। समदु खभागी एव सगीत मनन होने क नाते दोना म परिचय बढ़ा और परस्पर भाई बहिन का पावन नाता स्थापित हो गया। सलमा की एक प्रिय गिप्या करणा उसक घर सगीत की शिक्षा प्राप्त करने क निण आकर रही तो गौतम और करणा म प्रेम सम्बन्ध का विकास हुआ। किन्तु धनी परिवार की इक नीती पुत्री करणा का विवाह एक धनी मानी परिवार म हुआ जहाँ वह गौतम की स्मृति क कारण प्रमत्त न रह सकी। विवाह के बाद करणा जब गौतम म मिलन आई तो एक बार नावकता क आवग म बतन मन से एक हूँ गए। इस कृत्य की आक स्मिकता ने दोना को दाना स्तब्ध कर दिया कि करणा अगल दिन ससुराल लौट गई और गौतम पर छाँकर जयज चला गया। इसक उपरान्त गौतम की उस्ताद रवि न भेंट उनक द्वारा उसे एक लाग की सम्पत्ति की प्राप्ति उस्ताद की मृत्यु क उपरान्त उनकी दृष्टा क अनुसार उस राति से एक सगीत स्कून की स्थापना सलमा का भा बहा मगात शिक्षा क रूप म पुनाना उधर करणा का मरत समय अपने से उत्पन्न गौतम क पुत्र अजित का गौतम क नाम एक पत्र देकर भेज रना गौतम का अपने सगात पितारस आरमज का पाकर तप्त हो जाना आनि अनक घटनाआ का विस्तार से वर्णन किया गया है।

आनाम्य कथानक म घटना-वाहून है किन्तु रोचकता एवं सजायता का अभाव रहा है बनावि पटनाए जमरद एव मुषाक रूप से नियोजित नहा हैं। कथानक प्राय मन्द मंथर गति से एवरसता क साथ विकसित हुआ है फलत अनका पाठक ऊँच चटता है। घटनाआ म न तीव्रता है न क्षिप्रता और न वाञ्छित आकस्मिकता। फिर मुग टा जाता ना कहाँ से ? जो दास कथानक म हैं प्राय वही चरित्र चित्रण म भा है। प्राय सभी मुख्य पात्र पात्राए नावुकता से अनुप्राणित रह है। सभी पात्रा की गिप्यताए अथ न इति तक एक रूप हैं न कोई उत्पन्नताए उतार है न चढ़ाव, न स्वमन न उत्थान। नलिका न प्राय सभी पात्र पात्राआ का दया उदारता सहृदयता आनि नदगुणानभिभू पित किया है। सलमा का पति अमर गौतम का जन्मदाता मठ और करणा का कुल्यसनी पति उसन विपत्ताआ क अपवाट मान जा नवा है किन्तु उनका उत्पन्न या ता मृग

भूमि के रूप में हुआ है या मनुष्य पात्रों के प्रमग में सोई यह हुआ है।

‘‘स उपन्यास के अधिकार मवाद या तो नागिन है जवना नीतिमूत्रक। यथा—
 वनावार को धन का बालच नहीं करना चाहिये १ अपनी आत्मा का तपि का मर्ग
 परि समन्तर केवन घाघ में मतोप करना चाहिये २ सामारिक निष्ठा का और म
 वान व ३ कर सने चाहिये ३ आदि। करुणा और गौतम के मवा प्राम प्रमपूण एर
 रमभान ह गौतम और सलमा के वार्तालाप पारस्परिक आत्मीयता एव स्नह नाय क
 द्योतक हैं और करुणा के सास ममुर का उक्तिया प्राम वर क दु मपूण जावन की निता
 की निह हैं। इसी प्रकार विभिन्न घटनाओं एव पात्रों के प्रमग में तन्मुरूप विविधरूपा
 सवादा का विधान हुआ है। यह हृष का विषय है कि कथानक एर चरित्र चित्रण का
 नाति मवाद उतनी एकरूपता एव नीरसता से दूषित नहीं हैं।

‘‘वहिका द्वारा चित्रित दगाव के उदाहरणस्वरूप पात्रों का व उक्तिया प्रस्तुत
 का जा मकता हैं जिनमें उन्होंने समाज के अन्धाय तथा हृदयहानता के प्रति विष उला
 है। प्रामगिक रूप में उच्च वर्ग की निष्ठरता अत्याचार श्म आदि कुप्रवृत्तियों की
 ओ चचा हुई है। फिर भी आलाप्य वहिका ने प्रस्तुत सन्ध में बल रन्गित परम्परा
 का पिष्टपण किया है—समकालीन समाज की ज्वलन्त प्रवृत्तियाँ प्रति उद्गान उगसा
 नता का ही परिचय दिया है। जना कि कथानक से स्पष्ट है अपन मगत पात्र का छाया
 में एव कथन प्रम कथानक की सृष्टि हो वहिका का नक्षय या जिससे प्रति हाकर व
 प्रस्तन उपन्यास के प्रणयन में प्रवृत्त हुई। या उद्गम अपन आप में कुछ बुरा नया
 था किन्तु वहिका उसका उचित निवाह नहीं कर पायी। अथ स प्रति तब सगात का
 हा चचा करत रहना या बलपूर्वक दो भिन्न वर्गों के पात्रों में प्रम सम्बन्ध का स्थापना
 करके पूर्व निश्चित कथा मूला के आधार पर उम दुल्लात रूप ददन मायसही तो वहिका
 के कसय का इतिहास नहीं हागा। यदि व किंचित साधना करता जमा कि उहान
 जपन अथ उपन्यास में का है तो निश्चय ही उक्त उद्गम के अभिप्रेतनाय एक सुगठित
 एव सजाव उपन्यास प्रस्तुत कर सकती थी।

विवक्ष्य उपन्यास का नाया प्राम परिष्कृत म्दानरेदार एव सूक्तिगर्भित है।
 उदाहरणस्वरूप य वाक्य देखिए— मर नाम पर मिट्टा ने उछालिए १ मैन बहू का
 सदा मिर आखी पर रखा है २ जनते हू य में जब महानुभूति का घी पड़ता
 है तब वह धक्ककर जन उठता है आदि। या वहिका ने यत्र तत्र जगदी और उर के
 प्रचलित गथा का भा प्रयाग करने में सकाच नहीं किया ह और भाषा की सजीवता का
 दृष्टि से यह अच्छा हा है किन्तु मुख्य रूप से उद्गान तत्सम बहुता हि । का हा स्थान

१ २ ३ दलिय बदरवा बरसन घाए पृष्ठ २१ २३ ८

४ दलिये बदरवा बरसन घाए पृष्ठ ६ ८ १० ३१

५ ६ ७ दलिय बदरवा बरसन घाए पृष्ठ ७६ ७६ ६३

दिया है। जहाँ तक गला का प्रश्न है, उप यास में मुख्य रूप में वणनात्मक जयवा या कहिए कि विवरणात्मक और गौण रूप से नाटकीय गली का संयोग रहा है। कुल मिला कर यह कहा जा सकता है कि आलाप्य कृति उतना प्रभावपूर्ण नहीं बन सकी जिसके कारण रूप सध्य पहले ही यवत क्रिय जा चुके हैं।

निष्कर्ष

उक्त उपन्यासों में अध्ययन से स्पष्ट है कि इनमें परिस्थिति प्रताडित पात्रों के जीवन सघर्षों का चित्रण किया गया है। जब तक यवत समाज से भय खाता है उसने बनाए विविध नियमों के जाग सिर झुकाकर चलता है तब तक आश्रान्ता उस और भा पालित करते रहते हैं। किंतु जब वह सघर्षों से जूझने को मजबूर हो जाता है तब विपरीत ताण स्वतः पराभूत हो जाता है। लखिका की नीना उपन्यासों में यही सदाग व्यंजित है। इस सम्बन्ध में डा० त्रिभुवनसिंह का उक्ति द्रष्टव्य है— कुमारी लाला जवस्वी का नामाजिव उपन्यास दो राहों और बिखरे काँटे मुख्यतः नारी वर्ग की यथाय जीवनचर्या प्रस्तुत करते हैं। लखिका द्वारा प्रस्तुत किये गए चित्र इसलिये विश्वसनीय हैं कि उनमें वह निरंकुश दया और स्वयं उनका अनुभव किया है।^१ वस्तुतः लखिका ने यथाय की कटुता जयवा तिक्तता एवं आत्म ही पावनता के तुलनात्मक चित्रण में विगोप रचि ली है और रयानन पात्रों एवं वातावरण को जीवन रंगन के आलापक में मया जित किया है।



श्रीमती चन्द्रकिरण सौनरेवसा

श्रीमती चन्द्रकिरण सौनरेवसा ने जात्मतार गोपक बहानी संग्रह व अतिरिक्त चंदन चांदनी गोपक सामाजिक उपन्यास का प्रणयन भी किया है। 'मम' म यम वग व निम्नस्तराय परिवार के अन्तरिम जीवन की मफल नौकी चित्रित की गई है। श्रीमती राजनी पतिवर ने जहाँ अपने उपन्यासों में उच्च म यमवर्ग की समस्याओं का यकत किया है वहीं श्रीमती सौनरेवसा ने इस उपन्यास में निम्न मध्यम वर्ग की 'वन'त समस्याओं का स्थान दिया है। रोचकता की दृष्टि से भी यह उपन्यास आद्यापान्त पठनीय है। 'मम' मुख्य व द्रव्य-नायिका गरिमा है जो एक निम्न म यवर्गीय परिवार की गान्धना कन्या है। कन्या के सावर्ग्य रंग के दण्डस्वरूप अपनी भीमा म अधिक दहज ने जटा पान के कारण माता पिता २३ वर्ष की होने तक भी उसका विवाह नहीं कर पाये। 'मम' दोष उद्घाटन गिरी' नामक एक यवक से बात पक्की की थी कि न सावर्गी तथा सा' गरिमा की अप ता उसने उसकी गोरी एवं चंचल प्रकृति की छोटी बहिन प्रतिमा को पत्नी बनाना प' किया। गरिमा ने एम. ए. करके अपनी मखी गान्धा की सहायता से विद्यालय में नौकरी कर ता और इस प्रकार दरि' घर में जीवन की मुविधाएँ जटाने का प्रयत्न किया। गान्धा के मा यम से उसका परिचय नायक राज सहजा जिस रंगमंच की स्थापना परम और नाटक अभिनीत करने में वि'गप रुचि थी। दोनों ने एक दूसरे का प' किया और माता पिता के विरोध की उपेक्षा करके विवाह व वन में बंध गए। समुदाय के निधनताज'य अनावा का भिदान के लिए गरिमाने एक कार्यालय में कार्य करना आरम्भ कर दिया। वन पाकर राज के माता पिता का विरोध दूर होता गया किन्तु राज अपने अह तथा बकारा के कारण गरिमा से रू'ट हो गया और गृह त्यागकर अपने भा' भाभी के पास नौकरी खोजने चला गया। विरहावस्था में राज मक्ता नाम की विलासिनी नारी का उच्च खनता का खिन्नोना बना और गरिमा अपने माहब की बिनासी वृत्ति का शिकार होने में मान मान बची। दोनों की आंतरिक दृढता ने उनके चरित्रों की रक्षा की और वे पुनः मान राप भा' छोड़कर तन मन से एनाकार हो गए।

गरिमा तथा राज की जीवन गाथा आनायकयानक का प्रमुख कथा है। गरिमा का मखी गान्धा का कथा गोप है और मुख्य कथा में वि'गप सहयोगिनी रही है। २७५ प' का 'मम' बहुत उपन्यास में घटनाएँ अधिक नहीं हैं और यह रचिका का वि'गप गुण है कि अल्प घटनाओं को अत्यन्त मुनियोजित एवं स्वाभाविक गति से विकसित करके

उद्धान कथानक को रोचक तथा मुगडित रूप प्रदान किया है। मध्यवर्गीय परिवार में नित्य सम्पुर्ण जानबाली छाटी बड़ी समस्याओं पर सख्तिमाने बड़ी मूर्खता दृष्टि रखा है और उह इस कुशलता से कथानक में गुम्फित किया है कि उनका कथा गिल्फ की प्रगमा विषय बिना नहीं रहा जाता।

चरित्र चित्रण की शक्ति में विस्तार करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि आलाप्य नविका पात्रों का स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त है। पाठक पात्रों के व्यक्तित्व में देख-भाल जाता है और अनेकाने उनका मन में यह भ्रम उत्पन्न होता है कि वह काल्पनिक पात्रों की अपेक्षा वास्तविक चरित्रों के सम्पर्क में गुजर रहा है। नायिका गरिमा का चरित्र अत्यन्त स्वस्थ एवं सबल है। एम० ए० तक शिक्षा प्राप्त करने वाली नायिका का भाति प्रगल्भा अथवा नित्यजी नहीं बन जाती अपितु माता पिता सास ससुर पति आदि गुणों का प्रति सदा एक जागरूकता का बरतता है। किन्तु अनाथ सहन करना अथवा पता आदि अनाथत्व के स्थिति में चिपक रहना उस सत्ता नहीं है। ऐसी स्थिति का वह दृढ़ता से निराधार करती है तथा अपने सौजन्य एवं चारित्रिक गरिमा से परिस्थितियों का अनुकूल बनाती है। छात्रों के चरित्र चित्रण में भी नविका विषय में मगन रही है। दुनिया उस चरित्रज्ञाना समझती है और वह है ना किन्तु उसके पीछे बन्ना और परिस्थिति की विचाराओं का जो दृष्टिगत है उसका प्रभाव में पाठक उससे घणा नहीं कर पाता। अपनी दुखिया माता तथा भाई-बहिना के पास न पोषणा में उनका बड़ा किन्तु उनकी यत्नीय का अपना जीवन-भागी बना लिया और उसके प्रति कभी शिंशामायात नहीं किया। विवाह के पूर्व उनका यह मूलमंत्र अपनाया था— राटी खाओ धी-धक्कर से दुनिया जाता मकर से — यह परिस्थितियों की विचाराओं ही था थी। उसके प्रति पाठक का पूर्ण मगन है। घणा की पात्र छात्रों नहीं मुनना है जो राज का विवाहित जानकर भी वामना का जान फताती है। नायक राज यद्यपि उच्च चरित्र का यकिन है तथापि घणारी के कारण उसका मन में कमाऊ पत्नी के विरुद्ध कुछ कठोरता पर कर जाता है और उसका चरित्र यथा जह उस गरिमा को पीडा पहुचाने का प्रयत्न करता है। उसमें नायकाचिन गाहम एक दृढ़ता का अभाव है। इसीलिए वह पिता का अनुसर विराग्नता कर पाता और अपने आत्मा का मगन पात्रों का भाग्य होता है। एक बार वह नारी की गिमा तथा प्रगति का समर्थक है जो दूसरी ओर मध्यवर्गीय मस्कारों की जग-लगा बहिया में भी उस मोह है। नविका ने पुरुष पात्रों का अनाथानिम्न स्तर पर प्रस्थापित किया है। गरिमा का अंतरात्मा प्रतिभा में विवाह करनेवाला गिरीश जब विवाह के उतरात बड़ी माली गरिमा उग्रम याचना करता है तो अनायास ही पाठक को उसमें घणा हो जाता है। गान्ता के साथ विवाहपात करनेवाला उनका प्रथम जन्म भी नहीं अपनी का है। गरिमा के माता पिता तथा राज के परिवार में सदस्य मध्यम वर्ग के सामान्य पात्र हैं जिन्होंने हनारा नित्यप्रति का सम्पर्क रहता है। नविका ने उच्च पात्रों को चारित्रिक विपदाओं का उपपात्र में अत्यन्त स्थानाधिकारिक साथ उतारा है। गरिमा की जठानी

की गर्वोन्नी चितवन बात बात में ताना मारने की प्रवृत्ति पति १ अधिक बमान पर गज आदि प्रवृत्तियाँ अत्यंत मजबूतता में निहित या गढ़ हैं। बाह्य परिस्थितियों की प्रति क्रिया में पात्रों की मानसिक विचारधारा व विभिन्नरूपी उतार चढ़ाव का भी चित्रा ने मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। विवाह १ बाद परस्पर मनमुटाव हान पर राज एवं गरिमा की मानसिक स्थितियों का चित्रण उन्नत कथन का प्रमाण है।

आशाच्य चित्रिका न पात्रों के मध्यवार्त्तानाय का विधान करत समय उनका दृष्टि संस्कार भावना विचारधारा तथा बाह्य स्थिति का उद्घोष में रखा है। यही कारण है कि उस उपन्यास में अत्यंत स्वाभाविक एवं मजबूत वधापकथन व दान हात हैं। इस अतिरिक्त संवादों में यत्न तन वाचस्पत्य का भी समावेश हुआ है। इस प्रसंग में राज और गरिमा १ प्रेम तथा मान से युक्त वार्त्तानाय उल्लेखनीय हैं। गरिमा की साम तथा जठानी की उन्नतता इतनी मजबूत हैं कि उनका साकार चित्र नेना में उभर आता है। गरिमा की निरीह दवरानी मित्रता के पास जब कोई सूती साँगा न रहा तो वह चुपके से रंगी साड़ी पहनकर रसाई में काम करने लगी जिस पर सास और गरिमा की जठानी न जा हंगामा मचाया वह द्रष्टव्य है—

सास न बड़बुडाकर कहा— जान दह में काट लग है जा इतनी जल्दी धोतिया फाड़ डालती है। सबका बराबर कपड़ा जाता है पर छाती का सना यही भीकना रहता है।

जठानी ने पिटू के छाड़ उड़ू और मठरिया का मुह में भर हुए ही दावान में बठ हुए टीप नमाई— वही मान में चार धातियाँ मुझ में मिलती है। मैं तो उनमें से माटीवाली धातियाँ मरा पहनती ही नहीं हूँ। वह भी तो मैं जबकी राज उल्ला के ब्याह में नायन और कहारिन का दली थी।

गरिमा से चुप लगी रोंगिया और से उत्तर दिया— भाभी तुम्हें अपने मायके से भी तो बहुत कपड़ा मिलता है।

तो ? उसमें किमा को जवन क्या है ? भाभी का स्वर प्रखर तथा— मायका तो सभी का है। फिर जिसका जितनी रिझात हो उस उसी ढंग से पहिनना चाहिए। अब रसोई चौक में रंगम मजबूत पहना जाएगा तो जान जान सीज त्योहार पर जाय हो चियड़ नटकेंगे। वस्त्रामी जिसकी हागी ? ससर जठ की।

आशाच्य उपन्यास में भारतीय निम्न मध्यम की छापी रोजी विभिन्न समस्याओं का चित्रण हुआ है जिनमें से अधिकांश समस्याओं का मूल में प्राचीन एवं अर्वाचीन विचार धाराओं का संघर्ष रहा है। इनमें सबसे उग्र है दल का समस्या जिनके कारण यवनी

१ देखिये चंदन चादनी पृष्ठ २४ २३२ २५३

२ देखिये चंदन चादनी पृष्ठ १२६ १२७ १३४ १३

३ चंदन चादनी पृष्ठ १४१

नया का पिता निराशा क अच कूप म गिर जाता है जहाँ स उबरना सहज नहीं। यह समस्या गरिमाय पिता और श्वसुर (ननद गीता का विवाह करते समय) दाना व समक्ष उपस्थित नई जोर उठाने अत्यन्त कठिनाई स कया कर स मुक्ति पाइ। एक अच कटु समस्या ता न प का बहुधा चिन्तित किय रहता है। कारी की समस्या है। राज और अमक भाइ न्व क समय ग्रहृत दिना तक यह समस्या रही। इसा स सम्बद्ध अच कठिनाइया हैं— (अ) सम्मिलित परिवार म बेकार सन्त्य तथा उनकी पत्नी का सब की सेवा करने पर भी निराश्र पाना और कमाऊ पति की पत्नी का निठल्ली रहकर भा सब पर रोब गौठना और गुरुजना का आदर भी पाना (आ) दरिद्रता तथा अभावा का जीवन यतीत करना किन्तु मड गल मस्कारा क फलस्वरूप गिता कयाजा एवं बहुधा का नौकरी न करने देना, (इ) पदा प्रथा जाति भेद आदि पूव मायताया का कट्टरता पानन आदि। वर्तमान समय म परिस्थितियाँ परिवर्तित हा चुकी हैं किन्तु मध्यवर्गीय परिवारा म जागों की बड़ी पुरानी परम्परा चली आ रही है। सविका न जनक प्राचीन और धर्माचीन स्थितिया की तुलना की है। यथा—

(अ) उसन साचा—अथवा घर म ही ब रहकर वह कस दिन बाटेगी ? न जान पहन की जरूरियाँ कम रह पाता थी। पर तु पहन परा म काम कितना हाता था ? गाय अम गाबर कण नही दिनाता चक्की पीमता पानी भरना और ममय बचने पर त्रत अनुष्ठाना मणन जनेउवा का तयारी करना तथा एक-दूसर क घर की जाता चला करना—पूजन कपा नागवत और मन्दिर भी काफी समय घेर तत ध—पर अय यत्रा का पानी है मगीन का पिना जाता है। गाय अम पालना हाथी रखन क बराबर महंगा है। महंगाई ने त्रत अनुष्ठाना और विवाह क भाज ममारोहा का सतिष्ठ कर लिया और नदकिया पत्र पढ़कर ससार क अय विषय म भी रुचि देने लगा है।^१

(आ) आज यीर पूजा का युग नहा है। तलवार द्वारा गीय शिवाकर पत्नियाँ जीतन का युग नी नहा है। आज तो पति क पौरुष और माय्यता का एकमात्र माप है उत्तम सम्पत्ति उपाजन की क्षमता।^२

गरिमा भी समुगन व बानाधर्य एर रीति-आतिया का चित्रण मामांय स्तर क मध्यवर्गीय परिवार क अनुकूल हो लिया गया है।^३ वातावरण क अन्न म श्रीमता मोनरक्षा गिद्धहस्त है। पारिवारिक चित्रा व अनिरक्त स्त्रुन, कामासय, स्ट्रज गति सावजनिक स्थाना क दया एवं रीति-आतिया का जो ययाय अन्न प्रस्तन किया गया है। उन्होंने स्त्रिण जीवन मूया का निरयकता सिद्ध करत हुए सयक्त एवं परिस्थित्यानुकूल भावा की मुद्राणि क उद्देश्य म विवाह उपायान का रचना का है। दण का स्वतंत्रता स नय प्रयोग ता का विरुध प्रकुटित हुइ हैं उनका प्रभाव प्राय उच्च मध्यम वय तथा अनि

जात यम म अष्टात हुआ है। निम्न मय वग अनी तब अपने बड़ मन्त्राग म जाय है। दहज प्रया बेकारी की समस्या जातीय नद नाव पना प्रग छत्राग की बामारा अनी तब उक्त वग म गहरी जड़ जमाय हैं। नया रक्त न जजग तथा गायक प्रयाजा का सहन नहीं कर पाता और परिणाम होता है सषय—प्राचीन और अगवानि रिवार धाराभा मे २६। त्रिक्ता का मत है कि अपने अविकारा की र ११ न त्रिक्ता सषय अनिवाय है। १२। नावना का मून रूप न के लिए उहान गरिमा जो गाना का स्थान किया है जो परिवर्तित सामाजिक व्यवस्था और नए मूर्या की सजीव प्रतिमाए हैं। गरिमा की अपनी दवराना ललितता म वही ग न निम्नलिखित उक्तियां कितना प्रातिनारी ३—

गरिमा न उसक गात्र म ठनका दकर बड़ा— दखता रह म नम धर स घषट प्रया समाप्त करण ही रहगी।

तुम बड़ी बिबट हो जाओ।

विकट की नम क्या बात है। जीने की साधारण सुविधाजा व त्रिक्ता नम यह क्या साचना प कि बुळ लुळ जाए ता हम अपने मन की निरानगे। या पति क साथ मय स्थान प बला हो जाय ता हम इस प्रकार मौज करते ? वह समय लद गया जब बड़ा क गायण पर सारा परिवार पाव पर पाव रखकर फूला फला खाता था। १

अपना कहानिया की भाति नोमता सौनरेक्सा न नम उपन्यास म नी सरन तथा साहित्यिक टिप्पणी का प्रयोग किया है। दाईस पट क्या छिनाना है न नव मन तल होगा न राधा नाचगी आदि मुहावर-साकोवितया का प्रसंगानकूल प्रचर प्रयोग ब्रजा है जिसस भाषा का मजावता म वडि हुई है। उपन्यास की गली रावन तथा प्रभावपण ह। यन तन चटोनी व्यम्यपूण गानावनी न गत्री का बिगय सोष्ठव प्रदान किया ह। उताहर नाथ निम्नलिखित पक्तिया उद्धरणिय है— समार म मनुष्य सबकी आराचना मुन सकता है पर अपने बिरड पत्ता की आलाचना नहीं। भारतीय पति ता आज भी पत्नी का मान अपना ही गामागान समझना चाहता ह जो ववन नसी के गाय रेखाड यजा सकती ह। १ नपुत्रावयगर्भित नापा गली म त्रिक्ता न वजन की बिगय गरिमा को प्रकट किया है। यन तन कथितव्य की पुष्टि व लिए उहान तथ सूचिन शमया का आशय भी लिया है।

अनावा व दिवस यवित व मन की आग्रता सुगा देते है १ नाथ स बिबक कुठित हो जाता है आनि वाक्य नमक प्रमाण है। कतिपय स्थान पर सू म नावा की तुनना स्थूल दया स की गइ ह। यथा— उनना मन साधुन का गीनी बट्टा की भाति बार बार गरिमा की गा म गिरन का फिमनता था। न उक्तिया म स्पष्ट है कि त्रिक्ता न उपन्यास को

१ चदन चादनी पृष्ठ १२४

२ चदन चादनी पृष्ठ २०६

३ ४ चदन चादनी पृष्ठ १७० १७३

४ चदन चादनी पृष्ठ २००

भाषा गली की दृष्टि में मनाने-सवारन का जोर यथोचित ध्यान दिया है।

निष्कर्ष

श्रीमती चण्किरण सोनरक्मा न चंदन चान्नी के रूप में हिन्दी साहित्य का अपूर्व नमूना है। प्रायः उपन्यास-लेखिकाओं ने अपनी कृतियाँ में सत्र सत्वा पर समान रूप से ध्यान नहीं दिया किन्तु विविध नैतिक प्रसन्न उपन्यास में भी तत्वा का सुन्दर प्रतिफल देखा है। सजाव पात्रों की दृष्टि करने में वह गरजचक्र के समकक्ष ठहरती हैं। ता सरल एवं प्रभावपूर्ण भाषा गली में मुँहो प्रमचंद से टकरा उठी प्रताप होती हैं। पारिवारिक वातावरण का जितना सफ़र अकल उनका योग्य सद्गता बसा कथा-साहित्य में बहुत कम मिलता है। समाज के निम्न मध्य वर्ग की समस्याओं पर सवागीण रूप से विचार करने का दृष्टि से भी यह कृति अनुपम है। इसका सबसे बड़ा विषय यह है कि वातावरण का सौन्दर्य चित्रण होने पर भी इसमें कथानक की सरसता और अनि व्यञ्जना की प्राजक्ता का मणि वाचन मयाग है।

कुमारी अन्नपूर्णा तागड़ी

कुमारी अन्नपूर्णा हिंदी सश्रुत की विदुषी हैं तथा रचनक में एक गिम्हा मस्थान की प्रथमाचार्या हैं। उन्होंने चार मालिक सामाजिक उपन्यासों की रचना की है जिनका नाम इस प्रकार है—निधनता का अभिशाप, धिता का धून, मित्रता, विजयिनी। इनमें से प्रथम तीन रचनाओं का प्रकाशन काठमान १९६१ है जिससे यह सम्भावना की जा सकती है कि लिखिका ने इनमें तुलनात्मक सामग्र्य रखने की चप्टा की है। उनकी उपन्यास-रचना के मस्याकन के लिए प्रत्येक श्रुति की स्वतन्त्र समीक्षा उचित होगी।

१ निधनता का अभिशाप

इस उपन्यास में निधनता की समस्या को लेकर एक दुःखान्त सामाजिक कथानक प्रस्तुत किया गया है। धनी मानी जमींदार प० कानामनाथ का पुत्र मोहन अपने ग्राम में निधन अध्यापक प० रामनाथ की पुत्री मीरा से प्रेम करता था। वह उससे विवाह के लक्ष्य दान नगा तो जमींदार ने कुपित होकर उस संपत्ति से वंचित करके यह-रयाग का आदेश दे दिया। मोहन ने मीरा को प्राप्त करने के दान सक्षम के साथ यह-रयाग लिया और नगर में रहकर विद्याध्ययन करने लगा किन्तु मरणासन्न पिता की जीवन रक्षा के लिए उस उत्तम जाग्रहवादी धनिक पुत्री सरस्वती का जीवन सगिनी बनाना पड़ा। मीरा ने मोहन की विवशता के औचित्य को स्वीकार कर उसके वनिदान का प्रयास की और आज में प्रत्यक्ष रूप से नजर अपने भाई अतुल की स्नेह छाया में जीवन यापन का निश्चय किया। मोहन तथा अतुल द्वारा खानगण-रूपक मध्यम अर्हति परितः प्रभूपूजक धार्य करने से एक वर्ष बाद यक्षमा से पीड़ित हो काठमान वचनित हो गई। मोहन उसे खोकर मानो पागल हो उठा। सरस्वती ने पूर्ण रहित भाव से उसकी भरमक सेवा की चित्त वह प्रायः मीरा का स्मृति में नान रहकर उमत्त की भांति जीवन व्यतीत करता था। लिखिका ने इस गतिपुत्र कथानक का हा २६६ पृष्ठा में विस्तार से वर्णित किया है। प्रत्येक स्थिति अथवा घटना का उत्तम विस्तार में वर्णन किया गया है कि पाठका को अनुमान लगाने की कहा ना आवश्यकता नही पड़ता। लिखिका ने किसी प्रागमिक कथा की योजना गढ़ी की जिससे कथा विकास में वाछित प्रोढ़ता नही जा पाई। कलासनाथ और रामनाथ के परिचय का चित्रण गारा उलान निचन वग तथा अभिजात वग के जायिक और सामाजिक

वपम्प का तुलना की है। मोहन तथा भीरा का परिणम इस वपम्प को नष्ट करनेवाली ओषधि हो सकता था किंतु लखिका ने ऐसा न करके मानो यह चेतनावादा कि सामाजिक वपम्प को दूर करना मग्न नहीं है।

प्रस्तुत उपयामम निम्न वग आर अभिजात वग व पाना का चारित्रिक प्रवृत्ति या तो तुलनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। ५० कलासनाथ अपने वग व अनुष्ठान हठी, दम्भी तथा रुढ़िवाले हैं और ५० रामनाथ सन्तापी विवेकशील, कमठ तथा स्वाभिमानी अध्यापक हैं। कलासनाथ वग के लिए अपने पत्र के अरमाना की बलि चढ़ाते हैं और रामनाथ अपनी पुत्री व प्रेम की रक्षा के लिए जमादार तथा उनके चारित्रिक मनोहर से भी नय नहीं ग्राह। मोहन निदयी पिता का मदय पुत्र है—रूपका की गायण से रक्षा करना उसका मुख्य धर्म है और भीरा व प्रतिष्ठा सफलपन्न प्रेम उनके चरित्र की उल्लेखनीय विशेषता है। ५० रामनाथ का पुत्र अतुल भी कमठ तथा परापकारा युक्त है। बहिन व मुख के लिए उसकी काय-सत्परता तथा त्याग अनुपम हैं। जमादार व पारिन्दे मनोहर का व्याचारी प्रवृत्ति वगगत विशेषता की छाया है।

भीरा उपयामम को नामिका है। उसका स्नेहपूर्ण प्रवृत्ति व तथा एकनिष्ठ प्रेम सहज प्रगतिनाम गुण हैं। उसकी सवियाँ—जमादार का पत्नियाँ रजनी और नीला—उत्तर तथा स्नेही होते हुए भी वय-दम्भ में अपने पिता का कुछ छाव लिये हैं। फिर भी तारा हान के नाते उनका मन पिता की प्रति बढोर नहीं है और व अन्त में मोहन तथा मारा व विवाह के लिए सहमत हो जाती हैं। मारा की माता गया स्नेहवस्त्रा और उत्तर हृदया है। जमादार का पत्नी यामा निधना व प्रति सहानुभूतिपूर्ण तथा पति परायणा हैं। उत्तरनाथ वलामनाथ और श्यामा का चारित्रिक प्रवृत्तियों का तुलनात्मक है—

जमादार साहब तो व स्वाभाविक व, किन्तु उनकी पत्नी श्यामा अपनी परोपकार पति उत्तरता प्रगतिनाम तथा स्नेही स्वभाव के कारण सम्पूर्ण ग्राम में प्रसिद्धी। प्रत्येक ग्रामवासी माता व मग्न उनका आदर करता था। जहाँ एक ओर ५० कलासनाथ की प्रकुटिषी दमकर मारा ग्राम नय में बोध जाता था, और उनका सम्मुख न पड़ने का मल करता था वड़ा दूसरी बार मारा ग्रामवासी कोई भी आपत्ति पदन पर दोषक अपनी मातास्वरूप यामा का गणन में जानें।^१

मुथी अत्रपूणा में पात्रा व मनाविस्तपण की आर यथाचित ध्यान दिया है। तथापि यह उक्त नीति है कि उनका पात्र यथावत वितरण करने की अपाता आपात की आर विवपत उन्मुख है। इस उपयामम का पात्रा व विषय में प्रा० गुम्फत मारा का यह उक्ति पठनीय है— उपयामम जो भी आपाता है उस पर माराय मादिक कता की गहरी छाव है। पात्रा व चरित्र में वड़ा वड़ा भावना की अनिच्छता पात्रा व

भी जाय्या का स्वर उभरकर जाता है।^१ चरित्र चित्रण में गति का विचार सजीव तथा स्वाभाविक वातावरण की योजना में भी वे सिद्धांत हैं। पात्रों का गवां प्रायः उनके बौद्धिक स्तर व अनकूत हैं। प्रारम्भिक परिच्छेद में भीरा तीन तथा रजनी ६ वातावरणों में वाचन मनोविज्ञान का विचार समावेश इसका प्रमाण है। गवां १ माध्यम गवां पर भी प्रमाण पाया गया है।

प्रस्तुत उपन्यास में जायिक विषयताओं से उत्पन्न सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया गया है। नाति नद दहेज प्रथा जमींदारों द्वारा प्रथा जाति परम्पराओं में भारतीय समाज का खोला बना रखा है। अभिजात वर्ग के मध्य निधन का जायिक गणपत वर्ग के अनको विनाश में उठा दत्त हैं फलतः निधन वर्ग को अनेक अनुविधाओं का सामना करना पड़ता है। भीरा की मृत्यु पर अनुकूलता में विचार का जायिक मानो साकार हो उठा है— “स निधन समाज में—” स अत्याचारों से रूपी दानव ने—“न पुरानी परम्पराओं ने—” न जगमग में ही हमारी बला सा कोमल अग्नि की क्षयित कर दिया। आज धन की विपत्ति का तत्त्व है। जाय ऊच-नीच की दीवार बना निधन की मया और बल गह मरी बाढ़नी बहल के प्राणात्सम स। इस समाज हम । उच्च अट्टहास कर ।^२ शिक्षा ने निधन कृपका पर जमाना और उसके कारिणों का वाचारा की चचा करके कृपक वर्ग की समस्याओं का मायिक चित्रण किया है। जय के अभाव में कृपक अपने बचा का उत्तम शिक्षा नहीं पिला पात और पुत्रिया के लिए मनानक वर नहीं प्राप्त कर सकते। मोहन जय जाति साहस यवका द्वारा रामोद्धारण में की स्थापना उन्नत समस्या का उत्तम समाधान है। उन्नत सामाजिक वातावरण के अनिश्चित शिक्षा ने कहा कहा प्राकृतिक वातावरण का भी सरव तथा प्रभावपूर्ण चित्रण किया है। नि न एम स्थल जय नहीं ह। वस्तुतः शिक्षा का उन्नत सामाजिक वपन का विनोदिकाओं के चित्रण द्वारा समाज गुधार की प्रणाली बना है। नम विषय में उपन्यास का भूमिका स न भगवतीचरण वर्मा का यह उक्ति उद्धरण योग्य है— सामाजिक विषयताओं में न जान कितनी समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं और मनव्य को किन विषयताओं में पकर अपना जीवन नष्ट करना पड़ता है—नम उपन्यास में इन सब का बड़ा वर्णन मकत है।

नुना जनपूजा सागडीन सस्कृत के उत्तम ग । क प्रचर प्रयोग के अतिरिक्त वाक्य विन्यास का प्रायः सस्कृत संस्करण की पद्धति से ही किया है। यथा—(अ) उभो

१ नमिति वाणी (प्रवासीक) जुला अक्टूबर १९६३ पृष्ठ १२६

२ दलित निधनता का अभिगण पृष्ठ १७

३ निधनता का अभिगण पृष्ठ २

४ दलित निधनता का अभिगण पृष्ठ १६५

पर अवलम्बित था उनका मारी जागाएँ ' (जा) ' इस बात को सदैव ध्यान में रखकर ही अंकित ध अपन यश के आचरण का ' (इ) ' वचन स ही परांपरा के अंकुर उगा दिए थे उसके हृत्पथ में उमकी जननी न । ^३ इन वाक्यामय कला कम तथा क्रिया का क्रम हिंदी-व्याकरण के अनुकूल नहीं है, पर संस्कृत में वाक्यमय पदा में किसी क्रम की विधि अपेक्षा नहीं होता । उपयोग के अधिकार पात्र न संस्कृत-महिला हिन्दी का प्रयोग किया है किन्तु लेखिका ने पात्रानुसूत भाषा व आश को उचित नहीं होने दिया है । नत्की नूरजहाँ की उद्गम भाषा और जमाना की दासी मुखिया की भाषा में पूर्वी हिन्दी व गंगा की प्रमुखता इसका प्रमाण है । महावरा और लाकावित्त्या के यथाचित प्रयोग ने भी भाषा को विषय वस्तु प्रदान किया है । तत्सम गंगावली के प्रति विषय अप्रह्व होन पर भी उनकी भाषाविलिप्त नहीं है अपितु उनकी गली में भावपूर्ण माधुर्य मयन विद्यमान है ।

२ चित्ता की मूल

अन्तर्पूर्णा जी ने इस उपयोग में जाति भेद के कारण असफल होनेवाले प्रेम का चित्रण किया है । यद्यपि वर्तमान प्रगतिशील युग में यह समस्या पूर्ववत् उप नहीं रही तथापि इसका महत्त्व का सवधा अस्वीकार नहीं किया जा सकता । लेखिका ने मुख्य कथा वस्तु अत्यन्त सज्जित रखा है—गिव एवं रम्भा बाल्यकाल में साथ रहते रहते प्राति-सून में आवेष्ट हो गए किन्तु यह उनका दुर्भाग्य रहा कि विजातीय होने के कारण विवाह चरम में न बंध सक । गिव का अपन पिता और रम्भा का आग्रह से सजानीय कुमुद से विवाह करना पड़ा किन्तु रम्भा ने बालिका विद्यालय का आचार्या के रूप में जनसभा की अपना लिया । रम्भा का अपन मुकाबल में समय-समय पर गिव से सहयोग मिलता रहा इस पर दोनों का चरित्र पर गह्वर लगाया गए । इस अपवात् प्रसार में मुख्य हाथ गिव की पत्नी कुमुद तथा गिव के मित्र राजन का दुश्चरित्रा पत्नी नीतिमा का था । अस व्यथित होकर रम्भा का मृत्यु हो गई ।

उक्त का क विस्तार के लिए लेखिका ने गिव और रम्भा के परिवारा के अन्य सदस्य (माता पिता बहिन भाई भाभा आदि) के स्वभाव आचरण रहन-सहन विवाह जाति का विस्तार चर्चा की है किन्तु यह उल्लेखनीय है कि समस्त घटनाओं एवं पात्रों के चरित्र गिव तथा रम्भा ही रहे हैं । यदि यह कहा जाए कि उनका कथावस्तु का संपन्न अत्यन्त गिविन रूप महत्वा है तो कुछ भी अनुचित न होगा । गिव और रम्भा का पारिवारिक समस्या का जन्म विवाह मरण व्यवस्था आलाप प्रताप नायक-नायिका के पुनर्पन एवं नववा उनको मानसिक मुठा जाति प्रमाण में जनार्दन विस्तार को

सहज ही रक्षित किया जा सकता है। यदि इह सक्षिप्त कर लिया जाता तो उपन्यास अपेक्षाकृत सुन्दर एवं सुषट्ठित हो सकता था।

गिव तथा रम्भा उपन्यास के नायक-नायिका हैं। विन्न् इनमें अपना नामानुरूप पौराणिक पात्रों जैसी श्रान्तिकारिणी प्रतिभा का अभाव है। गिव न परिस्थितियों से सघपन न करके समाजभार दुबक की भाँति अनिभावका के सम्मुख नतगिर होकर कुमुद से विवाह कर लिया। रम्भा ने भी 'म' दिया म कोई आत्मा प्रस्तन नहा दिया। दाना ही पाना के मन में कुठाळा का उदय होता रहा जिमकी प्रगमा नहीं का जा सकती। राजन और उनकी पत्नी नीतिमा को तो मानो गिव और रम्भा से तनना के लिए ही गढ़ा गया है। राजन रम्भा के रूप पर आसक्त दुश्चरित्र पात्र है तो नीतिमा निमज्जता पूर्वक गिव को अपना वासना का गिकार उतान का यत्न करती है और अस्थायी रूप से सफल भी हो जाता है। इन दाना के कारण गिव और रम्भा की चरित्र-शून्यता में और भी निखार आया है। उपन्यास के अ य पात्रों के चरित्र में किसी उन्नतनीय विगपता के दान नहीं हात।

कथानक में नाटकीयता लाने के लिए 'रखिका ने प्रमगानुक्त कथापथ्यन का उपपन्न योजना की है किंतु यह वविध्य वातावरण और पात्रों के अन्तर से ही है विषय की दष्टि से उनका मवाद में अनेकरूपता का अभाव है। एक विगपता यह भी है कि उनके पात्रों ने सवाद में कबल निजी विगपताओं का उद्घाटन नहा किया अपितु व अन्य पात्रों की चारित्रिक प्रवृत्तियों के उल्लेख के प्रति भी सजग रह हैं। राजन की पत्नी नीतिमा के प्रति गिव की निम्नलिखित उक्ति में रम्भा के गुणों की खचा प्रमाण है—

भाभी राजन मुझसे अवस्था में बड़ा है तभी आपका बड़ी मानता हू। किसी दिन रम्भा को लाऊंगा आपक पास। सामाजिक सेवा के क्षेत्र में हम दाना एक दूसरे के पूरक हैं। विद्यालय स्थापित करने में वह मुझ अपनापण सहयोग दे रही है। उच्च शिक्षा के साथ ही साथ उसका हृदय अत्यंत उदार है भाभी।

अल्पपूर्ण जी ने समकालीन सामाजिक समस्याओं के निरूपण की ओर भी यथष्ट ध्यान दिया है। हिन्दू-कर्मों के अविवाहित रहने पर उस पर उगनी उठाना और उसके माता पिता पर व्यय करना^१ विजातीय विवाह की आपा न 'ना'^२ आदि सकीण मनोवृत्तियों का उद्घाटन अकृद्धा आपन किया है। फिर भी उपन्यास में उतनी प्रगवत्ता नहीं आ सकी क्योंकि 'रखिका' न नायक नायिका का जार में किसी प्रेरणाप्रद आदर्श की स्थापना नहीं कराई। यद्यपि रम्भा ने अपनी उक्तियों में समाज में टक्कर नन के विषय में पूण उल्लाह लिखाया है^३ किन्तु वावहारिक रूप में उसमें सामान्य जन सेवा और विद्यालय

१ चिता की घूल पृष्ठ ७५ ७६

२ ३ दलिये चिता की घूल (म) पृष्ठ ४३ (मा) पृष्ठ ५७

४ दलिये चिता की घूल पृष्ठ ४५ ४६

की स्थापना व अतिरिक्त कोई अन्य उत्प्रेक्षणीय काम नहीं किया। गिर और रम्भा समाज की व्यवस्था का अपचाप स्वीकार करके विवाह नहीं करते और आज भी कुटान्त रहते हैं। इस प्रकार लखिमा का उद्देश्य समाज-सुधार न होकर सामाजिक मर्यादा तथा माता पिता के अनुशासन का मौन रूप में स्वीकार कर लेने की शिक्षा देना है। विजातीय विवाह की समस्या का युगानुरूप महत्त्व था किन्तु उन्होंने उसका समाधान प्रचलित भारतीय आचार्यों के अनुसार किया है। फलतः उपन्यास में सामाजिक सजगता अथवा मौनिकता का अभाव को स्पष्ट लक्षित किया जा सकता है।

विधनता का अभिगान की भाँति चिता की भूल में भी गुढ़ साहित्यिक हिंसा का प्रयोग हुआ है जो तत्त्विका के सस्वरूप हान का प्रमाण है। उन्होंने गला में गम्भीरता डालने के लिए यथ-तन्त्र सूक्ति वाक्या का भी मन्द प्रयोग किया है। यथा—
मसार की नहीं विचित्रता है कि समय मनष्य के बड़े से बड़े घाव भर देता है। जिस तान्र आघात में पापण तक टकड़े-टुकड़े हो जाता है वही आघात मनष्य का कोमल से कोमल हृदय सन्नत करके भी नहीं टूटता।^१

३ मिलनाहुति

उन उपन्यास में पारिवारिक पष्ठभूमि का आधार लेकर हिन्दू-मुस्लिम एक्य की भाषना का प्रतिपादन किया गया है। इसमें २६६ पृष्ठ तथा ३२ परिच्छेद हैं। चितिका में अम्बिका सहाय और सुतमान की कथा प्रस्तुत की है, जिनके परिवारों में उनका मोहान और स्नेह था कि जातीय अभाव अथवा द्वेष के लिए कहीं तक भी स्थान न था। सुतमान का विषवा बहिन सफिया इस स्नेह को पसन्द न करती थी विवाह अपनी भतीजा नजमा और अम्बिका सहाय के पुत्र हमन्त का घर जान तो उसे फूरी आँखा न आता था। यद्यपि उन दोनों में भाई बहिन जमा स्नेह था किन्तु सफिया ने उन पर कीचड़ उछावते हुए नजमा के भाई महमूद उसका भावाँ पति गौकत और उसके माता पिता का जब नदकाया। अर सफा रूप से उसका परिणाम सफिया के मनानकूल हुआ किन्तु परिस्थितियों के उत्तार चढ़ाव में महमूद और गौकत ने हमन्त और नजमा के पवित्र स्नेह का पट्टनाना और स्थिति विगड़ते विगड़ते भी मधर गई। मजराबान गौकत नाम्प्रत्याधिक दशा में घायल होकर हमन्त द्वारा इशित हुआ। उन घटना ने भी मनामात्रिय का दूर करने में योग दिया। नजमा का विवाह हाँ जान पर भी हमन्त का उषव प्रति वधा हो नह रहा। वातान्तर में नाम्प्रत्याधिक रूप का आग नकन पर नजमा ने हमन्त का रगत लिए अपना चित्तान दकर इस आहुति में अपना जानि नदकाया का हृदय रगित करने लगा—“सा मन्वन्तरीय घटना के साथ उपन्यास का अन्त हो गया है। उपन्यास के पान में घटना वादुत्य रहस्य रोमांच अथवा वाचिन्त घटनाओं की अपा पाणि

वारिक स्नेह की सहजता पर धन निभा गया है। तस्विका न बचाना म अनार्यक विस्तार न रखकर प्रत्यक्ष घटना को उद्देश्य की ओर उभरता है।

कथानक की भाँति जाना-पूछा-सम-चरित्र चित्रण भी उद्देश्य द्वारा गमित रहा है। सफिया के अनिश्चित जय-जयी पात्रा (नरमान और उसकी पत्नी) भाँतिमा अम्बिका सहाय और उनकी पत्नी उमा राधा हम न नजमा महमूद गौकत व पिता अकबर अनी और माता आयशा आदि) म सौजन्य और स्नेह का अटूट प्रवाह है। सफिया के कुचक्र म मन्मथ और गौकत तथा उनकी माता आमा न अपने मन म जिन दर्मावा को स्थान दिया या वे भी स्थायी न रहें। हमारे जो नजमा उपयोग व प्रमुख पात्र हूँ तथा एक दूसरे के कष्ट म सहानुभूति रखते हए आरम बर्तमान के लिए उत्सुक रहते हैं। यह उल्लेखनीय है कि तस्विका न पात्रा के व्यक्तित्व म अनवरणता न स्थान न कर प्रायः सदगुणा का ही विकास किया है किन्तु यथा-चित्रण के अभाव म कहाँ वही सबका अस्वाभाविकता जा गई है। चरित्र चित्रण म साराणीयता जाने के लिए कथावस्तु की भी योजना की गई है किन्तु अधिकांश सवाँ दशकाल और उद्देश्य का अनिश्चित म सहायक रहे हैं। हिंदू मुस्लिम-पक्ष तथा साम्प्रदायिक विचारों का निराकरण के उपाय म सम्बद्ध सवाँ इसी प्रकार के हैं। नव परिच्छेद म महमूद और हमन्त का बाल्यापन तथा बत्तीमन परिच्छेद म हमन्त और गौकत का सवाँ उद्देश्य प्रधान कथोप-कथन के अन्तर्गत उद्घाटन है। प्रथम परिच्छेद के आरम्भ म नजमा महमूद और हमन्त के बीच सत्र-सत्र वार्ता-वार्ता-वार्ता का भी सारांश व माध्यम से राबक उल्लेख हुआ है। हमन्त और नजमा के सवाँ उपयोग म अनवरण आया है किन्तु उनके स्नेह की पापमत्ता तथा गम्भीरता की अनिश्चितता न कि उनके बर्तलापों म और भाँतिमा उमा सफिया आदि की उन्नति म प्रायः पुनरावृत्ति का दोष जा गया है। इस कथावस्तु के अभाव की स्वाभाविकता म बाधक रहे हैं।

दशकाल की दृष्टि से तस्विका ने गाहजहापुर लखनऊ कानपुर अनीगढ़ आदि स्थानों पर हानवान साम्प्रदायिक पक्ष का विस्तृत वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त साम्प्रदायिक विषय म मुक्त हिंदू मुसलमानों का एक दूसरे के लोभारों म सामान्य रूप से भाँतिना अपने रीति-रिवाज (परदा आदि) का पालन करते हए भी परस्पर प्रीति भाव का निवाह करना भी अनेक स्थानों पर चित्रित है। तस्विका न गाववानों की अत्यन्त सामाजिक प्रवृत्तियों की भी धन सत्र चर्चा की है। उदाहरणार्थ ये पंक्तिया उद्धृत हैं—
जायजन ता गाववान भी इसीलिए अपने पत्रा का पढाते हैं कि वे गहर म किसी ऊँची

१ २ दक्षिण मिलनाहुति पृष्ठ ४६ ४१ २६२ २६३

३ दक्षिण मिलनाहुति पृष्ठ १ ४

४ दक्षिण मिलनाहुति पृष्ठ ४७ ४८ १६८ २११ २१८ २४६ २६४

५ ६ दक्षिण मिलनाहुति पृष्ठ १४ १६ ६२]

पदवी का पा लें। उनकी गुलामी की प्रवृत्ति का अभी हलम नहीं हुआ है। शिक्षा का जय तोखरी हो समझन है। वह यह कभी सोच ही नहीं मकन कि उच्च शिक्षित जन भी इस दृष्टिप्रधान दंग में अच्छे कृपक बनकर नवीन वनानिक प्रणालियाँ से अपना कपि की उत्पत्ति करके दंग का अविकारिक उत्तम नाज दें। यदि कभी व चाह भी कि पद लिखे यवक खेती में लगे तो उनका यवा पुन ही उद्यत नहा होत। वे अपना अपमान समझते हैं कि पद लिखकर पत्र बनकर ग्रामों में रहें। पुलिस के जल्पाचारा तथा घूसखोरी की प्रवृत्ति से निरीक्ष तथा निधन ग्रामवासियों किम प्रकार पीड़ित एवं गोपित हात हैं इसका हमारे को अपने पिता के प्रति कथित उक्तिवा में साहस्य उल्लेख हुआ है। राज नीति में सामाजिक तथा पारिवारिक धानावरण के अतिरिक्त लखिका में यथाप्रमाण प्राचलिक रीति की भी महत्त्व जनधारणा की है। उहाम मिलनाहुति की रचना के उद्देश्य से व्यवसाय की भूमिका में न गिरा में यक्त किया है—'अन्त में नजमा का जायस्मिक मय उसके कौम के योग के हृदय परिवर्तन का कारण होता है और साम्राज्यिकता के योग मिथ्या अभिमान में पचभट्ट लोग का एक शिक्षा मिलता है इसमें सन्देह नहीं और यही सारा ज्ञानोष्ठी भी है।^१ लखिका की दृष्टि मुख्यतः इसी उद्देश्य के निर्वाह पर रखा है और जय तत्त्वा का संयोजन भी इसी दृष्टि से किया गया है। भारत पण के दो छण्ड हो जाने पर भी यदि हिन्दू मुसलमान जातीय भेदभाव का त्याग करके मानव धर्म का पालन करें तो पायकम में भी एकता का मां सुख प्राप्त हो सकता है यही हम उपवास का सन्देश है। सुधा तागडो नाया गली में भी 'उद्देश्य' का विस्मरण नहीं कर सकी है। इसीलिए उल्लान मुफल्लिम स्मालात पाकीजा मुतास्सिब मुकून पिडा तस्कीन मुनहसिर, मुनवानिर जाति ठठ रीति का प्रचुर प्रमाण किया है और पान्तिष्पणी में उनका हिन्दा पयाय गि है। उद्देश्य चाह कितना ही महान हा किन्तु दंग प्रकार की उडू मिश्रित हिन्दी बहा रहा नाया के स्वरूप विकार के लिए उत्तर गयी है जो इनके लिए लखिका का सवय प्रमाण नहा का जा सकता।

६ विविधिता

विविधिता चरित्रप्रधान सामाजिक व्यवसाय है जिसमें १८० पृष्ठ हैं जो २० परिच्छेदों में विभक्त हैं। लखिका के कथनानुसार इसमें कुछ व्यक्तियों और स्थानों को नामांतरित करके जो समष्टि परमहंस की एक शिक्षा को जो योगिनों के नामों में प्रसिद्ध हो जान-नाया को जिवन किया गया है।^२ लखिका ने उस व्यवसाय को

१ मिलनाहुति पृष्ठ ८३

२ बलिय मिलनाहुति, पृष्ठ ८४ ८६

३ मिलनाहुति अपनी बात

४ देगिये मिलनाहुति पृष्ठ १३ १८, २० २२, २३ २७ २९ ७८

५ देगिये विविधिता को गद्य

है और नामिका हान के कारण उसी का बन्ध मानकर सम्पूर्ण कथानक की याजना की है। उपयास का कथानक इस प्रकार है—कल्याणी का प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त सुगम था किन्तु उसके पति अम्बिकाचरण स्वर्णबाई कन्या का कुचक्र भ्रम गगन ता उसका भाग्यराग धूमिल हो उठा। एक मुनीश अवधि (प्राय २७ वर्ष) तक उमन पति गृह में स्नेहहीन जीवन यतीत किया किंतु जय बहुत समझने पर भी अम्बिकाचरण के जीवन में कोई सुधार न हुआ तब वह मक लौट जाई और अपना अभिन सदा राग का प्रेरणा से स्वामी रामकृष्ण परमहंस की प्रमुख शिष्या बन गई। सब इन चक्र जान पर स्वर्णबाई ने अम्बिका को दत्तार दिया तो वह रण गरीर और अनतप्त मन में पत्नी के पास पहुँचा। कल्याणी ने अपना कृत्य समझकर उसका नया मुद्रा की किन्तु जब वह सासारिक माह माया से विरक्त हो चकी थी अतः दाम्पत्य जीवन में फिर से प्रवेश न कर सकी। अन्त में अपनी चरम साधना के बर पर उसने परम पद प्राप्त किया।

उक्त मरय कथा के अतिरिक्त अम्बिकाचरण का कुमार का और प्ररित करने वाल शीरेन्द्र एक कल्याणी की ररि सची राधा की जीवन गाथा के कुछ अंग का भी प्रासंगिक रूप में उल्लेख हुआ है। उप यास का कथानक अत्यन्त में अर मति से विकसित हुआ है। प्रारभ के ६८ पृष्ठा में कल्याणी के बाल्यकाल विवाह सुची विवाहित जीवन आदि के रोचक दृश्य हैं। इसके बाद कल्याणी के अभ्यास की कथा आरम्भ होती है जिस खलिका ने क्षताधिक पृष्ठा में प्राय एक जस प्रसंगा (कल्याणी द्वारा पति का बार-बार निष्फल रूप में समझाना अथवा भगडना) की पुनरावृत्ति करके प्रस्तुत किया है। यदि रलिका ने इस प्रसंग को किंचित सक्षप में व्यक्त किया होता तो कथानक अपेक्षाकृत सुगठित एवं रोचक हो सकता था। कथानक का तीसरा महत्वपूर्ण भाग जिस रलिका ने अत्यन्त सक्षप में प्रस्तुत किया है कल्याणी के गृह त्याग स्वर्ण बाई द्वारा साधना मार्ग का अवलम्बन आदि घटनाओं से सम्बद्ध है। इस कथा में अनावश्यक घटनाओं अथवा दृश्यों का बहुलता नहीं है। वस्तुतः रलिका का ध्यान मुख्यतः इस बात पर केंद्रित रहा है कि कल्याणी के जीवन का यथाथ चित्र प्रस्तुत किया जाए अतः कथानक में आदि और मध्य में उसके जीवन की सामान्यतम घटनाओं का भी विस्तारयुक्त वर्णन किया गया है जिससे कहा-कही एकरसता आ गई है।

विजयिनी में मुख्य रूप से कल्याणी और अम्बिकाचरण के व्यक्तित्व का निरूपण हुआ है—उनके माता पिता मित्र वगैरे सेवक सेविका कन्या स्वर्णबाई आदि योग पान है। इन पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ केवल आंगिक रूप में व्यक्त हैं—स्वर्णबाई की धन निष्ठा कल्याणी के माता पिता की स्नेह वत्सन भावनाएँ तथा धारण का कुप्रवृत्ति सदा उदाहरण है। राधा कल्याणी की मुख दुःख की सगिनी है उसी की सहायता से चरित्र खिनी कल्याणी ने रामकृष्ण परमहंस का गिष्यत्व ग्रहण कर जमर पद का प्राप्त किया। महस्य जीवन में कल्याणी की कष्ट सहिष्णुता पति परायणता तथा साधना पथ में उनकी चरम धातराग स्थिति का चित्रण करके रलिका ने उसके चरित्र

को उत्कृष्ट प्रदान किया है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि उन्होंने पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व का विस्तारण न करके मुख्यतः स्थूल रूप में ही चरित्र चित्रण किया है। दूसरी ओर उन्होंने प्रमानुसृत मर्यादा की याजना द्वारा भी चारित्रिक विपत्तियों का यत्न किया है। प्रथम परिच्छेद में बल्याणी का वात मुनम उक्तिया में उसको मनाभावनाओं का स्वच्छ निरूपण देता है। अकित्तव का स्पष्ट रूप में उभारने के लिए उन्होंने सबानों की नाया का भी पात्रानुसृत रखा है। उदाहरणस्वरूप बल्याणी की माता गूँदा और सविका नाति को यह बातें लिए—

गाता ! ख तो बाहर, कल्याणी जमा तक नहीं आई ।"

अरी यह रानी ! "ता घबराय काह जात ही ?" मउत होइ । गाडीबानो ती नाम गयी है जी कबुजा तो ! आप तो बल्याणी बिटिया का जाँच स ओटो न रखना चाहत हो !

उस उप-याम में बलियाणा की पारिवारिक समस्याएँ मुख्य कथानक के रूप में अंकित हुई हैं अतः इसमें किसी प्रकार के राजनीतिक व्यथवा सामाजिक वातावरण की यात्रा निरवकाश गयी। बित्त पारिवारिक वातावरण और बन्धों में बंधाई के कोठ का रंगानिशा के चित्रण में बलियाणा का पर्याप्त सफलता मिलता है। उप-याम के अन्त में बलियाणा की माधना के प्रसंग में आध्यात्मिक पावनता के जो दृश्य अंकित हुए हैं वे निश्चिन्त प्रतिपादितपूर्ण हात हुए भी अपने आप में विचित्र हैं। ललितका का उद्देश्य यह निश्चित करना है कि आध्यात्मिक मार्ग मानव के लिए सर्वाधिक ग्रहणार्ह है क्योंकि उस पर चलकर वह सुख दुःख राग-द्वेष, जाति-निराशा आदि दुःखात्मक भावनाओं से मुक्त हो सकता है।

मुनी तागडी न इस उपयोग की रचना सरन और व्यावहारिक गानावली म की है, जिसम मस्तुत व प्रचलित तमय गाना और स्त्रीतमूह गृहस्वाश्रम, भाव नदिमा आभोमय पुनर्वियोग आदि समस्त गाना का प्रचुर समावा है। समास यात्रता क प्रति उनका मन म विगप माह है जिस उनकी मनी श्रुतिया म वसित किया जा सकता है। निम्न समागमित होन पर भा नापा जन्म नहा है ज्विन उहान पास गाना का आधार तकर मामा यतय प्रवगा की भी सहज भरत अनिव्यक्ति प्रगत है। यगता मयता और नाटकायता का सम्मिधण उनकी गाना का एक अय उन्नतताय विपयता है। ययानक का सहजता और अनिव्यजना का नानुसंग सुगन्ता दूध बान का प्रमाण है कि यह उपयोग उनका प्रतिभा व विवात म महत्वपूर्ण का है।

१ विजयविनो, पृष्ठ ४

२ इतिहास विज्ञानिनो पृष्ठ १७३ १७४, १८३ १८६

३. दक्षिण पित्रादिनी पृष्ठ २२ २५ २८, २९, ४८

निष्पत्ति

आलोच्य उपन्यासों के अध्ययन में स्पष्ट है कि मुन्शी ब्रह्मपत्नी तागनी ने इनमें नायिकाप्रधान कथानका की सृष्टि की है। विषम परिस्थिति चक्र में कतई नायिकाएँ प्रायः घसती रहती हैं या आत्म-निन्दकर जीवमरणा जाती हैं। अब यद्यपि यही है कि कथानक में नायिकाओं के चरित्र का विशेष उत्कर्ष किया जाए जिसमें पाठकों के हृदय में उनकी स्मृति चिरस्थायी हो सके। सामाजिक विषमताओं का अनिवार्यता का स्वीकार करते हुए नस्लिकान वगैरह जातिभेद साम्प्रदायिक बमनस्य पति द्वारा पत्नी का उपेक्षा आदि समकालीन समस्याओं का यथार्थ रूप में चित्रण किया है। यहाँ कारण है कि उनके उपन्यासों के कथानका में कदम रस की मासिकता की प्राप्ति रना है जोर पात्र नवन परिस्थिति प्रताडित रहें हैं। उपन्यासों की भाषा में सरसता एवं समस्त गंगा बली का आग्रह होने पर भी विलप्लता का दोष प्रायः नहीं जा पाया है। सहज भावपूर्ण माधुर्य एवं सरस बोधगम्य गली आलोच्य उपन्यासों की सबसे बड़ी सफलता है।

श्रीमती विमल वेद

श्रीमती विमल वेद न तान उपयासा की रचना की है जो नमरा इस प्रकार हैं— ज्योति किरण अचना जमती हारा नवनी होरा। उनकी रचना मनसामयिक सामाजिक समस्याओं को सन्तुष्ट की गई है और नम पारिवारिक उत्थान तथा जाति-वृद्ध को मूल्यों स्थान मिला है। लखिका न समाज विवेचन व लिए मध्यम यथाय बादी दृष्टिकोण को अपनाया है किन्तु साथ ही उनकी दृष्टि चिरपरिचित आदर्शवादी मूल्यों पर भी केंद्रित रही है। जो हम उनका उपयासा न इन प्रवृत्तियों की पथक पथक साज करेंगे।

१ ज्योति किरण

ज्योति किरण २५० पृष्ठा एवं २० अध्यायों में विभक्त सामाजिक उपयासा है। इसमें दो परिवारों की कथा साथ साथ चलती है। एक बार रमानाथ है जो निम्न मध्यम वर्ग के परिवार का मुख्य सदस्य है। पिता व न रहने पर वह शिक्षाजन छाड़कर माता बहिन और भाई के पोषणाय नौकरी करने निकल पड़ता है। किन्तु बहुत समय तक समुचित आजीविका नहीं मिल पाती। घर के सदस्य फाँवे बरत रहे उचित उपचार व अभाव में माता की मृत्यु हो जाती है जाति घटनाओं का उत्पन्न करके लखिका न इस निपनताग्रस्त परिवार का कष्ट चिन्ताकन किया है। दूसरी ओर तिवारी जा हैं जिनके परिवार को धन का कोई अभाव नहीं किन्तु धन उनका लिए सर्वोपरि है। उनकी प्राप्ति व लिए वे प्राय अनुचित गिनावा का अवयम्बन कर रहे हैं यहाँ तक कि अपनी बड़ी पत्नी आशा को भी दार पर लगा देते हैं। प्रयत्न तो वे यह भी करते हैं कि छोटी पुत्री उषा भा उसी पथ का अनुसरण कर किन्तु माता के पावन संस्कारों में पापित उषा के विराय न आगे उनकी दास नष्ट गल पाती। उषा और रमानाथ के मध्य प्रेम का नाता स्थापित कर लखिका न दोनों परिवारों की कथा को एक सूत्र में पिरोया है।

उषा आलोच्य उपयासा की नायिका है। रमानाथ उ प्रेम करने भी वह प्रतिगान का कामना नहीं करती। माता के आग्रह और अपन हृदय की प्रेरणा उ वह अपने प्रेम पात्र का हा बात के लिए सहमत करने ही दम लेती है कि वह उनका अपना उषा की बहिन आशा का पत्नी के रूप में ग्रहण करके उसका उद्धार करे। आशा उसकी बहिन हाकर भी कुशाग्र की ओर उन्मुख हाता है क्योंकि उषा का भाँति उस माता न अपनी मनवा

का सम्बन्ध नहीं दिया था। अतः पिता उस अपनी रुचि व अनुसार पावन में गपवहा गया। उपा की माता गान्ता दबी एक तिरस्त्रुत पत्नी के रूप में सम्मुख आता है जो अपना सम्बन्ध स्नेह उपा पर उभरकर उस आत्माभिरुचि बनाती है। रमानाथ का बहिन काता का अपरिमित स्नेह सम्पत्ता अग्निनी के रूप में चित्रित किया गया है। गुण्य पात्रा में रमानाथ उपवास का नायक है। उनके श्रद्धा गुणा से विभूषित हान पर भी उमम मान वाचित दबलता है जो एक स्वाभाविक पात्र में होनी भी चाहिए। तिवारा जो उस पात्र अदभुत हात हुए भी इस विश्व में अवश्य नहीं हैं। इनके अतिरिक्त घटनाओं के आरोह अवरोह में रणजोत गर्मा नौरावती जाति गौण पात्र पात्रा का भी यथास्थान योग रहा है। श्रीमती के ने 'म उपवास में प्रसन्नानुबल सामान्य सवाता के अतिरिक्त अनेक स्थानों पर तरपूष कथापकथन की भी योजना का है। इस वात्ता तपा में उक्ति वचिन्म पात्रा के सिद्धांता एवं सक्ति वाक्यों को विगपस्थान प्राप्त हुआ है। उदाहरण ततीय अध्याय में जागा और रमानाथ के परस्पर सम्भाषण तथा धारणों अवाय में रमानाथ और काता के उत्तर प्रत्युत्तर इसी प्रकार के हैं।

आकाश निरूपण की दृष्टि से नविका न तिवारी जी द्वारा अपनाय गए अर्थों पावन के निम्नस्तरीय साधना की चर्चा करके एक ओर देग में प्रसारित भ्रष्टाचार का ओरपाठका कायाने जाण्ट किया है और दूसरी ओर रमानाथ के जीवन की विपमता का वर्णन करके आत्मापी निधनता एवं बकारी की ओर सम्पूर्ण सक्त किया है। उपवास में आकाश के प्रति आद्यत जागरूकता का परिचय दिया गया है और यथा वसर प्रत्यक्ष उक्तिया प्रस्तुत की गई हैं। यथा—

(अ) आधुनिक युग में शिक्षा अथात् त्रिरी का महत्त्व ही सबसे बड़ा है। नाम के जाग नन्वी चौड़ी डिग्री के बिना कही आदर नहीं होता।^३

(आ) बिना सिफारिश और पीछे के जोर के आजकल नौकरी मिलना असम्भव यदि नही है तो भी कठिन अवश्य है। देग की जायी से तबिर जनता नौकरीपणा है दिन रात अफसरा के तान मुनना अपमान मन्त रहना और एक दिन असह्य हो जाने पर त्यागपत्र देकर बहा से हट जाना तबिन इस हट जाने की परिणति भी स्वतन्त्र अस्तिवम नही लेती।

साधारण जीवन की समस्याओं का यथाय चित्रण और आदग समाधान यही आताय कति का उद्देश्य है। तब त्रिण त्रिणिका न उपा की आदग नारी के रूप में चित्रित किया है। बहा अन्त में ज्योति किरण बनकर सबको आदग की त्रिणा में सींच न जाती है। कथा में उमकी मृत्यु से उपवास दुःखा व ता बन गया है किन्तु तिवारा जी का आत्म परिष्कार रमानाथ द्वारा जागा का ग्रहण करने की महमति जाति

पटनाआ न उसकी मृत्यु का भी मानो सायब कर दिया है।

श्रीमती विमल वद न उपयास की रचना सरल एवं मुहावरदार भाषा में की है। यथा—(१) 'बहुता मगा म व भी हाथ जो सकने थ,' (१) 'बहु है नहीं मसूर की दान खान चला है।' लखिका की शली प्रवाहपूर्ण है। उन्होंने सूक्ति वाक्या का प्रचुरता से प्रयोग करके भाषा की मयबोचित गाम्भीर्य का भी समावेश किया है। यथा— मनुष्य व अपन सपन होते हैं और जब उन पर आघात होता है तो वह यथा प्राय अमर हो जाती है।^१ अनेक प्रसंगा में वणन प्रवाह तथा नाटकीयता के समुचित मिश्रण ने भाषा को मजबूत एवं प्रभावपूर्ण बना दिया है। वस्तुतः इस उपयास की विगपता यह है कि इसकी कथावस्तु और वणन शली, दोनों में सरासरी सादगी मिलती है।

२ अचना

श्रीमती विमल वद के अचना 'गीपक सामाजिक उपयास' में १३५ पृष्ठ तथा १४ परिच्छेद हैं। इसका कथानक इस प्रकार है—अचना नगर के एक धनी मानी व्यक्ति गीनानाथ की इकतीसी पुत्री थी किंतु वह एक निधन एवं अपग लेखक अरुण से प्रेम करती थी। दानानाथ जी प्रत्यक्ष में तो पापार करत थे किंतु परीक्षित व सरकार की जागी में धूल का कवर नियात किए जानेवाले अच्छे माल में साना छियावर विद्वान् भजत थे और इस प्रकार न केवल स्वयं अनुचित माय का अवलम्बन कर रहे थे अपितु अपन इक्कीस पुत्र राजद्र को भी उसी दिशा में दक्ष बना रहे थे। व चाहते थे कि उनकी पुत्री अचना का विवाह विकास मंत्री की लाडलीमाहिन के पुत्र डाक्टर विनोद से हो स्यावि इसमें समय-समय पर उनका स्वाय सिद्ध हासकता था। विनोद जी अचना का विवाह सम्पन्न पणत निश्चित हो चुका था, किन्तु विवाह के पूर्व ही एक दिन विनोद ने आप्रह्मपूवक उससे उसकी उदासी का कारण जानकर विवाह करना अस्वाकार कर दिया। उसने अरुण से अचना का विवाह करा देने का कवल आश्वासन ही नहीं दिया अपितु यह भी वचन दिया कि वह अरुण के पांव का तगड़ापन ठीक करके अचना का सम्पूर्ण सुख उस लोटा देगा। अपनी याचना को या निष्फल जात ग्य दानानाथ जी पहले तो हतन प्रद्व हुए कि उन्होंने अचना के माल पर थप्यद जद दिया किन्तु कालान्तर में जब बम्बई में उनके मान की चक्री हानि से सोना बरामद हो गया और अपन और राजद्र के लिए कारागार के द्वार खुल दिमाई पडन लथ तो उनकी आंख खुली और उन्होंने एक पत्र लिखकर अचना से धमा-याचना की।

ज्योति किरण की भांति प्रस्तुत उपयास में भी लखिका ने पूर्वाग्रह से प्रेरित होकर पयानर की आदावा की छाया में पुष्ट किया है। सुग और एस्वर के प्रोड में पती अचना एवं न्ति अपन कावेज के समाराह के लिए लखक अरुण का आमंत्रित करने

गई और सहसा इतनी प्रभावित हो गई कि उसने और अपने स्नान-वेष में अतिरिक्त उसकी अपगता को भी विस्मृत कर दिया कि प्रेम में तल्लो न हा गया। यह ठीक है कि प्रेम अथा होता है किन्तु फिर भी उसके लिए मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि स्थापित करने का जिस कोश की अपेक्षा थी उस और लिखने के विना ध्यान नहीं किया। यही कारण है कि समस्त कथानक चरित्रों की घटनाओं की भाँति दृष्टिमान भावना का पात्र बना करता प्रतीत होता है।

यात्रा किरण की भाँति लिखने के इस उपवास में भी आगे पात्रों का सृष्टि की है। अचना एक जादू प्रेमिका है तो रमा एक जादू भानी जिससे मानहोना अचना को अपने प्राणों के रक्त से पाला और कुंयसनी पति (राजद्र) की उपासना सहकर भी कर्त्तव्य का सफल निवाह किया। अरण की माता के 'यकित्व' में लिखने ने एक आत्मा माता की सृष्टि की है जो स्वयं कष्ट सहकर पुत्र की सुविधाओं का व्यवस्था परती है। प्रभा और अचना का जादू सत्य भाव भी सराहनीय है। लिखने ने नारी पात्रों में एक बार कल्याणपरायणता कष्टसहिष्णुता स्वापरायणता स्नेहासक्तता आदि विनियोगों का समावेश किया है और दूसरी ओर उनकी परिस्थिति प्रभावित विनियोगों तथा यथापूर्वित अन्तर्गत की सफल भाँति प्रस्तुत की है। परन्तु पात्रों में अरण का प्रतिभा सम्पन्न मन्त्राचार्य एवं पावन व्यक्तित्व से अधिक उत्प्रेक्षणीय डाक्टर विना का आत्मा चरित्र है। पहलू कभी वह नारी के रूप यौवन का खिलवाड़ मानता आया होगा कि लिखने ने एक स्थान पर उमर के मूल से कहलवाया है किन्तु प्रत्यक्ष उसने अचना के लिए जो किया वह सामान्य युवक नहीं कर सकता। अचना चाह अरण से कितना भी प्रेम करती थी किन्तु फिर भी उसकी स्थिति ऐसी दयनीय हो गई थी कि यदि विना उस सहारा न देता तो वह पिता के भय से घटने डेक देती। दीनानाथ को लिखने ने पूज्यपति वगैरे प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया है जिसका लक्ष्य धनकेन्द्रप्रकारण धनोपाजन होता है। उनका पुत्र भी उनकर्मों में एक यकित्व का विकास करता है जिसमें स्नेह कृतज्ञता सात्त्विकता आदि सत्गुणों की गूँथता एवं परनारीरक्षण सती साध्वी पत्नी की उपासना अर्थात् प्रति हृदयशीलता आदि गुणों की प्रमुखता है। यहाँ पर उल्लेखनीय है कि दीनमती विमान वदन के मध्य को धनन मात्र न रखकर नाटकीय सौन्दर्य का समावेश की ओर भी यथाचित ध्यान दिया है। उहाँ प्रायः सक्षिप्त परिस्थिति गंभीर तथा पात्रानुरूप मन्त्रों की यात्रा की है। समष्टि में अचना और प्रभा तथा अचना और उसकी माँ रमा के मनापण उत्प्रेक्षणीय हैं जो सारगर्भित हान के प्रति रिक्त अनन्त अतीत भावमय एवं चहलपूँज हो उठ हैं।

दीनानाथ तथा उनके पुत्र राजेन्द्र के अर्थ विनियोगों में लिखने ने वर्तमान समाज के उस विविष्ट वर्ग का पात्र जोना है जो गुप्त रूप से पाप में सन्तप्त रहने पर

भा प्रत्यक्षतः धन एव मान प्राप्त करके ससार का जाड़ा में डूब भासना है। इस वग के व्यक्तियों के लिए स्वायत्तता सर्वोपरि होता है कि नारी का व पाँव की जूती से अधिक सम्मान नहीं दते। देखिका ने रमा के माध्यम से नागी के इस परिस्थिति चित्र का ताजमारा है किन्तु उसका मनोवगा अथवा आत्मव्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप में व अममथ रही है। जरण के घर में अभावग्रस्त परिस्थितियों का वर्णन करके उन्होंने हिन्दी लड़का के सघणाल जीवन का आभास दिया है। उपवास के आरम्भ में अचना और प्रभा के विद्यार्थी जीवन के प्रथम में उन्होंने कविज के वातावरण का चित्रण करते समय स्वाभाविकता एवं मजबूती का विशेष ध्यान रखा है।^१ यथायथा चित्रण करते उनका कुछ पताभा का आरंभ पाठका को मचल करना और आत्म का शिवा में प्रेरणा देना इन उपवास का नय है। मानव जीवन का लक्ष्य स्वायत्तसिद्धि अथवा धनप्राप्ति न हाकर स्नेह, ममता, सदाचरण आदि गुणों का विकास होना चाहिये इसी का सिद्धि में वे लक्ष्य रखी है। आत्म के प्रति उनका भाव है इतना प्रबल है कि कथानक पात्र सवाद आदि एक पूर्वनिश्चित शिवा का ओर अग्रसर होने प्रतीत होता है फलतः उद्देश्य के निर्वहण में कदा-कही दृष्टिमता आ गई है।

अचना में सरल व्यावहारिक एवं मुहावरण भाषा का स्थान मिला है। वचारी प्रभा जैसे बिछाए बठी रह गई।^२ क्या बपर की उड़ाई^३ सुनकर सी बन सा जाता थी आत्म वाक्य प्रमाणस्वरूप उद्धृत किए जा सकते हैं। इसमें अतिरिक्त अनुभवाश्रित सूक्ति-वाक्या के प्रयोग से उनकी गली में यथाम्यान गम्भारता का भी समावेश हुआ है। यथा— 'मनुष्य में जब किसी प्रकार दुबलता घर कर रही है तो वह बात बात पर मकुचित होने लगता है और यदि दुबलता किसी व्यक्ति के लिए मन में बढने लग तो उसका सामन सारा व्यक्तित्व ही मुठित हो जाता है।^४ अपनी उचित का अधिकार अधिक प्रभाव गली धनाने के लिए शिवा ने आत्म व्यावहारिक उपमाओं का आश्रय लिया है। यथा— उसी अचना का दिन पर दिन मूखता जाता मुन लखकर एक दिन वह इस तरह चौक उठे जो गहरी नींद में सोया मनुष्य कोई अश्रव्याश्रित आघात पाकर जाग उठता है।^५ भाषागत प्रशिक्षण के सम्बन्ध में उद्धृत का यह उपर्युक्त उक्ति में स्पष्ट है कि सत्तिका में जिस प्रकार स्यास में अतना प्रवाह उद्धति का अदृष्टिम निवाह दिया है उसी प्रकार उसी धारी भी मनावाना के सहज उद्घनन का निग है।

३ असाती होरा पकूची हारा

श्रीमती विमल बे० का यह उपन्यास २०३ पृष्ठाओं और २५ परिच्छेदों में विभक्त है। अन्य दोनों उपन्यासों की भाँति इसमें भी शिवा ने एक पूजोपति की कथा का

१ देखिये अचना, पृष्ठ १२-१८

२ ३४५६ अचना, पृष्ठ १ १७, ५३ ७७ ६०

निम्नमध्य वर्ग के युवक से प्रेम करते दिखाया है। अर्पणा मिलमालिनी नव नराय वमा की पुत्री थी। पढ़न उसने किंगोर खन्ना को अपन भावी जीवन साथी के रूप में चुना जो उसी के सामाजिक स्तर का युवक था कि नु बाद में उससे सम्बन्ध तोड़कर उमने वसन्त एवं पत्रकार रामनाथ को अपनाने का निश्चय कर लिया। पढ़न वह रामनाथ से घणा करती थी क्योंकि वह उनकी मिल के थमिका का पक्ष लेता था और उह उनके अधिकारों का बोध कराता था। किन्तु बाद में धन्ति होनेवाली विविध घटनाओं के आधार पर जब अर्पणा ने रामनाथ और किंगोर के आचरण का तुलना की तब उसे स्पष्टतः प्रतीत हुआ कि किंगोर दम्भी स्वार्थी एवं सपटी युवक है जबकि रामनाथ परोपकारी जननवी और आदर्शवादी व्यक्ति है। श्रोयत वमा पत्रों के भाव परिवर्तन से बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि वे तो पढ़न ही जसनी हीर और नकली हीर के अंतर का समझ गए थे किन्तु उसकी माता सुलोचना को इससे अत्यन्त दुःख हुआ क्योंकि वह ऊपरी चक्राचार्य का ही वास्तविकता समझती थी। उपयुक्त कथानक से स्पष्ट है कि इस उपन्यास में कथानक और चरित्रों का अयो-यात्रित रूप में विकास हुआ है। घटनाएँ अत्यन्त मन्द गति से प्रवाहित हुई हैं। कथानक के सूत्र कुछ ऐसे सरल एवं स्पष्ट हैं कि पाठक को अनायास ही परवर्ती घटनाओं का आभास होता रहता है। जिससे कौतूहल एवं रोचकता को निश्चय ही क्षति पहुँची है।

आलोच्य उपन्यास में रामनाथ और किंगोर के चरित्रों को तुलनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। श्री वमा उत्तराचल स्नेहिल एवं विवेकवर्धन उद्योगपति हैं। उनकी पत्नी सुलोचना उनका गुणों को न समझकर उन्हें जानसी एवं लापरवाह की संज्ञा देती रहती है किन्तु घटित होने से उसे अधिक महान एवं गम्भीर प्रकृति के है। अर्पणा को कामन चित्त की स्वाभिमानिनी नायिका के रूप में चित्रित किया गया है। रामनाथ की वहिन किरण के स्नेहपूर्ण यत्नित्व और अर्पणा की अनुजा वन्दना की बाल सुन्दर चपन प्रवर्तित का अकन में भी प्रेमिका सफल रही हैं। उक्त मुख्य कथा के अतिरिक्त नमिक मूरज और उसकी पत्नी पद्मा की गौण कथा भी साथ-साथ चलती है। दोनों के मध्य परस्पर गान्धी-भानुजी भारपाट भीठी फटकार अपरिमित स्नेह वृत्तिमय धमकी घुड़की आदि के अनेक रोचक एवं स्वाभाविक चित्र चित्रिका ने उभारे हैं कि मुख्य कथानक की गम्भीरता एवं मन्द गति उतनी चलती नहीं है। उक्त दोनों पात्रों के संवाद करने स्वाभाविक एवं जाटवीय हैं कि पत्र पढ़ते ऐसा प्रतीत होने लगता है मानो वे पुस्तक में न रहकर प्रत्यक्ष हो गए हैं और हमारी उपस्थिति में ही वार्तालाप कर रहे हैं।^१ अतिरिक्त हान के कारण मूरज और पद्मा की उक्तिगो में सरस सरस पियार नन्दन आदि बातों की भरमार है जो इस बात का प्रमाण है कि चित्रिका ने सवालों को

१ देखिये प्रसन्नी हीरा नकली हीरा पृष्ठ १६ २२ ४६ ५१ ७१ ७५

२ देखिये प्रसन्नी हीरा नकली हीरा पृष्ठ १६ २० २२ ७२

पात्रानुकूल रखा है। इसके अतिरिक्त अन्य कथापकथन भी मक्षिप्त राचक एवं सार गभित है। पात्रा की वात्तालापकालीन भाव नगिमा एवं चष्टाजा का उल्लेख करके नखिका ने उह उचित मजीवना प्रदान की है। यथा— स्नह विगलित कठ र कहा ^१ निरण सिर हिनावर बोली ^२, रामनाथ बना यम्मीर हाकर वाला ^३ आदि।

श्रीमती वेद ने देगकाल वा प्रसगानुकूल चित्रण किया है। मिल का जहाना मजदूरा म आवास स्थल मित्र व नीतर व विविध दश्य गाथो पाक की प्राकृतिक सुपमा आनि केवल स्थूल वण्य न रहकर उनकी सूक्ष्म विस्तपण गवित क सहज अधिकारी रह ह। इनके अतिरिक्त उन्होंने यत्र तत्र समकालीन समाज की स्थिति पर भी प्रत्यक्ष प्रकाश डाला है। यथा—

(अ) कौन नहा जानता कि आजकल क समय म दा हो वग सुगो ह। उच्च वग अर्थात् वर्मा जो जसे लोग ओर मजदूर वग। सबमे अधिक दयनीय अवस्था है मध्यम वग यी, जिसकी सुख मुविधा के लिए किसी न कहा भी वाई कानून नही बनाया। ^४

(आ) एक को छोडकर दूसरे क पर बठ जाना निम्न वग म बुरा नही समझा जाता। इमे नाता बनना कहत है। मामूली सा भाज भारी बिरादरी का देकर का भी आदमी किसी भी ओरत को पर म बिठा सकना है। उच्च वग जसी छीछानदर इनका समाज नही करता। स्त्री ओर पुरुष क सम्बन्ध का य कुछ अलग ही दृष्टि स दखन है। भूठा मान भूठा प्यार य दिखात ही नही। बनी तो माथ हैं, नही बनी तो अलग हो गय। न अदानत का भगडा न समाज का डर। ^५

इस उपन्यास म नखिका का प्रतिपाद्य यह है कि यस्ति क चरित्र का बाय उसक समवस न करव अनमन की प्रवर्तिमो क विस्तपण द्वारा किया जाना चाहिए। इसीलिए नखिका ने किणार ओर रामनाथ के चरित्रा को तुननात्मक क्षली म प्रस्तुत करव अन्त म रामनाथ की अष्टता मित्र की है और किणारक मन म क्षिपदमन एवं कपट को उभार कर उसे हथ ठहराया है। उपन्यास का तीपक भी उक्त सत्य की आर सकेत करता है।

अपने अन्य उपन्यासा की नीति प्रस्तुत कृति म नीतिनिका ने सरल, मुहावरार तथा सुनितगमित भाषा का प्रयोग किया है। इसका मित्रो वित्रो गुम हो जाता है दूब मर बुलू भर पानी ॥ 'उसके सामाजिक एन्वय का लाहा नही मानता आनि मुहावरार के सपन प्रयोग व साथ ही उदान सूक्तिया म जीवन-दगन का भी सामाजिक रूप में समावग किया है। यथा—(अ) अनीत री बुनाद दुइ स्मृतिपा का नापाग

१ २ ३ अस्तो हारा नरतो होरा पृष्ठ २७ ३० २८

४ दसिए अस्तो हारा नरतो होरा पृष्ठ ८ १० ११ ५२ ५८ ६५

५ ६ अस्तो हारा नरतो होरा, पृष्ठ ३० ५०

७ अस्तो हारा नरतो होरा पृष्ठ १० ११ ३६

जितना मधुर होता है उतना ही बड़वा भी ^१ (आ) मनुष्य जब धिपाकर कोई काम करना चाहता है तो उसके हर भाव में एक एम रहस्य की बू जान लगती है कि ज यमनस्क यवित तक उन भावा की समझन में भूलनही करता । ^२ इसी प्रकार उन्होंने अलंकारों के स्वाभाविक प्रयोग द्वारा अपनी उक्तिया की सजीवता से अनुप्राणित किया है। यथा—

(अ) अपना का मुख पीका हो गया मानो जवान ही किसी ने पयरोनी सड़क पर धक्का देकर उस गिरा दिया है । ^३

(आ) कमल के पत्ते पर से पानी जैसे किमन जाय इसी तरह किसी भा यग का उस पर प्रभाव नही पड़ा ।

निरूपण

उक्त उपन्यासों के अध्ययन से स्पष्ट है कि श्रीमती विमल बंद ने परिस्थितियों में यत्किंचित अन्तर रखकर कुछ निश्चित कथामूला की तीन विभिन्न उपन्यासों का रूप दे दिया है। अभिप्राय यह है कि इनमें कथानक और समस्या चित्रण की दृष्टि से बहुत कुछ समानता है। इनमें समकालीन समाज के दो प्रमुख वर्गों की समस्याएँ एवं विडम्बनाओं का तुलनात्मक चित्रण हुआ है—उच्च वर्ग एवं निम्नमध्य वर्ग। इसके लिए नविका ने नायक निम्नमध्य वर्ग से चुने हैं और नायिकाओं को उच्च वर्ग से चना है। जीवन मूल्य चरित्रांगों एवं नतिक मूल्यों की दृष्टि से उक्त दोनों वर्गों के मध्य जो गहरी खाई है उक्त कृतियों में नायकों और नायिकाओं के मध्य प्रेम सम्बन्ध की स्थापना द्वारा उसी को पाटन का प्रयास किया गया है। इन उपन्यासों में अनुभूति की प्रेरणा की अपेक्षा सादृश्यता का आग्रह अधिक प्रबल रहा है फलतः कथा सूत्रों एवं चरित्रों में सहज विकास का अभाव प्रायः खटकता है। हाँ भाषा शैली के सरस एवं सहज प्रवाह ने उक्त दोष का पर्याप्त परिभाजन अवश्य किया है। ललितता की विशेषता यह है कि उन्होंने कथानक के अनावश्यक विस्तार की प्रवृत्ति न अपनाकर प्रतिपाद्य को अधिक प्राथम्य दे दिया है। उनके पास उनका व्यक्तित्व के उदाहरण नहीं हैं अतः समस्याओं का निरूपण भी संक्षेप में ही हुआ है।



चतुर्थ प्रकरण

स्वातन्त्र्योत्तर युग की अन्य उपन्यास-लेखिकाएँ

रजनी पतिवर प्रभृति उपन्यास लेखिकाओं के अनिरविरत बनमान कायम प्रायः वालीम अथ लेखिकाओं ने भी उपन्यास रचना की है।^१ इनके नाम इस प्रकार हैं—
 कवराजी तारादेवी धामती लावण्यप्रभा राम सत्यवती नया उषा, सखिता रानी
 नारती विद्याधी, सुपमा नाटी माया ममथनाथ गुप्त, दाना सुता रश्मि, मन्ताप
 सचदेवा, गिराजी बिनाइ गङ्गुलता मिथ उर्मि गीता गर्मा शीला रघुवती
 उमादेवी कमला सचरिता इन्दिरा तूपुर गङ्गुलता गुक्त आदामुमारी जानन्
 मधुनिका मधुनिका मित्र सुमित्रा गङ्गाक मीरा महादेवन पुष्पा नागता, उषा
 प्रियका पुष्पा महाजन नारायणीकुम्हारहा गिराजी मायता पन्नकर विन्नु अग्रवाल
 कमला टन्न कमल बीरा सन्ताप आता प्रभा चान्ता मिह्रा, प्रकाशवती कृष्णा
 रविमय महे इ वाषा प्रिया राजन मन्नु नडारा। इनमें से लावण्यप्रभा राय, नारती
 विद्याधी मीरा महादेवन तथा मातली पल्लवर अहिनीभायी क्षत्री की लेखिकाएँ हैं
 जिन्होंने अपने उपन्यासों की रचना मूलतः हिन्दी में की है।

इन लेखिकाओं ने प्रायः सामाजिक उपन्यासों का रचना की है। केवल मुद्रा
 रश्मि और उमादेवी इनकी अपवाद हैं, क्योंकि उन्होंने ऐतिहासिक घटनाओं एवं पात्रों
 पर आधारित उपन्यासों का प्रणयन किया है। इनमें से नारती विद्याधी और मन्नु
 नडारी ने स्वतन्त्र रूप से उपन्यास रचना न करके अपने पतिवश का सहयोग लिया है।
 नारती विद्याधी ने तो यह भी संकेत नहीं दिया कि उनका पति किस रूप में परिच्युत
 है। एतत् उपन्यासों की समीक्षा करने समय कठिनाई यहाँ पड़ती है कि लेखिका की
 प्रतिभा का पृथक् से मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

उपयुक्त लेखिकाओं में से अनेक ऐसी हैं जिन्होंने एकाधिक उपन्यासों की रचना
 की है। उनके नाम इस प्रकार हैं—सत्यवती नया उषा नारती विद्याधी सुपमा नागी
 गर्मा तूपुर गङ्गुलता गुक्त आदामुमारी जानन् मीरा महादेवन तथा पुष्पा
 नागता। उपन्यासकारों में से प्रत्येक ने एक उपन्यास की रचना की है। जिन लेखिकाओं

१ सन १९५७ में हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली में भरा एक उपन्यास 'बग बत्तरी'
 'तीव्र' से प्रकाशित हुआ था किंतु प्रस्तुत प्रकरण में उसकी समीक्षा नहीं की गई है।

के लो उपन्यास हैं उन्हें कान प्रेम से पृथक् पृथक् स्थानों पर रखने की अपा लोना का एक ही स्थान पर विवेचन किया गया है। यही यह उत्सवनीय है कि वर्तमान उपन्यास चेतिकाओं में से अधिकांश न सन् १८८८ के बाद उपन्यास रचना की है जिससे यह स्वतः व्यक्त है कि महिनाओं के उपन्यास साहित्य का भविष्य उज्ज्वल है।

१ कुवरानी तारादेवी

कुवरानी तारादेवी का जीवन दान शीघ्रक समस्यामूलक सामाजिक उपन्यास की रचना की है। यह उपन्यास उद्देश्यप्रधान है तथा इसमें भारत की स्वातन्त्र्योत्तर सामाजिक राजनीतिक तथा आर्थिक स्थितियों की चर्चा की गई है। तत्तिका न प्रायः पात्रों द्वारा माक्सवादी सिद्धान्तों की प्रशंसा कराई है जिससे यह सक्षित होता है कि वे साम्यवाद से प्रभावित हैं।

प्रस्तुत कृति में घटनाओं की योजना पात्रों के चरित्र विकास के लिए की गई है। इसमें चार पात्र मुख्य हैं—बजपुर के जमींदार का पुत्र प्रभात उसकी कथित मौसी की पुत्री मुरला रामा काका द्वारा पालित मातृहीन निधन मनहर मन्दिर की दलदली महाश्वता। ये चारों पात्र सहृदय हैं किन्तु जीवन-काल में सभी का जीवन दर्भग्यपण रहा। प्रभात और मुरला परस्पर प्रेम-मूल में बंध गये किन्तु प्रभात के पिता के हठ के कारण विवाह मूल में न बंध सका। जब प्रभात डाक्टरी पढ़ने इंग्लैंड गया तब उन्होंने मुरला का विवाह बासीपुर के जमादार से कर दिया। मनहर ने प्रभात को इस घटना की सूचना इसनिय नहीं दी कि वह स्वयं मुरला को चाहता था। मुरला के विवाह की सूचना मिलने पर प्रभात ने आत्महत्या का प्रयत्न किया किन्तु डा. जासन ने उसकी प्राण रक्षा की। उसके बाद वह पागन हुआ गया तो उसकी सहपाठिनी गिबाना ने उसकी परिचर्या की। उधर रामा काका की भानजी रेवा माता पिता की मृत्यु के बाद उनके पास रहने लगी और मनहर का चाहने लगी किन्तु मुरला के वियाह से रेवा मनहर उसके प्रेम का प्रतिदान न दसका। उसने जुआ खेलकर कुछ धन एकत्र किया था जिससे निधन की सेवा के भाव से नगर में एक होटल खोल दिया। इस नाम में जितन धन की कमी रही वह महाश्वता ने अपने आभूषण बेकर पूण की जिसके लिए उस जमींदार तथा पुजारी ने सहायित किया। फलतः वह मन्दिर का त्यागकर मनहर के पास भगिनी रूप में रहने लगी। शीघ्र प्रकृति होने के कारण मनहर महाश्वता को गोआ न गया। महाश्वता प्रभात से प्रेम करती थी किन्तु दलदली होने के कारण इस विषय में मौन थी। गोआ में मनहर का परिचय नतकी मौली से हुआ जो उससे प्रेम करने लगी। किन्तु उसने स्वदेश चल जान पर मौली ने विरहवर्ण प्राण त्याग दिया। मुरला को पति प्रेम का अभाव न था उसने गृहस्थ धर्म का भी निर्वाह किया। किन्तु स्वयं को प्रभात और मनहर के जीवन की अवस्था के लिए उत्तरदायी मानने के कारण अन्ततः उसकी क्षय रोग से मृत्यु हो गई। उसके आघात से प्रभात प्रायः पागन हुआ गया किन्तु गिबाना ने

इस बार भी उनकी परिचया की। इसी प्रकार रेवा न मनहर की मनोपया को समझ कर उस अपनी सहानुभूति और सेवा प्रदान की।

इस उपयास में ताराचन्द, बिज्जी और वासुदेव की प्रासंगिक कथाओं का भी समावेश है। उपयास बृहदाकार है अतः इसका कथानक भी विस्तारपूर्ण है। इस विस्तार ने रोचकता तथा बीनहलपूर्ण प्रसंगा को क्षति नहीं पहुँचाई। इस दृष्टि से तारा और बिज्जी का रचक सबान् विरोध उत्तम है। वस, इन दोनों पात्रों का अतिरिक्त उपयास का अन्य पात्रों ने चाहे कितनी ही कतव्यपरायणता का परिचय दिया है उनके हृदय में असफल प्रेम की गूँज भी विद्यमान है। कथानक में परिस्थितियों की विविधता की आर भी उचित ध्यान दिया गया है। जमादार (मुरला का पिता पति), डाक्टर (प्रभात) जनसचिव (मनहर) पुलिस इस्पेक्टर (ताराचन्द) रणियो डाइरेक्टर (बिज्जी) दब दासी (महाश्वता) सफल गृहिणी (मुरला रेवा) आदि का विविधरूपी जीवन चित्रान कथानक का रोचकता के अतिरिक्त सजीवता का प्रदान की है। तस्विका न उपयास में वासुदेव मन्त्रधी प्रासंगिक कथा का भी समावेश किया है किन्तु वह मूल कथा से मकरा असम्बद्ध है। मुरला के प्रति वासुदेव का कुटुम्बि मुरला द्वारा उस प्रभात की सहायता से नोका विहार के लिए न जाना और वहाँ उसे नगी में नगी देना गमी घटनाएँ हैं जिन्हें उपयास में स्थान देकर कलेवर-वर्द्धि न की जानी तो रचना साष्टव में कोई अन्तर न आता। पुलिस इस्पेक्टर ताराचन्द द्वारा मुरला को परिवर्तित होने का कारण नष्ट न देना प्रयास चित्रण की दृष्टि से भल ही ठीक ही उसमें उनके पद-गौरव की रक्षा नहीं हुई।

प्रस्तुत उपयास में कथा के सहज वियास की अपेक्षा चरित्र-व्यञ्जना की सघनता पर अधिक बल दिया गया है। इसमें जिन युवक-युवतियों का चित्रण हुआ है वे प्रायः प्रेम रोग में पीड़ित रहें हैं किन्तु उन्होंने मन में कुछाजों को पलकित न करके प्रायः सतत अवस्था कतव्य पथ का अवलम्बन किया है। पुरुष पात्रों में प्रभात और मनहर का चरित्र प्रमुख है। उन दोनों का मुरला के प्रति अनन्य प्रेम है उनका विवाह अत्यन्त ही जान पर प्रभात तो प्रायः विधि ही हो जाता है। स्वस्थ होने पर भी वह मानसिक दशा में मुँह हाँकर कतव्य पानन नहीं कर पाता और न ही उनकी आत्मा मुरला का पति में नैतिकता का अनुमति देती है। इस मन स्थिति को मुरला ने इन दोनों में प्रकट किया है— 'तारा कहते हैं प्रभात मुँह, विमान् एव प्रतिभागी नैतिकता है पर मुरला ने उगरी जीवन लगडा कर दिया। 'मनहर का व्यक्तित्व अपेक्षा में आत्मायुक्त रहा है परानि उसमें अपनी पीड़ा को सुलाने का लिए अनन्यता का क्रियात्मक भाव अपनाया। अपने अन्तर्गत अपराध (द्वेषिता प्रभात को मुरला का विवाह का पूर्व सूचना न देना) के लिए उसे जीवन भर पश्चात्ताप रहा और इसी से उसका व्यक्तित्व निरन्तर विकसा मुक्त रह गया।। उपाहरणाय महाश्वता द्वारा अपने प्रति उसके भगिनी प्रेम का

यह व्याख्या देखिय— यही वह गाराबी, जुजारी आचारा मनहर है। अपन को मिटा कर दूसरा को बनानेवाला। —नाम कहत हैं मौं जाया भाई ही तनी ममता प्यार कर सवता है। मनहर भया तो उससे भी उढ़ गये हैं।^१

पुरुष पात्र की अत्य प्रगति या म प्रभात व पिता का हठ तथा मुरता व पति की रसिकता उभोत्तर-वय के अनुरूप है। ताराच = जोर शि-श्री का परस्पर हास्य-व्यंग्य भी उनके सजीव यत्नित्व और दृढ़ भनी का बोधक है। स्त्री पात्र म मुरता महा-वता गिवाला मौनी और रवा जामोत्सग करनेवाली प्रममयी नारियाँ हैं। मुरता न प्रभात के पिता की प्रमन्नता व लिए बामापुर व उमान्तर को पति रूप म ग्रहण कर लिया। महा-वता प्रभात म अनुरक्त होने पर भी दवतासी बन गई और मनहर की सहायताथ अपन जाभूषण कर फिल्म म काम करके उसन मन्दिर व जाभूषण स्वय ही तोटा दिया। पान विधवा गिवाला न प्रभात का कष्ट म देखकर उसका सदैव दत्तचित्त स मवा की। मौनी न ततका होने पर भी मनहर व प्रति पावन प्रम किया और उसक सुख की कामना करत हुए ही अपना जीवन उत्सग कर दिया। रेवा न सबसे भिन्न कुछ कुछ क्रान्तिकारी पिचानेवाली नारी है जो मनहर के प्रति प्रम भाव के फलस्वरूप उस सुराह पर साना चाहती है। रामा काकी तथा प्रभात की माता स्नेहमयी नारिया ह। वस्तुतः नारी पात्रा के चरित्र म सविवा न उत्सग तथा निस्स्वाय भावना को ही प्रमुख रखा है।

कुवराना ताराबी की लखन गनी की सफरता का अधिकार थय उनकी सवाद याजना का है। किस परिस्थिति म कौन-सा पात्र कसी उचित कह सकता है इसना उन्हे सूक्ष्म पान है। यहा कारण है कि इस कृति व वातावरण अत्यन्त स्वाभाविक तथा सजीव बन पड़ हैं। घटना विधान और चरित्र चित्रण ही नही प्रस्तुत उपयास के प्राय सभी तत्व क्यापकथन से उपकृत है। प्रमाणस्वरूप मन्दिर क पुजारी व प्रति दवदामी महा-वता का यह उक्ति दिये— और जाज जबकि हमार भाई अन वस्त्र बिहीन भूख प्यास जोर नग घूम रहे हैं तब जगवान को कहा म चनाए और क्या चनाए? लुटा दा बाया! मन्दिर का यह रत्न अन्धार भगवान् क यह खबर सिंहासन सब नटा दो। भगवान् क भूख प्राणिया का पट भरन दा। हमारे दवता इससे निहाल हो जायग। हमारी महापजा सायक होगा बाबा! बि-वास न हो तो एक बार करक देखो। तय वह मेरी सादी सफ-पोगाव व नत्थ स नी जान-विभोर हो उठेंग।^२ इस कथन से जहाँ महा-वता क तजस्वी तथा तप पूत यत्नित्व का परिचय प्राप्त होता है वहा समवाचीन जनता का गाननाय आर्थिक अवस्था का ना पान होता है। इमन अतिरिक्त इसम निहित गानिजारा विचारधारा उपयास क उद्देश्य पर भी पर्याप्त प्रकाश डालती है। नडिका न मनहर रवा और महा-वता क सवाद म उनकी आंतरिक दृढ़ता और विवक

१ जीवन-दान पृष्ठ १८५

२ जीवन-दान पृष्ठ १७

गलता का प्रतिनिधित्व रखा है। ताराचन्द और विज्ञा क वाताताप म हास्य-व्यंग्य
जनित राचन्दना और आन्तरिक जीवत का स्वाभाविक निवाह हुआ है।^१ अतः यह स्पष्ट
है कि इस उपयान क मन्त्रा म विविधता मार्मिकता, तर्कशीलता आदि गुणों का
प्रमाणरूप अन्तर्भाव है।

कुवराजी ताराचन्द ने इस उपयान म वज्रपुर नामक गाँव का वृष्टभूमि म रज
वर स्वान्तर्गत भारतय समान और राजनीति का प्रचुर वर्णन किया है। उन्हाहरण
स्वरूप य उक्तिया दक्षिण—

(१) तर्कशील या जा कठिनाय्या सामान आती है हम कलाकर कह दत है—
नद क्या बतावें, हमारी गवर्नमट का अन्तर्गत ही खराब है। पर इन्तर्गत कर कौन
रहा है हमारे अपन भाई तो हैं। वहाँ सत्र जब अपन कतब्य का भलाकर दबदब करने
पर तुन गये हैं तो गवर्नमट बबारी क्या कर।^२

(२) रियामतें उत्पन्न हुई जिस दिन उस दिन एक मर ही वहाँ हिन्दुस्तान क
तारा तारा का घर म भी क दाय जल हा।^३

(३) उरुरत पन्त पर हर एक जमीदार अपन खता का बंधक रखता है। यह
तो जमादारा म एक रिवाज-सा है।^४

इन उक्तियो म ममकासीन का कान का बड़ी सुन्दर व्यञ्जना हुई है। जमादारा
का चारित्रिक पतन, 'तारा म चाय की नीति मल-पान का प्रचलन' आदि तन्त्रों क
उल्लेख तारा चित्रिका म समकालीन स्थिति का यथातथ्य चित्र अंकित किया है। प्रवृत्ति
चित्रण म उनकी प्रकृति विशेष न रमी फिर ना यन्त्र-तन्त्र प्राकृतिक दृष्ट्या का उल्लेख
हुआ है। उन्हाहरणाय मुरला क का म वज्रपुर क वातावरण का यह चित्र दक्षिण—

यहाँ सुन्दर दृश्य है कुकर। लगता है चाराओर की पहाड़ियाँ जस सा रहा हैं। उनकी
नीच वहाँ टट न जाय। इनलिए नया बिना कुछ गन्त बिय धार धीरे खली जा रहा है।^५

कुवराजी ताराचन्द ने इस उपयान म प्रातिवासी विचारधारा के प्रति महान्
भूति व्यक्त की है पन्त मनहर देवा महान्ता आदि प्रमुख पात्रा त समय समय पर
त्रान्निवारी विचारों का मार्मिक प्रवाण किया है। का रोजा को ही जीवन का
प्यय म मानकर उन्हां परापर और दगाववा की व्यस्ति का उद्दिष्ट माना है।^६ उनका
एक जय उद्देश्य प्रम का तुम्हना म कतब्य का महान्ता का प्रतिपादन करना है। जिसक
लिए नारा का पुरष का नीति जीवन यापन की स्वतन्त्रता दन पर बत दिया गया है।^७

१ दक्षिण 'जीवन-दान' पृष्ठ १०२

२ ३ ४ 'जीवन-दान' पृष्ठ ४० २३ २७

५ ६ दक्षिण 'जीवन-दान' पृष्ठ २६ ६५

७ 'जीवन-दान' पृष्ठ २०

८ ९ १० ११ दक्षिण 'जीवन-दान' पृष्ठ ६३ ४० ४४ २१७

रवा का 'यकित्तव' विगय भातिकारी है। यह ईश्वर की उपासना का पाण्डित्य ममभावा है। वस्तुतः 'नेत्रिका' ने जन सभा को ही मन्त्री 'अर' पूजा माना है। इस विषय में महात्मा की यह उक्ति पठनीय है— 'मेरा मन कहता है भगवान् के ऊपर उत्सव होना चाहिए। उसके प्राणियों पर उत्सव हो जाना दान परमर भिन्ना।'

कुबेरानी तारादेवी की भाषा पात्रानुकूल है। फलतः उन्होंने प्रचलित उर्दू, गुजराती और दार्जिली का भी प्रचुर प्रयोग किया है। महारा और तारादेवी का प्रयोग द्वारा अभियोजना सौंदर्य का विकास भी उन्हें सहज अभीष्ट रहा है।^१ बोलचान की भाषा को स्थान देने के प्रयत्न में उन्होंने कहीं कहीं 'यावरण' विरुद्ध प्रयोग भी किए हैं (जैसे— 'कौन सा किसी ने दफतर या स्कूल जाना है?') किन्तु ऐसा स्थल अधिक नहीं है। 'गलों की दृष्टि से भी यह उपयास मजाब एवं प्रभावशाली बन गया है। क्योंकि 'त्रिंशिका' न कथावस्तु का अपनी भाषा से अधिक वर्णन न करके भारतीय समाज और भावकतापूर्ण उक्तियाँ को अधिक स्थान दिया है।

श्रीमती लावण्यप्रभा राय

इन्होंने 'रजनीगंधा' नायक भौतिक सामाजिक उपयास की रचना की है जिसमें एक पारिवारिक कहानी प्रस्तुत की गई है। इसमें नरेन्द्र और प्रतिभा की कथा मुख्य है और 'अर' और 'अमिता' की कथा मुख्य सहयोगी कथा है। इसमें तीन प्रासंगिक कथाएँ हैं—(अ) गंगा बाबू के परिवार की कथा जिसमें उनकी पत्नी का सहृदयता प्रवृत्ति उभराउत आदि का विषय उल्लेख है (आ) प्रतिभा की भाभी स्वामी तथा निमल के परिवार की कथा (इ) स्वामी की पड़ोसिन 'गान्धा' तथा उसके पति 'श्री' के जीवन की कथा। उपयास का कथात्मक संक्षेप में इस प्रकार है—

नरेन्द्र विधवा महामाया का दूसरी पुत्री थी और निमल की रहित प्रतिभा से विवाह का इच्छुक था किन्तु उसके मित्र विनोद ने यह प्रवाद फैला दिया कि नरेन्द्र का विवाह एक धनी घर में होना चाहता है। विनोद ने प्रतिभा से विवाह कर लिया किन्तु प्रतिभा उस हृदय से न चाह सकी। फलतः विनोद ने इस गोक को भसने के लिए मरिचा का आश्रय लिया और पुनः पुनः प्राण त्याग दिए। मर्यु से पूर्व उसने नरेन्द्र से क्षमा याचना की और प्रतिभा का उसे सौंप दिया। प्रतिभा नरेन्द्र की स्नेहमयी माता महामाया के साथ रहने लगी किन्तु जब महामाया को यह बात हुआ कि नरेन्द्र उस आश्रय में चाहता है तब वह खिन्न हो गई क्योंकि वह पड़ोसी रोखर की बहिन 'अमिता' का अपनी बहू बनाना चाहती थी। उधर 'अमिता' का प्रेम अपनी मखी नूपर के भाई 'राजे' से हो गया। महामाया

१ जीवन-दान पृष्ठ १४

२ संक्षिप्त जीवन-दान पृष्ठ २२ २७ २८ ३१ १२७ १७४

३ जीवन-दान पृष्ठ ६१

की इच्छा का आवास पाकर प्रतिमा अपने भाई के घर चली गई, किन्तु भाभी के व्यग्र वाणी से व्यथित होकर उसने दिल्ली में गिरगु सदन में नौकरी कर ली। उधर राकेग को पिता के दबाव के कारण मधु से विवाह करना पड़ा और ऊर्मि का जीवन दुःखमय हो गया किन्तु राकेग के प्रेम की पूर्व स्मृतियाँ ही उसके जीवन का वर्णन रहा। महामाया और नरेंग को तीसरा यात्रा के समय दिल्ली में प्रतिमा मिल गई और पुनः के सुख की कामना से महामाया उस घर से गई। नरेंग महामाया ऊर्मि सबकी प्रसन्नता के लिए प्रतिमा अपने मस्कारा की दीवार लाघकर अपने हृदय की पुकार सुनने को तयार हो गई—यही उपवास का अन्त है।

ललिका ने महामाया को एक स्नेहमयी उदारहृत्या माता के रूप में प्रस्तुत किया है जो प्रतिमा और ऊर्मि के प्रति एक-जसा मातृवत् प्रेम रखती है। इसी प्रकार उगने पुनः के सुख के लिए अपने हृत्प्रेत सस्कारा का त्याग करके विधवा प्रतिमा का अपनाकर आदर्श चरित्र का परिचय दिया है। प्रतिमा मुन्दर मितभाषिणी और सदा परायणा युवती है। नरेंग की प्रमिका होने पर भी वह विधवा होने पर सस्कारा के कारण उससे विवाह करना जस्वीकार कर देती है तथापि कथान्त में उसके पुनर्विवाह का उल्लेख करके ललिका ने आदर्श का अपनाया है। ऊर्मि भी मुन्दर और भावुक है तथा राकेग की हृदय में प्रेम करती है। वह कस्तूर परायण है अतः राकेग द्वारा मधु से विवाह करने पर अन्तर्हृत्य हान पर भी एकाग्र मन से उसकी स्मृति में लीन रहती है। मधु को पश्चिमी सभ्यता में अतिप्रभावित युवती के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

पुरुष पात्रा में नरेंग को भी विविध गुणा संयुक्त दिखाया गया है। यह मातृवत् है प्रतिमा के प्रति उसका प्रेम एकनिष्ठ है वह ऊर्मि से भ्रातृवत् प्रेम करता है तथा मुनीन चरित्रधाला मृदुभाषी युवक है। विनोद का चरित्र प्रयत्नानुक्त है क्योंकि उसने अपने मित्र नरेंग से धन करके उसकी भावी पत्नी प्रतिमा से विवाह कर लिया। कथान्त में उसे अपने दुष्टता का परिणाम भोगना पड़ा जो ललिका की आदर्श-मुखी वृत्ति का परिचायक है। ऊर्मि का भाव गहरा दारुण है जनता के प्रति पराधकारीवृत्ति रखता है तथा ऊर्मि के प्रति उसका मन स्नेह है। ऊर्मि का प्रमी राकेग भावुक हृदय कवि है किन्तु पिता के दबाव के कारण मधु को अपनाकर उसने उचित नहीं किया। ललिका ने चरित्र चित्रण के लिए प्रथम चरित्र को पात्रों की सकलतापूर्वक अपनाया है। उदाहरणार्थ उनकी यह उक्ति देखिए— नरेंग के मन की गहराई में जो दुःख वृत्ति छिपी थी बाहर के किसी को भी उसका पता नहीं लगता था। माँ के सामने भी वह अपने को सदा प्रफुल्ल बनाए रखता था। पर माँ के लिए माँ ही था। उनकी आँखों को धाँखा नाना आनन्द नहीं था। 'ललिका ने पात्रों के आत्मचिन्तन जयवा जन्तु का निरूपण करने की ओर भी यथोचित ध्यान दिया है। उदाहरणार्थ प्रतिमा का मानसिक विचारधारा

उपन्यास की रचना की है। इनमें से मृदुना का प्रकाशन बाद में कमलाकाश जीपक से हुआ^१ जिसमें व्यय ही त्रिकावतीसरे उपन्यास का भ्रम होता है। इनमें से जहाँ मदना २४४ पृष्ठों और ६६ परिच्छेदों की रचना है वहीं क्षितिज के पार में मदन ६७ पृष्ठ तथा २८ पद्य परिच्छेद हैं।

(घ) मदला

“स उपन्यास का कथानक न प्रचार है— रमणाकान्त ने अपनी प्रथम पत्नी की मृत्यु होने पर मुनूदा से विवाह किया कि तु विमाता की छाया में उनकी सप्तवर्षीया पुत्रा मदना सुख से न रह सकी। कुछ समय बाद पडास में रहनेवाले भाई इहिन वज्र और विभा को मित्र रूप में पाकर मृदुना के नीरम जीवन में किञ्चित् मरसता का संचार हुआ किन्तु विमाता को यह भी सहन न हुआ। जीवन के साथ साथ मदुना और वज्र का बालोचित सख्त स्नेह प्रिया प्रियतम के प्रेम में परिवर्तित होता गया किन्तु विजातीय होने के कारण उन्होंने परस्पर एकनिष्ठ रहने का वचन दवर समारस अपने भावा का गुप्त ही रखा। मदला की विमाता ने उसका विवाह अपने भतीज अरण से करना चाहा किन्तु मृदुना ने उसे भ्रातृवत् मानकर इस योजना को विफल कर दिया। तब उसका विवाह दाहानू सठ रमाकान्त से निश्चित हुआ किन्तु मृदुना ने तदन-मंडप में अपने को किसी जय की बागमता बताकर विवाह न होने दिया। इस घटना के बाद उस विमाता तथा पिता की ओर से अनेक कष्ट मिले। तब उसने गृह त्यागकर स्वतंत्र रूप से जीविकापाजन करते हुए अनेक विषम परिस्थितियों का सामना किया। किन्तु अंत में अरण और विभा के प्रयत्न से मदुला और वज्र का विवाह हो गया और सब विघ्न स्वतः गत हो गए।

उपयुक्त कथानक में घटनाओं का बाहुल्य है और प्रायः सभी घटनाएँ मदुला के चरित्र को निखारने के लिए आयोजित हैं। उसके जीवन में क्रमशः अनेक विषम परिस्थितियाँ आईं किन्तु अंत में उसने इन सब पर विजय प्राप्त करके अपने लक्ष्य को पा लिया। वज्र का चरित्र भी मदना के अनुरूप आदर्श गणों से अनुप्राणित है। वह एक धनी पिता का एकमात्र पुत्र है किन्तु धनी यवका के दगुण उसमें नहीं हैं। मदुना को जीवनसंगिनी बनाने का निश्चय करके वह अन्त तक उस पर दब रहता है। माता पिता का अवकाश न करके वह विवाह के प्रश्न को कौशलपूर्वक टालता रहा और अन्त में उन्हें अपने अनकूट जानकर अपना मत ही प्रकट किया जिसे उन्होंने सह्य स्वीकार कर लिया। अरण का त्यागमय आदर्श चरित्र विभा का स्नेहभाव एवं मदुला के प्रति दोषों का सोझाद भी उत्तरेनीय है। इनके अतिरिक्त कमलाकाश मुनूदा वज्र के माता

१ यह उपन्यास नवभारती प्रकाशन दिल्ली से सन १९५७ में प्रकाशित हुआ था जबकि

मदला का प्रकाशन काल सन १९५९ ई।

विता, सठ रमाकान आदि अथ अनेक पात्र प्रस्तुत उप-यास में हैं, जो प्रसंगानुकूल विविधरूपी जाचरण करके कथानक को गति प्रदान करने और मनुष्या की चरित्र रसाभासों को ज्वलन करने में सहायक सिद्ध हुए हैं। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि लेखिका ने कथानक और चरित्र चित्रण में सूक्ष्म विश्लेषण का ध्यान नहीं रखा। घटनाओं के ऊहापाह में पात्रों की सूक्ष्म प्रवृत्तिगत विशेषताएँ अनावृत्त हो रह गई हैं और केवल स्थूल चारित्रिक प्रवृत्तियाँ प्रकट हो पाई हैं। पात्रों के मानसिक अन्तर्द्वन्द्व अथवा संघर्षात्मक स्थितियों का चित्रण की ओर लेखिका ने ध्यान नहीं दिया।

श्रीमती सत्यवती उपा ने चारित्रिक विशेषताओं को व्यक्त करने के लिए मुख्य रूप में कथापनयन का आश्रय लिया है। मनुष्या, विभा और वज्र के वात्सानाया में हास परिहास आश्रयार्थ पारस्परिक स्नेह, मान मनीषता आदि भावा का सुन्दर समावेश हुआ है। किन्तु कहीं-कहीं भावुकता अथवा भावावगता से युक्त संवादों में अभिप्रेक्षणों में प्रौढ़ता का निर्वाह नहीं हो सका है। उदाहरणार्थ वज्र के प्रति अक्षय की इस उक्ति में मन्त्रा के गुणा का वर्णन दक्षिण—'इंद्र तुम पुरुष होकर इतना कातर होते हो। मनुष्या के विषय में कसो भी चिन्ता करना अपना कामजोरी है। वह दवा है दससे भी अमानक कष्ट के लिये नहीं। तुम्हारे लिए इंद्र। मैंने मनुष्या का तज उसकी दृढ़ता ली है। विवाह क दिन का वह साहस मैं कभी न भूल सकूँगा नाह। मानुष होता है वह श्राप अष्ट अवस्था है कोई। वह कलिपुत्र की दूसरी सावित्री है इंद्र।'।

'मनुष्या में वर्तमान समाज की पारिवारिक समस्याओं का विविधतापूर्ण चित्रण हुआ है। विभा का कटु व्यवहार, विजातीय प्रेम के मार्ग में आनवाली बाधाएँ, अक्षय के अभाव में अनमन विवाह की संभावनाएँ स्वतंत्र रूप से जीविकोपार्जन करनेवालों नारी के विषय में मिथ्या लोकापवादादि समस्याएँ ऐसी हैं जिन्होंने न केवल आकाश के प्रति सखिया की मजगता का प्रमाण लिया है अपितु पात्रों के चरित्र का भी यथास्थान प्रकटता प्रदान की है। लेखिका ने समकालीन सामाजिक राजनीति के स्थितियों को प्रायः सक्षम में व्यक्त किया है। यथा—(अ) हिंदू सत्ता ही भाग्यवादी रहें हैं बुद्धाजी, फिर मैं ही अपना कस हाँ सजता हूँ। (आ) अक्षययोग का काम उन दिनों ज़ारों पर था। नमक बानून तोड़ा था चुका था। दिन रात रिवॉल्यूशन ज़रूर समाज का ज़ार था।^१ मनुष्या के चरित्र में दृढ़ता कष्ट-महिष्णुता एवं शक्ति का समन्वय करके सखिया ने भारतीय नारी के गौरवपूर्ण चरित्र को मूल रूप प्रदान किया है और यही दस उप-यास का प्रमुख उद्देश्य है। वज्र और मनुष्या के प्रेम का संकट का बानावहानांतर उद्देश्य यह सिद्ध किया है कि यदि धर्म विवेक और दृढ़ता न काम लिया जाए तो समाज और परिस्थितियों की अपन अनुसूच बनाया जा सकता है।

जिस कृति की भाषा सरल-यावहारिक और मुहावरदार है तथा रोना मरना चला और प्रवाह भी और यथाचित ध्यान दिया गया है। लिंगिका ने अनभयपञ्च सूक्ति वाक्यों का बहुत ही गुंथ प्रयोग किया है। यथा— मरुस्थल में मरने हुए प्यास का जिस प्रकार जल की एक बूंद भी अमृत के समान है उसी प्रकार 'मन्त्रिणीन जायते म जरा ती सहानभूति पावना जीवन का सहस्रहा देने के समान है। अन्य मयह उत्तम नीय है कि मदला घटनात्मक किन्तु चरित्रप्रधान उपपास है। यथा की अपासा इसमें आदर्श की प्रतिष्ठा की गई है कि त मूकम भाव प्रक्रियाओं के स्थान पर वृत्तनगत स्फूर्तता के फलस्वरूप इस रचना का अभि यजना पक्ष विशेष मङ्गल नहीं बन पाया है।

(आ) क्षितिज के पार

इस उपयाम में हिंदू विधवा की पारिवारिक एवं सामाजिक दुःख का चित्रण करते हुए नायिका अनुमति के चरित्र का विशेष उत्कृष्ट प्रदान किया गया है। वह एक धनी परिवार का इकतीसवीं पत्नी थी तथा उसके पति प्रवीण भी सम्पन्न जमीनदार घराने के थे। किंतु सब दिन होते न एक समान की चरित्रावधारत हुए चित्रिका ने उसका सुख-सौभाग्य पर गीघ्र हो व्यथित करा दिया। आकस्मिक दुःघटना के कारण माता पिता की मृत्यु पति की अकाल मृत्यु के उपरान्त मास के अत्याचारों से 'यथित होकर' गहवारा जीविकापात्रन के लिए घर-घर भटकना विधवा-रम के संचालकत-मा एक धनी सेठ द्वारा उसके मतीत्व भाग के अमपन प्रयत्न जादि विपत्तियां भ-तपकर अनुमति का चरित्र स्वर्ण की भांति उज्ज्वल हो उठा है। वस्तुतः यह कृति नायिकाप्रधान है और उसी के चरित्र का आदर्श रूप में अभिव्यक्त करने के लिये समस्त घटनाओं एवं पात्रों की योजना की गई है। नायक प्रवीण की अकाल मृत्यु भी उसी कारण लिखाई गई है कि वयव्य के कण्टा में अनुमति का चारित्रिक दण्डा निम्नरे हुए रूप में प्रयत्न हो सक। घटना बाहुय को नक्षित करके 'मे घटनाप्रधान उपयाम भी कहा जा सकता था किन्तु घटनाओं के मयाजन और निवाह में अनुमति का यागदान इतना अधिक है कि इसे चरित्रप्रधान उपयाम कहना ही उपयुक्त होगा।

अनुमति का चरित्र आदर्श प्रवर्तिता का पुत्र माना गया है। मम के रूप में काय धरन समय डाक्टर निरजन जैसे मयमनील 'यथित के सम्पन्न के किंचित् चारित्रिक दुःख तथा का आभास देकर 'लिंगिका ने उसे दबी का बाना न पहिनाकर मनाविनान का उपययत निवाह किया है। समय एवं दमन द्वारा अपनी उक्त दब-रता का दमित करनेवाली अन निष्पत्ति ही आदर्श नारी है। 'उपयाम के अंत में अपनी सखी 'जजा के पुत्र की जनिजात में रक्षा करने में प्राणा की आहुति देकर उसका जीवन मानो सायक हो उठा है। अनुमति के अतिरिक्त लिंगिका ने जिन अथ पात्रों की सृष्टि की है उन्हें सत

एव असत् की श्रणियों में सहज ही निभवन किया जा सकता है। प्रवीण, चञ्चा और उसके प्रति समीर, टाकटर निरजन अनुमति के उत्तर आश्रयदाता (कृपक राधाका गुप्ता परिवार के सदस्य) आदि पात्र उदात्त गुणा से विभूषित हैं और अनु के प्रति सदय सद्व्यवहार करते हैं। दूसरी ओर अनु की सास देवर दीपक विधवा श्रम के सत्ता तक कामुक सठ आदि पात्र द्वितीय कोटि के हैं। लेखिका ने उक्त पात्रों का अनु के प्रति उनके व्यवहार के आधार पर ही उत्तर जयवा अनुदार यमित्रत्व प्रगट किया है। चरित्र चित्रण में स्वाभाविकता एवं नाट्योचित गति के लिए प्रायः लघु एवं मारामित या रससाधना की योजना की गई है। य सवाद परिमाण में अश्वि में हाने पर भी कथानक तथा पात्रों की चारित्रिक विगपताओं को मुखरित करने में सहायक सिद्ध हुए हैं। इन दृष्टि से अनुमति और ध्वजा के सवाल विद्वत् राचक एवं मार्मिक बन पड़े हैं।^१

आलोच्य कृति में एक ओर अनु की चारित्रिक दृढ़ता को विधवाओं के लिए अनुकरणीय आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है और दूसरी ओर समाज की निकृष्ट प्रवृत्तियों पर भी प्रकाश डाला गया है। लेखिका ने समकालीन देशकाल को ध्यान में रखते हुए विधवा जीवन की समस्याओं (सास की कटूकृतियाँ कामी पुरुषों से रक्षा व संयम की आवश्यकता आदि) पर विस्तारपूर्वक विचार किया है। प्रस्तुत कृति की रचना में उद्देश्य ही समस्याओं को प्रकाश में लाना है किन्तु लेखिका ने कोई क्रांतिकारी समाधान प्रस्तुत नहीं करते इस दिशा में प्रायः विद्वत्पण की प्रवृत्ति अपनाई है।

भाषा की दृष्टि से प्रस्तुत कृति में सरल साहित्यिक गन्धर्वी का स्थान दिया

अनायास ही समावेश हो गया है। उदाहरणस्वरूप उपन्यास के आरम्भ की ये पंक्तियाँ प्रष्टव्य हैं— जीयन में एन ऐसा भी समय आता है जब युवक और युवतियाँ अपनी ही भाषाओं में बहल करते हैं। जीवन उनमें लिए एन रगीन स्वप्न बन जाता है। ससार उन्हें रस की छाया और प्रेम का मनाहर संगान मानूम पड़ता है। उनका जीवन स्वप्नित और मादक हो उठता है। अनु आज इसी दशा का पटुच गई थी। 'अन्त में निष्कृत स्वरूप यह कहा जा सकता है कि लेखिका का एक ओर वर्तमान-दिन सरल वृत्तान्त का आयोजन में सफलता मिला है और दूसरी ओर भाषा गली भी पर्याप्त स्वच्छ है। अभाव है तो केवल यही कि विधवा जीवन की समस्याओं का नारा जागरण के नवीन आ गलन की पृष्ठभूमि में ध्वनि नहीं किया गया है।

४ श्रीमता सरिता रानी

श्रीमती सरिता रानी ने नीला' गायक रहस्य रोमांचपूर्ण उपन्यास की रचना

१ देखिये शिक्ति के पार पृष्ठ ४६ ७६ ८० ८६ ८८

२ शिक्ति के पार पृष्ठ १

की है जिसमें चिकित्सा तंत्र के विनाशकारी वनानिक आदिप्रकारों का उल्लेख किया गया है। कथानक इस प्रकार है—नीला को अपने अभिभावक साता जीवाचन्द का आना मर चुका न होने पर भी अपनी दुःखता का उपचार कराने के लिए डॉक्टर बोस के मोरादा गे स्थित आरोग्य सदन में जाना पड़ा। वस्तुतः डॉक्टर बोस का आरोग्य-सदन रहस्यपूर्ण पापा (हेला रोमियो को पापन बनाना आदि) का केन्द्र था और जीवाचन्द ने डॉक्टर बोस को रिजल्ट देकर नीला की वहाँ पापन होने के लिए दो अनायास वयाकि वह उसका सत्य सम्पत्ति हूष चुकाया। साता जी का उक्त मनोरथ सफल न हो सका क्योंकि नीला के प्रथम विनोद न (जिससे नीला का माराबागी आते समय गाड़ी में परिचय हुआ था) अपने कौशल एवं युक्ति से आरोग्य सदन के सब अंगरक्षकों का ध्यान प्राप्त करके डॉक्टर बोस उनके सहकारियों एवं साता दीवानचन्द को 'यायालय' में उचित दण्ड दिलवा दिया। अतः नीला और विनोद का सामाजिक रीति से विवाह सम्पन्न हुआ।

इस उपयास का कथानक भाग त आरोग्य सदन से ही सम्बद्ध रहा है। डॉक्टर बोस द्वारा सुन्दर कृतियाँ पर वनानिक प्रयोग करके उनकी शक्ति से शोध-वर्द्धि का रसायन तयार करना अपनी नस किरण को उसके प्रयोग से अतिरिक्त शोध एवं अमर जीवन प्राप्त करने करना किमा की मल्टी होन पर आरोग्य सदन में ही उसे दफना देना आदि रहस्यपूर्ण तरिका ने कथानक में कौतूहल की सृष्टि की है किन्तु जीवन की यथाथ समस्याओं का इसमें अभाव है। सस्ती रचि के पाठक इससे तुष्ट हो सकेंगे किन्तु साहित्यिक रचि के पाठकों को इस उपयास का अध्ययन करके निराश ही होना पड़गा।

प्रस्तुत उपयास में पात्रों की चारित्रिक विपत्तियों को प्रायः स्थूल रूप में प्रकट किया गया है। डॉक्टर बोस साता दीवानचन्द नस किरण सिस्टर विलसन तथा नस मानती अज्ञेय पात्र हैं और उनके साथ भी वैसे ही क्रूर पापपूर्ण तथा स्वाधपरक हैं। सत पात्र केवल तीन हैं—डॉक्टर विनोद, डॉक्टर प्रकाश तथा नीला। प्रकाश ने असहमत होने पर भी भय तथा मानसिक दुःखता के कारण डॉक्टर बोस का साथ दिया किन्तु विनोद उनकी अपक्षा अधिक सहमी प्रतिभावान् एवं नीति-कुशल है। नीला भी स प्रकृति की कोमलहृदया युवती है किन्तु प्रस्तुत उपयास में घटनाओं के केन्द्र में मुख्यतः उसी का चरित्रत्व है। पात्रों की चारित्रिक प्रवृत्तियों के प्रकाशन की अपेक्षा लेखिका का दृष्टि मुख्यतः घटना चमत्कार की ओर रही है अतः पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व का निरूपण करने की ओर प्रायः उनका ध्यान नहीं गया। उन्होंने चरित्र चित्रण के लिए सवाद योजना की ओर भी समर्पित ध्यान नहीं दिया है। इस उपयास के अधिकांश सवाद मुख्यतः कथानक से सम्बद्ध हैं अतः ऐसे कथानक का हा भावकीय रूप माना जाए तो अनुचित न होगा। फिर भी वनिपय वात्तानाथ पात्रों की चारित्रिक प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति में भी महत्त्व रखे हैं। उदाहरणार्थ विनोद की उक्तियों में सबत्र उसकी निर्भीकता और बलि-योग्य की दृष्टि है तथा डॉक्टर बोस की उक्तियों में उसकी भव्यता तथा क्रूर प्रवृत्ति

स्पष्टतः भलवता रही है।

नोना भ डाक्टर बोस व आरोग्य सदन क चातावरण का चित्रण हो लेखिका का उद्दिष्ट है अतः इसमें किसी समकालीन सामाजिक तथा राजनीतिक समस्या का उल्लेख नहीं हुआ है। भारत विभाजन से उत्पन्न 'गरणार्थी' समस्या की जोर नम किरण न एक स्तर पर सवेत किया है^१ किन्तु उसका उल्लेख आरोग्य सदन क प्रसंग में अत्यन्त गौण रूप में हुआ है। इस उपन्यास की रचना पाठक की कौतूहल वृत्ति को तृप्त करने में लिये की गई है। डाक्टर बोस व काल कारनामा की चर्चा करके सम्भवतः लेखिका यह ध्येयत करना चाहती है कि समाज क असत पात्रों द्वारा दुरुपयोग क कारण विनाश जसा वरदान भी अभिगाप सिद्ध हो सकता है।

आलोच्य उपन्यास की भाषा 'यावहारिक हिन्दी' है। लेखिका न जिम्मगारी दिनचस्पी, जाहिर मन्द ताज्जब आदि उन्नीसवीं तथा प्रविटस इबाज सिस्टर आदि अंग्रेजी व प्रचलित शब्दों का प्रचुर प्रयोग किया है। मुश्कुराहट शिर किश्म सूटका आदि शब्दों में 'स' व 'स्' का स्थान पर ख का प्रयोग अशुद्ध है और बगभाषा क प्रभाव का सूचक है। बगभाषा व प्रभावस्वरूप सरिका ने कहा-कही लिंग-वचन सम्बन्धी भूल भी का हैं। उनकी वणन शब्द सरल है किन्तु उस साहित्यिक गुणा से समृद्ध नहीं कहा जा सकता।

५ श्रीमती भारती विद्यार्थी

श्रीमती भारती विद्यार्थी और उनके पति श्री देवदूत विद्यार्थी ने हार या जीत और पाँच घंटे कीपक नाम उपन्यासों का समुक्त रूप से रचना की है। इनमें से किसी भी प्रति में लेखक द्वारा न यह स्पष्ट नहीं किया कि कौन-से परिच्छेद किसने लिखे हैं फलन श्रीमती विद्यार्थी के तथा शिल्प की स्वतन्त्र रूप में विवेचना सम्भव नहीं है।

(अ) हार या जीत

यह उपन्यास की रचना प्रथमतः एक कहानी के रूप में की गई थी किन्तु बाद में २०६ पृष्ठों में तत्पू उपन्यास के रूप में पुनर्विनिर्माण कर दिया गया। इसका आधिकारिक तथा नायक दम्पति तथा नायिका सरिता की प्रेम कथा है। दम्पति सरिता का आरम्भ से ही जीवन सँतानी बनाने का अभिगाप था किन्तु सरिता उनसे प्रति उत्तरदायी होकर भी अपना सारा इबाका प्रणाम से शत्रु की तलाशान परलभ स्थिति में अभिभूत होकर आज्ञा में अधिग्राहित रहने का प्रयत्न करती थी। एक दिन वह शत्रु द्वारा प्रणय वाचना

१ देखिए नामा पृष्ठ १२०

२ नोना पृष्ठ २५६७११

४ देखिए नोना, (घ) पृष्ठ ७१५ १७ (घा) पृष्ठ १४ २७, ३६ ३६

वरने पर सरला भी अपने अत्यंत प्रेम को अभिव्यक्त कर देती है और प्रत भग की हार में भी जीत की प्रसन्नता का अनुभव करती है। परन्तु यही पर शान्ति ने अत्यंत बुगलतापूर्वक बयानक को एक नवीन मोड़ देकर प्रत को भग होना ही मान लिया है। विवाह की गति को राष्ट्र के स्वतंत्रता का ऐतन स उत्तमजित दुई सरला र जल ज्ञान पर प्रमोद के नी उसी माग का अनुसरण करत हुए पुनिस की गांी का गिकार बनता है। म मरुप कथा क माय माय कुमु बालकृष्ण ईवा सुधा प्रपुन घोष आनि पात्रो म सम्बद्ध प्रासंगिक कथाओं क कथात्मक एवं समुचित मुमुक्षुम म नी उत्तराय को सफनता मिनी है और एही कथाओं क कारण उपयास म विविधता एव रोचनता का समावेश हा सवा ह। उपयान क कथानक का मुख की चरम गामा पर पट्टचाते पट्टचाते अकस्मात र खात बना दिया गया है।

आलोच्य उपयास म वग चरित्र अधिब हैं। नायिका सरला और नायक दवेन्द्र पर त प्रतापसीन भारत के उन युवक व्यवस्था क प्रतीक हैं जो दलीन था ऐतन स उत्तमजित होकर मर मिटने को चन निकल थ। कुम की पीडा से उस बंदनामयी नारी का स्मरण हो जाता है जो पति के जीवित रहत हुए भी वधव्य को अंगीकार करने को विवग हो जाती र। दवेन्द्र क अतिरिक्त प्रपुन घोष उत्तम प्रकृति का पात्र है। बालकृष्ण अथा चारी पुरप वग का प्रतीक है। समग्र रूप स चरित्र चित्रण पर विचार करने पर ऐसा उता है कि प्रत्येक पात्र किसी अभाव स पीडित है। वस्तुतः चरित्र चित्रण की दृष्टि स उत्तराय को उपयास म पर्याप्त सफनता मिनी है। पात्रो के हंगत द्वन्द्व का मनो वानिक चित्रण अत्यंत बुगलतापूर्वक किया गया है। उपयास के पात्र सजीव हैं और उनम मन्द्य पाठक को प्रभावित करने की अपूर्व क्षमता है।

विविध पात्रो के वात्सल्य उपन्यास म नाटकीयता खाने म सहायक रहे हैं। वे सबा जनक प्रकाश के है। उपयान क प्रारम्भ म सरला और उसक पिता का देवेन्द्र विषय वात्सल्य कथानक को गति दन म सहायक है। ईवा और सरला का विचारपूर्ण वात्सल्य नारी की तत्कालीन स्थिति और उसम सुधार सम्बन्धी तथ्या पर पर्याप्त प्रभाव पानता र। कुम और दवेन्द्र तथा सरला और दवेन्द्र के भावकतापूर्ण सवाद और गवर मनान एव र द्व क त्रिटिंग सरकार की नीति सम्बन्धी राजनीतिक वात्सल्यो का नी उपयान का रोचक जनान म पर्याप्त योगदान है। सुधा और दवेन्द्र तथा माधवी अम्मा और मनान क तथपूर्ण सवाद नारी की जतीतकालीन गरिषा के परिचायक हैं। प्रपुन घोष और सुधा के वात्सल्य द्वारा करन क रमणीय प्राकृति र सोन्य रीति रियाज रहन महन वागभूषा आदि का यवन किया गया है। सवाद पात्रो के चरित्र को स्पष्ट करन म भी सहायक रह र। उदाहरणतया माधवी अम्मा को समभात हुए मेनोन

की यह उक्ति नायिका सरला के चरित्र पर प्रकाश डालती है— दस माधवी मुझे इसका पूरा विश्वास है कि सरला कोई ऐसा काम कभी नहीं करेगी जो अव्यवस्था अनुचित हो। उनका मन ऐसा बाता की तरफ जायगा ही नहीं जो अन्याय हो।^१

हार या जीत का महत्व विगत दशकाल के निरूपण की दृष्टि से है। स्वतन्त्रतापूर्व भारत का राजनीतिक स्थिति अज्ञान व दमन चरित्र तथा स्वतन्त्रता के लिए कायस के माध्यम से जीत की जनता के सामूहिक प्रयत्न का इतिहास सम्मिलित वर्णन किया गया है। प्रमुख तथा सुधा के संवाद के माध्यम से केवल के प्राकृतिक साम्य उसके विभिन्न वर्गों के सामाजिक जीवन तथा उनके पक्ष-पक्ष की रीति रिवाज (घर के अहाते में ही मृतक का श्राद्ध-संस्कार करना, भाई तथा बहन की सन्तान के मध्य विवाह-सम्बन्ध आदि) का सरस एवं सजाव चित्रण किया गया है। प्रासंगिक रूप से ईसाई धर्म का भी कुछ विस्तृत वर्णन हुआ है। इसी द्वारा 'मिस्टर ब्रुड' ग्रहण करने का दृश्य-वर्णन अत्यन्त मार्मिक है। इस रचना का उद्देश्य युग की मांग के अनुरूप भारत में राष्ट्रीयता की भावना का प्रचार करना है। डॉ० राय राय के अनुसार 'हिन्दी का राष्ट्रभाषा बनाने' लिए यह आवश्यक है कि भारत के विभिन्न प्रांतों के जीवन का साहित्य में उतारा जाय और श्री विद्यार्थी तथा श्रीमती भारती ने यह कार्य अत्यन्त सफलतापूर्वक किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा राजनीतिक समस्याओं का चित्रण के पदचातु उनका समाधान के सन्नेत तथा प्रेरणा-स्रोत भी विद्यमान हैं। जीवन के किसी भी क्षण में नद भाव का निराकरण, पुरुष और स्त्री धनी और निधन सबके समान अधिकार भाषा का वर्णन विभिन्न स्थिति पर किया गया है।^२ राष्ट्रीय एकता के लिए जातिगत अथवा धर्मगत नद भाव की विसृति अनिवार्य है इस तथ्य का पण्डित प्रफुल्ल पाप तथा सुधा के विवाह-सम्बन्ध द्वारा का गइ है। अन्त में यह उल्लेखनीय है कि इस उपन्यास की भाषा गरीब प्रवाहपूर्ण प्रभावोत्पाक तथा विविध विषयों की अनिव्यञ्जना में समर्थ है। वस्तुतः राष्ट्रीय एकता के समर्थन करनेवाले इस उपन्यास में भाषा गरीब भी गरीब प्रयुक्त का गइ है, जिसमें किमा भी जिनामु पाठन का इतिहास का अनुभव न हो।

(आ) पाँच बेंत

पाँच बेंत एक आधुनिक उपन्यास है जिसमें मुख्य-चरित्र अक्षिण भारत के राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन पर विस्तृत प्रकाश डाला है। इस कृति का पापक कथा

१ हार या जीत पृष्ठ ६४

२ हार या जीत भूमिका, पृष्ठ ४

३ अक्षिण हार या जीत, पृष्ठ ६५

नव की प्रमुख घटनाओं से विगप सम्बद्ध नहीं है इसका महत्त्व नवत शतना है कि प्रारम्भ म हडमास्टर से पाच बेंत खानेवाला नायक चन्द्रकांत अत एव सफल समाज मवक और हिन्दी प्रचारक बनता है। यह उपयाम देगवातप्रधान है इसलिए इसम कमानन नगण्य प्राय ही है। मध्यवर्गीय परिवार स सम्बन्धित नायक चन्द्रकान्त व विद्यार्थी जीवन एव हिन्दी प्रचारक रूप की अभिव्यक्ति ही उपयाम की कुन बयावस्तु है। चन्द्रकान्त पितृहीन निधन तथा प्रातिकारी विचारावाता युवक है जो स्कूल व हैम्मा स्तर क अस्थाचारा को सहन न कर पाने व कारण अपनी ज मभूमि का त्याग कर दता है और फिर अपना अधिकांश जीवन दक्षिण व विभिन्न भागा मधूमत हुए यतीत करता है। नौसरी व निर एस भ्रमण कान म उसम कस्त्य के साथ साथ मरम्बनी नयानी रजनी आदि विविध नारी पात्रा क सम्पर्क म आन पर भावना की अन्तर ना मितनी है वरन्त मुष्पतया कस्त्य भाव ही प्रधान रहा है जो उचित ही है।

इस उपन्यास म चरित्र चित्रण की आर नेटक्य न विगप ध्यान नहा दिया है। दक्षिण भारत की अधिकाधिक सामाजिक विविधताओं का दिग्गान कराने व लिए ही अनेक पात्रा की सृष्टि की गई है। परन्तु पुरुष पात्रा म चन्द्रकान्त और रजनी पात्रा म रजनी व अतिरिक्त अन्य किसी पात्र का चरित्र अधिक मखर नहीं हा पाया है। चन्द्रकान्त का चरित्र उपन्यास म प्रमुख है। उपन्यास क मध्य तक बहु कुठाग्रस्त कस्त्य प्रमा अधिक है दय्यानी के विवाह ममाधार के पदघात तो उसका भ्रम हृदय कस्त्य पथ से ना विचलित हाना चाहता है कि तु स्नेहमयी भावुक रजनी उसका वेदना म सहयोग दता हुई उस ऊचा उठने की प्रेरणा ाती है। अन्य पात्रा म चन्द्रकांत की माँ एन्प्रिस्त परम्परावादी धार्मिक और स्नेहीता है। वानविधवा दय्यानी प्रारम्भ म ममठ देग सेविका व रूप म चित्रित है परन्तु कुछ समय पश्चात उसका पनविवाह हो जाता है। सरस्वती तत्कालीन दासविकाओं का प्रतिनिधित्व करनेवाली वय चरित्र है। पुरुष पात्रा म चन्द्रकांत और उसके सहपाठिया के अतिरिक्त चन्द्रकांत क भाई सूनकान्त और रजनी व भाई माधवन का वणन प्रमगवण ही किया गया है।

जहां तक वयोपकथन का प्रश्न है उस उपन्यास म उनका अभाव ही कहा जा सकता है। वस्तुतः अधलविगप की सांस्कृतिक एव सामाजिक स्थिति का चित्रण इस उपन्यास म प्रमुख रहा है। दक्षिण भारत क विभिन्न प्रांता—मल्लम कोचीन आदि—की निन्नरूपा मस्त्रुति पर पयाप्त प्रकाश डाला गया है। यहाँ की स्त्रियाँ नौ मख नन्धी साड़ी पहनती हैं पण प्रया का अभाव हे माथ की बिंदी तथा गन का मगनसूत्र सोभाय्य चिह्न हैं विधवाएँ अनिवायत वत वस्त्र पहनती हैं और सिर मन्वाकर रगती हैं कुमारी कपाए पाधरी और चानो पहनती हैं—आदि बातों का उत्तर राखक गानो म किया गया है। इस प्रांत की मस्त्रुति भी विगपता निर है। प्रत्येक घर क बाहर साफ स्थान पर अल्पना की जाती है तथा स्वच्छता का विगप महत्त्व दिया जाता है।^१ नोजन

वा दृष्टि में काफी यहाँ का मुख्य पक्ष है और चावण मुख्य राध पदार्थ जिस बल के पक्ष पर रखकर गाय जाता है। छुआछूत को बहुत माना जाता है। विवाह की विधि भी दक्षिण में भिन्न है।^१ इस प्रकार सामाजिक दृष्टि से दक्षिण का जीवन सादा तथा परम्परावादी अधिक है। धार्मिक दृष्टि से समाज दो वर्गों में विभाजित है—ब्राह्मण तथा अब्राह्मण अथवा गूढ़। ब्राह्मण वर्ग भी स्मार्त और चण्णव दो उपवर्गों में विभक्त है। स्मार्त शिव का तथा चण्णव विष्णु की पूजा करते हैं।^२ जायिक दृष्टि से दक्षिण का जीवन अधिक सम्पन्न नहीं है। दक्षिण के राजनीतिक वातावरण को प्रस्तुत करने में लखन-द्वय का सर्वाधिक सफलता मिली है। प्रथम महायुद्ध से नवर स्वतन्त्रता प्राप्ति तक के राजनीतिक वातावरण को सजीव रूप में चित्रित किया गया है। कांग्रेस की स्वतन्त्रता के लिए प्राणपण से जुटी थी। गांधी जी अवाहरना नहरू, डा० राजेन्द्रप्रसाद आदि नेताओं के विभिन्न भागों में घूम घूमकर अज्ञात किरुद्ध दशवासिया की जागत करने का यथामुम्भव प्रयत्न कर रहे थे। जलियानवाला बाग की घटना द्वितीय महायुद्ध मन् १९४२ का असहयोग आन्दोलन मुसलमानों द्वारा पाकिस्तान की माँग आदि घटनाओं का विवेचन करके लखन-द्वय ने राजनीतिक वातावरण का सफलतापूर्वक चित्रित किया है। उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत के निवासियों को अधिकाधिक निकट लाने के लिए कांग्रेस द्वारा निर्मित समिति के विभिन्न प्रचारकों को दक्षिण के विभिन्न भागों में प्रचार के लिए नियुक्त किया था। उपग्राम का नायक चन्द्रका १ भी इसी प्रकार का एक प्रचारक था। वसु गिषा ३ में दक्षिण का स्वर ऊँचा था तथा स्त्रियों का भी गीत गाँदा जाती थी। उपयुक्त सम्पूर्ण विवरण से स्पष्ट है कि इस उपग्राम में गान की अभिव्यक्ति के प्रति जागरूकता प्रकट की गई है।

दक्षिण भारत के राजनीतिक सामाजिक जायिक तथा शक्ति वातावरण का प्रस्तुत करना भी लखन-द्वय का मुख्य उद्देश्य है। यद्यपि उत्तर भारत के वातावरण को भी नुननामन शक्ति में व्यक्त करने का प्रयत्न किया गया है तथापि इन उनका उद्देश्य नहीं माना जा सकता दक्षिण के जीवन का स्पष्ट करने के लिए भी उनका समायोजन किया गया है। उपग्राम की भाषा बोलचाल का सामान्य भाषा होने पर भी विषयानुरूप है। शिवरणात्मक स्थला पर भाषा भी वसा ही शिवरणात्मक है^३ तथा भावात्मक स्थला पर भाषा स्वभावतः भावात्मक एवं अरुद्ध हो गई है। हत्याद्वार गायक परिच्छेद तथा पृष्ठतया भावात्मक भाषा में रचित है। भाषा परिवर्तन का लक्षित करने यह परिच्छेद भारतीय विद्यार्थी द्वारा लिखित प्रतीत होता है। गाना का दृष्टि से सामान्य शिवरणात्मक तथा विवेचनात्मक गाना में सम्पूर्ण उपग्राम निरूपा गया है। परन्तु पक्षी में एकरमता नहीं है विषय परिवर्तन के साथ गानों भी परिवर्तित हो गई

है। नापणों में भाषण गति रजनी तथा च द्रवांत त पत्र अरुहार व प्रमय म पत्र गनी तथा अनेक अंकृत गनी का प्रयोग किया गया है। उस्तुत उपन्यास का रोचकता और सरसता का मस्त नय गली की विविधता का ही दिया जा सकता है।

६ सुश्री सुपमा भाटी

सुपमा जी ने गट कोपर तथा ममता गोपक सामाजिक उपन्यासों की रचना की है। इनमें नारी जीवन की समस्याओं के विविधतापूर्ण चित्रण पर बल दिया गया है जिसके लिए आदर्शों में यथायथ की गनी अपनाई गई है। इस दृष्टि में ममता तथा उपन्यास होने के कारण अधिक सफल है क्योंकि गट कोपर में ललितिका की दृष्टि घटना वास्तव्य एवं व्यक्ति वचित्र्य में उलझकर रह गई है। इस उपन्यास में वास्तव और प्रेम का चित्रण करते हुए प्रेम का दीपजीवी और सुखदायी माना गया है। उपन्यास के कथानक की एक स्कन व गट कोपर दीन दादा न पूजा दाप्ति यामिनी अनजित आदि छात्र छात्राओं के समझ आत्मकथा होने पर भी जयपुर की गनी में प्रस्तुत किया है। कथानक की प्रकरणों में विभक्त है तथा कथानायक दवेन्द्र (दीनू दादा) के जीवन में मध्यम मुख्य कथा के अतिरिक्त बीच बीच में उक्त छात्र छात्राओं के सवालों को भी स्थान दिया गया है। कथानक के प्रस्तुताकरण की यह गली नवीन तो है किन्तु ललिका को इस बाधित सम्भारता के साथ प्रस्तुत करने में सफलता नहीं मिली है।

इस उपन्यास में चारित्रिक विविधताओं के निरूपण का प्राथमिकता दी गई है किंतु घटना विस्तार के मोह की भी पर्याप्त सीमा तक वक्षित किया जा सकता है। दवेन्द्र और नयना का प्रेम नारज द्वारा छलपूर्वक दवेन्द्र को जल भिजवाकर विवाह नयना में विवाह कर देना जल से लौटने पर निराश दवेन्द्र द्वारा मद्यपान और दम्यागमन चरित्र नारज की उपमा के फलस्वरूप नयना द्वारा दवेन्द्र से मिलन की अभिलाषा में व्यावृत्ति अपनाता अतः नयना की मनोभिलाषा का पूरा होना और दवेन्द्र का स्नेह पाकर परलोकगामिनी होना आदि घटनाओं को मुख्य रूप में चित्रित करते हुए ललिका ने उपन्यास में जनक गीण घटनाओं को भी स्थान दिया है। जचना भारती और पुनर्जन का अपनी वास्तव्य पूर्ति का साधन बनानेवाला नारज ऐसी घटनाओं का कर्ता रहा है। ललिका का दृष्टिकोण आदर्शवादी है किन्तु यथायथ का चित्र प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने हत्या दुराचार व्यावृत्ति आदि की अनेक चर्चा की है और इनमें से मध्यम व्यावृत्ति का उल्लेख किया है। सामान्यतः ललिकाजी ने इस समस्या पर विचार नहीं किया है किन्तु सुपमा भाटी ने दम्यागमन के वातावरण और दुराचारियों की मनोवृत्तियों का सफल चित्रण किया है जिसमें उनकी अभ्युपगमनी मनोवृत्ति की दन कहा जायगा क्योंकि हमें काटि के दुराचारियों के स्वभाव निरीक्षण के अवसर उनके लिए निश्चय ही विरल रहेंगे।

आचार्य दृष्टि में चरित्र चित्रण पर सर्वाधिक बल दिया गया है किन्तु ललिका

ने चरित्र की सज्जि न करके इस कोटि के अन्य उपन्यासों अथवा फिमा में सामान्यतः चर्चित पात्रों का पुनराख्यान मात्र किया है। दबदब भावुक जादूवादी युवक है जो परिस्थितियों के संपात से उग्र वयाधवात् वनन की चेष्टा करने पर अपनी मूल प्रवृत्तियों का सबका त्याग न कर सका। उसके चरित्र के माध्यम से लेखिका ने संभवतः यह दिखाना चाहा है कि नारी ही पुष्प की शक्ति है। फिर भी दबदब के मन की हीन प्रणियाँ और उस पाने के लिए नयना द्वारा अथः उपाय न अपनाकर बस वनन के विषय में एकमत नही हुआ जा सकता। लेखिका ने पात्रों को प्रायः स्वभाव दुर्बल और परिस्थिति प्रताडित रखा है। दबदब नयना और आरती ने इस शिष्टा में किंचित साहस का परिचय अवश्य दिया है किन्तु वह नगण्य है। लेखिका ने मुख्य पात्रों के मनाविकास की विविध चरणा में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है, किन्तु उपन्यास में पात्रों की बहुलता होने के कारण ये इस शिष्टा में सफल नहीं हो पाई हैं। तथापि इस उपन्यास में चरित्र चित्रण की दृष्टि से दो बातें ऐसी हैं, जो नुरत ध्यान आकृष्ट करती हैं—(अ) लेखिका ने सभी पात्रों के जीवन में सघट्ट दुःख अथवा परिस्थितिसंभूत जयमनस्कता का स्थान दिया है। सुख के महज क्षणों की दीप्ति सबके लिए विरत रही है। (आ) बसन्तगृह में रामचन्द्र पात्रों (अमीर बानू अगम जारा जीवन दबदब, इमाम खाँ आदि) के मनोभावों का चित्रण सामान्य सामाजिक पात्रों की अपेक्षा अधिक कुशलता से किया गया है।

'गडबोपर' में घटनाओं के वर्णन अथवा विवरण की अपेक्षा कथापकथन को प्राथमिकता दी गई है किन्तु सवात्ता में संक्षिप्तता का ध्यान रखने पर भी लेखिका ने कहा नहीं अनावश्यक विस्तार की प्रवृत्ति का परिचय दिया है। इस स्थिति पर वे प्रायः सफल नहीं हो पाई हैं क्योंकि उन्होंने सवात्ता में अनुभव अथवा तथ्य का जतन प्रवाह न रखकर उनमें किसी विविष्ट प्रसंग अथवा पात्रों के वर्णनात्मक गला में उल्लेख किया है। बड़े, बसा प्रयोग और पात्रों में विविधता के फलस्वरूप प्रस्तुत कृति के सवाद भी यथार्थ विवक्षित है। उन पर एकरसता का आपराध नहीं किया जा सकता। लेखिका ने सवात्ता को पात्रों के वैयक्तिक सामाजिक और मातृमनिक स्तर में अनुकूल रखने की ओर भी यथाचित ध्यान दिया है। फलतः गंभीरता स्वाभाविकता मार्मिकता आदि गुण अधिक मिलवाते हैं। महज प्राप्ति हैं। उदाहरणार्थ नयना और अमीर बानू का मनोरमक सवात्ता देखिए—

नयना ने महज फटाकर कहा— मगर यह तुमसे किसने कहा कि वो निहायत गुणगूरत है ?

उत्ताने इमान कहा रहे थे। बताऊँ वह क्या है ? मुना है शरीर मोटा बदन नागा रा बहुत काया शक्ति बड़ बड़ और मन्त्र जातम्हें बन्त पसन् आया। और मुत में एमा मन्त्र पसन्तो है कि चबन्ब का जो मात दन्। उग्र है कराब पचपन् को मार

दिन है सोलह वष के पटल की तरह का। और सबसे बाबिल तारीफ बात यह है कि एक आँख से काना और भूख बना बनाद भर सम्बन्धी है।^१

आलोच्य कृति में जिन समकालीन सामाजिक समस्याओं का अपरा दुराचारा की चर्चा की गई है उनमें से प्रमुख हैं—बलात्कार हत्या यमिचार ब्यावृत्ति। इनमें से प्रथम तीन का सम्बन्ध नीरज से है वह पुनर्पुनः प्रतिबन्ध प्रयोग करता है माना कि तब उसकी हत्या कर देता है और आरती तथा पुनर्पुनः प्रति व्यभिचार का शोषी है। लेखिका ने इन प्रसंगा की एकाधिक बार आवृत्ति की है किन्तु इनकी अपरा ब्यावृत्ति जीवन का वर्णन करने में वे दृग्गान के अधिक निकट रही हैं। ब्यावृत्ति का साक्षात्करण का उन्होंने ऐसा सजीव वर्णन किया है कि उसकी मौनिकता का प्रियम भी गन्ना नहीं हो पाती और लेखिका की सफलता पर आश्चर्य भी होता है। तथापि यह कहना अप्राप्त्योगिक न होगा कि उपयुक्त प्रसंगा में लेखिका ने कही कही मर्यादा का त्याग करके जिन अदनीत परिस्थिति चित्रा को मूल किया है वह हिन्दी उपन्यास लेखिकाओं की गौरवपूर्ण परम्परा के विरुद्ध है। नीरज द्वारा बलबुल का गोल भग्न करने और अमीर बानू द्वारा दवेन्द्र के प्रति आत्मसमर्पण करने का दृश्य ऐसे ही स्थूल चित्र है।

प्रस्तुत उपन्यास का लक्ष्य सामाजिक दुराचारा की नष्टना करत हुए समाचार की महिमा को प्रकट करना है। इसके लिये उन्होंने उग्र यथार्थवादी शैली अपनाया है। उनके दृष्टिकोण को आत्मगोभुष भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि उपन्यास का फलानाम में यथार्थ का पोषण न होने पर भी पात्रों की आकस्मिक मरुत्तु अथवा निराशा का ऐसा जान है जिस आत्म मानने में स्वभावतः सकोच होता है। दवेन्द्र की जीवन रेखा को सरलता से चक्रता अतिवृत्तता और मरल साधुता की ओर जिस दम से गतिमान रखा गया है उसमें अनेक प्रश्नचिह्नों के लिए अवकाश है। नारी लेखिकाओं की कृतियाँ में नारी जीवन का जीवात्य का जो सृष्टि समावेश रहता है उसका भी इस कृति में अभाव है। यद्यपि लेखिका ने प्रायः सभी स्त्री पात्रों को गरिमा का बाना पहनाने की यत्नकित् चष्टा की है किन्तु वासना लोभ ईर्ष्या आदि दुष्गुण उनसे चरित्र पर पस प्रकार हावी रह रहे हैं कि उनका प्रति साधारणीकरण की प्रक्रिया मध्यम में रुकता हो जाता है। फिर भी उद्देश्य की दृष्टि से इस उपन्यास को प्रमत्त के सेवासम्पन्न की काटि में रखा जा सकता है क्योंकि इसमें वस्यवृत्ति और तत्त्वम्बद्ध दण्डों का विरुद्ध सजग सदेव विद्यमान है।

मुद्रा मुपमा भाटीक उपन्यास का सबसे दबन पक्ष यह है कि उन्होंने अभिव्यजना सीधव की ओर यथाचित ध्यान नहीं दिया। नायिका पात्रानुकूल रखने में तो उन्हें सफलता मिली है किन्तु उद्धृष्ट गन्ना का प्रति उनका माह्वत्तना प्रबन्ध है कि उसका

१ गेट कीपर पृष्ठ २६८-२६९

२ देखिए गेट कीपर पृष्ठ २२७-२२८ ३०८ ३०९

सम्पन्न अनुमोदन नहा किया जा सकता। शरीर जहृष्यन् मुत्ताविव आदि गंगा क प्रयाग से भाया म ध्यावद्धारिका लान क प्रयत्न की स्वभावतः सराहना की जानी चाहिय किन्तु हिन्दी क प्रचलित गंगा की तलना म इसी काटि क गंगा को प्रमुखता देना चिन्त्य है। उक्त गंगा क प्रति ललितवा क मन म इतना आग्रह रहा है नि जहाँ उहाने मुक्ता क प्रयोग म प्रायः गाय सनी रखी है वहाँ उहाने 'वो (वट व) का हिन्दाकरण करने की आवश्यकता भी नहीं समझा है। हन्त वणों और चन्द्रवि दु के यथोचित प्रयाग क प्रति भी व जमावधान रही है। धार्मिक अंगुडियाँ भी जिनम से अधिकांश मण सम्बन्धी हैं और कुछ भूमें' (भीह) जती हैं इन उपयोग म मन्त्र उपलब्ध हैं।

गट बापर क जनघोषन क जन नरयह धारणा निम्न नहागी कि यह उपयोग सन्धा सामा य काटि का है। इसकी एक मुख्य असंगति यह भी है कि उपयोग क गीपक का उसक कलवर से किंचित सम्बन्ध नहीं है जब प्रारम्भ म यह उल्लेखमात्र है कि अपने उत्तरवर्ती जीवन म दवेन्द्र एक विद्यालय का गटकीपर बन गया था। हिन्दी रचि गाय क विकास प्रम क प्रारम्भिक चरण म इस कृति को गौरव मिल सकता था किन्तु उत्पन्न कान क उपयोग विभव म इस काटि को निमित्त रचनात्रा की सराहना नहीं का जा सकता।

(आ) ममता

मुथी सुपमा भाटी ने 'ममता गीपक' उपन्यास की रचना १२४ पृष्ठा और १० परिच्छेदों म की है। इसम ललितका न घटना बाहुल्य का आशय उकर नायक नायिका के प्रेम, विरह एवं पुनर्मिलन की नया अंकित की है आर मयोग तथा परिस्थितियाँ क विविधपक्षा पात प्रतिपादों द्वारा कथानक को रोचक बनाने का प्रयास किया है। पञ्च और शशि (नायक और नायिका) एक ही कलज म पड़त य। परस्पर गान सम्भा पण से मोना म प्रीति भावना का विकास हुआ। अवध ग नामक जन एक ईर्ष्या दु सहा पाटी न शशि क मन म पञ्च क धारिणिक पतन का विधास जमानर रम म रिम घोर निया फलत दोना विभग हो गय। एक दुषटना म मूर्च्छित पञ्च को मयोगवग शशि की विधवा माता अपने पर उठा लाई। व उस पाँ लकर अपने मन यूवा पुत्र का जमाव पूण करना चाहती थी किन्तु उनक दुभाग्य से वह शशि का पुत्र प्रसी निकला। पञ्च ने अवध ग द्वारा भ्रष्ट की गई शशि क समस्त पूव अपराधों का उत्तर जित्त म धमा कर निया और यान म जानी विवाह मूत्र म बध गय। धारणा (शशि का माता) न पञ्च क स्वान पर उमा मित्र हन्त का मो न निया और पञ्च का जित्त पञ्च ही माता मरने समय अपनी नाबी पुत्रवतू मनानीत कर गई था। हमत का नाबी पना बना ही गई।

आत्मिक कथानक म पञ्च और शशि क अतिरिक्त हम्पन्न गतना धारदा

पात किया है। लोकतन्त्र की स्थापना से भारत में मतदान का अधिकार सार्वजनिक हो गया है, किन्तु व्यावहारिक दृष्टि से यह अधिकार कितना निरर्थक है इस जालाच्य कति न नायक रामसाहब महारबद के चरित्र द्वारा भलीभाँति व्यक्त किया गया है। व्यक्ति पारो एक दुराचारी होत हुए भी वे स्वपूज्य हैं, क्योंकि वे सफ़्त व्यापारी हैं। चुनाव में भाग लेने पर उन्होंने प्रतिवशी का परास्त करने के लिए मस्त्रिा करके उन, उन प्रपच व्यभिचार आदि मभा हवकण्य का प्रयोग किया और अपने सफ़्टरी का महापता से मतगणता का धन द्वारा का न करके विजय प्राप्त का। मदानिक रूप में मकल प्रतीत होनेवाला मतदान का स्वतन्त्रता व्यावहारिक रूप में कितना मन्वर है इस लक्षिका में सफलतापूर्वक चित्रित किया है। इसके लिए उन्होंने उप-याम में जिन पात्रों का ध्यान दिया है उनके सब धन जीवन की माना पान और कर मन्वी है। रामसाहब महारबद और उनके सत्र दरा भल्ला साहब तो पूर पाथ हैं ही, रामनारायण जस काप्रम के प्रसिद्ध कायकर्ता भा अपना उल्लू सीधा करने के नियम जनता का धोखा देते हैं। सागलिस्य नेना हा बाहू कम्युनिस्ट, धन का जादू मन्वी पर चलता है और जपत हिता का मन्वी हुण य दल के हिता की बिता बहुत कम करते हैं। परिस्थिति की विपमता स्वतन्त्र पत्रकार विमर्शभरनाम की आत्मा का भा धन के नियम बिना ज्ञान का साधित करता है। उनका गहकारी रामप्रकाश आत्मा की पुकार को जनमूनी नहीं करता तो उस आत्मघात का आशय बना पड़ता है। साधनाकुज के सदस्या की नितरजता का धनन गस्त समय लक्षिका में जिन अन्तरीय प्रसंगों का व्योरा दिया है उनमें अनौचित्य स्पष्ट भल्लना है। इस दृष्टि से धीमती बना का व्यभिचारी वास्तव जतिमयाधवादी धनन की सराहना नहीं का जा सकती।'

पात्रों के व्यक्तित्व के अनुकूल लक्षिका में उनकी उक्तिधाम में भी छत-कस्त तथा ह्यकण्ठा का प्रमखता दी है फगत उप-याम में सहज सवागों की जप ता तकयुक्त कथा पत्रमन की प्रचुरता है। रामसाहब तथा रामनारायण के सवाग और मोगलिस्य नेना गिरिजाकुमार तथा रामनारायण के वास्तोलाप इनो प्रकार के हैं। उनमें रामसाहब और गिरिजाकुमार द्वारा काप्रम की शायसी तथा सफ़्टपूण नाति की व्यग्रपूण निम्न कराइ गद है।' वस्तुतः एा प्रमगा का चित्रण करत समय रेखिना के मन में लक्षण पुवायह रहा है। व्यभिचारी या और व्यभिज्ञान वगैरे जा छिद्र उन्होंने लिखा है वे यथाय हा मन्वी है चिन्तन कवर गुरूपना का ही उद्यम रखता यायमगत नगा माना जा मन्वी। उच्च वर्गीय गनाय के धणित जीवन का चित्रण करत समय यदि उन्होंने जतिमजता और अमानता का जाधय न लिया होता तो वे अपने उद्दिष्ट का निर्वचन हा जतिम प्रमान पूरा डग म ना सकती था। नासारिक यथाय का जन्म एवं जगानन रूप में प्रमन्त्र करा

वाल साहित्य से जीवनमूल की प्रेरणा की जाणा करना व्यर्थ है। ललित न गाम्भ्यानी दल तथा रुस के प्रति विगप सहानुभूति प्रकट की है ' जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उद्दान समाज की भाँति राजनीति की भी अपन दग स व्याख्या की है।

मन्थार की भाषा में यावहारिकता और मुहावरा की सजीवता व अतिरिक्त यग्य गली की प्राणवत्ता भी सबन उपनय है। अभिजात वग भी जीवनदारा और काग्रम क सिद्धांता का 'रसर लेखिका न अनन' ममस्पर्शी यग्य प्रस्तुत किया है। उग्य हरणस्वरूप रायसाहब मेहरचंद की आय वद्धि और आय कर का यह विवरण दिया—

गत तीन सान में एक एक करके चीज बढ़ी और रायसाहब का व्यापार का विस्तार हुआ। महायुद्ध बीच में जा जाने से उनके व्यापार में चार चीजें गग्य थीं। और इन तीनों प्रकार बढ़ गया था जम सीने हुई जमीन पर उचित आधार पाकर दीमक बढ़ती है। नम यह न समझा जाय कि रायसाहब उसी अनुपात से आय कर भी अधिक दे रहे थे। वह दूसरी बात है। ' यग्य की सजीवता के अतिरिक्त यहाँ दीमक की उपमा भी मौलिक रूप में दी गई है और ये दोनों विरोधताएँ उपन्यास में जायत व्याप्त हैं।

उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रस्तुत उपन्यास की रचना प्रगतिवादी धारा के अंतर्गत हुई है। लेखिका ने पूँजीपतियों के प्रति असन्तोष का भाव रखत हुए उनके दोषों की गणना में अमहिष्णुता का परिचय दिया है। इसी प्रकार उनके वग की उपभोगवादी श्रृंगारिक प्रवृत्ति का भी मनोमोगपूवक चित्रण किया गया है। यदि श्रीमती गुप्त इन दोनों अतिवादाँ से मुक्त रही होती तो उनकी अभिव्यजना में अपक्षाकृत प्रौढता आ सकती थी।

८ सुग्री दशना

सुग्री दशना ने १९११ पृष्ठों में चाय का पानी पीपक सामाजिक उपन्यास की रचना की है जिसमें योगेद्र और सुग्रीवा व परस्पर आकषण प्रेम तथा विवाह की कथा प्रकट है। कथानक का प्रारम्भ अत्यन्त नाटकीय रीति से हुआ है—योगेद्र अपने लिये चाय बनाकर चाय का फानतू पानी द्वारा खोलकर बाहर फकता है तो असावधानी से वह उस माग से जा रही सुग्रीवा की साड़ी पर गिर पड़ता है। सुग्रीवा खरीखोटी सुनाती है योगेद्र क्षमा याचना करता है और यही न नायिका व हृदय में नायक के प्रति प्रेम का मूलपात होता है। 'सक उपरान्त लेखिका ने नायक-नायिका के माता पिता तथा अन्य सम्बन्धियों का विस्तार में परिचय दिया है और उनके गुणा का सप्रमाण उल्लेख करत हुए दोनों व मध्य प्रेम व उत्तरात्तर विनास को प्रकट किया है। घटनाओं को सहज एवं मजीव रूप में विवर्णित करने की अपेक्षा लेखिका का ध्यान पात्रों के प्रशस्ति गान में

विपत्त कद्रित है, फलतः कथानक गिधित है और पात्र कठमुतलिया बनकर रह गए हैं।

योगेन्द्र की माता इन्द्रा की सेविका ने सर्वाधिक आदर नारी के रूप में प्रस्तुत किया है जिन्होंने पति गृह में प्रवेश करत ही अपना बुद्धि को गान से पति को कुसंगति और कु-यमना से मुक्त कर दिया और उनकी जमींदारी की पतना-मख-दीवारा को अपनी योज-ना-ना का महाराज कर सुदृढ़ बना दिया। उनका पुत्र होने का नाम योगेन्द्र तो मानो गुणा गार हो है—परिधम विद्या बुद्धि आत्म बल रूप आण्य विश्व के समस्त सम्भव गुण मानो उसी में साकार हो गए हैं। उधर सुगोता भी सौन्दर्य, बुद्धि कौशल सेवा निष्ठा आरमताप आदि गुणा की प्रतिमूर्ति है। अय प्रमुख पात्रों में भी मात्र गुणा का स्याग रहा है पापा का चचा नहीं की गई। योगेन्द्र के परिवार का बड़ सबक स्वामिभक्ति में आदर है तो योगेन्द्र की धर्म-बहिर्न विमला में भ्रात स्नह की पराकाष्ठा है। सुगीता का नाभोएव आदर नाभी है तो इन्द्रा की बाल सहचरी श्रीमता जीन एक आत्म सखी होने का साथ ही योगेन्द्र की अभिभाविका भी है। कहन का तात्पर्य यह है कि लखिता ने जयन पान पात्रों को दोषों से मुक्त रखकर अनुकरणीय तो बना दिया है किन्तु साथ साथ मानवाचित स्वाभाविकता एवं मनोविज्ञान-सम्मत सहजता का भा ताक पर रख दिया है।

सुग्री दाना ने पात्रों का चरित्र मुख्यतः प्रत्यक्ष कथन द्वारा वर्णित किया है। यथा— सुगीता ने कबल बहुत नटखट और चंचल हो थी परन्तु साथ ही पढ़ने लिखने में भी तेज थी। मट्टीकुत्तान प्रथम श्रेणी में पास किया और अब भी अपना बलास में प्रथम थी और पनास की लीडर थी। हसी हर समय मुह पर नाचती रहती और चंचलता तो माना बूट बूटकर ही भरी थी। हाई कोट का जज की लड़की होकर भी मान तो उगवो छू तक न गया था और बालिज की सारी लड़कियाँ का सुशीला की सहानुभूति और सहानुता प्राप्त थी। 'कथानक में मजीवता का सचरण करने के लिए लखिता ने पात्रों को नूतन व्यापक कथन की योजना की है। सवाद प्रसंगानुकूल हैं तथा कथानक चरित्र चित्रण एवं अन्य तत्त्वों की अनिव्यक्ति में सहयोगी रहे हैं। किन्तु कथानक की भाँति यहाँ भी गिधितता का दोष व्याप्त है। इसका प्रमाण यह है कि अधिकांश सवाद अनावश्यक रूप से बहुमूल्य अवकाश ही हो गए हैं।

आलाप्य लखिता ने वही प्रत्यक्ष रूप में और कही पात्रों की उक्तिों में प्रासंगिक रूप से दण और बात सम्बन्धी तत्त्वों की चर्चा की है। उदाहरणार्थ एक स्थान पर योगेन्द्र का निराशा वा और राजा टोडरमल के वन का भूतपूर सम्बन्ध स्थापित करके मुनार्थ अन्तर विचार मूरी राजा टोडरमल आदि सम्बन्ध ऐतिहासिक पात्रों के चरित्र एवं राज्य काज का महत्त्व बयान किया गया है।' इसी प्रकार मिस बनखो (इन्द्रा)

क विवाह के प्रथम में बगान की नैन नैन की प्रथा तथा उसमें कुपरिणामों का उल्लेख हुआ है।

चाय का पानी की रचना सरल एवं प्रचलित हिन्दी में हुई है। जिनके अन्तर्गत पुनस्त्रीपर बाउट रिटर्न तजवीज प्रोग्राम आदि हैं। एवं वाक्यान्तों का प्रचुर प्रयोग इस तथ्य का प्रमाण है कि उन्होंने भाषा के परिष्कार अथवा एकस्पता की अपेक्षा उसकी स्वाभाविकता एवं सरलता का ही विगोप्य ध्यान में रखा है। किन्तु नाट्यकाल के स्थान पर जाय खल जस कतिपय अंग्रेज़ प्रयोग हिन्दी का साहित्यिक प्रवृत्ति के लिए घातक है। लेखिका की गंभीर विवरणात्मक है किन्तु उसमें नाटकीयता का भी मयाम है और इसी कारण उसमें किंचित सजीवता का संचरण हुआ है। उनका गाना का उत्तुलनीय दोष यही है कि सामान्य एवं सक्षिप्त घटनाओं को भी अत्यन्त लूट कर प्रस्तुत किया गया है फलतः उपयोग सुगठित एवं सुव्यवस्थित नहीं बन सका है। लेखिका ने समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों के अनुरूप मानवनात्मिक उपयोग की रचना न करके जिसवर्णात्मक एवं आत्मात्मक कृति को सृष्टि की है वह कथा गिल्न का दृष्टि में उन्हें विकास काल की सामान्य उपयोग लेखिकाओं की रचना में जा बँठाता है।

८ श्रीमती सुदेवा 'रश्मि'

मुन्नी सुदेवा रश्मि ने १३२ पृष्ठा एवं ३३ परिच्छेदों में विनवत एक ही रास्ता नीपक उपयोग की रचना की है जिसमें बगाल के नवाब सरफराज (नवाब मिराजद्दौला का पुत्र) के पतन एवं अनीवर्दी के उद्धार की ऐतिहासिक घटनाएँ अंकित हैं। उक्त प्रान्ति की पृष्ठभूमि में जो भी ऐतिहासिक कारण थे (सरफराज की विनाशप्रियता के कारण जनता में असंतोष का सिम जनी और उमरअली की गद्दारी सरफराज द्वारा जगत्सठ का अपमानित होना और प्रतिगोध लेनकी भावना से अपना धन दकर अलावर्दी को आनमन के लिए आमन्त्रित करना आदि) उन सबका लेखिका ने यथाप्रसंग उल्लेख किया है। एक अतिरिक्त उद्धान कतिपय गौण हतबो की कल्पना करके कथानक में रोचकता की सृष्टि की है जिनमें मुख्य रूप से जगत्सठ की पुनर्बोध रक्षा का उदाहरण उल्लेखनीय है। जब सरफराज ने उसके भौन्द्य पर मग्ध होकर अपने वजीर कामिम के द्वारा उसे पकड़ भगवाया तब उसके 'बसुर' पति तथा अन्य हिन्दू कायरों का भाँति देखते रहें। किन्तु उसका वीरत्व एवं निर्भीकता पर मग्ध होकर नवाब ने उसके गरीर को जवाब बन बिय बिना ही उसे मुक्त कर दिया। रक्षा ने पुनः जगत्सठ के घर में प्रविष्ट होना चाहा किन्तु उन्होंने उसे भ्रष्टा कहकर त्याग दिया। उस पर रक्षा ने उन्हें गाप दिया कि उनका धन मान पठाना गारा पन्दसित होगा। कालांतर में सरफराज ने गद्दारी करने के अपराध में उन्हें बाराबद कर दिया गया और तब रक्षा का अभिग्राप भी पण हुआ।

रेसा ने एक दस्यु दल की सहायता से सय सगठन कर मरफराज में प्रतिगोध लिया। जब विजय के पुत्र कुमार के जोड़खी गंगा एवं अपूर्व रणकौशल के प्रभाव से सरफराज की विजय एवं अलीवर्दी की पराजय निश्चित हो ठीक उसी समय रेखा ने दल-बल सहित आक्रमण करके मरफराज का परास्त कर पामा पलट लिया।

रत्ना आलाच्य उपयाम का मुख्य केंद्र रही है। नमिका ने उसके व्यक्तित्व में हिन्दू-वीरांगना के अनुरूप गीय निर्भीकता सतीत्व सहनशीलता तजस्विता आदि गुणों का समावेश किया है। इस प्रकार की निर्भीक तजस्विता का परिचय रामभरोसे (सरफराज का एक सामान्य पदाधिकारी) की पत्नी पावती ने दिया। जब वह सरफराज की तुष्टि या शिष्टाचार के लिए महल में लायी गई तब उसने भ्रष्ट होने के पूर्व ही अपने पक्ष में तलवार भाँकी थी। किन्तु उसका चरित्र अत्यंत तमोण है। इनके अतिरिक्त बर्खा हुसैनवान् नतबीजुवेला आदि पात्रों का भी प्रसंगानुकूल उल्लेख हुआ है। इनमें हुसैनवान् का चरित्र असाधारणतः उच्च है—कामिनी से प्रेम हुआ जाने पर उसने अपने पक्ष को त्याग कर उसी के ध्यान में तम रहना प्रारम्भ कर दिया। पुरुष पात्रों में सर्वाधिक गौरवपूर्ण चरित्र विजय (सरफराज का अग्रदूत बान् में सनापति) और उमर पुत्र कुमार का है, क्योंकि उनमें वीरता एवं निर्भीकता के अतिरिक्त कृतस्व निष्ठा भी कूट कूटकर भरी है। सरफराज का चरित्र पट्टन कासिम के सम्पर्क में रहने से कुछसेन प्रस्त तथा व्यभिचारपूर्ण था, किन्तु बान् में रेखा के चरित्र के प्रभाव से तथा विजय एवं कुमार का समर्थन से उसके चरित्र में सब नाशुध्य धुन गए। जयन्त रेखा का पति हाकर भी नायक चित्त वीरता में मूल्य है। उसके नामन ही अत्याचारी उसकी पत्नी का उठा न गया और यह कुछ न कर सका। जब वह किसी प्रकार सतीत्व रक्षा करके लौट आई तब भी वह निष्क होकर उसे ग्रहण न कर सका। कासिम उमरअली जगत्तठ आदि पात्रों को बहारी का चित्रण नमिका ने इतिहास के पट्टा के अनुरूप ही किया है।

आलोच्य दृष्टि में वपनात्मक गीतों का प्रयोग अत्यन्त विरल रूप में हुआ है मुख्य रूप से पात्रों के परस्पर सम्भाषणों द्वारा बयानक तथा अय तत्त्वा का विकास हुआ है। संगीत की उत्तमगीय विधिपताएं हैं कि व सपनाय एवं प्रसंगानुकूल हैं। उनमें पात्रों नुक्त नायनाबा का समावेश है, किन्तु नायक की दृष्टि से व प्रायः एकरूप हैं अर्थात् मुख्यमान एवं हिन्दू दोनों प्रकार के पात्र एक-दूसरे भाषा का व्यवहार करते हैं जो मुख्य रूप में तत्कालीन है। बयानक चरित्र चित्रण बान् तत्त्वा की भाँति गीतों में सम्बन्धों तथा का उल्लेख भी पात्रों के संवादात्त में हुआ है। प्रमाणस्वरूप रामभरोसे तथा उसकी पत्नी का संवाद द्रष्टव्य है—

पहले तो तम रेखा का गीत की प्रगति कर रहा हुआ था।

यह समय ही ऐसा था। स्वर्गीय वगैरह विराजुदोना न बयान की बहू-बहिया को कभी भी बुद्धि में रहा होता था। उसका आचरण विपुल था किन्तु सरफराज अपने पिता के बिल्कुल ही विपरीत गया है।

वह तो गायन की यागदोर को बन् चाटूया मूलविद्या । हाथा म छोड मिला
मिना क भून भ भून रहा है । रात दिन होनेवाला मिना न मिगी अबला का कण्ठ
मरे तो कानो क पत्नी को पाट डानगा ।^१

वस्तुत आलोच्य कृति व प्रणयन म शोमती मुग्ध रश्मि का उदय यही है
कि वगान व इतिहास म कुछ विगिष्ट पठ्ठा की उपयाग रूप म पुनरावृत्ति की जाण ।
वत विभिन्न अवसर पर विभिन्न पात्रा व मनम ममतावान दगावन स सम्बद्ध
तया का उत्तर करके उन्हान रचना क नदय का पुष्ट किया है । उपयास का एक
अय नदय राजपूत वीरा एव बारागना आ व उन्वस चरित्र को सजीवता प्रदान करना है
जिसक त्रिग रेखिका ने रेखा पावती विजय और कुमार नामक पात्र पात्रा का की सष्टि
की है । कहना न होगा कि ये दोनों नक्षत्र पायागिन रत्न हैं और रेखिका को उनकी
अभिनयवित म पर्याप्त सफलता मिली है ।

आलोच्य लेखिका ने प्रस्तुत कृति म हिन्दी क व्यावहारिक रूप का प्रयोग किया
है । अधिकान् पात्रो के सुसन्मान होने पर भी रेखिका ने उन्मूलन को आवश्यकता
म अधिक महत्त्व नहीं दिया । यह उचित भी है क्योंकि कतिपय लेखक-लेखिकायें उक्त
स्थिति मे भाषा को पात्रानुकूल बनाने की धुन म उद गतावली का ही प्रचुर प्रयोग
कर आत ह । किन्तु आलोच्य लेखिका ने हिन्दी की मूल प्रवृत्ति पर कुठाराघात नहीं
किया । उनकी भाषा महावरदार होने के कारण विशेष सजीवता सम्पन्न है ।^१ उपयास
की एक अन्य विशेषता यह है कि इसम मुख्य रूप स नाटकीय गली का प्रयोग हुआ है ।
वणनात्मक प्रसंग दत्तन विरत एव सक्षिप्त हैं कि यदि उह विलग कर दिया जाए अथवा
किचित् रूपांतर कर दिया जाए तो उपयास के स्थान पर एक नाटक दृष्टिगोचर होने
लगता । जो भी हो आलोच्य कृति की सजीवता एव उपयोगिता निर्विवाद है । लेखिका
का महत्त्व इस दृष्टि से भी है कि उन्होंने महिलाओं द्वारा प्रणीत ऐतिहासिक उपयासो
का क्षीण परम्परा म योगदान किया है ।

१० सुग्री सन्ताप सचदेवा

इन्हान रूप और छाया गीपक उपन्यास म मृग और तपणा नामक पात्रो की
प्रम कथा क माध्यम स समाज की कुप्रवृत्तिया पर व्यंग्य प्रहार करते हुए तकपूण वार्ता
भाषा व गारा जीवन तथा जगत व विभिन्न प्राना का समाधान प्रस्तुत किया है । मृग
और तपणा क प्रति विगप माह दाने व कारण रेखिका ने नायक-नायिका के नामकरण
व अतिरिक्त उनक आमा को भी मृगपर तथा तपणापुर नाम दिये हैं । नायक नायिका
व उपयुक्त नामकरण म प्रारम्भ म यह भ्रम दान लगता है कि यह कथानक प्रतीकारमक

१ एक ही रास्ता पृष्ठ ८

२ देखिये एक ही रास्ता पृष्ठ ८ २८ ११८

है, किन्तु बाप म यह भ्रम स्वतः दूर हो जाता है। वस्तुतः इस उपन्यास का 'गीपक' मृग तप्या होता चाहिये था। इसका कथानक इस प्रकार है—

मृगपुर के जमींदार विदार्सिंह ने तप्यापुर के जमींदार वीरसिंह से अपनी मन्त्री को दूध करन के लिए उनकी पुत्री तप्या को अपनी पुत्रवधू बनाने का निश्चय किया। मृग और तप्या बालसहचर थे अतः उनमें पहल से ही प्रेम भाव था। एक अवसर पर वीरसिंह ने मृग के चरित्र पर अवधारण साग करके शोधावगम अपनी पुत्री का सम्बन्ध अग्रज निश्चित कर दिया। विदार्सिंह ने भी प्रत्युत्तरस्वरूप मृग का सम्बन्ध मातापिता के ताल्लुकेदार नमदा की पुत्री माना से निश्चित कर दिया। मृग और तप्या गिरलिंग के सम्मुख गणव विवाह कर अग्रज चले गये किन्तु उनके माता पिता को यह भ्रम रहा कि उन्होंने नली में डूबकर आत्महत्या कर ली अतः दोनों पक्षों को अपने पूर्व हठ पर रहन अनुताप हुआ। तप्या की शांति के लिए सेंट रूपदयाल के कुचबन्धन पति में पथक होना पड़ा किन्तु उसने अपने अतीत की दण्डापूर्वक रक्षा की और रामू ब्रिजान तथा उसकी पत्नी राधा के स्नेहपूर्ण आश्रय में पुत्र को जन्म दिया। दा माता के पुत्र को माधु नकर बड़े पति की शोच में निकली और दो वर्ष के उपरान्त त्रियोगवन्ध पति को रामपुर में मानाधा के पति के रूप में पाया। मृग ने पहल से ही सेंट रूपन्यास की बात की नकर उसमें प्रति अविवश्याम यवत किया किन्तु बाद में पूर्व प्रमत्त स्मृतियां सप्रशंसा पाकर उसे सम्मान पूर्वक अपना लिया।

स्पष्ट है कि लेखिका ने वास्तविकता और घटना बाहुल्य का आश्रय नकर कथा नव का रोचक बनाने का प्रयास किया है। किन्तु वह उल्लेखनीय है कि माता, उसका मन्त्री मृदुता मोनाक्षी की मन्त्री जानकी आदि पात्राणा की प्रासंगिक कथाओं में मुख्य कथा के विकास में विषय योगदान नहीं किया है अपितु मृदुता और जानकी की कथाओं में ही मुख्य कथा का प्रवाह कायम हो गया है।

मृग आनन्द उपन्यास का नायक है किन्तु उसमें नायकाचित्त चरित्र शक्ति का अभाव है। तप्या के लिए वह अपने माता पिता का त्याग करता है किन्तु रूपन्यास के कष्ट के लिए उसकी रक्षा नहीं कर पाता। यह जानकर भी कि तप्या उसमें बिरह में ध्यातुन होगी, वह उसे मोक्षन का प्रयत्न नहीं करता और रामपुर आकर शीघ्र ही मोनाक्षी से प्रेम विवाह कर लेता है। अस्तिर मनोवृत्ति और अकर्मण्यता उसमें अत्यन्त दुर्गुण हैं। नायिका तप्या का चरित्र अप्रभावशाली है। मृग के प्रति उसका अनिच्छित प्रेम है इसी कारण उसने माता पिता तथा गृह का त्याग कर दिया, रामनाथ मठ में अपने गौरीश्वरी की रक्षा की पति से त्याग न स्वीकारा वह स्वयं न स्वीकारा कि विवाह रचाने पर विवाहप्राप्त करनेवाले प्रियतम का हृदय में धना कर दिया। मृदुता माता मोनाक्षी जानकी आदि गौरी पात्राणा की तप्या की भाँति भ्रमता की साधारण प्रतिमाएँ हैं। रक्षिका और रामू नामक पात्र दण्डित का मृदुता पराधनारी स्वभाव की उदाहरण योग्य हैं। जमींदार विदार्सिंह वीरसिंह और नमदा अपने स्वयं का प्रतिनिधित्व करने

वाले स्वाभिमानी तथा हठी ठाकुर हैं। पात्रों के अन्तर्गत तथा मातृगत प्रसन्नता का चित्रण करते-तेखिना न पात्रों के चरित्र चित्रण में मनागतानि सौन्दर्य का समावेश किया है। मोनाक्षी की मृग के प्रति प्रेम विद्वत्ता तथा तन्मा ही मृग के प्रिय में व्याकुल चित्ता इस प्रसंग में उत्पद्यनीय हैं।^१

प्रस्तुत उपन्यास में तत्कालीन अर्थोपकरण की आयोजना तथा नाटकीय सौन्दर्य का विधान किया गया है। य मवाद अथ तत्त्वा के विराग में भी सहायक रहें। तन्मा और मृग के सवाद तथा मोनाक्षी और मृग के वात्तावाप में सामाजिक कुरूपताओं की अत्यधिक निन्दा की गई है।^२ यद्यपि कहा-कहा जटिल विषयों को 'वात्सा' के कारण सवा भी कुछ दार्शनिक हो गया है किन्तु उनमें उद्भूत का मुखरता रही है। सामाजिक विषयों पर वात्तावाप करते-समय वक्तव्यों ने अनेक अत्यन्त सुन्दर उक्तियाँ प्रकट की हैं। उदाहरणार्थ मृग की माता ने जब पति के सम्मिलन पुरुष विवाह में बन्धन का प्रस्ताव रखा तो विनासिंह बोले— राजा ठाकुर घराने में कोई बन्धन नहीं नेता इस लिए मैं भी बन्धन नहीं बना चाहता। कज लेकर गादी पहन करना अथवा कोई भी उससे मनाना एक स्वाभिमानी दण्ड का नागरिकों के लिए अभिप्राय है।

जमींदार विनासिंह और ठाकुर वीरसिंह को वर्गीय तथा व्यक्तिगत विषयों तथा वे मा-यम से नखिका ने समकालीन सामाजिक और राजनीतिक स्थिति को चित्रित किया है। मोना ठाकुर द्वारा अपनी अत्याय सन्तानों को परस्पर विवाह मून में बाधने का निश्चय काग्रेस आन्दोलन में दाना का सन्धिय भाग बना स तान की इच्छा अनिच्छा को उपेक्षा करके विवाह अयन निश्चित कर देना आदि घटनाओं तथा समकालीन जमींदार समाज की विपत्तियों पर प्रकाश डाला गया है। सेठ रूपदयाल के चरित्र के माध्यम में उन व्यक्तियों पर तीव्र व्यंग्य किया गया है जो शक्ति सत्त्वाएँ खोकर जनता को माग प्रष्ट करत हैं और चारित्रिक पतन अथवा वासनात्मक प्रवृत्ति का परिचय देते हैं। नखिका ने पात्रों के वात्तावाप में कही-कही समकालीन सामाजिक समस्याओं का आरंभ इंगित किया है। प्रस्तुत प्रसंग में तन्मा की मृग के समक्ष कही गई वह उक्ति उल्लेखनीय है जिसमें उसने समकालीन समाज की स्वाधरता धन-तन्मा बबरता कृत्रिम गम्भिरता नारी गोपण आदि कुरूपतियों का चर्चा करत हुए प्रचलित सामाजिक कुरूपताओं के विरुद्ध विष उठाया है। दण्डकाल के विषयों से प्रत्यक्ष है कि इस उपन्यास की रचना समाज-सुधार की भावना से प्रेरित हाथर की गई है। यकिन के सुधार पर ही समाज का उद्धार निर्भर है अतः नखिका ने पात्रों की उक्तियों में यकिन और समाज

१ २ दलिये रूप और छाया पृष्ठ १ ७ १०८ १२१ १२३

३ दलिये रूप और छाया पृष्ठ ३७ ४० ११६ ११७

४ रूप और छाया पृष्ठ २३

५ नखिये रूप और छाया पृष्ठ ३७

क परिष्काराथ जनन मूक्ति-वाक्य और प्ररणाप्रद प्राप्त वाक्य प्रस्तुत किय है। उदाहरणार्थ मृदुला क गंगा म, जाज दग को ऐसा सन्तान की आवश्यकता है जो दग क सच्चे हितपी हो। 'अचउ उमने अपन पति गखर को प्ररणा देते हुए कहा है— जाज समय को माग है कि गीतकार नगील गीता को बन्द कर प्राति क गीत गाए।'

विवक्ष्य गतिम मुख्य रूप से ससृष्ट की उत्तम पभावनी का प्रयाग हुआ है किन्तु उदू गंगा क प्रयाग द्वारा नापा का व्यावहारिकता को भी मूर्तिरित रखा गया है। यन तय जान न पहचान बड मियाँ सलाम ^३ जस रोचक महावरा और नाकाकितया का प्रयोग भी इसी गंगा म सहायक रहा है। गली म वननात्मकता को अवस्था नाटकायता का रूप प्रमुख है जिसम राचकता और प्रवाह सवत्र विद्यमान हैं। विशात्मक अभिष्यजना क गिग प्राप्ति आनकारिक गंगावला का प्रयाग हुआ है। यथा— विशा का यह बला उमक लिए एस धो माना बाइ उमक बुटे प्यार का जनाजा लकर जा रहा है। अन्त म यह उन्नयनीय है कि रूप और छाया एक पठनीय उपन्यास है। सामयिक दणकाल और उन्नय की अभिष्यजना म यह विशेष सफल रहा है। सामाजिक कथात्मक म दार्शनिक सिद्धान्त का सुगुम्फन कर 'खिक्का ने अपनी मुधारवाण विचारधारा का सुन्दर अभि मन्त्रि की है। सवाद प्रायः सारगर्भित हैं और भाषा-शली भावानुसूत है।

११ श्रीमती गिवरानी विदनाइ

श्रीमती विदनाई न उपकार दुभाग्य तथा जावन की अनुभूतियाँ 'गीपक एहानी सप्रहा क अतिरिक्त भागी एलकें 'गीपक पारिवारिक उपन्यास की भी रचना की है। यह १०६ पछा और ३२ परिच्छा का बहुद् उपन्यास है किन्तु इसका कथानक अत्यन्त मरिप्त है। पटना-बाहुल्य की अपेक्षा सखिका ने सूक्ष्म तथा विम्बित वणन का गिणय प्रज्य दिया है किन्तु उन्नय द्वाग गमित होन क कारण उपन्यास क अच तत्त्वा म सहज विकाम का अभाव रहा है। इसका कथानक इन प्रकार है—मुपमा और नारजा प्रमा मध्यम तथा धना परिवार की कमाए थीं किन्तु दाना म परस्पर घनिष्ठ छोहाद था। मयागवण एक धना परिवार का इक्कीठा पुत्र विजय पेना मजियों क भावी बर' क रूप म प्रकट हुआ। विजय की माता अधिक धन पान की सासमा स नीरजा को अपनी पुनयधु बनाना चाह रही था किन्तु विजय की इच्छा क आम विवाहाकर उह निजन मुगी की पुत्री मुपमा का ही स्वीकार करना पडा। फिर ना उतान विजय से छिटाकर बीम हजार रुपय का मांग की और पुत्री का अविध्य साचकर पिता न मवान रहन रखकर 'हज का पूति की। किन्तु यह दहज ही विजय क मुआ दाम्पत्य जीवन का पन बन गया। मुपमा अपन पुन मधुर मुणा का त्यागकर विजय की अपना गीत नास समनकर व्यवहार करती थी और उपर नारजा ने मन हो मन प्रव कर दिया था कि वह विजय से आत्मिक

तथा उसके चाचाकुल्लनक वार्तानाप^१ और दिनेश विजय नारजा तथा गुपमा व जाधनिक नारी तथा परप की नृतियों की विवचना करत समय व सवाद^२ उक्त तथ्य व उदाहरण रूप में उल्लेखनीय हैं। (ई) चतुर्थ प्रचार व वीरपन व हैं जिनमें जानी पान दानानिक सिद्धान्तों की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करत हैं। तृतीय परिच्छेद में मनी जो तथा गैवान जो का वात्तालाप इसी प्रकार का है।^३ इस अंश व कथापकथन में भारतीय संस्कृति के गौरव का विशेष रूप में गान किया गया है और तब समय आत्म विकास तथा जात्यात्मिक उन्नति की प्रेरणा दी गई है। यहाँ यह कथित है कि तत्काल एव दार्शनिक कथापकथन आवश्यकता से अधिक दीर्घ तथा सजातिवद् हुआ है। उपन्यास अथवा कहानी में ऐसे कथापकथन अधिक नहीं होने चाहिए अन्यथा श्रेष्ठ की सीमा तक पहुँच जात है। विवेच्य उपन्यास में मयवर्गीय तथा अभिजातवर्गीय परिवारों व वातावरण का यथोचित चित्रण करने व अतिरिक्त बिस्वनाई जो न पानों व कथापकथन में सामाजिक प्रवृत्तियों की भी बहाना खोजा की है। कनक चाय पार्टी दावन नवभोज त्रिज गायन-वादन माज ठगार गृहज तीथयाना बिवाह में जम पत्रिया का मिलाना जम दिवस का चहल पहन आदि दृश्यों का जकन में त्रिजिका विंगप सफ़र रही हैं। इनक जति रिक्त अधालिखित सामयिक प्रसंगों का आचर्चा की गई है—(अ) पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में नारी की भागवादी प्रवृत्ति (आ) विज्ञान के प्रभाव से मनुष्य की भौतिक उन्नति किंतु आध्यात्मिक प्रगति का ह्रास^४ (इ) आर्थिक विपन्नता से पीड़ित निधनों का दयनीय दशा^५ (ई) राजनिक फलस्वरूप चोरबाजारी की प्रगति तथा निधन जनता की कष्ट वृद्धि।

भारतीय नारी के चरित्र पतन पर ललिका का अत्यंत शोक है। इसी कारण उन्होंने विभिन्न पात्रों व माध्यम से उक्त तथ्य की अभिव्यक्ति कराई है। उदाहरणार्थ गुपमा और विजय की निम्नलिखित उक्तियाँ देखिए—(अ) क्या पश्चिमी सभ्यता हमारी भारतीय संस्कृति का विनष्ट ही होकर सामने आ रही? (आ) आज की शिक्षाभिमानिनी नारी अपने प्राकृतिक गुणों को छुड़कर पुरुषों को नचाने का दम करती है जिससे दानों के जीवन में अज्ञान ही जगति भरती चली जा रहा है।^६ नारी को ही नहीं परप को भी पश्चात्य सभ्यता ने छुड़ा है। नारी व प्राचीन गौरवमय त्याग तब और सधम का उपहास करके परप ने ही उस पश्चात्य अवान्तरण की ओर प्रेरित

१ २ देखिय भागी पतकें पृष्ठ ८१ ८४ ३६१ ४६४

३ देखिय भीगी पतकें पृष्ठ १३ १८

४ ५ ६ देखिय भीगी पतकें पृष्ठ ७ १५ ३८८

७ देखिय भीगी पतकें पृष्ठ ८२ ८३

८ देखिय भीगी पतकें पृष्ठ १७ ३६१

निया है ऐसा लखिका का विचार है।^१ सामाजिक तथा पारिवारिक वातावरण के अति रिक्त उद्धान प्रवृत्ति के मधुर तथा भीषण चित्र भी यन्त्र-तन्त्र अंकित किये हैं। उपा तथा पृथ्वी नाम्ना लखिका का परस्पर प्रेमार्तिमत्त^२ वसन्त ऋतु का मंगलमय मादक प्रभाव^३ तथा जड़ की दापहरी का तपना हुआ वातावरण^४ ऐसे ही परिस्थिति चित्र हैं।

मुन्ना गिवरानी विद्वानों ने उपन्यास की भूमिका में उद्देश्य का स्पष्ट करत हुए लिखा है— यह उपन्यास इसी भावना का लेकर लिखा गया है कि पढ़ी लिखी धनवान घर की मजह्नी नडकियाँ बुरी नहीं होता। जा कोई भी भला बुरा होता है वह परिस्थिति का कारण ही। दबी भा राधामी बन सकती है और राधस भी दबता बन सकता है। 'उपन उद्देश्य का सिद्धि के लिए लखिका ने नौरजा और सुपमा की सृष्टि का है और परिस्थिति परिवर्तन द्वारा दोनों को प्रेम का रासस्व में दबत्व की ओर तथा स्वत्व में गलतत्व की ओर उन्मुख किया गया है। परिवर्तन का यह उत्कृष्ट अर्थ अपर्याप्त निमित्त अन्वाभाविक हो गया है और इसी कारण इस कृति की उद्देश्य अभिव्यक्ता सफ़्त नहीं हो सकी। कथानक सवाद चरित्र चित्रण आदि तत्त्वा पर उद्देश्य इतना हावी रहा है कि सहज कलात्मकता का इससे भारी दायित्व पड़ चुका है। अभिव्यक्ता पक्ष की दृष्टि में लखिका ने प्रवाहपूर्ण एवं मुहावरणार भाषा गता का स्थान लिया है। प्रशंसित मात्रि लिये मुहावरा और लावाकित्या के अतिरिक्त सवादाम व्यावहारिक मुहावरा और लाका कित्या का भी राचक प्रयोग हुआ है। चट्टी हाँडी उतारने का बहुत है पुना न पापड़ी पटाक बहू आ पडा 'जूर है ता नर है नहा पजात्र का गरर है चारा पलन हिलात चलो जाद आदि प्रयोग इस प्रकार प्रमाण हैं।^५ भाषा में व्यावहारिकता साधन के लिए उद्धान उद्देश्य का अधिक न अपनाकर मरत हिन्दी भाषा के प्रयोग पर बल दिया है। प्रकृति चित्रण करते समय पात्रों के मानसिक भावा का विवरण करने समय अथवा तकपूण वातावरण का विधान करने समय लखिका ने कायमय भावुकतापूर्ण अथवा विवरण परक भाषा का प्रयोग किया है। यथा— मज्झता-भी सरिता नासवण के परिधान समज्जर चमवमान हीरक खडा का मखना कटि में बाँध पा नूपुरा की रितमिन बजाना— गानक के चचन नयना स पिया को रोजती फूला में बाँचन भरहुण तोष दग में भागी जा रहा था अपन प्रियतम रत्न का गान मया गा मचिर बिनाम के लिए।

निष्कर्षतः भागी पलकों एवं पठनीय उपन्यास है। भारतीय संस्कृति की रक्षा के उद्देश्य का सम्पूर्ण रूप से उद्धान ने उद्देश्यपूर्ण कथानक का सृष्टि का है। वातावरण पात्रों के चरित्र चित्रण में वे विषय सफ़्त नुद हैं। सामयिक सामाजिक परिस्थितियों का

१ २ ४ दक्षिण भागी पलकों, पृष्ठ ३६२ ४५ ५११, ३०२

५ दक्षिण भागी पलकों, वा १४४ पृष्ठ ५

६ भागी पलकों पृष्ठ ६६ ७२, २६७ २६८

७ भागी पलकों पृष्ठ ११३

चर्चा करते हुए उन्होंने पारिवारिक वातावरण तथा प्रकृति भी तब का ज़िम्मेदार बताया। साथ ही उन्होंने उपवास में उभारा है। उनके लिए उनकी प्रणाम की जानी चाहिए। सरल एवं महावरणार भाषा गली ने उपवास का जोर भी सौष्ठव एवं आह प्रदान किया है।

१२ सुश्री शकुन्तला मिथ

शकुन्तला जी ने कच्ची मिट्टी पीपल रहस्य रामाचयन सामाजिक उपवास का रचना की है। उपवास प्रतीकात्मक है। यौवन-ज्ञान को वही मिट्टी की मना दी गई है। कच्ची मिट्टी का पात्र पर कोर भी रंग चढ़ सकता है और कठार वस्तु से टकराने पर वह टूट भी सकता है। यही दगा प्रारम्भिक यौवन की है। प्रस्तुत उपवास का उपनायक नवान दुष्यसनी भवन व साथ रहकर कुपथगामी हुआ और अन्त में पुनित का गाने से उनकी मृत्यु हुई। उपवास का नामकरण उसी की जीवन घटनाओं को नक्षत्र में रमकर किया गया है।

लेखिका ने उपवास में रोचकता के लिए घटना बाहुल्य का आशय दिया है। नार व प्रमुख धनी सेठ रूपचन्द अपनी पत्नी सुमुखी एवं नवीन तथा पत्नी रजनी के साथ एक सुंदर बगल में रहते थे। उनकी घमण्णा के मंगी ने विधवा गोमती और उनकी पुत्री सुंदु को उनके यहाँ भिक्षा का कार्य दिया। व अपना जीविका का साधन पाकर प्रसन्न थी किन्तु जब नवान जबका के निमंत्रण बनारस में घर चला तब रजनी के शिक्षक भवन की कुसंगति के प्रभावसे उसने हनु पर डोर डालकर उनका घर में रहना दूधर कर दिया। जब सुमुखी ने भी पत्र का पक्ष लेकर दूध का हाँ दाँची ठहराया तब व नीकरी छोटकर चली गई। सुमुखी ने अभिजात वग व अहंकारवां उन्हें भक्षाने के लिए उन पर कर्म का चारी का मिथ्या आरोप लगाया किन्तु डाक्टर टडन ने उन जनाय स्त्रियाँ की रक्षा की और कालान्तर में हनु के स्वभाव पर मग्न होकर उससे विवाह करने का निश्चय किया। इस सुमुखी का अहंकार जनित क्रोध और भी बढ़ गया। उधर नवीन ने डाक्टर टडन के विवाह के तीन दिन पूर्व भवन की प्रेरणा से डाक्टर और गोमती की बंदी बना लिया तथा भुवन रहमत एवं बद्ध खटोक की सहायता से हनु व सतीत्व हरण की चपटा की किन्तु मफलता न मिली। मंगी जी के प्रयत्नों से जब पुनित बहा पहुँची तब हनु और डाक्टर टडन मर्द्धतावस्था में थे। नवीन ने भगन का प्रयास किया किन्तु पुनित की मोती से उनकी मृत्यु हो गई। पुत्री व अपठरण के धक्के से गोमती पागल हो गई थी। भवन की जाजीवन कारावास का दंड मिला। पुन की मृत्यु से सुमुखी का जीवन बजर रेगिस्तान बन गया और उनकी अभिजात वग का अहंकार चर चूर हो गया। डा० टडन तथा हनु को उपचाराय अस्पताल में भर्ती करा दिया गया। उनका स्वस्थ हान व विषय में सविज्ञा मोन रही हैं अतः कथानक का अंत स्वतः स्पष्ट नहीं है।

प्रस्तुत उपयास व पूर्वाद्ध म चरित्र चित्रण पर अविक बल दिया गया है किन्तु उत्तराद्ध म गामती और दूदु द्वारा सठ जी का घर छोड़ देने का प्रान्त से घटना-आहुप क दान हात है। कथानक का उत्तराद्ध बम नी जत्यन्त क्षिप्र गति से युक्त रहा है जो उचित नहीं है। ललितिका ने अभिजात बग के अहंकार तथा कुसमति के प्रभाव का दिखाने के लिए अधिकतर ममाज व कुम्प दृश्य ही अंकित किये हैं। य दश्व परिमाण म इतने अधिक हैं कि पाठक का मन ममाज व प्रति विरक्ति तथा घणास भर जाता है। वस्तुतः ललितिका का किशो मनावानिक तथा स्वस्थ सामाजिक कथानक का आश्रय लेना चाहिए था। किमा महत्पूर्ण सामाजिक समस्या का समाधान प्रस्तुत न करने के कारण भी यह उपयास गरिमापूर्ण नहीं बन पाया है।

कच्चो मिट्टी म एर बार अभिजात का व पात्रा (रूपचन्द मुमुखी नवान) की मनावतिया पर प्रकाश डाला गया है और दूसरी बार मध्यवर्गीय समाज का बंद नाभा का चित्रण हुआ है। ललितिका ने चरित्र चित्रण म प्रत्यक्ष बयन की शला का प्रामाण्य आश्रय लिया है। उगाहरणाय मुमुखी और रूपचन्द का चारित्रिक प्रवृत्तिया का उत्तरेक्ष दक्षिण—

(अ) मुमुखी बम कुलीन थी कुछ दयानु नी किन्तु वह अभिजात बग की स्त्री था। उसमें अपना अह और अहंकार सठ जी से भी अधिक था।^१

(आ) वह नायहीन पुरुष था। कबल कम करना ही उसने सीखा था। आत्म तानी की तरह फनरहित नायना से नहीं फन प्राप्त करने की भावना से। तपदना, सहानुभूति का सरस कामल नावनाए उसका वयस हृदय को छूने का कभी साहस न कर सकी था।^२

उपयुक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि पति पत्नी के स्वभाव में महान् अंतर था। तथापि उनमें बमनस्व नहीं था।^३ बस मुमुखी जितनी हठी थी रूपचन्द उतने ही विवेकशील थे। इत्यादि उद्घाटन मुमुखी का यह परामर्श लिया कि हाँ० टण्डन गामती और दूदु का विराय न करे, किन्तु वह अहंकार और हठ के बन्धोभूत रहकर नवीन की प्रति शोष नायना का उगारती रहे। जहाँ सठ रूपचन्द ने अपने व्यवहार-कोण से मिल के बिनाही श्रमिका की बच में रखा^४ वहाँ उनका पुत्र नवीन दूसरा के हाथ की बठपुता बनकर रहा। वह पिता की भाँति विवेकशील नहीं है अपितु माता जमा हठ और दुराग्रह का उसमें प्रमुख है। अपरिपक्व बुद्धि होन के कारण उसने नवन की भाँति म मधपान वसायमन आदि दुगुणा को सहज ही अपना लिया।

उपयाम के अ य पात्रा में दूदु का चरित्र विषय रूप से गतिशील रहा है। यह निपन है किन्तु उसमें सोच और काय में उठा की नभा पात्रा ने किसी-न किसी

रूप में प्रगटा की है। नायनिष्ठा व अतिरिक्त उसमें आत्मविश्वास की भी कमी नहीं है। उसकी माता गोमती का चरित्र वास्तव्य का मर्म स्पष्ट है। वह विधवा था जिसने दूरी की सुख कामना से उसने अपने जीवन का कभी अभिप्राय नहीं रखा। गणिका ने उसके जीवन में सुख देख के सघात का मनस्पर्शी चित्रण किया है। श्री ० टण्डन और मास्टर भुवन मध्यवर्गीय पात्र हैं। गणिका ने उनका चरित्रा सा परस्पर का मित्रा बनाकर प्रस्तुत किया है। भवन स्वार्थी और पतिन मनावृत्ति का मर्म है जिसने नवीन को कुमांग की ओर उन्मुख करने के अनिश्चित डॉ० टण्डन इन्डु और गामती के मुखा जीवन में व्याघात उपस्थित किए। इसका विवरण डॉ० टण्डन के चरित्र में विविध जातों का समावेश है। उपन्यास के अंत में पात्रों में मंगी जा का वाक-व्यवहार में निपुण गृहस्थ के रूप में चित्रित किया गया है। नवीन के सहायक दस्युआ में रहमत की प्रकृति अधिक उदार है। इसका विपरीत ऐलिका ने बुद्धि खटीक का क्रूरकर्मी रखा है जो अपने साथी रहमत की ही हत्या कर देता है। अन्ततः यह कहा जा सकता है कि ऐलिका ने चरित्र चित्रण की विविध प्रणालियों का आश्रय लिये हुए पात्रों की वर्णानुक्रम मनीषितिया और चारित्रिक दृढ़ को भरीभाति प्रस्तुत किया है।

गणिका का पात्रानुरूप सवादी की योजना में विगण सफलता मिली है। इसीलिए जहाँ इन्डु और गोमती के सवादा में नभ्रता का पट है^१ वहाँ सुमुखी की उन्नतिया में अभिजात वर्ग का अह स्पष्ट झलकता है।^२ भाषा को पात्रों के सामाजिक संस्कारों व अनुरूप रखने के लिये ऐलिका ने मुसलमान-पात्र रहमत के मुख में उर्दू भाषा का अधिक प्रयोग कराया है।^३ पात्रों के कथोपकथन का कथा विकास और चारित्रिक विशेषताओं के उद्घाटन में विगण योग रहा है। इस दृष्टि से इन्डु तथा सुमुखी का सवाद उत्प्रेक्षणीय है जिससे सुमुखी के अयोजनित अहंकार और गामती के सन्तोषप्रसिद्ध स्वभाव तथा तत्काल व्यक्तित्व का बोध होता है।

इस उपन्यास में अभिजातवर्गीय समाज का वातावरण प्रस्तुत करने पर विगण बल दिया गया है। सुमुखी द्वारा पति की अनिच्छा होने पर भी दान धर्म करना मास्टर भवन के साथ साथ खेती पति की अनपस्थिति में उनके मित्रों के साथ घूमना फिरना घर के सबका घर रोक बनाय रहना आदि प्रवृत्तियों का चित्रण इसी दृष्टि से किया गया है। दूसरी ओर सठ रूपचंद द्वारा मजदूरों को कटनीतिपूर्वक धमका रखना भी इसी अभिप्राय से चित्रित है। अभिजात वर्ग का अह रूपचंद का अपेक्षा सुमुखी में अधिक था। ऐलिका ने इस उपन्यास में प्रकृति चित्रण की ओर ध्यान न देकर मानव प्रकृति के विवरण पर बल दिया है। उपन्यास के उत्तरार्द्ध में वातावरण का कोतूहलपण रोमांचकारी घटनाओं के अनुरूप रखा गया है। एक स्थान पर प्रसंगिक क्रमिक वर्ग की उन्नति का भी उल्लेख हुआ है जो ऐलिका की जागरूकता का परिचायक है। यथा— काप्रस

की हकूमत थी। नाच व लाव तब म ऊपर जा रहे थे। काग्रम ने उन्हें अपना मन्थ बताया दिया था। वह अब मन्थ नहीं रहे थे, क्योंकि काग्रम सरकार ने उनका आत्मरक्षा व लिए नये नये कानूनों की नृष्टि कर ली थी। जब न तो उनका मजदूरी में घोंबली की जा सकती थी और न उनसे पगुआ का तरह काम हो लिया जा सकता था।^१

प्रस्तुत कृति का रचना करत समय ललित का नमस्तदा उद्यम्य रह है—(अ) अभिज्ञान वग व अह और उनके दुष्परिणाम की मभावनाओं का विषय (आ) कुमगति व फलस्वरूप कुमागमा होने का प्रस्तुत। प्रथम तत्त्व की प्रति समुखा व चरित्र द्वारा की गई है और द्वितीय व लिए नवीन, और उस दुष्परिणाम पर न आनवान नवन का चरित्र प्रस्तुत किया गया है। रचिका ने भाषागत सरलता और व्यावहारिकता का जोर भा समुचित ध्यान दिया है। किन्तु कहा वही मूल्य-वाक्य अनावश्यक रूप म दाघ हा गए है जिससे उनमें निहित मनोविलक्षण प्राप्त दब गया है। तथापि यह निर्विमान है कि भाषा की सरलता और मजीबता द्वारा कथानक को रोचकता का छडित नहा हान दिया गया है। अन्तत यह कहा जा सकता है कि रचिका व समय कुछ निश्चित जीवन मिद्धान्त रहे हैं जिनकी अभिव्यक्ति व लिए मुख्य रूप म यथाय विषय की प्रयासों का अपनाया गया है किन्तु जादूवाद को न स्फुट रूप म अभिव्यक्ति प्राप्त रही है।

१३ सुधी उमि

सुधी उमि ने ६४ पन्ना और २२ परिच्छेदों में विषयगत प्रतीक्षा भाषक लनु सामाजिक उपन्यास की रचना की है जिसमें सामाजिक वाधाओं के फलस्वरूप नायक और नायिका का अनकन प्रेम-भाषा का वरण चित्र चकित किया गया है। अत्र नगर में निवास करनवाला, उच्च कुल एवं धनी घराने का प्रतिभावात् युवक था और उमा गापुर गाँव में रहनवाली सुन्नी किन्तु विधन नवयुवती थी। सयोगवत् दाता में मात्त्विक प्रेम का विकास हुआ। उन्होंने प्रेम व दवात्मक में परस्पर मन्थी प्रानि व निर्वाह का प्रण किया। सम्भवत इसी प्रतिभा की रक्षा व लिए विधाता ने अहसास में उनका मित्रन का बाधित समझकर उन्हें अपने निवृत्त बुला दिया। उमा व नाना उनका अन्त्य विवाह करन व लिए कटिबन्ध थे, अतः उनमें प्रेम त्याग दिया और दाता में एक माटर पुष्टता व फलस्वरूप उमरी मर्य हा गई। सन वान भाप्र ही रत्न नारा पात व भाषात में मान-वर्धित हा गया। कथानक का यह अन्त प्रेम की दिया में एक भाषा प्रस्तुत करता है किन्तु सयोगाधिक्य के कारण अस्वाभाविक प्रतीत होता है। कथानक में अत्यन्त विविधता के लान हान हैं और उपन्यास व आरम्भ में पुनपन एक सुदृश्य आन व कथानक की रोचकता थीन हा गई है।

अत्र उप भाष में मात्त्विक कथानक के अनुकूल नानि पात्रों की स्थान

प्राप्त हुआ है—ए० उसने माता पिता और बहिन उमा उसका नाना और उमका गयी गीरी। इन पात्रों की संवल व ही विपत्ताएं प्रकाश में आई हैं जो बचाने में गति देने में सहायक रही हैं। उमा और ए० की परस्पर संबंधों प्राति उमा के प्रति गीरी का अनुराग सखी भाव आदि विपत्ताएं उत्पन्न होती हैं। पात्रों की चरित्रगत प्रवृत्तियाँ मुख्य रूप से घटनाओं में घात प्रतिघात के माध्यम में व्यक्त हुई हैं। वृत्तात्मक प्रसंगात्मक नाटकीयता के संचार के लिए कहा नहीं चला जाता कि मध्य यष्टि ए० प्रसंगानुकूल संवादों की आयोजना की है। अधिकांश सम्भाषण उमा और ए० के हैं जिनमें उनके प्रसंगजनक आशय और भावनात्मक अभिव्यक्ति हुई है।

प्रतीक्षा में चला जाता है कि प्रसंगात्मक संरचना परिलक्षित साध्य निष्पत्ति दरिद्र एवं धनपरायण जीवन की प्रसंगानुकूल अभिव्यक्ति की है। इस उद्देश्य के अतिरिक्त उनके उद्देश्य प्रेम की अनुराग को प्रकट करना है जिस उपन्यास की प्रतीक्षा में ए० १० में व्यक्त किया गया है— जब नायक और नायिका समाज की भेदाद और प्रतिष्ठा का अनुभव कर सत्य का भी चेतना देने के लिए उत्पन्न हो जावे तभी यह जानना चाहिए कि उनके प्रेम की सच्ची परीक्षा हुई है। 'नेत्रिका की भाषा सरल बोधगम्य एवं मुहावरेदार है। उन्होंने वृत्तात्मक गीरी और संवाद गीता का प्रयोग करने के अतिरिक्त गम्भीर प्रसंगात्मक काव्यन करते समय प्रायः दीर्घसूक्तिपरक वाक्यावली का संयोजन किया है। उदाहरणस्वरूप यह उक्ति प्रकट है— हम लोगों के जीवन में न जान कोन भी असंश्लिष्ट गति काम करती है। यह नहीं जान पड़ता कि कब किस बात से हम लोगों के जीवन की गति किस ओर मुड़ जाए। संसार में कितने ही लोग जाते और जाते हैं। सभी को हम देखते रहते हैं कि न देखकर भी हम उन पर कोई ध्यान नहीं देते।'

मुनी उर्मि ने सम्भव असम्भव की चिन्ता किये बिना अपनी कृति में जिन अस्वाभाविक घटनाओं को स्थान दिया है वे उपन्यास के साहित्यिक महत्त्व का क्षीण करती हैं। समस्या चित्रण जयवा सामाजिक प्रसंगात्मक अवतारणा की ओर उन्होंने ध्यान नहीं दिया उनकी दृष्टि प्रेम के सीमित क्षेत्र में ही परिभ्रमण करती रही है।

१४ श्रीमती सीला शर्मा

श्रीमती सीला शर्मा ने एक या गीतक सामाजिक उपन्यास की रचना की है जिसमें मन्त्रिण काव्य के एक छात्र प्रकाश के जीवन की विरूपताओं और उसके द्वारा आयोजित कुचला की चला की गई है। उसका सहपाठी राकेश (क०) समस्त घटनाओं का वृत्त रहा है क्योंकि उसके चरित्र की गम्भीरता से चिढ़कर ही प्रकाश ने उसे चित्रित करने के उद्देश्य से समस्त दुर्भावनापूर्ण शाय किया है। वस्तुतः यह चरित्रप्रधान घटनात्मक

उपनाम है क्योंकि इसमें राकेग के चरित्र का आदर्श रूप प्रतिष्ठित करने के लिए ही ममस्त घटनाओं एवं पात्रों का विधान किया गया है। ललितिका न घटनाओं में रोचकता का मूल ध्यान रखती है किन्तु कहाँ कहाँ जाकल्पितता का दोष भी निखरता है। उपनाम के नायक राकेग का अपने पिता की वेश्यामयन की प्रवृत्ति से उड़ होकर यह त्याग करने पर ननिब भी भटकना नहीं पड़ता—नीतिरियो उस इस प्रकार मिलती चली जाती हैं माना वे उसी की प्रतीक्षा में हैं। तत्पश्चात् मंडिकल कॉलेज में प्रवेश करने पर भी छात्रालय में उसका जीवन से सम्बद्ध प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष घटनाएँ नाटकीय रूप में घटित होती हैं। उसका सहपाठी प्रकाश की दुष्टता का कल्पित रूप एक अन्य छात्र चन्द्र का अपनी नव विवाहिता पत्नी मुनयना से बिगड़ हो जाता है क्योंकि प्रकाश ने उसे यह मिथ्या विश्वास दिला दिया था कि उसकी पत्नी राकेग का पूर्व प्रेमिका है। चन्द्र का पुनर्विवाह होने पर परित्यक्ता मुनयना ने राकेग से मिलकर अपना दाप पूछा ता घटना-चक्र से सवर्षा अनन्तगत राकेग ने अपनी उदारता और सहृदयता का परिचय देते हुए मुनयना और उसका नवजात पुत्र को पत्नी एवं पुत्र के रूप में ग्रहण कर लिया। ललितिका ने राकेग का मद्गुणों (परदुष्कृत रत्ना जन उवाच) पर विविध प्रमाणों प्रकाश डाला है। ऐसे अवसरों पर प्रकाश का दुःखान्ता और दुःखों की ओर पाठक का ध्यान अनावश्यक हो जादृष्ट हो जाता है। उपनाम में जय पात्रों में मुनयना और राकेग के माता पिता की जीवन धारा को सामाजिक आर्थिक अक्षमता के अनुसार रखा गया है। इनमें समस्त समय पर मानव गुणों और दुष्टताओं का प्रारूप रहा है। यहाँ यह उल्लेख है कि ललितिका ने चरित्र विश्लेषण में विविधता और प्रभावशालिता के लिए प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष कथन गलियाँ का समान रूप से आश्रय लिया है।

‘एक पात्र का रचना मुख्यतः वर्णनात्मक होती है’ यह है किन्तु कथानक में नाट्यकाम गति प्राप्त करने के लिए ललितिका ने पात्रानुसृत संवादों की आवश्यकता की है जिससे कथा नकल अतिरिक्त चरित्र विकास में भी योग प्राप्त हुआ है। यहाँ-कहाँ बगला एवं पूर्वी हिन्दी के अनुसृत वाक्य विन्यास करके उसे इसा प्रवृत्ति का परिचय दिया है। प्रकाश का उत्पत्ति में उसके अस्मित का बकना का ध्वनि रखने में भी ललितिका को विचित्रता मिलती है। ‘आज मैं अथवा वातावरण का दृष्टि से ललितिका द्वारा वर्णितता का नव जीवन राकेग के चरित्र पहल, यथा जीवन तथा छात्रावास में घटनाओं का चित्रण उत्तमनीय है। जहाँ कि पहल बनाया जा चुका है, राकेग के रूप में आदर्श चरित्र की गति आगे बढ़ती है। इन दृष्टि से यह रचना निरद्वय है। प्रकाश और चन्द्र का पक्ष है।

अतः उपनाम में साहित्यिक दृष्टि की अपेक्षा प्रचलित भाषा का प्रयोग किया गया है किन्तु ‘आ’ शिष्टता (विद्वत्ता), धारणा (धारणा) आदि अगुद शब्दों

कया प्रवाह म निचय ही ग्राधन रहे है। भाषा म सजीवता और सारहारिकता गान के लिए लिखिका न महाबरा का विनय नामव प्रयोग करन व अतिरिक्त मूकित-वाक्या की भी सहज याजना की है। यथा— तिनारा स दूर महासागर का उतान जन नगरा पर उतराता हुआ बाठ का एव मामना टरडा भी समय पर मगर व तिन बहुत होता है। इसा प्रकार उहाने विन गरी तथा उपमान योजना म भी पगाल गवि ला है। उदाहरणार्थ राबग के विषय म यह उक्ति दगिए— आनक कान म जस माप क अनर का कीडा और अपनी ही सीप म सिकुड जाता है उम मजिन की मोडिया पर पर रगत ही कगू भी और अपन ही म सिमट जाता है।^१

निरूपण रूप म यह पातव्य है कि सुथी गीला गर्मा ने म उपयास म उपदाता तमयता को मुख्य स्थान दिया है। यगीन साहित्यिक प्रगतियो व अनुरूप काई नूतन मनोवैज्ञानिक कथानक व नही दे पाइ। घटनाओं एव पात्रा पर उनका पूर्ण नियन्त्रण रहा है अत उनम सहज विकास का म प्राप्त नही होता। फिर भी सामान्य रुचि व पाठका के लिए इसम मनोरजन की पर्याप्त सामग्री विद्यमान है।

१५ सुथी शीला रघुवशी

सुथी गीला रघुवशी ने अभागा गीपक उपयास का रचना का है जिसम एक सधु प्रेम कया का निरर्थक सबाद। एक असम्भव घटनाओं व विस्तार स चमत्कारपूर्ण बनान का असफल प्रयास किया गया है। प्रताप और कना का सहागवग मिलन प्रेम प्रताप व पिता गारा उमका अग्रज पिताह कना और प्रताप का विरह एव तज्जन्य रणता कना की मत्य प्रताप का भी स मादप्रस्त हाकर मत्य-वरण—यहा जालाच्य कथानक की घटनाओं का म रहा है। इस उपयास का कथानक पिष्टपिष्ट है किन्तु उसम विचित्र कौतूहल की मष्टि व निय लिखिका न कतिपय असम्भव घटनाओं की कल्पना का है। प्रताप गारा कना की ऐस जादुई हार का उपहार दना जिस वारण करनवाज का कभी नाग न हा सब ऐसी ही घटना है। फिर भी न जाने क्या कना की विरहवग मत्य दिखाइ गई ? विरहावस्था म प्रताप और कना का पृथक नगरा म रहत हुए भी अद्वारात्रि को अचतन अवस्था म गय्या त्यागकर एक उपवन म मिनना भी ऐसी ही असम्भव घटना है। इस भट को लिखिका ने आत्मिक मिनन की सजा दी है किन्तु उनका गरीर गय्या म क्या अनुपस्थित रहत व मरना कारण व नहा दे पाइ। पागलखाने म प्रताप की मध्य कना म कना की मत्तात्मा का प्रकट होना और सम्भावण गारा प्रताप की आत्मा का पथ निर्णय करन उम अपन साथ न जाना भी अविवशनीय घटना है। वनमान वैज्ञानिक यम म एमो अमगत कल्पनाए कगवि स्पृहणीय नहा मानी जा सकती।

वस्तुतः लेखिका न कथानक व आभाजन म किसी उत्तमनाय प्रौढ़ का परिचय नहीं दिया है।

प्रताप और बन्ना इस उपन्यास व प्रमुख पात्र हैं। अथ पात्र (प्रताप क माता पिता भाई नाभी पत्नी वन्म मित्र विहारी कता व पिता, उमका सखा चन्दा आदि) इन्ही पात्रों का चारित्रिक प्रवृत्तिया का प्रकाश म लान म सहायक रहे हैं। प्रताप उपन्यास का नायक है किन्तु उमका नामकाचित दृढ़ता एवं साहस का तबधा जभाव है। उसका सबसे बड़ा गुण अथवा गुण उमकी भावुकता है जिसके बगैर भूत होकर वह ऐसे विचित्र कार्य करता है कि उमका व्यक्तित्व एक निरन्तर पहला बनकर रह जाता है। अथ स इति तब वह कष्टों का आनन्दना करता प्रतीत होता है। उसका चरित्र चित्रण उपन्यास का प्रमुख अंग है अन उसी व विनयन 'अभागा' का गीयक रूप म घुना गया है किन्तु यह उत्तमनाय है कि एस निराशावादी नायक पाठकों का स्वस्थ दृष्टि नहीं दे सकत। प्रताप व प्रति अन म अनुराग जोर प्रेम की बन्नी पर मोन मत्पु—नायिका बन्ना के चरित्र की यही उत्तमनाय विनयताए है। वास्तव म बन्ना का सष्टि प्रताप व चरित्र विकास के लिए ही की गई है। उपन्यास व पात्रों म अनकरार विनय ताओं के दान टुलन हैं प्रायः प्रत्येक पात्र की लगभग एकरूप रहनेवाला विनयताओं का अत्यन्त स्थल रूप म प्रासंगिक उत्तम हुआ है। पात्रों व सम्भाषण भी नायकविरुद्ध व कारण प्रायः प्रभावशाली रह है। व सामा म लम्बा पर भी अत्यन्त सम्भीरतापूर्वक विचार करके उत्तर प्रत्युत्तर दन हैं किन्तु भावविज्ञता व कारण वृत्त रक्त हककर अनवरविध नायक सम्भाषण क उपरान्त अपन मनोभाव व्यक्त कर पात हैं। अधिकांश सवाद न ता चरित्र चित्रण म सहायक रह है और न ही उपन्यास व अथ उत्तमनाय की गति दे पाए हैं—अनाथ-यव विस्तार ही उनका मुख्य गुण है।

अभागा म दशकाल सम्बंधी कथन एक भटना ही की प्रासंगिक बन्ना हुआ है। यह है—पितृम कम्पनी म काम करने की इच्छा से महत्या युवक-युवतिया का नित्य एकत्र होना किन्तु दाइरेक्टरों द्वारा कथन उहा बन्नाकारों का चुनाव करना जो उनकी कम्पनी व गमर न सकें। यदि दशकाल विच्छिन्नता व गमन होता है उन उपन्यास म पाठकों को निराश न होना पड़ता। नाट्य हार का जादू दूरस्थ प्रनिया का गारोरिक और जातिम मित्र, मृतात्मा का प्रवृत्त हास्य उ वस्वर म सम्भाषण आदि भटनाओं का उदाहरण रूप म प्रस्तुत किया जा सकता है। उपन्यास व मत्पुष्ट व अनुसार यह मन वगैरिका उपन्यास है। सम्भवतः संज्ञिका का उद्देश्य प्रताप का मनोवैयर्थिक चरित्र चित्रण करना हुआ, किन्तु व इस व वममय न हो पात। भाषा सरल और व्यावहा

रिक्त है किंतु सकोचता (सकोच) मित्रियाँ (मीट्रियाँ) जाति जगद् प्रयाग^१ चिन्तनीय हैं। भाषा में प्रायः एकरूपता का अभाव रहा है—वृत्तिपर्य स्थला पर जगद् साहित्यिक हिन्दी के प्रयोग का प्रयत्न किया गया है और अत्यन्त अत्यन्त चलती हुई भाषा का यत्र हार हुआ है। त्रिकाल में वणनात्मकता की अपेक्षा नाटकीयता का अधिक प्रयत्न किया है, किन्तु अनावश्यक संवाद योजना बथानक^२ के मुख्यवर्धित विनाश में बाधक रहो है। वात्सानाथ प्रायः उलझ उलझे अथवा अपूर्ण^३ तथा सुनियोजित भाषा का अभाव में उपयोग नीरस तथा अनगन्त हुआ है।

१६ सुनी उमादेवा

सुनी उमादेवी ने जातिगन गोपक ऐतिहासिक उपयोग की रचना की है जिसमें ८४ पृष्ठ तथा १३ पद्य परिच्छेद हैं। इसमें मगन राज्य की स्थापना के पूर्व का भारत की राजनीतिक स्थिति पर विहगम दृष्टि डालते हुए बाबर द्वारा भारत विजय के प्रकरण को चित्रित किया गया है। इस दृष्टि के पूरा में प्रारम्भ में त्रिविक्रमपुरी के जागीरदार की वीर तथा बुद्धिमती कन्या मणिमाला के चरित्र का विस्तृत परिचय देते हुए चंदरी के राजकुमार मदिनीराय से उसके प्रेम तथा विवाह का वर्णन किया गया है। इसके उपरान्त चंदरी के राजा द्वारा पुनः को राज्यगद्दी सौंपकर स्वयं संयत्त ग्रहण करना मुसलमानों द्वारा भारत की उत खसोट मन्त्रिनीराय द्वारा बादशाह खलील को पराजित करना आदि घटनाओं को इतिहास और कल्पना के योग से बताया गला में प्रस्तुत किया गया है। राजकुमार मदिनीराय के राजतन्त्र के उपरान्त उपयोग का उत्तराद्ध आरम्भ होता है। त्रिकाल ने राणा सांगा तथा ज़ाहीम खानों से बाबर के असफल युद्धों को पृष्ठभूमि में रखकर अतः मबाबर की सफलता का प्रत्यक्ष रूप में चित्रण किया है। राजा मदिनीराय ने राणा सांगा के पक्ष में युद्ध किया था—उह उत समग्र घटनाओं के केन्द्र रूप में रचा गया है। पानीपत के द्वितीय युद्ध में मुल्तान ज़ाहीम खानों तथा बाबर की सेनाओं के विभिन्न भागों का इतिहासानुरूप परिचय तथा युद्ध की स्थिति में दोनों सेनाओं के मोर्चा का सम्यक् विवरण^४ इस बात का साक्षात् है कि त्रिकाल ने इतिहास विषयक अध्ययन पर्याप्त सम्भार है। पूरवाद्ध में घटनाएँ मथर गति से विकसित हुई हैं (विवाह जाति सामान्य घटनाओं का भी विस्तार से वर्णन हुआ है) किन्तु उत्तराद्ध में विभिन्न घटनाओं की अत्यन्त त्वरित गति से वर्णन^५ किया गया है।

प्रस्तुत उपयोग में मुख्य रूप से राजा मन्त्रिनीराय और उनकी पत्नी मणिमाला का चरित्रावतन किया गया है। क्षत्रियाचित्त शौर्य के अनुरूप उनमें गोप्य स्वयं प्रेम मानसिकता तथा वेदिक कौशल जाति स्तुत्य गणा का परिपाक हुआ है। बाबर से

१ द्वितीय छमागा पृष्ठ १५ १६

२ द्रविये छानिगन पृष्ठ ६६ ७० ७२

यद्यपि तत्कालीन समय पत्नी के दाना की लाजसा से भावुक होकर मदिनीराय ने यज्ञ न लौट कर चारित्रिक दुर्बलता का परिचय अवश्य दिया था किन्तु मणिमाता ने पति ज्ञान के पूर्व ही चित्तारोहण करके उनके गौरव की रक्षा कर ली। यही तो ज्योतकालान वीरा चरित्र उनका चरित्रास विधत्त विपत्ताभा के अनुरूप ही चित्रित हुआ है। गाँवर का चोरता युग कोण-जोर दह-झा गवित की लेखिका ने अनन्तर मराठना की है। मणिमाता तथा मदिनीराय के पारिवारिक मदम्या तथा जय गीण पात्रों की चारित्रिक प्रवृत्तियों का भी प्रसंगानुवृत्त उचित उल्लेख हुआ है। तत्पिता ने चरित्र चित्रण के लिए रोचक एवं साधक यथोपबन्धन की आयोजना की और भी उचित ध्यान दिया है। सदादा म पानानुवृत्त आचार विचार सन्धृति तथा भाषा का यथावित ध्यान रखा गया है। सदाहरणाय गाँवर की उक्तियाँ न उसका महत्वाकांक्षा तथा अहं-व्यक्ति के भी भक्तक दष्टिगत होती हैं और उसकी मत्वा की उक्तियाँ म गम्भीरता एवं दानानि प्रवृत्ति के ज्ञान ह्रात हैं। इसी प्रकार मणिमाता के वचन उनकी चोरता तथा स्वल्प प्रेम के परिचायक हैं। यथोपबन्धन म म्या-नायिकाता लान के लिए नविका ने समस्तमान पात्रों की भाषा में उद्गारणा की प्रकृता लक्ष्य है और मणिमाला मदिनीराय जादि हिंदू पाना के मंत्र से तत्सम बहुला हिंदी का प्रयोग करामा है।

मुन्नी उमास्त्री ने प्रस्तुत कृति में दशकाल के निवाह की ओर निष्ठापूर्वक ध्यान दिया है। इसमें विविधमयुरा नमरा तट के वास्तव्य नमरा क्षेत्र के उत्तरा माग के बोहल प्रेम आभार राय के गुप्ति मर अनीय प्राण चन्द्रा राज्य पानीपत का नगन सनवा का भगन आदि स्थानों का भौगोलिक ऐतिहासिक तथा प्राकृतिक स्थितियाँ का तथा प्रेम के अनुभार सदाहनीय चित्रण किया गया है। तत्पिता ने भी तत् धर्म प्रियाह रा-पारोहण राज दरबार यज्ञ आदि सन्धृद्ध तत्कालान वातावरण का जति प्रेम तथा स्थान के अनुरूप भागन किया है। उद्गार पात्रों की विपत्ताभा का भी दशकाल के अनुरूप चित्रण किया है। उद्गारणाथ निम्नलिखित पक्तियाँ म गाँवर के चरित्र का दशकाल-नापक्ष वचन दतिए—

कण्टर जना समस्तमान हान के कारण वचन हिंदुओं को जिहाद का स्पर्श देकर उनसे अपने समस्त मनिरा के समस्त म विजय और यज्ञ का जाग नरति है।

जातिगत भी रचना न तत्पिता के जय निम्नलिखित लोका उद्गार ज्ञान—

- (अ) राजपूत घोरों एवं वाराणसीवा का गौरव-ज्ञान (आ) भारत में मुगल राज्य का स्थापना का कारण का विवरण (इ) तत्कालान राति नायिका भौगोलिक स्थितियाँ
- १२३ दत्तिये प्रातिगन (घ) पृष्ठ १८ १९ ३४ (झ) पृष्ठ ६४ ७६ (ङ) पृष्ठ ६४ ६८

आदि का यथातथ्य चित्रण। प्रथम उद्देश्य की पूर्ति के लिए मन्तिनागव और मणिमाना र चरित्रों को केंद्र रूप में रखा गया है। तृतीय उद्देश्य का अभिप्राय है कि हिन्दू राजाओं की फूट हिन्दुओं द्वारा मुसलमानों का परास्त करके क्षमा कर देना बाहर की कठोर नीति और उसकी महत्वाकांक्षाओं आदि का चित्रण किया गया है। त्रिविधमपराध नमदा आदि स्थानों के भौगोलिक वर्णन एवं राय्याभियन्त्र जैसी विभिन्न रीति-नीतियों के उल्लेख में तृतीय उद्देश्य की अभिव्यक्ति हुई है।

रस उपपास में प्रायः साहित्यिक दृष्टि का प्रयोग हुआ है। रसिका न अल्प गहन संचालन गिरोबिल्लु गाति निमित्त करा बिभोति आति समस्त गंगा का बहु जना में प्रयोग किया है किंतु मुसलमानों के उचितता में उद्गम की भी भरमार रही है। रस मंदिर से अतुल्य सम्पदा प्राप्त किया साथ में १०० सिपायियों की एक टुकड़ी भी भेजा दिया। सना को नया हान में मरिऊ से आध घंटे तक हाथ आति चावया मणि-वचन की अगुद्विया त्रिका की असावधानी की सूचना है। रस उपपास की गंगा वनप्रधान है जिसमें यथाप्रमाण चिन्तात्मकता (यद्ध वर्णन भौगोलिक चित्रण तथा राय-दरवार के दृश्यों में) नाटकीयता (संवाद तथा पात्रों के क्रिया-वाचक चित्रण में) तथा भावकता का सुन्दर समावेश हुआ है। चिन्तात्मक वर्णन में सवत्र प्रवाहक दृश्य हात हैं। यथा— चारा आर हृदय विदारक दृश्य उपस्थित हो गया। तापें आग बरमने गंगी और अग्नि गोल मनि का जो तुरत यमलाक पड़वाने लग। वातावरण की भयकरता के पाछे करण नन्दन और बीसव मार कान फटन लग। 'कही कही दृश्य विषय को मूल रूप देने के लिये त्रिका ने आन्तरिक गंगा का भी प्रयोग किया है। यथा— पुरी को तान दिया आ मे घरकर मथर गति से प्रवाहित नमदा एसी परिश्रित होती थी जसी कान् अतन मुन्दरी बच्चक। गोद में रखकर प्रीडा कर रनी हो।

अतः यह कहा जा सकता है कि नारी लखिवावा द्वारा लिखित ऐतिहासिक उपपास में इस दृष्टि का उल्लेखनीय स्थान है। रसमानभूमि पर बलि होने की क्षति याचित आन के प्रति असीम श्रद्धा व्यक्त की गई है। अतः राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना से अनुप्राणित होने के कारण भी इस उपपास का विषय महत्त्व है। भाषा शैली तथा कथा शिल्प की दृष्टि से त्रिका ने इस जीज्याकर प्रमाण के आत्म के अनुरूप रस का प्रयत्न किया है।

१७ कुमारी कमल का सक्सेना

कुमारी सक्सेना न गाय और वरदान गीतक तथा उपपास की रचना की है जिसमें कुल ६६ पृष्ठ हैं। इसमें नरेन्द्र और रूपा की सबसे छोटी पुत्री नीतिमा के जीवन

वत्त का चित्रा है। तत्विका न उनका अन्य पात्र सन्तानों के यत्किंच को विना उभार न दसर विवाहानि का उत्सख मात्र किया है जिसके कारण कथानक में बाधित परिपाक नहीं आ पाया है। वस्तुतः इस दृष्टि में एक दीघ कहानी का उपासक रूप में पल्लवित करने का असफल प्रयास किया गया है क्योंकि मूल कथा केवल ७४ पृष्ठा में समाप्त हो गई है। इसके बाद पावती ने नीलिमा द्वारा लिखित एक कहानी को पढ़कर उसकी सराहना मात्र की है।

लखिमा ने उपासक के प्रारम्भ में नरद्वार और रूपी व सुखी गृहस्थ जीवन का चित्रण किया है। उन्होंने अपना पुत्री नीलिमा का विवाह सम्बन्ध स्थिर कर लिया किन्तु सहसा नरद्वार की मृत्यु के फलस्वरूप सगाई टूट गई क्योंकि अब दहेज में सगाय था। नीलिमा ने विवाह न करके साक-सबा में जावन बितान का निश्चय किया। कुछ समय पश्चात् उनका प्रसा मुनकर उसके पूर्व-सम्बन्ध की नन्हा पावती उसका देखने आई और उसके रूप गुणों पर मुग्ध हो गई। नीलिमा की मरी मृत्यु के बाद 'गायक कहानी' तो उस अत्यधिक मार्मिक लगी। नीलिमा के यहाँ से जाते समय पावती उसके गुणों से अति प्रभावित थी, यहाँ कथान्त है। स्पष्ट है कि कथानक में राक्षसता और सम्भारता का अभाव है। लखिमा द्वारा समाविष्ट 'प्रासंगिक कथाएँ' (नीलिमा का सगा नीला द्वारा एक कथा की प्रेम कथा का वर्णन नीलिमा द्वारा माता के समक्ष एक पड़ोसी द्वारा पत्नी की हत्या का विवरण नीलिमा द्वारा लिखित कथा में कथानायिका मजु का चरित्र चित्रण) भी उपासक में अपनी साधकता सिद्ध नहीं कर पाई हैं। उनका समावेश का एक ही लक्ष्य है—कथानक का मनकेन्द्रकारण विस्तार।

प्रस्तुत उपासक में मुख्य पात्रा (नरद्वार रूपी नीलिमा) का विविध गुणों से विभूषित दिखाया गया है जिनका प्रसा गीत पात्रा द्वारा स्थान स्थान पर कराई गई है। चरित्र चित्रण में उतार चढ़ाव अथवा सपथ न होकर सवा-याजना तथा परिस्थिति वर्णन द्वारा गुणों का आख्यान मात्र किया गया है। यथा—रूपी तो एक ही बात जानती थी और यह यह कि जावन के समय के साथ आग बल्ल जानता। नरद्वार और भयकर तूफानों का उद्भव-सङ्कार जाग चलते रहना।^१ लखिमा ने कथापर्वचन की याजना भी सुचारु रूप में नहीं की है। नवागम में निरपेक्ष विस्तार को प्रायः लीखित किया जाना है।^२ तथापि नीलिमा और उसकी सखियों के वात्सलापत्राय सरस रहे हैं।

गायका परदास का प्रारम्भ रसिकान्तेन प्रकृति सौन्दर्य के चित्रण से हुआ है।^३ उसका अतिरिक्त दण्डास का निरूपण दो अन्य रूपों में हुआ है—एक ओर लखिका ने

१ दलिये गाय या बरदान, पृष्ठ ३६ ४१ ५२ ७२

२ गाय या बरदान पृष्ठ ७१

३ दलिये गाय या बरदान, पृष्ठ २५

दहेज समस्या नारी शिक्षा समस्या जादि का विविध स्वरूप पर उभर आया है और दूसरी ओर नीतिमायुक्त कहानी भरी मृत्यु व शाद म कायस व भारत छोड़ो आन्दोलन के फलस्वरूप हुए पाठी चाञ्चल चित्रण किया है।^१ उपयाम का भाषा में 'याव' द्वारिकता को विविध स्थान मिला है जत महावरा उद्धू गंगा भूमि राम्या, लोभ 'यव' उपमाया आदि को प्रायः प्रयुक्त किया गया है। उपयाम में अभिजात का मान्य यह रहा है कि जीवन व अभिजात को भी परमानन्द रूप में ग्रहण किया जाना चाहिये। रूपा का वध और पितृहीन नीतिमा व विवाह में राधा अभिजात में कम नहीं है किन्तु उद्धान विषय परिस्थितियाँ में जिस साहस का परिचय दिया उनमें यह सिद्ध हो जाता है कि दुःख को भी मुक्त में बदला जा सकता है। तथापि यह अत्यन्त ही है कि ललित नम्र महत् उद्देश्य का उचित रीति में निर्वाह मिला किया है।

१८ सुधा निदरा 'नूपुर'

इन्दिरा जी ने सपने मान और हठ तथा वह कौन थी नीपक दो उपयामों की रचना की है जिनमें से प्रथम में सामाजिक कथानक को स्थान दिया गया है और दूसरा उपयाम घटनाप्रधान तथा काव्यनिक है। सुविधा के लिए इनका पञ्चम्यक निरूपण उचित होगा।

(अ) सपने मान और हठ

इस उपयाम में १७३ पृष्ठ और ६३ परिच्छेद हैं। इसका कथानक इस प्रकार है— सजय से विवाह करके गिता के स्वप्न साकार न हुए। इसका मुख्य कारण था शिता का सौमित्र सप्तवर्षीय पुत्र परिमन जिस चाहकर भी वह अपना न बना पाई। परिमन की हठी प्रकृति तथा सजय के अविश्वास के कारण यह संभव न हो सका। नित्य की अप्रिय परिस्थिति से ऊबकर गिता पनि गृह त्यागकर एक नया विद्यालय की मुख्याध्यापिका नियुक्त होकर रानीगैत चली गई। उसकी अनुपस्थिति में परिमन के हृदय में उसके प्रति मात स्नेह की जागृता का जन्म दिया फलतः वह छानावास में रहने लगा। गिता ने यह समाचार पाकर जब अपनी परिचया शरा उन मृत्यु व मुख से नीटा लिया तो सजय का उसके प्रति पूर्व अविश्वास (पुनः स्नेह के प्रसंग में) रोष मान सब स्वतः मिट गए और उसने अपने पक्ष दृष्टि पर अनुरोध करत हुए पत्नी से लखनऊ लौट चलने का स्नेहपूर्ण आग्रह किया। इस प्रकार पुत्र का हठ और पति का मान वह जान स गिता के मूर्च्छित स्वप्न सजय होकर खिल उठ।

उक्त सक्षिप्त कथानक को उपयामोचित आकार प्रदान करत हुए ललित ने अखिर (सजय का मित्र) साधना (सजय की बात सहचरी पति व्यवस्था होने पर सजय

का जाश्रिता) जानन्द (गिता का प्रमी एव उसस विवाह का चूक) रचना और जाग्य (सुखा दम्पति ननीतात म क्षिता व सह यात्री वा म उसक मिन) आदि गोण पाना का जावन गावाभा को प्रासंगिक रूपम उपयाम म स्थान दिया है और मुख्य कथा मूषा म कुगता व सपवन विवाह है। इस कथानक म लखिका का जाग्यवादिता क प्रति विशेष जाग्रह रहा है। गिता और सजय क चरित्र उक्त तथ्य व प्रमाणरूप म उत्पन्न यनाय है। पति मट-ध्याग क उपरान्त गिता के व्यक्ति व स प्रभावित हाकर अग्नि न म अपनी गीत सत्चरा बनान का कामना उक्त की धनी मानी इजानियर सानद न भी उसस अपनी पत्नी बनन का जाग्रह किया किन्तु वह साता और सावित्री को भाति मन म सजय व चरणा म प्राति का जन अपित करनी रही (चा मजय न कभा उन पत्नी का प्रम तथा आदर प्रदान नहीं किया था)। उधर मजय साधना क घनिष्ठ सम्पर्क म रहकर भी चरित्र की दृष्टि स उसस नितित्त रहा। जात्मानिमान क कारण वह धिना का मनान ननातान तो न गया किन्तु मन ही मन वह उसी की स्मृति म लीन रहता था।

गोण पुरुष पाथा म अखिन का स्नहपूर्ण भावन यकित्व तथा ममाज सवा की एताप्रती, आनन्द का विदेगी रम म रजित चचल यकित्व और जादग का पनी प्रम उत्पन्ननाय है। माण पाथाभा म साधना का त्याग और कमठता और रचना की प्रम मया भावुक भावनाए विगपत उल्लेखनीय हैं। उक्त पाथा म लखिका न जहाँ अवसग मुकुल दिग्ग विगपताभा का समाश्रय किया है वहाँ अनका उनकी मानवाचित दुब नतावा का सक्त स्वर उह अतिमानव होने स भी बचा लिया है। बालक परिमल क बाव मनोपिपान व चित्रण म लखिका विगप मफल रही हैं। कथानक म मन्त्रिविष्ट पन्नाए रोचक है किन्तु उनका प्रमुख बध्य पाथा की चारित्रिक विगपताभा को गति प्रदान करना रहा है।

पाथो व वयोवृद्धता म उनका मनोभावा विद्वाना एव व्याग्रा का मुग्ध अनि यकित्व हुई है। ध्यापायाम म परिमल क अपन मित्र रजन व प्रति वात्तानापा म उनका गिता व प्रति ध्यागता अपन पूव हठ व तिण अनुवाप आदि भावा का मार्मिक उल्लेख

१

६

प्रति प्रत्युत्तरा म उसी चारित्रिक दुर्गता भारतीय गौरव आदि विगपताभा का परिचय प्राप्त होता है। अग्नि व प्रति गिता को निम्नविविध उक्ति दगावात व प्रता म उद्धर नीय है— अग्नि व बाबू ! वह दिन तपन हा गए अब नारी का पत्नीत्व का तुहारी स्वर पुरुष पत्नी बाल-सा कुचा सता था। आज उसका भी अपनी एव आम्मा है एव विवाह

१ बेसिये तपन मान घोर हठ, पृष्ठ १२० १२२

२ रतिय तपन मान घोर हठ, पृष्ठ १२५ १३१, १३८ १४३

है एक अभिमान है।^१ इस उपन्यास का उद्देश्य भारतीय नारी का जागृत गौरव का ज्वन करना है। वर्तमान जामरूप नारी प्राचीन नारी की भाँति पति की प्रत्यक्ष आज्ञा के सम्मुख चाह मस्तन नहीं भुका पाती किन्तु फिर भी चरित्र की दृष्टि से उसका स्तर पूर्ववत् महान है ससार का कोई भी नायक उस उमर सीता सावित्री के चरित्राङ्ग में भ्रष्ट नहीं कर सकता।^२ पति का पत्नी की भावनाओं का समझना उस पर प्रति जनकस आचरण करना चाहिए जयश्या पत्नी की अप्रसन्नता पर सार परिवार की मुग्न भाँति के नष्ट होने की सम्भावना है। भारतीय नारी को जयश्या परातन पर अवस्थित करन का कामना से लेखिका ने गिजा के चरित्र का आवश्यकता से अधिक जागृतता दे रखी है। अपनी कहानियों की भाँति प्रस्तुत उपन्यास में भी उन्होंने जीवन के सुख दुःख का सहज एवं भावपूर्ण धरातल पर चित्रित किया है। लेखिका ने सरन एवं पाशानुकूल भाषा गली में कथानक का अत्यन्त स्वाभाविक रूप में विकसित किया है।

(जा) वह कौन थी

इस उपन्यास में पुनर्जन्म के सिद्धांत में विश्वास रखते हुए एक काल्पनिक कथा प्रस्तुत की गई है। उपन्यास की रचना करते समय लेखिका थी हैमन्त की जायगा गीपक कृति से अप्रत्यक्ष रूप में प्रभावित रही हैं। प्रस्तुत उपन्यास में सिद्धांत नामक बयोवृद्ध पान की जीवनकथा का आत्मकथा की भाँति प्रयुक्त किया गया है। किन्तु उपन्यास का मुख्य पान मिट्टान न हारन गरद है जो जागृत पुनर्जन्म मानने पर भी सिद्धांत का अनिश्चित मित्र है। उपन्यास में चार पान मुख्य हैं जिनके पूर्वजन्म का यण इतिवत्त न कर वर्तमान जीवन और दो सहस्र वर्ष पूर्व के जीवन की विविध प्रममा में चर्चा की गई है। ये पान हैं—गरद महामाया नवीना और सिद्धांत जादो सहस्र वर्ष पूर्व जन्म उदयन मल्लिका मागधा और रत्नाकरर। इनमें से महामाया का अत्यन्त जीवन गति प्राप्त थी किन्तु उसके अतिरिक्त अन्य तीनों पान पूर्व जन्म के इतिवत्त से सवथा अनिश्चित। उपन्यास की मूल कथा को प्रारम्भ करने से पूर्व लेखिका ने पण्डभूमि के रूप में यह उल्लेख किया है कि गरद और सिद्धांत को विश्व भ्रमण करते समय कोर की गुफा में मल्लिका मिली थी—वही मल्लिका जादो सहस्र वर्ष पूर्व उदयन (गरद) से प्रेम करती थी। इस बार भी उन दोनों के प्रेम की सफल परिणति से पूर्व ही मल्लिका की मृत्यु हो गई किन्तु वह पुनर्जन्म मिलने का अवसरान्तर देती गई।

मल्लिका के विरह में विह्वल होकर गरद ने सिद्धांत की सहायता से उसकी खोज प्रारम्भ की क्योंकि उन्हें विश्वास था कि देवी मल्लिका का पुनर्जन्म अवश्य हुआ है। विषय

१ सपन मान और हठ पृष्ठ ६१

२ देखिय सपन मान और हठ पृष्ठ १४३

३ देखिय वह कौन थी ग्राम्य पृष्ठ ५

पवतीय भागा को पार करत हुए जन्तव वं कस्तू प्रणेत पदुचं । इस प्रकार उन्होंने प्रायः
बीम वषा तत्र जयक साधना की और इस सम्पूर्ण अवधि में एक जन्म शक्ति उनको
सहायता करती रहती जा जयवाई न होकर महामाया (मल्लिका) थी । कुलू प्रणेत म
वे नवीना (माया) व अतिथि रह जा गरद पर आसक्त हो गई किन्तु परिस्थितियों
में योग्य मध्य करत हुए व महामाया व पास पदुचं । इसके उपरान्त नवीना और महा
माया व सघष नवीना का मृत्यु महामाया द्वारा निश्चिन की गई समय-अवधि का परि
पावन न करन कारण गरद की मृत्यु न दुःख से अवसन्न होकर महामाया द्वारा
गरीर योग जाति घटनाओं का रोचक वर्णन किया गया है । कथानक में स्वाभाविकता
तान व त्रिा त्रिा न प्रकृति व मनोरम चित्रा की जनक मणि की है किन्तु तनक
जतिरिक्त उपयोग में मवन कल्पना का ऐसा प्रवाह है कि आयोजित दृश्या को अभिव्य
मानना में अधिक उपयुक्त होगा । गरद गरा स्वप्ना में अविष्य गान और महामाया
द्वारा जनक वार अमाननाय गति का प्रदान ऐसी ही घटना है । यहाँ एक जनगति
का निर्माण करना जगत्प्रतिष्ठ न होगा—महामाया से हजारों मील दूर अद्वितीय मध्यपरत
गरद वार घण्टा वा मल्लिका के पास लोट आया । तबिका न ऐसी ही अनेक अवधि
सनीय वाता को राचनना और जाप्यात्मिकता व सदभ में व्यक्त किया है जिससे उपवास
की गरिमा का हानि पदुची है और उसका काद निश्चित उद्देश्य हमारे समक्ष स्पष्ट
नहीं हो पाया है ।

कथानक की विचित्रताओं के पक्षस्वरूप प्रस्तुत उपवास में चरित्र चित्रण की रचनात्मक धरातल पर स्थिर नहीं रह सका है। गरल और मिठाई का मिश्रण ही प्रति गरल का आयुक्ततामिश्रित प्रेम शर का प्रति नवीना की वासना आदि कुछ ही प्रेम प्रसंग हैं जिन्हें यथाय की भूमि पर जवस्थित माना जा सकता है। अथवा मोना के बाबा यशुन महामाया उमर सहायक कुछक जाति का अस्तित्व तथा रहस्यास्पद है कि न तो उस यथाय माना जा सकता है और न ही आश्रय। उन सबका ध्यानत्व माना एक ऐसा है जो जान है जिसमें तबिका पाठका का सहज सम्मोहित कर लेना चाहती है। कुतूहल के माग में गरल में निवृत्तता देवता की ऐसा ही रहस्यमय व्यक्ति है। अन्त में यह नहीना उचित हाया नि यद्यपि तबिका न कथा विकान के गाय-गाय चरित्र चित्रण की ओर भी यथोचित ध्यान दिया है तथापि उनका पात्र सत्य पादित मामि प्रभाव नहीं डाल पाने क्योंकि उनका चरित्र का निर्माण प्रायः जनप्रिया अथवा अध्वानाधिकताओं की आधार भूमि पर हुआ है। यद्यपि प्रस्तुत उपवास का यथाय भी नहीना उचित हाया नि यद्यपि तबिका न कथा विकान के गाय-गाय चरित्र चित्रण की ओर भी यथोचित ध्यान दिया है तथापि उनका पात्र सत्य पादित मामि प्रभाव नहीं डाल पाने क्योंकि उनका चरित्र का निर्माण प्रायः जनप्रिया अथवा अध्वानाधिकताओं की आधार भूमि पर हुआ है।

यद्यपि प्रस्तुत उपपास का नयानक अक्षटित अत्वाभाविक प्रसंगा का जान है और अनियम पात्रा न प्रमाननीय गचित न प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष बिन्दु विद्यमान हैं तथापि

१ बलिव 'यह कौन था' पृष्ठ १२, ३६, १६८, १७८ १६८
२ बेगिये 'यह कौन था', पृष्ठ १६०

२ देगिये 'यह जोन था, पृष्ठ १६०

कथोपकथन के सौंदर्य का मूल्यांकन इन दोनों तत्वों का परीक्षा करने से ही किया जा सकता है। सर्वप्रथम उत्पत्तिनीय विषयता यह है कि त्रिखिता न मन्वा १ म घटना का अथवा चारित्रिक प्रवृत्ति का वक्षिष्यमूलक कथन किया है। तब ही त्रिखिता की दुर्गता और सिद्धांत का उत्पत्ति मन्वाग भावना का अनुमान उनसे मन्वा १ म घटना ही हो जाता है। इस दृष्टि के सवाग का एक अन्य गुण यह है कि यह मन्वा का जिज्ञासा को निरन्तर प्रबुद्ध रखते हैं अथवा कथानक में राचकता और सजीवता के मन्वा १ म उनका अन्य सहयोग है। त्रिखिता न कथोपकथन में एक अन्य विषयता यह है कि यह दृष्टि का नुस्ख है—“मन्वा १ को ही नन्वा पात्रों की भाव नगिमा का और जाचरण का भी तन्त्र रूप रखा गया है। यथा—

‘उस निस्त-घटा के बीच अचानक ही महामाया की आवाज गूँज उठी— मन्वा माया के प्रिय की ओर दबो ।’

महामाया के स्वामी का स्वागत है। पुजारिया ने एक साथ भक्त-एकता ।’

जिज्ञासु उपवास में दृष्टिकान के पद हैं—एक और प्रवृत्ति के कतिपय दृष्टि को साकार करने का प्रयत्न किया गया है और दूसरी ओर कुनू प्रवृत्ति और महामाया की नगरी की सामाजिक एवं नासनिव प्रथाओं का कल्पना कौशल द्वारा अतिरिक्त वर्णन किया गया है। इनमें प्रथम की समीक्षा ही विषय साधनात्मक हागा कथानक त्रिखिता की विगड कल्पना होने के कारण द्वितीय पक्ष की विवचना समकालीन अथवा तत्कालीन दृष्टिकान में से किसी भी दृष्टि से संभव नहीं है। प्राकृतिक वातावरण की जिन व्यक्ति त्रिखिता ने दोनों रूपों में की है—उन्होंने प्रकृति के कामन रूपों का ता मनाहारी विचार किया है ^१ उससे उग्र चित्र (भयकर गीत रागि रागि अथवा हिमलट धारण आदि) भी प्रस्तुत उपवास में विरल नहीं है। ^२ तथापि यह स्वीकार करना होगा कि कथानक का सम्पूर्ण पर्वत प्रदग्ग में रहने पर भी इस कथन में प्रकृति निरूपण का प्रति निधि स्थान नहीं मिला है।

प्रस्तुत उपवास का मुख्य उद्देश्य पाठक का पुनर्जन्म के सिद्धान्त के प्रति आस्था दान बनाना है किन्तु इसमें उद्देश्य यथाचित सफलता नहीं मिली है। कारण स्पष्ट है—यदि उन्होंने प्रस्तुत कथानक का ऐतिहासिकता और आध्यात्मिकता का बोध न पहनाकर इस विगड सामाजिक स्तर पर प्रस्तुत किया होता तो वह निश्चय ही अधिक सफल होता। प्रथम आमल में उन्होंने पुनर्जन्म का जिन दो घटनाओं का उत्पत्ति किया है उन्हीं का अथवा वसी ही किसी अन्य घटना को पल्लवित करके वह अधिक कृतवाय हो सकती था। उपवास का एक अन्य उद्देश्य वासना के गहिरे रूप की तन्त्रा में प्रेम की पवित्रता

१ वह कौन थी, पृष्ठ १४४

२ देखिये वह कौन थी (अ) पृष्ठ १९ २९ (आ) पृष्ठ ३४ ३७ ४३

४ देखिये वह कौन थी, प्रामल पृष्ठ ३४

का विद्गन्त कराना है। नवीना (माता) और महामाया (मल्लिका) के भाव वषट्प
म इमा उद्देश्य की सफल योजना हुई है। लक्ष्मिका ने गरुड और सिद्धांत के सोहाद का
भी साभिप्राय चिन्तित किया है। अतः इस भा प्रभुत कृति का उद्देश्य माना जा सकता
है।

प्रस्तुत उपयोग का व्यापक प्रायः दासह्य वषा की अवधि में गतिमान रहा है। अतः इस बात का पचाप्त सम्भावना भी कि इसका भाषा प्रसार भी की भाषा का भाषा विहित जटिल है। निम्न वस्तुस्थिति यह नहीं है। लविका में भाषा का प्रायः व्यापक हासिल रहा है। तथापि सामाजिक सामाजिक उपयोग का अपवाद संस्कृत व तत्सम भाषा व अधिक प्रयोग का भी असम सहज हो विहित किया जा सकता है। दूसरी ओर हमें कुछ प्रयोग की रीति नीतियों की ध्वस्त करनवां प्रतिपक्ष प्रायोगिक भाषा का प्रयोग भी अपवादित हो सकता है। निम्न प्राथमिक उपयोग न होना व कारण इस लविका की अनुपलब्धि नहीं माना जा सकता है। वस उनका भाषा में भाषा साहित्य संक्षिप्त वाक्य विद्या भाषा की सजीव प्रावर्तितता आदि गुणों को सहज ही देखा जा सकता है।

उपयुक्त विवरण व अनंतर यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि इंदिरा नूपुर न प्रस्तुत उपयास में क्या गिल्फ की दृष्टि से एक नवीन प्रयोग प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। कथानक के सगठन व विषय में हमारा उनमें मतभेद अवश्य है किन्तु उपयास में तब्य तथा निर्वाह करने का संभावनाएं उनमें हैं इस अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

१८ सुनी दानु तला शुक्ल

मुन्नी साधुसिला पवन न अहरे उजानक कन तथा पथ राजल क्षीयक न मामा
जिन उपपामा की गनना सी है। इतम पावन प्रम एव चारित्रिक दुन्दुना का मदश छवित
है।

(જ) અપર હજાલે ક ફલ

ध्यामती कुच न हस्त वेष्याम का रचना १३८ पट्टा ओर २२ परिच्छिन्ना म की है। इसका क्यानक गिराण एव मत्स्या क चतुर्गुणिक धूमता दूना पाटका त गि चामित्रिक कुडा एव मानविन गभिन का गन्ध ध्वनित करता है। गिराण मिथुन युवन । ओर मत्स्या पात्र विषका मवता । परिच्छिदति चन्द्र व परिणामिन्धवा पात्र नि दाता । ता पात्र पय दुना ओर अथाधोम ही उनम भ्रात ननिना का पापन स्नह मिमिन हान लगा । प्रियणी स्नान त अवसरपर तया क एवमात्र पम्ब या यस्त नाना भाव व कुचन १५ ता निराशिता कत्या गिराण व पर उमका छाटी बहिन की नीन रान जमा। गिराण का मिष प त उ(गनी नाना एव प्रियणी युवन) नचा । दृश्य प्रम कता का तितु तया अपन का मूत्र पति की पराहर उपकार नागरिक मह माता की ओर मिरका एव

निविहार रहती जाई। उसने दुःख नि चय से निराग चन्दा तने रगाना रया मस विवाह कर लिया जा निराश्रिता होने के कारण सत्या के ही ममान था। उसी त्रिवणो पव म उसके माता पिता भी कुचन गय थे और चन्दाकान्त ने अपना पुत्रिया का भार सोप गय थे। वह अपनी दानो बहिना के साथ उसी के घर रहती थी जो मम प्रम करती थी। चन्द्रकांत की ममरी बहिन बन्ना गिरीग से प्रम करता थी किन्तु गिरीग अपनी मत्त पत्नी की स्मृति का नकर ही सन्तुष्ट था। जन्त म गिरीग के जापह से वन्दना ने गेखर से विवाह कर लिया जा एक मरनहृत्त्य और मवापरायण युवक था। उपयुक्त मुख्य कथा के अतिरिक्त इस उपन्यास म प्रसंगवत् जनक गौण कथाओं का भी समावेश हुआ है—

(अ) गिरीग के मित्र भर्तुस की विधवा साधा बाणा की कथा (पति की मत्तु के उपरान्त सरल और सादा जीवन किन्तु सुरेग नामक एक युवक द्वारा उससे बहिन का सम्बन्ध स्थापित करके बाद म विश्वासघात पलस्वरूप एक पुत्रो का जन्म बाणा की उससे प्रति घणा पुरुष जाति के प्रति विरह आदि)।

(आ) गिरीग की रिश्ते की बहिन सावित्री दीदा की कथा (पति द्वारा जत्या चार होने पर भी उनके प्रति एकनिष्ठ प्रेम बदाना म चलकर मत्त आदि)।

(इ) गिरीग के पड़ोसी मि वमा तथा उनकी पत्नी किरण की कथा (किरण बाध थी किन्तु मातृत्व की इच्छा उसमें इतनी प्रबल थी कि एक गुड्ड को अपना बच्चा मानकर उसकी सेवा गुरूपा म तीन रहकर पागला का सा आचरण करता रहती थी)।

आलाप्य नखिका ने प्रमुख एवं गौण कथाओं का समुचित संयोजन किया है फलतः कथानक सुगठित एवं मन्तुनित हो सका है। इस वृत्ति में घटनाओं की अपेक्षा चरित्र चित्रण को प्राथमिकता दी गई है। पात्रों की एक प्रमुख विशेषता जो सबसे समान रूप से है यह है कि वे जिससे भी अनुराग करते हैं एकनिष्ठ होकर करते हैं चाहे उनका प्रेमपान उनसे विरक्त हो क्या न रहे। सत्या गिरीग वन्दना चन्द्रकांत हेम गेखर जाति सभी मुख्य पात्र इसी प्रकार के हैं। सत्या और गिरीग में तो आदर्श प्रेम का परा काण्डा है क्योंकि वे अपने मत्त जीवन साधियों की स्मृति में ही लीन रहते हैं। सत्या का सा नखिका ने देवी के पावन सिंहासन पर प्रतिष्ठित कर नारी सुलभ ईश्या रूप तथा राग विराग से मुक्त रखा है किन्तु वन्दना बाणा सावित्री आदि अन्य पात्रों के पक्ष में उन्होंने नारी मनोविज्ञान सम्मत सहज चित्रण किया है। इसी प्रकार पुरुष पात्रों में गिरीग के अतिरिक्त चन्द्रकांत गेखर आदि पात्रों के चरित्र मनोवैज्ञानिक बन पड़े हैं। फिर भी यह ता मानना ही पड़गा कि नखिका ने अपने पात्र पात्रों को सदगुणों का हा विषय उभारा है तुलनाओं की ओर उतना ध्यान नहीं दिया।

पात्रों के व्यक्तित्व एवं परिस्थितिपरक विविधता का नक्ष्य में रखते हुए नखिका ने यह एवं सजीव कथापकथना का विधान किया है। पात्रों की उक्तियाँ एक ओर कथानक का नाटकीय सौन्दर्य से विनूयित कर रही हैं दूसरी ओर उनमें पात्रों के जातिरिक्त

भाव सहज ही प्रतिबिम्बित हो उठे हैं। उग्रहरणाय वदकात् और वाणा क कथन प्रायः व्याघ्र का तात्रता तक विनय का आतुरता एवं उनके अन्तर के विद्रोह का द्योतक है, ता गिरीग और मत्स्या को उक्तिया उनके तरल विश्वास वक्तव्यपरायणता एवं धार्मिक श्रद्धा का द्योतक है।^१

प्रश्न यह कि म त्तिका न इन नमस्या पर विचार किया है कि क्या भारत का प्राचीन मन्त्रिक जनरूप यशस्वी विद्यया अथवा युवक विधुर का समय या वरामय का जीवन बिताना चाहिये अथवा प्रगतिमान मुग्धरावादी विचारों का अनुकूल दूसरा विवाह कर देना चाहिये। मत्स्या एवं गिरीग का जीवन का आदर्श रूप में रखते हुए उनके नमस्या का जो उपायान तन्त्रिका न किया है यह है कि यदि विद्यया अथवा विधुर समय एवं सदाचार में रहें मत्स्या उनमें अपनी मानसिक दृष्टि हो कि वे समस्याओं में अपने जूझ सकें तो उनका निग विवाह निरवय है। इस प्रश्न में मत्स्या के समक्ष यशस्वी की गई गिरीग की प्रस्तुत उक्ति उद्घरणाय है—'सुनो मत्स्या विद्यया हा जाना हा तारी जीवन का धर्म व्यथता नहीं है और न वाद भा जीवन सम्पूर्णतः साधक अथवा व्यथ हाता है। जीवन में पूर्णता तथा अपूर्णता का धक्कर चलता हा रहता है। जीवन का सामान्य स्तर से उठकर विचार करने की क्षमता जिसमें भा मकी वह जीवन कभी भी व्यथ नहीं कहा जायगा।'^२

जसा कि आपस से ध्वनित है जीवन की मुख दुःखमयी अनुभूतिया का मुख रित करना जात्राण्य कृति का लक्ष्य है। मानवता का आदर्श यहा है कि निग की नीति गरल का पात्र कर दूसरा का कष्ट निवारणाय अपने स्वार्थों का बहिदान कर। जात्राण्य कृति का आपस पात्र (मत्स्या और गिरीग) आपसतिया में भा धय नहीं खात और मुख में समय का पलायन नहीं रहते हैं। यही निरिक्तता जो भारतीय धर्म ग्रन्थों का सार है प्रस्तुत उपयान का लक्ष्य है। तन्त्रिका कि यह दृढ़ धारणा है कि मनुष्य में दुर्बलताएँ होती हैं किन्तु उनसे ऊपर उठना हा मानवता है।

विषय उपयान की भाषा तरल बहुरा एवं समस्त पदा न सुगुम्भित हान पर भा विनष्ट नहीं है क्योंकि उसमें वाक्य प्रायः त्रुटि एवं सुनिर्वाजित हैं। मूलिक-वाक्या का प्राचय जाताऊँ भाषा गती की गुम्भारता का द्योतक है। यथा—(अ) स्नेह एवं स्वर्ग मणि-ता मन का रिक्तता में स्वर्ण हो स्वर्ण नर होता है। (आ) यह मन भा मानो एक धारा नीला आकाश है—धूल गन्, वायु विजरा और इन सबका अन्त में चला स्वाद्य निर्मेष अस्तर।^३ पात्र की विचारधारा का आशयन करत मनन तन्त्रिका न प्रायः गुरुपरिपर आदि अत्रो वक्ताकारा अथवा अन्तर का बहिर्भा का उक्तिया यत्र

१ बसिय धपरे उजात के पूर, पृष्ठ २५ २५ ३० ३१ ३६

२ बसिय धपरे उजात के पूर, पृष्ठ ३६ ३७ ६७

३ ४५ धपरे उजात के पूर, पृष्ठ २१ १६, ६६

तन उन्नत की हैं^१ जो अवसरानकून उपपन्न प्रतीत होती है।

(ग) पय का जल

रघुवीर यात्रा की पृष्ठभूमि का रंगकान इतना ही है— 'मन न अपन आस पास व जीवन की न-कियाँ उस दायकर उनसे कुछ मूढ हर तिन-वन वनकर यह छाटा सा नीला बना दिया है जिसके पछियाँ व बनरस में वही उन्नास है ता वही विपन्न' कहा राना ता वही मरनाम वह भी जानुआ स भीभी हूँ। कुन्नाया असन्तोष तथा अस्तिचित्त यकित्तव व प्रतीक और र वासयिका न पय का जल की सगा दी है। धीरे र अपनी पत्नी मारा का हृदय से चाहता था किन्तु कायरतावत् अपनी माता तथा बहिन व अत्याचारा का विरोध न कर पान से वह उम प्रमत्त न रख मवा और दो रात्रका का जम दन के उपरांत भीरा क्षयरगिणा होकर स्वयं निवार गइ। धार र न भीरा की सखी सुपमा में विवाह की प्रायना करके अपने अभावप्रस्त जीवन की लाई को भरने का प्रयत्न किया किन्तु सुपमा उस न अपना सकी क्योंकि वह सयत विवर्णनीय तथा अध्ववसायी कानव को चाहती थी। सुपमा की ओर स निराग होकर धार र ने कानव क मिन डा धर्मा की बहिन नीला से विवाह की इच्छा व्यक्त की किन्तु नाता भी कानव को हृदय द बठी थी। परिस्थितियाँ क उत्तर बढाय स कानव और सुपमा का विवाह हो गया नीला न जाजम ब्रह्मचारिणी रहने का प्रण किया और धार र का जीवन मरस्यल की भाँति गूँघ ही रहा। उपपन्न मरस्य कथा क अतिरिक्त कानव की दम्नि काता तथा उसका पति हरीग व दाम्पत्य जीवन क मुख दुःख की प्राप्त गिक कथा भी गौण रूप में प्रस्तुत की गई है। विवाह क बाद हरीग कुछ समय तक अपने कार्यालय की सहकर्मिणी मनु क प्रति आकृष्ट रहा, किन्तु पत्नी व गभवती हाने पर मनु क प्रति विमुख हो गया। उक्त दानो कथाएँ सुगुम्फित हैं। पूर्वापर रम की सुभू र्णित याजना द्वारा रसिका ने कथानक को सुगठित तथा रोचक बनाया है। घटना बाह्यत्व की अपथा उलान पाना की चारित्रिक विपत्ताया व प्रकाशन पर वन दिया है। विषय की दृष्टि में प्रस्तुत कृति का धन सीमित है। इसमें कवन सामाजिक क्षेत्र का स्पष्ट किया गया है वह भी विविध दृष्टिकोणा से नहीं। रसिका न नवल न नजातीय विवाह की समस्या प्रस्तुत का है समकालीन जनत दत्ताता का इसमें अभाव है। फिर भी कथानक की सजीवता तथा सुगुम्फन रसकी उत्पत्तनाय विपत्ताएँ हैं।

धार र तथा कानव का चारित्रिक विपत्ताया का ताना इस उप धाम का लक्ष्य है। रर र अवलम्बित चित्त का रूप तातुप पुष्प है ता कानव सयत विवेकाल तथा

१ दक्षिण छपर उज्जान क फून पृष्ठ २२ ५२ ६८ १०१ १०७

२ पय का जल दो गान पृष्ठ ७

मातर की नीति गम्भीर प्रकृति का यकिन है। जय पुष्प पात्रा में पत्नी से विद्वामयात वरनवाना रूप मोनोहरीय घोरद्व की वाटि का ह और गस्टर वमा मारता गम्भीरता तथा सज्जनता में गगन के समस्त ठहरत है। नारी पात्रा के चरित्र चित्रण में ललिका को जय साहूत अतिरिक्त सफनता मिला है। मारा सुपमा का ना तथा नीला के मनोभावा एव शिवा-क नायक मारा मनोविज्ञान के अनुरूप भमना मोहा एकनिष्ठता सहन गीतता आदि गुणा का उचित निवाह किया गया है। सुपमा का प्रगर तजस्वी व्यक्तित्व उस समय पक्ष करता है। हरीय का पवध्रष्ट करनेवाला मज न नितनीनुमा मारा यग की प्रताप ह ना थाह्य मोन्य का प्रमाणनादि न अवरुण करक पर पुरुषा का अन हृष्यन की हृष्य। स समाज का चरित्र करता है। विवच्य कृति के सभा पात्र मानवत्व की सामा मन्दर हा अपन गुणा एव गुणा का प्रमाणन करन है। ललिका न चरित्र चित्रण के लिए सभा याजना प्रत्यक्ष-वचन तथा मनोभावा के चित्रण का मुख्य मायन का रूप में प्रदृष्ट किया है। निम्नस्वयन्विद्या में तीन प्रकार के उद्धरण प्रस्तुत हैं—

(१) त्रिविधा का टिप्पणा— व्यवस्थित गगन की भाति उसका कमरा भी व्यवस्थित था।^१

(आ) गीर के विषय में गगन की सुपमा के प्रति कथित उक्ति— इस अव्यवस्थित मन के गंगा का प्रभाव प्रायः अज्ञा नष्टा पन्ता। उनर निरद के योगा को भी प्रायः कष्ट उठाना पड़ता है।^२

(इ) सुपमा के उचित निश्चय का अवन— उसने सोच लिया कि अपने प्रम गीर निष्ठा का यदि स्वर भा वह अपना माँ का अतिम दया पूरी करती।^३

पात्रानुक्रम मवा-याजना में आलाप्य ललिका विषय कुतर्क है। इस मवा- में पात्रा की तारकाविक मन स्थिति का उपयुक्त अभिव्यक्ति हुई है। धीरे-धीरे दूनर विवाह की श्रेष्ठ मवा माता के उमर प्रति सवाद तथा सुपमा को लेकर धीरे-धीरे का गगन के प्रति व्यंग्यपूर्ण वातावाप के प्रसंग में उतारनीय है। गगन का सयन पात्रा के वयापनयन उमर नतिव शिवरगोल बलि तथा गम्भाय के परिचायक है। अगिराग वयापनयन वयानन के विकास में सहायक रहते हैं। निरद के वातावाप का शिविका न वही भी प्रमय नहीं दिया है। गीर के बीच में ही कष्ट पडा माँ के स्वर ना बदल धार मस्तराया माँ गीर भी उत्तजित हो उठी जब चित्रात्मक वावर मवा याजना की नाशाय बनान में विषय उत्पन्न रहते हैं।

मुम गहुनता गुनन प्रस्तुत उपचार न अ गजातीव विवाह की समस्या का उपाय है। यद्यपि भारत में जाति-धर्म का सकारणार्थ अर उतनी गायक नहीं है

१ २३ पक्ष का जल पृष्ठ २५ ३३ १४६

४५ इति पक्ष का जल पृष्ठ ५५ ११० १११

५ पक्ष का जल पृष्ठ ५५

तथापि मस्कारग्रस्त व्यक्ति उनसे निपट रहना चाहते हैं। सुपमा और नीचा का प्रेम याता का जानने पर भी सुपमा भी माता-पिताओं के लिए कायरता को सामाना जनाने निगलता रहता है। अतः परिस्थितियों उनका भय दूर हुआ और उन स्वयं बगवत् का बुलावें सुपमा का उस मोक्षत हुए का — जीवन नरम है। फिर भी पर अब सगता है यह सब भ्रम है। जानि के भेद भगवान् ने नाना ज्ञान दिए हैं। तब भी मोक्षतान क्या की जाय ? ' सामाजिक यातावरण का स्पष्ट दर्शन है निगल निगल न कहें। कहा प्रवृत्ति का जानकारीन चित्रण भी किया है। अतः जातीय विचारों का प्राप्ता हन देने के अतिरिक्त मानव मन का विनियमन करना भी नैतिकता का उद्देश्य है। उन्होंने धीरे-धीरे बगवत् की तत्त्वांतरा यह सिद्ध किया है कि धारण भ्रम अस्थिर चित्त व्यक्ति पक्ष के जन की भांति किसी को प्रभावित नहीं कर पाता। मातर के समान गम्भीर बगवत् जन्म व्यक्तित्व जीवन के प्रत्येक क्षण में सकृद्विहान है। इसलिए सुपमा और नीचा धीरे-धीरे का चाह पर भी उसमें दूर रहती है और बगवत् का गच्छ प्रकृति का उद्देश्य उस पक्ष के लिए यादगुन बना दनी है। गम्भीर तथा उद्यम व्यक्ति का यह तत्त्व नात्मक उपपादकप जातव्य उपपादक का उद्देश्य है।

पक्ष का जन की रचना व्यावहारिक किंतु मानविक है। नापा में प्रवाह जान के लिए उन्होंने नम्रम गान के प्रयोग के प्रति प्रवृत्ति न कर तदनव गान विन्नी गान भुम्भक गान और महावर जोकाविना के प्रयोग की ओर प्रयोजित ध्यान दिया है। उनकी गानों की उच्चनीय विनियमता यह है कि उन्होंने अनियोजता मोक्ष के लिए गानकारा तथा अथावकारा का प्रचलन प्रयास किया है। उनहरणाव उप्रक्षा जो मानवीकरण का यह सुन्दर प्रयोग नैतिक — एकादश का चक्रमाद्यत के एक कान में भाव रहा या मानो काइ नवीनी नववप कराम की तनिक जोड़ लकर प्रिय की राह खल रहा हो।^१

२० मुनी जादगुमारी आनन्द

मुनी आनन्दगुमारी जानने में प्रेम और बलिदान तथा गरीब घर जमीर नराद पीपक को उपपादक की रचना की है। यदना कृतिया सामाजिक हैं और इनमें गार्हस्थ्य जीवन के महत्त्व चित्रण का प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ है। लेखिका ने प्रेम और विवाह की समस्याओं को अन्य सामाजिक परिस्थितियों के सम्बन्ध में राक्षस तथा यथाथ यानी गानों में प्रस्तुत किया है।

(अ) प्रेम और बलिदान

प्रस्तुत उपपादक में मुख्यतः प्रेम और विवाह सम्बन्धी समस्याओं का स्थान

प्राप्त हुआ है। इसमें वेगिवा न जागा मधु नागम रखा गकुन आनि विभिन्न पात्राआ की जीवन गाथाआ का अवन वरक समाज क विविध पक्षा पर प्रकाश डाला है। इनमें प्रमुख कथा जागा से सम्बद्ध है। जागा के घर का वातावरण प्रारम्भ में उनका प्रतिकूल रहता है क्योंकि उसकी छह बहिनें या और भाई एक भी नहीं करते माना पिता अपना पुत्रिया से बहुत व्यवहार करते थे। बाद में एक भाई के हा जान से स्थिति अप गुरुत अनुभूत हो गई। जागा अपने पिता के रास्ते से प्रेम करती थी किन्तु उसमें उसका विवाह न हुआ सदा क्योंकि वरपन में ही रास्ते का विवाह एक गृहस्थ का गकुन से हुआ था। रास्ते ने न गकुन का ग्या था और न उस चाहता था ग्या आधार पर यह जागा प्रति अनुरक्त रहा। किन्तु जब एक बार वह गौर गया तो मा का ममता और राकुन के स्नेह ने उस ऐसा बोध दिया कि वह पुन जागा से मिल न सके। उधर जागा को मंगी रता का भाई मधुर भी मन हो मन जागा से प्रेम करता था किन्तु उसका विवाह भी अन्त हो गया। जागा ने रास्ते का स्मृति में धुन धुनकर प्राण त्याग दिया। कथान में लखि ने यह दिखाया है कि जागा का चित्त के पास दा साधु आन और गुरु उद्गम स्थिति से चित्त का जार रहते रहे। सम्भवत नविका का इगित रास्ते तथा मधुर की ओर रहा होगा कि न इसमें निष्पत्ति भूमि की अपेक्षा थी। आखिर कथे और क्या माधु बन गये और घटनास्थल पर सहसा कस जा उपस्थित हुए।

जागा की गरी रखा मात भाग्या की इकलौता बहिन होने पर भी प्रमत्त न थी यद्यपि उसकी माँ उस स्वतन्त्रतापूर्वक नहीं आन जान न देती थी। किन्तु विवाह के उपरान्त पति का अनिच्छित प्रेम पाकर उसका जीवन कुसुम माना खिल उठा। जागा की दूसरी सखी मधु का विवाह एक सठ के कुल्यमना पुत्र से हुआ जहाँ प्रारम्भ में उसका जीवन कष्टपूर्ण रहा किन्तु पुत्रपति के उपरान्त जीवन में सहजता आ गई। मधु का बहिन नीलम का विवाह बिना नाम के बड़े से हुआ किन्तु उसका पुत्र सुधीर से (जा नीलम का समयपस था) नागम का प्रेम हो गया और मुक्तपुत्र ने बड़े पिता का विष कर मार दिया। अन्त में समाज के विभिन्न चित्रों का अन्त करन के लिए लखि ने अनेक पात्रों का जीवन गाथा का वर्णन किया है और मुख्य क्या के साथ उनका सम्बन्ध स्थापित किया है।

आत्मन्य उपरांत न पात्र अन्तमान्ध्या का परिस्थितिया के अन्तर्गत विवाह हासल महज ही घुन टन है। रास्ते का एक किन्तु उनमें नायगादिन मानसिक गृहस्थ नहीं है। नामम के पति रिना के ब्रम है उनका पुत्र सुधीर विनयाना है मधु के पति रिना के प्रिय है रेगा के पति पला के प्रिय अन्तर्गत अनुरक्त है और जागा के पिता गाथावरण एवं निराशा गिता है जो सात पुत्रिया के अन्त उति न है—वस्तुतः लखि ने उनका विविध रूप पुन गाथा का परिचय करके मध्यस्थ पुत्रों का विभिन्न गम्भा विज मनापुति का आन मन्त्र किया है। नागम का नाभिका जागा का चरित्र के गुरु उन्त है क्योंकि वह प्रेम की गिमा में आसक्ति कर एक आगा प्रमत्त

करती है। मध्य नीचम रेखा आदि गीण पात्राजा का व्यक्तिगत अत्यन्त नामान्न है।
 पुनः कथरित द्वारा उक्तिवाचन यह किया गया है कि प्रेम का धर्म प्रकृत कथाओं में
 गहरी बताया जा सके कम नहीं है—विवाह विभागे (राज्य से) जो प्रेम विभी और म
 (मनई नामक दहाती चरक से)।

आगा राजा मुजीर आदि पात्रा के मनाजगन के चित्रण में उक्तिवाचन नहीं
 रही उनका मानसिक जीवन की भी नवन किया है कि नवन किया है उक्तिवाचन
 मूकम मनाजगनिक वि चित्रण का परिचय नहीं दिया। पात्रा के भाषा से व्यक्त करने
 हुए सक्षिप्त एवं पानानकन सवाधो की पाजना की गई है। उदाहरणों में आगा और राजा
 के सम्भाषण प्रायः उनका आन्तरिक प्रेम के परिचायक है। मनाजगन में एक पात्र यह है कि
 एक पात्र की उक्ति समाप्त होते ही अल्पविराम लगाकर तत्तत् उसी पक्ष में दूसरे पात्र
 से उक्ति प्रारम्भ हो जाती है जिससे पाठक को अमुविद्या होता है। आगा और मधु
 का यह सम्भाषण इसका उदाहरण है— 'तुम विचार न क्या सुन रहा है मरी हातर
 इसकी ना गया है ? पर आगा ! कभी कभी वास्तव चाहत है जितना तुम्हें राजा भी
 न चाहता होगा अब कभी राजा का नाम न लो मधु। अब उसमें मेरे सब नाश टूट
 चुके। ' 'यहाँ मधु की उक्ति के बाद अल्पविराम लगाकर तत्तत् आगा की उक्ति प्रारम्भ
 कर दी गई है। ऐसा एक नहीं अनेक स्थान पर गया है जो निश्चय ही गली-दाप है।

इस प्रकार मममाज की निम्नलिखित समस्याओं का चित्रण हुआ है—(अ)
 वान विवाह के दुष्परिणाम (राज्य द्वारा गुरुन की उपस्था और गुरुन द्वारा मतई से
 अवध प्रेम) (आ) विवाह के पूर्व स्वच्छन्द प्रेम का परिणाम (आगा का जीवन नष्ट
 होना) (इ) बड़ विवाह के दुष्परिणाम (नीचम का पति के प्रति असंतोष उसका
 युवा पुत्र से प्रेम पुत्र द्वारा पितृघात) (ई) कुसमना पुरुष से विवाह होने पर नारिया
 का दमाय (मधु का कष्टपूर्ण जीवन) (उ) निम्न मध्यम वर्ग में अहेज प्रथा के भय
 से कथा का माता पिता के लिए आरम्भरूप होना (आगा और मधु के परिवार में)
 (ऊ) मध्यवर्गीय परिवार में अविवाहित कथा की स्वतंत्रता पर माता पिता द्वारा
 लगाय गए प्रतिबन्ध (रखा के अविवाहित जीवन पर) आदि। इसका अतिरिक्त यन्त्र-यन्त्र
 पात्रा का उक्तिवाचन अथवा विचारवाचन में उक्तिवाचन द्वारा सम्बन्धी समस्या की अनि-
 यक्ति की है। उदाहरणों में मधु की यह उक्ति अवलोकनीय है— भारतीय नारी की
 यह सम्मता भी तो नहीं है कि पति का घर छोड़कर माँ के चरने पाय। जय माँ वाप मे
 एक व्यक्ति के साथ मेरा हाथ न दिया है तो मैं मर उस व्यक्ति के साथ ही निभाना
 पंगा चार राकर या लुकर।

जमा कि उपयाम के पात्रों से यक्तिन है इसका न यह सिद्ध करना है कि

प्रेम का सम्बन्ध मन न है गरीर से नहीं। प्रेम की पावनता बलिदान की अपेक्षा रखती है। इस प्रसंग में आगा की यह उक्ति पठनीय है— वहिना ! विदेशी सम्पत्ति विदेशियों के लिए ही रहन दो। हमारे देश का शृंगार कत्त-पगपगपता जीवनात्मा एवं जात्य बलिदान है। आज देश आपका बलिदान चाहता है हमारे देश की रक्षा आपका बलिदान से ही हो सकता है। वृत्तिमान जाग्रतता को त्यागकर हम त्यागपथा रूपी सच्च जाग्रतता धारण करने चाहिए। 'आ आगा न जपन उक्त वक्तव्य में कहा वही जीवन में मर्य कर लिया कि तुमका बलिदान देश के लिए न होकर प्रेम के तन में रहा। समाज के विभिन्न दूषित चित्रा (सन्धिया के जन्म पर गोत्र बद्ध विवाह आदि) का अन्त करके तबिका ने प्रकारांतर में उनका सुधार की प्रेरणा दी है।

प्रभुत उपन्यास में मरन मरस एवं मुहूर्तकार भाषा का प्रयोग हुआ है। यथा—
मैंने कितने ऊँच महल बनाये थे सब बूल में मिल गये मरन में ही कौन से सुरदाव
य पर लग गए ? राजा की काठरी में जाकर उसका अन्त अवश्य ही होना है।
कतिपय स्थान पर अगुद भाषा का प्रयोग हुआ है जो अचित्य है। यथा— लड़का और
लड़की में कितना अन्तर है दसवाँ पाम करण ता बारहवाँ पाम लड़का बूझता पगा
साठ जी उठ पड़ ? आदि। वम तबिका का गनी व्यावहारिक एवं प्रवाहपूर्ण है। निष्क
पत आनोच्य वृत्ति में सामाजिक दुष्प्रवृत्तियों का यथावत् चित्राकन हुआ है और प्रेम के
क्षेत्र में बलिदान की प्रेरणा देना तबिका का उद्देश्य रहा है।

(आ) गरीब घर अमीर इराद

यह उपन्यास में पिछा के महत्त्व का प्रकट करत हुए इस बात पर बल दिया गया है कि पिछित होने पर निम्न व्यक्ति का महत्त्व का ताई भी एक दिन पूरा हो जाता है।
उपन्यास में नायिका गाता और उसकी मनी निगा के परिवारों का के साक्षात् माय-साय
निर्वाह किया गया है जिनमें गान्ता की कथा प्रमत्त है। गाता के पिता धनाथ और वह
गायारण पिछित भाषी तिल्लु उसका विवाह निम्न और अशिथिल जोवानाधन मरा।
पति और साताका आरम उपयुक्त माय के अभाव में भाषान धन्यवत्तता का और
पति की आरत विराज हुआ पर भी पुत्र का डाकरी का उच्च गिना मिला। पुत्र का
गाम्यता उन्नति तथा गाता के शक्ति भाषाना ना गिना के महत्त्व का समझ गये और
उन्होंने अपने दुष्प्रवृत्तियों को गिना पत्नी के क्षमा माया। निगा धनी दान के अनिश्चित
बी० ए० तथा गिना की उन्नति राधा के वरिष्ठ तम गिना धनी गिना धनी
प्रबलता में उन्होंने भी बी० ए० तथा गिना प्राप्त का। निगा निर्भिन्नानि धी
तिल्लु उनकी धनी गिना पुनर्निर्माण प्रवृत्ति की ओ। निगा न उन्नति माय

१ प्रेम और बलिदान पृष्ठ ३

२ इतिव प्रेम और बलिदान पृष्ठ ८ ४० ६०

३ इतिव प्रेम और बलिदान पृष्ठ १२ १३ २८

पाती युवक मधुपक प्रेम जान स वचनर अपन व्यवहार कोन जोर स्नह ता अच्छा परिचय दिया है। निगा का समय छापी बहिन मर राजन् र व्यक्तिन पर मर था निम निगा न विवाह-सम्बन्ध म परिधान कर अपनी उन्नतता और गुणगहनता का अच्छा परिचय दिया।

उक्त दोनों का एक समानांतर रूप स प्रिणाममान र है तथा इनम पारिवारिक सोचन पर विचार बल दिया गया है। निगना न परिस्थिति निगन री और भी क्या चित ध्यान लिया है। गाता और राजन् र विचार योग्यता और निगन का प्रति रूप है किन आर्थिक अभाव व कारण उनकी महत्वाकांक्षा का स्तम्भ कह गार न पता है। हमरी जोर निगा क माता पिता बन्ध सम्पन्न है किन राजन और मधु का विवाह म बात का प्रतीक है कि अध्यवसाय व्यक्ति न निगन अर्थाभाव की बाधा नगण्य ह। निगना ने कथानक म राचकता और कोतूहल की ओर उचित ध्यान लिया है तथा उनकी यह प्रवृत्ति रही है कि जब कोई घटना किसी पात्र क पास अग्रिम रूप न लगता है तब व सुरन्त ही विषयांतर कर ता है।

प्रस्तुत कृति म पात्रों का व्यक्ति क रूप म नहा वम प्रतीक क रूप म प्रस्तुत किया गया है। गाता न पारिवारिक सघर्षों क हात हुए भी जिस कम-तरतरता स्नह और नवा भाव का परिचय दिया है वह भारतीय नारा की परिभा क मधवा जनकूल है। उनकी सखा निगा का व्यक्तित्व भी तन्मूर्तपरिष्कृत रहा है। अपन निरभिमान स्वभाव व कारण उम पति गह व मभी मरस्या का प्रेम और आनर प्राप्त न्या। उसकी बहिन मुमन जट्ममय प्रवृत्ति की अदूरदर्शी युवती है। खलिका न मधुप क प्रति उसक प्रेम प्रेम का बसाव का भूमि पर प्रस्तुत किया है। दूसरी ओर निगा की सबसे छोटी बहिन मध मोम्य तथा विवर्णन है और राजन क प्रति उनका प्रेम भाव सखा स्वाभाविक है। निगा रानन रखा न भाई तथा नानी क प्रति असम प्रेम तथा चंचल व्यक्तित्व भी उत्तमनीय है। इसी प्रकार गाता की मास की बहू व प्रनि दूरता वर्गीकृत पर मरान न नुरूप है।

पुरुष पात्रा म भागनाथ राजन राकेन मधुप तथा दीपन उत्तमनीय हैं। गाता व पति भागनाथ उस अभिहित वग व प्रतिनिधि है जिसका शिक्षा व प्रति नगण्य रहता है। राजन की परित्रमी और मधवी छात्र क रूप म प्रस्तुत करने म भी निगना सफल रही हैं। राकेन का अपना पला निगा न प्रति प्रेम और सदभाव इस निय अधिक उत्तमनाथ है कि उसका व्यक्तित्व भागनाथ म सखा विराम है। मधुप एन युवक वग का प्रतिनिधि है जो विषय भोग का महत्त्व दता है। निगा क भाई दीपक का चोत्र विविध गुणा का समन्वय है—तात्र यदि परापन्नर मित्र प्रेम आदि उमक चरित्र री प्रमत्त विपत्ताए हैं। खलिका न पात्रा क नाम प्राय उनकी पारिवारिक विपत्ताओं क नुरूप ही रखे हैं। भागनाथ गाता मुमन मधुप आदि सभी पात्र अपने नान की मास करत हैं। निगा और राजन का मुमन और मधु का धुम प्रतीकात्मक

है। पात्रों के मनाभावों के ज्वन में लेखिका ने मनाविमान का उपयुक्त आश्रय लिया है। इस दृष्टि से ममन की वह भाव स्थिति उत्लक्षणीय है जिसके जतनत वह बार-बार राजन् की भुलाकर कुछ और साधन का प्रयत्न करती है किन्तु उसका विचार-भारा पुनः उसी बिंदु पर जा पहुँचती है।^१ यह उत्लक्षणीय है कि लेखिका ने क्यागत मनाविमान और मनाविमान के अतिरिक्त प्रत्यक्ष कथन की गली में भी पात्रों का चरित्र निरूपण किया है। यथा— भारतीय नारी गाँव जा अपने पति द्वारा सदब ठुकराई गई थी। उसका पति ने तमाम प्रकार की यातनाएँ उस दीदी या घर तक से जिस गान्ता को निकाल दिया गया था वही आज अपने जीवन का गप भाग अपने पति के चरणा में अर्पण करने की तयार है। वह धन्य है स्त्री रूप में दवी है।

आलाप्य उपन्यास में प्रायः सधु एवं रोचक संवादों का योजना का गढ़ है। यद्यपि कहाँ कहाँ मनाविमान में अनावश्यक विस्तार की प्रवृत्ति भी लक्षित की जा सकती है तथापि अस्मिता की वार्त्तानामें चरित्र चित्रण देगवाल अथवा कथानक के विकास में सहायक रहे हैं। लेखिका ने संवादों में भावकीयता और सजीवता लाने के लिए गान्ता ने आतमी कहाँ निगा मुस्करा पड़ी और बोला^२। उस दृष्टि-ममूचक वाक्यों का भी बहुत प्रयोग किया है। राजन् के वात्स्यावस्था के संवादों में बाल मनोविमान का सुन्दर प्रतिपन्न हुआ है। इस प्रकार गान्ता की साम की कटूकृतियाँ भी निता से सहज तथा पात्राकुल हैं। यथा— जब उसने गप मिठाई साख के सामने रखी तो साख रानी ने पौर के ठाँवर ने सब मिठाई आगम में फेंक दी। आँग मटकाती हुई बोली—बुडल टायन अब मरा या आइ है जब उसमें एक नौ रमणुन्ना नहा बचा। क्या मैं बचा सुची मिठाई नन वाली हूँ। बला जा मर सामने से नहा तो जभा ।^३

प्रस्तुत उपन्यास में समकालीन प्रवृत्तियों का लक्ष्य में रखा हुआ युवक-युवतियों के चरित्र-पनन के तीन कारण माने गए हैं—कुरुक्षेत्र उपन्यासों का अध्ययन फलन चरित्रों के प्रति माह। राजन् मुमन मधुप आदि पात्र इन्हीं कारणों से पथभ्रष्ट हुए। राजन् तो अपना माता के प्रयत्न से शास्त्र ही सजल गया किन्तु मधुप तथा उसका प्रसिद्ध मुमन का अविष्य मन्त्र के लिए अंधकारमय हो गया। राजन् द्वारा मधुप के विषय में मधुप के प्रति कथित यह उक्ति श्रुति— उस हा लम्बे भारत का अविष्य बिगाड़त है। न आज यह भारत की लड़नाएँ रही हैं और न वह युवक ही रहे हैं। आज ब्रह्मा जितना बर्त गया है। अपने गप में भी पाश्चात्य मन्त्रिता का राज जा चुका है। यदि मुझ बर्मा है तो वह भी गीत हा जा जायगा अब वह जन्य दूर नहा है।^४

१ दलित परीच पर अमर इराद, पृष्ठ १३६

२ ३ परीच पर अमर इराद पृष्ठ १६६, ६१

४ दलित परीच पर अमर इराद पृष्ठ २४, ३१, ३२

५ ६ परीच पर अमर इराद पृष्ठ ३०, ३६१

‘खिला न श्रुतिक वातावरण की अपा समकारीन ममाज व चित्रण की आर अपि
ध्यान लिया है। उहान यह निद्र किया है कि भारतीय समाज म नारी का स्थिति कितनी
अमहाय और विषा है। माता पिता उमकी छा का आदर किया जिना हा उस विवाह
मून म बाध नत हैं जा अनचित है। खिरा का दृष्टिकोण यह रहा ह कि नारी की
सहनशीलता तथा आदवादिता व फनस्वरूप ही भारनाय ममाज शिष्टमरित नान स
वचा हुआ है। उपयास का मुख्य प्रतिपाद्य शिक्षा क म स्व का स्वीकृति नना है। बिजा
को सुख-सुविधा सम्पन्न प्राणिया की अपीनी न मानकर सखिया न राजन व माध्यम न
यह प्रमाणित कर लिया है कि निधन व्यक्ति भी मनायागपूर्वक उव शिक्षा प्राप्त कर
सकत हैं। उवत ‘हय व अतिरिक्त गाता तथा निगा क चरित्रा गग भारतीय नारी
की गण-नारिमा एव सन्तानोत्ता का प्रत्ययीकरण भी म उप यास का ल य न। एक
निष्ठ खिका न प्राय प्रारम्भकारीन नेविकाजा की गती अपना ह। उदाहरणाय
गाता क विषय म निम्नलिखित भावपूर्ण कथन देखिय— वह धय ह स्त्री ह्य म दवा
ह। आज अपन देग म एमी ही सना माध्वी नारिया की आवश्यकता है।^१

आनाय्य कृति म भाषा क यावहारिक रूप का महत्त्व लिया गयाह फनत इसम
संस्कृत क तत्सम गग का अपना तदनय गगो उदू गग (बताव मजा मजान इसम
यतीम आदि) और अग्रणी गग (कनाम टीचरें गजण्ट फस्ट पोजागन जाति) का
प्रचर प्रयाग हुआ ह। एसा प्रकार सह्यागी गग-मुग्गा (बहुल पद गप सप गभ-
अगुन नने नन पनी निखी सोच विचार आदि) एव पुनरक्त गग (फसर फसर
लपद-लपद कभी कभी बार-बार आदि)^२ क प्रयाग द्वारा ना भाषा का सजाव तथा
व्यावहारिक रूप लिया गया ह। खिला न महावरा क प्रसमानुकून प्रयोग की आर नी
यथोचित ध्यान दिया ह। तथापि भाषा की सजीवता क लिए प्रयत्न य सभी उपकरण
मन पर समवत प्रभाव नहीं गन पान नयाकि अगद गग तथा वाक्या न भाषा क
सौन्य का प्राय क्षीण कर दिया ह। उदाहरणाय निम्नलिखित उक्तिया द्रष्टव्य है—
(अ) गाता की सास अब जाग म बहुत कुछ ठाक ह^३ (जा) गा ता न राजू का बागार
मिठाइ मगाया और मग की सब मां क पास जावर रख दिया (इ) वह यकायक कह
पनी आदि। अतत यह कहा जा सकता ह कि आनोय कृति म यावहारिक गगो के
प्रयाग क फलस्वरूप भाषागत सरलता राचकता और प्रवाह तो ह कि तु गाम्भीय जय

१ गराब घर अमार इरादे पृष्ठ १६४

२ गराब घर अमार इरादे पृष्ठ ६ १ ११ १२ १३

३ गरीब घर अमीर इरादे पृष्ठ ११ १५ ३६ १२३ १२७

४ गराब घर अमीर इराद पृष्ठ ११ १७ २० २१ २८ ६५

५ गरीब घर अमीर इराद पृष्ठ १२ १४ १७ २३

६ ७-८ गराब घर अमीर इराद पृष्ठ २६ ३ ६०

२१ सुग्री मधुलिका

सुग्री मधुलिका न १८८ पृष्ठा और २१ परिच्छेदों में प्राणा की प्यास गीपक नामाभिज्ञ उपन्यास की रचना की है। इसमें उद्धान कथा नायिका माया का जीवन गाथा अर्जित करत हुए वया जीवन का यथाथ चित्रण किया है। माया मध्यमवर्गीय परिवार की धार्मिक प्रवृत्ति की बालिका थी—नित्य प्रातः मन्त्रि जाना उसका जटिल नियम था। किन्तु दुर्भाग्यवश उसे अपना जीवन एक चकल में बिताना पड़ा। कथानक का प्रारम्भ वहीं से होता है जब माया के भयकर राग का पत्र पाकर उसकी छात्रा बहिन मुजाता माता पिता से छिपाकर उससे मिलने चल पड़ी। मुजाता को अकाली चकल में आया देखकर और यह जानकर कि अब उसकी मक्ति न भ्रमभ्रम है माया की इतना आघात पड़ता कि उसका प्राण पलक उड़ गया। माया ने अपने जीवन के कट अंश नवा की आत्मकथा के रूप में लिख रखा था मरने के पूर्व वह उसे मुजाता को सौंप गई। बहिन की डायरी पढ़कर मुजाता को पाल झंझा कि दा गण्डा न मरिह म उसका अपहरण किया था माग में एक मन्त्रा द्वारा रक्षित होने पर कुछ दिन वह उसका पाल रही। दाग म सयागवग उसकी पोस पालन पर उसका दुराचार से बचने व प्रयास में उसे जेन जाना पड़ा जहाँ उसका बाल महापाठिनी मिनी मिनी जो उसी की भाँति परिस्थिति प्रताडिता थी। सयोगवग दाग एक ही दिन जल से मुक्त हुई। कुछ दिन दोना एक पवित्र महात्मा की मण्डि में रही किन्तु बाद में मिनी दुर्भाग्यवश एक चकल में फँस गई और उस राजन जाकर माया का भी वही की हाकर रहना पड़ा। दाग की डायरी पढ़कर मुजाता मन में उसके प्रति प्रेमा का बढि हुआ है। 'या हा' उसने डायरी समाप्त की 'या हा' सयागवग उसका बहिन की परिचितता रखा जाकतुपित जीवन बिताने का बाग एक मन्त्रा न 'पुनरी' में विवाह करने का सुयोग पा चला था अपने पति व माय पुत्रिम का जन्म हुआ था। चकल पर पुलित न छापा मारा और गण्डा हान न पव हा मुजाता का उद्धार हुआ गया। मुजाता रखा व घर रहकर विनयविद्यालय में पढ़ने लगी और मिना ना सम्मानपूर्वक रखा व घर रहने लगा।

इस प्रकार शिका न पढ़ने नग्न यथाथ का चित्रण करने बाग म कथानक का अंतिम चकल में समाप्त किया है। या वर्तमान माहित्य में यथाथ व नाम पर पार अन्ता पना का चित्रण प्राप्त है, किन्तु प्रस्तुत उपन्यास में चकल और वया प्रायः न जा कुतिल रणन हुए हैं (अन्तीन चित्र ध्वनि वातावरण आदि) व जगत्जनन प्रभाव प्राप्त हैं। इससे अतिरिक्त अन्य प्राणिक कथानों की भी काटि का है। 'गह्वरपाथ' एक पुनर्कर से पन में मन्त्रा के दुराचार का पन्ना' मित्र वनजी और मन्त्री रा पापा १ 'दिव्ये प्राणा की प्यास', पृष्ठ ४६ ४०

चरण,^१ 'सब' पूर्व अपने ममर भाई व साथ उमरा जयप गम्भ ३^१ मि नी जोर उसका पाप-पक म फागोवान वपटी मुनर का वासनात्मक जाचरण^२ एग मठ व प्रति उमकी दामो का वासनात्मक जाचरण जाति प्रमग उग याग म गगन बिगल ग^३ है। जलीलता की य घटनाए कथानक म इसप्रकार पाए है कि एग जाव अपना स्वरूप प्रमगा क अतिरिक्त मवध कुं उत यवाव वहां दान होत है।

आलाच्य 'रखिका न कथा' म कतिपय एम प्रमगा का 'ममाग' दिया है जो वनमान प्रगतिनीय वा म प्राय जविश्वसनीय हैं। यथा—माया गग भजन गान पर गण्य तथा की प्रतिमा का हस उठना^४ अपना चकन म माया व रक्षा म यामा महात्मा की ज्वनन्त जादृति का उसक निवृत्त साकार होना (जवकि व जयत्र रहत ५)।

प्रस्तुत उपयास म माया मिनी मिस रखा उनर्जी मुजाता जाति का चरित्र परिस्थितिया गरा नियमित रहा है। माया जोर मुजाता का परस्पर घनिष्ठ स्नेह माया की धार्मिक तमयता तथा मिनी का मात स्नेह विपत उत्पन्ननीय है। पुरुष पात्र म महात्मा जी का चरित्र सर्वाधिक आदग रखा जा म चित्रित ब्रथा है। मिनी तथा माया को साथ रखकर भी व निर्निष्ठ एव निर्विकार रह। माया व मन की गहराइ म पंजर उसक विकार को पहचानकर उहान उम माता के आसन पर सुगोभितकर माना ममस्त श्रुतिवाक्ता का ममाप्त कर दिया। कवि जयापक का चरित्र भी कुछ कम आदग नहीं है। रा सियार मन्त्रा स माया क सतीत्व का रक्षा करने व लिए उमन अपन प्राणा की बाजा गगा बी। मन्त्री नूर महम्मद नरद (रखा का ममरा भाई) जादि पात्र विश्व क उत्तम 'यक्षितया व प्रतीक' है ना अपन स्वाय की पूर्ति के लिए दूसरा का सकट म गगन रहत है। सठ जी मन्त्री क मन्त्रा (रेखा क पति) जादि जनेव पात्र सामान्य है तिनम मानवाचित दुब गताए ता हैं किन्तु उचित अयमर पर जब उनका मन जाग रुक हा जाता है तो फिर व बहुत ऊब उठ जाते हैं।

आलोच्य उपयास म अधिकांश सवाद कथानक को नाटकीय रूप म वर्णित करने व लिए प्रयत्न हुए हैं। प्राय मनी सवाग की उत्पन्ननीय विपत्ता यह है कि उनम वचना का यक्षित्व विपत प्रतिबिम्बित रहा है। उदाहरणाय चकल क सचानक नूर महम्मद और रमजानी (उसकी महयोगिनी) की उक्षितया म सबन ज नीन अनगन एग बाजाट गगनवा की स्थान दिया गया है तो उवर महात्मा जी व सम्भाषण प्राय दानिक एव पावन विचारा स यवत हैं।

दग और ममाज व रग मियारा का पात्र खोरकर रखिका न वनमान जग की कुप्रवृत्तिया (अष्टाचार यमिचार बाखा वपट मिथ्याचार और अ याय) का यथाथ नकी प्रस्तुत की है। जनवग ऐसी घटनाआ का उत्पन्न करत हुए 'यम्यात्मक' गतो का

प्रयोग किया गया है। यथा— जोर उसके बाद उन लागा की जमा बातें गुरु हृद ता मुनपर मर हास उड गए। मैं अपने कान अपनी हा हथलिया न बन्द कर लिए और साचन गया—यहाँ हैं इस स्वतन्त्र भारत क मणवार ? यहाँ हैं उस राष्ट्रपिता के उत्तराधिकारी ? यहाँ है इनका मायीवा ? यही हैं इस आश्रम के सस्थापक ? ' विषय में व्याप्त कुन्त प्रवृत्तियाँ का यथाऽचित्रण यस उपयास का लक्ष्य है कवन कथान्त में आत्मप्राप्ति का आश्रय लेकर उस आकस्मिक मोड़ दनिया गया है जा वस्तुतः इतना प्रभावपूर्ण नहीं बन सका।

२२ मुद्रा मधूलिका मिश्र

मुद्रा मधूलिका मिश्र न १२२ पृष्ठा और १५ परिच्छेदों में तद्वर्णन वीत रत्न तीपक पन्नाप्रधान लघु सामाजिक उपयाम की रचना की है। इसमें हरीश और गोभना का एक दिव्य म सहजाना, गोभना के प्रेमी कपूर द्वारा हरीश का हत्या के चक्र में उलझा देना कुमारी जाष्ट नाम की महिला वकील द्वारा उस बच्चा 'ना और हरीश का गोभना और उसके पुत्र राहुल से मिलन चित्रित है। राहुल का जन्म हरीश और गोभना के एक रात्रि में वही आकस्मिक मिलन के परिणामस्वरूप हुआ था। 'रत्निका ने कथानक का प्रारम्भ नितांत सहज रूप में किया है किन्तु उसके विकास करते समय ऐसे चमत्कार पूर्ण आकस्मिक मोड़ प्रस्तुत किए हैं कि अंत तक पढ़ते पढ़ते कथानक की वृत्तिमत्ता एवं कोनूहट के प्रति रत्निका का अत्यधिक जाग्रह स्पष्टतः उदबलन लगता है। इस कथानक का दूसरा उत्कर्षनीय दाय यह है कि इसमें यत्र तत्र घोर अज्ञान प्रमत्ता का समावेश है। गोभना के पत्र में हरीश के साथ बिताई गई लूफाना रात का उत्कर्ष^१ और पत्र पढ़ते ही 'बा' हरीश और गोभना का दिव्य म हा प्रमाणित आचरण^२ (जिनकी व्याख्या 'रत्निका ने बहुत रस 'नर की है) मात्रमत्ता र्वि के पाठकों का आकृष्ट करने का निश है।

विशेष उपयास में घटना-बाहुल्य इस प्रकार छाया रहा है कि अन्य तत्त्व उभर नहीं पाय। यहाँ बात धरित्र चित्रण की भी है कि 'रत्निका ने इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। फिर ना पन्नात्रा के प्रथम में गोभना हरीश मिन आप, महान कपूर आदि की जा विपत्तियों में मुक्त जाइ हैं उनसे आपार पर यह कहा जा सकता है कि उपयाम में पात्र वर्ग के प्रतीक के हास्य व्यक्ति-रूप में प्रस्तुत हुए हैं। गोभना का प्रभावपूर्ण अन्तः हरीश की 'नरन प्रतिभा एवं सरन विवादांगू हृदय, कुमारी जाष्ट का निर्भीक एवं कुशल नमठ व्यक्ति तथा मन्त्रालय मन्त्र कपूर का गहरा व्यक्तित्व। (विशेष पर प्रकाश है उन विषय प्राण तक देना और बिना र स्पष्ट हा उस जड से उठा केना)

१ प्राणा की व्यास पृष्ठ ५५ ५६

२ ३ दक्षिण तट पर बीर रत्न पृष्ठ ४१ ४२ ४४

सहज ही पाठकों का ध्यान आकृष्ट कर लेते हैं।

रत्निका न उपवास में व्रणनात्मक प्रसंगात् अतिरिक्त नाटकीयता का भी यथोचित विधान किया है। सराद यथाप्रसंग कथानक चरित्र चित्रण एवं टीकाकारों के विकास में भी सहायक सिद्ध हुए हैं। उदाहरणार्थ कथानक के प्रारम्भ में गाम्भीर्य से सम्भाषण करते समय हिंदा के समवासीन माहिष्यवारा एवं उनके समीक्षा पर यत्न करते हुए कहती है कि वर्तमान 'रत्न' निकट साहित्य रचना करने में अपन को प्रमत्त द एवं टगोर समान हैं और समाचारपत्र भी उन्हें चोरा का चपरा मित्र बनाने का प्रयत्न करते हैं।^१ कपूर तारा घन के वन पर पुनिस का वन में रहने और ऊँच गवाह तयार करके निर्दोष हरीण को ही दापी सिद्ध करने की घटनाओं का उल्लेख रत्निका न समाज की हृदय प्रवृत्ति एवं वन के सबविषय की ओर इंगित किया है। उपवास के तरहव चोदहव जोर सान्द्र परिच्छेदों में 'यायानय' के सजीव एवं स्वाभाविक दृश्य अवलोकित हुए हैं। चमत्कार और रहस्य से जात प्रोत्त घटना बाट, यका जागर नर पाठकों का सस्ता मनोरंजन इस उपवास का लक्ष्य है और इसी कारण कथानक में कृत्रिमता का दोष आ गया है। उपवास की भाषा व्यावहारिक एवं प्रवाहपूर्ण है। वस्तुतः भाव पन तथा अभिव्यक्ति पक्ष दोनों की दृष्टि से तद्वत्त वीत रन सामान्य श्रृंगार का उपवास है। गम्भीर एवं साहित्यिक रुचि के भावकों तो इसकी सराहना नहीं करण किन्तु चरित्र की भाँति घटनाओं के उतार चढ़ाव में रुचि लेनेवाले पाठकों में पटकथा अवश्य अनुरजित होगा।

२३ श्रीमती सुमित्रा गढहाक

श्रीमती सुमित्रा गढहाक ने पुनर्न का बाद उपवास में जाति भेद तथा व्रण-दवस्था से पीडित विगन और गोपी की भाँति प्रेम गाथा अवलोकित का है जिसमें हीर राभा अथवा सोहिनी महिबान के प्रमादों को नश्य में रखा गया है। विगन मुनार था और गोपी हिरिया कहार की पुता थी। परस्पर दान सम्भाषण से दाना में प्रेम का विकास हुआ किन्तु जाति भेद ने उनके बीच एक दावार खड़ा कर दी। कथानक को आराध अवराह में से निकालकर रत्निका न उसमें एक और भाँति का समावेश किया है उससे नार किशन तथा उसके मित्र विरजू के साहस और शीघ्रता में समस्त बाजानों का पर करार कर कथानक को सुखा त बना दिया गया है। गोपी की महानाँति तथा उसके माता और भाइयों की उग्रता का दृश्यकर पाठकों का हृदय प्रभी वगन के अनिष्ट की जाँका से धडकता रहता है—एक तीव्र जिज्ञासा उस सबन धरे रहती है कि इस विजातीय प्रेम का अन्तत क्या परिणाम होगा।

प्रस्तुत उपवास के पात्र वतन सजीव हैं कि यदि इस चरित्रप्रधान उपवास की

सत्ता तो जाए तो अनुचित न हुआ। नाविका गाथा भारतीय नारी का प्रतीक है जो सत्कारभाज्य शून्य कारण विघ्नक प्रति अपने प्रेम का किसी व मनः व्यक्त नहीं करती। अपने मन का उधावा यकन करन करि उसन पापल दा' को अपना माथी बनाया है। ना निर्जीव होकर जी मानो मजाव है। विमान सब गुणसम्पन्न एवं दुः प्रसन्न नायक है। उक्त गाथा में मन्त्रा अनुशासन करता है और नमस्त विघ्न-बाधाओं को पराभूत करके जय म उमम विवाहकर बना है। विरजून मित्रादय एवं विमान का भाँ चमन क ध्यान स्मरण क चित्रण में नाविका का नावक मन का प्रतिविम्ब विद्यमान है। जय गीण पाथा का ना यथावाच्य चरित्रात्मक हुआ है। परोः चित्रण क अतिरिक्त नाविका न पाथा क विषय में उगतामर टिप्पणियाँ भी प्रस्तुत की हैं। यथा— गाथा का जय गीण घ' में बना था। परन्तु उनका सत्कार उमका रहन महन का जय उन तागा न विस्तृत निर्या। उह यक्षपन में ही साफ मुखरा रहना पथ्य करती थी। पाथा क माननिष्ठ अतः उक्त ना चित्रण भी नाविका न सपत्तापूर्वक किया है। प्रमाणस्वरूप प्रेम और कलत्र क मध्य गाथा का मानसिक मध्य उत्तर बना है।

चरित्र चित्रण में मञ्जीवता की मूर्ति क विमान नाविका ने सरन महाराजदार एवं पाशानुसूत सत्कार की योजना की है। प्रायः घटनाओं तथा काय व्यापार क बीच में सत्कार का विमान हुआ है जिसमें व उहज एवं मारगमित मिष्ट हुआ हैं। वमानक का अधिवाग नाग रानावाप क माध्यम में विनिमित्त हुआ है। इस उपवास में अतः जाना प्रेम और विवाह का समस्या का चित्रण हुआ है। विमान तथा गाथा का प्रेम नमाज ना फूटो जाना नया मुहाना। विरहा न यत्र नत्र समाज का सकलित मनावति पर व्यर्थ विषय है। जाना उपवास क नायक और नाविका विवाह-बधन क बधन समाज क मग पर करारा पथ्य तागत हैं और यही विरहा की दृष्टि म गमन्या का सर्वोत्तम गमाया है। प्रत्यक्ष उपवास का पाथ्य का यहाँ मन्त्र है कि जाति न ना उपाया करन सबका समान समर्थ। जात्या का लगाव पथ्य बयना स परे है और उसी का अनुसरण सबका पथ्य जाना चाहिए। राष्ट्रियता क इत युग में प्रमत्त उद्देश्य का महत्व स्वतः मिष्ट है।

जाना उपवास में सरन व्यावहारिक एवं मुगवरणर नाथा का स्थान प्राप्त हुआ है। यत्र नत्र वाच्य रचना विषयक आक्षेपों ना है किन्तु प्रभाव का मूर्ति में नाया रोचक एवं मञ्जीव है। उपन्यास का रचना जय पुरुष की। जो म हृदय क व्यर्थ गता में रचित वाक्या न। जो रमो जय न यत्र नत्र विगम वदिका है। उगाहरणर निम्नस्थ पवित्रता में प्रेम गता जय गता तथा मुगवरणर नाथा क मिथ्या न वाक्यान्ती को विरार गमाव बना गया है—'जयना भी नया विज्ञा स रम था। नया हुआ यह कहरित

था? 'तो उसकी जीन भी नारी जाति की ही। उसका स्वभाव था।' 'नार' पर मक्की महा घठन दती थी। 'यहाँ जगना का चारित्र्य विगपता का ध्यस्त करने का प्रयोग म नारी जाति की वाचान वृत्ति पर मफन यम्य निया गया है।

२८ श्रीमता मीरा महादयन

मीरा महादयन न मराठा-द्वितीय हाथर ना हि ने म ना जगनाम निया है—
सा क्या जान पीर पराई तथा अपना घर। 'नम उहा प्रमग एर निरन मय्य
वर्गीय परिवार की कथा की समस्याओं एक एक यहाँ परिवार की मुद्रा न मयी अन
भूतिया का चित्रण किया है। 'नम स प्रथम उपचाम म १६४ पृष्ठ तथा ४४ परिच्छेद
है और अपना घर की रचना २१८ पृष्ठा एवं ४८ परिच्छेदों में हुई है।

(अ) सा क्या जान पीर पराई

प्रस्तुत उपन्यास का समस्त घटनाओं एवं पात्रों का कथन दुर्गादिका माधवी है। 'ना निम्न मध्यवर्गीय परिवार का एकमात्र कथा है। घर का आर्थिक अभाव का समाधान करने के लिए वह शिक्षा पूर्ण किये बिना ही (स्वयं पाम करने से भी पहले) नौकरा बन निकलती है और अनन्त मधुर वट अनुभव प्राप्त करते हुए धनाप्राप्त करती है। 'उमक इहा अनुभवा का चित्रण न कथानक का रूप दिया है। रजना नामक लड़की का मारा सबसे प्रथम उसका परिचय घोषणा से मया जिनका कायालय में काम करता है और पीर वह उनसे प्रेम करने लगी किन्तु वह पहले ही विवाहित है और माधवी से प्रेम का नाटक खेतीकर उम ज्योपाजन का माधन मात्र बनाना चाहती है। जय पुष्पा ने माधवी का दसका चलावनी दी थी तो उसका मन न माना था किन्तु जब उसे प्रत्यक्ष ही घोषणा बाबू का अन्तर्निहित का बाध हुआ गया तो उसने उनसे सब सम्बन्ध तोड़ दिये। दसक उपरान्त मयागवा उसका परिचय रमा पटवर्धन नाम का एक सभ्रातृ महिना से हुआ। उनक तथा उम के दायर का गीता नरत्त जाति का सदागम व्यक्तियों का सहयोग से माधवी ने दसका की पराक्षा का और भूतान यन म नाग नकर कुछ समय तक दग सवा म सक्रिय सत्याग दिया। 'नम उपरान्त उमने धामस नामक एक इसाई यवक का दयन म काय किया। साथ रहने रहने दोनों का मध्य अनुराग का विकास हुआ किन्तु माधवी ने कवन म विचार से धामस का विवाह प्रस्ताव ठुकरा दिया कि उसकी सतान इसाई कह जाणा। जय अपने मन का बदना पहचानकर उसने स्वावृत्ति देकर भूत सुधारनी चाही ता पात हुआ कि ना धामस जयन विवाह करने जा रहे है। धामस की विरहजय पीडा से धत विगत दृश्य का महारा दिया ना अनवरत जा कवन नि स्वाय भाव म उस प्रयत्न करना चाहते रह। अन्त म मयागवा चित्रकार अविन से उसकी पुन भेंट हुई (एक

बार पहन दोना का परिचय हो चुका था) और दाना विवाह मूल में बंध गये। अर्थ माधवी व भ्रमित जीवन का बतला और व दोना सुख में बला आराधना करने हुए जीवन गान करने लगे।

उक्त पात्रों के अनिश्चित मनोहर बाबू सामान साहस मठ साहस चरकला माधवी के माना पिता नार्थ ग्यामा धामनी स्टोन जाँ अनक पात्र पात्रों का कर्म नकम स्थान प्राप्त हुआ है और यथाप्रमा उनकी चांग्रिक प्रवर्तिका का प्रकाशन भी किया गया है। इनमें न कुछ मंचरित्र है कुछ दुर्बलिय कुछ प्रवर्तिका का प्रकाशन भी वस्तुतः नमिका न माधवी व जीवन एवं चरित्र का मध्यम दृष्टि में गता है जो अर्थ पात्रों का उक्त कर्म प्रभाव गता है। वला सहागी नाया का नानि अस्थान रूप में कथानक में प्रविष्ट हुए हैं अन स्वतन्त्र रूप में उन चरित्र का काइ मन्त्र नहीं है। मा वला एक साधारण महत्वाकांक्षी नायिका है। अर्थ मानवचित दुबलता का अनिश्चित उसमें सब उदा दुबलता यह है कि जो भी उस नहामन गता है वह उतावा जार जाहल हाती जाती है और न प्रवाह में अनका माननिक पवित्रता व अनिश्चित पात्रों के पवित्रता को ना मुक्ति नहामन गता पाती। स्वाभाविकता का जार मान ग्ये बिना नमिका ने अपन स्थान में बल नमिका है कि जो भा माधवी व मध्यक में आता है उन अर्थ पिय चरित्र गता है। ना ना हो एक नायिका प्रमान उपन्यास व प्रणयन में नमिका सफल गता है।

आलोच्य उपयाम में मवात् नमिका और प्रमाण रूप कथानक एवं चरित्र विप्रा व विचार में मवात् मिष्ट हुए हैं। मवात् की भाषा सरल स्पष्ट एवं पात्रानुगत है। उदाहरणार्थ नूतन यम व सहयोग नमिका व नमिका गाय व जार माधवी न गम्य रमण्या न जा मन्त्रापण निय व उत्पन्ननीय है। गता व नमिका नमिका अनक प्रवर्तिका है। माधवी व जीवन चरित्र गता उदाहरणार्थ आभा दिया है कि वनमान युग की विपम बाबू जम व्यक्ति का रहन क्या जमका चरित्र मुक्ति न रह पाता है ? और फिर आज परिस्थितियों में नारी का मोरार करने निकलना पता है और तब पाप बाबू मनाहर के युग में नारी चरित्र स्पष्टन का होन भी ना नहामन गता। रजनी और ग्यामा इति रम गिया ना गार विप्रा व पनापजन को अर्थ महत्त्व रूप में गती है और माधवी जमा नारियाँ भी धन व नमिका गार व विक्रयता नहीं रखती फिर भी स्नह प्रमाण करने बान प्रवर्तिका युग में नारीरिक मन्त्रापण गार व नमिका गार हा जाती हैं। आज व युग में चरित्र मन्त्रापण मान गता विपम परिस्थिति ना वन है। मवात् हमारी अधावि व मूचन न है ?

रमा पत्रपत्र गार पति का तना नमिका का बाँ नूतन यम का बान और निम्न नमिका वन व नमिका एवं विपमता को वन रम तम्य का प्रमाण है कि नमिका

‘मरिए बिब पर जानि म न जा सन ।

ता गया अन्तर्जातीय विवाह पुर हात है ?

प्रायः वे अच्छे नहीं होते । फिर इत्याण्ड पढ़नी ‘ननी कट्टर हाता है बिब’ कभी किसी दूसरे धर्म का पावन नहीं कर सकती । यदि फिर भी वे तो उमकाय विन्यास अधिक कान तक टिक नहीं मरगा ।^१

आलोच्य ललिताना न गगान व विनय को आर विनय ध्यानिया है । उगहर पाष एक स्थान पर हिन्दुस्तान में अरबा और म्यान्मार् का पत्रता का तथा एक अन्य स्थान पर हिन्दुस्तान व विभाजन के उपरान्त कराची में मनमोहन तथा अमानुषिकता का^२ तथा अन्तर्जातीय युद्धों की रीति-नीतियाँ का प्रासंगिक उल्लेख हुआ^३ । ‘म दिन आदि समाराहा में द्राक्षा का याचिन पीना गनिवार का गगान का पवित्र दिन मानकर उस दिन का^४ काम न करना बकरे के खून में हाथ भिगाकर घर में प्रवाजा पर पज गगाना घर का पहन चर के घर जाना आदि प्रथाओं का उल्लेख विविध प्रसंगा में हुआ है । पाठकात्मक राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय एकता का मन्त्र प चाना उपयास का उद्देश्य है । ‘त्रिभुवन न मरन तथा वाक्यावित एवं सुस्पष्ट भाषा का प्रयोग किया है । गगान व वणनात्मकता की अपेक्षा नाटकीयता अधिक है । क्या वणन का प्रणाली ‘तना मजीव ह कि महज का वण्य से पाठन का तात्पर्य हा जाता है । यथा परिवार को ‘नर मोनिक एवं रोचक व जानक की मणि त्रिभुवन की भौतिक सूत्र उभ का परिणाम है ।

२५ श्रीमती पुष्पा भारती

श्रीमती पुष्पा भारती न विधाता व निमाता तथा त्रिभुवन का वाच ‘गापक घटनाप्रधान सामाजिक उपयास की रचना का है । उपयास ‘त्रिभुवन होने के साथ ही व कहाना ‘त्रिभुवन भी हैं—उनके द्वारा मगह मरियम की समीक्षा इसका पूर्व की जा चकी है । उगान ममनादीन उनके ‘त्रिभुवन की भाति गगहस्थ चित्रण पर वन नंदकर समाज-पापी अपराध मनावति के विनयन को अपन उपयास का उद्देश्य बनाया है ।

(अ) विधाता व निमाता

‘स उपयास में गगान गगान व त्रिभुवन गगहस्थ प्रयास व गगानरूप महत्त्व को व्यजित किया गया है । ‘मम १७५ पृष्ठ हैं और कथानक विविध खण्डों में विभाजित है । उपयास का नायक जनन विद्यावन व उपरान्त कुछ उत्तमानी यवका के सहयोग से एक

१ अर्पना घर पृष्ठ २६

२ ३ देखिये अर्पना घर पृष्ठ ५७ ५८ ६

४ देखिये अर्पना घर पृष्ठ ६४ ६८ ८० ८२

ग्राम प्रत्येक-समय की स्थापना कर जन सेवा का कार्य करता है। इसमें निम्न उस जनक विरोधी परिस्थितियों (माता पिता के विरोधस्वरूप गृह-त्याग खेलनायक नीलकण्ठ का पट्टयत्र जनता में मिथ्या प्रचार जाति) का सामना करना पड़ता है। अपनी प्रयत्नी वमुचा सहयोग से वह प्रत्येक परिस्थिति को निर्भीकतापूर्वक सहायता देता है। फलतः उसकी जय होती है और पट्टयत्रकारिया का कष्टारूप प्राप्त होता है। कथानक का विकास करते समय ललितिका ने जिन तात्परता से घटनाओं का जाल बिछाया है उसमें उत्तमता से उस समयक उत्तमता हुई स्थिति का ध्यान कर लिया है। नीलकण्ठ के दान द्वारा हावाजनी घटमार अन्निकाएँ नारी उपहरण जाति रामाचकारी घटनाओं का वर्णन करके लिखिका ने कथानक का रोचक बनाने का प्रयत्न किया है किन्तु इसमें कहीं कहीं अस्वाभाविकता भाँजा गई है। "मक अनिरिक्त अतुल के ग्राम-मुधार सम्बन्ध दीध सचा" और वृत्ति घटनाओं का बाहुल्य ने भी कथानक का बाधित बना दिया है। क्या विधान का एक अन्य रूप यह है कि घटनाओं का विकास मनावनानिक रीति से नहीं किया गया। उत्ताहरणा वमुचा की घनिष्ठ सखी बीणा एक अत्यन्त मामास्य कारण से बटार नीलकण्ठ की सहयोगिता बनकर वमुचा और अतल के विरुद्ध पट्टयत्र में भाग लेती है और पुनः उसी नाटकीय रीति में उनका पारस हो जाती है। यद्यपि नीलकण्ठ के प्रति पूर्णा ने निम्न उसका पास कुछ ठाम कारण है—नीलकण्ठ की हृत्पज्ञानता अनचित और मनोवर्णनिक रीति से व्यञ्जित नहीं कर पाई।

आलोच्य वृत्ति में बहुतरास्य पात्र हैं किन्तु "सम चरित्र चित्रण की स्वाभाविकता का जनाव है। ललितिका ने इन और उसके सहकारी (वमुचा प्रकाश मोहन आदि) हैं जिनका सख्य जनसत्ता है और दूसरी ओर नीलकण्ठ के सहकारी (गजाधर महावीर आदि) हैं जो लूटमार अन्निकाण्ड जाति के द्वारा जनता का आतन्त्रित करके अपना उत्तम मोधा करते हैं। इन दोनों प्रकार के पात्रों में मध्यम विस्मृत उनकी पुत्री बीणा पायनी के द्वारा अतुल के माता पिता जाति अतल पात्र हैं जिनमें से कुछ अतल का साथ देते हैं कुछ विरोधी पक्षों से और कुछ दूसरे परिबन्धन हान पर एक पक्ष को त्याग देते हैं। उपयुक्त स्थिति में पात्रों के माननिक अन्तर्गत चित्रण के निम्न पर्वान्त अवसरों पर स्पष्ट प्रभावों का जाति रूप में व्यञ्जित हुआ है। वस्तुतः घटना-बाहुल्य में चरित्र का बिल ललितिका ने पात्रों की स्तुति विपरीता तब ही अपने का प्रीति रखा है और मस्तुत प्रभावों का जाति रूप में व्यञ्जित हुआ है। वस्तुतः घटना-बाहुल्य में चरित्र का बिल ललितिका ने पात्रों की स्तुति विपरीता तब ही अपने का प्रीति रखा है। वस्तुतः घटना-बाहुल्य में चरित्र का बिल ललितिका ने पात्रों की स्तुति विपरीता तब ही अपने का प्रीति रखा है।

प्रकार के हैं। वसुधा जीर जनन कतिपय मरणात् नो मीकाटि है जिनम जात न जगुग की जिनामा जा न उत्तरम ग्राम प्रव रर मय क उत्था का स्थापित है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि य कयापस्थान रणी क्हा जात्रयता म अधिग मिता हा गग है—अतुन की तत्त्वम्ब धी उस्तिया का पढ़न समय गग प्रतात हुता है मानो उप यास न पढ़कर ग्राम मुधार पर रान् याजना विवरण पग जा रहा है।

विवाता क निमाना म ग्रामा की विविध समस्याजा (मकाण मनारनि निधनता जमीनरा गारा दृषका का गापण जगिशा जाति) का विस्तृत चर्चा करत हुए अतन गारा मचानित ग्राम प्रव रर सय की ओर स ग्राम मुधार का उचित पष्ठ भूमि प्रस्तुत का गइ है। वसुधा क पिता नम मदस्य थ जनन क पिता धना ध्यापारी थ जीर धीणा क पिता पायावाग थ रि न उहान अपन उत्तरगायित्य रा यथाचित निवाह नही किया। तस्तिरा न उनक कान वारनामा का चचा करक गमाज म प्ररवित ब्रष्टाचार के रहस्यादघाटन का प्रयास किया है कि त यह समाज का कुलप पथा है उसकी उज्ज्वल सभावनाआ की जार उ होन ग्टिपातनक नहा किया। समस्त उप यास म खलनायक नीलकण्ठ और उसक सहकारिया का क बनकर रामाचकारी बाना वरण की सष्टि की गइ किन्तु अभियानि म स्वाभाविकता एय मनाविनात का प्राय जभा र रहा है अत गगकाल का चित्रण अनकग दृष्टिम प्रतीत हाता है। इस उपयास का यदि हम उद्देश्यप्रधान कह तो अनचित न होगा क्यकि इसम जाय सभी तत्त्व उद्देश्य गारा गासित रह ह। स्वत प्रता क उपरात भारतीय नताआ न भारत का उन्नति क त्रिए ग्राम मुधार की आवश्यकता का बहुग प्र तपादन किया है। पुष्पा भारती न भी प्रस्तुत कृति म इसी उद्देश्य का सम्मख रवा ह जीर रस ग्तिा म य योजनाए प्रस्तुत की है—सामूहिक प्रयास द्वारा छेती ग्राम म नहरा का निर्माण तथा बाध की स्थापना ग्राम पचायता का उचित संगठन शिक्षा का प्रसार यवतिया को जार पान क अतिरिक्त कला कौशन तथा महस्थी सम्बन्धी पान दना जाति। य योजनाए निश्चय ही उपयोगी ह। उप यास का उद्देश्य अथवा स दग ग्रामीणा क प्रति प्रकाग की निम्नलिखित उक्ति म भनाभाति यक्त हुआ है— अब यग ने करवट ली है। बरसा का सतप्त मानव अय जाग्रत हा उठा है। हम मुनत जाय है कि विवाता न सष्टि का निर्माण किया है उसने जन हाया स मारी तकदीर निछ दी है। त्विन हम इस भावना को समूल नष्ट कर दना है। हम अपने हाथा अपना निर्माण करना होगा। त्वित के सामूहिक प्रयोग स हम क्या नही कर सकत।

आलाच्य कृति म सरन जीर महावरेणर भाषा को स्थाप प्राप्त हुआ है। वाक्य रचना म त्रिग वचन का जगडिया बहुत है जा सम्भवत स्थानीय प्रभाव का परिणाम

हैं। यथा—(अ) पिता का विन्यास हो गया कि इसी ने डकती करवाया ^१ (आ) मैं करवट बदल दिया ^२ (इ) एसी नम्र कर जा उन्होंने कभी नहीं ख्या था। ^३ बस्तन का उपवास को उच्च कोटि की निर्दोष रचना नहीं कहा जा सकता। भाव पात्र का अतिरजना आ और अभिव्यक्ति पात्र की व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियाँ वृत्ति के सहज मोक्ष का विषयत व्यक्त किया है। उपवास का उल्लेख निश्चय ही युगानुरूप एवं महान है किन्तु उसका मुचाह अभिव्यक्ति के लिए जन्य तत्त्व का जसा मृत्तियाजन अपेक्षित था उसमें त्रुटिका का मरुतता नहीं मिल सकी।

(आ) विनारा न वाच

इस रोमांचक घटनाप्रधान उपवास में चरितनायक गतर के यशस्वित्व का विविध घटनाओं के माध्यम से उभारा गया है। उपवास की पृष्ठभूमि में महज ममम्पा का विवर्गन रूप है जिसके कारण स्टेन मास्टर कराध गया का पुत्री सरोज के विवाह पठा में मृणुना पात्र जिस खुशना उनर विमम्बन में हा पाया। इस घटना घन में उनर द्वितीय पुत्र गकर का मन इतना व्यक्त हुआ कि जन्य काइ भी उपाय करने में असमर्थ होने पर उसने छल छद्म का मार्ग अपना लिया। इसके उपरान्त ललिताना उसका पारा दिया गए विविध अवस्था का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया है जो उपन्यास के अन्त में उसका जीवन के अग्रमान की समबन्धी चर्चा की है।

उपवास के प्रारम्भ में पृष्ठभूमि के रूप में गकर के पारिवारिक जीवन की सहाय में चर्चा की गई है। त्रुटिका न गकर के पिता की विरगताओं माना के स्नेह और उसका प्रयत्न माननी के नि छत्र प्रेम का चर्चा करने के अनन्तर मूलकथायत का प्रारम्भ किया है। गकर के अपराधा जीवन का प्रारम्भ दितना के मन्त्रार ज्ञानार्थ का पन्हु हठार इपयो का योगा के म ह्रुआ (द्वारा के त्रुटिका न अग्रम प्रमवग दम पन्हु हठार निष्ठा है) किन्तु पुत्रिग के मचारिना न अपना अवमप्यता का चरितार्थ करने हुए कुछ अन्य अपराधा के लिए भी उसी का उत्तरदायी ठहराया। एवं जन्य प्रमम में गकर के जन माना की जहाँ उग्रा पन्धिय अग्रम अपराधी बाबूना न गकर म ह्रुआ। शत्रु म गकर ने गुरव और उसके माया इग्मास्त्र का अपना महायक बनाकर बका का बई पात्र मन्त्र का धारण किया। मूलकथा में पन्हु अपराधा का योजनाओं और इनकी वायान्विति का वर्णन है। गकर के जीवन का त्याग केन का अनर बाध निरन्तर किया किन्तु पन्हा गकर की जतिना के पन्धिरूप वह अपनी अनर प्रमिता माना का अपमान के लिए कभी स्वतन्त्र नहीं मचा। मरुति योगवग केन एवं अन्य अव्यस्त अपराधा त्रुटिका प्रसात का पुत्रा रक्षयोग विवाह के किया, किन्तु रक्ष माना का बना न बना गया

और मानती भी जीवभयान उसकी स्मृति में पुनर्ती रही। "म प्रवार मानती मय्य" का कथान का इस उपन्यास का प्रामाणिक वृत्त माना जा सकता है। सखिता को कथानक में रोचकता स्वाभाविकता और मार्मिकता का समावेश मग्राह्य मय्य का मिती है जिसका कारण यह है कि उ हान तथा विनास की चारा अस्वाभाव की गुत्तर योजना का है। कथानक का प्रारम्भ जितना जिज्ञासापूर्ण है उतना ही मार्मिक है उ हान उप महार को उस तुलित नदी होने दिया है। रीत्या न कथा मय्या और जाना म सुत्रा का म प्रवार प्रयोजन रखा है कि उसमें सस्ता रोचकता का स्वाम पर मनावाना मय्य और जीवन की प्रोत्सावना रीत्या का मय्य हो नित रीत्या जा सकता है।

म उपन्यास का नायक गकर है जिसका व्यक्तित्व रीत्या मस्थान है—एक और उसका निश्चय भावा की अभिव्यक्ति है दूसरी और अपराध जगत् में उसका मय्य अम्यस्त हान जान का मजीव वणन है और तीसरी और मानती के प्रति उसके सहज अनुराग तथा लक्ष्मी का प्रति वस्तुव्यजनित प्रेम का द्वात्मक चित्रण है। मामाजिन विष मताओ और पुनिस मारा मिथ्या दोषारोपण के फलस्वरूप वह उ कट इच्छा होने पर भी कभी अपने चरित्र का मस्कार न कर सता यह उसके जीवन की सहज मरण विडम्बना है। सरदार नानासिंह डाक्टर सक्कना और रीमती कपूर का धोखा दत्त मय्य उनके मन में गिव और अगिव का जा म विद्यमान रहा वह बाह्य के प्रमया म भी आत्मविस्तन का रूप में प्रायण उभरा है। यही कारण है कि जहाँ उसका अपराधी मित्रा (बाबूसास गवन तलसीराम पट्टा म्माइन) के प्रति हमारा मन में कोई सहानुभूति उत्पन्न नहीं होती वहाँ गकर के प्रति हमारा सदभाव निरंतर जाग्रत रत्ता है। नारी पात्रा में रीत्या ने मानती के मन को मय्य मय्य रखा है। उसका मन में गकर के प्रति अनन्य अनुराग है जिसमें वह उसके विकट अपराधी हो जान पर भी नहीं अता सकी। गकर को मय्य पय पर जाग्रत करने का उसमें अरसक प्रयत्न किया कि त वह और उसके माता पिता इस विद्या में मय्य सफन नहा। सके कि पुनिस की मय्य दृष्टि न प्रत्येक अवसर पर शकर के मन का मीर बना रीत्या। लक्ष्मी ने अपने पिता मरिकाप्रसाद से अपराध वृत्ति को मस्कार रूप में पाया था अतः उसने प्रारम्भ में गकर की अपराधी मनोवृत्ति को प्रारंभ हन मकर उस सफन के निवर्तन का अवसर नहीं दिया। घटनाक्रम से अपनी छोटी बहिन जगम्बा का मति यह भी आगवाणी हो गई कि त सब तक गकर के अपराधों को छाया दूर तक फन चका थी। अन्ततः यह कहा जा सकता है कि सखिता को घटना नियोजन का नाति चरित्र चित्रण में भी पूण सफसता प्राप्त है कथानक में पात्र प्रायः स्थिर न हाकर मतिगीन है और अतः एव मनोविज्ञान का आ मय्य लेकर उनके मारा जावन की बहुमुखी प्रवृत्तिया का उद्घाटन किया गया है।

प्रस्तुत उपन्यास में ममाज का विविध रूपा का उद्घाटन ममा है फनत इसमें पात्रानुक्रम कथापथन की ओर विषय ध्यान दिया गया है। सवाता में मरनता और मावहारिकता का समावेश इतने नमगिक रूप में हुआ है कि कथा विकास में उनके योग

‘गन की ओर सहज ही ध्यान जाकृष्ट हो जाता है।’ ललितकाल न क्यापरम्यन की याचना सामास नही की है फलतः व क्या मोष्टव म वाचक न होकर सत्रय सात्रय मिष्ट हुए है। इस सफलता का श्रेय ललितकाल की अनुभव शक्ति और विषय से उनका तात्पर्य को दिया जाना चाहिए।

आत्मार्थ उपवास में ममकालान सामाजिक वातावरण के कतिपय पक्षों की संपूर्ण अभिव्यक्ति हुई है। ललितकाल न गकर मुक्त और इस्माइल के माध्यम से अपराधों मनागति के यकिनों का कायबिधि का अच्छा परिचय दिया है। इस प्रसंग में पुनित कमचारिया द्वारा निरपराध व्यक्ति का अपराधविषय के लिए दापी गहरान और रिगलत गकर कदा का छोटे दन का उत्प्रेष करके ललितकाल न यथाय का व्यंग्यमूत्रक उदघाटन किया है। स्पष्ट है कि ‘उह इन मोना बगों में स किशों के प्रति भी सहानुभूति नहीं है।’ इस प्रकार उहान धार्मिक दृष्टिया पर भी सजाव प्रहार किया है। तुलसीराम पडा द्वारा रिगया के सहायता नाग में सहायता दन जब वाटन और यात्रियों को ठगन की चर्चा इसी उद्देश्य से की गई है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि ललितकाल न यथायवाली ललितकाल ने समकालीन सामाजिक समस्याओं का उभारकर दणकाल का सजग निर्वाह किया है।

मुन्नी पुष्पा भारती ने इस उपवास का रचना इस उद्देश्य से की है कि हम अपराधियों के प्रति दुराग्रही जयवा पूर्वाग्रही बलि न अपनाकर उनके प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करने का सवत्स करें। अपराध करने पर भी व्यक्ति का हृदय परिवर्तन सम्भव है आवश्यकता पड़ने पर इस बात की है कि उसका मनावगों की धयपूर्वक परीक्षा का जाय। यह सत्य है कि ‘मम सिद्धान्त को सभी श्रमियों के अपराधियों पर एक जमी सफलता के साथ लागू नही किया जा सकता क्योंकि यदि पुनित कमचारिया द्वारा ‘म ध्यान में रखा जाता तो दणक के चरित्र का उत्तरांतर ज्ञास कभी सम्भव न होता।’ हिन्दा उपवास ललितकाल न ‘म ममस्या के निरूपण और सफल रूप में निबहण का जोर मयप्रयम धामनी भारती ने ही ध्यान दिया है जिससे लिए ‘उह साधुवा’ दिया जाना चाहिए।

भाषा भाव प्रपण का साधन है अतः उसमें विषयानकूलता का होना अत्यन्त आवश्यक है। आत्मार्थ ललितकाल न क्यानक के सूत्रों का जन सामाजिक म मध्य में चुना है अतः उनकी भाषा भी सन्तुलित व्यावहारिकता से अनहत है। भाषा के स्तर का निशारण करते समय उहान क्या प्रयोग के अनिरिक्त पात्रों की सामाजिक मानदंडों स्थिति का भी दृष्टि में रखा है। उनको एक प्रमूग विषयता यह है कि उहान वाचक विचारों में क्यापरम्यन विस्तार का नही अपनाया है। फलतः उनकी भाषा में जटिलता का अनिवाय बहिष्कार हो गया। उनमें चित्र-गुण का भी सहज उभावग हो गया है। सामाजिक पक्षों का प्रति अभिव्यक्ति न गकर उहान प्रत्येक सरल वाक्या में क्या-वचन किया है

१ रविश्व विनारो के बीच पृष्ठ १०५ १०६ ११७ १३८ १४७-१५०

२ रविश्व विनारो के बीच, पृष्ठ ६० १२, ६६, ७० ७१

जिससे एक अभिव्यक्ति का जीवन का महत्व का अनुमान लगाया जा सकता है।

२६ सुधी उपा प्रियवदा

सुधी उपा प्रियवदा ने पचपन उमरे तक दोबारा पाएक मनोरथानिच नामा जिव [उपयाम की रचना की है जिसमें १३८ पद्य और १ परिच्छ हैं। "स्तुत उपयाम की नायिका सुपमा निम्न मध्य वर्ग का एक परिवार की मंगल बड़ी पुत्री है। उसका पिता ने उस एम० ए. का शिक्षा दिखाई किन्तु निधन होने के कारण वह अपना विवाह न कर पाए। सुपमा ने एक कानज म नौकरी करने परिवार का भार मंभारा अपन भाई पहिना के सुप के लिए उसने अपन को मिटा डालने का निश्चय किया किन्तु वह बार उसका मन अपन जीवन की नीरसता पर ऊब उठता था। मयोगवा उसका पश्चिम नील से हुआ और उसके प्रेम ने सुपमा के जीवन में सरमता का संचार किया। नील के अत्यधिक आग्रह पर भी सुपमा उससे विवाह न कर सकी क्योंकि एक तो वह उसमें पाच वर्ष छोटा था दूसरे वह अपन परिवार का मभ्रधार म नहा छोड़ना चाहता था। सुपमा के मानसिक अन्तः कलह और नाचना के सघप अगाति अतप्ति जाति मना-भावा के परिस्थिति सापेक मनोवर्णनिक चित्र अंकित करने में सखिका विंग सफल रही हैं।

सुपमा के माता पिता उनका कानज की सहशिक्षिकाया छात्राया आदि की प्रवृत्तिया का यथाप्रसंग उल्लेख करने सखिका ने प्रस्तुत कृति में स्वाभाविकता जान का प्रयास किया है। मिस शास्त्री का इष्ट्यानु एक निष्क प्रवृत्ति का मनावर्णनिक चित्रण करने में वह विंग सफल रही हैं। क्योंकि मिस शास्त्री अपने जीवन का न म किता युवक को आकृष्ट करने में सफल नहीं हुई अत अपनी अधःपावस्था में उह रिती भी युवक-यवती का रामास फूटी आखान मुगता था। अपनी पानतू बिना डिमरस्ट पर हाव अपना मारा स्नह उठगती था।

कथानक की नाटकीय मंजा प्रगन करत हुए नगिका ने सक्षिप्त एक पात्रा नकून कथापकथन की योजना की है। प्रसंगानुकूल हास्य व्यथ्य दीनता वरणा अह आति नावा का पात्रानरूप समावेश होने के कारण मवाद रोचक एक सहज बन पड़े है। शिक्षित पात्रा की उक्तिषा में श्री प्रान्वसी आदि प्रबो दात्रों का चित्रण उह स्वाभाविक रूप दन में ममय सिद्ध हुआ है। कथानक का मुख्य कायमत्र का नज का होस्टन है और छात्राया की उपद्रवी हरकता (गि त्वावा क कमरा में भ्रंशना या उनका लान के टिफिन म मन्त्र अरन्ना) गि त्वावा के आचरण और यमिनगत जीवन की विविधताया (विमो का प्रम विवाह विमो का केवल प्रमो से ही सतुष्ट रहकर विवाह न करना विमो का पगनिका की प्रवृत्ति आति) के चित्रण द्वारा नगिका ने वातावरण

जिससे 'नव अभियोजना बोध' का मन्त्र २१ अनुमान लगाया जा सकता है।

२६ सुश्रो उपा प्रियवदा

मुश्री उपा प्रियवदा न पचपन उम्मे ताल दीवार तापन मनोवर्गानि नामा जिव[उप] याय की रचना की है जिसमें १३८ पष्ठ और २१ परिच्छ हैं। प्रस्तुत उपपाय की नायिका मुपमा निम्न मध्य वर्ग के एक परिवार की मर्यादणी पुत्रा है। उसका पिता ने उस एम. ए. के तब शिक्षा लिखाई किन्तु निधन होना के कारण वह प्रमत्ता प्रिया न कर पाए। मुपमा ने एक बालक में नौकरों करण परिवार का भार सभाना अपने भाई महिना के मुर के लिए उसने अपने का मिटा जानने का निश्चय किया किन्तु वह बार उसका मन अपने जीवन की नीरमता पर ऊब उठता था। मयागवण उसका पश्चिम नीन से हुआ और उसके प्रेम ने मुपमा के जीवन में सरसता का संचार किया। नीन के अत्यधिक आग्रह पर भी मुपमा उससे विवाह न कर सकी क्योंकि एक तो वह उसमें पाच वर्ष छोटा था दूसरे वह अपने परिवार का मरुधर में नहीं छोड़ना चाहती था। मुपमा के मानसिक अन्तर्गत क्लेश और भावना के सघन अन्तर्गत अन्तर्गत आत्मना-भावा के परिस्थिति तापन मनोवर्गानि चित्र अस्तित्व करने में चित्रिका विनय मपन रही है।

मुपमा के माता पिता उसका कानन की सहगंधिकाया दानाभा आदि की प्रवृत्तिया का यथाप्रसंग उत्पन्न करके चित्रिका न प्रस्तुत कृति में स्वाभाविकता रान का प्रयास किया है। मिस मास्त्री का ध्यानु एक निष्क प्रवृत्ति का मनावर्गानि चित्रण करने में वे विनय मपन रहा हैं। क्योंकि मिस मास्त्री अपने जीवन का न कितना युवक को आकर्षित करने में सफल नहीं हुई जत अपनी जड़तावस्था में उन्हें रिस्ती भी यवक युवती का रामाम फूटी आखा न मुहाता था। अपनी पातनू बिना न्यि स्ट पर हाव अपना सारा स्नेह उन्नीती था।

कथानक की नाटकीय मन्त्रा प्रदान करत हुए चित्रिका ने संक्षिप्त एवं पात्रा नकून कथोपकथन की योजना की है। प्रमगानकल हास्य व्यंग्य दोनता वर्णा अह आदि भावा का पात्रानरूप समावेश होना के कारण सवाद राचक एवं सहज बन पड़ है। शिक्षित पात्रा का उचितता में की प्रामदमी आदि जगदी 'गो' का चित्रण उन्हें स्था भाविक रूप देने में समर्थ सिद्ध हुआ है। कथानक का मुख्य कायक्षण राज का होस्टन है और दानाभा का उपद्रवी हरकता (शिक्षिका का कर्मरा में भ्रष्टता या उनका सान के टिफिन ममत्ता नरत्ता) शिक्षिका का आचरण और व्यक्तिगत जीवन की विविधता (किसी का प्रेम विवाह किसी का बचन प्रमी सही सतुष्ट रहकर विवाह न करना मिना का परनिष्ठा की प्रवृत्ति आदि) के चित्रण द्वारा चित्रिका ने वातावरण

का सम्पत्ति न उभारा है। उनके द्वारा प्रस्तुत किया गया उनके वातावरण इतना मजबूत है कि समस्त दय मृत हो उठने हैं और भेखिका के निजी अनुभव की ओर संकेत करने हैं। परिस्थिति प्रभावित विवाह सुख से वंचित कुमारी के अन्तर्द्वार का विनय दस कति का एकमात्र लक्ष्य है जिसमें उपाजी को पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है। नारा हान के नाते उन्होंने नायिका के मनोभावों को गहराई से परखा है और अत्यन्त कुशलता से यह क्या मन में धरकर प्रस्तुत किया है।

आलोच्य कति से विषय के अनुरूप सरल तथा व्यावहारिक भाषा को प्राप्त हुआ है। हिन्दी के उत्तम एवं सम्भव भाषा में कुशल-स्वर टीचर्स क्लब, लाहौर में जाति प्रचलित अथवा भाषा का मिश्रण करके भाषा का यथामुल्य व्यावहारिक रूप प्रदान किया गया है। चारा आर के प्रयोग में उभरा वाता एक नई भाषा का तरह से रचा था अथवा विनय अथवा और सारा वाता नहुता उसका सार में किन्हीं भाषाओं का बोलेन ली है। यदि उनके वाक्या में जाति-कारिक भाषा भाषा का सौन्दर्य प्रस्तुत है। सुपमा के चिन्तन का यत्न करने के लिए अनेकानेक लविका न भक्ति-वाक्या का आश्रय लिया है। यथा — जब अपने से हरक के मन में एक मूर्ति पन जाती है चाह वह काल्पनिक हो या यथाय — उस क्षण तन्मय बन पर ही वे सब सब पन पड़ जाते हैं। सारा यह है कि मुझे प्रियवन्ता न कथानक और अनिश्चितता दाना में सहज चारणा को महत्त्व दिया है।

७ सुधी पुष्पा महानन

सुधी पुष्पा महानन न धूमत नक्षत्र गीषक सामाजिक उपयोग का रचना है जिसमें उन्होंने समाज के व्यक्तियों का गानस्थ न राखा की मनाया है। जिस प्रकार नक्षत्र समाज परम्पर नमुन तथा विषय-हान रहने में उसी प्रकार व्यक्ति की परिस्थिति का प्रभाव से कभी निरत हैं और कभी विनय हा जान हैं। उनमें ज्ञाना माधवी और आकाश का पारिवारिक कथाएँ नाथ तथा विनयित हैं। माधवी निलता के कारण माधवी का विवाह आकाश से न हाकर राजा से हुआ किन्तु उसकी विनय प्रवृत्ति के कारण माधवी सुखी न हो सकी। माधवी का जीवन भी इस शक्ति नमुना न था क्योंकि उसका पिता के हठ और उसके अनियमित मिथित भाव के कारण उनका एकलुप्त प्रभाव नकरने में नाश्वस्त हुआ था। फलतः उसने अनुपम पाकर माधवी के चरित्रों का प्रभाव कर लिया। उनमें विनय और निराश्रित मिथिता को उठा के लिए नारा नदिर का स्थापना को विनय माधवी और आकाश ना तन मन से ना रहने। नारा का छोटी बहिन राजा और माधवी का छोटी बहिन

सरिता व विवाह सम्बन्ध (प्रमत्त रमन् तथा प्रमत्त ग) मुग्धर मित्र दृष्ट, वरार्थि अभिभावका न जातय निनता से उप जाकरतहुण वर क गुणा का महत्त्व दिया। स्पष्ट है कि इस उपयाम की तथा माह य है सिद्ध कहा गयी तन्मिका न विररणात्मक गली का जात्रय तत हुण सामान्य प्रमत्ता का न विस्तार न वर्णित किया है। वातावरण क तन्मिका न चित्रण म त मय न तान व का न कथानन म कहीं कहा निवृत्तता जा गई है। एम प्रसगा म मूर्ति पूजा मध्या उपामना आदि व उत्तम गारा तन्मिका न अपन आस्तिक आरा र। पवन दिया है। जस वजागत घटनाए मन् मन्तर गति म विरमित हुई है और उनम रानकता का अभाव न्हा है।

धूमत नक्षत्र म साधना माधवी और श्रोता त व पारिवारिक समस्या क रूप म जनक पात्रा को स्थान प्राप्त हुआ है किन्तु प्रमुख पान ह-साधना माधवी राकान्त और उसकी बन्धि रेखा। समाज सेवा तमठता परापर स्नह महनीलता आदि मन्गुणा की दृष्टि स उक्त चारा पात्रा का चरित्र प्राय एकरूप है। माधवी व पति रजात के अतिरिक्त अन्य गोण पात्रा म भी प्राय सद्बलिया का विकास हुआ है। रजात व मन म भी परिस्थितिबग जत म अनुतापमयी भावनाए जाग्रत ब्रह्म जिससे उसकी दृष्टि सद्बलिया का पयाप्त परिष्कार हो गया। तन्मिका न परिस्थिति-आजना तथा कथोपकथन क अनिरिक्त अनक प्रसंग कथन प्रणाली म न पात्रा की विपत्ताजा को प्रकट किया है। उदाहरणाय निम्नलिखित उक्ति म शोकान्त का चरित्र द्रष्टव्य है—

राका त और उसक भिन सच्च हृदय से जन सेवा करना चाहत य। यह बात शोकान्त व निम्नवर्ती न थी। वह अपन कानन कानि म ही सेवा म रचि रखता था। कालज की रन्नास मासायटी का वह प्रधान था। या भी किसी को कष्ट होता रोग हाता व सदैव तत्पर रहता था। जयापन व पचात उसक विचार बहुत विकसित हा रह य। 'श्रीकान्त क हृदय म साधना क प्रति जो अव्यक्त प्रेम था उसकी अभिव्यक्त तन्मिका ने यत्र तत्र व मनावानिक तय स की है। उन्होंने रोचक और सक्षिप्त कथोपकथन गारा पात्रा की भावनाजा कथानक और दगाकान को यथाप्रसंग मुखरित किया है। वतिपय स्थना पर तत्पूण सवाता को भी स्थान प्राप्त हुआ है। माधवी और साविनी (माधवी की माता) व समाज विषयक वार्त्तालाप एव हेमन्त तथा स्वामी जी क आध्यात्मिक सवात एम हा हैं। तन्मिका न सवादा म नाटकीयता क समावेश जयवा नाव मुग्धा की सूचना की आर भी यथाचित यान रिया है।

धूमत नक्षत्र म दगाकान व चित्रण की आर विाप ध्यान दिया गया है। इसक कथात्मक का मन्त्रव मरुपन जमनमरसर हा है अत वहाँ क स्थानादि की त्रैलिका ने प्राय चचा का है। उदाहरणाय हास्पीटन राड का समीपस्थ बाजार स मिलानेवा न

पलक विषय में उन्होंने लिखा है— १८५३ में इस विलुप्त नयन सिर पर बनेवाया और इसका नाम 'पदम नन्दारी पुल' रखा गया। "पुल पर गढ़ावा नमिधुर्का का आण गीण तथा उनकी निजावति क विषय में भी विस्तार में उल्लेख किया गया है।^१ श्रीकान्त तथा मरिता के पति हमन्त की यात्रा के प्रयास में हृष्टिहार, हर की पौड़ी गंगा की उर्वरत द्वारा दोषान्त जादि टूमा का राक्षक चित्रण हुआ है।^२ स्वतन्त्रता के उपरान्त भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति की जात है— यहाँ उसका ललितान नयन-नयन शायिक रूप में उल्लेख किया है। 'यम' अतिरिक्त एक-एक देशवास सम्प्रदायों की तथ्या की मूर्ति वाक्या में भी व्यक्त किया गया है। यथा— अधिक शिक्षित नारी वर्ग का सवा के साथ में नाम का भूला है काम का नहा।'

सामाजिक कुरानिया (जातीय भेदभाव गृह प्रथा विधवा की दुर्दशा आदि) का उल्लेख करके उनका निवारण की दिशा में जागृत प्रस्तुत करना इस कृति का लक्ष्य है। साधना, रखा माधवी और श्रीकान्त अपनी अपनी परिस्थितियों के अनुसार समय मिलान पर पीड़िता एक निगद्यिता की सवा करन हैं। उनका मुख्य कार्य नैयमायवा द्वारा प्रतिष्ठित 'नारी मन्दिर' है जहाँ पीड़ित नारियों को सम्मानपूर्वक जीविका प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता था। ललितिका के मत में पुष्पा की भाँति महिलाओं को भी दान सवा में योग्यता चाहिए और यदि समाज के नित्यक इनमें राक्षक हा तो उनका उपस्था करनी चाहिए।' 'यम' पक्ष किया गया एक अर्थ सदृश यह है कि पत्नी पति की सहचरी है—पति के अत्याचारों के आगे झुकना उनका कर्तव्य नहीं किन्तु पति की कष्ट में देखकर पूर्व राक्ष का विम्वरण कर पति-सवा उनका धर्म है।^३ इस प्रकार ललितिका न अर्थ से इति तक उत्तम भावों की ध्येयता का है। प्रेम तथा विवाह के क्षेत्र में जाति बचन की अपथा के मुपाय चयन को जैविक महत्त्व देता है। इसी कारण साधना और रज्जित के विवाह को अमफन और रखा तथा रमण एक सरिता तथा हमन्त के विवाह का मफन दिया गया है।

मुभी महाजन न कथानक की मुचान अनियन्त्रित के लिए आपागत व्यावहारिक कथा का आर विषय ध्यान दिया है। उन्होंने संस्कृत के सगल तत्सम शब्दों का प्रचुर प्रयोग किया है, किन्तु विन्नी भाषा के प्रयोग का प्रवृत्ति उनकी रचना में बहुत कम है। गोघ्नता के जय में तरा के प्रयोग के फलस्वरूप कहीं कहीं वाक्य विपात में कुनिमता आ गई है। यथा— तरा से राविनी नीतर गई और लिफाफा ल जाई। नरा पूरा

१ घूमते नक्षत्र पृष्ठ २८

२-३ देविय घूमते नक्षत्र पृष्ठ ६८ १०० १३३ १४४

४ घूमते नक्षत्र पृष्ठ ६६

५ देविय घूमते नक्षत्र (घ) पृष्ठ ७८ ८२ (घा) पृष्ठ ३३८

७ घूमते नक्षत्र पृष्ठ ६

येन तया बहु वंष्टियां स्त्री मूली सत्तो चणो जगं गच्छुमा' प्र ११ तया उन्नेन भाषा म प्रवाच की यात्रना की है। पञ्चावी भाषा व प्रभावस्वरूप उन्नेन भाषा और माहणी 'जस ग' वा प्रयोग किया है जोर दूसरा जोर वास्य रि राग पर भी ग प्रभाव का जित किया जा सकता है। यथा— जाग हा मुझ को ब्रिजस् हा गया। ' तस्मिन्ना ने मुहावरा के प्रयोगानुसार मञ्जीव प्रवाच व साथ हा मूर्ति वास्य की भा स्वाभाविक योजना की है। यथा— मन्त्रा वं विष्णु स्तुतव कम व मामजस्य ता अप ता मन्त्रा हानी। हृन्त्य की वामन अनुभूति ही यह ग्रंथ जोड़ता है। अतः यह कहा जा सकता है कि मुरी महाजन ने यह उपवास म पारिवारिक मयान्ता जोर मामा जिन दायित्वा का सरन भाषा म सफलतापूर्वक प्रकट किया है।

२८ श्रीमती नारायणा कुम्भावाहा

श्रीमती नारायणी कुम्भावाहा न १८७५ ई. म पराय उम म गीपक उपवास का रचना का है जिनम उन्नेन ग्राम्य जीवन के ज्ञान म सामाजिक कथानक प्रस्तुत किया है। मन्त्र म कथानक इस प्रकार है— मन्त्र दिव्या ग्राम का निधन स्वयं था। उसका जीवन का सबसे बड़ा दुःख यह था कि उसकी इच्छा पुत्री मरना मुन्नी हात हुए भी नेत्रहीन थी। अतः कोर उमाय नेत्रकर पुत्री व नन्त्राप की वान गुप्त रखत हुए उसने तारापर ग्राम के जमीन्दार के पुत्र से उसका विवाह निश्चित कर दिया। मात नावर पन् चरी थी और निकट ही था कि सत्र बुद्ध निविष्ण ममान हा जाता कि ग्राम म गन कुम्हार जम्भू न दुष्टताय जमीन्दार का वास्तविकता म परिचित करा दिया। फलतः व विना बहु क वारात रोटा न गय। मरती पतिपरायणा भारतीय माती था। उमने अपने मुहूर्ता भाई जम्भू का सहायता से अपने पति का जनक कष्ट एवं अपमान सह कर जन्त म पा ही दिया। इस प्रवास म उन जम्भू के साथ त्रर दर भटकना पन् जिसका पुन परिणाम यह हुआ कि नगर के एक योग्य डाक्टर धोनाथ की चिकित्सा म उसकी नेत्र ज्योति दीर्घात्। यद्यपि इस उपवास म घटनाका का अन्तस्फुल जयवा सम स्याज की मनावनानिक गहराई सुनभ नहा है तथापि ग्राम्य जीवन की सरलता को नन्त्र म रचित हुए चित्रना न जा सलज मरस कथानक प्रस्तुत किया है वह निश्चय ही स्वाधनीय है।

नसिका ने इस उपवास म पात्रा व चरित्र को विविधतापूर्ण रखा है। मरता अपनी पति निष्ठा व वन पर अतम अपन आराध्य को पा सरी गम्भ आरुति स कुरूप होकर भी हृदय से उन्नेन एवं परन्त वकातर युवक या जम्भू कुम्हार विनी का फलन कूनन नही नेत्र मरता था जोर उमरा पत्नी अनुपा ज्ञान की कथा हानर भी

जन्म से उत्तरी धृति मूल का । इनके जातिरूप के अनुसार तत्त्वविषयों का उद्भव होता है ।
 त्याग जाति स्वभाव न प्रमाण है कि ललितका न मानवाय प्रकृति को उनकी विविधता
 म प्रकृति किया है । पात्रों की जाति एवं प्रकृति का अन्तर्गत विनात्मक वर्णन हुआ है
 कि पाठक का ब्रह्मा भी स्वभाव का जात्य सत्ता का आवश्यकता नहीं रहती । उदाहरणाय
 जगू तथा अनूपा के विषय में ये प्रकृतियाँ अवलोकनीय हैं—

(अ) जगू नाट्य कला का था । रम काला जगू भूरी गत पीने और बड़े बाना
 पर गीतों सिंगी ।^१

(आ) चार बच्चा का भा था जगू भग्न एक भी बच्चा जीवित न था ।
 चार बच्चा के गोश में पावन अनूपा का स्वभाव बिचिड़ा हुआ था । मुख पर एक
 दण्ड प्रीतिमत्ता थी जिससे उसका कुछ कुछ सदा मनु बोलत समय अजीब अमानक
 रूप का हो जाता था ।

जानोच्य पात्रों का सर्वाधिक साकार रूप का अर्थ उनका बानापाया का
 अर्थ चाहिए । श्रीमती नारायणी पात्रानुक्त सजीव कथोपकथना की योजना में इनकी
 मिश्रित है कि उपवास का प्रत्येक परिच्छेद रमक पर खल जानवाले नाटक क गुणा
 से युक्त है । ग्रामीण पात्रों के लिए सहज सुवर्ण गायी गायन और विद्वत् हाम पति
 हाम मद्भावर उक्ति विचित्र मरलता आत्मायता आदि विपत्ताएं सदादा में सवन
 अवलोकनाय हैं । जगू और उसकी पत्नी तथा सपत्नी उसकी परना क वार्तालाप विषय
 सजीव है । आह्वय अनूपा के प्रति उसकी पति की यह उक्ति श्रद्धा— तुम बच्चाता
 क्या है ? सपत्नी भी खुद ही मर रहा है क्या क्या दगा ? बड़ा बल था
 श्रीमती के यहाँ गायी करने—ऐसी चाल चली कि बच्चा खून के जामू रो पड़े । उस
 पति बड़ी अक्रान्ति रहा । अब सारी हकड़ी हवा हो गया । अब कभी जगू कुम्हार का
 मनु लगता कहना । बच्चा बड़ा का रास्ता लिखा दिया है इस सपत्नी की ऐसी तसी ।^२

ग्रामीण जीवन का चित्रण करने के लिए ललितका न मयाप्रसंग ग्राम्य वातावरण
 के विविध दृश्य प्रकट किए हैं । यथा—खता खतिनामा में वाराणसी का इन्द्रा हाना
 गीत मजार जाति पाद्य मन्त्र माने का नृत्य जपट ग्रामीणों का वात वात पर भाव
 परना गायी गायी मार गीट पर उतर आना, अतिरिक्त होने के कारण ग्राम्य नायिका
 का पराय मन्त्र में उच्छ्वस उच्छ्वस यद्वर गीत की सुभावनी मध्याह्न रात्रि रूप
 (पति का चोरीना पशुना का प्रत्यागमन नम का पीठ पर बड़े चरवाहा का मधुर गान
 गोश दुर्ग वसति का पायला की रुक-रुक आदि) रात्रि में अधिकांश राम निवासिनी
 का गान का ता-पात्र का जाना, कुछ योग का गण मारना या दूसरा का निवास में
 कु जाना का प्रमाणानुसृत चित्रित हैं । कहन का तात्पर्य यह है कि ललितका न प्रस्तुत

१ २ ३ पराय वस मे पृष्ठ २१, २१, २१ २२

४ ५ ६ ७-८ दलिये पराय वस मे, पृष्ठ ८, ३२ ५६, ८८ ८६

उपवास में देश और दान का यथाचित विप्रण किया है। अनन्त उन्निगत प्रमत्ता का नवर समाज की प्रवृत्तियाँ को जार भी मर्त विषय गण है। उन्निगता जरा मुरता का विवाह न हापान के प्रसंग में सविवा की यह उक्ति द्रष्टव्य है - नारा का एक जरा सा अवगुण भी समाज की दृष्टि में अमहनीय होता है। पग पग पर रिता जाना ² नारो को कही जाण नहा। पुरुष चाह जितना भी पुरुष जितना भी मन्त्र पुष्टि जितना भी चरित्रहीन हो परन्तु नारा की तुलना में वह हमारा उच है। जाधनिर पण्य-समाज ने नारी की बड़ी दमति कर डाली है। ¹

ग्राम्य जीवन का सहज विप्रण जानाध्य उपवास का नश्य है और जगम हाइ सन्तुह नहीं कि सत्तिका को इसमें सफरता प्राप्त हुई है। उन्निग यथाय (जम्भू अनपा सजीवन नाम रामन्याल आदि) एव आदग (जम्भू मुरली जानाथ) ज्ञाना का विप्रण किया है किन्तु अस्वाभाविकता जयवा जतिवाद का दायारापण कहा भी नहा किया जा सकता। इस कृति की भाषा सरल सरम एव प्रभावपूर्ण है तथा गली में महज प्रशङ्क है जा अनायास ही पाठक का आकृष्ट कर जाता है। जयमरानकून सरम मन्त्रावर क प्रयाग स रचना का मोदय बढ गया है। उन्निहरणस्वरूप य प्रयाग नखिल—(अ) जान् यककर गन में फूटी जाल कौन सटकाना चाहता (जा) औरत में जरा भावादि सुन नी मा बल की तरह पगहा तुझाकर बिगडकर नी गार्यारह हा गए। ³ नखिका ने उपमया के जनहप यथोचित उपमाना और भावानुरूप भाषिक सूक्तियाँ नारा भी कथा का ठगार किया है। प्रस्तुत उपवास की विगपता यह है कि इसमें ग्राम्य जीवन का अत्यन्त स्वाभाविक चिन्ताकन हुआ है। प्रमचन् के उपरांत उपवासकारा नन्स क्षण में विषय सफरता का परिचय नहीं दिया और यदि महिना उपवासकारा की और दृष्टि पान करें तो कन्ना हागा कि किसी ने इस दिशा में विगप प्रयाग ही नहीं किया। इसी कारण ज़ीमती नारायणा बुगवाहा का पराण बस में उपवास हिन्नी साहित्य में महत्त्व पून स्थान का जयिकारी है। प्रमचन् की उपवास परम्परा में यह एक सफल योगदान है। मान एव अभिव्यजना दाना की दृष्टि से नन्सका गौरव अप्रतिम है।

२६ सुग्री विवानी

विवानी हिन्नी कथा साहित्य की उदीयमान नखिता हैं। उनकी अनेक कहानियाँ यमयुग सारिका आदि समवाचीन पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही है। आजकल उनका चौदह फर गीपक उपवास यमयुग में वारावाहिक रूप में प्रकाशित हो रहा

१ २ ३ पराग बस में पृष्ठ १४ १५ १७

४ दलिय पराग बस में पृष्ठ १६ ३३ १४

५ यह उल्लेख अप्रासंगिक न होगा कि मेरा उपवास बग बत्तरी भी ग्राम जीवन से संबद्ध है।

है। इससे पूर्व मायापुरी उपन्यास पुस्तक रूप में प्रकाशित हो चुका है उसी की समीक्षा यहाँ अतिप्रसन्न है। इसमें पन्नाड़ी काया गोना के मधुपपूर्ण जीवन की कथा अंकित है। शोभा सुन्दरी की गतिता थी किन्तु सुख उमर नाग्य मन था। एम० ए० तक शिक्षा पूर्ण होत-न हात वह पिता तीन छोटे भाइयों और बाल्य में माता से भावचित हाकर पूणतया निराश्रित रह गये। सतीश नामक एक उमर प्रेम करता था कि तु वह दम दिए उमर विवाह न कर सका कि उसका सम्बन्ध पढ़ने ही राजदूत तिवारी जा का काया सविता से निश्चित हो चुका था और सतीश में इतना दृढ़ता न थी कि वह माता पिता का विरोध करके गोभा का अपना करता। कुछ दिन कटुस्वभावा मामी के आश्रय में रहने के बाद गोभा का एक रानी की सख्ती का पत्र मिला और उस प्रकार एक स्थायी और सुख आनन्द मिल जाने से उसका कष्ट का जन्म हो गया। वहाँ रहकर उस पात हुआ कि सतीश स्थलांगी दुश्चरित्रा सविता के साथ रहकर प्रमत्त नही है। फिर एक दिन एक दुष्टनायक सतीश के दोना पर कुचन गया और गोभा ही उसका मृत्यु हो गई।

उक्त कथा के सम्बन्ध में यत्र तत्र एक आध नव गौण कथाओं का भी समावेश हुआ है। ललितकाल समाज के विभिन्न वर्गों से पात्रों का चयन किया है। नायिका शोभा अनुपम साध्वी एवं विविध गणों में एक है। नायक सतीश सुन्दर तथा योग्य पुरुष है किन्तु घर में माता के कठोर शासन के कारण वह अपना जीवन अनिश्चितता में मोटा देने का विचार हा जाता है। सतीश के मित अवितान के सरल एवं सरस व्यक्तित्व में नयानन्द में यत्र नव सजीवता की स्रष्टि की है। पूर्व प्रयत्नी उपा द्वारा बाधा दिए जाने के कारण अवितान नारी मान को छत्रावा मानता था किन्तु जब सतीश का एकमात्र रहित मजरी में अवितान में सोने के बप छोटा होने पर भी उस अपना आराधन मान दिया ता अवितान को भी विवाह की स्वावृति दनी पड़ा। मजरी मरने हुये युवती है और गोभा से उसका प्रगाढ़ स्नेह विपत्त उत्पन्ननीय है। सविता उपनायिका है और राजदूत की नया होने के कारण उसमें मिश्रित मत्तपान पर पुरुष प्रेम जाति से सब दुष्गुण हैं जो यन्मान उच्च वर्ग में सम्मति के चिह्न समझे जाते हैं। तिवारी जी भी अपने वर्ग के सच्चे प्रतिनिधि हैं। अपने धन के बल पर वे सतीश से योग्य युवक को आमाता रूप में ग्रहण कर ही नते हैं। स्नाहलहृदया एवं पतिप्राणा रानी प्रूर एवं विनासी राजा गोभा की कथा मामी स्वामी उमर मजनु भाई रामी सविता के घर समाधि नगानवाल डागी महात्मा मुहंममाला किन्तु मन मन्नेह रखनेवाले रानी की मेरिका गिवकनी जाति गौण पात्रों के चित्रण में ललितकाल बलवत् विपत्त जा के अतिरिक्त व्यक्ति व्यक्ति का भी समावेश किया है। जसा दग वसा नप के अनुसार ललितकाल ग्रामवासियों को अत्यन्त सरल तथा एक दूसरे के सुख-दुख में महायत्न दियाया है। रसिया चाचा, पद्मान दादा चूनाबाना आदि पात्र गोभा के साथ हास्य महानुभूति का व्यवहार करते हैं। पद्मान दादी ने जिस सरलता से गोना के कल्याण के लिए अपनी विरमचित पूजी उसे अर्पित कर दी वह भावना नाप्य है।

पात्रा हा चरित्र चित्रण रत्न ममय ललिताने परिस्थिति तथा गृह भूमि का सत्त्व प्रदर्शक रत्ना है। गाना शब्दगुणमयत्वा होता पर भी गान भाव ग गुण है क्योंकि उसकी परिस्थितियाँ ही हमों का। पर घर में पर रत्ना पर निर्भर रहकर (माता कथन में) यदि वह अपना महत्ता सिद्ध ना करता तो यह उचित प्रतीत न ठाता। मुख्य रूप में परिस्थिति चित्रण तथा मवात् योजना द्वारा चरित्रावली किया गया है कि पुत्र-पुत्र-पात्रा व चि तन प्रवाह में अ य पात्रा की विगपताओं का भी समावेश हुआ है। उदाहरणार्थ गाना क विषय में समीप का यह विचारधारा स्पष्ट है— यह गाना य रत्ना नहीं था उसकी जीवा में अगाध गान्धीय था उसका दुःख रत्न तता में बुद्धिमान तज था।^१

गानाच्य उप यास में पात्रानुप नवाद योजना का म है। उदाहरणस्वरूप गाना की मामी का उन्नतियाँ उत्तरगनीय है वह पुत्र भी वांछनी ह तान में अथवा गाना दवर। इसी प्रकार गिवकनी ई कथन उसमें स्नेहमय मन एवं वगगत नापा क प्रमाण है। सविता मजरी जविनाग आदि पात्र बीच-बीच में एक साथ अलग-अलग अथवा वाक्य का प्रयोग ना करत ह। कतिपय पहाड़ी पाना द्वारा यत्र तत्र आचैनिक नापा का भी प्रयोग कराया गया ह। यथा— नीखानी मन ग ?—नहीं खाती तो मरी बना स।^२ किन्तु पहाड़ी गानावता क तरन्त बाग चरितका न उसका शिनी अथ द शिमा है जिससे पाठका की अनुविद्या न हा।

गानाच्य उपयाम में मुख्यतः रखनऊ नवीतान दिस्ता और पगाड का एक गाव (गाना का ग्राम) कथानक का रह है। इनमें पहाड के रीति रिवाजा का यत्र-तत्र विस्तृत उल्लेख हुआ है। यथा—

(अ) पहाड़ी स्कन्ता में बच्चयति बिना टोपी क जाए तो उन्हें कठार दण मिलना था।

(आ) जनक गान तक लडका क बान नहा काटत और व नडकिया की भाति चोटी बाधत है।

(इ) उमर गांव में पारिजात का एक पत्र उसी क घर से मटकर गया ह। और होत हा गाव की जीरने जाचना में भर भरकर राख चढ़ान न जाती है। कहत है कि एक गाव पारिजात पत्थ चटान में विष्ण प्रसन्न हा नि सन्तान को स तान एवं पुभारिया की कतिपय सा मुन्तर वर दत है।^३

मायापुरी क जनक प्रसगा में आचैनिक उपयास की विगपताओं का समावेश आ है। ग्राम्य वातावरण क स्थित सहज चित्र चरितका न जक्ति किय है। यथा— छता पर कपड मूखना गाव नसा का उटिया का स्वर चूड़ीवान क आन पर सबका घर

१ मायापुरी पृष्ठ २ ३

२ दक्षिण मायापुरी पृष्ठ १३४ १४२

३ ४ ५ ६ मायापुरी पृष्ठ ११ १६ २२

कर लड़ हो जाना और भिन्न भिन्न प्रकार भ्रम जगासा यत्न करना जानि।^१ प्रसगानुकूल नागरिक जीवन का चित्रण म भी लेखिका सफल रही हैं। यथा—राजदूत तिवारी जी के व्यस्त राजनीतिक एवं पारिवारिक जीवन की भलक, आरमिक मर्यादा का प्रतीक सविता की मर्यादा जादि प्रवर्तित ढागा मावना व प्रतीक रूप पाँल दावा का मध्य पूर्ण उत्तर आदि। नेपाल का रानी के राजभवन के दृश्य उनके रीति रिवाज आदि का चित्रण करके लेखिका ने विगत सामन्तवादी जीवन का चित्र कन किया है। राजा जी को विलासप्रियता रानी के प्रति कटु व्यवहार^२ राजा के मित्र व मन्त्र का बलुपित जीवन^३ जानि म प्रसग म विक्षिप्त उत्पत्तीनीय हैं। लेखिका का प्रतिपाद्य यह है कि वर्तमान भौतिक युग म मय की गति सबसे बड़ी है किन्तु मानसिक गति मय द्वारा मय नहीं की जा सकती। मय व कारण शोभा का सतीत म विलग होना पडा किन्तु मतीत तथा उसक माता पिता भी सविता का पाकर मानसिक दृष्टि से गत न हो सक। या ममार का दृष्टि म व सर्वाधिक प्रसन्न व कजा सब चक गया था, विलास के सब साधन प्रस्तुत व।

मायापुरी की रचना सजीव एवं प्रवाहपूर्ण भाषा म हुआ है। चोटोभास कणमदन दहवल्लरी, जनाहन स्वयं स्वयं जादि विलम्ब समस्त श्रम न मय तन वृत्तिमता मय उत्पन्न की है कि त कुल मिलाकर भाषा प्रभावपूर्ण बन पड़ी है। प्रसगानुकूल मय मयो (घटकने मयते भोजन को डान दिय, मयमा)^४ और अत्रमरोचित रोचक मुहावरा न भाषा म सजीवता का विक्षिप्त संचार किया है। अनेक प्रसगा म आनकारिक श्रमवली का भी सुन्दर प्रयोग हुआ है। यथा—

(अ) गोना की बड़ी बड़ी तश्तरी सी आया म आसू डबडबा आय।^५

(आ) पेड़ी क बीच से झँकती मोल गोनाकार मयिणी सी पगडडिया लागा न चलने से मुखर हो उठी।

पहाड़ी पात्र व सबादा की योजना मे लेखिका ने कुछ स्थानीय श्रम एवं वाक्या का भी मय तन प्रयोग किया है। यथा—बटिया क लिय चलिया बूडावाल क लिय मोना मुसममान नाइ के लिय मसरी दाज्यू आदि।^६ निष्कण रूप म श्रम व मयुक्त विद्या लकार का मन्त य दिये— उपन्यास की गली पुराने ढग की है कुछ-कुछ पिछले बंगाला सामाजिक उपन्यास के ढग की। पर न सिर्फ उपन्यास म मय मय मय पकड है

१ देखिये 'मायापुरी', पृष्ठ १२० १२१

२ ३ ४ देखिये 'मायापुरी', (अ) पृष्ठ १३७ (आ) पृष्ठ १५८ (इ) पृष्ठ १ १ ८८, १३९ १५९

५ देखिये मायापुरी, पृष्ठ १ २ ५

६ ७ मायापुरी, पृष्ठ ८३ १

८ देखिये 'मायापुरी' पृष्ठ १२१ १२१, १२१

अपितु 'रखिका' कुछ सजीव पात्रों का निर्माण करने में भी मफल हुआ है। 'रित्रा' और 'नयानक' में कुछ अनावश्यक रूप से महुर १४ दन का प्रयोग लेखिका ने इस चित्रित है।^१

३० सुश्री मालती परूलकर

सुश्री मालती परूलकर ने जहाँ जनन सामाजिक कहानियाँ काटवना का है वहाँ १५ परिच्छेदों और १२८ पृष्ठों में बाबा 'गीपक' सामाजिक उपवास का चित्रा है। इसमें न केवल नायिका के मित्रों और बिरह विषयक घटनाओं का स्पष्ट चित्रण है। बाली और गिरीष बम्बई की एक कानूनी में रहते थे। बाबा 'गिरीष' पढ़ रहा था और गिरीष इंजीनियर था। नित्य-गन एव सम्भाषण के पत्र-व्यवहारों में प्रेम भाव का उत्तरोत्तर विकास होता गया। एक दिन निरय 'माइतिर' मित्रों के स्थल पर गिरीष का अनुपस्थित पाकर बाली बहुत चिंतित हुई। बाद में उसका कल्याणस्थिति का बोध होने पर वह गिरीष के मित्र पटवर्धन की सहायता से उसके घर पहुँची और उसकी सवाग-गुणा से उसकी दगा सुधरने लगी। मुख्य कथानक केवल इतना ही है—बाली और गिरीष के माता पिता भाई भाभी आदि थे यथाचारिक समस्या के परिषय जीवन इतिहास आदि को 'रखिका' ने पटवर्धन में रखा है जो कहा नायक अथवा नायिका के चित्रण प्रवाह में और वही उनके कथापकथन में प्रमाणानुक्रम व्यवस्था हुआ है।^१ मुख्य पात्र गीण घटनाओं के समुचित सुगम्यता में तो 'रखिका' सफल रही है किंतु घटनाओं की गति एवं मध्यम गति से विकसित हुई हैं कि कथानक में बाधित वग एव रोचकता का प्रायः अभाव रहा है।

कथानक की भाँति चरित्र चित्रण में भी 'रखिका' ने केवल स्थल प्रवर्तिका का उल्लेख किया है—पात्रों के अंतरात्म्य में पठकर उनके सूक्ष्म मनोविज्ञान की व्याख्या उनका लक्ष्य नहीं है। बाबा के स्वरूपण करने मर्यादापूर्ण एवं उदार चरित्रत्व के चित्रण में 'रखिका' का विषय मफलता मिनी है। पात्रानुक्रम सवादा के प्रमाण रूप में सप्तम परिच्छेद के प्रारम्भ में गिरीष के ताऊ की उन्मत्तता उल्लेखनीय है। बाली के अग्रज-प्रणाम और मुहावरा से यहाँ 'छात्र' कथन माना उनके 'राज' चरित्रत्व के स्पष्ट प्रतिबिम्ब हैं। जानाँच कथानक का केन्द्र स्थल बम्बई नगर है। जहाँ कहा ज दानीय स्थानों का यत्र तत्र प्रासंगिक चर्चा का गई है। यथा—'गजानन' का प्रसिद्ध आनंद मुवापुरी का मन्दिर आदि। महान श्री में समस्त के ऊपर वध पत्र तथा नीच वन मन्दिर के विषय में प्रचलित किंवदन्ती का उल्लेख करके 'रखिका' ने भारतीयों में

१ आनन्द अक्षर १९६१ पृष्ठ ४६ ५०

२ ३६ देखिये बाबा पृष्ठ ४० ५१ ८६ ८७ ७४ ७६

५ देखिये बाबा पृष्ठ ५४

प्रचलित धार्मिक अंधविश्वासों का उन्नाहरण प्रस्तुत किया है। कहते हैं कि पहलू बहा पर जो पुन बनाया जाता था वह टूट जाता था। बाद में एक बार एक इजानियर को देवता ने दशन देकर कहा कि यदि नीचे उसका मन्दिर बन जाएगा तभी ऊपर का पुन बन सकेगा और फिर यसा ही हुआ।^१

स्पष्ट एवं प्रवाहपूर्ण भाषा गली मध्य मरल प्रेम कथा का वणन आनोच्य कृति का एकमात्र नदय है। भाषा युद्धि की अपेक्षा देखिना न उस आवश्यक बनान का और अधिक शान दिशा है फलतः उसमें तत्त्वम, नम्रभाव तथा विनयी—तारा प्रकार के शब्दों का प्रयोगानुसूत्र मिश्रण हुआ है। प्रकृति चित्रण के समय अथवा किसी मार्मिक प्रसंग का वणन करते समय लेखिका की गली प्रायः भाव प्रवण हो उठी है। यथा—
 'धस की ऊपरी मजिल की खिड़की से बाती की नजर अचानक फली नम रागि पर गई।
 'बार अपने पूर बार पर था। सहर्ष बाव से टकरा टकराकर उछलकर राह पर पानी फेंक रही थीं। धूमिमा बादनी में बगवती नागिन-जसी दोड़कर आनेवाली फुत्कर फुहार फेंकनेवाली सहृष्टा में एन अजाब उमाद था।'^२ यह बड़ आश्चर्य की बात है कि लेखिका ने 'ताई' शब्द का प्रयोग बहून के लिये किया है^३ जबकि ताऊ गन्ध पिता के बड़ नाइ के लिये ही प्रयुक्त हुआ है^४ जसा कि ज्ञाना भी चाहिये। निम्न रूप में पाठ्य है कि 'बारी आकार एन प्रकार दोनों की दष्टि से अत्यन्त लघु उपमास है। इसमें कथानक इतना नगण्य है कि यदि इसमें से परिच्छेद का बर्तन हटा लिया जाए तो निरुपय ही यह उपन्यास एक दीघ कहानी मान रह जाएगा। वस्तुतः मातनी पम्नकर बहानी लेखिका के रूप में जितनी सफल हुई है उपमास लेखन में उतनी सफल नहीं हो सकी। या भविष्य में ता सम्भावनाएँ हैं ही।'

३१ श्रीमती बिन्दु अग्रवाल

श्रीमती बिन्दु अग्रवाल ने १५२ पृष्ठा और २८ परिच्छेदों में मोहले की बूझा गीयक पारिवारिक उपमास में एक मध्यवर्गीय हिंदू परिवार का बझा नारा का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। बाह्यकाल में पति की मृत्यु हो जान के कारण वह नारी मुख्य रूप से अपने मके में रही और अपने अनाथ अतीज माहन और अतीजी मातनी को पालन पोस परबधा किया। घरवाला के प्रतिरिक्त मुहल्लवान भी बूझा कहकर पुकारते थे। या गन्ध पर और बाहर सक्न सबके साथ सहानुभूति रखती थी, सबकी सहायता करती थी किन्तु ज्या ही अपन मस्कारा एवं अनुभाव के विरुद्ध किसी को (नई पीढ़ा के व्यक्तियों को) कुछ करते देखती तो ही उस वह अमत्ता हा ठठना और उसे जो नरकर गरी

१ देखिये 'बाली', पृष्ठ ५५

२ 'बाली', पृष्ठ २०

३ देखिये 'बाली', पृष्ठ ७८, ७९, ८०, ८३

४ देखिये 'बाली' पृष्ठ ७४, ७५, ७६

मोटी मुनानी अथवा तब द्वारा अपने विचारों को उस पर घोषणा चाहती और बग न चने पर दु गो जववा नद हो उठती। अपनी नती-नी मानती है एक यगानी प्रेमम म प्रेम विवाह कर नन क कारण बुजा को इतना सदमा पहुँचा कि उसकी मृत्यु हो गई किंतु मरने व पय वह मानती को क्षमा करता गई।

विवेचन कृति में लिखित ने किमी कमबद्ध कथानक की सृष्टि न करत बुजा की चरित्र व प्रत्येक पक्ष का स्पष्ट करत हुए उसका मरना एव विवाहमाया का ही घटना का रूप में अंकित किया है। कहना न हागा कि 'मम कथानक शिष्टान्त होकर बिखर सा गया है। सम्पूर्ण उप याम बुजा क सवादा से आतप्रात है जो प्राय मुहामरेणर तीव्र अनक' यथारमय तथा विभि न प्रसंगा म तवपूर्ण हैं। व निश्चय ही महज एक रोचक है बुजा का सस्कारप्रस्त तजस्वी 'यनितय उनका नारा भूत हो गया है। बुजा की सुतनी 'वराणी की सतनी उचितया म हास्य रस का सुन्दर परिपाक हुआ है।'

प्राचीन एव नवीन सस्कारा का सषय लिखाकर ने लिखा कि द्वि परिवारा म अक तव प्रचलित (किन्तु अब धन 'न गियिन होती हुई) एक महत्वपूर्ण समस्या का चित्रण किया है। प्रस्तुत कृति का उद्देश्य यह सिद्ध करना है कि 'यदि अपने सस्कारा म इतना जकड़ जाता है कि चाहने पर भी उनसे मुक्त नहीं हो पाता। उद्देश्य क प्रति ने लिखा का आग्रह इतना प्रबल है कि 'स कृति म उपयासाचित अनेकरूपता का गुण नहीं जा पाया और इसी का परिणाम है कि बुजा का चरित्र समय कथानक को आच्छादित करता प्रतीत होता है। आगे-य कृति म सबव पावहारिक महावरेदार एव नाटकीय भाषा 'सी को स्थान प्राप्त हुआ है। यह सराहनीय है कि लिखिका ने सवादों को अत्यंत स्वाभाविक स्तर पर आयोजित किया है। बुजा की उक्तियाँ उनका अतिशित व्यक्तित्व के अनुरूप पावहारिक 'ग'बली तथा महावरा स युक्त हैं। मध्य वग की अगिसित वृद्धा नारा का जितना अनुभवपूर्ण एव सजीव चित्र सुनी बि उ अग्रवान ने अंकित किया है उसके लिए ब बवाई की पात्रा हैं। पुरुष लिखने नारा नारी हृदय की ऐसी स्वाभाविक प्रस्तुति सम्भव ही कहीं थी ! यदि उहान उक्त गुणा की सुरक्षित रखते हुए कथानक के क्रमबद्ध विकास की ओर भी ध्यान दिया जाता तो यह उपयास निश्चय ही एक नष्ट कलाकृति क रूप में प्रतिष्ठित हो सकता था।

३२ सुधी कमला टडन कमल

सुधी कमला टडन ने लिखित स्वप्न 'नीपक पारिवारिक उपयास की रचना की है जो २४६ पृष्ठा तथा २२ परिच्छ । म सम्पूर्ण हुआ है। इसमें एक निम्न मध्यम वग क जभावप्रस्त परिवार का वर्णन चित्र अंकित किया गया है। गृहस्वामी जोमप्रकाश उनकी तलाप पत्नी भुवन'नरी माता जानका द्वितीय पत्नी से उत्पन्न पुत्र गिरीश,

स्वातन्त्र्योत्तर युग की अथ छपन्याम लखिकाओं

तृतीय पत्नी की चार बचियाँ (बिनीता सरिता गुडो तथा नही) और एक नहा पुत्र दीपक इस परिवार के सदस्य हैं। परिवार का जीवन सघन एवं बदनाम ही पतीत होता है, मुख के भाके गृहा अत्यंत विरक्त है। उपयास के मध्य से लेकर अंत तक तो परिस्थितियों का ऐसा कठोर चक्र घूमता है कि एक एक करके सभी व्यक्ति मरण होकर मृत्यु का शास्य बन जाते हैं—'प' रहते हैं केवल गृहस्वामी और उनकी दो छोटी पुत्रिया (गुनी और नन्ही)। लखिका में साधारण सांसारिक स्थिति के इस परिवार के प्रत्येक पहलू पर विस्तार से दृष्टिपात किया है।

विरक्त स्वप्न में समय एवं गतिगामी पात्रों की सृष्टि की गई है। इनमें तीन पात्र हैं—भुवनेश्वरी बिनीता और सरिता। तीनों ही कष्ट एवं सघर्षों में मुस्कराने वाली आत्म निर्भर एवं कमठ नारियाँ हैं। बिनीता अरविन्द से प्रेम करती है किन्तु माता पिता द्वारा दुहाज मगनलास से विवाह निश्चित कर देने पर वह अपना बदनाम मन में ही दबा लेती है और किसी का इसका आभास तक नहीं होने देती। सरिता इस उपयास की नायिका है—वह बिनीता से भी अधिक उदास एवं समय है। पक्क से अभिन्न प्रेम करने भी उस परिस्थितिवादी प्रकाश नामक धनी घर की पत्नी बनना पड़ता है किन्तु वह भारतीय नारी के आदर्श को क्षीण नहीं करती चाहे विवाह के बाद वह पक्क से विरक्त में घुल घुलकर प्राण त्याग देती है। पुरुष पात्र में ओमप्रकाश अरविन्द और पक्क उत्तलनीय हैं। इन तीनों का चरित्र आन्तरिक रूप में अक्षत किया गया है क्योंकि पक्क परिस्थितियों में भी उठ रहकर स्वयं का निवाह करने है। लखिका को सात से बड़े पति पत्नी प्रभों प्रेमिका माता सतान जादिवर परिस्थिति प्रेरित सवादा की योजना में भी सफलता मिली है। बाल मुनम नियाआ की भाति उठाने बालोचित सम्भाषण का भी सहज योजना की है। इस प्रसंग में सरिता और बिनीता के सवाद दृश्य है।

प्रस्तुत उपयास में एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार की दैनिक कठिनाइयाँ का चित्रण हुआ है समाज अथवा देश की किसी समस्या का विस्तीर्ण उत्पन्न करने की ओर लखिका की प्रवृत्ति नहीं रही। उन्होंने भारतीय नारी के समय त्याग सहनशीलता कमठना आदि गुणों को बिनाप रूप से निगारा है। करीब ही उन्होंने नारी मनोविज्ञान में भी सुन्दर सूक्तियाँ भी प्रस्तुत की है। यथा— नारी के हृदय में वत्सा का अथाह प्रेम समा सकता है किन्तु मुख एवं प्रमत्तता का वह अपन अन्तर सीमित नहीं रख सकता उसके अथ प्रत्येक से उसका अन्तर की प्रसन्नता प्रकट हो ही जाती है। अस्तुत नमिका का उद्देश्य निम्न मध्यवर्गीय परिवार के सुख दुःख में जीवन का सहज चित्रण तो है ही उन्होंने पाठकों की विषय परिस्थितियों का वयपूर्वक सहन करने की प्रेरणा भी दी है।

विरक्त स्वप्न में यावहारिक भाषा का प्रयोग हुआ है। लखिका की वचन

१ लखिके विरक्ते स्वप्न पृष्ठ १८ २० ३३ ३७ ४६ ५१
२ विरक्ते स्वप्न पृष्ठ १०२

मानो मन्त्र आवाकूस एव प्रवाहमया है। भाषा की दृष्टि पर पर्याप्त स्वाध्याय होने पर भी एव उपयास को सामान्य वाक् की रचना माना जाएगा। मृशु की रचना दूसरा का बार बार चित्रण होने का कारण क्या है? म किंचित् जगत्-वस्तुता जा गई है—एगा प्रतीत होता है मानो क्या-नहीं को बनपूवक वेत्नापूष अन्तर्गत और १ जाया गया है। मृशु पात्रा के चरित्रा में बहिष्कृत की अपक्षा एकपक्षा का ज्ञान अधिक होता है किन्तु सवाय-योजना पर्याप्त सहज एव रोचक है। पारिवायिक नमस्कारा नर ही सीमित होने का कारण पत्निका का दण्डाल सम्बन्धी दृष्टिकान भी व्यापक नहीं है जिससे रचना में प्रीतिता नहीं जा पाई है।

३० सुश्री बीरा

सुश्री बीरा ने ११६ पृष्ठों और ३ परिच्छेदों में मौत का दूध पीपक मना बनाने का सामाजिक उपयास की रचना की है। इसका कथानक इस प्रकार है— उपयास का नायक रंगू रायसाहब कुनवन्त किंगोर के घरेलू सेवक रंगू का पुत्र था। रामू स्वामी के श्कनीते पुत्र यगवन्त की सेवा गुनूपा में स्थित रहता फलतः रंगू अपने को सर्व उपक्षित एवं तिरस्कृत अनुभव करता था। गत्यकाय की कुशाग्रहीन भावना किंगोरा बंधा में बिनाह भावना में रूपांतरित हो गई और परिस्थितियाँ के बहाव में बहकर रंगू ने मद्यपान आदि कुस्यसना का आरम्भ किया। उसकी नवपरिणीता पत्नी सख्यमी का निश्चय प्रेम भी उस सुराह पर न था सका और एक दिन मद्यपान के लिये उसे न देने पर उसने आसनप्रसवा पत्नी का जन्ती तकड़ी से मारा फलतः बट पत्र को जन्म देकर उसी रात बानबन्धित हो गई। पत्नी के गोक स पीनित एवं पिता के कृत्य की गुरना से प्रेरित रंगू ने अपनी कुप्रवृत्तियों को एकबारगी त्याग दिया। उसने एक पान की दकान खोली जो उसके परिश्रम से विकसित होत-होते एक रस्ता बन गई। शीघ्र ही वह एक सम्य नागरिक बन गया पिता की नोकरी छोड़ा दी और अपने पत्र जसोक के लिये उत्तम शिक्षा की व्यवस्था की।

उक्त कथानक में अथ से इति तक समस्त घटनाएँ रंगू की चारित्रिक प्रवृत्तियों के विकास के हन अथवा परिणाम के रूप में प्रस्तुत की गई हैं। रंगू के चरित्र और घटनाओं में मनोवैज्ञानिक तारतम्य स्थापित करने में लेखिका विषय सफल रही हैं। रंगू का पिता रामू अशिक्षित एवं परम्परागत नास्त्व के संस्कारों से ग्रस्त होने के कारण रायसाहब के परिवार के लिये अप्रति अपनी सहायता और त्याग का भी तच्छ दृष्टि से न्यता है और अपनी और अपने परिवार की सामान्य दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने का रायसाहब और उनकी पत्नी के प्रति अत्यधिक कृतज्ञ रहता है किन्तु रंगू में निम्न वर्ग की प्रातिशरी आत्मा की प्रतिबिम्ब है। वह अपने का यगवन्त से कम नहीं समझता चाहता और जब उसका पिता उसकी भावनाओं की उपधा करते हैं तो वह विशोही हो जाता है। उसमें अहिंसा कुमस्कार और दासता से मुक्ति पान की सहज छा है और

समय आन पर वह अपनी भावनाओं को क्रियावित्त करता है। अपने पिता के कारण वह स्वयं यशवन्त की भाँति विद्वान न बन सका किन्तु अपने पुत्र को उसने प्रत्यक्ष सुविधा प्रदान की।

रायसाहब उनकी पत्नी, उनका पुत्र यशवन्त आदि अभिजात वर्ग के पात्रों को लेखिका ने नम्र दयालु एवं निदम्भ रूप में प्रस्तुत किया है। रायसाहब को अपने गौरव का गव तो है किन्तु दाप की सीमा तक नहीं। रायसाहब की पत्नी रामू की पत्नी रविद्या रघू की पत्नी लच्छमी आदि पात्रों में भारी सुलभ ममत्व दिया, स्नेह माधुर्य आदि उद्भूत गुणों का विकास हुआ है। उपेक्षा के सभी पात्र सजीव एवं प्रभावपूर्ण हैं। प्रत्यक्ष पात्र की परिस्थितियाँ एवं विशेषताओं के मध्य मनोवैज्ञानिक सम्बंध इतना प्रत्यक्ष है कि पाठक का उसके प्रति सहज अपनत्व हो जाता है। उक्त पात्रों का व्यक्तित्व अत्यंत स्वाभाविक है क्योंकि मानवोचित गुण एवं दुर्बलताएँ दोनों ही उनमें परिलक्षित होती हैं।

सुश्री वीरा ने प्रसंगानुसृत एवं पात्रानुसृत कथापकथन का विधान किया है। उदाहरणस्वरूप रामू की उन्नतियों में सबन उसकी स्वामी भक्ति सेवा त्याग कृतज्ञता आदि भावनाओं का प्रकाशन हुआ है और रघू के व्यक्तियों में प्रायः उसके अन्तर का विद्रोह प्रतिबिम्बित रहा है। उसे इस कृति में सवाद सबन लघु, सजीव एवं सारगर्भित सिद्ध हुए हैं—कथानक को गति देने और यशवन्त को मुखरित करने में उनका योगदान उल्लेखनीय है।

मौत का फूल में लेखिका ने रायसाहब और रामू के घरेलू वातावरण के विविध चित्र अंकित करके अभिजात वर्ग और निम्न वर्ग की विषमता को स्पष्ट किया है। रायसाहब और उनके पारिवारिक मदस्याओं जीवन की प्रत्यक्ष सुविधाएँ एवं सुख सहज उपलब्ध थे—कुलीन संस्कार बढ़िया शिक्षा सुसंस्कृत वातावरण 'अच्छा भोजन आदि किन्तु रामू की कोठड़ी भी रायसाहब की कृपा का परिणाम थी। उसका भोजन आराम पत्र समय आदि सब रायसाहब के परिवार पर आश्रित था। रायसाहब के जाने दारोगा भी भुक्त थे और रामू को स्वामी की सुख सुविधा के आगे अपने मान सम्मान के विषय में सोचने तक का भी अवकाश न था।' रघू का कुमाय की ओर उन्मुख करनेवाला दया के बोधन एवं चरित्र द्वारा लेखिका ने निम्न वर्ग की दुर्बलताओं को—नंगा करना जब कतरना, अगिला न भविष्य आदि—कथात्मक अभिव्यक्ति दी है।

प्रस्तुत उपेक्षा में मुहाबरेदार शैली का प्रयोग हुआ है। साहित्यिक मुहाबरे के अतिरिक्त अशिक्षित पात्रों की उन्नतियों में समुद्रे जासमान में बगडा लगाय' ^३ कुताता गू सूपगा जैसे गैरवाक्य मुहाबरे का भी स्थान प्राप्त हुआ है। गला प्रवाहमयी है समस्त कृति में अर्थ से इति तक कथनात्मक एवं नाटकीय शैली का सफल मिश्रण हुआ

है। निष्पन्न रूप में मोत का फूल एक उत्कृष्ट उपमा है। रघू न परिस्थिति प्ररित मन विराम को प्रस्तुत करने में नैमिका विषय सफल रही है। प्रथम उपमा हान पर भी उनकी मफलता आती है।

३४ सुश्री सतोप वाला 'प्रमी'

सुश्री सतोप वाला न स्नेह और स्वप्न 'गोपक' सुधारिका सामाजिक उपमा की रचना की है जिसमें २४ परि छंद और १ २ पद्य हैं। इसमें आधिकारिक कथा गिरीप और निगा की है कि त श्रीराम और राधा की मुख्य गीण कथा तथा मधु तरना अगोक मोहिनी प्रभाकर आदि की अन्य गीण कथाओं का परस्पर कथानक में प्रयाप्त अवस्था आ गई है। इन कथाओं के परस्पर मयाजित व निग निगा के चरित्त की आधारस्वरूप रखा गया है। गिरीप उसका पति है श्रीराम उसका प्रमी है अगोक उसका धर्म भाई है प्रभाकर गिरीप का मित्र है और मधु तरना जाति श्रीराम की धर्म-बहन हैं। इस प्रकार पात्रों में परस्पर सम्बन्ध स्थापित कर चरित्तों में मुख्य कथा का गीण कथा से सम्बद्ध करने का प्रयास किया है किन्तु इन कथाओं में जमा धमिल सहयोग होना चाहिए था उसमें उन्हें मफलता नहीं मिल पाई। ऐसा प्रतीत होता है माना कुछ स्वतंत्र कथाओं को कुछ दुबल तन्तुओं के द्वारा परस्पर संयुक्त कर दिया गया है। 'लखिका' न गिरीप और निगा तथा श्रीराम और राधा के दाम्पत्य जीवन के मधुर सरमचित्र अंकित करने के अतिरिक्त सामाजिक समस्याओं का भी चित्रण किया है। इन समस्याओं के समाधान के लिए निगा द्वारा किय गये प्रयत्न (आत्म विद्यालय की स्थापना शिक्षा के लिये सवायम का स्थापना ग्राम में कृषि विद्यालय खोलना आदि) और योजनाओं को मनाविश्लेषणात्मक सवादा अथवा दार्शनिक कथोपकथन द्वारा सफल अभि यचित दी गई है। तथापि घटनाओं के सुव्यवस्थित विकास की आवश्यकता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

स्नेह और स्वप्न में पात्रों की समस्या अपभाकृत अधिक है फलतः लखिका सभी पात्रों के साथ प्रयास नहीं कर सकी हैं। उपमा की नायिका निगा के चरित्र में जादू गहिनी और बमठ 'गोप' सुधारिका के गुणों का विकास हुआ है। गिरीप का आत्मजयी मुख टु छातीत व्यक्तित्व भी उत्प्रेरणीय है। वही प्रकार 'लखिका' ने श्रीराम की भावक प्रकृति राधा के आत्म पति प्रेम अगोक के दत्त सकल्प आदि का भी सजीव चित्रण किया है। उन्होंने चरित्र चित्रण के लिए सवादा के अतिरिक्त प्रत्यक्ष वचन की प्रणाली का भी आधार लिया है। उदाहरणार्थ गिरीप के विषय में ये पंक्तियाँ देखिए— गिरीप गत प्रकृति का यक्ष था। उसकी कोई महत्वाकांक्षा नहीं थी वह किसी प्रकार की आकांक्षा रखता था। उसका जीवन अत्यन्त सरल एवं सादमीपूण था। 'कथानक में

मानवीय गति लाने के लिये लिखित न जिन सवालों की योजना की है, उनमें पात्रों की सुधारवादी अथवा उदाहरण मात्र होंगे परिच्छेद में निम्नलिखित गिरिष का वह चरित्रलिपि है जिसमें उन्होंने जीव जगत् और आत्मा के विषय में विचार व्यक्त किए हैं।^१ ऐसे सवालों में नहीं कही वचनारिक सम्भारना और गंभीरता नष्टिता का समावेश हो गया है, जिससे कला की रोचकता को क्षति पहुँची है।

स्नेह और स्वप्न में वातावरण का साभिप्राय योजना द्वारा उद्देश्य को प्रायः सुनिश्चित रखा गया है। समकालीन भारत की सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं का उल्लेख करते हुए उनके सुधार के लिए जाण्य योजनाओं का निर्देश इसी हेतु किया गया है। इस दृष्टि से ललितकाल ने निम्नलिखित समस्याओं की चर्चा की है—बेकारी, महंगाई, पञ्जीपतिया द्वारा निधनों का लोपण, शिक्षा की दूषित प्रणाली, साम्प्रदायिक वमनस्य भिन्नता आदि। वस्तुतः ललितकाल ने समकालीन भारत की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और राजनीतिक समस्याओं को विविधतापूर्वक लक्ष्य में रखा है। निम्नलिखित आदर्श महाविद्यालय, सेवाश्रम, कृषि विद्यालय, विस्थापित आदि विभिन्न समस्याओं की प्रतिष्ठा करके तथा इनमें आदर्श कार्यक्रम अथवा पाठ्यक्रम का स्थापना द्वारा समस्याओं का समाधान की दिशा में प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार ललितकाल ने गिरिष के तप आयोग में सुनिश्चितता, ईश्वर द्वारा मुक्त ईश्वरजित व्यक्तित्व को भी आदर्श रूप में प्रस्तुत किया है और समन्वयवाद की भाँति का मूल माना है।^२

स्नेह और स्वप्न की भाषा त समग्रहण है तथापि ललितकाल ने सूचितिया (जन्म मरण समय की सभी हाथों की जलन का भय रहता है)^३ और मुहावरा (जन्म मरण मरण पर आद आती ही है) के प्रयोग द्वारा भाषा को मजबूत एवं प्राज्ञत्व रखने की ओर भी ध्यान दिया है। फिर भी वही वही भाषा के फलस्वरूप आदर्शवादी की प्रधानता है। चौबीसवें प्रकरण के आरम्भ में प्रकृति का आन्तरिक तथा रहस्यपूर्ण चित्रण भी प्रकार का है।^४

ललितकाल की प्रथम कृति होने के कारण इस उपन्यास में कथा संगठन के लिए पर्याप्त तत्वात्मा सुनियोजन नहीं हो सका है। समस्या चित्रण और सुधारवादी दृष्टि कोण पर आवश्यकता से अधिक बल देने के फलस्वरूप कथानक चरित्र चित्रण और आदर्श के प्रति व उचित ध्यान नहीं कर पाई है। फिर भी यह स्वीकार करना होगा कि उनके द्वारा समस्याओं के लिए प्रस्तुत किए गए कतिपय मुद्दा महत्वपूर्ण हैं और

१ २ दल्लिमे स्नेह और स्वप्न, पृष्ठ ८६ ६४, १०० १०३

३ ४ स्नेह और स्वप्न, पृष्ठ ३३, ८७

५ दल्लिमे स्नेह और स्वप्न, पृष्ठ १३० १३१

उनकी अभिव्यञ्जना गली प्रवाहण है।

३५ श्रीमती वान्ता सि २५

मुनी काता सिन्हा न १३६ पूजा और १५ परिच्छेद म अनुप्ता गोपन पारि
वारिक उपवास की रचना की है जिसमें एक कुमार का कथा को उत्पीड़न प्रति पत्र
दुःख व्यापक विधवाता का कथा वर्णित है। मातृ पितृहीन मुनीता जब तक अपने
भाब्या की सुख सुविधा व निष्पन्न अपने का भिटानी रही तब तब व उसमें अभिभावक
बन रहे और जब उसने अपने जीवन को मुखा बनाने व निष्पन्न एक पग बढ़ाया तो उन्होंने
उस दूध की मक्खी की भाँति निकाल फेंका। इस अपरम म मुख्य हाथ उसमें बड़ नाइ
का था जो स्वर्गीय पिता द्वारा उसकी निय छोड़ी गई तीस हजार की नगद सम्पत्ति को
अपने लिय हथियाना चाहता था। बड़ दादा के बठार नियंत्रण में मुनीता की कुठिल
भावनाओं एक विवशता का क मनावानिक चित्र चित्रिका ने वर्णित किया है। इसका
अतिरिक्त मुनीता का मिनी गाभा (मुनीता की भाबियाँ) कुमुम (मुनीता की भतीजी)
गाभा (उसकी सगा) आदि पात्रों का चरित्रांकन करते समय उन्होंने उनमें नारी
मुक्त कोमल भावनाओं व समावेश का ध्यान रखा है। मुनीता की बाँधी उपवास की
रचना पात्रा है जो अपने बड़ पति की आँख से मुनीता के बड़ दादा को अपनी तपणा का
निर्धार बनाती है और अपने स्वायत्त निय मुनीता को भाँति भाँति व कष्ट देती है।

पुरष पात्रा में मुनीता के बड़ दादा रंग सियार हैं जो अपने स्वायत्त व समक्ष किसी
के मग नहीं हैं—न बहिन के और न पत्नी के। छिप छिपे वे घोर दुष्कर्म करते हैं किन्तु
प्रत्यक्ष में पावन ही बन रहते हैं। जितने कर्मिन भी महता आदम पुरुष हैं जिन्होंने
धर्मिता मुनीता को प्रेमपूर्वक ग्रहण कर उसके जीवन का सुख से भर दिया। मुनीता की
भाँति व भी निर्गम दीना व प्रति दुष्कातर एवं परोपकारी प्रवृत्ति के पान हैं। यह
पुरष पात्रा व चरित्र सामान्य तथा अवसरानुकूल है। अन्य अनेक साधना के अतिरिक्त
चरित्रा न विहनपणात्मक तुलनात्मक एवं वणनात्मक गली में भी चरित्र चित्रण किया
है। यथा—

बड़ी भाभी गाभा जायु में मगसे बड़ी हैं। उनमें इतना बचपन नहीं है जितना
कामनी नाभी में। गाभा भाभी बहुत गम्भीर हैं बहुत गात हैं। हसती भी हैं तो घीने
न बालती ना हैं तो बीमस। जहाँ बड़ दादा उग्र स्वभाव के हैं वहाँ गगवान् न उन्हें
गात करन व निष्पत्ती भी गम्भीर दी है। परन्तु मरेमन में कभी-कभी आगका उठती
है कि गोभा भाभी कतनी नम्र है कतनी सम्य है कहीं बड़ दादा का अनिमान और
उत्पन्न स्वभाव इनका कुचन न है।^१

पात्रा की चरित्रिक प्रवृत्तियाँ को मखरित करने में कथोपकथन विशेष

सारगर्भित सिद्ध हुए हैं। उन्हाहरणाय सुनीता व निस्स्वाभ एव त्यागमय चरित्र क विषय म उसकी गोभा भाभी की उक्ति उद्धरणीय है—“कमी भानभरी वानें करने लगी हा मुन्ना। निरन्तर दुखा का अग्नि म तपत रहन से तुम्हारी आत्मा वचन सी पवित्र हा गई है रानी। इतनी आयु और इतनी दूर की सूझ जिसम स्वाय की बू भी नही। भगवान तुम्हें बहुत सुख देंगे राना तुम राजराना रानीगा। 'सबादा की भाषा प्राय पात्रानुकूल है। मेयक रामभक्त की उक्तिया म 'गइत हा' लागत बा उनकर दह 'जाति गंगा' का प्रमाण उक्त कथन का प्रमाण है।

सुनीता न समाज म कोई दुराव न रखकर विवाहित दिन स पावन प्रम किया था या न महता स प्रम विवाह किया ता समाज ने उस पर लाछन लगाए। उबर उसन व दाग न अपना चाची भतीजी (कुसुम) एव घोबिल से छिपे छिपे व्यभिचार करके समाज की आखा म भूल लाकी ता भी व पावन रह एव स्वता रूप म भा ग हुए। इन भन्नाआ का चित्रण करके लखिका न समाज की सकीणता एव अनाय के प्रति व्यथपूर्ण संकेत किय ह। सुनीता की चाची वृद्ध पति की जाड म भताजे सतप्ता शात करती रहा, यह घटना भी सामाजिक कुप्रथा (वृद्ध विवाह) क दुष्परिणाम की आर इंगित करती है।

आलाच्य कृति का सद्य एक मातृपितृहीना स्नेह न मिल पाने स अतृप्त कुमारी की कठित भावनाओं अभावा पीडाआ एव विवग कामनाआ का मनावनातिक अवन करना है और यह निबिवाद है कि लखिका अपने उद्दिष्ट म पर्याप्त सीमा तक सफल रही है। उपवास की भाषा सरल सरस एव मुहाबरेदार है तथा गली प्रवाहपूर्ण है। अनेक प्रयक्त सूक्ति वाक्या न उसम अवसरानुकूल गाम्भीर्य का समावेश किया है। यथा—

प्राणी जब गीण रूप म काह पाप या अपराध करता है तो भीतर ही भीतर उसका मन बचन रहता है। तब वह एस व्यवहार की खाज म रहता है कि कहा उस कोई साधन मिल जाए जिसम वह अपने मन क नीतर का रोष जो उस अपनी आत्मा के प्रति रहता है प्रकट कर सके। 'यद्यपि उपवास म कही-कही भाषा प्रयोग म असावधानी की लाग होनी है तथापि लखिका की वणन गली की सजावता ने किसी सीमा तक उक्त रोष का परिहार कर लिया है। आलाच्य कृति की उत्तरेखनीय विगपता यही है कि उक्तिया न नारी हान व नात एक अघित नारी का मनावना का कष्टन एव हृदयस्पर्शी विषय जस्तित किया है और समाज ने प्रतिष्ठित कहानावात पापिया की अच्छी पाल पाती है।

१ प्रतप्ता, पृष्ठ ७७

२ 'बेलिये प्रतप्ता' पृष्ठ ४५

३ प्रतप्ता, पृष्ठ ७२

३६ श्रीमती प्रकाशवती

श्रीमती प्रकाशवती न १५६ पृष्ठा में चार परत गोबर माता मानिक उपवास की रचना की है जिसमें नायिका बाछा की मनोवृत्ति का अत्यन्त चमकदार चित्र अंकित किया गया है। यह उपवास एक नूतन गीत में प्रस्तुत हुआ है क्योंकि इसमें परिच्छेदों की अपेक्षा चार परत हैं जिनमें उपवास के चार प्रमुख पात्र—यमराज बाछा चिमय पुरुषोत्तम और श्रीकांत—आत्मकथन की शैली में अपनी जातिरिक्त भावनाओं का प्रतिक्रियाशील प्रस्तुत करते हैं। बाछा उपवास की मुख्य धुरी है ममस्त पात्र एवं घटनाएँ उसी में चतुर्दिश सम्बद्ध हैं। उपवास का कथानक इस प्रकार है— बाछा ग्राम की एक भोली कन्या थी। बारह वर्ष का उत्पन्न में उसने एक छोटीमयर्षीय यवक पुरुषोत्तम का प्यार और उसका प्रतिमन प्राण में अनुरक्त हो गई। यमराज बाघाभा के दरवाजे जान पर नोका के विवाह की पण सम्भावना हो गई थी किंतु श्रीकांत ने जिस बाछा के माता पिता ने पशुवत पाला था रक्षित बना बनाया सत्र त्रिगाड किया। बाछा के पिता ने श्रीकांत की बहिन सरना का विवाह अपने एक धनी वृद्ध मन्त्री से न होने देकर एक निधन यवक से कर दिया था जहाँ से पण मुरा थी। किन्तु श्रीकांत के पिता का धारा वर के हाथ में निधन जाने का क्षाम ज्ञात तक रहा और मरते समय उन्होंने श्रीकांत में प्रतिज्ञा की थी कि वह बाछा के पिता में इसका वरना जमाने देकर रहता। इसी पृष्ठभूमि में श्रीकांत के कष्टपूर्ण प्रयत्न से बाछा का विवाह चिमय के सौतेले भाई जो लम्पट दराचारी एवं लम्बी युवक था। चिमय जम कूर पति से बाछा अपना तन ता अस्पृष्ट न रख पाए किन्तु मन से वह कबल पुरुषोत्तम की ही माना जपती रही जिसका परिणाम यह हुआ कि चिमय से उत्पन्न होनेवाले उसका बच्चा पर भी पुरुषोत्तम का आवृत्ति की छाप रहती थी। इन सब घटनाओं में चिमय का राप एवं अत्याचार बढ़ते गये और एक दिन उसने श्रीय के अतिरिक्त में बाछा के पेट में छुरी नाक दी। अनियोजित पुरुषोत्तम के यायाजय में पहचा चिमय को प्राणदण्ड मिला। बाछा जय यायाजय में अपना बयान देन लगी तो पुरुषोत्तम के प्रति अपने एकनिष्ठ प्रेम की अभिव्यक्ति करते समय वह ठीक उसी प्रकार मृत्यु की गोद में समा गई जम सती सीता अपनी पावनता की साक्षी देत हुए पृथ्वी के अन्तराल में समा गई थी।

बाछा की विषम परिस्थितियाँ मानसिक पीड़ा उत्प्रेरकजनित मूक पदना एवं कष्ट सहिष्णुता का अत्यन्त मार्मिक चित्र रेखित करने अंकित किया है कि अनायास ही पाठका की बरोनियाँ सज्ज हो जाती हैं। प्रेम की एकनिष्ठता में उसने सती पावती एवं सीता के ही आदर्श की पुनरावृत्ति की है। पुरुषोत्तम का भी रेखित करने आत्मा गणा से विभूषित किया है। राम की भाँति व भी एकप्रियाव्रत का आत्मा ग्रहण कर सकते थे किन्तु बाछा की ओर से निराशा होकर उन्होंने छवि को अपनी जीवन सहचरी चुन लिया जो निचय ही एक योग्य नारी थी। ज्यादा-ज्यादा श्रीकांत की कष्ट योजनाओं का रहस्य चलाया गया त्या-त्या पुरुषोत्तम बाछा के दशम्य का साचकर अनतप्त होत रह किन्तु

महत्वा छवि न उह सदव सहाग न्या। चिमय न जो किया, उसका भी एक मन।
वज्रानिक कारण था। बायकाल म मानहीन हो जाने स उसका मन स्नेह पाने के
लिय विवर्त रहा। पिता का दुक्लौता पुन, अपार सम्पत्ति का स्वामी एव कवि होने
का दम्भ हान स वह कुमागामी हाकर घाट घाट का पानी पीता रहा किन्तु स्नेह कही
नही मिला। यदि बाछा उम सच्चा अनुराग ने पातो ता वह भी सभा की ओर उमछ
हो सकता था, किन्तु उसके दुर्भाग्य से वह विवाह क पूव ही पुस्पातम की हा चुका था।
आका न की अप्या का कारण भी मनोवर्तानिक ही था। पिता का मरण अप्या पर वो
गद प्रतिभा को विस्मय न करन की अपनी प्रकृति स वह विवर्त था। उसने पिता का
प्रतिकार पुत्री स नना चाहा और पच्छल तार की भाति उसक नाम्माका का नावत
कर माना उसका अप्या नुष्ट हा गई। उवत चारा पात्रा की आन्तरिक नावदारा की
लल्लिका मे अत्यन्त सहज एव मनोवर्तानिक प्रवाह म प्रस्तुत किया है। इस प्रकार कया
नक एव चरित बिनण अयायात्रित रूप म विकसित हुए है।

जना कि पून प्रतिपादित किया जा चका है इस उपयोग म कथानक पात्रा क
चितन प्रवाह द्वारा गतिगत रहा है। एष म कथोपकथन क लिय विंगय अवकाश न
हाने पर भी लल्लिका न उसक लिय अवसर सुनव बनाए हैं और लघु एव मजीब मवाना
की याचना द्वारा पात्रा के मनोभाव को मुखरित किया है। उहान ग्राम्य वातावरण क
बहुविध बिन अकित किए है। वज्रानिक का नाच 'नित्य रामायण पाठ का वार्षिक
प्रवृत्ति' जत्र तत्र जाहु टाने जादि पर अ भविष्यस 'स्त्री निष्ठा क प्रति जनास्था'
विनाशादि वारों म जमपत्री मित्राने के पति जस्यधिक जाहू' आदि स नल्लिका की इसी
प्रवृत्ति का बोध होता है। यन-नन प्रत्यक्ष कथन की गला म भा समाज क गुण दोषा की
चर्चा की गई है। यथा—(अ) "परस्परायत झूठीमयादा और दिखवटी पान" की आ
म किम प्रकार बिनता बलिया का मसल न्या जाना है', (जा) 'मयवग की लावली
मर्पा' झूठी गान और अनिजात नावना की हठधर्मी जान कितनी बाछाआ का छा
गई। फिर ना, यह उल्लेखनीय है कि इस कृति का नदय बाह्य वातावरण की अपक्षा
पात्रा क आन्तरिक नाव विकास का मनोवर्तानिक विश्लेषण करना है और लल्लिका न
आद्यन इसम निवाह का मफन प्रमाण किया है।

आलोचन कृति म प्रौढ परिपक्व एव मज्ञाबरेदार भाषा का प्रयोग हुआ है।
यतो प्रसाहपुग है और उसम विश्लेषण की प्रधानता है। जतगल की गहराईया की
यास्था करन क वित्र जमी सजीव मगन अनिजना की अप ना हाती है ठीक वनी
हा भाषा गता का उपयोग म स्थान मिला है। प्रकाशवती जी की अनि जना की एक
प्रमम विपत्ता यह है कि उहान उमम विस्मयाविबोवक एव प्रानम्वक वृत्त्या का प्रचर

प्रयोग किया है। सबसे बढ़कर बात यह है कि उसने भाषा की सरल भाषानुसृत है। चरण मामिक प्रसंगा का चित्रण करते समय उन्होंने उसी भावपूर्ण दृष्टिकोण का प्रयोग किया है जो पाठकों के मन का अग्रगण्य विषय बनाता है। परिणतः। वस्थान पर परता का विधान कथन विधान ननन का का अपना है जिसका प्रयोग कहानियां में पहनना हुआ है कि व उपयामा मनहा। निष्पत्ति रूप में यह निष्पत्ति है कि यह उपयामा मनोवर्तमान उपयामा का निष्पत्ति म एक मय प्रयोग है। जाभूति जस्य गाम्भीर्य एवं अभिव्यक्ति की मामिकता एक सहज गुण है।

३७ श्रीमती कृष्णा रविकमल

श्रीमती कृष्णा रविकमल न अरुत राही गोपक मामाजिन उपयामा का रचना की है जिसमें यह चित्रित किया गया है कि आर्थिक विपत्तियों एवं मामाजिन समस्याओं (वकारी जायादी का बहिष्करण परस्ती मृगाइ) ने मध्यवर्गीय परम्पराओं को छाछना बना दिया है। नायिका निम्मा एक ही परिवार से सम्बन्ध रखती है। उनके अग्रज रामचर और मुक्ताचर तथा बड़ा माता सिद्धांत के कुन मया तथा उच्च भावों की दुहाइ देते हैं किन्तु देह स बचने के लिए बहन को बनवाने का काम मन जाल बढ़ाने की प्रेरणा देते हैं। कला का विनाश विरोध का स्वस्वरूप यह विवाह मनव न हो सका जिससे निम्मा (निम्मा) का अग्रज एक दूसरे का दोष देने के अति विवत निम्मा को भी नाछिन करने लग। निम्मा के छोटे भाई राज का विवाह म ना एमा हा हुआ। धनिक पुत्री तथा स विवाह हान पर देह म अत्यधिक धन पाने की चाहना से मुनेश्वर रामचर और बड़ा माता प्रगतिमान बन गए किन्तु आगतुकूल देह न मिलने पर लक्ष्य हो उठ। निम्मा का विवाह उसका बान-महचर और पूव प्रती मुबोध म हा गया और इस प्रकार उपयास दुखान्त होने से बच गया। निम्मा और मुबोध की प्रणय कथा इस उपयास की प्रमुख कथा है। उपयास का प्रारम्भ एवं विकास इसी को लेकर हुआ है कि तु मध्य तक पहुँचते पहुँचते निम्मा का कचकर म पार मुबोध म विमुख हो कला की ओर उभरता हो गई। राज एवं तथा का प्रणय-कथा मुख्य कथा का साथ सुगुम्फित है। मुबोध की सहपाठीनी रेखा तथा विद्वान्मयाती निम्मा की प्रणय रीति तीसरी गौण कथा है किन्तु उनका दाना कथा का विपरीत रखा सम्बन्धी कथा दुःखान्त है।

जातीय उपयास का एक मध्यवर्गीय समाज है जिसका सहज चित्र प्रस्तुत करने के लिए रविका ने विभिन्न मनोवर्तियाँ बना पाना को चित्रित किया है। उपन्यास का नायक मुबोध म नायकाचित गरिमा का उच्च समाज हुआ है। बाल्यकाल से ही निम्मा का प्रतिप्रम और मदभाव होने पर भी जब निम्मा ने कला का पान की लावसा में उसका अपमान किया तब वह उसके मुख के निम्न उसका माय से हटा गया। बाद में कलाशायी ठुकराई हुई निम्मा का अपनाकर अपने उस आत्मपात से बचाया। निम्मा उपयास

नी नायिका है किन्तु नायक की अपेक्षा उसका चरित्र दुबल है। नायक व मञ्च प्रेम का उपधा करके बहु धन क लाभ म बहु जाना है किन्तु दुर्भाग्य की ठोकर उस समय पर सचत कर दती है। रामेश्वर और मुक्तेश्वर इतन पत्नी भक्त हैं कि पत्निया (जमरा राधा सार सराज) व वस्त्राभूषण प्रेम सिनेमाट्रि पर अन व्यवहरते रहते हैं तथा यहिन जोर पत्निया क प्रति अपन उत्तरदायित्व को समझकर नी नही समझना चाहते। वज्र कलाग त्रिग मरीन राधा रत्ना आदि पात्र मयवर्णय समाज क प्रतिरूप है। नविकाने उनक मायम स चरित्रात वविध्य का सराहनीय याजना की है। निम्मा की फगनेवन सखा प्रीति भाटिया तथा गरीर का बिचन करनवाला मरी व चरित्र बिचन म नखिका ने तनिक गिष्टता का उल्लेखन किया है किन्तु आधुनिक दृष्टि का दखन हुए उनक आचरण का अस्वाभा विरु नहा कहा जा सकता। कथानक म नाटकाय सौम्य लान व त्रिए लखिका न परिस्थिति क अनुकूल हबिर सवाग की योजना का है। इस दृष्टि स सुबाध एव निम्मा व वात्तालाप बिगम उत्तनखनीय हैं—उनम हास परिहाम दठना मान मनौवल व्यभ्य छाटाकगी आनि प्रेम का सम्भावित स्थितिया का सुत्तर समावेग हुआ है।^१

श्रीमता वृष्णा न उपयोगास की नूतिका म यह प्रतिपादित किया है कि स्फूर्तिक युग म बिभिन्न दगा म रहन सहन क स्तर का उन्नत करन का परस्पर होड सा गगी है। भारत इस स्पर्धाम स तोपजनक उन्नति नही कर पाया है। अभी तक कवन आवादी फगन तथा धकारी म ही भारत न प्रगति की है। वस्तुतः नविकाने समकालीन दगा-दगा क बिचन क प्रति जागरूक रहकर मय वग का कद्र बनाकर युग दगन का सराहनाय वेष्टा की है। हमारे कथाकारा की दृष्टि शाय उच्च वग एव निम्न वग का जोर रहती है जब कि म य वग का समस्यायें अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण हैं। इस वग की आर्थिक विपम ताजा ने लाग के जागों को कितना नुठना त्रिया है और इस वग की प्रगतिगीनता क नीच लोम क कितन कीट बिनबिता रहे हैं इसका पदापाग करत समय नखिकाने कुगान बुद्धि का परिचय दिया है। तत्सम्ब की बिचन म देशकान एव वृति का उद्घाटन दोना मुवर रह हैं। मध्य वग के जावन का यथातथ्य बिचन करने के प्रयत्न म उन्हाने कतिपय स्थला पर अन्वीन प्रसंगो का नी वणन किया है^२ किन्तु उह न रखकर व अपन अभीष्ट की सिद्धि म अधिक सफल हो सकता थी।

नटवते राहो की रचना यावहारिक भाषा न हुइ है। प्रथम मुद्रित संस्करण तथा प्रचलित उद्गारा का प्रयोग हुआ है। गितित पात्रा की उक्तिया म फल्लामफलो स्वीट कम्पनियन आदि अंग्रेजी गारा का ना प्रचुर मात्रा म स्थान मिला

१ देखिये नटवते राहो पृष्ठ १६ २५ २७ ३०

२ देखिये नटवते राहो पृष्ठ ७२ १६४ १६६

३ देखिये नटवते राहो पृष्ठ १६४ १६५

है। तबिका ने सामाजिक बणनात्मक गति का नाटकीय धनी म कथा विकास किया है किन्तु मनाभाषा का बि उपपन्न करत समय मनोवि तपणात्मक गति का भी आश्रय लिया गया है। निष्कण रूप में यह कथित है कि इस उपन्यास में आधुनिक म वर्गीय समाज की प्रवृत्तियाँ म समस्याओं पर सर्वांगीण दृष्टि से विचार किया गया है। पात्रों का चयन म तबिका ने विविधता का सिद्धांत रखा है कि उपन्यास में चरित्र चित्रण की प्रमुखता नहीं है। भाषा गनी भी माहित्यिक न होकर 'साहित्यिक' रूप में अधिक स्पष्ट एवं सजीव है। यद्यपि इसका कथानक सामान्य है किन्तु उमम का उद्देश्य निहित है वह पद्यात्मक गम्भीर एवं विचार प्रेरक है।

५८ सुग्री मह प्र बाबा

सुग्री मह बाबा ने उन प्रश्नों पर उत्तर दीधन सवादात्मक सामाजिक उपन्यास की रचना की है जिसमें २६४ पृष्ठ और ४२ परिच्छेद हैं। इसका कथानक इस प्रकार है— मातृपितृहीन नीरा अपने भाई भाभी कपास रहती है जहाँ उसे पूरा स्नेह प्राप्त नहीं होता। उसकी भतीजा मुनी उसका दुख सुख की सहयोगिनी है। वह नीरा का दीक्षा कहता है और अपने मन में उठनेवाले विविध प्रश्नों का समाधान समझना है। यथा—मानव जीवन क्या है दैनिक व्यवहार क्या होना चाहिए प्रेम और वासना किस कहता है दीनी और अरुण का प्रेम किस प्रणीत होता है आदि। इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर नीरा नीरा और मुनी की जीवन घटनाओं को यत्न किया गया है। नीरा का जीवन म अरुण का त सुधीर आदि अन्य युवक आय—काई प्रेम नकर और कोई वासना नकर—अन्त में नीरा का विवाह जिस नवयुवक से हुआ वह उसके मनो नुकूलन का अर्थ एक कथा का जन्म होना उपरान्त उसने पति को त्यागकर उनका मित्र कष्टन बना की अपना लिया।

यह उपन्यास अन्य उपन्यासों से इस अर्थ में भिन्न है कि इसमें प्रत्यक्षत केवल दो पात्र (दीदी और मुनी) हैं और उन्हीं के कथोपकथन द्वारा कथानक का विकास हुआ है। बीच बीच में आत्मकथन की गली में नीरा के आत्मचिंतन द्वारा गली परित्यक्त किया गया है किन्तु ऐसे स्थल बहुत कम हैं। सवादात्मक नीरा और मुनी के चरित्रों की कथन आत्मिक प्रवृत्तियाँ स्पष्ट हो सकी हैं। नीरा की उन्नतियों का अरुण में नीरुमा मुधीर कष्टन बना आदि पुरुष पात्रों की प्रेममूलक अवस्था वासनात्मक प्रवृत्तियों का जो स्वरूप वर्णित है उससे पुरुष समाज के रचित विविध का बोध होता है। म कृतिक सवादात्मक सक्षिप्त और सारगर्भित है और उह मुख्य रूप से प्रश्नोत्तर के रूप में आयाजित किया गया है किन्तु उनमें जीवनात्मिक सरसता का प्रायः अभाव है।

येकाल की नृपति से नीरा का व उर्विन्ध्या उत्सखनीय है तिनम नारी और परप के मनाविनाम का समाज सापेक्ष उत्सख हुआ है।^१ एक उन्हाहरण अवलाकनीय है— नहा नारी एमा नही कर पाती। वह दच्छाए रमते हुए भी उस काइ निश्चित रूप नही दे पाती क्योंकि समाज उसे निबल जानत है किसी भाँति और बन्ने नही देता। परप तो यह सोच भी नही सकना कि नारी भी कुछ करने की शक्ति रखती है। इन कृति में मुख्य रूप से बाल मनोविज्ञान की अभिव्यक्ति मिलती है जिसमें क्यानक में से जता व अतिरिक्त कही कही विचार सूत्रों की जटिलता भी आ गई है। वस्तुतः यह ज्ञान रचना आवश्यक है कि इस उपन्यास का लक्ष्य कहानी कहना नही अपितु वह उत्सुकता प्रकट करना है जो एक बच्चे तथा युवा व मन में उठ सकती है।^२ फिर भी लेखिका का इस लक्ष्य की स्थापना में सफलता मिली है कि माता पिता व जानन में भयभीत बच्चे का मन मुलभ उत्सुकताओं को शांत करने के लिए घर अथवा बाहर के परिचित परिवारों का ज्ञान प्राप्त है कि नु उनका ज्ञान अपूर्ण होता है अतः उन्हें अपूर्व उत्तर प्राप्त होते हैं। सहा उत्तर माता पिता ही से सज्ज है अतः उन्हें बच्चे की उत्सुकता शांत करनी चाहिए अथवा कुटाए जायत होने की सम्भावना रहती है।

प्रस्तुत उपन्यास की भाषा सरल एवं व्यावहारिक है किन्तु इसमें वाक्य विन्यास मध्यम शैली को प्रायः लक्षित किया जा सकता है। इसमें यणतात्मक प्रयोगों का एकांत अभाव है। मातृकीय शैली को अत्यधिक महत्व देने के कारण यह उपन्यास के अंतर्गत का महज विकास नही हा पाया। समीप रूप में कहा जा सकता है कि यह उपन्यास सुगठित नही बन पाया— इसका क्यानक विरुद्ध है पाना के प्रतिरव को उभरने का विरोध अवसर नही मिला गया अतः यह एकलपता है और भाषा शैली में समझ का अभाव है।

३८ मुनी प्रिया राजन

मुनी प्रिया राजन ने ८६ पृष्ठा एवं ११ परिच्छेदों में नन्हा गीपक तथा सामाजिक उपन्यास की रचना की है। इसमें रायबहादुर गमवारन की इकलौती पुत्री नन्हा का अपने पिता के निधन से प्रेम प्रारम्भ में नन्हा के पिता का और से कठोर निषेधण एवं बाधाएँ अनन्त का नौकरा में हटाकर यह निष्कासन नन्हा द्वारा पुनः जनन को साजकर सम्पन्न स्थापित करना, पनी का हठ दृढ़कर पिता का स्वाकृति जाति घटनाक्रम में एक मुत्तांत प्रेम कथा का संयोजन किया गया है। उपन्यास में कथागत रचना तो है किन्तु घटनाएँ जल्द से जल्द रूप में वर्णित हैं, सूक्ष्म अथवा मनो

१ देखिये उत्सख प्रेम अपूर्व उत्तर, पृष्ठ ४८ ४९ ५३, ५५

२ उत्सख प्रेम अपूर्व उत्तर पृष्ठ ५३

३ उत्सख प्रेम अपूर्व उत्तर भूमिका पृष्ठ

प्राणिज विनय की ओर उभिता वे प्यार न किया। उस समय मैं अनन पात्र है—
 अनन उगरी माता तथा बहिन न। उनका माता पिता और मया शस्त्र
 देव (जिनका बाद में अनन की बहिन गीता का शिवाह हुआ) तथा निमलकुमार
 (नया न माता पिता परा उमर का मनानीत पर जो बाप में उमर बहिन की
 भाति मानने जाया था)। उनका पात्रा की चरित्र प्रकृति का यथासाय
 प्रमाण हुआ है। उदा की माता योगीन का स्वरूप व्यक्ति नया का
 भावुक हृदय अनन की चरित्रिक दुःखता गीता का स्वरूप डाल्टर के परावहार
 वल्लि आदि भावनाएँ विशेष रूप में उत्पत्तीय है। सविज्ञान परा। उनका अपरा
 प्रत्येक वचन परा पात्रा का चरित्रात्मक अर्थ मनोयोग में किया है। उदाहरणस्वरूप
 निम्नलिखित पंक्तियों में नया के पिता का चरित्र दर्शाया— उनका सभा नपभात रहने
 था। न क मार उनका किसी भीतर बाहर को जान की दुःखता नही पत्ती थी। न
 बहुत ही गम्भीर आदमी था। कम बालन था नया बहभार करने की प्रार्थना नही थी।
 जिनमें एक बार न। वह किया उसमें कि न परन्तु की यथासाय नही रहती थी। उनकी
 बाता का कोई टाक सक ऐसा माहम घर के किसी प्राणी में न था।^१

श्रीमती राजन ने पात्रा का चरित्र की स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए प्रायः मक्षिण
 और प्रमगानकृत कथोपकथन का विधान किया है। ये बालाचार कथानक का नाटकाय
 गति में सफल रहे हैं। अनन एवं नया का प्रमपूषणसवाल अत्यंत भावमय एवं मानिक
 बन पड़े हैं। नयासाक्षात् की दृष्टि से उपवास में सच्च प्रेम की अजयता का प्रकट
 किया गया है। प्रेम की सात्विकता एवं घन बभ्रजय अहं क मध्य सघन का विनय
 कथा चरित्र ने एक धिरपरिचित सामाजिक समस्या का स्थान किया है। उनकी माया
 बोधार्थ रोचक एवं मरम है। तत्त्वम एवं तत्त्वम नया का अतिरिक्त गौर परावा
 मचनती पठनाती आदि न द युग्मा एवं स्टडी रूम गीतीन मित्रा आदि प्रच
 रित विज्ञान। न भिन्न प्रयोग न माया का अतिरिक्त यावहारिकता प्रमाण की
 है। अनन अतिरिक्त कही मयमन नया का पत्र नयता है। उदी क परम कुत्हासी
 मार दें आदि मयावरा का प्रमगानकृत प्रमाण न की सजीवता का संचार किया है।
 चरित्र का गीता वणनात्मक एवं प्रवाचमयी है। समाहार रूप में यह बाढ़ प है कि
 श्रीमता त्रिपा राजन का यह उपयाम उनकी प्रथम रति हान पर भी भाव एवं गती
 दाता की दृष्टि में स्वरूप नया राचक है।

१ उदा पृष्ठ २ २६

२ दविष नदा पृष्ठ ५८ ६० ७ ७६ ७७

३ ८ नदा (घ) पृ ११ १८ (घा) पृ १२ १७

४ नदा पृष्ठ ४० ८६

४० श्रीमती मन्नू भडारी

श्रीमती मन्नू भडारी ने मुख्य रूप से कहानियाँ की रचना की है किन्तु अपने पति श्री राजेन्द्र यादव के साथ सम्मिलित रूप से एक इंच मस्htान 'गीपक मनोवना' निक उपवास की भी रचना की है जिसमें १०२ पृष्ठ हैं। जन्म २१ फरवरी १९३३ (३०३ ३२६ तक) कन्नड़ राजेन्द्र यादव और मन्नू भडारी ने जन्मा अपना वक्तव्य लिखा है जिसमें निम्नलिखित तथ्याका बोध होता है—(अ) आचार्य उपवास की रचना जल्द ही संपन्न होगी परिस्थितियाँ मँडई हैं (आ) इसका कथानक मुख्य रूप से श्रीमती मन्नू भडारी का था (इ) जब यह उपवास धारावाहिक रूप से गानोप्य में प्रकाशित हुआ था तब लखिवाए द्वारा लिखित परिच्छेद पाठक ने अप तात्त अधिक पसंद किए थे। इस उपवास में चौदह परिच्छेद हैं जिनमें विषयसम्बन्ध (अथवा पहला तीसरा पाँचवाँ आदि) परिच्छेद राजेन्द्र यादव द्वारा लिखित हैं और मममरूपक परिच्छेदों की रचना लखिवाए ने की है।

एक इंच मस्htान में मुख्य रूप से तीन पात्र हैं—अमर रजना और अमला। समस्त कथानक में उचित तीन पात्रों की परिस्थितियाँ मन स्थितियाँ क्रियाएँ एवं प्रति क्रियाओं का ही आनेवाँ हुआ है। अमर के मनोविज्ञान को राजेन्द्र यादव ने प्रस्तुत किया है और रजना और अमला की ओर से मन्नू भडारी ने लिखा है। अमर एक नवक है वह बाह्य परिस्थितियों की अपेक्षा अपनी मानसिक प्रतिक्रियाओं में अधिक तीव्र है। रजना उसकी प्रपत्नी थी जो उसका शक्तिस्वरूप को उसकी सम्पूर्ण दुबलताओं एवं सबलताओं के साथ चाहती थी। अमर ने भी पहले उसे ज्ञाना पूरे माना था उस नगर अपने माता पिता से नड भगडर कर गिरी चली आया थी और एक कानून में अपना घर स्वतंत्र जीवन यापन कर रही थी। विवाह के पूर्व अमर अपने उपवासों की पाठिकाएँ एवं पत्र मित्र अमला से मिला, जा उन वय की विद्वत्ता से प्रताडित पति द्वारा त्यक्ता अहम्मा नारी थी। उसने अमर को परामर्श दिया कि वह विवाह न करके स्वतंत्र जीवन यापन करे ता उसका सत्त्व व्यक्तित्व अधिक ऊँचा उठ सकेगा। उसकी यह बात अमर के अंतःकरण पर इतनी छा गई कि फिर उसने चाह अपने घनिष्ठ मित्र टडन और उसकी पत्नी मन्नू के साथ ही रजना में विवाह कर लिया किन्तु उसका विवाहित जीवन सुखी न रहा मन्नू। उसका जीवन मानसिक अन्तर्गत का स्थान बन गया। एक ओर थी रजना—जिस प्रेम समाज सहकार और दूसरी ओर थी अमला की सायास मुस्htान जो उसे दूसरा और म सुख हुआ जल की भावना ममरनी हुई मज्जन की प्रेरणा देती थी। उस सायासता का परिणाम यह हुआ कि अंत में उसकी पत्नी रजना निराशा होकर उमर त्याग कर चली गई। उमर रत्यमयी अमला ने भी एक दिन जीवन से ऊँटार आत्मपात कर लिया

अमर उपवास का नाटक है उसका व्यक्ति खडिन स्वतंत्र एवं दृढमय है।

अतः तदा ध्यात्वा तदा गोपवि रान रा जातु उमम दाता प्रदा है ति उमरा
पति । मर विगण उमर हा तहा पाता और अ । तत उमरा जीवत एव ममयोति
ध्याना बनकर रह जाता है। प्रमो पति स्वयं मित्र नि । मम ना वह शिवा तपन
नही है। अमता और रजना निन स्वभाव एव भि न यगी हा म प्रसादित नारिणी ?—

अमता का उच वग की विडम्बना उ मारा घा और रजना हा एव मन हा की प्रशाना
ने । या पाठना की सहानभूति जानाव माय है किन्तु अमता हा ध्यात्वा एव कति
रहस्य सा बनकर रह गया है। ममा न मया परम्परागत ममता का उमर नाम का मू प
नही । व म अपने अह म जीती है और अपने ममक म जानेवा र प्रदक पुरा का अपन
न प्रभावित दलना चाहती है। उमरा बामनाप्रति मानसिक श्रियी उमर मन म
अनर अनतिक भावनाओं का प म ती है और उनकी तुष्टि र त्रिय यह अपन ममक
म जानेवा न पुरुषों का साधन बनानी है। रजना परम्परागत ममता का प्रभावित
एक माधी एव समर्पिता नारी है। वह अमर म प्रेम करता है तो उमर त्रिय माता पिता
पुन मुव ए वय मय को ठुकराती है। अय पत्निया की प्रति उमरा ना यह इच्छा
कि उसका पति कवल उसका हाकर रह उनका मुत्तर और स्व छ पर हा बचन हा
किन्तु अमर की सनक करत उमरी कोई कामना तपन नही हा पाती । नीरस जायन
का बाक निन स ऊबकर अत म वह पति गहका त्याग ती है जिससे अमर निद्रा
हाकर जीवन यापन कर मके । एन लोको नायिकाओं र मन ही व्याख्या करन म मनु
जा की मफलता मिती है।

अपने पात्रों के मनाविधान की स्पष्ट करने क त्रिय जहाँ त्रिपिका ने उनका
चित्तना को व्यक्त किया है वहाँ उनके स्वभाव न भी उक्त त्रिय की सिद्धि मे पर्याप्त
सा दिया है। उनक नयोपकवनो म पयाप्त अनेकरूपता है—कही व सामान्य है (देविक
जीवन क सामा य प्रसगा से सम्बद्ध) कही विगण (किन्ही विगिष्ट प्रसगा का लकर
सानिप्राय स्वाद जिनम तक वितक उक्ति वचिन्म आनि का मयाप्रसग समावा हुआ
है) कही लष है और कही दीघ किन्तु आव यकता स अधिक दीघ कही नहीं है। मवागो
की प्रमुख विगपता यह है कि व सवत्र वयता व ध्यनित्व का साकार करने म सहयोगी
रह है। मवागो की नाया भी प्राय पात्रानुरूप है। वार्त्तावाप करत हुए पात्रों की मवा
वृत्ति नाव भगिभा आनि का इतना सजीव उत्तम हुआ है कि पाठक को सत्र कुत्र
प्रत्यक्ष प्रतीत होने लगता है। एक उद्धरण द्रष्टव्य है—

तुम्हार जाने के कुछ देर बाद ही अचानक अमता आ गई। अपनी ओर खती
रजना की दृष्टि से वचन कनिए ही जस अमर न कहा। आप तो कश्मीर गई थी न ?
मनीज की तो जाइ ? फिर सबर सूचना कछ भी नही ? रजना ने कछ म डग से

पूछा माना अमर के अचानक गान की सत्यता की अच्छी तरह जान लेना चाहती है। मर प्रोपाम तो मेरी सनक पर निर्भर करत हैं, और सनक हूँ मरण बलती रहती है। फिर सोफ पर बठती हुई बाबा खबर-मूचना तो मैं कभी दती नहीं—अचानक मितकर सामनेवाले को स्तम्भित कर देने का भी एक आनन्द होता है रजना। और अमला मस्करा रो।^१

लेखिका ने जहाँ मुख्य रूप से पात्रों की क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं आदि का चित्रण किया है वहाँ कतिपय प्रसंगों में बाह्य वातावरण का दृष्टा की भी सुन्दर अभिव्यक्ति की है (वैसे ऐसे प्रसंग अत्यन्त विरल हैं)। उदाहरणार्थ पुरी में सागर के बहुत आगे का बरखाकन अबलोकनाय है— 'सन्तान रात आसमान पर छिंके तार भी सामने गर जाता फुफकारता अनन्त समुद्र। आज समुद्र और दिना की अपेक्षा अधिक जगन्त अधिक उल्लेखित था। आसमान का छूने का दुस्साहस करनेवाली बड़ी बड़ी लहर जब दूर क्षितिज पर उठता और एक दूसरी को ठेंगती हुई बड़े बड़े बास आग बढ़ता ता गगता कोश गति इनके वेग को रोक नहीं सकती, आज य सब-कुछ अपने नीचे ममता गयी पर किनारे पर आते ही जान क्या होता कि बड़ ही विरग भाव से चीत्कार करता हुई व बिखरकर चूर चूर हो जाती।' 'वस राजेंद्र यादव की तुरना में मन्नु भट्टारा ने अपने परिच्छेदों में भगवान् के चित्रण की ओर कम ध्यान दिया है किन्तु कवन रूप दृष्टि से उनका परिच्छेद का महत्व कम नहीं हो सकता। वस्तुतः इस उप-याम में नवक सम्पत्ति का उद्देश्य यही था कि दाना के सम्मिलित प्रयास से नूतन प्रयाग का आश्रय लत हुए एक मनोवर्णात्मक कथा कृति की सृष्टि की जाए। इसमें कोश सन्देह नहीं कि उनका यह प्रयाग अत्यन्त उच्च काटि का सिद्ध हुआ है। कथानक की अभिव्यक्ति गहन प्रवाह और अभिव्यक्ति प्रत्येक दृष्टि से यह एक श्रेष्ठ उप-यास है, इनके लिए 'नवक' बपाई के पात्र हैं।

आनो में उप-यास की भाषा गनी भावानुरूप सक्षम एवं प्रभावपूर्ण है। राजेंद्र यादव की भाषा प्रायः शीघ्र एवं गम्भीर है किन्तु मन्नु भट्टारा ने सरस रोचक एवं प्रवाहपूर्ण भाषा गती का प्रयोग किया है। गनी की दृष्टि से यह एक नूतन प्रयाग है कि एक ही उप-यास में पुष्प लेखक ने पुरुष पात्रों के मनाविधान को प्रस्तुत किया है और लेखिका ने पार्थाशा के अतजगत् एवं वहिजगत् की क्रियाओं प्रतिक्रियाओं का चित्रण किया है। जसिया के अभिव्यक्ति गति की विपरीत यह है कि वे पात्रों के साथ एकाकार हाकर उनका जीवन अंकित करती हैं। इस प्रसंग में राजेंद्र यादव का उक्ति उद्धरणिय है—
मरे और मन्नु के उक्तन में यही मौलिक अंतर भी है। वह नया के पात्रों के साथ दानों अधिक एकाकार हो जाती है कि उनका दुभाग्य उस अपना दुभाग्य लगता है।^१

१ एक नव मस्करा पृष्ठ १६४

२ एक इव मुस्कान, पृष्ठ १०८

३ दसिमे एक इव मुस्कान, पृष्ठ ३१४

प्रस्तुत उप-याग में मुख्य रूप से जिन समस्याओं को उठाया गया है वह यह है कि उसका ही मुख्य जीवन का पाठ म पढ़ना चाहिए अथवा नहीं? अथवा न अपने जीवन में यह स्पष्ट कर लिया है कि पात्रों का उन अपने व्यक्तिगत जीवन तथा समाज में है जमा कि उनका पाठ मीचत है। तमिना न कथा का मार्ग यह है कि उनका व्यक्तिगत जीवन गुणा है कि न जाना। य उप-याग में अमर का जीवन तथा तो एक-दूसरे ने मीच दिया है कि तुम जीवा न कर को प्रम विवाह गृहस्थी जानि। अथवा अमर तम में म दूर ही रहना चाहिये नहीं तो उमर अमर का कथाकार मर जाता है। इसके अतिरिक्त तत्पक्ष में प्रसंगिक समस्याओं का भी यत्र तत्र उल्लेख हुआ है। यथा— प्रम विवाह अधिक म पत्र है अथवा परम्परागत विवाह? तथा प्रत्येक तारी तथा प्रत्येक पुरुष का तम विवाह पाद उन अनियाय है? जानि। उक्त समस्याओं का उक्त उप-याग में मुख्य एवं शीघ्र पात्रों में अनकृत बित्त रूप हैं कि न अन्तिम निधम कुछ भी नहीं दिया गया है। वस्तुतः उक्त प्रम व्यक्तिगत जीवन तथा दृष्टिकोण से सम्बन्ध है अतः उनका जितने भी सम्भव उत्तर है सत्य है वही पात्रों ने अपने तम बित्त में प्रस्तुत किये हैं। उप-याग का नायक अमर सभारतिकाजीन बुद्धिजीवी बग के प्रति व्यक्तिगत का प्रतीक है। उमर। असफलता मानो उमर ममस्त बग की असफलता है।

निष्कर्ष

यस युग की तस्विकाओं ने मुख्य रूप से समाज एवं परिवार को कद बनाकर प्रमूनक उप-यागों की रचना की है। कही घटना मयाग अथवा चारित्रिक कदता का आधार तकर प्रम सम्बन्धों को सफलता में परिणत कर दिया गया है और कही सामाजिक मर्यादा का भंग वण भेद जानि बाधाओं को सबक्यों दिलाकर विरह एवं निराशा में उपसहार दिया गया है। अतः उप-यागों में म यवर्गीय परिवारों की सामयिक समस्याओं का विवरण रूप से उभारा गया है। विगता यह है कि जहाँ पूर्ववर्ती उप-याग तस्विकाओं ने समाज का के-मानकर व्यक्ति की अनुभूतियों का चित्रण किया था वहाँ इस युग में व्यक्ति को प्रमून मानकर उसका परिवेश को शीघ्र रूप में चित्रित किया गया। हा तस्विकाओं ने नारी हान का नाते नारी हृदय की अभिव्यक्ति एवं नारी की समस्याओं का चित्रण पर अधिक बल दिया है। कुछ तस्विकाओं ने तो इस दिशा में रुचि प्राप्त प्रवृत्तियों को ही अपना लिया है जम कि मत्स्यवती उपा ने क्षितिज के पार में हिंदू विधवा की पारिवारिक एवं सामाजिक दुदगा का चित्रण किया है। इसी प्रकार सुयमा भाटी के गेट कापर तथा मधुसूता का प्राणा की प्यास में वया जीवन की विभीषिकाओं का चित्रण प्रमून विषय है। तत्पक्ष में य तस्विकाओं ने नारी की वर्तमान समस्याओं की ओर ध्यान तकर युगानुरूप सजगता का परिचय दिया है। उदाहरणार्थ मीरा मल्ला वान सो ब्या जान पार पराधी में अनावयस्त निम्नमध्यवर्गीय परिवार को कथा का के-मानकर नौकरी करनेवाली नारी का माग में जानमान विनि न प्रतापनों एवं बाधाओं का यथा

चित्रित किया है। उपाध्याय ने भी पंचपन सम्भवे लात आकार में एक ही अभावग्रस्त परिवार की कालज म नौकरी करनेवाली कन्या का मानसिक गूँथता एवं हलचल का मनोव्यक्ति चित्रण किया है। इन सामाजिक उपन्यासों में कुबराजी नारायणी का जीवन दान एक श्रेष्ठ उपन्यास है। यद्यपि इसमें भी प्रेम-कथा को स्थान दिया गया है किन्तु इसका प्रस्तुतीकरण मल्लिका ने 'यापक' श्रुति का परिचय दिया है। भारत की सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक स्थितियों का चर्चा करके उन्हीं मानववादी सिद्धांतों का प्रयोग किया है और भारतीय सभ्यता के सुधार पर बल दिया है।

सामाजिक उपन्यासों के अतिरिक्त इस युग में श्रोमती सुदेश रॉय ने एक ही रास्ता तथा उपाध्याय ने आन्तरिक गीपक ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखे हैं। इनमें सुदेश रॉय का उपन्यास सुदृढ़ रूप से ऐतिहासिक है, क्योंकि इसमें १९औं और २०वें शताब्दी के बीच के परिवर्तन और समाज के अन्तर्गत परिवर्तन का चित्रण किया है। उपाध्याय के उपन्यास में इन्द्राक्ष, बाबर आदि गौण पात्रों का चित्रण प्रमुख पात्रों का चित्रण के लिए किया है। इन कृतियों को 'ऐतिहासिक प्रेम-कथा' के उपन्यासों की श्रेणी में मान सकते हैं।

इस युग के पुरुष चरित्रों की रचना में नरक प्रवाह बहुत कुछ प्रभावित रहे हैं। यद्यपि इनमें मदनमोहन मालवीय, जे. ए. प्रभु, आदि के नाम प्रबलता के साथ आते हैं। नारी चरित्रों में मानव और अस्मिता का चित्रण किया है। नारी चरित्रों में सामाजिक परिवर्तन का प्रतिबिम्ब स्पष्ट रूप में उभर आया है। यही कारण है कि चित्रणों में स्त्री-पुरुष-सम्बन्ध का जो प्रायः मानसिक सतह पर ही रखा है और सामाजिक या धार्मिक से उलट न बदला और विचलितता का ही चित्रण मुख्य रूप से किया है। मल्लिका मिश्र की सज्जनमोहिनी और गीपक कृतियों में उलट कथन की अवधारणा है क्योंकि इसमें चित्रण में नरक प्रवाह और आन्तरिक, धर्म, आदि का ध्यान चित्रण किया है।

वर्तमान युग का साहित्य की एक अन्य विशेषता है—पात्रों में वगैरह प्रचलित चरित्रों के स्थान पर व्यक्ति-व्यक्ति की स्थापना। अर्थात् ऐतिहासिक युग के इस प्रभाव की उपेक्षा करते हुए स्थूल चरित्र चित्रण किया है किन्तु प्रकाशवती मन्मथ द्वारा जो चरित्र अपने उपन्यासों में व्यक्ति के घरायश से प्रस्तुत किया है। अर्थात् जनक चरित्रों में न तो अपने पात्रों में मनोविज्ञान सम्मिलित सम्मिलित चरित्रों का उल्लेख किया है। पात्रों का चरित्र चित्रण, वर्तमान प्रवाह वर्णन आदि इस युग के चरित्र चित्रण की उत्कृष्टतम विशेषताएँ हैं।

देशात्मा के चित्रण में आन्तरिक रूप से स्थानीय एवं दूर की प्रकृति इस युग की नई दृष्टि है। जिसका चित्रण प्रत्यक्ष की नीति के स्थिति सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति परम्परा राजनीतिक उत्थान गतन आदि का ध्यान करके चरित्र चित्रण का प्रयत्न करना आन्तरिक उपन्यासों की विशेषता है। आन्तरिक चरित्रों के पात्रों में यापक उपन्यासों की प्रकृति यह है कि इसमें चरित्र भारत के सामाजिक

धार्मिक एवं राजनीतिक जीवन पर प्रभाव डाला गया है। इसी प्रकार भारती विचारों व हार या जीत एवं निवासी के भावापुरी में भी कुछ कुछ आधुनिक प्रभाव का स्पर्श है। हार या जीत में केवल न रीति रियाज की चर्चा प्रमुख विषय है और भावापुरी में पबतीय समाज की रुढ़िगत परम्पराओं का यत्र तत्र उत्पन्न हुआ है।

नित्य की दृष्टि से हम यग में अनेक नवन प्रयोग हुए हैं किन्तु सगिकाभा के उप-पासा में मुख्यतः प्राचीन घटनाप्रधान अवस्था चरित्रप्रधान गानवों का ही प्रयोग हुआ है। प्रकाशवती तथा मन्त्र नडारी न अपनी कृतियाँ में नूतन गीतों का प्रयोग किया है। इनमें मुख्य पात्रों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से आत्म-चिन्तन की गती में बहाने प्रस्तुत किए हैं। इस प्रकार पात्रों के आत्मविश्लेषण से उनका सूक्ष्मांतिसूक्ष्म मनोविज्ञान उभरकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हुआ है। वास्तविक कला प्रेरणा से उद्भूत होने के कारण यह प्रयोग अपने में बड़ा सफल एवं भाविक सिद्ध हुआ है। इस काल के उप-पासा में भाषा के प्रायः सरल एवं बोधगम्य रूप की अधिक स्थान प्राप्त हुआ है। दृग्ज-पात्रों प्रसंगानुक्रम में मुहावरों एवं सूक्तिगमित वाक्यावली में भाषा गती में पर्याप्त सजीवता की सृष्टि की है।

उपसहार

स्वातन्त्र्यात्तर क्या ललिकाजा व यादान का मूल्यांकन करने पर इसमें सन्देह नहीं रह जाता कि इस युग की ललिकाएँ अपने समकालीन ललिकों की तुलना में कहाँ भी कम नहीं ठहरती। प्रारम्भकालीन और विकासकालीन ललिकाएँ उतनी जामलक नहीं भी थी क्योंकि एक ओर पूर्ण प्रथा अंगीक्षा अपविश्वास धार्मिक रूढ़ियाँ आदि ने उनकी प्रतिभा को दम रखा था दूसरी ओर गृहिणी के उत्तरदायित्व के सकुचित दायरे से बाहर आकर कुछ करने की उनकी वसां तात्प्र जाकाया भी नहीं थी जबकि पुरुष पक्ष उक्त बाधाओं से मुक्त थे। फलतः स्वतन्त्रता पूर्व काल में पुरुषों और स्त्रियों द्वारा विरचित कथा-साहित्य में जो अन्तर लक्षित होता है वादक कथा साहित्य में वसां नहीं है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त भारत में विभिन्न क्षत्रों में विविध परिवर्तन हुए। राजनीतिक एवं सामाजिक नवाचारों के परिणामस्वरूप साहित्य की अनेक विधाओं की भाँति कथा-क्षेत्र के बहुमुखी विकास की सम्भावनाएँ भी गन-गन दिसने लगीं। नया-नया शिक्षा और विज्ञान उन्निष्ठ करते गये तथा तथा नैतिक पूर्वाग्रहों में निधिलता आने लगी। पुरुष ललिका की रचनाओं में नवागत परिवर्तन लक्षित गति से अभिन्न हुए किन्तु ललिकाएँ भी बहुत पीछे नहीं रहा। पश्चिम के प्रभावों के तारों पर भारतीय आत्माओं द्वारा आरोपित पूर्व-वंधना (पूर्व प्रथा पति का अनुचरत्व आदि) का निस्सारता का निद्वंद्व करके समानाधिकारा का समयन किया। फलतः नारी का आत्मनर्तक अधिकार दिव्य अवसर सुलभ हुए। उक्त नवाद्वाधन का ह्रा यह परिणाम है कि नम युग में कहानी और उपमास दोनों क्षत्रों में महिलाओं ने पूर्ववर्ती युगों का अपरा अनेक तरंगता एवं जागरूकता का परिचय दिया है।

इस युग की कहानी ललिकाओं में सत्यवता मयिक गिवराना, रजना पनिकर वचनलता मन्त्रवान सत्पुरुषारी वल्गा सामावारा मन्त्रु मन्त्री और गान्धि महाराज के नाम विद्यमान रूप से उल्लेखनीय हैं। गिवराना विद्वान् सामावारा आदि कनिष्ठ रचयिताओं ने पुरुषों द्वारा नारी पर अत्याचार दहज प्रथा ब्रह्मा जीवन का मन्त्रगा आदि परम्परागत विषयों का ह्रा अपना कहानियाँ में स्थान दिया है किन्तु रजना पनिकर मन्त्रु मन्त्री प्रगति जागरूक ललिकाओं ने उन नूतन समस्याओं एवं सपनों का चित्रण किया है जो वर्तमान युग में व्याप्त कुछ असंतोष एवं विश्रुम्भनता का परिणाम है। सामूहिक रूप से अज्ञात करने पर उक्त ललिकाओं के कहानी साहित्य में निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ

समष्टि का अपभा-यष्टि की समस्याओं का महत्व देना इस युग की प्रमुख प्रवृत्ति है। जनद्र, दत्ताचन्द्र जोगा और अन्य न अपन उपयामा म पात्रा के अन्तर्गत चरित्र को मनावनात्मिक पद्धति से अनावत्त करके जिस नवीन गली को जन्म दिया या नविकाओं में मन्मू भडारी एवं रजनी पनिकर का कथा-साहित्य उसकी विशेषताओं को अपन में समेटे हुए है। अन्तर केवल यह है कि जहाँ अधिकतर पुरुष रचकों ने यौन विवशता का प्रवर्तित और चरित्र स्पष्टता का अश्लीलता की सीमा तक पहुँचा दिया है वहाँ ललितराजा ने प्रायः उच्च मानसिक स्तर पर ही रखा है और तज्ज्वल आत्मवीक्षण की ही व्यक्त किया है। मुगमा भाटा मधूलिका मिश्र जतिपय अपवात्स्वरूप नविकाओं ने वामना के नग चित्र की अतिरिक्त किया है। मन्मू भडारी की कुछ कहानियाँ में भी वामन है किन्तु अप्रसन्न होने के कारण वे उतने विस्तृत प्रतीत नहीं होते। इस युग की ललितराजा में कहानी-कला और उपयाम का उन्नयन समान स्तर पर रहा है। सामाजिक उपयामों के अतिरिक्त कुछ ऐतिहासिक एवं मनावनात्मिक उपयाम भी लिखे गए किन्तु प्रमुखता सामाजिक उपयामों की ही रही। इस काल की कुछ ललितराजा न अपन पतिया के सहयोग से उपयामों की रचना की है। मन्मू भडारी और भारती विद्याधी के उपयाम इसी प्रकार हैं।

स्वातन्त्र्योत्तर कथा साहित्य उत्तरोत्तर व्यक्त से अत्यन्त आस्था से अनाम्या समाज में व्यक्ति आत्मा से यथावत् एवं स्थूल में सूक्ष्म की ओर प्रवृत्त होता रहा है। इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप शिल्प की दृष्टि से भी अनेक नूतन प्रयोग सम्मुख आए हैं। रजनी पनिकर मन्मू भडारी और प्रकाशवती न अपन उपयाम नूतन गली में प्रस्तुत किया है पात्रों के आत्मविस्तारण को ही समस्त तत्त्वा का केंद्र बनाया गया है। वस्तुतः नविकाओं ने हिन्दी कथा साहित्य का अपनी सवेदनशील भावनाओं एवं जागरण प्रतिभा का आश्रय लेकर पर्याप्त गौरवावित किया है। नारी हृदय का जितना सफ़र चित्रण नविकाओं ने किया है उतना नवका के कथा-साहित्य में उपलब्ध नहीं है। इससे अतिरिक्त ग्राह्य जन जन मनावनात्मिक मोतिया यह आदि विषय हम हैं जिनमें पुरुषों की अपराध कहानियों में अधिक मजबूत कहानियों की रचना की है। इसका यह तात्पर्य पदाति नहीं है कि प्रत्येक काल में पुरुष नवका का कथा-साहित्य अपेक्षाकृत होन ही है। इससे अन्तर है जहाँ नविकाओं का पक्ष अपेक्षाकृत दुर्बल है। उदाहरणार्थ नविकाओं के नव सामाजिक कथा क्षेत्र में गतिशील रही यह भी एक दाव है क्योंकि अन्य तन्त्रों में उद्धान कहा रहा स्पष्ट मात्र ही किया है। जिस प्रकार वामननाम वमा राहुन मान-मायन हजारीप्रसाद द्विवेदी प्रभृति विद्वानों ने गायबूख ऐतिहासिक उपयाम प्रस्तुत किया है वमा नविकाओं ने कहा कर सका। उदाहरण सुभाष रश्मि आदि एक-आध अपवात् स्वरूप नाम दिए भी जा सकते हैं ता भी हम यह कहने में संकोच नहीं माना चाहिए कि उनमें ऐतिहासिक उपयाम उतने उच्च स्तर के नहीं हैं। इसी प्रकार मनावनात्मिक कथा-साहित्य के क्षेत्र में जाय जनद्र और दत्ताचन्द्र जोगा की कथा का नविकाओं ने

परिशिष्ट

सहायक ग्रंथों की सूची

लेखिकाओं के कहानी संग्रह और उपन्यास

- | | |
|------------------------------------|---|
| १ अणिमा सिंह | नागरी प्रथम म० सिंह प्रेम कवकला । |
| २ ५ अन्तर्पूर्णा ताराडा | चित्ता की बूँद प्रथम म० सन १९६१ तानाशाह प्रकाशन लेखनऊ । |
| | निधनता का अभिगाथ सन १९६१ भारतीय - ५ माला लेखनऊ । |
| | मिलनाहुति प्रथम म० सन २०१८ हिन्दी साहित्य भण्डार लेखनऊ । |
| | विजयिनी प्रथम म० भारतीय प्रथम म० लेखनऊ । |
| ३ आदित्य कुमार
आनन्द | गराब घर अमीर बराठे प्रथम म० नवयुग पुस्तक भण्डार लेखनऊ । |
| | प्रम गौर बलिगन प्रथम म० सन १९६० नवयुग पुस्तक भण्डार लेखनऊ । |
| ४ आनारानी 'अनु
६ ११ इन्दिरा नूर | काग तहरे बोन पाता, अकता प्रकाशन इलाहाबाद । |
| | वह कौन थी प्रथम म० सन १९६० चन्द्राक प्रकाशन इलाहाबाद । |
| | गंगा का जालू प्रथम म० सन १९५८ चन्द्राक प्रकाशन इलाहाबाद । |
| | मपन मान और हठ प्रथम म० चन्द्राक प्रकाशन इलाहाबाद । |
| १२ इन्दुमती | उमठे तिरु तनाय न सन १८५८, सरस्वती प्रेम, बनारस । |
| १३ उमा शर्मा | आविर्गन प्रथम म० सन १९५८ हिन्दी प्रचारक पत्रकारण आनारानी । |
| १४ उर्मि | प्रतीता प्रथम म० प्रकाशन |

- १५ उषा फिर यमगत जाया प्रथम म० मन् १६ १ ति ता
अम लिता ।
- १६ १७ उषा प्रियम्बदा द्विगो जीर गृत्राय क फूट प्रथम म० मन्
१६६१ भारतीय गानपाठ गायणमा ।
पचपन छन नाव दावार राजमम प्रकाशन
निल्ली ।
- १८ उषा सवमना बहुल बान्धव प्रथम म० मन् १६/१ अग्रयान बुध
माधवी हाउम इनाहाबाद ।
- १९ ४ कथननता मन्तरवान प्यामी धरती गुग नाव प्रथम म मन् १६६०
माइन हाउम नवनऊ ।
नूय प्रथम म हिी प्रचारक पम्पकानय
बाराणसी ।
- २१ वमना टडन वमन बिस्तरत स्वप्न प्रथम म० मन् १६ १ नश्यम
प्रकाशन नवनऊ ।
- २२ कमना सक्मेना गापया वरदान प्रथम स जायम पत्रिगिग
कम्पनी नई दित्ता ।
- २ १४ काता मिहा अतप्ता प्रथम म सन १६६० राजपान एम मय
निल्ली ।
कौषिका रास्ता प्रथम स सन १६ प्रीमियम
पत्रिगिग हाउम बाराणसी ।
- १५ किरणकुमारी गुप्ता परस्वार प्रथम म सन १६५५ विना पत्तक
मदिर जागरा ।
- १६ बबरानी तारादबी जीवनदान प्रथम स० राजपान एड सस लिनी ।
- २७ कल्या रविकमल नटवत राही प्रथम म पत्नी कायायम इना
हाबाद ।
- २८ कल्या सादता नारस विच्छडी सन १६६ राजकमन प्रकाशन
निल्ली ।
- ८ चौगल्या अन्व नो धारा लितीय स सन १६५५ नाताभ प्रकाशन
गह इनाहाबाद ।
- चन्द्रकिरण मोनरनमा चन्दन चाँनी प्रथम म० मन् १६६२ मित्र प्रका
शन इनाहाबाद ।
- ११ चाहणीका मित्रा रिगून नवयम प्रस रिमिटड पटना ।
तारा पोतदार रयाए और बिदु सन १६५२ एजूकेगनन बुक
लिपा नागपर ।

- ३३ दाना चाय का पानी प्रथम स० सन १८५१ मनाहर
पस्तकालय कमला मार्फेट दिनी ।
- ३४ नमिता लम्बा खिन्गा क अनुभव प्रथम स० सन १८५४ मन्त्र
बुक शिपो दनाहावा ।
- ३५ नारायणी कुगवाहा पराध बस म चिनगारी प्रकाशन बनारस ।
- ४६ पन्मावती पटरध भोल क पत्थर प्रथम सम्पूर्ण सुपमा माहि य
मन्दिर जबलपर ।
- ४७ ३६ पप्पा भारती खिन्गा क बीच प्रथम स इन्डिया पत्रिगम ए
एन्वरटाउम कतकता ।
- ४८ ४९ पप्पा महाजन मरियम सबन् २०१२ भारता कुटीर कतकता ।
विवाता क निमाता प्रथम स० इन्डिया पत्रिगम
एड एन्वरटाउम कतकता ।
- ४९ ५० पप्पा महाजन घूमन न सन १८६० माहि यमाम अधियाना ।
सथप जीर गान्ति प्रथम स सन् १८५७ राज
पात्र एंड सस तिल्ली ।
- ५२ प्रकाशवती चार परने प्रथम स० सन १८६२ राजपात्र ए
सस तिल्ली ।
- ५५ प्रकाशवती नारायण दूटा प्रम प्रथमावति हरेद्र प्रकाशन भातपुर ।
- ६० प्रिया राजन नन्दा प्रथम स० सन १८६३ नीनाभ प्रकाशन
साहावाद ।
- ६१ शिन्नु अग्रवान मोल्ने की बुना प्रथम स सन १८६१ राज
कमन प्रकाशन तिल्ली ।
- ६६ ६७ भारती विजार्थी पाँच बेंत प्रथम स० सन १८५७ आत्माशम ए
सस तिल्ली ।
- ६८ ६९ भारती विजार्थी गार या जीत प्रथम स सन १८५१ राजस
प्रकाशन तिल्ली ।
- ७० ७१ भारती विजार्थी प्राणा का प्यात्र प्रथम स० सन १८६० राजहम
प्रकाशन तिल्ली ।
- ७२ ७३ भारती विजार्थी तपत वातरन प्रथम स सन १८६० अगोक पाकट
बुवन तिल्ली ।
- ७४ ७५ भारती विजार्थी एक इच मुक्कान प्रथम स० सन १८६१ राजपात्र
एनम तिला ।
- ७५ ७६ भारती विजार्थी एक पश्य एक नारा हिन् पाकट बुस दिन्ता ।
तीन निगाहा वा एक तस्वीर ।

- ७४ सावण्यप्रभा राय
रजनीगद्या द्वितीय म० मन १८१४ जाग
हिन्दीपुस्तकालय प्रयाग।
७५ ७८ सीता जवम्बी
दूध क फल मन १६११ हिन्दी प्रकाशन
दिल्ली।
दा राह प्रथम म० मन १८१८ हिन्दी प्रचारक
पुस्तकालय वाराणसी।
बन्खा वरसन जाण प्रथम स० मन १८६१
सध्या प्रकाशन सिन्धी।
बिलरे काट प्रथम स० मन १६६ हिन्दी प्रचारक
पुस्तकालय वाराणसी।
७६ ८० वसन्त प्रभा
अधूनी तस्वीर मन १८१८ आत्माराम गम
दिल्ली।
साक के माथी मन् १८१६ राजकमल प्रकाशन
दिल्ली।
८१ विजयनक्षत्री गौर
जोरी जोर तिलक प्रथम स० मटराज प्रकाशन
म्बई।
८२ विपुला त्वा
पूव का पत्ति प्रथम म० मन १८६ द्रष्टव्य
प्रेम प्रयाग।
८३ ८५ तिमल बर
अचना प्रथम म० मन १८ २ विन्धविजय प्रान्त्र
वि० नई दिल्ली।
अमरी हीरा नक्शा हीरा प्रथम म० मन १६६
भारती माहिन्स मन् नई दिल्ली।
ज्याति विरण प्रथम स० मन १८१७ राग्य
प्रकाशन दिल्ली।
८६ विमला ग्ना
तुकलाप प्रथम म० जितार महन प्रयाग।
८७ वारा
मौत का पूव प्रथम म०, मन १८६१ भारती
माहिन्स मन् दिल्ली।
८८ गुरु तारा त्वी
म्य और वना प्रथम म० मन् २०१६ नोदिना
प्रकाशन छपरा।
८९ गुरुनारा मित्र
क वा मिन्नी मन १८१७ भाग्यार पुस्तक मन्
प्रयाग।
९० गुरुनारा गमा
चिन्मा गमा प्रथम म० मन १ १८ प्रियगा
प्रकाशन इलाहाबाद।

नारी हृदय की साध प्रथम स० मन १८६१ राज
पाल एड सम लिनी ।

वशाख की रात प्रथम स० सन १९५१ मोतीना
बनारसीदाम बनारस ।

११४ सताप बाला प्रभा

स्नेह और स्वप्न प्रथम स० सन १९६२ चतुर्थ
प्रकाशन बनारस ।

११५ सताप सचदवा

रूप और छाया प्रथम स० मन १९५५ नव
साहित्य प्रकाशन नई दिल्ली ।

११६ सरिता रानी

नीला सन १९५२ हिंदी बुक डिपो कनकता ।

११७ ११९ सहपथमारी बहनी

कौडिया का नाच प्रथम स० सन १९५५ रजना
प्रकाशन, लखनऊ ।

निर्भर कथा प्रथम स० मन १९६३ राष्ट्रीय
प्रकाशन मन्दिर लखनऊ ।

रेडियम के अक्षर प्रथम स० सन १९५८ रजना
प्रकाशन लखनऊ ।

१२ नाविश मिह विष्ण

सप्त किरण प्रथम स० मन १९६८ लमिना द्वारा
गाजापुर से प्रकाशित ।

१२१ मुग्ध रम

एक ही रास्ता प्रथम स० सन १९५६, नवगुण
प्रकाशन लिना ।

१२२ भुमन वारनवर

जधूरे चित्र प्रथम स० सन १९६१ जगता प्रिंटिंग
बक्स नागपुर ।

१२ भुमिना गन्हा

पूतन का चाद सन १९६० रूपकमन प्रकाशन
दिल्ली ।

१४ १०५ भुपमा नानी

गेट कीपर प्रथम स० सन १९५६ भुपमा प्रकाशन
महाराष्ट्र ।

ममता प्रथम स० प्रतिभा प्रकाशन महाराष्ट्र ।

१२ माता

भारत का नाम माता प्रथम स० मन १९५८
नानल एं वॉरिंग हाउस दिल्ली ।

१०३ माता

बाणों प्रथम स० मन १९५२ माता प्रकाशन
बनारस ।

१ = साना योग

वर्ता का योग प्रथम स० आत्माराम एन मन
लिना ।

१०८ होराबो बुद्धि

ठाना बुद्धि सन १९६८ मनोरमा प्रकाशन
दरहावा ।

नारी हृदय की साथ प्रथम म० मन १८६१ राज
पान एड सम लिती ।

वगास की रात प्रथम म० मन् १८४१ मातीना
बनारसीनाम बनारस ।

११८ मन्ताप बाता प्रमा

स्नह और स्वप्न प्रथम म० मन १८६२ चतय
प्रकाशन बनारस ।

११९ मन्ताप मन्तावा

रूप और छाया प्रथम म० मन १८५६ नर
साहित्य प्रकाशन नई लिती ।

११९ मरिना रानी

नीना मन १८५२, हिन्दी बुक लिषा कानता ।

११७ ११८ मन्तापमारी वन्ता

कौडिया का नाच प्रथम म० मन १८५६ रजना
प्रकाशन नखनऊ ।

निम्नर कथा प्रथम म० मन १८६० राष्ट्रीय
प्रकाशन मन्ता नखनऊ ।

रिथम नखनऊ प्रथम म० मन १८५८ रजना
प्रकाशन नखनऊ ।

१२० नासिका मिह लिष्ण

मन्ता लिष्ण प्रथम म० मन १८५८ उदिया हाता
गातापुर से प्रकाशित ।

१२१ मुग्ग नमि

मन्ता ना रास्ता प्रथम म० मन १८५६ नखनऊ
प्रकाशन लिता ।

१२२ मुग्ग नमि

जधर चित्र प्रथम म० मन १८६१ नखनऊ
नखनऊ ।

१२३ मुग्ग नमि

पूना का चौक मन १८६० नखनऊ प्रकाशन
दिल्ली ।

१२४ मुग्ग नमि

गट बीपर, प्रथम म० मन १८५६ मुग्ग प्रकाशन
नखनऊ ।

मन्ता प्रथम म० प्रति ना प्रकाशन, नखनऊ ।

१२५ माता

नारत का नाक गाता प्रथम म० मन १८५८
नखनऊ ना ना ना हाता लिती ।

१२६ माता

वाग्गा प्रथम म० मन १८५८ गाता प्रकाशन
नखनऊ ।

१२७ माता

वन्ता का बी प्रथम म० नारनारस एन मन,
लिता ।

१२८ माता

उन्ता नखनऊ मन् १८५८ मन्ता प्रकाशन
नखनऊ ।

अथ लेखना ॥ ॥ टुटिया

- १ अथय त्रिातु मग्म्वता प्रा याम्म ।
 २ आन प्रकाग जन रथायन प्रथमम० मन १६५६ प्रकागन प्रनि
 मरठ ।
 ३ उपद्रनाथ अ र रेगार्णे जीर निप्र प्रथमम० मन १६५५ नाता
 प्रकागन म्हाबा ।
 ४ कथाग कल्पित सात्त्विकतायिाए तात ततना प्रकागन जगत् ।
 ५ चतुष्टु विद्यानसार हिता रथा-साहिय म पत्रात ता जगत्ताम नाप
 निभाग पटियाता ।
 ६ निभवनमिह हिता उपचाम जीर यथायवा तनाम ग तन
 १० हिता प्रचारक पम्पवाय याम्ममा ।
 ७ प्रतापनारायण टडन हिता उपचाम का उदभज जीर नितात म्मम०
 सन १६६ हिता सात्त्विक नाग तनज ।
 ८ वनारसादाम चतुर्थी रत्ताचित्र प्रथमम० मन १६५ भाग्याय तान
 पाठ कागी ।
 ९ यागकुमार त ता हिता तगिरावा की प्रतिनिधि रत्तानिद्या प्रथम
 स० मन १६६५ जामाराम ए सन हिता ।
 १ लभीचन्द्र जन म्याग्म मपनी का ता प्रथम म० मन १६०
 भाग्याय तानपाठ काता ।

पत्र पत्रिकाए

- १ अकाता जुनाइ १६६०
 २ आजवन जनमग १६५५
 अक्तूर १६६१
 ३ कमता मड १६३६ तम्बग १६३६ मितम्भ १६४
 जनवरा १६४१
 ४ कहानी अक्तूर १६६१
 ५ जीवन अगस्त १६६०
 ६ प्रतिभा अक्तूर १६५३
 ७ रूपान तम्बग १६५०
 ८ समिति राणा (रमागिर) जुनाई अक्तूर १६६३
 ९ मारिका अगस्त १६६ (कहानी अ)

